आयुर्वेद के उत्तमोत्तम पठनीय ग्रन्थ

प्रत्येक ग्रन्थ आयुर्वेद के उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा संपादित हैं। वैद्यों तथा चिकित्सक समुदाय को चाहिए कि इन ग्रन्थों की एक एक प्रति मंगवा कर अवकाश के समय उनका अध्ययन कर अपने ज्ञान की उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए अपने चिकित्सा व्यवसाय में भी पूर्ण उन्नति कर धन तथा यश के भागी बनें।

प्रत्येक ग्रन्थ पर भारत के आयुर्वेद मर्मज्ञ विशिष्ट विद्वानों, पत्र-पत्रिकाओं तथा शिक्षण संस्थाओं द्वारा अनेकानेक उत्तम उत्तम सम्मतियाँ भी प्राप्त हुई हैं।

१ **अगदतंत्र**—डा० रमानाथ द्विवेदी एम ए, ए एम एस,। इस छोटी सी पुस्तिका में लेखक ने विस्तृत ज्ञान भर दिया है। वैद्यों तथा विद्यार्थियों के लिए पठनीय पुस्तक है। सब कालेजों के कोर्स में हैं। मूल्य ।।।)

२ **अञ्जन निदानम्**—सान्वय विद्योतनी हिन्दी टीका सहित। आयुर्वेद शास्त्र में निदान के लिए श्रेष्ठ ग्रन्थ है। मूल्य १)

३ **अभिनव बूटी दर्पण** (सचित्र) सम्पादक वनस्पति विशेषज्ञ श्री रूप लाल जी वैश्य। सहज में पहचानने योग्य अनेकानेक चित्रों से विभूषित। वनस्पतियों से चिकित्सा का सर्वोत्तम ग्रन्थ। १०)

४ **अभिनव विकृति विज्ञान**—ले० आयुर्वेदाचार्य श्रीरघुवीर प्रसाद त्रिवेदी। २२)

५ **अभिनव शरीर क्रिया विज्ञान (सचित्र)** लेखक-श्री प्रियव्रत शर्मा एम ए, ए एम. एस। इस विषय की कोई ऐसी पुस्तक हिन्दी में नही थी जिसमें आधुनिक शरीर क्रियाविज्ञान के सम्पूर्ण विषयों का वैज्ञानिक शैली से संकलन किया गया हो। प्रस्तुत पुस्तक इस विषय की सर्वोत्तम पुस्तक है। विद्यार्थियों के लिए तो बहुत ही उपयोगी संस्करण है। ७॥)

६ **अष्टाङ्गसंग्रह**—टीकाकार आयुर्वेद बृहस्पति श्री गोवर्द्धन शर्मा छांगाणी। छांगाणी जी की विद्वत्ता आयुर्वेद जगत में प्रसिद्ध है। अत: उनकी टीका तो सर्वोत्तम होनी ही है। टीका के साथ-साथ विशेष वक्तव्य में छांगाणी जी ने स्वानुभूत योगों का भी प्राय: उल्लेख कर दिया है। मूल्य सूत्रस्थान ८)

७ **अष्टाङ्गहृदयम्** (गुटका) भागीरथी टिप्पणी सहित। मूल्य ४)

८ **अष्टाङ्गहृदयम्**—विद्योतिनी हिन्दी टीका विमर्श सहित। टीकाकार-श्री अत्रिदेवगुप्त विद्यालङ्कार। सर्वाङ्गसुन्दरी आयुर्वेद रसायन, तत्वबोध, पदार्थचन्द्रिका आदि टीकाओं के आधार पर इस सुविस्तृत टीका की रचना की गई है। आचार्य यदुनन्दन उपाध्याय, प्राध्यापक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा संशोधित परिवर्द्धित सटिप्पण संस्करण। मूल्य १६)

९ **आयुर्वेद विज्ञान**—विद्योतिनी हिन्दी टीका परिशिष्ट सहित। मूल्य १॥)

१० **आयुर्वेदीय परिभाषा**—ले. गिरिजादयालु शुक्ल ए एम. एस अभिनव प्रकाशिका हिन्दी टीका परिशिष्ट सहित १।)

११ **आसवारिष्टसङ्ग्रहः**—आसव-अरिष्ट की सर्वोत्तम पुस्तक। मूल्य १।।।)

१२ **औपसर्गिक रोग**—ले० डा० घाणेकर। इस नई आवृत्ति में अनेक नये रोग समाविष्ट किये गए हैं। विषयों तथा रोगों का विवरण तथा प्रतिपादन बहुत अधिक विस्तार के साथ किया गया है। मूल्य प्रथम भाग १०) द्वितीय भाग १०)

१३ **काय-चिकित्सा**—ले० आयुर्वेदाचार्य गङ्गा सहाय पाण्डेय ए एम एस.। शीघ्र प्रकाशित होगी।

१४ **काश्यप संहिता**—श्री सत्यपाल आयुर्वेदालङ्कार कृत विद्योतनी हिन्दी टीका, एवं राजगुरु हेमराजजी कृत संस्कृत-हिन्दी विस्तृत उपोद्घात सहित। इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता चरक तथा सुश्रुत के समान है। आयुर्वेद में कौमारभृत्य विषयक यही एक मात्र प्राचीन ग्रन्थ है। आयुर्वेद विद्वानों एवं चिकित्सकों के लिए संग्रहणीय एवं पठनीय है। मूल्य १६)

१५ **क्वाथमणिमाला**—हिन्दी टीका सहित। आयुर्वेद के विभिन्न ग्रन्थों में उपलब्ध समस्त क्वाथों का परिश्रम पूर्वक संग्रह किया गया है। प्राकृत चिकित्सक तथा केवल काष्ठ औषधियों द्वारा चिकित्सा करने वालों के लिए उत्तम पुस्तक है १॥)

१६ **कौमारभृत्य (नव्य बालरोग सहित)**—लेखक-श्री रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी ए. एम एस.। समस्त बाल रोगों पर प्राच्य-पाश्चात्यचिकित्सा विज्ञान पर आधारित सर्वाङ्गपूर्ण एवं विशाल ग्रन्थ। अनेक शिक्षा संस्थाओं द्वारा स्वीकृत ८)

१७ **गूलर गुण विकाश**—वैद्यभूषण श्री चन्द्रशेखरधर मिश्र लिखित गूलर के विविध चमत्कारिक गुणों के वर्णन युक्त अनुपम पुस्तक जिसकी प्रशंसा भारत के राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसाद जी ने भी की है। १२ वां संस्करण मूल्य १)

१८ **चरक संहिता**—मूल। भागीरथी टिप्पणी सहित। गुटका संस्करण। मूल्य ६)

१९ **चरक संहिता**—चरक रहस्य हिन्दी टीका नवीन वैज्ञानिक वक्तव्य सहित। शीघ्र प्रकाशित होगी।

२० **चक्रदत्त**—नवीन वैज्ञानिक भावार्थ सन्दीपनी भाषाटीका एव विविध परिशिष्ट सहित। नवीन टाईप सुन्दर छपाई पक्की जिल्द १०)

२१ **चिकित्सादर्श**—ले०-वैद्य राजेश्वरदत्त शास्त्री। औषध व्यवस्था लेखन अथवा नुसखा नवीसी का अनुपम ग्रन्थ ३॥)

२२ **जीवाणु विज्ञान**—ले० डा० घाणेकर। इस पुस्तक में तृणाणु (Bacteria) कीटाणु (Protoza) विषाणु (Virus) इत्यादि जीवाणुओं के विभिन्न श्रेणियों का विवरण उनके प्रकार उनमें उत्पन्न होने वाले रोग और उनकी सम्प्राप्ति तथा चिकित्सा इत्यादि विषयों का समावेश किया गया है। मूल्य १०)

२३ **तापमापन (थर्मामीटर)**—ले० डा० राजकुमार द्विवेदी। इस पुस्तकमें यन्त्र परिचय प्रकार तथा उनका पृथक्-पृथक् वर्णन, निर्माण, व्यवहार, तापक्रम सारिणी, तथा ज्वरों में तापक्रम की सारिणी आदि वर्णित है। ।)

२४ **तुलसीविज्ञान**—विविध रोगों पर तुलसी के ४४३ सफल सुलभ प्रयोगों का संग्रह। मूल्य ॥)

२५ **दोषकारणत्वमीमांसा**—आचार्य प्रियव्रत शर्मा एम ए., ए. एम एस. १)

२६ **द्रव्य-गुण-मंजूषा**—ले० आचार्य शिवदत्त शुक्ल ए एम एस.। शीघ्र प्रकाशित होगी।

२७ **नव परिभाषा**—कविराज श्री उपेन्द्रनाथदास कृत हिन्दी टीका सहित। मूल्य १॥।)

२८ **नव्य रोग निदानम् (माधवनिदान-परिशिष्टम्)**—इसमें माधव-निदानादि ग्रन्थों में लिखित रोगों के अतिरिक्त सम्पूर्ण नवीन रोगों का निदान सम्प्राप्ति-पूर्वरूप-लक्षण-साध्यासाध्य आदि का विवेचन है। मूल्य ॥।)

२९ **नाड़ी परीक्षा**—श्री ब्रह्मशंकरमिश्र कृत वैद्यप्रिया हिन्दी टीका सहित। मूल्य ।-)

३० **नाड़ीविज्ञानम्**—आयुर्वेदाचार्य प्रयागदत्त जोशी कृत विबोधिनी विस्तृत हिन्दी टीका सहित। मूल्य ।-)

३१ **नीम के उपयोग**—नीम के विविध अंगों का किस प्रकार और कब उपयोग होता है उसमें वर्णन है। मूल्य १)

३२ **प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा**—लेखक-कविराज ब्रह्मानन्द चन्द्रवंशी। आयुर्वेदिक, एलोपैथी एव यूनानी मतानुसार रोग का निदान लक्षण तथा चिकित्सा का सुन्दर वर्णन है। मूल्य ।-)

३३ **परिभाषाप्रबन्ध**—ले० आयुर्वेद बृहस्पति पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल। परिभाषा सम्बन्धी सभी आवश्यक विषयों का प्राच्य तथा पाश्चात्य दृष्टिकोण से ग्रन्थ में १७ अध्यायों में विस्तार के साथ विवेचन किया गया है। अपने विषय की सर्वोत्तम पुस्तक है। मूल्य २॥)

३४ **पाश्चात्य द्रव्यगुण विज्ञान (मेटेरिया मेडिका)** लेखक—डा० रामसुशील सिह १२)

३५ **प्रसूतिविज्ञान** (सचित्र) [A Text book of Midwifery] ले०-आ० बृहस्पति डा० रमानाथ द्विवेदी। अपने विषय की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक। मूल्य ६)

३६ **प्रारम्भिकउद्भिद् शास्त्र**—लेखक-वनस्पति विशेषज्ञ प्रोफेसर बलवन्त सिह एम एस-सी। आयुर्वेद के विद्यार्थियों एवं वैद्यों को उद्भिद शास्त्र का जितना ज्ञान होना चाहिए वह इस पुस्तक के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। शुद्ध वैज्ञानिक विषयों के अतिरिक्त वर्गीकरण के अध्याय में सभी चिकित्सोपयोगी वनस्पतियों का वर्णन किया गया है। मूल्य ४॥)

३७ **प्रारम्भिक भौतिकी**—लेखक—श्री निहालकरण सेठी। इसमें-वैज्ञानिक नाप-तोल, द्रव्य के सामान्य गुण, गति, जड़त्व और गुरुत्व, वेग सयोग, काम सामर्थ्य एव शक्ति, प्रकाश शब्द चुम्बक विद्युत, एक्सकिरण आदि विषयों का भौतिक दृष्टिकोण से विवेचन किया गया है। मूल्य ३॥)

३८ **प्रारम्भिक रसायन**—प्रो० श्री फूलदेवसहाय वर्मा। यह उन प्रारम्भिक पुस्तको में है जिनके द्वारा हिन्दी माध्यम से 'रसायन-विषय' का पठन-पाठन किया जाता है। सभी कालेजों मे पढाई जाती है। मूल्य ४॥)

३९ **फलसंरक्षण विज्ञान (Fruit Preservation)**—लेखक-डा० युगलकिशोर गुप्त आयुर्वेदाचार्य। अपने विषय की उत्तम पुस्तक है। फलों के सरक्षण-क्रिया के अतिरिक्त फलों को चटनी, अचार, मुरब्बा आदि बनाने और सुरक्षित रखने की विधि भी सरलता से समझाई गई है। मूल्य १)

४० **भारतीय रसपद्धति**—लेखक-कविराज अत्रिदेव गुप्त। भारतीय रस शास्त्र मे धातुओं आदि का शोधन मारण एक महत्व का विषय है। इस छोटी सी पुस्तिका में यह सरलता के साथ उत्तम प्रकार से समझाया है। इसके सिवा ओज, भावना, पुट आदि संदिग्ध विषय पूर्णत स्पष्ट कर दिए गए हैं। मूल्य १॥)

४१ **भावप्रकाश**—मूल मात्र। मूल्य पूर्वार्द्ध ३) मध्यमोत्तर खण्ड ७) संपूर्ण १०)

४२ **भावप्रकाश ज्वराधिकार**—नवीन वैज्ञानिक विद्योतिनी भाषा टीका परिशिष्ट सहित। छपाई कागज सभी सुन्दर। मूल्य ४)

४३ **भावप्रकाश निघण्टु**—सम्पादक-आयुर्वेदाचार्य गंगासहायपाण्डेय ए. एम. एस । विद्योतनी भाषा टीका एवं बृहद् परिशिष्ट सहित। अपने ढंग की बेजोड़ पुस्तक है। द्वितीय संस्करण मूल्य ७)

४४ **वस्तिशलाकाप्रवेश (एनिमा और कैथेटर)** पुस्तक छात्रों, वैद्यों तथा इस विषय के अभ्यासियों के लिए बहुत ही उपयोगी है। मूल्य ।≈)

४५ **मधु के उपयोग**—असली मधु की पहिचान, गुण, विविध रोगों पर प्रयोग विधि का इसमें वर्णन है। मूल्य १)

४६ **मदनपाल निघण्टु**—मूल टिप्पणी सहित। मूल्य १)

४७ **मर्म-विज्ञान-सचित्र**—ले०-श्री रामरक्ष पाठक आयुर्वेदाचार्य। मर्मों का वर्णन आयुर्वेद की विशेपता है। लेखक ने आयुर्वेद में वर्णित १०७ मर्मो की सचित्र विस्तृत व्याख्या की है। मूल्य ३॥)

४८ **माधव निदानम्**—वैद्य उमेशानन्द शास्त्री कृत सुधालहरी संस्कृत टीका सहित। मूल्य १॥)

४९ **माधवनिदानम्**—मधुकोप संस्कृत व्याख्या मनोरमा हिन्दी टीका सहित। मूल्य ६)

५० **मूत्र के रोग**—ले० डा० घाणेकर। (Diseases of urine, urinary system and allied diseases) मूत्र विज्ञान सम्बन्धि सर्वश्रेष्ठ नवीन प्रकाशन। मूल्य ६)

५१ **यकृत के रोग और उनकी चिकित्सा**—लेखक-वैद्य श्री सभाकान्त झा। इसमें यकृत, उसकी रचना, क्रिया, उसके विकार, विकारों के निदान, पूर्वरूप, संप्राप्ति, चिकित्सा, पित्ताशय और उसके विकारों का वर्णन सरल भाषा में किया गया है २)

५२ **योग-चिकित्सा**—लेखक-अत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार। रोग की कौन सी अवस्था में, उसके उपद्रव में कौन-कौन सी औषधियां किस अनुपान से किस समय सफलता पूर्वक व्यवहार की जा सकती हैं यह इस पुस्तक में बड़े ही उपयोगी ढंग से वर्णित है। चिकित्सकों के लिए बड़ी उपयोगी पुस्तक है। मूल्य ३॥)

५३ **योगरत्नाकर**—मूल गुटका संस्करण। मूल्य ६)

५४ **योगरत्नाकर**—विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित। चिकित्सा के उपलब्ध संग्रह ग्रन्थों में योगरत्नाकर सर्वोपरि माना गया है। काय चिकित्सा के जिन-जिन बातों का ज्ञान आवश्यक है उन विषयों की आश्रय निधि इस ग्रन्थ में भरी पड़ी है। ग्रन्थ बहुत सुन्दर नवीन चमकते टाईप में छपा है। मूल्य १८)

५५ **रक्त के रोग**—ले० डा० घाणेकर। नवीन आवृत्ति। १०)

५६ **रसादि परिज्ञान**—लेखक-आयुर्वेद वृहस्पति पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। षट् रसों के संबन्ध में पूर्व विवेचन, उसका क्रमिक विकाश सरल भाषा में वयोवृद्ध एवं अनुभवी लेखक ने इस पुस्तक में किया है। अनेक परीक्षाओं में पाठ्य-पुस्तक के रूप में स्वीकृत है। मूल्य २)

५७ **रसरत्नसमुच्चय**—सुरत्नोज्वला हिन्दी टीका सहित अभिनव संस्करण मूल्य ‘०)

५८ **रसरत्न समुच्चय**—मूल टिप्पणी सहित। मूल्य सुलभ संस्करण ३) उत्तम संस्करण ३॥)

५९ **रसाध्याय**—संस्कृत टीका सहित। यह रसशास्त्र का अति प्राचीन छोटा किन्तु उपयोगी अद्भुत ग्रंथ है। मूल्य ॥≈)

६० **रसायन खण्ड—(रसरत्नाकर का चतुर्थ खण्ड)**—इसमें रसायन तथा वाजीकरण इन दो तन्त्रों में बहुत से उपयोगी नूतन योगों का वर्णन किया गया है। मूल्य ॥)

६१ **रसार्णव नाम रसतन्त्रम्**—भागीरथी वृहद् टिप्पणी एवं विशेष विवरण से युक्त। कीमियागीरी, पारद के बधन प्रयोग, यंत्र मूषाओं का वर्णन, पारद के संस्कार, रस-उपरस-महारस-रत्न-धातु-उपधातु का शोधन-मारण आदि बताने वाली प्राचीन पुस्तक है। मूल्य २)

६२ **रसेन्द्रसार संग्रह**—बालबोधिनी-भागीरथी टिप्पणी सहित। मूल्य १॥)

६३ **रसेन्द्रसारसंग्रह**—(सचित्र) नवीन वैज्ञानिक रसचन्द्रिका हिन्दीटीका विमर्श परिशिष्ट सहित मूल्य ६)

६४ **रसेन्द्रसार संग्रह**—(सचित्र) गूढार्थसदीपिका संस्कृत टीका सहित। टीकाकार-आयुर्वेदाचार्य अम्बिकादत्त शास्त्री ५)

६५ **राजकीय औषधियोगसंग्रह**—आचार्य रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस मूल्य ७)

६६ **राष्ट्रीय चिकित्सा सिद्ध योग संग्रह**—लेखक-आयुर्वेदाचार्य श्री रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी ए एम एस। इसमें सिद्ध कषाय, चूर्ण, तैल, घृत, अवलेह, गुटिका, रस आदि के गुण, अनुपान और निर्माण का पूर्ण विवरण है मूल्य १॥)

६७ **रोगनामावली कोष**—लेखक-डा० दलजीतसिंह आयुर्वेद वृहस्पति। इस ग्रन्थ में सभी आयुर्वेदीय, यूनानी, डाक्टरी रोगों के नाम और परिचय—संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, अरबी, फार्सी, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं में अकारादि क्रमानुसार संग्रह किया है। जनता, ग्रन्थ लेखक, वैद्य, हकीम, डाक्टर सभी के लिए उपयोगी पुस्तक है। मूल्य ३॥)

६८ रोगनिवारण (Treatment) ले०-डा० शिवनाथ खन्ना एम. बी. बी. एस । मूल्य १४)

६९ रोगी परीक्षा (Physical Examinations)—ले० डा० शिवनाथ खन्ना एम बी. बी एस । पुस्तक में नवीन वैज्ञानिकपद्धति के आधारपर रोगीपरीक्षा की विधियों का विस्तारपूर्वक चित्रों तथा तालिकाओं द्वारा वर्णन किया है ६)

७० रोग परिचय (Clinical Medicine)—ले० डा० शिवनाथ खन्ना एम बी बी. एस । इसमें रोगों की व्याख्या वर्णन, कारक, मरक-विज्ञान, निदान, चिकित्सा आदि विषयों का बड़े विस्तार के साथ प्रतिपादन किया गया है १२॥।)

७१ वनौषधि दर्शिका—ले० वनस्पति विशेषज्ञ प्रोफेसर बलवन्त सिंह एम एस्-सी । इसमें लगभग ३०० वनौषधियों का संक्षिप्त वैज्ञानिक विवरण किया गया है । मूल्य २॥)

७२ वनौषधि चन्द्रोदय—इस विशाल निघण्टु ग्रंथ में भारतवर्ष में पैदा होने वाली समस्त वनस्पतियों, खनिज-द्रव्यों, विष-उपविषों के गुण धर्मों का सर्वाङ्गीण विवेचन है । प्रत्येक वस्तु के भिन्न-भिन्न भाषाओं के नाम, उत्पत्ति स्थान आयुर्वेद, यूनानी और आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से उनके गुण-धर्मों का वर्णन, भिन्न-भिन्न रोगों पर उनके उपयोग, उस वस्तु के मेल से बनने वाले सिद्ध प्रयोगों का विवेचन बहुत ही सुन्दर तथा विस्तार से किया है । अपने विषय का अद्वितीय ग्रंथ है । पृथक्-पृथक् प्रत्येक भाग का मूल्य ५) तथा १-१० भाग सम्पूर्ण ग्रंथ का मूल्य ४०)

७३ व्यवहारायुर्वेद-विषविज्ञान-अगदतन्त्र—लेखक-डा० युगल किशोर गुप्त एवं डा० रमानाथ द्विवेदी । हिन्दी में अपने विषय की सर्वोत्तम पुस्तक है । इण्डियन मेडीसिन बोर्ड, विद्यापीठ तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन आदि सभी आयुर्वेदिक संस्थाओं की परीक्षाओं के लिए स्वीकृत हैं । मूल्य ४॥)

७४ विषविज्ञान और अगदतन्त्र—लेखक—डा० युगलकिशोर गुप्त एवं डा० रमानाथ द्विवेदी । इसमें उन विषैले द्रव्यों का वर्णन है जिनसे प्रायः दुर्घटनायें होती हैं और जिनका आत्महत्या या परहत्या के लिए व्यवहार किया जाता है । पुस्तक हर वैद्य के लिए पठनीय है । मूल्य १॥।)

७५ वैद्यजीवन—अभिनव सुधा हिन्दी टीका टिप्पणी सहित । टीकाकार—श्री कालिकाचरणशास्त्री ए. एम एस. मूल्य १।)

७६ वैद्यक परिभाषा प्रदीप—टीकाकार—श्री प्रयागदत्त जोषी आयुर्वेदाचार्य । द्वितीय संस्करण । मूल्य १॥)

७७ वैद्यकीय सुभाषितावली—लेखक—डा० प्राणजीवन माणेकचन्द मेहता । वेद से लेकर वैद्यजीवन ग्रन्थ तक में आये हुये आयुर्वेदिक सुभाषितों का संग्रह । मूल संस्कृत, अंग्रेजी अनुवाद सहित । मूल्य २)

७८ शालाक्य तन्त्र (निमितन्त्र)—इस पुस्तक के ५ भागों में क्रमश: नासिका, शिर, कान, मुख एवं आँखों के रोगों के हेतु, निदान, सम्प्राप्ति आदि की विस्तृत विवेचना की गई है । जहा छात्रों के लिए यह पुस्तक पठनीय है वहा आधुनिक चिकित्सा के मर्मज्ञों के लिए यह अध्ययन-मनन योग्य ग्रन्थ है । मूल्य उत्तम संस्करण ६)

७९ शल्य तन्त्र में रोगी परीक्षा—(Clinical Methods in Surgery) डा० पी जे देश पाण्डे मूल्य ७)

८० शार्ङ्गधर संहिता—नवीन वैज्ञानिक विमर्शोपेत सुबोधिनी हिन्दी टीका सहित । परिष्कृत नवीन संस्करण ६)

८१ स्वस्थवृत्त समुच्चय—चरकाचार्य श्री राजेश्वरदत्त शास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित । ६॥)

८२ स्वास्थ्य संहिता—हिन्दी टीका सहित । रचयिता-आयुर्वेदाचार्य कविराज नानकचन्द्र वैद्य शास्त्री । स्वास्थ्य विज्ञान के सभी सम्भावित प्रश्नों का विवेचन इस पुस्तक में स्पष्ट रूपेण दिया है । अनिवार्य पठनीय ग्रन्थ मूल्य २॥)

८३ सिद्धभेषज संग्रह—आचार्य युगल किशोर गुप्त तथा डा० गंगासहाय पाण्डेय ए. एम एस. राज संस्करण ६)
उत्तम संस्करण ८) सुलभ संस्करण ७)

८४ सुश्रुत संहिता—आयुर्वेद तत्त्व संदीपिका हिन्दी टीका वैज्ञानिक विमर्श सहित । टीकाकार—कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री ए. एम एस । टीकाकार ने मूल संहिता के भावों को सरल भाषा में नवीन विज्ञान के साथ तुलना कर विषयों को अधिक स्पष्ट, तर्क सम्मत एवं बुद्धि ग्राह्य बना दिया है, जिससे छात्र, अध्यापक एवं चिकित्सकों के लिए यह सटीक संस्करण समान रूप से उपयोगी सिद्ध हो गया है । **सूत्र निदान स्थान** छपकर तैयार है मूल्य ७)
उत्तरतन्त्र शीघ्र प्रकाशित होगा । शेष स्थान भी क्रमश शीघ्र प्रकाशित होंगे ।

८५ सुश्रुत संहिता-सूत्र-निदान-शरीर स्थान—डा० कविराज अम्बिकादत्त एवं डा० घाणेकर कृत हिन्दी-टीका सहित १-२ भाग । मूल्य १५)

८६ सुश्रुत संहिता-सूत्र स्थान—डा० घाणेकर कृत हिन्दी टीका सहित । परिष्कृत संस्करण । मूल्य ६)

८७ **सुश्रुत संहिता-शरीर स्थान**—डा० घाणेकर कृत हिन्दी टीका सहित। इस टीका की प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखलाना है। द्वितीय संस्करण। मूल्य ८)

८८ **सुश्रुतसंहिता-शरीरस्थान**—नवीन वैज्ञानिक 'प्रभा'-'दर्पण' विस्तृत हिन्दी टीका सहित। प्रभा व्याख्या से मूल के वास्तविक अर्थ तथा 'दर्पण' व्याख्या से गूढ अर्थों को विस्तृत रूप से दर्शाया है। मूल्य ३)

८९ **सौश्रुती**—लेखक-आयुर्वेद बृहस्पति डा० रमानाथ द्विवेदी एम॰ ए, ए॰ एम॰ एस। प्राचीन शल्यतत्र पर लिखा हुआ यह ग्रन्थ अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। *प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में इस विषय की यत्र-तत्र बिखरी हुई सामग्री को क्रमबद्ध* एवं आधुनिक विज्ञान से आलोकित सरलभाषा में प्रस्तुत किया है। मूल्य उत्तम सस्करण ८॥)

एलोपैथिक मिक्श्चर्स

प्रस्तुत पुस्तक में अनुभवी चिकित्सकों द्वारा विभिन्न रोगों पर प्रयुक्त एवं अनुभूत सैकड़ों उत्तम मिश्रण दिए गए हैं। रोग विवरण के आरम्भ मे सामान्य लक्षण एवं मिश्रणों को विशिष्ट क्रम से रखा गया है। इजेक्शन के प्रयोग, मात्रा आदि का स्पष्ट निर्देश है। सक्षेप में चिकित्सा के सभी अंगों का विशद वर्णन है। मिश्रण-निर्माण की विधि, स्थान, उपकरण तथा कम्पाउण्डर के जानने योग्य बातों का समावेश स्वतंत्र अध्याय में ही किया गया है। पुस्तक आधुनिक चिकित्सकों के लिए अत्यंत उपादेय है। मूल्य २)

पेटेण्ट प्रेस्क्राइबर या पेटेण्ट मेडिसिन्स

डा० रमानाथ द्विवेदी

एम् ए, ए. एम् एस्. डी. एस्-सी. ए

४७० पृष्ठों के इस विशाल ग्रथ में ३६० से अधिक रोगों पर हजारों पेटेण्ट दवाओं का प्रयोग बताया गया है। रोग का नाम, उस पर विविध कंपनियों के योग, कंपनियों के नाम, प्रयोगविधि और मात्रा स्पष्ट लिखी गई है ताकि नवीनतम ढग से आप सरलतापूर्वक जटिल रोगों की भी चिकित्सा कर सकें। अंत में विष, उनके लक्षण तथा चिकित्सा आदि देकर पुस्तक की महत्ता और भी बढा दी गई है। जनसामान्य के लिये यह उपयोगी प्रकाशन है मूल्य ६)

स्टेथिस्कोप तथा नाड़ीपरीक्षा (सचित्र)

इस पुस्तक में स्टेथिस्कोप की बनावट, प्रकार, परीक्षा, श्वास-प्रश्वास की ध्वनियों का वर्णन, फुफ्फुस, रक्तसवहन, हृदय का कार्य, कपाटों की विकृति आदि तथा नाड़ीपरीक्षा सम्बन्धी सभी ज्ञातव्य विषयों का वर्णन बड़े ही मनोयोग से किया गया है। काशी हिन्दूविश्वविद्यालय के अध्यापक एवं चिकित्सकों के सहयोग से निर्मित यह पुस्तक बेजोड़ है ।॥)

सशोधित, परिवर्द्धित, नवीन सस्करण

आयुर्वेद-प्रदीप

(आयुर्वेदिक-एलोपैथिक गाइड)

डा० राजकुमार द्विवेदी डी. आई एम. एस

डा० गंगासहाय पाण्डेय ए. एम. एस.

पृ० स० लगभग ९००, उत्तम कागज, नया टाइप, मनोरम आवरण। द्वितीय सस्करण मूल्य १०)

प्रस्तुत ग्रन्थ में प्राच्य तथा पाश्चात्य विषयों का समन्वय, उसका इतिहास, प्रसार तथा अन्यपद्धतिजन्यत्व स्पष्ट वर्णित है। प्रत्येक अग तथा धातूपधातुओं की रचना एव कार्य, सल मूत्रादि विभिन्न परीक्षाएँ, विटामिन, संक्रामक रोग तथा उनके उपाय, नाना प्रकार के पथ्य विधान, एलोपैथिक-आयुर्वेदिक समस्त विधानों का अलग-अलग वर्णन, दोनों प्रकार की सम्पूर्ण औषधों के निर्माण, प्रयोग एवं गुण-धर्म-विज्ञान, हिन्दी-अँगरेजी-नामावली, समस्त रोगों की उभयविध व्यवस्थित चिकित्सा, तत्सबधी आवश्यक उपकरण, चिकित्सक के वैधानिक कर्त्तव्याधिकार, व्यवहारायुर्वेद, आदि सब अधिकतम ज्ञातव्य सामग्री सरल एव सरस भाषा में वर्णित है। इसे पढ लेने के बाद आयुर्वेद तथा एलोपैथ से सबधित कोई विषय अज्ञात नही रह जाता। चिकित्सा में सहस्रशोनुभूत योगों की ही प्रधानता है। हम-आप इसे 'गागर में सागर' कह सकते हैं।

अभिनव-शरीरक्रियाविज्ञान (सचित्र)

(A TEXT BOOK OF MODERN PHYSIOLOGY)

आचार्य प्रियव्रत शर्मा एम० ए०, ए० एम० एस०

भारतवर्ष के प्राय सभी आयुर्वेद महाविद्यालयों में तथा मेडिकल कालेजो में भी हिन्दी माध्यम का प्रवेश होने जारहा है। किन्तु अभी तक इस विषय की कोई ऐसी पुस्तक हिन्दी में नहीं थी जिसमें आधुनिक शरीर क्रिया विज्ञान के सपूर्ण विषयों का वैज्ञानिक शैली से संकलन किया गया हो। पृष्ठ सख्या ६५०, उत्तम कागज, नवीन टाईप पक्की जिल्द सैकड़ों चित्रों से युक्त पुस्तक का लागत मात्र मूल्य ७॥)

—: मार्तण्ड के आयुर्वेदिक इंजेक्शनों की सफलता के कारण :—

जहां तक औषधियों के घोल (Solutions) निर्माण करने में जल प्रयोग करने तथा एम्पुलों (Ampoules) के कांच की कृमि-हीनता और श्रेष्ठता (Perfect Sterility and finest quality) का सम्बन्ध है-इंजेक्शन के लिए एम्पुल तैयार करने में विशेष ध्यान और अत्यन्त सावधानी की आवश्यता है।

निम्न बातों पर विशेष ध्यान रखते हुए इतने सस्ते मूल्य पर सूचीवेध निर्माण करना अन्य किसी भी लेबोरेट्री के लिए असम्भव है।

१—हमारी अनुसन्धानशाला मे घोल निर्माण करने के लिए सदा त्रि-परिश्रुत जल प्रयोग होता है, जो कि क्षार रहित (Alkali free) कांच के बने विशुद्ध यन्त्र से निकाला जाता है। प्रयोग में लाने से पूर्व वैज्ञानिक पद्धति से, उसकी दो बार परीक्षा की जाती है। हमारे यहां सर्वदा स्टेन्डर्ड और क्षार रहित काच से बने एम्पुल दवा भरने के काम मे लाये जाते हैं।

२—पायरोजन टेस्ट करने के लिए हमारी प्रयोगशाला में १०० से ऊपर श्वेत शशक (Rabits) पाले गये है जिन पर इंजेक्शनों द्वारा पायरोजंस (Pyrogens) की पूर्ण परीक्षा की जाती है। पायरोजन्स एक प्रकार के कार्बनिक कम्पाउन्ड (Organic Proteinous Substances) होते हैं, इनकी उत्पत्ति पानी में मौजूद जीवाणुओं के कारण होती है, इनका प्रभाव मनुष्यों तथा जानवरों पर पड़ता है। इनके शरीर मे इंजेक्शन द्वारा प्रवेश करने पर ताप वृद्धि (Temperature) एवं ज्वरजनित शीत (कम्प) का आभास होता है। मार्तण्ड द्वारा निर्मित इंजेक्शन पूर्णतया पायरोजनरहित होते हैं यही कारण है कि उनके प्रयोग के बाद बिल्कुल ज्वर नहीं होता।

३—प्रत्येक दशा में घोलों (Solutions) की आधुनिक विज्ञान की प्रचलित पद्धति द्वारा क्षारीयता अम्लता (पी० एच० वैल्यू) की परीक्षा बहुत सावधानीपूर्वक की जाती है।

घोल चूंकि शरीर में सूचीवेध द्वारा दिया जाता है अतः उसका Neutral होना परमावश्यक है। यदि घोल क्षारीय (Alkalife) है तो वह जिस स्थान पर सूचीवेध द्वारा शरीर में भरा जायगा उसके आसपास के तन्तु (Tissues) गला देगा जिससे वह स्थान पक जायगा तथा गहरा घाव भी होजायगा। इसके विपरीत यदि वह आम्लिक (Acidic) है तो उस स्थान के आसपास जहा कि दवा को सूचीवेध द्वारा दिया गया है, लाल तथा शोथयुक्त (Inflamed) कर देगा। अतः यह आवश्यक है कि उसे शिथिल बनाया जाय। घोल के अम्लीय और क्षारीय गुण जानने के लिए उसकी पी० एच० की परीक्षा की जाती है।

यही कारण है कि मार्तण्ड इंजेक्शनो के लगाने के बाद उस स्थान पर न कोई शोथ होता है और न लालिमा, इसीलिए ये दैनिक प्रयोग में निरापद साबित हुए है।

४—स्टेन्डर्ड मैथड्स के अनुसार सब तरह के घोल विशेषतया कृमि रहित (Sterilized) और स्वच्छ करके एम्पुलो में भर दिए जाते हैं और सीलिंग से पूर्व पुनः एक बार और टेस्ट कर लिए जाते हैं। यही कारण है कि हमारे इंजेक्शन कभी खराब नहीं हो सकते और उनका प्रभाव तुरन्त होता है।

५—इंजेक्शनों के गुणों को जानने के लिए हर इंजेक्शनों का नेक्रोसिस (Test of Necrosis) परीक्षण किया जाता है। यह परीक्षण स्वस्थ जानवरों जैसे सफेद चूहे (Rats) गिनीपिग (Guina Pigs) खरगोश (Rabbits) आदि जानवरों पर किया जाता है। सूचीवेध के गुण व दोषो का पता इस टैस्ट से लग जाता है। यह परीक्षण करके ही यह जानते है कि अमुक दवा बनाई गई है उसके अमुक गुण होंगे। शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों पर उसका प्रभाव देखा जाता है।

६—मार्तण्ड फार्मेस्युटिकल्स मे लाखों रुपये की आधुनिक ढंग की सब ही मशीनें लगी हुई हैं; तथा निर्माण और विश्लेषण का काम पूर्ण वैज्ञानिक तरीके पर होता है; सरकार की आज्ञा और कानून के अनुसार मार्तण्ड लैबोरेट्रीज में आयुर्वेदिक इंजेक्शनों के निर्माण और परीक्षण के लिए सरकार द्वारा क्वालीफाइड फार्मास्युटिकल्स साइन्स के ग्रेजुएट कैमिस्ट नौकरी पर रहते हैं; जिनकी सख्त देख-रेख और भारी उत्तरदायित्व में यह उत्तम निर्माण-कार्य उ० प्रदे० सरकार द्वारा प्रदत्त इंजेक्शन निर्माण लाइसेंस के आधीन होता है—यही कारण है कि मार्तण्ड के आयुर्वेदिक इंजेक्शनों का भारत मे सर्व प्रथम स्थान है और इनकी माग बढ़ती जा रही है। ये बहुत दिनों तक रक्खे रहने पर भी खराब नहीं होते। इनका प्रभाव स्थायी एवं आशु गुणकर है।

गुप्तसिद्ध प्रयोगांक

१—सर्वरक्षा मंत्रौषधि सार संग्रह

इस पुस्तक में हर प्रकार के झारने के असली कंठस्थ मत्र हैं तथा अनेक रोगों पर आजमाये हुए औषधियों के पाठ हैं। मत्र, जैसे—सर्प, बिच्छू, जहर, बुखार, वाता, चोरा पेट दर्द, पेट के रोग, घाव, माथा, आंख के दर्द व फुल्ला, दांत के दर्द, थनैला, गाहा आदि झारने के असली मंत्र हैं। विष पर हाथ चलाने, थाली साटने गांडइ बांधने का मंत्र है और इन रोगों पर आजमाये हुए औषधियों के पाठ हैं और भूत-प्रेतादि झारने का मंत्र है तथा लोटा घुमाने, चोरी गये हुए पर कटोरा चलाने का मत्र, नोह पर चोरी गये माल का पता लगाने के अनेकों प्रकार के मंत्र हैं। खांड़ बांधने, लाठी बांधने, देह बांधने, अग्निवान शीतल करने, अग्नि बुझाने का मंत्र और हनुमान देव को प्रगट करने के तीन महामंत्र हैं, पीर साहेब को हाजिर करने का मत्र, फल आदि मंगाने का मंत्र, बथान खूटने, खुरहिया, ढरका, कान्ह, कीड़ा आदि झारने के मत्र हैं और अनेकों प्रकार के आजमाये हुए यंत्र भी हैं सर्वरोग झारने का असली श्री रामरक्षा मत्र भी है। पुस्तक के आदि मे यात्रा बनाने और सगुण निकालने का विचार भी है। कहां तक लिखा जाय, पुस्तक मगाकर स्वय देखिए। मूल्य केवल ६।।।=) रु० है।

२—प्रातःकालीन भजन संग्रह

भोर के समय लोगों को जिस प्रातःकालीन भजन को गाते सुनते हैं वही भजन इस पुस्तक में है। जैसे—प्राण से प्रिय रामजी हमरो। मैं न जिअब बिनु राम जननी। शरण गहो सियाराम के पियाजी। जिलवहु जी हनुमान लषण को। जागु अब भये भोर वन्दे जाहुजी वसुदेव गोकुला। द्वारिका तुम जाहु द्विज हो। देखहुजी एक बाला जोगी मेरे द्वार पर आया है। भजन, जैसे—चलिजा गाढ़े मे होहू सहाय पवन सुत नन्दन। विवाह के समय का मंगल—राजा जनकजी कठिन प्रण कैलन अब सिया रहलै कुमार। जबहीं महादेव व्याहन चलला भूप सब ले ले संग साथ हे। सोहर—सभवा लगाये राजा दशरथ चेरिया अरज करेजी। समन भदौआ केरि रतिया के निशि अधिरतिया ने हे। आरती—आरती कीजै श्री रामचन्द्र जी के हरिहर। जसुमति आरती उतारे हे आजु गोकुल गृह पाहुना। इसी प्रकार अनेकों प्रकार के भजन, मंगल, आरती और भगवान की स्तुतिया हैं जिनके मानस हृदय में भगवान् की भक्ति निवास करती है वे इस पुस्तक को मंगाकर भगवान् का गुणानुवाद गावें। मूल्य सिर्फ २।।) रु० है।

३—बावन जंजीरा

बावन जंजीरा रामरक्षा मंत्र के समान अनेक प्रकार के व्याधियों के झारने के काम में आता है। इसमे झारने मे विच्छू, सांप, डकरा, अफीम आदि के विष उतर जाते है तथा उन्माद और मृगी को झारने से आराम हो जाता है। इसके सिद्ध करने की विधि भी लिखी गई है। बावन जंजीरा के अलावे और भी अनेकों प्रकार के जंजीरें हैं जिससे झारने से भूत-प्रेत पिशाच आदि भाग जाते हैं तथा देह बाँधने, भूत भगाने, विकट मार्ग में बाघ, हुँडार, सियार, कुत्ता भालू, बिलार, चोर, सर्प, विच्छू आदि से बचने और दाढ़ दर्द, कीड़ा और कुत्ते के विष झारने के जंजीरें हैं तथा विष झारने के विरहुली मंत्र भी हैं बवासीर में खून बन्द करने के लिए पानी पढ़ने, थन के घाव झारने, अग्नि बुझाने तथा और भी अनेकों प्रकार के जंजीरे है। इसके आगे सगुण निकालने का "वंशावली सगनौती" विचार है जिससे अपना मनोरथ होने या न होने का शुभाशुभ फल देख सकते हैं। अंत में अनेको प्रकार के कबीर साहेब की स्तुतियाँ हैं। शुरू में कबीर साहेब का सुन्दर चित्र है। अक्षर बहुत सुन्दर साफ छपा हुआ है। मूल्य १।।) रु० है। डाकखर्च अलग।

नोट—उपरोक्त तीनों पुस्तकें एक साथ मँगानेवाले सज्जनों को केवल १०) रुपये मे ही मिलेगी। डाक खर्च अलग।

पता—पद्म पुस्तकालय, मु० पो०—नोआवाँ, थाना-अस्थावाँ,
जिला—पटना (बिहार)

गुप्तसिद्ध प्रयोगाङ्क (चतुर्थ भाग) के

माननीय लेखकों की सूची

(अकारादि क्रम से)

भूल सुधार

पृष्ठ २४—श्री. स्वामी दण्डपादाचार्य आश्र का स्थायी पता निम्न प्रकार समझें—
ठि० रामदुलारी आश्रम (सिनेमा के पीछे वाली सड़क, ऋषीकेश (देहरादून)

पृष्ठ ६८—श्री प० कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी के पते में जो न० ६ १६ छपा है वह गलत है, उसे पाठक ६६६ समझें।

पृष्ठ ६३—कविराज सतीन्द्रनाथ वसु L.A.M.S. अव श्री. मयानन्द आयुर्वेद विद्यालय अमृतसर के प्रिंसीपल पद पर पहुँच गए हैं पाठक पते मे सुधार करले।

पृष्ठ २५५ औ २५६ - इन दोनों पृष्ठों का मेटर भूल से बदल गया है पाठक पृष्ठ २२५ के बाद पृष्ठ २५६ पढे और उसके बाद पृष्ठ २५५ पढ़ें।

पृष्ठ ४७८—इस पृष्ठ के अन्त मे—शेपांश पृष्ठ ४७४ पर गलत छपा है, इसके आगे का मैटर पृष्ठ ४७६ पर ही है।

पृष्ठ ४७४ इस पृष्ठ पर 'पृष्ठ ४७८ वा शेपांक' के स्थान पर पृष्ठ ४६८ का शेपांक पाठक करलें।

प्रकाशकीय निवेदन

१—ग्राहकों द्वारा चिरप्रतीक्षित गुप्तसिद्ध प्रयोगांक आपकी सेवा मे प्रस्तुत करते हुए हमको प्रसन्नता है। इस विशेषांक के लिये प्रयोगादि संकलन, लेखक निर्माण एवं प्रकाशन मे अनेक विघ्न बाधायें आईं, किन्तु अपने कृपालु शुभेच्छुओं के सहयोग से उन बाधाओं को पार किया। अपनी सामर्थ्य एवं ज्ञान से हमने इस विशेषांक को अधिक से अधिक उपयोगी और सुन्दर बनाने का भरसक प्रयत्न किया है। इसमें हम कहा तक सफल हुये हैं यह हमारा पाठक समुदाय और विद्वत् समाज ही बता सकेगा, अपनी कृति और अपनी चीज़ तो हरेक को उत्तम ही प्रतीत होती है।

२—इस विशेषांक के साहित्य-संकलन एवं सम्पादन मे हमको हमारे सह०-सम्पादक श्री पं० मदनमोहन लाल जी चरौरे "कविकान्त" आयुर्वेदाचार्य से बहुत सहायता मिली है, अतएव वे धन्यवाद के पात्र हैं।

३—इस वर्ष सरकारी प्रतिबन्धों के कारण अखबारी कागज मिलने मे बड़ा झंझट, भागदौड़ तथा समय लग गया, और इसीलिये सब कुछ प्रबन्ध होते हुये भी यह विशेषांक दो माह विलम्ब से प्रकाशित कर सके सके हैं। एक ओर तो प्रेस कागज के अभाव मे लगभग दो माह बन्द रहा और दूसरी ओर विशेषांक के प्रकाशन मे असाधारण परिश्रम करने पर भी दो माह का विलम्ब हुआ। विशेषांक की छपाई १५ दिसम्बर से प्रारम्भ कर देनी थी किन्तु कागज के अभाव के कारण उसकी छपाई २५ फरवरी से प्रारम्भ की जा सकी। ऐसी परिस्थिति में विलम्ब जन्य कष्ट के लिये हमारे ग्राहक अवश्य ही हमको क्षमा करेंगे तथा पूर्ववत् धन्वन्तरि के प्रति स्नेह बनाए रखेंगे।

४—धन्वन्तरि के प्रकाशन में हमको अत्यधिक घाटा रहता है। यदि आप स्वयं शांत हृदय से विचार करेंगें तो आप भी समझ सकेंगे कि हमको इसके प्रकाशन में घाटा रहता है। प्रति ग्राहक से हम ५।।) लेते हैं, इसमे से वर्ष के सभी अङ्क भेजने में हमको १) पोस्ट व्यय मे व्यय करना पड़ता है, प्रतिमाह पते लिखाने, विशेषांक इसके साथ के लिये तथा अन्य व्यवस्था पर भी लगभग ॥) प्रति ग्राहक व्यय हो जाता है। अब मात्र ५) में १५०० पृष्ठों का साहित्य बना होता है। बड़े साइज के १५०० पृष्ठों की पुस्तक प्रकाशित हो तब तो कोई भी प्रकाशक उसे २०) से कम मे बिक्री नहीं देगा। अब विचारिये कहाँ २०) और कहाँ ५)।

५—इतना अधिक घाटा व्यय हम अपने कृपालु ग्राहकों के सहयोग के बल भरोसे ही करते हैं तथा इस बार विशेष रूप से निवेदन करते हैं कि प्रत्येक ग्राहक प्रयत्न करके १-१, २-२ नवीन ग्राहक अवश्य ही बनाने की कृपा करें। नवीन ग्राहक बनाने के उपलक्ष मे हम आपको धन्यवाद के अतिरिक्त कुछ नहीं दे सकेंगे, तथापि हमको विश्वास है कि धन्वन्तरि की उन्नति और प्रचार को आप अपनी तथा आयुर्वेद की उन्नति और प्रचार मानकर धन्वन्तरि के नवीन ग्राहक शीघ्र ही बनाने का प्रयत्न करेंगे।

६—इस विशेषांक के प्रकाशन में विलम्ब हुआ है। नियमतः हमको इस समय तक जून का अंक भी ग्राहकों की सेवा मे भेज देना चाहिये था। अतएव आगामी अंक हम बहुत शीघ्रता से भेजने का प्रयत्न करेंगे। विशेषांक के भेजने, उनके रुपया आने, रजिस्टरों मे नोट होने, नव ग्राहकों के पते लिखने में लगभग १ माह का समय अवश्य लग जायगा अतएव इसके बाद का अंक तो हम १ माह बाद ही भेज सकेंगे, किन्तु उससे आगे के अंक जल्दी-जल्दी भेजेंगे।

७—इसी निवेदन के बाद हमने प्रयोग परीक्षा स्मरण-पत्र प्रकाशित किया है। इस विशेषांक मे प्रकाशित प्रयोगों को आप अपने रोगियों पर व्यवहार करेंगे ही, उनके विषय में आपको जो अनुभव हों उस अनुभव को इस स्थान पर लिखते जायं। इससे आपको भी सुविधा रहेगी, तथा इसका आगामी संस्करण प्रकाशित करते समय हम प्रयोगों के विषय मे आपसे अपने अनुभव भेजने की प्रार्थना करेंगे उस समय भी आप इस फार्म को निकाल कर अथवा इसके आधार पर अनुभव लिख कर भेज सकेंगे।

तदेव युक्तं भेषज्यं यदारोग्याय कल्पते ।
स चैव भिषजां श्रेष्ठो रोगेभ्यो यः प्रमोचयेत् ॥ —च. सू. १-१३२ ।

भाग ३२
अङ्क २-३

गुप्तसिद्ध प्रयोगाङ्क (चतुर्थ भाग)

फरवरी-मार्च
१९५८

सम्पादक की लेखनी से

धन्वन्तरि के माधव-निदानांक को प्रकाशित करने के पश्चात् सम्पादक मण्डल के समक्ष यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि धन्वन्तरि का आगामी विशेषाङ्क किस विषय पर प्रकाशित किया जाय। पूर्व की भांति अनेक लेखक और पाठकों ने अपने-अपने भिन्न २ मन्तव्य कार्यालय में उपस्थित किए, पर अन्तिम निर्णय बहुमत के आधार पर यही किया गया कि आगामी विशेषाङ्क गुप्तसिद्ध प्रयोगाङ्क प्रकाशित किया जाय जो सभी गुप्तसिद्ध प्रयोगाङ्कों को मिला कर चौथा भाग होगा। यह निर्णय-योजना पत्र में प्रसारित करदी गई और तदनुरूप लेखों के विषय में पर्याप्त प्रकाश डाला गया। विद्वान लेखकों और सुरुचिपूर्ण पाठकों को योजना बहुत पसन्द आई और उसीका साकार स्वरूप यह विशाल विशेषांक आपके समक्ष उपस्थित है।

विशेषांक के प्रकाशन में धन्वन्तरि एक विशेष स्थान रखता है और इसको आयुर्वेद के अनेक रूप के प्रकाशन करने का श्रेय प्राप्त है। वास्तव में यह श्रेय उसके विशाल पाठक समुदाय को ही है जिनके सहयोग, सहानुभूति, सुरुचि और सौष्ठव-सौहार्द्र के कारण यह उच्च स्थान प्राप्त हुआ है। गुप्तसिद्ध प्रयोगांक नाम से छोटे-बड़े जब तीन अङ्क प्रकाशित होगये तो इस चौथे अङ्क की आवश्यकता भी उसी आधार पर आकी गई जिस ज्योति को लेकर यह पत्र चला था। पूर्व काल से आयुर्वेद का जो

भी विशाल रूप रहा हो पर वर्तमान काल में जो अवशेष ग्रन्थ उपलब्ध है वही उसके प्रमाण मात्र है तथा उसके अतिरिक्त समस्त आर्यावर्त की नस-नस में जो व्यापक परम्परागत आयुर्वेद विद्यमान चला आरहा है उसका यदि विधिवत सकलन किया जाय तो श्रेष्ठ होगा जिससे एक तो नष्ट होने से उसकी सुरक्षा हो सकेगी तथा आयुर्वेद ग्रंथ-प्रणेता उन रत्नो मे से कुछ मौलिक अशो को छाट कर अपने विशाल वाङ्मय मे ग्रथित कर सकेंगे।

गुप्तसिद्ध प्रयोगाङ्क का उद्देश्य अपने नामानुसार यही व्यक्त होना है कि वे प्रयोग जो गुप्त हैं, अभी तक प्रकट नहीं हुए या वे पयोग जिनको लोग गुप्त (छिपा कर) ही रखना चाहते हैं किसी प्रकार प्रकट हो। आयुर्वेद जगत मे चिकित्सक मात्र की यह इच्छा होती है कि प्रत्येक रोग मे जिसकी वे चिकित्सा करते है ऐसे योगों को बरता जाये जिससे रोगी तत्क्षण लाभ अनुभव कर सके और भयकर से भयंकर दशा मे भी असाध्य कहे जाने वाले रोगी रोग से मुक्त होकर उनकी पद्धति की मुक्त-कंठ से प्रशसा कर सकें, उनकी पैथी और ज्ञान को प्रथम स्थान मिल सके और जगत मे कीर्तिवान हो सकें। इन प्रयोगो के विषय मे उनकी यह भी विशेष अभिरुचि रही कि जो योग उनके पास है वे अन्य को मालूम न होसके और न रोगी ही उन्हे जान सके जिनको वे अपनी चिकित्सा से साध्य करते हैं। इस विचारधारा के प्रमाण मे उनके पास एक युक्ति है। वे कहते है मत्र और औषधि के प्रयोग तब ही सफल होते है जब उनको छिपा कर रखा जावे।

"योग युक्ति तप मत्र प्रभाऊ।
फलै तबै जब करिय दुराऊ॥"

श्री गोस्वामी तुलसीदास जी के बचनो के अतिरिक्त वे नीति का वाक्य भी उद्धृत करते हैं कि—

आयुर्वित्त गृहछिद्रं रहस्य मत्रमौषधम्।
तपो दानापमानौच नव गोप्यानि कारयेत्॥

इन नव बातो के अप्रकटीकरण मे हमारा तात्पर्य केवल औषधि से है। आर्ष काल में यह गोपनीय पद औषधि को इतना नहीं मिला था, यह तो [illegible] काल से अधिक प्रचलित हुआ और चिकित्सकों ने अपना जीवनाधार माना। ऋषियों मे आई हुई वह विशालता नष्ट होगई और संकुचितता आ उपस्थित हुई। पर समय ऐसा ही था जब हमें कई वस्तुयें गुप्त रखनी पड़तीं थीं. वही अजस्रधारा आज तक चली आरही है। कहा जाता है कि ऐसी उपादेय या जानें लाख की बातें हम प्रकट करते रहे तो हमारी जीविका कैसे चलेगी? हमें. अनमोल ज्ञान रहस्य को यों ही प्रकट करना कहा तक उपयुक्त है जब तक उसके बदले मे उचित पुरस्कार न मिले अथवा उन योगो के प्रकट करने से रोगी की श्रद्धा घट जायेगी क्योंकि उनके कुछ ऐसे घटक होसकते हैं जिनको रोगी किसी भी मूल्य पर लेना नहीं चाहेगा. ऐसी दशा मे सफल प्रयोग भी असफल होजायेगे। उदाहरण के लिये किसी पौष्टिक योग मे यदि मांसार्क है तो शायद ही कोई शाकाहारी प्रयोग करें। ऐसी अनेक भावनाओं से वे गुप्तता पर बल देते है और उस गुप्त धनको हृदय में संजोये स्वर्गारोहण कर जाते है, और वह अद्वितीय ज्ञान उनके साथ ही नष्ट हो जाता है। जिस प्रयोग के बल पर वे अतुल धन और सम्मान प्राप्त करते रहे एव आयुर्वेद का नाम उज्वल करते रहे वह फिर किसी के काम नहीं आया।

इस कलुषित भावना से देश और आयुर्वेद ससार का कितना बड़ा अनिष्ट हुआ है, इससे विद्वान भली-भांति परिचित हैं। उपरोक्त आयु, धन, गृह-छिद्रादि किसी प्रकार समय पर प्रकट हो भी जाते हैं, पर औषधि के विषय मे यह उक्ति अब भी पूर्ववत ज्यों की त्यों विद्यमान है। यह औषधि गुप्त-रहस्य भी चिकित्सा क्षेत्र के दो भागो मे विभक्त है, एक चिकित्सक समुदाय, दूसरा रोगी क्षेत्र। जहां तक रोगी क्षेत्र का सम्बन्ध है वैद्य और डाक्टर दोनों ही समान विधि अपनाते हैं और वह कुछ उचित भी है। रोगी को जहा तक हो औषधि से अनभिज्ञ ही रखना चाहिए, क्योंकि चिकित्सक को चिकित्सा में झंझट आता है और रोगी व्यर्थ की ऊहा-पोह

में पड़ जाता है। उसको औषधि यदि नहीं बताई जाय तो कोई हानि नहीं। पर चिकित्सा क्षेत्र की भलाई की दृष्टि से अपनी प्रतिभा और ज्ञान चिकित्सक जगत के सामने अवश्य रखना चाहिए, वह चाहे परिषदों के द्वारा हो या पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा या अन्य रीति से जैसे वह रखना चाहे, रखे। एक चिकित्सक के पास जो भी अनुभव है वह राष्ट्र की सम्पत्ति है और वह सम्पत्ति नष्ट नहीं होनी चाहिये। यदि वह अन्यो के सामने अपने अनुभव रखने मे संकोच करता है तो अपने वंश के उत्तराधिकारियों को वह अनुभव लेख बद्ध करके अवश्य सौंप जाय और उसकी रक्षा का प्रयत्न करें।

यदि हम कुछ समय पूर्व से ऐसा ही करते होते तो हमारे सामने इस समय कुछ और ही अनमोल भंडार होता। भारत के कौने-कौने के वे वयोवृद्ध वैद्य जो इने-गिने विद्वानो में थे, आयुर्वेद के अष्टांगो पर पूर्ण अधिकार था, जिनको विशाल जीवन का अनुभव था और सहस्रों रोगियो की आयुर्वेद के त्रिदोष सिद्धांत से चिकित्सा की थी, अनेक पुरुषो के आश्रय में रह कर अनोखे बहुमूल्य योगों को बनाकर असंख्य रोगियो पर अनुभव किया था; आज देश में नहीं रहे। वृद्ध चिकित्सक बराबर जा रहे हैं, उनके स्थान की पूर्ति करने वाले विद्वान पैदा नहीं हो रहे है। ऐसी दशा में उनके योग ही उनका प्रतिनिधित्व कर सकते हैं पर वह नहीं हो रहा है। वे योग उनके साथ ही गये। इधर के कुछ विद्वानो ने अपने कुछ योग अवश्य प्रकाशित कराये हैं पर अभी भी बहुत कम है।

आयुर्वेद इतना व्यापक है कि इसके त्रिदोषवाद के सिद्धान्त पर ठहरी हुई चिकित्सा पद्धति मे सहस्रो द्रव्य कार्य में आते है। उन द्रव्यो की कल्पनाऐं ही वैद्यों की निजी सम्पत्ति है जिसे वे प्रान्त या वंशानुसार बनाकर बरतते है तथा इनके सम्मिश्रण ही एक योग का रूप धारण करते है जिसे वे अपनी चिकित्सा में अनेक रोगियो पर अनुभूत करते हैं। यों अनुभूत योगों की परम्परा चल पड़ती है और यह परम्परा सहस्रो वर्षों से चली आ रही है। ऐसे अनेक वैद्य हैं जिनके यहां १०-२० पीढ़ियो से बराबर चिकित्सा व्यवसाय चला आ रहा है और वे मुख्य-मुख्य योग वंशानुगत बरतते चले आ रहे है। या वे शास्त्रीय योग जो किसी खास अधिकार में वर्णित है पर चिकित्सक ने उन योगो को भिन्न भिन्न रोगों मे अकेले या अन्य योगो के साथ दे-देकर विशेष अनुभव प्राप्त कर लिया है। या एक निश्चित् पैथी के द्रव्यो या कल्पनाओं को दूसरी पैथी या शाखाओ के द्रव्य और योगों के साथ सम्मिलित कर रोगी को देकर अनुभव प्राप्त किया है, अथवा किन्हीं योगो में कुछ परिवर्तन या परिवर्धन कर कुछ गुणों की उत्कृष्टता प्राप्त करली है; ये ही गुप्तसिद्ध प्रयोग कहलाने लगते है और उनके बल पर ही वे मान्यता प्राप्त करते है। ऐसे योग और ज्ञान को ही जो बिखरा हुआ है संग्रह करना हमारा परम उद्देश्य है और इसी भावना से हमने धन्वन्तरि के गुप्तसिद्ध प्रयोगांक के चार भाग प्रकाशित किये हैं।

आयुर्वेदीय ग्रन्थो मे योगो की कमी नहीं है, एक-एक ग्रन्थ मे सहस्रो प्रयोग है। उनकी विशालता ही आज के युग मे एक बड़ी समस्या बन गयी है। जो चिकित्सक आज चिकित्सा प्रारम्भ करना चाहता है, वह उन सहस्रो प्रयोगो में से रसादिक या काष्ठादिक कौन कौन से प्रयोगो को अपनी चिकित्सा मे व्यवहार करे, यह एक उलझन उसके सामने आजाती है। वह जीवन मे कभी प्रयोगो को अनुभूत नहीं कर सकता, सिवाय दस-बीस के। ऐसी परिस्थिति में जो पूर्व पुरुष उस क्षेत्र मे विद्यमान है वे ही उसके मार्ग-प्रदर्शक है और उनका अनुभव ही उसका सहारा मात्र है जिस पर चल कर वह कुछ दृढ़ता का अनुभव कर सकता है। इस प्रकार शास्त्रीय योग भी पुनः गुप्तसिद्ध योग हो जाते है।

इन गुप्तसिद्ध प्रयोगो को संग्रह करने का कार्य बड़ा ही दुरूह है। इन योगो के संग्रह करने मे समय,

श्रम तथा अर्थ की आवश्यकता है। धन्वन्तरि इस लक्ष्य की पूर्ति मे संलग्न है और अपने सीमित साधनों से निरन्तर उस ज्योति को जगाये जारहा है।

पर जो कार्य सहस्रों पुरुषों का है उसे केवल कुछ ही लोग कैसे पूरा कर सकेगे यही मुख्य प्रश्न है। फिर भी हमारे इस प्रयास में उन सैकड़ों विद्वानों ने हृदय से सहयोग दिया है जिनके हृदय में आयुर्वेद की तीव्र लगन है। वह पूर्व संकुचित मनोवृत्ति शनै शनै दूर हो रही है, उसका सबल प्रमाण हमारे प्रकाशित अनेक अङ्क हैं। आज आयुर्वेद की रक्षा का प्रश्न है। चिकित्सक उसका प्रमुख अङ्ग है, अपनी अज्ञानतावश या संकुचित विचारधारा के कारण यदि वे दु खार्त जनता की ओर ध्यान न दे और आयुर्वेद की सेवा का दुर्लक्ष करें तो आयुर्वेद का कल्याण कैसे होगा। कहा है—

ज्ञानिनोऽपि यदा स्वार्थ निश्चित्य ध्यान मास्थिता।
सत्वा' ससार दुखार्त्ता कं यान्ति शरणं तदा॥

आज ससार करवट वदल रहा है, विज्ञान मानव के प्रत्येक क्षेत्र मे प्रमुख पद रख रहा है। आयुर्वेद के सामने भी इसकी प्रमुखता दीख रही है। चारो ओर से रिसर्च और अन्वेषण की वाणी सुनाई पडती है तो क्या हमारा आयुर्वेद अवैज्ञानिक है? जिसका त्रिदोष सिद्धान्त युगानुयुग से अभी तक अकाट्य है। जिसका विश्लेषण जो सहस्रों वर्षों पहिले निर्धारित किया था कि द्रव्य के अमुक भाग मे अमुक गुण है अब भी स्थित है। प्रयोगो के बनाने में कल्पनाएं जहा सिद्ध हैं, सूक्ष्मीकरण का मुख्य सिद्धान्त जो अकाट्य है विद्यमान है, वहां विज्ञान की कौनसी रिसर्च चाहिए? कौनसा सुधार करना है? पर नहीं, आचार्यगण! संसार के साथ मिल कर चलना है, तीव्र गति के सामने हमारे मन्द साधन काम नहीं देगे। हमे भी प्रत्येक क्षेत्र मे तीव्रता लानी होगी।

सरकार आयुर्वेद और ऐलोपैथी का समन्वय करना चाहती है और एतदर्थ विविध संस्थाओं मे अन्वेषण कार्य हो रहा है। इस अन्वेषण का उद्देश्य मात्र इतना ही प्रतीत होता है कि आयुर्वेद की कतिपय औषधियों की परीक्षा की जाय और जो प्रयोग या औषधियां उत्तम प्रमाणित हों उनको ऐलोपैथिक फार्माकोपिया मे शामिल करके यह प्रचार एवं घोषणा की जाय कि आयुर्वेद का ऐलोपैथी मे समन्वय कर लिया गया है। फिर आयुर्वेद का भविष्य?

विज्ञान सार्वदेशिक है तथा उस पर किसी देश का एकाधिकार नहीं हो सकता। आयुर्वेद एव ऐलोपैथी दोनों ही विज्ञान हैं तथा आयुर्वेद को भारतीय तथा ऐलोपैथी को ब्रिटेन या अमेरिका का कहना उपयुक्त नहीं। आयुर्वेदीय चिकित्सक ऐलोपैथी औषधियों का व्यवहार करे अथवा ऐलोपैथी डाक्टर आयुर्वेदिक औषधियों का व्यवहार करे तो कोई अनुचित कार्य नहीं है, किन्तु आवश्यकता यह है कि एक पद्धति के चिकित्सक को अन्य पद्धति की औषधियों को व्यवहार करते समय अपनी पैथी के सिद्धान्तों पर उन औषधियों का विचार करना चाहिए। रोगी न आयुर्वेद जानता है और न ऐलोपैथी, वह तो अपने कष्ट और रोग को जानता है और चाहता है उस रोग से त्राण पाना। यदि आयुर्वेदिक चिकित्सक ऐलोपैथी औषधि व्यवहार करके उसे रोग मुक्त कर देता है तो रोगी उसी से सतुष्ट है और उसे इस बात की शिकायत नहीं होती कि वैद्य जी ने ऐलोपैथी दवा क्यों दी। इसलिए चिकित्सक का कर्त्तव्य है कि वह किसी रोगी की चिकित्सा करते समय यदि यह अनुभव करता है कि इस रोगी के लिए एलोपैथी औषधि व्यवहार करना अधिक लाभप्रद होगा और उस अवस्था मे उपयुक्त आयुर्वेदिक औषधि उसकी समझ में या अनुभव मे ज्ञात नहीं है तो उसे उस समय एलोपैथी औषधि व्यवहार कराने मे संकोच नहीं करना चाहिये। किन्तु उसका यह भी कर्त्तव्य है कि आयुर्वेद ग्रन्था का अवलोकन करे, सहकर्मियो से परामर्श करे तथा उस औषधि के समकक्ष आयुर्वेदिक औषधि प्राप्त करने की भरपूर चेष्टा करे,

फिर उस औषधि की अन्य रोगियों पर परीक्षा करें। इस प्रकार वैद्यों के सतत प्रयत्न करने से अनेक औषधि-रत्नों की खोज होगी तथा आयुर्वेद का मान बढ़ेगा। बिना सोचे-समझे एलोपैथी औषधियों का प्रयोग करते जाने तथा अपने औषधि भण्डार की ओर से आंखे बन्द किये रहने से आयुर्वेद चिकित्सकों का मान नहीं बढने का और न आयुर्वेद की उन्नति ही होने की है।

ऐसे बहुत कम चिकित्सक आपकी दृष्टि में आयेंगे जो कभी भी एलोपैथिक औषधि का प्रयोग न करते हों। एसी अवस्था मे जब कि एलोपैथिक कतिपय औपधियों का व्यवहार होता ही है—यदि उन्हे दोष विज्ञान की कसौटी पर कस कर प्रयोग किया जाय तो बहुत ही उत्तम है। एस्प्रीन, कुनैन या अन्य एलोपैथिक औषधियों के विषय मे यदि हमारी यह जानकारी हो जाय कि यह किस दोष की वृद्धि या शमन करती हैं तो इनके व्यवहार करने मे बहुत सुविधा हो जाय और तत् सम आयुर्वेदिक औषधि अन्वेषण में भी सुविधा हो।

चिकित्सा दो भागो में विभक्त है। शारीरिक रोगों में औषधि प्रयोग तथा आगन्तुक रोगों मे शल्य सम्बन्धी विशेष क्रियाएें—इसमें आयुर्वेद कितना छोटा रूप धारण करता चला जारहा है—शल्य हमारे हाथ मे न रहा। शारीरिक रोगो मे भी पञ्चकर्म प्रधान था। चिकित्सा मे प्रथम शरीर का शोधन करने का विधान है और प्रत्येक रोग मे आवश्यक पञ्चकर्म-चिकित्सा प्रत्येक अध्याय मे दी है, उस पञ्चकर्म मे से इस समय केवल वमन और विरेचन शेष रह गये है। इन दोनो में वमन का भी ५ प्रतिशत महत्व शेष रहा है। केवल एक विरेचन रहा वह भी उस विधान से नहीं जैसा होना चाहिए, रोगी के पेट को साफ करने के लिए केवल एक या ४-६ विरेचन के लिए कोई सा एक सादा योग ही पर्याप्त है।

यह है वह रूप जो आज विद्यमान है। राजकीय शासन से सम्बन्धित अनेक क्षेत्र—न्यायालय, जेल, बीमा योजना आदि विभागो में रोगी प्रमाणपत्र (छुट्टी या स्वस्थ) के लिए वैद्यजन अनुपयुक्त ठहराये हुए है। अब सोचिये आयुर्वेद कितना छोटा रूप धारण करता चला जा रहा है।

औषधि निर्माण मे जो दिक्कते आ रही हैं वह भी कम महत्व की नहीं हैं। अनेक द्रव्यों के प्राप्त करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। आसव अरिष्ट जैसी सुलभ औपधियों के निर्माण पर राजकीय व्यवधान है। अब विचार करें, हमें इतनी विपरीत परिस्थितियो के बीच कार्य करना है और अपनी कमियों को दूर कर आगे बढ़ना है। इसके लिए संगठन और बड़े प्रयत्न की आवश्यकता है। दो वैद्य एक स्थान पर विचार विमर्श करना नहीं चाहते, तब योगो का आदान प्रदान तो कर ही कैसे सकते है। अपने उलझनपूर्ण रोगी की चिकित्सा में सहायता तो लेवे ही कैसे। इस मनोवृत्ति से हमें कम हानि नहीं हुई है। जैसे ऐलोपैथी के डाक्टर एक रोगी के विषय में दूसरे अन्य डाक्टरो को अपनी रिपोर्ट के आधार पर सहायता पहुँचा सकते हैं। भिन्न-भिन्न रक्त-पुरीष की परीक्षाओ के परिणाम देकर हाथ बटाते हैं वैसी अपने यहां कोई व्यवस्था नहीं है। हमारे यहा भी ऐसे विशेषज्ञ होने चाहिए जो आयुर्वेद की पद्धति से एक एक शाखा के विशेषज्ञ बन सके और उन-उन बातों के विषय मे अपनी सम्मति दे सके। यही क्रम रोगो की चिकित्सा मे भी होना चाहिए। विभिन्न रोगो के विशेषज्ञ पृथक्-पृथक् विद्वान वैद्य बने और उसमें उनकी सम्मति का विशेष महत्व हो।

इस विशेषांक के लिये प्रयोग भेजने का निवेदन करते समय पुन-पुन यह आग्रह किया गया था कि केवल पूर्ण परीक्षित प्रयोग ही भेजने का कष्ट किया जाय, इस लिए कि विशेषांक में नाम प्रकाशित हो जाय—केवल पढे हुए वे प्रयोग जिनकी स्वयं परीक्षा न की गई हो, भेजने का कष्ट न करें। हमारा विश्वास है कि इस बार लेखकों ने हमारे निवेदन

पर विशेष ध्यान दिया है और उत्तमोत्तम प्रयोग भेजने की कृपा की है। इस विशेषांक के लिए प्राप्त प्रयोगों मे से सैंकड़ों प्रयोगों की हमने स्वयं परीक्षा की है और उस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि इस विशेषांक में प्रकाशित अधिकांश प्रयोग उत्तम हैं—जो प्रयोग हमारी परीक्षा मे प्रमाणित नहीं हुए या जिनके उत्तम होने में हमें स्वयं संदेह था हमने प्रकाशित नहीं किये।

यदि कोई योग ७० प्रतिशत भी लाभ करता है तो उसकी गणना अनुभूत योगों की कोटि में होनी ही चाहिए। रोगो की अनन्त अवस्थाओं के कारण एक रोग अथवा एक अवस्था में सफल प्रयोग तत्सदृश भासित होने वाले अन्य रोग या अवस्था में भी पूर्णत सफल होगा यह नहीं कहा जासकता। इसलिये महर्षि आत्रेय पुनर्वसु ने "योगैश्चिकित्सन् ह्यपराध्यति" कहा है। आयुर्वेदिक अनुभूत योगों मे ऋषि का यह वाक्य उपेक्षणीय नहीं है। यदि कोई ऐसी औषधि मिल जाती जो सब व्याधियों में या एक व्याधि की सब अवस्थाओं मे एक समान काम देती तो कौन किसी पर पढ़ने जाता और कौन किसे पढ़ाता, अत सब योग सब को लाभकर नहीं होते। ऋषियों ने जो योग दिए हैं बुद्धिमान व्यक्ति रोग एवं रोगी की दशा के अनुसार इनमें परिवर्तन कर सकते हैं परन्तु अल्प बुद्धि वालो के लिये तो कही हुई बात या योगों के ऊपर ही चलना होगा। रोग की अवस्था, रोग प्राधान्य विकल्प, बल, काल आदि सम्प्राप्तियों के दृष्टिकोण से चिकित्सा करनी चाहिए, यह आयुर्वेद का मत है और यही दूसरी पैथियो के मुकाबिले आयुर्वेदीय चिकित्सा की विशेषता, महत्ता और कठिनता भी है। एक एलोपैथिक चिकित्सक को अपने मस्तिष्क से अधिक सोचना नहीं पड़ता। इस लिये वह चिकित्सा सरल है, उसमे निश्चित आदेश हैं जिन्हे वह अक्षरश पालन करके झंझट से बच जाता है। हमे भी अपनी चिकित्सा पद्धति को कुछ सरल करना पडेगा तभी ससार मे हमारी पद्धति (पैथी) का प्रचार हो सकता है।

साधारण औषधियों को देखकर यह अनुमान नहीं लगाना चाहिए कि यह प्रयोग निरर्थक सिद्ध होगा। कभी-कभी साधारण से दीख पड़ने वाले प्रयोग बड़े लाभप्रद सिद्ध होते हैं-जैसा कि पिछले विशेषांक मे मैंने लिखा था कि-मोम-हल्दी एव काली मिर्च की बनाई टिकिया-वृक्कशूल के लिए आश्चर्य-प्रद लाभ करती है। साधारणतया देखने मे इनमे कोई चमत्कारी वस्तु प्रतीत नहीं होती किन्तु इसका प्रयोग आश्चर्यप्रद लाभ करता है-सैकड़ो ही नहीं, सहस्रो रोगियों को मैंने इस प्रयोग का व्यवहार कराया है और शतप्रतिशत नहीं तो ६० प्रतिशत अवश्य लाभप्रद सिद्ध हुआ है। इसी प्रकार अन्य बहुत से प्रयोग भी देखने मे साधारण प्रतीत होते हैं किन्तु उनका आश्चर्यप्रद प्रभाव होता है। इस विशेपांक मे आप को ऐसे बहुत से प्रयोग मिलेगे।

गुप्तसिद्ध प्रयोगाङ्क के गत भागो में जो प्रयोग प्रकाशित हुए थे उनमे से प्रयोगों की परीक्षा, हमने स्वयं भी की है और हमारे बहुत से पाठको ने भी की और उनके परिणाम हमें सूचित किए। एसे कुछ उत्तमोत्तम प्रयोग हम इस विशेषांक मे भी प्रकाशित कर रहे हैं।

किसी रोगी के लिए आप किसी प्रयोग को तैयार करके व्यवहार करायें और यह लाभप्रद सिद्ध न हो तो यह नहीं समझना चाहिए कि यह प्रयोग निरर्थक है—उसी प्रयोग को किसी दूसरे रोगी को भी व्यवहार कराकर परीक्षा करनी चाहिए। जिस प्रयोग से एक रोगी को लाभ नहीं होता, उसी प्रयोग से दूसरे रोगी को खूब लाभ होता है। इस प्रकार व्यवहार कराने से आपको यह अनुभव हो जायगा कि किस पद्धति के रोगी के लिए रोग की किस अवस्था मे, यह प्रयोग लाभप्रद होता है।

इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है कि इस विशेषांक मे ऐसे प्रयोग प्रकाशित न किए जांय जो पहिले प्रकाशित होचुके है फिर भी दृष्टिदोष से ऐसे प्रयोग भी मिल सकते हैं। किन्तु हमारी सम्मति में इससे कोई विशेष हानि भी नहीं है क्योंकि इस

प्रकार उन प्रयोगों पर पुनः एक दृष्टि पहुँच जाती है।

हमारे आर्ष ग्रन्थो मे तो प्रयोगों का भण्डार है ही—गुप्तसिद्ध प्रयोगों पर भी बहुत सी पुस्तकें और विशेषाङ्क प्रकाशित हुए हैं किन्तु इस बात को स्वीकार करने मे संकोच नहीं करना चाहिए कि अभी तक हम, पैन्सिलीन, एस्प्रीन और सलफा ड्रग्स के समान, ऐसे प्रयोगो को जो रोग की सभी अवस्थाओं मे तत्काल लाभ कर सकें और हृदय दुर्बलता आदि अन्य विकार उत्पन्न न करें, तलाश नहीं कर सके। यदि हम प्राणपण से इस ओर जुट जांय तो यह कार्य असम्भव नहीं है—इस विशेषांक में एसे कुछ प्रयोग प्रकाशित हुए हैं, यदि हमारी परीक्षा मे उनमें से कोई एक प्रयोग भी उत्तम प्रमाणित हो गया तो आयुर्वेद का बड़ा उपकार होगा।

आयुर्वेद के आचार्यों ने इस ओर भी कुछ कम संकेत नहीं किये हैं कि साध्य-सुसाध्य, कष्ट-साध्य एवं असाध्य रोगों के विश्लेषण में वैद्यों को बहुत सावधानी बरतनी चाहिये। इस विचारणा को देखते हुए, हमे योगों के साथ इस विश्लेषण को ध्यान में अवश्य रखना है। रोग की असाध्य अवस्था मे कोई भी प्रयोग कैसे लाभप्रद सिद्ध हो सकता है। अतः प्रयोग को व्यवहार करने से पूर्व यह अच्छी प्रकार देख लेना चाहिये कि रोग असाध्य तो नहीं है। बहुत से वैद्य विना इस बात का विचार किये रोग की असाध्यावस्था मे भी औषधियो का व्यवहार करते हैं और लाभ न होने पर यह समझते हैं कि प्रयोग निष्फल है।

प्रयोग को व्यवहार करने से पूर्व रोग का निर्णय भी बहुत सावधानतापूर्वक करना चाहिए। कभी-कभी कई रोग इस प्रकार मिले हुए होते है कि उसमे मुख्य रोग और उपद्रव का भेद करना बहुत ही कठिन हो जाता है। कहीं ज्वर के कारण कास होता है तो कहीं कास की भयङ्करता से थोड़ा ज्वर रहने लगता है—रोग मिश्रण की एसी अवस्था में बड़ी सावधानी से—मुख्य रोग का निर्णय करके उसकी चिकित्सा करनी चाहिए। मूल रोग के नष्ट होने पर उपद्रव स्वयं शान्त हो जाते हैं। कभी कभी निदान की दृष्टि से भी उत्तम से उत्तम प्रयोग निष्फल होते हुए देखे गये हैं।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि प्रत्येक अवस्था में कोई एक ही प्रयोग पूर्णत. लाभप्रद नहीं हो सकता है। फिर भी यह देखा गया है कि रोग की कुछ ही अवस्थाये, विशेष रूप से रोगियो मे पाई जाती है और इस प्रकार के प्रयोग प्राय. उसी अवस्था मे जो कि विशेष रूप से होती है, लाभप्रद होते है। जहां तक सम्भव हो सका है प्रयोगो के साथ—उन अवस्थाओं का भी सकेत किया गया है जिसमे प्रयोग विशेष लाभप्रद सिद्ध होता है इससे पाठकों को, यद्यपि बहुत बड़ी सुविधा रहेगी फिर भी प्रयोगो को व्यवहार करते समय वैद्यों को भी उसके घटकों को देखकर विचार करना चाहिये, और गम्भीरता से सोचना चाहिए कि जिस प्रयोग को वह व्यवहार करना चाहते हैं उसकी औषधियां—रोग की किस अवस्था के लिए विशेष लाभप्रद है।

इस विशेषाक में ही एक-एक रोग पर कई कई प्रयोग प्रकाशित किये जा रहे है—कुछ योग तो ऐसे हैं जिनमे साधारण सा ही अन्तर है। रोगी के लिए कौनसा प्रयोग व्यवहार कराया जाय इसका निर्णय करते समय—एक बार उस रोग के लिये लिखे गये सभी प्रयोगो पर दृष्टि डाल लेनी चाहिए और कल्पना से यह अनुमान लगाना चाहिए कि अमुक प्रयोग विशेष लाभप्रद सिद्ध होगा।

हमारी इच्छा थी कि इस विशेषांक मे प्रकाशित कुछ ऐसे प्रयोगो के विषय में जिनकी हमने स्वयं परीक्षा की है और आशु-फलप्रद पाये है विस्तार से प्रकाश डाले किन्तु ऐसा करने से बहुत अधिक विस्तार होजायगा अत. आगामी किसी अक में प्रकाश डाला जायगा। पाठको से भी अनुरोध है कि वह जिन प्रयोगो की परीक्षा करें उनका विस्तृत विवरण अवश्य सग्रह करते रहें। इससे इस विशेषांक मे प्रकाशित सर्वोत्तम प्रयोगो की छांट होजायगी और आगामी

संस्करण ऐसे छूटे हुए प्रयोगों का ही प्रकाशित किया जायगा। आपकी सुविधा के लिये परीक्षाफल समझार्थ दो पृष्ठ प्रारम्भ में लगा दिए हैं। इसी प्रकार के अन्य पृष्ठ यदि आवश्यक हों तो आप स्वयं तैयार कर सकते हैं।

इस विशेषाङ्क में प्रयोगों को रोगानुसार छांट-कर, १ रोग पर प्राप्त सभी प्रयोगों को एक स्थान पर ही प्रकाशित करने का विचार था। इस विचार को कार्य रूप देने के लिए यह आवश्यक था कि सभी लेख पर्याप्त समय पूर्व मिल जाते और उनके सभी प्रयोग रोगानुसार लिखे जाते, किंतु अनेक विद्वानों ने अपने लेख बहुत देर में भेजे तथा विशेषाङ्क छपते-छपते अनेक लेख मिलते रहे। ऐसी दशा में रोगानुसार प्रयोगों को प्रकाशित करना सम्भव नहीं हो सका।

यद्यपि हम इस विशेषांक में योगों की संख्या को विशेष महत्व नहीं देते फिर भी पाठकों की जानकारी के लिए लिख रहे हैं कि इसमें १३०८ योगों का संकलन है और ५७१ लेखकों का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ है। इनके सिवाय कुछ लघु योगों का जहां-तहां संकलन भी दिया गया है। अन्त में वे अनुभवपूर्ण योग हैं जो रुचिपत्र विद्वानों ने उन्हें प्रयोग कर अनुभूत पाया है। इस अङ्क के प्रान्तवार हमारे लेखक इस प्रकार हैं—उत्तर प्रदेश ८७, पंजाब २८ दिल्ली १०, राजस्थान ३३, मध्यप्रदेश ४७, बम्बई राज्य ७१ बिहार ३०, आसाम १ हिमाचल प्रदेश १, हैदराबाद ४, उड़ीसा ?, आन्ध्र १, बरार १, इसी अनुपात से प्रयोग उत्तरप्रदेश ४७१, पंजाब १४०, दिल्ली ४१, राजस्थान १६६, मध्यप्रदेश २४७, बम्बई राज्य १०१, बिहार १६२, आसाम ८, हिमाचल ६, हैदराबाद (गणपति राव राज्य नहीं) ७६ उड़ीसा १०, आन्ध्र ३, बरार ६, धन्वन्तरि के २६ हैं।

इस विशेषांक के लिये विशेष याचना न करने पर भी हमें इतने अधिक प्रयोग प्राप्त हुए हैं कि यदि सभी प्रयोग प्रकाशित किये जाय तो विशेषांक की पृष्ठ-संख्या दूनी होजाती, अतः विवशतया जिन सज्जनों के प्रयोग इसमें प्रकाशित नहीं कर सके उनसे करबद्ध क्षमा प्रार्थी हैं। भगवान धन्वन्तरि की कृपा हुई और इस विशेषांक से पाठकों का इच्छित लाभ हुआ तो गुप्तसिद्ध प्रयोगांक का पांचवा भाग भी प्रकाशित किया जायगा।

आवश्यक सूचना

प्रत्येक ग्राहक से नम्र निवेदन है कि इस विशेषांक के रैपर पर पते के साथ ग्राहक नम्बर लिखा है, उसे नोट करलें तथा भविष्य में किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार करते समय यह ग्राहक नम्बर अवश्य लिख दिया करें। ग्राहक नम्बर लिख देने से आपके पत्र का उत्तर देने तथा आदेशपालन में सुविधा और शीघ्रता होगी।

वैद्यरत्न कविराज प्रतापसिंह

डी० एस-सी० (आयु०), भिषगाचार्य, रसायनाचार्य, भिषग्मणि
परामर्शदाता–केन्द्रीय स्वास्थ्य विभाग, देहली ।

"श्री कविराज जी आयुर्वेद जगत में सूर्य समान सर्वत्र स्वय परिचित हैं । सम्वत् १६४६ में सारस्वत ब्राह्मण परिवार में आपका जन्म उदयपुर में हुआ । उदयपुर, मद्रास एव कलकत्ता मे आपने सस्कृत, अग्रेजी, एलोपैथी एव आयुर्वेद की शिक्षा ग्रहण की । सेवा समिति आयुर्वेद कालेज ऋषिकेश एवं ललितहरि कालेज पीलीभीत के ६-६ वर्ष प्रधानाचार्य रहे । तत्पश्चात् २४ वर्ष आयुर्वेद कालेज (हिन्दु यूनीवर्सिटी) एव फार्मेसी के प्रोफेसर एवं सुपरिन्टेन्डेन्ट रहे । राजस्थान आयुर्वेद विभाग के डाइरेक्टर पद पर ३॥ वर्ष तथा उसके बाद राजकुमार सिंह आयुर्वेदक कालेज इन्दौर के प्रधानाचार्य रहे । उत्तर प्रदेश भारतीय चिकित्सा परिषद् के सदस्य तथा गवर्नमेंट आयुर्वेद कालेज पटना की परामर्शदाता समिति के सदस्य २६ वर्षों तक रहे । आयुर्वेद म्हामण्डल विद्यापीठ एवं महासम्मेलन के कई वर्ष सभापति एव मत्री रहे हैं । आप अनेक संस्थाओ के सदस्य, सस्थापक एवं अध्यक्ष रहे हैं । आर्य आयुर्वेदिक ट्रस्ट के निर्माता व राजा विरला आयुर्वेदिक चिकित्सालय के जन्मदाता है । आपने अनेक विशाल ग्रन्थो की रचना की है, अनेक पत्र पत्रिकाओ के प्रधान विशेष सम्पादक एव यशस्वी लेखक है । सम्प्रति आप केन्द्रीय स्वास्थ्य विभाग के आयुर्वेदिक परामर्शदाता हैं । आपने जहा भी, जिस पद पर भी कार्य किया वही अपनी असाधारण प्रतिभा का परिचय दिया । धन्वन्तरि पर आपकी सदैव कृपा रही है । आपके प्रयोगो से आशा है पाठक लाभ उठावेंगे ।"
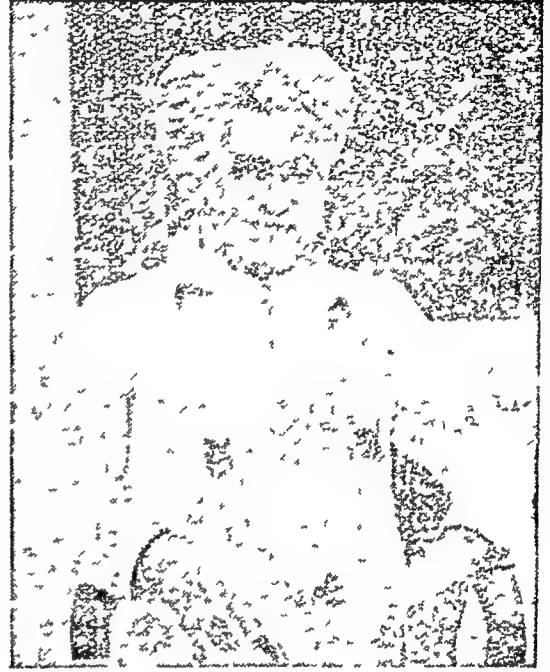
—सम्पादक ।

पारिजात वटी—

—शारदीय ज्वरहर (मलेरिया ज्वर नाशक)—

पारिजात के हरित पत्र ×	१ तोला
निम्ब ,, ,,	१ तोला
बिल्व ,, ,,	१ तोला
निर्गुण्डी ,,	१ तोला
तुलसी ,, ,,	१ तोला
पथ्या (हरड)	१ तोला
लाल फिटकरी कच्ची	५ तोला

—सबको एकत्र पीसकर सात भावना निर्गुण्डी-पत्र स्वरस की देकर ४-४ रत्ती की गोलियां बनावे ।

मात्रा—१ से ४ वटी ज्वर आने के पूर्व जल से । यदि उदर शुद्धि की आवश्यकता हो तो विरेचन देकर शुद्धि करले ।

पथ्य—भोजन मे दूध, मुनक्का, ज्वर उतरने पर मुद्गयूप या गैहूँ का दलिया, मेथि, पालक या परवल का शाक । विश्राम, कथित जल या षडगपानीय ।

रक्तदोषान्तक—

चिरायता • अथवा मगरवी
—दोनो ५-५ तोला

× पारिजात को हारशृंगार भी कहते है ।

—५ सेर जल मे मन्द आच पर पाक कर शेष २॥ सेर रहे। शीतल होने पर छान कर मेगसल्फ १० छटांक मिला, छान कर पांच बोतलो मे भर कर रखदे। इसका वर्ण रक्ताभ होना चाहिए।

मात्रा—२॥ तोला से ५ तोला, एक बार उषःकाल मे प्रात. दे। किसी-किसी को एक-दो रेचन इससे होते है।

गुण—यह औषधि सब प्रकार के रक्त विकारो मे उपकार करती है। पामा, विचर्चिका, मडल कुष्ठ आदि मे यह अच्छा उपकार करती हे। कम से कम पांच बोतल ४० दिन मे पिलाना चाहिए।

पथ्य—गैहूँ, चावल, मूंग, परवल, घृत, दुग्ध, अलवण यदि रोग उग्र हो।

चित्रकादि चूर्ण—

(तृतीयक ज्वर, प्लीहा, अग्निमांद्य पर)

चित्रक पिप्पली आमलकी
हरीतकी सैधव
—पाचों समान भाग

मात्रा—भोजनोत्तर ६ माशा से १ तोला तक। शीतल या उष्ण जल से। यह इधर ग्राम-ग्राम मे प्रसिद्ध होगया है और सर्वत्र प्रचिलत है। इसका यह छन्द भी बना दिया गया है—

आवरा हर्रा सेन्धा चीत,
पीपर आन मिलाओ मीत।
ज्वर खामी तिजरिया जाय,
अन्न न जाने कतक खाय॥

अमृतत्रय रसायन—

छाया मे सूखी हुई गिलोय आमलकी
गोखरू —तीनो सम भाग

—इन सबको चूर्ण कर ६ माशा की मात्रा से प्रात. घृत शर्करा से सेवन करावे।

गुण—यह रसायन योग है। एक वर्ष निरन्तर सेवन करने से शरीर निर्मल (नार्मल) रहता है और कोई विकार पैदा नहीं होता। वैद्यजीवन का यह पाठ है—

अमृताऽमलक त्रिकण्टकानां,
हविषा शर्करया निषेवणेन।
अजराऽमराऽपार वीर्या,
अलिकेशा-अदिते सुता बभूवु॥

अर्शनाशक—

तिल पथ्या भल्लातक शुद्ध १-१ भाग
गुड तीन भाग

मात्रा—३ से ६ माशा प्रातः रात्रि मे सोते समय। यह शार्ङ्गधर का योग है—

"तिल भल्लातकं पथ्या गुडं चेति समाशकम्"

:: पृष्ठ १६ का शेषांश ::

सायं—प्रमदानन्दरस (भै. रत्ना) २ रत्ती
क्षीरकाकोली, चोवचोनी, बलामूल, असगध, कृष्णजीरक —प्रत्येक ३-३ माशा
—यथा विधि क्वाथ बनाकर ऊपर से दिया जाता है। एवंविधि २-३ मास की चिकित्सा से इस कष्ट से रुग्णा मुक्त हो जाती है।

आशा है उक्त योगों का फलाफल वैद्यसमाज धन्वन्तरि द्वारा प्रकट करने की कृपा करेगा।

आयुर्वेद मार्तण्ड पं० मनोहर लाल वैद्यराज

प्रिंसिपल—श्री वनवारीलाल आयुर्वेद विद्यालय
अध्यक्ष—श्री धन्वन्तरि औषधालय, धर्मपुरा, दिल्ली ।

पिता का नाम— श्री पंडित गंगाप्रसाद शर्मा
आयु–७८ वर्ष जाति—गौड़ ब्राह्मण

"भारत के वहुत वडे भाग के व्यक्ति इन वयोवृद्धि विद्वान चिकित्सक, प्रधान आचार्य से परिचित हैं। आपकी विलक्षण प्रतिभा, मेधा व स्वास्थ्य का समन्वय एक ही स्थान पर है। समाज मे वहुत थोडे व्यक्ति इस स्थायित्व को पाते हैं जैसा पूज्य प. जी ने पाया। आप श्री वनवारीलाल आयुर्वेद विद्यालय के सन् २२ से लगातार प्रिंसिपल हैं। सस्था में आपका विद्यार्थियो से सम्वन्ध एक प्राचीन गुरुकुल जैसा गुरु व शिष्य का ही रहा है यही कारण है इस दीर्घ अवधि में आपके आयुर्वेदीय सैकडो शिष्य प्रत्येक प्रांत में उच्चकोटि के चिकित्सक वन कर चिकित्सा व अध्यापन कार्य कर रहे हैं। आप आयुर्वेद के सिवाय व्याकरण काव्य न्यायकोष के साथ साथ कर्मकाण्ड वेदान्त एवं दर्शन शास्त्र के भी प्रकाण्ड विद्वान है, आयुर्वेद सेवा के लिए आपने अपना जीवन [illegible] कर दिया है। सस्थाओं के अध्यक्ष एवं मंत्री पद पर रहे हैं और वर्तमान में भी सेवा कर रहे है। आपके विषय में वहुत कुछ लिखा जा सकता है। इस समस्त सेवाओ तथा कर्मण्यता के कारण आपके शिष्य तथा मित्र वर्ग ने आपको सन् ४३ में 'मनोहर अभिनन्दन ग्रन्थ' नामक महान ग्रन्थ आपके कर कमलों में सादर भेंट किया था। उसमें आपकी पूर्ण झाकी मिलती है। धन्वन्तरि पर आपका सदैव स्नेह रहा है तदर्थ आपने अपने अनुभव सागर के कुछ विन्दु भेंट किए है।"

—सम्पादक।

जलोदर—

पीपल छोटी	५ तोले
स्नुहीक्षीर (सैंहुड़ का दुग्ध)	१० तोला

—पीपल का चूर्ण कपड़ छान कर, थूहर के दुग्ध मे पीस ले। पिट्ठी सी हो जाय तव चना से जरा वड़ी वटी वनाकर छाया मे सुखाले।

व्यवहार विधि—ऊंटनी के गर्म मीठे दूध के साथ दो वटी प्रात. दो रात्रि को खिलावें। यदि ऊटनी का दूध प्राप्त न हो तव गौदुग्ध से दे। भोजन मे लवण और जल न सेवन करे जव तृषा लगे तव दूध ही पीवे। मुनक्का या मिसरी थोड़ी खाले, एक मास प्रयोग करे। जल-लवण का परहेज है।

जव प्रयोग आरम्भ करे फीते से पेट को नाप लें। पेट घटता जायेगा, फीता ढीला होता जायेगा।

रोगी को रेचन होगा, ५ या ७ दस्त होंगे। दुग्धपान कराते रहे, बल के अनुसार दे। यदि रेचन विशेष हो तो प्रातः एक ही समय दें। मेरा कई बार का अनुभव किया हुआ है, शास्त्र सम्मत है।

उपदंश हर—

दारचिकना रसकपूर संखिया स्वेत
—तीनो समान भाग

—लेकर बराण्डी (शराब) में एक दिन खरल कर ले। शुष्क हो जाने पर डमरुयंत्र में (२ हांडियो में बन्द कर) चूल्हे पर ३ घंटे अग्नि दे, ऊपर की हाण्डी पर गीला कपड़ा रक्खे। जिससे इन तीनों का जौहर ऊपर हांडी में जा लगे (उड़ जाय)।

मात्रा व व्यवहार विधि—आधी रत्ती जौहर मुनक्का में रखकर रोगी को २ वार दें। मूंग की दाल तथा दही का परहेज है। मिस्सी रोटी और घी का सेवन करें। औषधि सेवन मे पहिले रोगी को मृदु विरेचन अवश्य दे।

ज्वरांकुश—

संखिया	१ तोला
लाल फिटकरी	१० तोला

—हांडी में सम्पुट करें, हांडी बड़ी हो, फिटकरी फूलेगी। आधी फिटकरी नीचे, आधी ऊपर दबा-दबा कर बन्द करे। सम्पुट मजबूत हो। ५ सेर अरणे की अग्नि दे। स्वेत भस्म तैयार मिलेगी।

मात्रा—२ रत्ती तक। अनुपान-तुलसीपत्र ११ और मिर्चकाली ११, घोटकर १ छटाक जल में पीसले। उसमे घोलकर ज्वराकुश पीले।

गुण—सन्ततादि विषमज्वरों में विशेष लाभप्रद है

श्री लक्ष्मण प्रसाद ज्योतिषी इन्दौर निवासी

ए. एम. एस., एम. ए. काव्यतीर्थ

प्रिंसिपल-शासकीय आयुर्वेद महा विद्यालय ग्वालियर (मध्य प्रदेश) का

एक अनुभूत योग

त्रिफला तैल—

त्रिफला	७॥ तोला
नेत्रवाला	३॥ तोला
कपूरकचरी नागरमोथा	१।-१। तोला
छड़ीला जटामासी खस	१-१ तोला
तिल तैल	३ पाव

—तैल विधि से तैल सिद्ध करना। क्वाथ बनाने से पूर्व द्रव्य २४ घंटे जल मे भिगोकर रखना चाहिए तथा ध्यान रहे कि तैल-पाक खर न होने पावे।

उपयोग—इस तैल को धीरे-धीरे शिर में लगाने से वातपित्तज शिर शूल, निद्रानाश, भ्रम-(चक्कर) आदि मस्तिष्क विकारों के लिये हितकर है। अधिक समय सेवन करने से पलित रोग मे भी हितकर सिद्ध होगा।

नोट—आपने अपने फोटो एवं परिचय भेजते हुए भी लोक-प्रतिष्ठा से विरक्ति भावना होने के कारण उनको प्रकाशित करने का निषेध किया है।

सिद्धचूड़ामणि श्री पं. मनिराम शर्मा सिद्धाचार्य

प्रिंसिपल—श्री हनुमान् आयुर्वेद महा विद्यालय, रतनगढ़ (बीकानेर)

"आपका जन्म विक्रम् सम्वत् १६४३ में जम्मू (काश्मीर) प्रांत के रायपुर ग्राम मे श्री पं सन्तराम जी के घर हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा अपने मामा के यहां, तथा आयुर्वेद की शिक्षा देहली के श्री वनवारीलाल आयुर्वेद विद्यालय में प्राप्त की। तदुपरात जयपुर के आयुर्वेद मार्तण्ड श्री लक्ष्मीराम जी स्वामी महोदय से आपने ५ वर्ष आयुर्वेद का उच्च ज्ञान प्राप्त किया। सन् १६१७ में आप श्री हरनन्द राय रुईया संस्कृत कालेज के प्रधानायुर्वेदाध्यापक नियुक्त हुए तथा सन् १६३६ तक अध्यापन और चिकित्सा कार्य किया। तत्पश्चात् श्री हनुमान आयुर्वेद महा विद्यालय रतनगढ़ के प्रधानाध्यक्ष हुए, जिस पद पर आप अद्यावधि हैं। आप आयुर्वेद शास्त्र के भारत के इने-गिने मर्मज्ञ पण्डितो मे एक हैं तथा आडम्बर-रहित, शान्त वातारण में आयुर्वेद की मूक सेवा मे सर्वाग्रणी हैं। नि. भा आयुर्वेद विद्यापीठ के सभापति भी रह चुके हैं। आपने रतनगढ में ही 'धन्वन्तरि-मन्दिर' की स्थापना की है। हमारे बार-बार आग्रह करने पर भी आपने अपना फोटो भेजना स्वीकार नही किया, इसी से पाठक यश-कामना से आपका विरक्त भाव अनुभव कर सकते हैं। आप सिद्धहस्त कुशल अनुभवी चिकित्सक हैं। आपके निम्न प्रयोगो से पाठको को अवश्य ही यश प्राप्त होगा।"

—सम्पादक।

आन्त्रिकक्षय, वृक्कशूल एवं मूत्र कृच्छ्र पर—

सुकुमार कुमार घृत

पुनर्नवा मूल तुला दशमूलं शतावरी,
वला तुरगगंधा च तृणमूलं त्रिकण्टकम्।

विदारिगंधा नागाह्वा गुडूच्यातिबला तथा,
पृथग्दशपलान् भागाञ्जल द्रोणे विपाचयेत्।

तेनपादावशेषेण घृतस्याढ्ढकं पचेत्,
मधुक शृङ्गवेरं च द्राक्षा सैन्धव पिप्पली.।

द्विपलिकाः पृथग्द्याद् यमान्याः कुडवं तथा,
त्रिंशद्गुडपलान्यत्र तैलस्यैरण्डजस्य च।
प्रस्थदत्वा समालोड्य सम्यङ् मृद्वग्निना पचयेत्॥

निर्माणविधि—

पुनर्नवा		५ सेर
दशमूल	[विल्व	गम्भारी
अरणी	सोनापाठा	पाढल
शालपर्णी	पृश्नपर्णी	दोनो कटेरी
गोखुरु]	सतावर	खरैटी
असगन्ध	तृणपञ्चमूल	[कुस
कास	इक्षु	दर्भ शालिमूल]
गोखरू	शालपर्णी	नागबला
गिलोय	अतिबला	—प्रत्येक १०-१० पल

—एक द्रोण (१६ सेर) जल मे पकाकर चतुर्थांश (४ सेर) अवशेष रहने पर उतार कर छान ले। गुड़ १॥ सेर (गुड के स्थान पर यदि तीन सेर गन्ने का रस लिया जाये तो अच्छा है।)

अरण्डी का तैल	६४ तोला
शुद्ध गौघृत	२ सेर

—एक कलई के अथवा लोहे के पात्र मे पकाने को रख दे। ऊपर से—

मुलैठी	सोठ	मुनक्का
सेंधा नमक	छोटी पीपल	—८-८ तोला
अजमाइन		१६ तोला

—अच्छी प्रकार बारीक चूर्ण कर पकते घृत मे डाल दें। पांच दिन तक घन्टा दो घन्टा प्रति दिन मन्द-

मन्द अग्नि देते रहे। जिस समय कल्क की वर्त्ति वनने लगे एवं सुगन्ध का आविर्भाव होने लगे तव सिद्ध हुये घृत को छान ले ।

मात्रा— १ तोला, दूध से प्रात' और सायं।

विशेष— "पुनर्नवाशते द्रोणो देयोऽन्येषु तथा परः"

उक्त परिभाषा के अनुसार पुनर्नवामूल मे एक द्रोण और अन्य दशमूलादि मे एक द्रोण। इस प्रकार दो द्रोण (३२ सेर) जल मे पकाना चाहिए।

उदर-शूल एवं अम्लपित्त पर—

धात्रीलोह

षट्पलं शुद्ध मण्डूरं यवस्य कुडवं तथा,
पाकाय नीर प्रस्थार्द्ध' चतुर्भागावशेषितम् ।
शतमूली रसस्याष्टा वामलक्यारसस्तथा,
तथा दधि पयो भूमि कुष्माण्डस्य चतुःपलम् ।
चतु पलं शर्करायां घृतस्य च चतुःपलं,
प्रक्षेप जीरक धान्यत्रिजात करि पिप्पलीम् ।
मुस्तं हरीतकी चैव अभ्र' लोह कटुत्रयम्.
रेणुकं त्रिफलाञ्चैव तालीशं नागकेशरम् ।
प्रत्येकं कार्षिक चूर्णं पेषयित्वा विनिक्षिपेत् ।

निर्माणविधि—

जौ १६ तोला

—लेकर ६४ तोला जल मे पकावे, चतुर्थांश अवशेष रहने पर उतार कर छान ले ।

शतावर का स्वरस ३२ तोला
आंवले का स्वरस ३२ तोला
दही दूध भूमिकुष्माण्ड का स्वरस
चीनी घृत —प्रत्येक १६-१६ तोला

—सभी को मिलाकर लोहे' अथवा कलई किये वर्तन मे सिद्ध करे। २४ तोला शुद्ध मण्डूर और डालदे। जिस समय देखे कि कुछ घन हो गया तव नीचे उतार कर—

जीरा धनियां दालचीनी
तेजपात छोटी इलाइची गजपीपल [बड़ी पीपल]
नागरमोथा हरड़
रेणुका के वीज त्रिफला त्रिकटु
तालीस पत्र नागकेशर

—प्रत्येक १-१ तोला

—ये सभी द्रव्य लेकर अच्छी प्रकार कपड़छान कर लो । अभ्रकभस्म १ तोला लोहभस्म १ तोला और प्रक्षेप धीरे-धीरे कलछी से मिलाते जाओ, धात्रीलोह तैयार है ।

विशेष—संभालु के वीज के स्थान पर खूबकला लेना उत्तम है ।

सेवन विधि—४-४ रत्ती की दो-दो गोली सुवह तथा सायं भोजनोत्तर जल के साथ देवे ।

श्वेत प्रदर पर—

बडी इलायची माजूफल

—दोनो समभाग

—इन दोनो के बराबर मिश्री मिलाकर चूर्ण बनाले ।

मात्रा—दो-दो माशा प्रातः और साय ताजे जल से देवे । श्वेत प्रदर की यह उत्तम औषधि है ।

:: पृष्ठ २० का शेषांश ::

६ सप्ताह तक और दे । विपमज्वर के साथ प्लीहा, यदि इसमे सौत्रिक तन्तु न वन चुके हों तो वह भी स्वस्थान पर आजाती है। चिकित्सकों को यही परामर्श है कि विपमज्वर मे इसी वटी का प्रयोग करावे, हा यदि ज्वर का वेग तीव्र हो और ताप को शीघ्र नीचे लाना हो तो क्लोरोकीन अथवा कामाक्वीन के २-३ दिन के प्रयोग से ताप को साम्यावस्था मे लाकर वाद मे इस वटी का प्रयोग आरम्भ करदे ।

कविराज श्री हरदयाल जी वैद्य आयुर्वेदाचार्य,

वैद्य वाचस्पति, K. R., A. V., M. A. S., रामानन्द बाग, अमृतसर ।

पिता का नाम— राजवैद्य श्रीनाथ राम जी (स्वर्गीय)
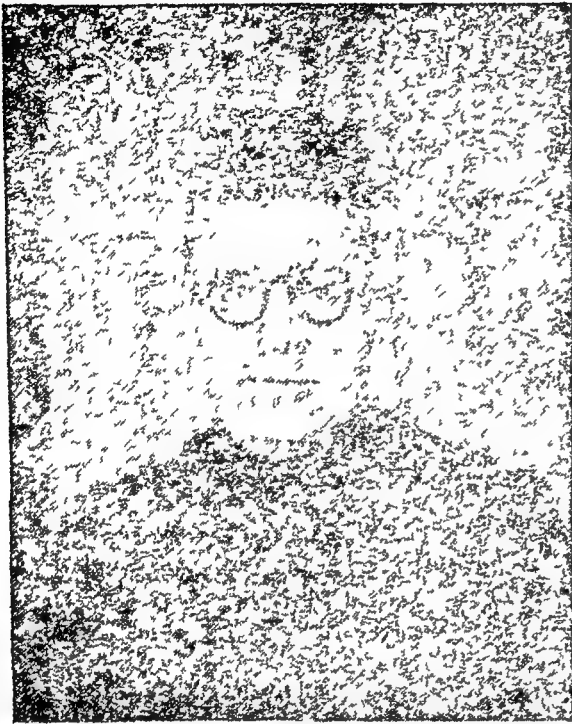
"आपका परिचय सूर्य को दीपक के समान है। आयुर्वेद जगत के ख्यातनामा रत्न हैं। आपको जीवन का विशाल अनुभव है। औदरिक रोग अथवा पचनसस्थानिक रोग, श्वास, गण्डमाला व बच्चो के सूखा रोग के विशेष चिकित्सक हैं। आपकी प्रकाशित रचनायें—आरोग्य शास्त्र, अनगरग तथा शार्ङ्गधर सहिता पर सरलार्थकरी टीका है। तथा १-भैषज्य रत्नावली की टीका २-आयुर्वेदिक चिकित्सा आपके अप्रकाशित ग्रन्थ है। पजाव सरकार द्वारा स्थापित वोर्ड आफ आयुर्वेदिक और यूनानी सिस्टम आफ मेडीसन के प्रधान रहे हैं। आप अनेक सस्थाओ तथा आयुर्वेदिक सस्थाओ के प्रधान सदस्य व मन्त्री पद के पदो पर आसीन रहे है। अनेक पत्रिकाओ के प्रधान सम्पादक, सम्पादक, लेखक बनकर शोभा प्राप्त की है। आयुर्वेद पर आपके वडे अमूल्य परामर्श रहे हैं। आयुर्वेदिक जगत आपका चिर कृतज्ञ और ऋणि है।"

—सम्पादक ।

कण्ठामृत—

कटफल (कायफल) ४० तोला

यह छाल उत्तम और नवीन हो

निर्माणविधि—छाल को धूल रहित स्वच्छ करके स्वच्छ किए खरल वा लोह पात्र मे मोटा-मोटा कूट ले। तदनु स्वच्छ कलईदार पात्र मे डालकर ऊपर से इसमे ८ सेर पानी डालकर रात्रि भर पड़ा रहने दे। दूसरे दिन इसका क्वाथ करे। जब १ सेर क्वाथ शेष रहे तब इसे उतार कर वस्त्र से छान ले। तदनु इस वस्त्रपूत क्वाथ को एक कलईदार पतीली मे डालकर मन्द अग्नि द्वारा शनैः शनैः पकाएं। जब चतुर्थांश शेष रहे तब इसे उतार ले और शीतल होने पर इसमे मधु या ग्लेसरीन १० तोला डालकर मिलाऐ। जब दोनो एकीभूत होजाऐ तब शीशी मे डाल दे और ऊपर से मद्यसार (रैक्टीफाइड स्प्रिट) २ तोला मे सत पोदीना २ माशा घोल ले। जब दोनो घुल जाय तब शीशी मे डालकर मिलादे। यह कण्ठामृत तैयार है।

उपयोग—यथाविधि गले के भीतर दिन मे ३-४ बार लगाने से कण्ठशालूक, उपजिह्विका, कण्ठशोथ, रक्तिमा, पीड़ा आदि समस्त गल रोग शांत होते है।

कण्ठामृत का विशेष प्रयोग—उक्त रोगों से पीड़ित आबाल वृद्ध सब को खाने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है। ४-२० बूंद तक,

मन्दोष्ण जल से मिला कर दिन भर में ३।४ बार दिया जाता है। इससे इच्छित लाभ होता है।

—यह भयकर कास वेग को शांत करता है। श्वास वेगोद्भव कष्ट को दूर करता है। इसके प्रयोग से पाचकाग्नि प्रदीप्त होती है। यक्ष्मा के रोगियों को जब कास द्वारा झागदार तरल श्लेष्मस्राव होता हो तब इसके प्रयोग से आश्चर्यकर लाभ होता है।

नेत्रामृत—

कुट्टित दारुहरिद्रा	५ तोला
स्वादु जल	२ सेर

—यथाविधि क्वाथ करें। जब आधा शेष रहे तब उतार कर वस्त्र से छान लें। इस वस्त्रपूत क्वाथ में ५ तोला शुद्ध मधु डालकर मिलादे, तत्पश्चात् इस घोल को यथाविधि फिल्टर करले। इस उत्तम पीत वर्ण वाले तरल को स्वच्छ बोतल में डाले और ऊपर से २ रत्ती उत्तम तुत्थ पीस कर मिलादे।

—नेत्रामृत तैयार है। यथाकाल विन्दु निक्षेपक द्वारा २-२ बूंद रुग्ण के नेत्रों में डाले।

गुण—इसके प्रयोग से नेत्रस्राव, नेत्रकण्डू, आरम्भिक परवाल, कुक्करे, रक्तिमा आदि सब वर्त्म रोग शांत होते हैं। नूतन और चिरकालीन पोथकी रोग शांत्यर्थ यह श्रेष्ठ औषधि है। कास्टिक लोशन से जो दोष होते हैं और जिनसे रोगी आजीवन मुक्त नहीं होता, नयनामृत के प्रयोग से वे दोष नहीं होते।

नासामृत

षड्विन्दु तैल एरण्डतैल दोनों ५-५ तोला
—दोनों को मिलाकर रखले।

गुण—नासाशोष, नासाशोथ, सद्यनस, नासिका का हरदम प्रतिक्लिन्न रहना, नासिका द्वारा छुड़ छुड़ शब्द का होते रहना, बार-बार प्रतिश्याय का प्रकोप, दुष्ट पीनसजन्य बाधायें, शिरोव्यथा, अकस्मात् कभी-कभी अधिक छींकों का आना यह सब रोग नासामृत के प्रयोग से दूर होते हैं।

विधि—थोड़ा सा नासामृत एक छोटे चम्मच में डालकर थोड़ा सा गरम करले। तदनु अंगुली द्वारा नासा के मार्ग से ऊपर को चढ़ाना चाहिए। अथवा चित लेट कर विन्दु-निक्षेपक द्वारा दोनों नासिका के छिद्रों में ५-५ बूंद डाल दे और तब तक लेटे रहे जब तक औषधि कण्ठ द्वार तक न पहुँचे।

कष्टार्तव—

यह कष्ट भी आजकल बहुत बढ़ रहा है। ऋतु धर्म पूर्व और मध्यवर्त्ती दिनों में स्त्री को भयङ्कर यातना का अनुभव होता है। अविवाहितावस्था में भी होता है। प्राय. इसी के कारण युवाकन्याओं को निरन्तर वा विच्छेद युक्त शिरोव्यथा रहती है। यह दुःखद रोग है। एतदर्थ—निम्नांकित चिकित्सा क्रम हितकर सिद्ध हुआ है। इसकी चिकित्सा उभयात्मक होती है।

वेगकालिक—आर्तवकाल में जब पीड़ा की प्रवृति हो तब अहिफेनासव ५ विंदु, कर्पूरासव १५ विंदु गरम जल में देने से पीडा की तात्कालिक शांति होजाती है। वेगशमनार्थ कभी-कभी एक ही मात्रा पर्याप्त होती है। कभी-कभी २-२ घण्टा के अन्तर से २-३ मात्रा देने से पीडा शांत होजाती है।

दूसरी ऋतु में पीडा न हो—एतदर्थ निम्न योग को कुछ मास तक निरंतर देना होता है।

प्रात.—रजतभस्म	१ रत्ती
रससिंदूर	१ रत्ती
क्षीर काकोली चूर्ण	४ रत्ती
चोबचीनी चूर्ण	४ रत्ती

अनुपान—मधु माखन। ऊपर से शतोष्ण गव्य दूध।

—शेषांश पृष्ठ १० पर।

आयुर्वेद बृहस्पति

साहित्याचार्य वैद्य घनानन्द पन्त विद्यार्णव

बाजार सीताराम देहली।

पिता का नाम- वैद्य श्री० हरिकृष्ण पन्त
आयु-७८ वर्ष जाति-ब्राह्मण

"आपका जन्म स्थान ग्राम जजूट पो०· गगोलीहाट जिला अलमोड़ा है। आपने बनारस में साहित्य, ज्योतिष तथा व्याकरण का पूर्ण अध्ययन किया। ऋषिकुल हरिद्वार में चिकित्सक रह कर अध्यापन कार्य किया। कलकत्ते में श्री गणनाथ सेन सरस्वती के पास रह कर 'प्रत्यक्ष शारीरम्' के लिखने में सहयोग देते रहे। फिर मुरादवाद में चिकित्सा व्यवसाय किया। आप अनेक विद्यालयों के परीक्षक हैं। भारत की उच्च से उच्च आयुर्वेदिक सस्थाओं से आपको सम्मान प्राप्त हुआ है। आयुर्वेद के अनेक विवादास्पद विषयों पर अपना निर्णायक मत व्यक्त किया। आपको शास्त्रज्ञान के अलावा चिकित्सा शैली में भी पूर्ण निपुणता का सम्मान प्राप्त है। क्षय सग्रहणी विषमज्वर प्लूरिसी आदि की तो आप दूर से ही पत्रों द्वारा चिकित्सा करते है। १—महामारी २—प्रति-संस्कृत निदान चिकित्सा ३—रसेन्द्रसारसग्रह सस्कृत टीका तथा हिन्दी भाषा आपकी श्रेष्ठ रचनाएं है आप बड़े परिश्रमी, मिलनसार, शान्ति प्रकृति, सतत अध्ययनशील, वयोवृद्ध, विद्वान चिकित्सक हैं। वैद्य जगत आपकी चिरायु की कामना करता है। सूर्यावर्त बूटी पर आपने अपना अनुभव प्रेषित किया है जिसे प्राप्त कर वैद्य जगत आपका आभारी होगा।"
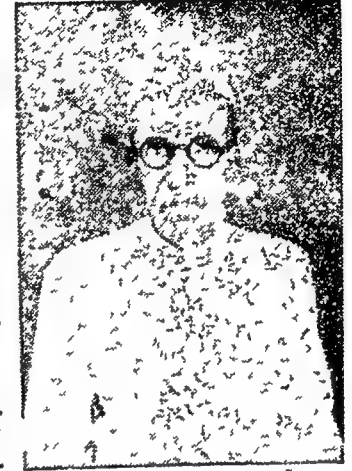
—सम्पादक।

विषमज्वर में सूर्यावर्त पर मेरा अनुभव

सूर्यावर्त दो प्रकार का होता है। १-पीले फूल का। २-सफेद फूल का। इसको भाषा मे हुलहुल कहते हैं। संस्कृत नाम-अजगन्धा—इस क्षुप से एक प्रकार की कटु गन्ध आती है। पीले फूल का लैटिन नाम—Cleome Viscosa, सफेद फूल का Gynandropsis Pentaphylla. मराठी मे इसको तिलवण कहते हैं। यहां हम सफेद वाली पर अपना अनुभव दे रहे हैं।

राजनिघण्टु मे—

आदित्यभक्ता ··त्वग्दोप कण्डू व्रणकुष्ठ-
भूतग्रह उग्रशीतज्वरनाशिनी च।

भावप्रकाश—

सुवर्चला ··निहन्ति कफ पित्तास्र श्वासकासारुचिज्वरान्।

इन वचनो के देखने का अवसर इसका तीन वर्ष प्रयोग करने के बाद मिला। उग्र शीतज्वरनाशिनी बड़े तेज शीत ज्वर को दूर करती है।

आठ-नौ वर्ष पूर्व मेरे पास एक रोगी जोकि शीतज्वर की अनेक चिकित्सको की वर्तमानकाल मे प्रचलित चिकित्सा करा चुका था, अन्त मे देहली स्थित मलेरिया इन्स्टिट्यूट का भी इलाज किया, ज्वर कुछ दिन बाद पुनः पुनः लौट आता था। मैंने उक्त रोगी को लघु भोजन, फल, पथ्य दिया, प्रतिदिन पेट साफ रखा, विश्राम कराया। दवा केवल हुलहुल के पचाङ्ग का स्वरस आधा तोला दिन मे तीन बार दिया। तीन चार दिन बाद ज्वर ठीक हो गया।

मेरे निकट में एक पैन्शनर डाक्टर केप्टिन रहते थे उनके पिता वैद्य थे, इसलिए उन्हे भी आयुर्वेदिक चिकित्सा मे अनुराग था। अनेक समय मेरे पास आकर सम्मति लेने, अपने भी अनेक अनुभव वतलाया करते थे। वे विषमज्वर के लिए केवल तृतीयक मे हुलहुल के पत्तो को पीसकर दाहिने हाथ की कलाई मे मेंहदी की तरह रखकर ऊपर से एक डवल तांबे का रख ज्वर आने से पहिले पट्टी मे बांध दिया करते थे। जब ज्वर का समय निकल गया होता तब दवा हटाकर दवा के स्थान पर छाला हो तो उस पर मक्खन लगा दिया करते थे। मैंने ज्वर के रोगियों को उपरोक्त विधि से तीन वार स्वरस पिलाना आरम्भ किया तो देखा कि क्रमशः ज्वर के उपसर्ग कम होते जाते है। ज्वर भी पहिले दिन से दूसरे दिन कम, तीसरे दिन और कम, अन्य उपसर्ग भी क्रमश कम। प्राय. बहत्तर घटे मे ज्वर ठीक। ऐसे ७५ रोगियों मे से ७० का विवरण मेरे पास है जिनका कि मैं सुबह शाम तापमान देख लिया करता था। १०५° डिग्री ज्वर मे भी प्रयोग किया है। पांच रोगियों को लाभ नहीं हुआ। उन दिनों दो तीन वर्ष मलेरिया के दिनों मे विषमज्वर के लिए मैंने उक्त हुलहुल के स्वरस के अतिरिक्त अन्य कोई औषधी व्यवहार नहीं की। कुछ रोगी ऐसे भी थे जो कि अन्यत्र खून की जांच होने के बाद लाभ न होने पर मेरे पास आये, वे भी अच्छे हुये। मेरा ऐसा विचार है कि इसके सेवन के बाद पुनः ज्वर नहीं लौटता।

एक रोगी जो कि एक वैद्य जी की पत्नी है जिसको कि घर मे इलाज करने के बाद इर्विन अस्पताल मे भर्ती किया गया, उक्त वैद्य जी के भाई यहां एक प्रतिष्ठित डाक्टर है, उनकी सिफारिश से भर्ती हुई। आठ-दस दिन बाद वहां लाभ न होने पर मेरे पडौस मे अपने घर ले आये, उक्त रोगिणी के रक्त आदि की जांच अस्पताल मे हो चुकी थी। मैंने पूर्वोक्त विधि से हुलहुल का रस तीन दिन पिलाया, इसके बाद ज्वर नहीं हुआ।

मेरे मकान से मिले हुये दूसरे मकान में एक ओवरसीयर रहते थे उनके आठ, दस वर्ष के दोनों लड़कों को १०५° ज्वर हुआ, ज्वर विषम ही था। मैंने पड़ौस मे होने के कारण प्रथम वार इलाज टाल दिया, इनकी रिश्तेदार डाक्टरनी ने चिकित्सा की, कुछ दिन बाद दोनों ठीक हो गये परन्तु पन्द्रह बीस दिन बाद फिर दोनों बच्चों को पहिले की तरह ही १०५ ज्वर हुआ। अब उनके आग्रह पर मैंने चिकित्सा की। क्रमश तीन चार दिन मे दोनों का ज्वर एक साथ ही ठीक हो गया। मेरे पड़ौस मे होने से वरावर उक्त लड़के मेरी नजर मे रहे, पुनः ज्वर होते नहीं देखा। तीन वर्ष तक इसी औषधि के रस को मुंह से पिलाकर मैंने विषम ज्वर की चिकित्सा की, सब रोगियो का तो पता नहीं मिलता जिनका हमे पता मिला उनसे सन्तोषजनक उत्तर मिला।

तीसरे वर्ष से मेरे मन मे एक कल्पना आई मैंने उक्त दवा का रस निकाल रोगी की दोनो आंखों मे एक-एक बूंद प्रातः सायं डालना आरम्भ किया यथा सम्भव दोनों समय का तापमान आदि देखा, अन्य औषधि कोई नहीं दी, हा कोष्ठ-शुद्धि, लघु पथ्य दिया गया। इनमे कुछ रोगियो को विश्वास के लिये कोई साधारण दवा दी गई, फल सन्तोषजनक रहा। अब भी हमारे पास यदि कोई रोगी विषमज्वर का आ जाता है तो उक्त दवा का ही प्रयोग करते है। आंखो मे डालने का स्वरस फिल्टर पेपर मे छानकर रख लेते है, छः माह तक नहीं बिगड़ता। ग्राम के लोग ज्वर मे बेहोशी होने पर इसका रस कानो मे डालते है ऐसा सुना है। जो लोग इसके पौधो के नमूने या बीज के इच्छुक हो वे डाक व्यय भेजकर मगा सकते है। इस पर अपने अनुभव दें व हमारी समालोचना करें। हमको इसका चातुर्थक ज्वर मे प्रयोग करने का अवसर नहीं मिला।
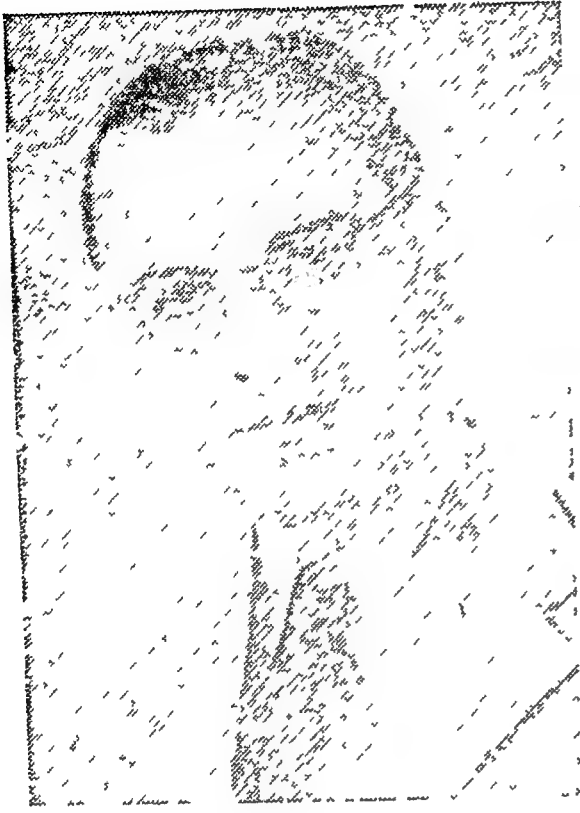
कवि. श्री आशानन्द पञ्चरत्न

आयुर्वेदाचार्य M. B. B. S. आयुर्वेदिक कालेज, जामनगर।

"श्री कविराज जी से वैद्य समाज भली भांति परिचित हैं। आप आयुर्वेदाकाश के दैदीप्यमान सितारे है तथा आपकी प्रतिभा सर्वत्र फैली हुई है। लाहौर, बम्बई तथा अन्य अनेक विद्यालयो मे प्रोफेसर तथा प्रिंसीपल रहे हैं। व्याधि-विज्ञान, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान आदि अनेक ग्रन्थो की आपने रचना की है जिनका चिकित्सक समाज सुरुचिपूर्वक अध्ययन करता है। आप बहुत ही सौम्य प्रकृति के तथा सहृदय व्यक्ति हैं। धन्वन्तरि के प्रति आपका सदैव प्रेमपूर्ण व्यवहार रहा है। आप वयोवृद्ध अनुभवी एव उभय चिकित्सा पद्धति मे निष्णात चिकित्सक हैं अतएव आपके निम्न प्रयोग निश्चय ही सफल सिद्ध प्रमाणित होगे।" —सम्पादक।

वीरेन्द्र रस—

रससिन्दूर	१ माशा
स्वर्णभस्म या सोने के वरक़	१ माशा
मुक्तापिष्टी	२ माशा
शुद्ध हरताल या रस माणिक्य	३ माशा
केशर	७ माशा
कस्तूरी	२ माशा

शुद्ध वत्सनाभ, पिप्पली चूर्ण, नागकेशर, जायफल, जावित्री, इलायची, कालीमिर्च, दालचीनी, शुण्ठी, लवंग

—प्रत्येक १-१ माशा

निर्माण विधि—पहले चार द्रव्यो (रस माणिक्य पर्यंत) को इकट्ठा घोटे, फिर कस्तूरी मिलाकर घोटे, बाद मे अन्य द्रव्यों को कपड़ छान कर मिला दो। तुलसी स्वरस, कुटकी क्वाथ, पुनर्नवा स्वरस प्रत्येक की ३-३ भावना दे। सुखाकर चूर्ण बनाले अथवा १-१ रत्ती की गोलियां बनाले।

मात्रा और अनुपान—आधा रत्ती की मात्रा में मधु के साथ, बाद मे मधुयष्टि (मुलैठी) क्वाथ, भांरगी आदि कोई कासहर क्वाथ मिलाकर दे।

प्रयोग—जीर्ण ज्वर, क्षय, जीर्ण जुकाम (पीनस), जीर्ण कास मे इसका प्रयोग करते है। आर्द्र प्ल्यूरिसी (तरलमय-फुफ्फुसावरण प्रदाह) मे विशेष लाभ करता है।

वक्तव्य—इस प्रयोग को स्वय मैने अपने हाथो से बना कर प्रयोग किया है तथा पोद्दार आयुर्वेदिक कालेज के अस्पताल मे प्ल्यूरिसी के सैकडों रोगियो पर आजमाया है, सफल अनुभूत प्रयोग है। मैंने इस प्रयोग को पोद्दार कालेज अस्पताल को दे दिया है। तथा तब से आजतक निःशक रूप से सफलतापूर्वक वहा के रोगियो पर बरता जाता है।

आरग्वधाद्यवलेह—

तज	शुण्ठी	कालीमिर्च
छोटी पिप्पली		बड़ी इलायची
सेंधा नमक		काला नमक

—प्रत्येक २॥-२॥ तोले

भुना अनारदाना	भुना जीरा
अजमोद	मुलहठी

—प्रत्येक ५-५ तोले

शक्कर	२० तोले
सनाय डोंडे	२० तोले
अमलतास	४० तोले
असली काली द्राक्षा	१० तोले

निर्माण विधि—१ सेर नींबू के रस में ½ सेर अमलतास का गूदा डालकर २४ घंटे तक रख छोड़े। बाद में आग पर ½ घंटा तक गरम करके हाथ से मसल कर छानले, ऊपर लिखे सब द्रव्यों का बारीक चूर्ण इसमें मिलावें। बाद में १० तोले काली द्राक्षा को बारीक पीस कर मिला दे तथा इसे पत्थर या कांच की साफ बरनी में रख छोड़े।

मात्रा और अनुपान—एक या दो चम्मच गरम दूध एवं गरम चाय या गरम पानी के साथ रात को सोते समय दे, यदि ऐसे ही खासके तो ऐसे ही दे।

गुण—यह विबन्ध को खोलने तथा दस्त लाने के लिए प्रयोग किया जाता है। इससे एक या दो दस्त आजाते हैं। इसके प्रयोग से अत्यन्त जीर्ण विबन्ध भी मिटकर सदा के लिये दूर हो जाता है। सैकड़ों बार का सफल परीक्षित प्रयोग है।

विषमज्वरारि वटी—

कुटकी	चिरायता	पर्पट (पित्तपापड़ा)
सप्तपर्ण	त्रायमाण	करंज
सारिवा	मुस्तक (मोथा)	गुडूची
पेशावरी		पनीरडोडा

—प्रत्येक ४० तोले

—इनका घनसार बनावें, यह घनसार पतला रखें। इसमे किनीन वाईसल्फ या किनीन वाई हाईड्रोक्लोर २० तोले और त्रिफला से भावित शतपुटी लोहभस्म १० तोले तथा शुद्ध सोमल १ तोला डालकर विधिवत् मर्दन कर गोलियां बनालें।

विधि—घनसार थोड़ा पतला रखें। क्विनीन, लौह-भस्म तथा सोमल चूर्ण को परस्पर खूब अच्छी तरह मिलावें, मिल जाने पर इसको मन्द अग्नि पर गर्म करते जाये और साथ-साथ तब तक हिलातें भी जाये जब तक कि इतना गाढ़ा हो-जाय जिससे गोली बन सके तब उतार ले, ठंडा होने पर ३-३ रत्ती की गोलिया बनावें।

मात्रा व उपयोग—आरम्भ में ज्वर काल में २-२ रत्ती ४ बार दिन में पानी के साथ दे। ३-४ दिन के प्रयोग से ज्वर का वेग रुक जायगा। तत्पश्चात् इस औषधि की ६-६ गोली प्रतिदिन ११ दिन तक और दे। अर्थात् आरम्भ से कुल १५ दिन तक दे। तत्पश्चात् २-२ गोली प्रातः प्रतिदिन २५ दिन तक दे। इस प्रकार कुल ४० दिन औषधि देने से विषमज्वर समूल नाश होता है।

दूसरी विधि—१० ११ दिन के सतत प्रयोग के बाद ७ दिन औषधि न दे। बाद के ३ दिन ६-६ गोली रोज (२-२ गोली ३ बार दिन में) दे। तत्पश्चात् ७ दिन पुनः कुछ न दे। और पुन. ३ दिन फिर गोली दे। इस प्रकार एक बार और करे अर्थात् ३० दिन में ३ बार ३-३ दिन दवा-इयां दे। इस प्रकार दोनों विधियो से औषधि क्रम ४० दिन का है।

यह औषधि सर्वथा हानि रहित है। न इसका कोई विष प्रभाव है न उपद्रव, असफलता की शंका भी नहीं।

जीर्णज्वर जिसमें प्लीहा वृद्धि हो, उसमें भी यही वटी ६-६ गोली प्रतिदिन १५ अथवा २१ दिन तक दें। तत्पश्चात् २-२ गोली प्रतिदिन

—शेषांश पृष्ठ १४ पर

आयुर्वेद बृहस्पति

श्री पं. कान्तिनारायण मिश्र आयुर्वेदाचार्य

एम. ए. एम.एस., डी. एस-सी. (ए), ए. एल. आई. एम (मद्रास) डाइरेक्टर ऑफ आयुर्वेद पंजाब, पटियाला

"आपका जन्म उत्तर भारत के प्रसिद्ध आयुर्वेदज्ञ प्राणाचार्य पं० सदानन्द जी मिश्र के घर २६ अप्रैल १६१२ को हुआ। आप प्रसवविद्या एवं नेत्र दर्शन, आंग्ल, हिन्दी एव संस्कृत ग्र थो के प्रणेता हैं तथा नागार्जुन रचित रसरत्नाकर एव भावप्रकाश के समालोचक। अखिल भारतवर्षीय फार्मेसिष्ट कान्फ्रेंस, इन्दौर के सभापति, अखिल भारतवर्षीय सिलेवस कमेटी के सदस्य, पेप्सू आयुर्वेद कांग्रेस के अध्यक्ष, एव नवनिर्मित पजाव आयुर्वेदिक एवं यूनानी चिकित्सा परिषद् के अध्यक्ष हैं। आपने गवर्नमेट आयुर्वेदिक कालेज पटियाला की स्थापना करने एवं एक-वर्षीय उपवैद्य तथा पचवर्षीय डिग्री कोर्स के चालू कराने मे पूर्ण सहयोग दिया तथा उक्त कालेज के प्रिंसिपल रहे। सम्प्रति गवर्नमेट आयुर्वेदिक कालेज की परीक्षा समिति के आप प्रधान हैं एव उत्तरी भारत के प्रसिद्ध आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं।"

—सम्पादक।

मकल शूल—

यवक्षार १ माशा

—तीन मात्रा

विधि—५-५ घंटे वाद ३ माशा किंचिदुष्ण घृत से मिलाकर देवें।

दशमूल का अर्क ४ तोला

—तीन मात्रा

विधि—४-४ घण्टे बाद पिलावे। इस प्रकार करने से तीन चार दिन मे अवश्य लाभ हो जाता है, जो कि बहुसंख्यात्मक रोगियो पर अनुभव किया गया है।

वक्तव्य—यदि असह्य वेदना हो तो रात्रि के समय १ माशा से १॥ माशा तक उत्तम सर्पगन्धा का चूर्ण दूध से दें। यदि रुग्णा अधिक दुर्वल और रोग क्षमताशक्तिविहीन हो तो पूर्व सायकाल को शृङ्गभस्म २ रत्ती मुक्तापिष्टी २ रत्ती की एक मात्रा मधु से चटावें। तत्पश्चात् सर्पगंधा का उपरोक्त मात्रा में वला-वल के अनुसार प्रयोग कराते रहे। ऐसा करने से हृदय की गति में निर्वलता नही आयेगी।

कदाचित् प्रसव के तीसरे चौथे दिन प्रसूता के स्तनो में दूध जमा होने के कारण स्तन बड़े कठोर हो जाते हैं और उनमें पीडा भी होने लगती है। साथ में थोडा-थोडा ज्वर भी हो जाता है। ऐसी दशा में भी घबराना नहीं चाहिए क्योकि ऐसी दशा साधारण चिकित्सा से स्वयं शान्त हो जाती है। इसके लिए उदर शुद्धि, स्तनो का दुग्ध यन्त्र द्वारा निकालना एवं उन पर उष्ण तैल की मालिश आदि कर देनी चाहिए। जव वालक दूध पीना आरम्भ कर देता है तो यह दशा ही नही होती क्योकि स्तनो में अधिक दुग्ध की स्थिति से ही शरीर में या अङ्ग प्रत्यङ्गो में पीडा की सम्भावना होती है।

वालपोषणी घुटी—

सौंफ मकोय अजवायन

ढाक के बीज — सुहागे की खील
रेवन्दचीनी — मुलहठी — बहेड़ा छिलका
इन्द्रजौ — कुटकी — निसोत
एलुवा — गुलाब के फूल
—तेरह द्रव्य १-१ तोला

वच — ६ माशा
अमलतास का गूदा — १ छटाक
सरनाय (सनाय पत्ती) — ३ तोला

विधि—इन सबको जौकुट करके रख ले। बालक के बलाबल के अनुसार १ माशा से २ माशे तक थोड़े से पानी में उबाल कर प्रयोग कराने से बालकों के दुर्गन्धित अतिसार, ज्वर शूल एव कृमि रोग दूर हो जाते हैं। यह दीपन पाचन एव रुचिवर्द्धक होने से और सेन्द्रिय विषनाशक होने से बालकों की दुग्धपान मे भी अधिक रुचि कराता हुआ पाचन संस्थानगत अन्य विकारो को भी दूर करता है।

बाल संजीवनी वटी—

नागरमोथा — काकड़ासिंगी
समुद्रफेन — वायविडंग — अतीस
हरड़ की छाल — बहेड़े की छाल
पीपल — आंवला — अजवायन
कालीमिर्च — सोठ — शुद्ध पारद
सफेद इलायची के दाने — शुद्ध गंधक
—प्रत्येक ३-३ माशा

चौकिया सुहागा — वंशलोचन
रूमीमस्तङ्गी — तीनो ६-६ माशा

विधि—पहिले पारद और गन्धक को घोटकर कज्जली बनाले, फिर अन्य सब औषधियो को कूट कपड़े से छानकर उसमे मिला दे। उचित मात्रा मे तुलसी स्वरस मे घोटकर आधी आधी रत्ती प्रमाण मे गोलियां बनाले।

प्रयोग—१-१ गोली माता के दूध या पानी से दिन मे ३ बार दे। इससे बालको के ज्वर, कास प्रतिश्याय अतिसार आदि रोग दूर होते हैं। यह सूखे हुये बालको के लिए भी अत्यन्त हितकारी है। इसके सेवन से शरीरगत सप्तधातु की पुष्टि और बालक मे स्फूर्ति की अधिक उत्पत्ति होती है।

स्व० कविराज श्री गणनाथ सेन जी सरस्वती

महामहोपाध्याय के

❖ विषमज्वर नाशक दो सरल प्रयोग ❖

१—"ज्वर हन्ति शिरोबद्धा सहदेवी जटा"

सहदेवी अर्थात् सहदेइया का मूल शिर मे बांधने से विषमज्वर दूर होता है। इस औषधि मे तीव्र ज्वर को कम करने की शक्ति परीक्षित है।

२—निर्गुण्डी नस्य—निर्गुण्डी या सम्भालू अत्यन्त प्रसिद्ध चीज है। इसके पत्र का रस ३ माशा तक नस्यार्थ प्रयोग करने मे शीतकम्प ज्वर प्राय नष्ट हो जाता है। ज्वरागम से ४-५ घंटे पहिले से प्रति घंटे नासा मे निर्गुण्डी पत्र स्वरस डालना चाहिए। यह अद्भुत योग [illegible] किसान से मिला था। परीक्षा करने पर शतश. सफल प्रमाणित हुआ।

—परीक्षित प्रयोगांक।

श्री पं. हरिनारायण वैद्य, काव्यतीर्थ आयुर्वेदाचार्य

श्री पूर्णचन्द्र औषधालय, प्रतापगढ़ (अवध)
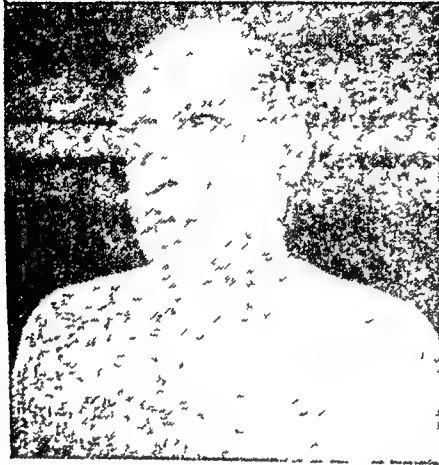
"आपका जन्म गौड़ ब्राह्मण परिवार मे, भदैनी–वाराणसी मे संवत् १९५२ मे हुआ। आप व्याकरण के मध्यमा, आयुर्वेदाचार्य, काव्यतीर्थ है तथा साख्य, वेदान्त, योग, धर्मशास्त्र, पुराण आदि के ज्ञाता हैं। आपकी लिखी हुई माधव निदान-मधुकोश की सस्कृत टिप्पणी एव हिन्दी टीका, शार्ङ्गधर-सहिता तथा अञ्जन निदान पर सस्कृत टिप्पणी, रोग परिचय, भारतीय भोजन एव बू बूटीप्रचार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। सन् १९-२८ से वी. एन. मेहता सस्कृत विद्यालय प्रतापगढ मे आयुर्वेद का अध्यापन कार्य करते हुए प्रिंसीपल रहे है। ९ सितम्बर १९५७ को उक्त विद्यालय से पदमुक्त होगए है। आप योग्य सफल चिकित्सक है तथा सदैव स्वनिर्मित औषधिया ही चिकित्सा-कार्य मे व्यवहार करते है। आपके सस्कृत तथा हिन्दी लेख विविध पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित होते आये हैं। आपके चिरकालीन अनुभव सागर के कतिपय रत्न प्राप्त कर आशा है पाठक आपके आभारी होगे।"

—सम्पादक।

कास-श्वास नाशक प्रयोग—

वासा (अडूसा) का पंचाङ्ग	१ पाव
भटकटैया (कण्टकारी) का पंचाङ्ग	१ पाव
मुरेठी (यष्टि मधु)	आधा पाव
आदी (आर्द्रक) का रस	१ छटाक

—प्रथम तीन औषधियो का जौकुट चूर्ण करके ३॥ सेर पानी मे रात भर मिट्टी के पात्र मे भिगोये रखे, सुबह चुआवे। अनुमानतः ३ पाव पानी बाकी रहने पर छान लें, ३ पाव चीनी एवं आदी का रस मिलाकर चाशनी बनाले जैसा शहद होता है।

मात्रा—आठ आना भर, सुबह, दोपहर, शाम। तीनो समय मे १॥ तोला दवा पेट मे पहुँचावे।

लाभ—हर प्रकार की खांसी तथा हर प्रकार का श्वास और प्रतिश्याय रोग समूल नष्ट होता है। असाध्य रोग मे कम लाभ एव याप्य बना रहेगा। लगभग सौ रोगियां पर अनुभूत किया हुआ है।

—रक्तपित्तानुवन्धित कास मे प्रयोग करना हो तो आदी के स्थान मे आधा पाव मुनक्के का रस डालदे। मुनक्का दो छटांक आधा सेर पानी मे चुरावे। आधा पाव शेष रहने पर मल छान कर निचोड़ ले। यही मुनक्के का रस है।

—अधोग रक्तपित्त मे प्रयोग करना हो तो आदी के स्थान पर आध पाव हर्रा के बकला का रस डाले। हर्रा का रस मुनक्के की तरह ही तैयार किया जायगा। मुनक्का का भी रस साथ ही डालना चाहिए।

उदावर्त की दवा—

१ सनाय की पत्ती नई	२ छटांक
२ अञ्जीर	४ ,,
३ इमली का गूदा	१ ,,
४ अमलतास का गूदा	२ ,,
५ आलू बुखारा का गूदा	२ ,,
६ धनियां	१ ,,

७ मुलहठी १ छटांक
८ मिश्री ३ पाव
९ पानी १। सेर

—संख्या १ व ६ का कपड़छान चूर्ण करे । सं. २, ७ को कूट कर पानी मे क्वाथ करे, आधा पानी बाकी रहने पर मलकर छानले । सं. ३, ४, ५ सिल पर थोड़ा पानी डाल कर महीन चटनी के समान पीस ले । बाद क्वाथ की कड़ाही मे डाल कर पकावे, चौथाई पानी जल जाने पर सं ८ डालकर शहद की तरह चाशनी करले । और सं १, ३, ४, ५, ६ सब दवाओं का प्रक्षेप डाल कर चलाकर उतार ले । ठंडा होने पर चीनी के वर्तन मे रखे ।

मात्रा व गुण—१ तोला । यह अवलेह कब्ज को दूर करेगा एवं यकृत् वृद्धि का समूल नाश करने वाला है । पुराने ज्वर मे भी लाभकारी है । रक्तपित्त व कामला रोग की भी अद्भुत दवा है । कई बार इसका अनुसन्धान किया गया है ।

विषमज्वर की दवा—

तबकी हरताल शुद्ध १ तोला
पत्थर का चूना बिना बुझा हुआ १ तोला

—दोनो को घीग्वार के रस मे ३ घण्टे तक घोट कर १ टिकिया बनाकर सुखाले । पश्चात् २।। तोला फिटकरी के चूर्ण के बीच मे शराव सम्पुट मे रख कर कपड़मिट्टी कर एवं सुखा कर गजपुट मे फूंक दिया जाय । ठंडा होने पर निकाल कर फिटकरी सहित घोटकर शीशी मे रखले । शीतज्वर या पारी के ज्वर के समय से पहले दो-दो या एक-एक घंटे पर बताशे में या चीनी मिलाकर दवा खानी चाहिए । ऊपर से १ छटांक पानी पी लेना चाहिये ।

मात्रा—वयस्क के लिए २ रत्ती बालकों के लिए १ रत्ती । जिस दिन ज्वर आने वाला हो उस दिन अन्न को भोजन में न दें । यह योग कुनैन से भी बढ़ कर है ।

प्रमेह की सुलभ दवा—

नीम की गुर्च १ तोला
सेहमर (शाल्मली) की भीतरी छाल ६ माशा
लसोढ़ा (श्लेष्मातक) की छाल ६ माशा

—कूटकर १ पाव पानी में मिट्टी के वर्तन में भिगोदे । सुबह मल-छान कर मधु ६ माशा मिलालें । पहले ३ माशा आवला का चूर्ण, ३ माशा हल्दी का चूर्ण फांक कर ऊपर से उपर्युक्त द्रव पी जाय । दही, खटाई, तेल मिर्च, गुड़ से परहेज करे । दिन में न सोये । दवा सेवन काल में ब्रह्मचर्य का पालन करे । जब तक प्रमेह अच्छा न हो जाय तब तक दवा का सेवन करता रहे । यह औषधि सभी प्रकार के प्रमेह की नाशक है । अनुभूत है ।

दाद (दद्रु) की सरल सुलभ दवा—

भुनी फिटकिरी भुना चौकिया सुहागा

—दोनों के सम भाग ले । चूर्ण को दाद खुजला कर (थोड़ा) सूखा ही मल दे । एक ही दिन में मालूम होगा मानो कि दाद था ही नहीं । जब तक निर्मूल न हो तब तक लगाता जाय । शतशोऽनुभूत है ।
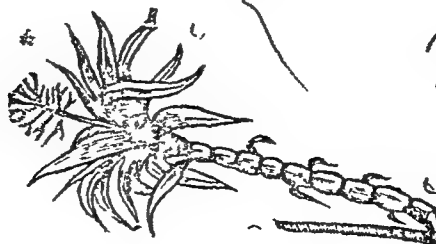
आचार्य श्री ब्रह्मदत्त शर्मा

प्रिंसिपल—अयोध्या कुमारी आयुर्वेदिक महाविद्यालय, बेगूसराय (मुंगेर)

"श्री आचार्य जी ने गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी से आयुर्वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की है। आपका जन्म वर्तमान पाकिस्तान के सीमाप्रांत मे जम्मू जिले के कसराभिशानी कस्बे मे हुआ। अपने विद्यार्थी जीवन मे विलक्षण प्रतिभा के बल पर प्रति परीक्षा मे प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण होते रहे। इस पर आपको कई स्वर्ण पदक प्राप्त हुए। नि भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य परीक्षा भी आपने प्रथम श्रेणी मे समस्त भारत मे द्वितीय रह कर उत्तीर्ण की। संस्कृत के अनेक निबन्धो की प्रतियोगिताओ मे प्रथम पारितोषक प्राप्त किए। आपको आयुर्वेद का गम्भीर अनुशीलन एव विवेचन अधिक रुचिकर है। कई पुस्तको पर आपने प्रथम श्रेणी का सम्मान प्राप्त किया है। आपके लेख अनेक पत्रिकाओ मे प्रकाशित होते रहे है। अपने अनुसन्धान कार्य आदि के कारण मद्रास की 'एकेडेमी आफ इण्डियन मैडीसन' के आप 'लर्नेड फैलो (F. A I. M.) भी हैं। संस्कृत विद्यामन्दिर बनारस से वैद्य धुरीण उपाधि से विभूषित है। ४ वर्ष गुरुकुल कांगड़ी मे आयुर्वेद महाविद्यालय मे प्रोफेसर तथा उपाध्यक्ष का कार्य किया। सन् ४६ मे रावलपिण्डी मे अपना स्वतंत्र व्यवसाय प्रारम्भ करते ही भारत विभाजन के कारण आपको सब कुछ छोड़ कर इधर आना पड़ा और लखनऊ मे चिकित्सा कार्य किया। वर्तमान में आप अयोध्या शिवकुमारी आयुर्वेद महाविद्यालय बेगूसराय मे अध्यक्षपद पर सुशोभित हैं। आपकी लेखन मे अति रुचि है। शीघ्र ही आपकी एक कृति पाण्डुलिपि के २५०० पृष्ठो की 'नवीन विज्ञान के सिद्धान्तो के साथ त्रिदोष सिद्धान्त की तुलना' अपने विषय मे एक अनूठी पुस्तक प्रकाशित होने वाली है। तुलसी, अर्शोरोग, अगदतंत्र, नेत्र विज्ञान, सुश्रुत उत्तरतंत्र—आयुर्वेद रहस्य बोधिनी टीका, अष्टांगहृदय—आयुर्वेद रहस्य प्रकाशनीय टीका आदि पुस्तकें भी अप्रकाशित ही है।"

—सम्पादक।

विषमज्वरहर कषाय—

गिलोय	१ भाग
चिरायता	१ भाग
अतीस	१ भाग
पित्तपापड़ा	१ भाग
अजवायन	चौथाई भाग
त्रिफला	१ भाग
सप्तपर्ण	१ भाग
करजबीज	१ भाग
सनाय	आधा भाग
कुटकी	१ भाग
नागरमोथा	१ भाग

—इसका चतुर्थांशावशेष विधि से क्वाथ बनाकर विषमज्वर (मलेरिया) मे प्रतिदिन २-३ बार दे।

मात्रा—२॥ तोला से एक छटाक तक दिन मे दो तीन बार।

विवरण—सन् १६४२ मे विषमज्वर का जो भयंकर प्रकोप हुआ था, उसमें इससे बड़ा लाभ पाया गया। नवीन विषमज्वर के लिए अत्यु-

त्तम है। बहिरंग चिकित्सालयों में भी इसका सफलतापूर्वक आसानी से व्यवहार किया जा सकता है ।

श्लीपद में–

सहदेवी के चूर्ण एवं स्वरस का प्रयोग अत्यन्त फलप्रद सिद्ध होता है। मुष्कवृद्धि (हाइड्रोसील) में भी इससे बड़ा लाभ अनुभव में आया है। इसका २१ दिन का कल्प अत्युत्तम है। 'नित्यानन्द रस' के अनुपान रूप में इसका स्वरस अच्छा रहता है।

मदनवटी—

स्वर्णवंग	स्वर्णमाक्षिक भस्म
त्रिधातुभस्म (पीत)	१–१ तोला
शुद्ध हिंगुल	३ माशा
सत शिलाजीत	३ तोला
सिद्धमकरध्वज	१॥ तोला
कस्तूरी केशर	अम्बर
शुद्ध कुचला चूर्ण	अहिफेन
—प्रत्येक ६–६ माशा	
अकरकराचूर्ण	१ तोला

—सर्वप्रथम शिलाजीत सत्व को कुछ जल में डालकर अग्नि की सहायता से विलीन एवं गाढ़ा करले। तभी उसमें कस्तूरी केशर अहिफेन एवं अम्बर मिलादे, तदनन्तर गाढ़ा हो चुकने के बाद, प्रथम चार चीजे और सिद्ध मकरध्वज, अकरकरा एवं कुचला (चूर्ण करके) प्रक्षेप रूप में मिलाले। इस प्रक्रिया में समूचे पिण्ड की घनता का ध्यान रखें कि गोलियां बनाने लायक स्थिति बनी रहे। ३-३ रत्ती की गोलिया बनाकर शीशी में बन्द करके उस शीशी को १-१॥ मास तक जौ या गेहूँ के ढेर में दबाए रखे। तदनन्तर आवश्यकतानुसार १ से २ गोली प्रतिदिन रोगी को प्रयोग करावे।

अनुपान—उष्ण दुग्ध (इलायची एवं पिप्पली से साधित)।

उपयोग—क्लीवता, ध्वजभङ्ग एवं शीघ्रपतन में इससे बड़ा लाभ होता है।

:: पृष्ठ ४१ का शेषांश ::

लुधियाना निवासी डा० लाजपतराय ने इसको मेरे कथन से अपनी चिकित्सा का विशेष अंग बना कर अन्य एलोपैथिक औषधियों को तिलाञ्जलि प्रदान करते हुए इसी का प्रयोग किया और ३ वर्ष की अवधि में ३३५ रोगियों में से जो कि जटिलावस्था को प्राप्त थे ३१० रोगियों के सफल होने की की सूचना दी।

जिस समय मैं ए० के० होस्पिटल पटियाला का इञ्चार्ज था उस समय मैंने भी अन्य औषधि को विशेषता न देते हुए इसी का प्रयोग किया। १५ नाड़ीव्रण रोगियों को इसी तैल की वर्त्ति का प्रयोग करते हुए एवं महा त्रिफला घृत ६ माशा प्रातः ६ माशा सायं दुग्ध में देते हुये और भोजन पश्चात ४ रत्ती आरोग्य वर्द्धिनी को सारिवा रस २॥ तोला से दो बार देकर विशेष सफलता प्राप्त की। जिनको शल्य चिकित्सकों ने शस्त्र कर्म का ही आदेश दिया था। पहले उन रोगियों की दशा को देखकर मेरा भी विचार हुआ कि शस्त्र कर्म होना चाहिये। परन्तु रोगियों की शस्त्र कर्म कराने की इच्छा को न देखते हुए उन्हें प्रविष्ट किया गया और ११ रोगियों को २२ दिन में पूर्ण लाभ हुआ, दो रोगी पूर्ण १-१ मास तक रहे। २ रोगी जो कि बहुत गम्भीरावस्था को प्राप्त थे २½-२½ मास रखने पड़े। परन्तु औषध व्यवस्था ऊपर के अनुसार ही की गई। साधारण शल्य कर्मोपयोगी- १४३० रोगियों में से १३५३ रोगियों की सफलता की सूचना मिली।

आयुर्वेदाचार्य पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र

बी. ए., बी. आई. एम. एस, प्रिंसिपल—आयुर्वेद कालेज, मेरठ।

"श्री मिश्र जी की योग्यता बी ए बी आई एम. एस आनर्स, आयुर्वेदाचार्य है। आपने सन् १६३६ मे राजकीय वैद्य हकीम एसोसियेशन उत्तर प्रदेश की स्थापना की तथा सन् १६४२ तक उसके जनरल सेक्रेटरी रहे। १६४५ मे आयुर्वेद कालेज, गुरुकुल डारौली (मेरठ) की स्थापना मे क्रियात्मक एव ठोस सहयोग प्रदान किया, तथा उसके बाद प्रिंसिपल एव स्थानापन्न प्रिंसिपल रहे। सन् १६४८ से १६५३ तक रा स आयुर्वेद कालेज के प्रिंसिपल रहे। गत १४ वर्ष से मेरठ आयुर्वेदिक कालेज, नौचन्दी मेरठ के प्रिंसिपल पद पर कार्य कर रहे हैं, तथा इस सस्था के सस्थापक हैं। चार वर्ष तक नि भा आयुर्वेद महा सम्मेलन पत्रिका, देहली के सम्पादक रहे हैं। आप उत्तर प्रदेशीय वैद्य सम्मेलन के मन्त्री, तथा नेशनल मेडिकल एसोसियन ऑफ इण्डिया की कार्यकारिणी के सदस्य हैं।

इसी वर्ष फैकल्टी आफ आयुर्वेदिक तथा भारतीय चिकित्सा परिषद उत्तर प्रदेश लखनऊ के प्रोफेसर सीट से सदस्य चुने गये है।"

—सम्पादक।

सुर्मा मोती वाला—

शुद्ध काला सुर्मा	१ तोला
मोती शुद्ध	४ रत्ती
मिर्च श्वेत	७ नग
मिसरी	६ माशा
शोरा कलमी	३ माशा
तूतिया शुद्ध	४ रत्ती
चांदी के वर्क	७ नग
शुद्ध प्रवाल	१ माशा
चमेली की कली	१ तोला
नीम की कांपल	१ तोला

—इन सबको १ पाव अर्क गुलाब मे थोडा-थोडा अर्क डालकर घोटे और सुर्मा बना ले।

गुण—नेत्रशोधन तथा नेत्रप्रसादन के लिए अद्वितीय है। इससे नि सन्देह नेत्र निर्मल सुरक्षित रहकर नेत्रज्योति मे वृद्धि होती है।

उदर रोग नाशक वटी—

कुमारी स्वरस आर्द्रक स्वरस
निम्बु स्वरस प्याजस्वरस सिरका रस
—पांचों ५-५ तोला

भुना सुहागा जीरा काला भुना
—प्रत्येक २-२ तोला

हींग भुनी १ तोला
पंच लवण (प्रत्येक ६-६ माशे) २॥ तोला

निर्माण विधि—सुहागा आदि औषधियो का चूर्ण खरल मे डाल उपर्युक्त पांचों रसो मे क्रमशः घोटे और चना जैसी गोली बना ले।

गुण—भोजन के बाद १-१ गोली लेने से यकृत, प्लीहा, अग्निमांद्य के लिये हितकारी है। पाचक एवं अत्यन्त रोचक है।

श्री लाला बद्रीनारायण सेन

जी. ए एम. एस मोतीझील, मुजफ्फरपुर ।

"आपका जन्म विक्रमी सम्वत् १९६६ मे हुआ था। आपके पिता जी का नाम श्री देवकी प्रसाद जी है आप योग्य, अनुभवी एव सफल आयुर्वेद चिकित्सक है। आपने धन्वन्तरि के पाठको के समक्ष उन प्रयोगो को रखा है जिनको वे अपने रोगियो पर बहुत समय से व्यवहार करते रहे है। आपने सूचित किया है कि ये प्रयोग ५० प्रतिशत सफल सिद्ध हुए है। आपने पाठको से आग्रह किया है कि वे अपने रोगियो पर इन प्रयोगो का व्यवहार करें और जो परिणाम हो उसकी सूचना आपको दें जिसमे कि वे इन प्रयोगो पर अधिक खोज कर सकें। अन्य अनेक प्रयोग-प्रेषको की भाँति प्रयोगो के गुणो को अत्युक्तिपूर्ण लिखने के आप विरोधी हैं। आशा है पाठक आपके अनुभव से लाभ उठावेंगे।

—सम्पादक।
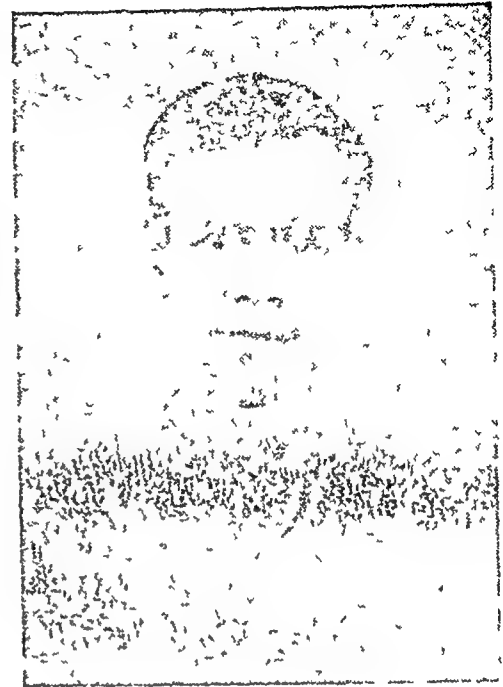
सर्पगन्धावटी—

सर्पगन्धा की जड़ का चूर्ण	३ तोला
फालसा की छाल का चूर्ण	२ तोला
ताम्र भस्म	३ माशा
शुद्ध शिलाजीत	६ माशा

—घृतकुमारी के रस की सात भावना देकर इसकी ४० गोलिया बनावें।

गुण रक्तचापाधिक्य (Highblood pressure) मे उपयोगी है।

मात्रा—

यदि ब्लडप्रेसर १८० से लेकर १६० के बीच हो तो एक गोली सुबह तथा एक गोली शाम व एक गोली रात को सोते समय ठंडे पानी के साथ खाये। यदि ब्लडप्रेसर १८० से १५० तक के बीच का हो तब केवल एक बार सुबह व एक बार शाम को। यदि १६० से [illegible] या [illegible] के बीच मे हो तो २ गोली सुबह दो गोली शाम को दे। यदि [illegible] से अधिक हो तो ३ गोली सुबह दो गोली शाम व दो गोली [illegible]।

सावधानी—

जब २४ घंटे में दो गोली से अधिक इस औषधि का सेवन किया जाता हो तब रोगी को बिछावन पर रखना चाहिए और प्रतिदिन ब्लड प्रैसर लेते रहना चाहिए। जैसे-जैसे ब्लेड प्रैसर कम होता जाए मात्रा घटाते जायें। बहुधा देखा गया है कि जब २४ घटे मे ६ गोली का उपयोग किया गया है या २-२ गोली एक बार मे, तो २४ घंटे से ४८ घटे के भीतर ही प्रैसर पर्य्याप्त मात्रा मे कम होजाता है।

इस औषधि के सेवन काल में अवसादक प्रभाव काफी रूप में होता है अत. रोगी को बिछावन पर आरम्भ से रखे व खाने को आधा पेट हल्का दे। पेट साफ रखे। त्रिफला का प्रयोग रात मे सोते समय ३ माशा से ६ माशा की मात्रा मे कराये।

स्वर्ण सिन्दूर रस—

स्वर्ण सिन्दूर	६ माशा
अकीकभस्म	३ माशा
जहरमोहरा भस्म	३ माशा

अभ्रक भस्म	३ माशा
अर्जुन के छाल का चूर्ण	६ माशा
जटामासी	६ माशा
कूठ असली	६ माशा

—खस्सी के हृदय* के रस की सात भावना दे। प्रत्येक भावना के साथ कम से कम ३ घंटे खरल करें और उसे खूब सुखाने के बाद ही दूसरी भावना दे। इससे १०० गोलियां बनावे।

अनुपान एवं उपयोग—

एक-एक गोली मधु से हर ८-८ घंटे पर। आवश्यकतानुसार इसे हर ३ से ८ घंटे पर दिया जा सकता है। मयूरपुच्छ भस्म एक रत्ती वहेड़ा की मींग ३ रत्ती एवं मधु के साथ तब प्रयोग करे जब हृदय रोग के कारण श्वास अधिक फूलता हो। इस अनुपान से श्वास का फूलना २४ घंटे के अन्दर ही नियन्त्रित हो जाता है।

हृदय संरक्षणार्थ किसी भी अवस्था में इसका प्रयोग किया जा सकता है। हृदय विस्फार (Dilation of heart) द्वारिका अवरोध (Mitral Stenosis) इत्यादि मे विशेष रूप से इसका प्रयोग लगातार (Routine Course) मे किया जा सकता है।

भल्लान्तकलौह—

रस सिंदूर	६ माशा
ताम्रभस्म	३ माशा
स्वर्णमाक्षिक रौप्यमाक्षिक लौह —प्रत्येक ३-३ माशा	

—खस्सी के जिगर के रस से १४ भावना दे। प्रत्येक भावना के साथ कम से कम ३ घण्टे खरल करे और खूब सुखावे। इसके बाद इसमे निम्न लिखित द्रव्य डाले—

भिलावे की मींग, चित्रकमूल	१-१ तोला
गुलदाउदी का सूखा फूल	६ माशा
आक के पत्ते की अन्तर्धूम भस्म	६ माशा

—घृतकुमारी के रस से खरल कर इसमे १०० गोलियां बनावे।

अनुपान एवं उपयोग—

सुबह शाम एक-एक गोली २ रत्ती पीपर की बुकनी एवं मधु से। यकृत वृद्धि, यकृत क्षय, यकृत कार्य्य-अक्षमता, यकृतजन्य रक्ताल्पता, रक्तकण अल्पता मे प्रयोग करे।

बच्चो के यकृत मे (Infantile Liver) में भी इसका प्रयोग अच्छा है। इसमे पीपर की बुकनी एवं मधु से इसे चटा ऊपर से गौमूत्र एक औंस के लगभग पिलावे।

सावधानी—

जिसके मूत्र मे Albumen आता हो उसमे इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए।

यदि इसके सेवन से मूत्र का रग गाढ़ा, पीला, यानी सरसो के तेल के सामान हो तब भी इस औषधि का सेवन नहीं करे।

बहुधा इसके सेवन काल मे शरीर पर फुन्सियां निकलती हैं मगर यह घबडाने की बात नहीं।

---

*खस्सी के हृदय एवं जिगर के रस के सम्बन्ध मे—खस्सी से अर्थ नर छाग से है। इसके रस को निकालने का आसान तरीका है कि पत्थर के खरल मे इसे कुचल डालें और निचोड़ कर रस निकाल लें। मगर इस तरीके से रस कम निकलता है। रस निकालने की एक हाथ की मशीन होती है ठीक सेवई के कल जैसी। उसमे डाल कर पेर कर रस निकाल लें। सेवई वाले कल से भी किसी कदर काम होजाता है।

मध्यम तरीका है क्वाथ का। क्वाथ से अच्छा है 'अखनी' का तरीका। इसके हृदय या जिगर को खूब टुकड़े-२ कडे कर एक बडे मुँह की शीशी मे डाल मुँह बन्द करदे। इस शीशी को पानी मे डाल दो घण्टे उवाले। शीशी के भीतर पानी वगैरह नहीं डालें, केवल हृदय या जिगर का टुकडा उवालें। २ घण्टे उवालने के बाद शीशीके अन्दर इसका रस एकत्रित होजायगा। इसकी भावना दें।

ओजोमेहारि रस—

नं० १—चन्दन श्वेत कबावचीनी
सतगन्धा विरोजा सूरजमुखीफूल की मींग
ककड़ी के वीज की मींग सत शिलाजीत
—प्रत्येक १-१ तोला

लोह भस्म ६ माशा

—पुनर्नवा एवं अर्जुन की छाल के स्वरस या क्वाथ की ७-७ भावना दे, इसमे १०० गोलियां बनावे।

नं० २—कुक्कुटाण्डत्वक भस्म ६ माशा
पुनर्नवा क्षार गोखरूक्षार वांसाक्षार
अपामार्गक्षार वरुण के छाल का चूर्ण
—प्रत्येक १-१ तोला

—वरुण के छाल के स्वरस मे १०० गोलियां बनावे।

उपयोग—नं० १ वाली दवा मधु के साथ एवं नं० २ वाली दवा पानी के साथ। नं० १ के खाने के एक घटे वाद नं० २ को खिलाये। एक वार सुबह एवं एक वार शाम।

ओजोमेह (Albumenuria) वृक्क शोथ (Nephritis) वृक्क प्रदाह (Bright's disease) मे इसका प्रयोग करे।

कुबेराक्षि वटी—

कटकरंज का बीज	४ तोला
ताम्रभस्म	६ माशा
छोटी इलायची	१ तोला
कपूर काचरी	१ तोला
कपूर ढेला	३ माशा

—पहिले छोटी इलायची एव कपूर को एक जगह खरल करे जव यह खरल होते एक दिन होजाये तव अन्य द्रव्यों को मिला कर पानी के साथ खरल कर इसमे १ गोलिया वनावे।

अनुपान एव उपयोग—अन्नद्रवशूल (Gastric ulcer) परिणामशूल (Deodinal ulcer) मे सुबह शाम एक एक गोली पानी के साथ खाये।

:: पृष्ठ ३१ का शेषांश ::

विप शरीर से नष्ट हो जाता है। किन्तु काटते ही पहिले काटी हुई जगह के दोनो ओर वन्द वाध दे, जिससे विप का प्रभाव सारे शरीर मे न फैले और काटे हुए स्थान को जलादे।

विसर्प नाशक तैल—

पारिभद्र के पञ्चाङ्ग का कल्क वनाकर उसमे चतुर्गुण नारियल (गोला) के तैल यथा विधि सिद्ध कर फिर कल्क जल जाने पर उसको भी तैल मे ही रगड़ दे। यदि पचाङ्ग न मिल सके तव पत्ते छाल और मूल ही पर्याप्त है।

गुण—यह तेल विसर्प पर चमत्कारिक लाभ देता है, चाहे सैकडों प्रयोगों से लाभ न हुआ हो ऐसे अत्यन्त वढे हुए विसर्प पर भी यह आश्चर्यान्वित लाभ देता है। छोटे वच्चो के वाल विसर्प जिसको परछाया कहते है उस पर भी यह जादू का काम करता है

आंख दुखने पर—

कलमी शोरा नौशादर कपूर देशी
—प्रत्येक १-१ तोला

फिटकरी कच्ची	१ तोला
चौकिया सुहागा कच्चा	१ तोला

—यह प्रत्येक औपधि १-१ तोला लेकर वारीक खरल करके एक वड़े मारू वैगन को कतर कर उसमें गड्ढा करके यह औषधि भर दे और उस वैगन के टुकड़े की ही डाट लगाकर उसे एक दिन धूप मे रखदे। फिर उसको फिल्टर पेपर से छान कर शीशी मे रख ले।

—२-२ वूंद दवा आंख मे ड्रोपर से टपकादे।
गुण—आंख की सुर्खी-दर्द-जख्म वग़ैरह दूर हों।

वैद्य पं० रामस्वरूप शर्मा आयुर्वेदाचार्य

अध्यक्ष—गोपाल आयुर्वेद भवन, उखलाना (अलीगढ़)

पिता का नाम— पं० नाथूराम जी शर्मा

आयु—६५ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री शर्मा जी वयोवृद्ध अनुभवी वैद्य हैं। केवल गृह पर ही चिकित्सा कार्य करते हैं। आपकी संस्कृत शिक्षा खुर्जा मे, आयुर्वेद की बनवारीलाल आयुर्वेद विद्यालय मे पूर्ण हुई तत्पश्चात् जयपुर राजकीय आयुर्वेद विद्यालय से उपाध्याय-शास्त्री व आयुर्वेदाचार्य की उपाधि श्री स्वामी लक्ष्मीराम जी की सेवा मे रहकर प्राप्त की। अपने पितामह के नाम पर गोपाल औषधालय की निज जन्मस्थान मे स्थापना की जहा अब तक निरन्तर जनता की सेवा कर रहे हैं। विद्यार्थियो को आयुर्वेद का ज्ञान देने का सदैव आपने भरसक प्रयत्न किया है। आप जिला वैद्य सभा के भू० पू० प्रधान हैं तथा जिला बोर्ड के सदस्य हैं। आपने आयुर्वेद की अखंड धारावत सेवा की है। आपकी चिरायु की हम कामना करते है। आपके कुछ योग यहा उल्लिखित हैं।" —सम्पादक।

सन्निपात नाशक—

बीर बहूटी साफ की हुई केशर असली

कस्तूरी असली अभ्रकभस्म

—प्रत्येक १-१ तोला

—इन सबको बारीक घोटकर फिर पान के फिल्टर किये हुए रस से तीन दिन घोटकर १-१ रत्ती की गोली बनाले।

गुण—सन्निपात की दशा में जब रोगी की नाड़ी निर्बल होकर रोगी प्रलाप भी करता हो उस समय यह प्रयोग चमत्कारिक लाभ दिखाता है।

क्षय-जीर्ण ज्वर नाशक—

अमृता घन सत्व १ तोला

पिप्पल वृक्ष की छाल का घन सत्व १ तोला

वंशलोचन नीली झांई का अभ्रक भस्म

लौह भस्म प्रवाल भस्म

पीपल छोटी के दाने—प्रत्येक १-१ तोला

यशदभस्म मकरध्वज (चन्द्रोदय)

—प्रत्येक ६-६ माशे

हरिताल पत्रज निर्धूम श्वेत भस्म ३ माशे

स्वर्ण भस्म मुक्तापिष्टी

—प्रत्येक ३-३ माशे

—इन सबको पञ्चतिक्त क्वाथ में सात दिन घोट कर १-१ रत्ती की गोली बनाले। १ से २ गोली तक प्रात सायं शहद में चटाकर अर्क सुदर्शन मधु मिलाकर पिलावे।

गुण—इससे जीर्ण ज्वर, क्षय की प्रारम्भिक अवस्था तथा ज्वर के पीछे की निर्बलता दूर होती है।

सर्पदंश रप—

कैंचुआ (गिडोये) जो वर्षा ऋतु मे होते है मरे हुए लेकर पानी से साफ कर धूप में सुखा ले और कूटछान कर रखलें। ४ रत्ती से ६ रत्ती तक घी मे मिलाकर सर्प काटे हुए को पिला देने से सर्प विष दूर हो जाता है। यदि सर्प अधिक विषधर हो तब १-१ घण्टे पश्चात् २-३ बार देने से सर्प का

—शेषांश पृष्ठ ३० पर।

राजवैद्य पं. रामगोपाल जी पुरोहित आयुर्वेदाचार्य

प्र० चिकित्सक-श्री कृष्णगोपाल आयुर्वेद धर्मार्थ औषधालय, कालेड़ा बोगला (अजमेर)
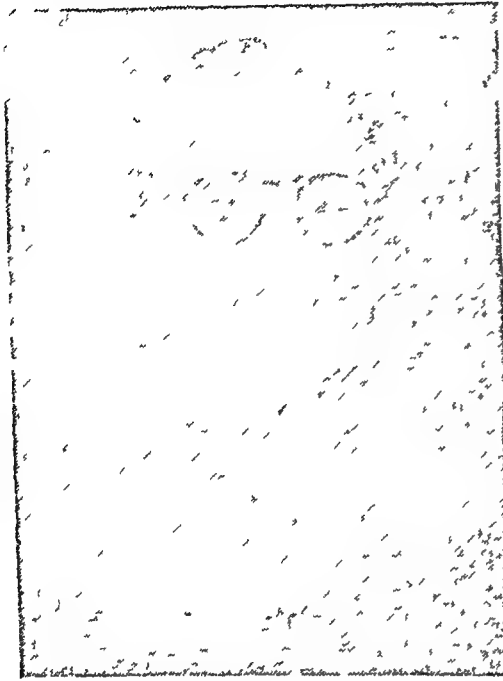
"श्री राजवैद्य जी का जन्म सन् १९२७ मे रामगढ (जयपुर) मे हुआ। आपने आयुर्वेदाचार्य राजस्थान तथा आयुर्वेदाचार्य देहली से उत्तीर्ण किया है। २ वर्ष हनुमान आयुर्वेद कालेज रतनगढ (बीकानेर) मे वाइसप्रिंसिपल के पद पर कार्य किया तथा अब ७ वर्ष से श्री कृष्ण गोपाल आयुर्वेद धर्मार्थ औषधालय मे प्रधान वैद्य हैं तथा स्वास्थ्य मासिक पत्र के प्रधान सम्पादक भी हैं। आप सफल चिकित्सक हैं तथा सैकडो ही रोगी प्रतिदिन आपकी चिकित्सा से लाभ उठाते है। अतएव आपके निम्न प्रयोग भी आवश्य ही सफल प्रमाणित होगे।" —सम्पादक।

रसकपूर वटी—

विधि—रसकपूर ४० तोले, लौंग का कपडछान चूर्ण १०० तोले को मिलाकर खरल करके एक जीव करें। फिर इन्द्रायण के कच्चे फल १०० नग का रस निकाल पत्थर के खरल मे मिला, थोड़ा खरल कर सुखा देवे। गाढ़ा हो जाने पर पुनः १०० फलों का रस डालकर खरल करे। फिर आध-आध रत्ती की गोलिया वना लेवे।

सूचना—रसकपूर को लोहे के खरल मे नहीं डालना चाहिये, एव रसकपूर और लौंग चूर्ण को हाथ से नहीं मसलना चाहिए। चम्मच से चलावे और खरल करके मिलाना चाहिए।

मात्रा—१ से २ गोली रात्रि को या प्रातःकाल दिन मे १ वार पानी से लेवे। आवश्यकता अनुसार तीसरे या चौथे दिन रोग दूर हो तव देते रहें।

सूचना—मरोड़ा आकर दस्त होता हो तो निवाया दूध पिलाना चाहिये।

उपयोग—यह रसकपूर वटी उत्तम उदर-शुद्धिकर, विषघ्न, आमनाशक, वातहर, कृमिघ्न और दीपन-पाचन है। जीर्ण विषम-ज्वर, वार-वार आने वाले एकाहिक और चातुर्थिक ज्वर, मेदोवृद्धि, भगन्दर, विस्फोटक, गृध्रसी, उन्माद, उदरकृमि, शोथ, सधिवात, अपस्मार, उदररोग, यकृद्वृद्धि, गुल्म, उदर वात, जीर्णमलावरोध अग्निमाद्य, अरुचि आदि रोग दूर होते हैं।

वक्तव्य—इस वटी का प्रयोग मैं १० वर्ष से कर रहा हूं, हजारों रोगियो को दे चुका हूँ। इन गोलियों मे बाजार का रसकपूर होने पर भी हानि का भय नहीं है। यह पूर्ण निर्णय हो चुका है, अति निर्भय और श्रेष्ठ सफल औषधि है। छोटे बालक, नाजुक

प्रकृति की स्त्रियां, वयोवृद्ध इन सबको दी जाती है। जीर्ण रोगों में इसका प्रयोग १-२ मास या अधिक समय तक करना पड़ता है और नया रोग शीघ्र शमन हो जाता है।

रेतोरोधनी वटी—

अकरकरा	१२ तोला
सिंगरफ जायफल	जायपत्री
छोटी इलायची	लौंग
—प्रत्येक ३-३ तोले	
केशर	१½ तोला
अम्बर	६ माशा
कस्तूरी	६ माशा
भांग	१५ तोला

विधि—भांग को चौगुने जल में २४ घंटे भिगोकर अर्धावशेष क्वाथ करे। फिर मसल कर छान लेवें। उसे एक पात्र में भरकर जल के भरे हुए बर्तन के ऊपर रखें। ऊपर ढकन ढककर अग्नि देवें। जब पतली रबड़ी जैसी हो जाय तब ऊपर की औषधियों का कपड़छान मिश्रण मिलाकर खरल करें। पश्चात् १-१ रत्ती की गोलियां बनावे।

उपयोग—इसमें से रोज रात्रि को सोने के १ घंटे पहले १ से २ गोली मिश्री मिले दूध के साथ सेवन करने पर शुक्र को बल प्रदान करती है। स्तम्भन शक्ति बढ़ाती है तथा मन को शान्त बनाती है।

फादर आफ पेनसिलीन—

विधि—काले सांप की कांचली १ तोला को बारीक बारीक कैंची से कतरकर महीन चूर्ण बना लेवे। पश्चात् १ तोला वंशलोचन, १ तोला गंधक मिलाकर नीम के पत्तों के रस में ३ दिन तक खरल करे, एक जीव हो जाने पर २-२ रत्ती की गोलियां बना लेवे।

मात्रा—१ गोली से २ गोली तक दिन में २ या ३ बार पानी के साथ निगलवा देवे।

उपयोग—यह औषधि व्रण, विद्रधि, अन्तर विद्रधि, कर्णपाक कर्ण से पूय आना, चर्म रोग, एक्जिमा गलत्कुष्ठ, चर्मकुष्ठ, दद्रु, भगन्दर, नाडी व्रण, कैंसर, प्रमेह आदि रोगों में जिनमें पूय आती हो सत्वर लाभ करती है।

—जिन रोगों में पेनसिलीन की आवश्कता होती है उन सभी रोगों में मैंने इसका प्रयोग करके देखा है, यह औषधि पेनसिलीन से भी अधिक लाभदायक है। ऐसा मेरा अनुभव है।

एक आयुर्वेद-सेवी सज्जन पुरुष इसका प्रयोग उपरोक्त रोगियों पर कई वर्षों से करते आरहे हैं उनको शत-प्रतिशत सफलता मिली है। उन्हीं से यह योग मुझे मिला है।

:: पृष्ठ ३१ का शेषांश ::

पीसकर ३ रत्ती मात्रा में दही के अनुपान से या मठा के अनुपान से रोगी को दे।

बल की वृद्धि के लिए—केवल १ रत्ती हिंगुल रसायन मलाई मक्खन से दे।

वात व्याधि में—१ रत्ती हिंगुल रसायन असगंध के ६ माशे चूर्ण से दे।

—इस प्रकार अनुपान भेद से अनेक रोगों की परमौषधि है।

प्रतिष्ठान पुरीय गौडपादाचार्य पीठाधीश्वर

श्री स्वामी दत्त पादाचार्य आश्रम

सकीर्तन भवन, भू सी (प्रयाग)

"श्री स्वामी जी का पूर्वाश्रम का नाम रायवहादुर श्री प श्री दत्त जी शर्मा आयुर्वेद मार्तण्ड भिवानी है। इस समय आप सन्यासावस्था मे हैं। आपसे वैद्य समाज तथा धन्वन्तरी के पाठक सुपरिचित हैं। आपने विद्वान एव अनुभवी आयुर्वेद चिकित्सक रुप मे अच्छी ख्याति प्राप्त की है। धन्वन्तरि के पाठको को केवल एक प्रयोग प्रेपित करते हुए आपने लिखा है— "अव सन्यास लेने पर मै वैद्य समाज को वह प्रयोग नि सकोच भेट कर रहा हूँ जिसका मैंने सैकडो रोगियो पर अनुभव किया है तथा जिसने अनेक व्याधियो पर विजय प्राप्त कराई है।" जन कल्याण की भावना से प्रेपित इस प्रयोग से आशा है पाठक लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।

हिंगुल रसायन—

—रससिंदूर ६ छटांक लेकर छोटे-छोटे टुकड़े करके १५ सेर नीबू के रस मे धीरे-धीरे आंच से ज़लधारा रुप मे चोआ देकर मिट्टी की कड़ाही मे पकाना। इसके वाद प्याज के १५ सेर रस मे धीरे जलधारा रुप मे पकाना अर्थात् अभिपेक रुप से पकाना है।

निर्माण विधि—इसके वाद दो सेर प्याज की लुगदी वनाकर उन टुकड़ो को लुगदी मे रखकर कड़ाही मे पकाना, इसके वाद १ सेर घी मे पकावे' १ सेर अरडी के तैल मे पकावे, १ सेर भिलावा मे डालकर पकावे एक सेर मालकांगणी मे पकावे, एक सेर राई मे पकावे, फिर एक सेर शहद में पकावे। तेज अग्नि से ही उपरोक्त वस्तुओं मे पकाना चाहिए। कभी-कभी कड़ाही मे आग भी लग जाती है इसका ध्यान रहे। भिलावा के साथ पकाने मे वड़ी सावधानी की आवश्यकता है।

—फिर इन टुकडो को निकाल कर पीसकर पृथक् २ रोगो मे अनुपान भेद से प्रयोग करे।

प्रयोग विधि—सग्रहणी, अग्निमान्द्य हो तो हिंगुल रसायन ६ माशा, जावित्री २ माशा, जायफल २ माशा, चित्रक छाल २ माशा खूब वारीक

—शेपांश पृष्ठ ३३ पर।

श्री पं० इन्द्रमणि जैन वैद्य शास्त्री

इन्द्र औषधालय, कनवरीगंज रोड, अलीगढ़
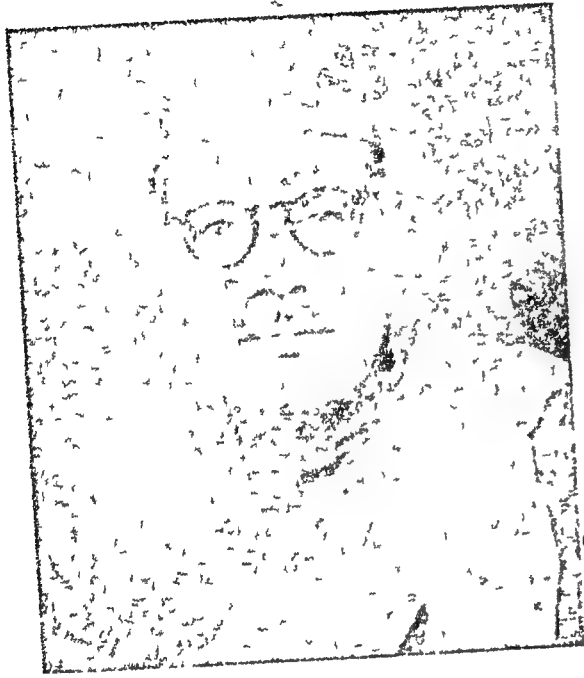
"श्री शास्त्री जी अपने इन्द्र औषधालय मे गत ३३ वर्ष से निरन्तर जनता की सेवा कर रहे है। आप प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनन्य भक्त एव पोषक है तथा अधिकारीवर्ग एव जनता में समान रूप से सम्मानित हैं। शुद्ध आयुर्वेद चिकित्सा के कट्टर पक्षपाती है, यहा तक आपका कहना है कि क्विनीन का रोगियो पर व्यवहार करना तो दूर, आपने उसे अपने जीवन मे स्पर्श भी नहीं किया है। आपके द्वारा लगभग ६० संस्थाओ का संस्थापन, सचालन एव संरक्षण हो रहा है। अलीगढ प्रात के उच्च विद्वान एव सफल चिकित्सको मे आपकी गणना है। माधव-निदान की छन्दबद्ध भाषाटीका आपने की है। आपके निम्न प्रयोग सरल होने पर भी प्रभावशाली है।"

—सम्पादक।

संग्रहणी, प्रवाहिका, अतिसार पर—

विधि—आम की गुठली तथा बेलगिरी समान भाग लेकर कूट-पीस छान कर चतुर्थांश शंखभस्म मिला लीजिये।

मात्रा—३-३ माशे ४ वार मठे के साथ दीजिए। मठे के अभाव मे जल से भी दे सकते है।

कास श्वास पर—

अनार के छिलके और औंगा (चिरचिटा) पंचाग लेकर छाया मे सुखाकर भस्म (राख) करे तथा अष्टमाश नमक साभर मिला लेवे। सूखी खासी श्वास पर रबड़ी, मलाई या शर्बत उन्नाव मे तथा कफ युक्त कास पर शर्बत अडूसा, पान या अद्रक स्वरस मे देवे।

योषापस्मार, हृदय रोग, रक्तचाप (वृद्धि समय) अनिद्रा आदि पर—

सर्पगंधात्वक् चूर्ण ४-४ रत्ती १-१ तोला घृत मे मिलाकर दोनो समय चाटकर ऊपर से गोदुग्ध लेना चाहिये।

आंख की फुली पर—

श्वेत पुष्प का पुनर्नवामूल लीजिये, धोकर साफ करके छोटे-छोटे टुकड़े कर लीजिए, छाया मे सुखाइये। जल मे घिसकर दोनो समय आख मे लगावे।

विशेष—उपर्युक्त योग अत्यन्त अनुभव सिद्ध है, ३३ वर्ष की सफलता के पश्चात् सेवा मे प्रेषित है। परीक्षा प्रार्थनीय है।

दीपन पाचन—

सौंफ	२ तोला
धनियां	४ तोला
भुना जीरा	२ तोला
भुनी हींग	६ माशा
पिपरमेंट के फूल	६ माशा
सैंधव	५ तोला
साइट्रिक ऐसिड	१ तोला
सौंठ (शुण्ठि)	२ तोला
शर्करा	५ तोला

विधि—सबका बारीक चूर्ण कर लेवे।

मात्रा ३ माशा से ६ माशा तक।

समय—पाचन के लिए भोजनोत्तर, अग्निमांद्य के लिए भोजन से आधा घंटा पूर्व ले।

उपयोग—भोजन का योग्य परिपाक कर दस्त साफ लाता है। पेट की वायु दूर करता है। उत्तम स्वादिष्ट पाचन प्रभाव बताता है।

कर्णरोग हर तैल—

अर्कपत्र स्वरस धत्तूर पत्र स्वरस
सहंजना के पान का रस लहशुन लुगदी
—प्रत्येक ५-५ तोला

तिल का तैल २० तोला

विधि—प्रथम तीन द्रव्यो का स्वरस तैल मे डालकर पकावें और लहशुन की लुगदी बनाकर डालकर पाक होने पर ठंडा कर छान लेवे।

उपयोग—इसका प्रयोग यदि कर्ण रोगो में किया जाय तो विशेषकर लाभदायी होता है। शूल, शोथ, नाद और पूयस्राव बन्द करता है।

लिंगवर्धक तैल—

अश्वगन्धा	२० तोला
जटामांसी	५ तोला
शतावरी	१० तोला
कुष्ठ (कूठ)	५ तोला
दाड़िम पुष्प	१० तोला
कंटकारी फल	५ तोला
तिल का तैल	१। सेर

विधि—उपरोक्त द्रव्यो का कल्क कर दूध और तैल मे पाक करले।

उपयोग—इस तल की मालिश से गुप्त भाग (शिश्न) पुष्ट होता है तदुपरान्त कर्णपाली तथा स्तनों पर भी मालिश करने से वे कठिन और पुष्ट बनते है। धैर्य से प्रयोग करे। इस प्रयोग मे प्रात. और रात्रि दोनो समय १ तोला तैल लेकर उसको अच्छी तरह अभ्यग करे। स्थायी और निश्चित् लाभ करता है।

रजःशूलहर योग—

रक्त कमल का मूल	४ तोला
एलुवा	४ तोला
अपामार्ग मूल	४ तोला
विजया सत्व (घन)	४ तोला

विधि—सभी को खरल मे एकत्र कर जल मे घोट कर २-२ रत्ती की गोली करले।

मात्रा—२ गोली।

अनुपान—उष्णोदक।

समय—प्रात' और सायं।

उपयोग—कटिशूल, कष्टार्तव दूर कर रज'स्राव साफ लाता है। विजया सत्व के लिए भांग ४ तोला, पानी ३२ तोला लेकर क्वाथ करले। ८ तोला शेष रहे तब छान पुन गरम कर घन करले। यह विजयासत्व इसमे प्रयोग करे। अन्यथा आंग्ल औषधि विक्रेताओ के यहां Extract cannabis indica मिलता है वह भी प्रयुक्त किया जा सकता है।

नोट—यदि इसके साथ अनुपान के रूप मे उलटकंबल क्वाथ या उलटकंबल का प्रवाही सार (Extract Abroma Augusta) १ से २ ड्राम देवें तो भली-भाति गर्भाशय का शोधन हो जाता है और कष्टार्तव मे निश्चित् लाभ होता है। मासिक के समय से ४ या ८ दिन पूर्व यह चिकित्सा प्रारम्भ करें।

आचार्य डा० श्री अमरनाथ शास्त्री

विद्यालंकार, आयुर्वेद बृहस्पति (D. Sc. A.)
अमरशक्ति आयुर्वेद भवन, दर्शनी गेट, पटियाला ।

"श्री शास्त्री जी पटियाला के नवयुवक वैद्यो मे उच्चतम विद्वान चिकित्सक हैं। आपने उच्च विद्यालय मे सस्कृत, हिन्दी एव आयुर्वेद की उच्च शिक्षा प्राप्त की है। आयुर्वेदाचार्य एम एस-सी (शा नाक्य) है तथा गवर्नमेंट आयुर्वेद कालेज पटियाला मे प्रोफेसर है। आपने पटियाला मे 'अमर शक्ति फार्मेसी' एवं 'अमर कृष्ण औषधालय' नामक दो सस्थाए प्रस्थापित की है जहा जनता की सेवार्थ कार्य चलता है। अन्वेषण कार्य मे आपकी अधिक अभिरुचि रही है। इन सस्थाओ के अन्तर्गत एक विद्यालय भी चलता है। झासी विश्वविद्यालय मे मेडिसिन और चरक के प्रधान अध्यापक रहे है। आपके कुछ प्रयोग जनता के हितार्थ जो गुण मे अनोखे हैं यहा दे रहे है।"

—सम्पादक ।

शिखर्यादि वर्तिका—

अपामार्ग की जड़	गेहूँ का आटा
कत्था	अफीम

—प्रत्येक ३-३ माशा

निर्माण विधि—अपामार्ग की जड़ का कपडछान चूर्ण करके उसमे गेहूँ के आटे का कपड़छान चूर्ण मिलाकर खरल करे। फिर उसमे उत्तम कत्थे का चूर्ण भी कपड़छान कर डाल दे और कुछ समय तक रगडते रहे। तत्पश्चात् अफीम को थोडे से जल के साथ एक पृथक् खरल में घोटे और उसमे पहिले वाले खरल के द्रव्यों को मिलाकर सबको अच्छी तरह से मर्दन करे। जब वर्ति बनाने योग्य होजाय ४-४ रत्ती की वर्तिया बना लेनी चाहिए। जब वे शुष्क हो जांय तो उत्तम वायु रहित शीशी मे सुरक्षित रखे।

प्रयोगविधि—इस वर्ति को योनि में धारण किया जाता है। योनि मे धारण करते समय थोड़ा सा घृत वर्तिका के ऊपर लगाकर प्रयोग करना चाहिए।

उपयोग—यह वर्ति योनि मार्ग से बहते हुए रक्त के लिये परमोत्तम है। तीव्र से तीव्र रक्तस्राव को यह तुरन्त शान्त कर देती है। इसका प्रयोग रक्तप्रदर अतिरजःस्राव (menorrhagia) ऋतुकाल से अतिरिक्त कालीन रक्तस्राव (metrorrhagia) इत्यादि सब प्रकार के योनिगत रक्तस्राव (uterine haemorrhage) को रोकता है। इसका प्रयोग प्रसव के पश्चात्-कालीन रक्तस्राव और तत्कालीन पीडा आदि को भी शीघ्र ही लाभ देता है।

सर्पगन्धादि चूर्ण—

सर्पगन्धा	२० तोला
रस सिन्दूर षड्गुणबलिजारित	१ तोला

निर्माण विधि—रस सिन्दूर को पूर्व खरल में बारीक करले। तत्पश्चात् उसमें कपडछान किया हुआ सर्पगन्धा का चूर्ण डालकर अच्छी तरह से मर्दन करले।

प्रयोग विधि—१ माशा से २ माशा तक, रोगी के बलाबल के अनुसार दूध से ३ बार प्रयोग कराने से उन्माद, अपस्मार, अपतन्त्रक वात और निद्रा नाश के लिये अत्यन्त हितकारी है।

वक्तव्य—

यदि रोगी उन्माद ग्रसित हो तो उपरोक्त मात्रा मे इसी औषधि को ३-४ बार ब्राह्मी घृत मिश्रित दुग्ध से दे। इससे रोगी की दशा मे आशातीत लाभ होता है। जो पुरातन रोगी हो उसे यह औषधि १-२ माशा तक अवश्य प्रयोग करनी चाहिए जिससे कि आपको रोगी की सुधारात्मक दशा का पूर्ण ज्ञान हो सके। अमर शक्ति आयुर्वेद भवन के इन्डौर होस्पिटल मे प्राय: उन्माद के लिए यही औषधि प्रयोग मे लायी जाती है। १६५२ मे इसी योग से २५ रोगी ठीक हुए जो कि प्राय. आरम्भ कालिक उन्माद के उपद्रवो से ही ग्रस्त थे।

जब इस औषधि के प्रभाव से आशाजनक लाभ होता देखा गया तो हमने इस योग को २-३ वर्ष के पुरातन रोगियो पर अनुभव मे लाना आरम्भ किया। जिससे कि १६५४ तक ३० रोगियो मे से २० रोगी बिलकुल स्वस्थ हुए। परन्तु अन्य रोगियों में कदाचित् अवश्य ही उन्माद के उपद्रवों का वेग कई दिनों बाद देखा गया।

अन्त मे उन रोगियो में भी ५ रोगी आज तक बिलकुल ठीक हो गये हैं। जिनको केवल उपरोक्त योग के साथ निम्न द्रव्य भी मिलाकर दिये गये।

छोटी इलायची के बीज	१० रत्ती
वंशलोचन	३ माशा
मिश्री	२ माशा

उपरोक्त सर्पगन्धादि चूर्ण की प्रत्येक १॥ माशा की मात्रा में ब्राह्मी घृत ६ माशा और उपरोक्त इलायची आदि की मात्रा भी ऊपर लिखित अनुपान से दिन मे २ बार दी जाती थी। ये ५ रोगी इस औषधि को ७ मास तक प्रयोग मे लाते रहे। आज इन लोगो से वार्तालाप करने से बिलकुल भी अनुमान नहीं होता कि इन रोगियों को कभी उन्माद हुआ होगा।

विशेष सूचना—इस योग से उन्माद के रोगी को पूर्ण निद्रा भी आजाती है और रोगी मिथ्या प्रलाप आदि नहीं करता। यदि इस औषधि के सेवन काल मे रोगी से वार्तालाप बहुत कम किया जाये तो रोगी को शीघ्र लाभ होता है।

अपस्मार के लिए—

सर्पगन्धादि चूर्ण (उपर्युक्त) इलायची बीज चूर्ण वंशलोचन	—तीनो १-१ माशा
मिश्री	३ माशा

—मिलाकर दिन मे ३ बार दे। ऊपर से जटामांसी ब्राह्मी ३-३ माशे का क्वाथ पिलाते रहे।

मात्रा—दिन मे ३ ही पर्याप्त है।

गुण—इससे रोगी के मस्तिष्क मे शामक प्रभाव के साथ-साथ प्रलाप आदि भी शान्त होजाते है। जिन रोगियों को १ दिन मे १० या २० बार या इससे अधिक बार रोग का आक्रमण होता है उस रोगी को हम वातकुलान्तक रस १॥ रत्ती की मात्रा प्रात मधु से देकर तत्पश्चात् अष्टमङ्गल घृत ६ माशा से युक्त दुग्ध का पान भी कराना आरम्भ कर देते हैं। उसी प्रकार सायंकाल की मात्रा आरम्भ करदी जाती है और उपरोक्त योग भी दिन मे ३ बार जटामासी और ब्राह्मी क्वाथ से अवश्य दिया जाता है।

इस प्रकार १६५० से आज तक १०६ रोगियो मे से ७५ रोगियो को लाभ हुआ है।

केवल निद्रानाश के लिए—

षट्गुण बलिजारित रससिंदूर का सम्मिश्रण सर्पगन्धादि चूर्ण मे न करे अर्थात् केवल सर्पगन्धा का बारीक चूर्ण ही १ से २ माशा की मात्रा मे रोगी के बलाबल के अनुसार देते रहे। निद्रा के लिए २ मात्रा ही पर्याप्त है। बहुत से निर्बल रोगियों के लिए एक मात्रा ही उचित रहती है।

यह निद्रा लाने के लिए अन्य विषैली औषधियो से बहुत उपयोगी है। हमारे गवर्नमेन्ट आयुर्वेदिक

आतुरालय में इसी का प्रयोग बहुधा किया जाता है और शत प्रतिशत सफलता भी मिलती है।

आमारि—

सौंफ — छोटी हरड़ घृत में भुनी हुई
सोंठ - —प्रत्येक १०-१० तोला
मिश्री — ३० तोला

—पहले इन दोनो को जौकुट करके अग्नि पर कुछ सेक ले।

निर्माण विधि—इन सबको बारीक करके चूर्ण बना लें। तत्पश्चात बन्द बोतल में रख ले।

मात्रा—३ माशा से ६ माशा तक एक बार के लिए। दिन मे ४ मात्राऐ पर्याप्त हैं।

अनुपान—जल।

पथ्य—भात और दधि।

उपयोग—इस प्रयोग मे प्रवाहिका रोग सोपद्रव शांत हो जाता है। यह योग बहुसंख्यात्मक रोगियो पर प्रयोग मे लाकर भी देखा गया है इससे शतांश पूर्ण ही सफलता मिलती है। यदि रोगी का उचित निदान आदि करके इसका प्रयोग कराया जाये तो आपको रोगी से यश की प्राप्ति अवश्य होगी। यह ग्राही, अग्निदीपक, आम पाचक एवं कफनाशक होने के कारण वातज और श्लैष्मिक ग्रहणी एवं आमातिसार आदि के लिये भी हितकारी है। यह योग हमारे आयुर्वेद भवन मे रोगियो के लिये आमारि के नाम से ही लिखा जाता है। औषधालयो के कई इन्चार्ज इस चूर्ण को शतपुष्पादि चूर्ण के नाम से भी प्रयोग मे ला रहे हैं।

दशन संस्कार मञ्जन—

सौंठ — बड़ी हरड़ का छिलका
नागरमोथा — कत्था — कपूर
सुपारीभस्म (अन्तर्धूम की हुई) — कालीमिर्च
लौंग — दालचीनी —प्रत्येक १-१ छटाक
शुद्ध खड़िया — ६ छटांक

निर्माण विधि—पहले खड़िया को लेकर जो चिकनी मुलायम और सफेद वर्ण की हो ८ गुने जल में भिगो दे। तत्पश्चात् उसमें कपडे में दधि छानने की भांति हाथ से मसल करके छान दें। जब खडिया नीचे बैठ जाये तो उस समय ऊपर से जल को निथार ले और अलग कर दें। जिस समय जल निकाल दिया जाये तो उसे धूप में सुखा लें और खरल में डालकर उसको बहुत बारीक कर लें। फिर अन्य ६ द्रव्यों का चूर्ण भी इसी मे मिला दें। इस प्रकार यह उत्तम मंजन तैयार हो जाता है।

प्रयोग और मात्रा—१ माशा मञ्जन को लेकर दांतों पर मलना चाहिये।

उपयोग—इसके सेवन से दांतों और मसूडो के प्राय: सभी रोग शांत हो जाते हैं।

—विशेषतया इस योग का प्रभाव मुख की दुर्गन्धि, मसूडो से रक्त एवं पूयस्राव, पायरिया एवं तद्-गत उपद्रव, मसूडों का फूलना, दर्द होना, दांत हिलना आदि सब रोगों के लिये हितकारी है।

वक्तव्य—यदि इस मञ्जन को प्रात: सायं दोनो समय रोगी मसले तो तुरन्त लाभ की आशा रहती है। मलने के बाद मुख से जो लार बहे, उसे थूकते जांय और कम से कम १० मिनट तक जल से कुरला न करें। १० मिनट के बाद कुरला करके दांतो को साफ कर लेना चाहिये। रोग ग्रस्त दांतों मे रात्रि को सोते समय इस मञ्जन को मसल कर लार गिरा देनी चाहिये और बिना ही कुरला किए सो जाना चाहिये। इस प्रकार करने से आशातीत लाभ देखा गया है।

शिलाजत्वादि तैल—

हरड़ छाल — बहेड़ा छाल — आवला
गूगल — राल — शिलाजीत
गन्धाविरोजा — मोम — कपूर
—प्रत्येक ५-५ तोला
नीम के पत्र — ३० तोला

निर्गुण्डी पत्र (संभालू पत्र)	१५ तोला
कार्बोलिक एसिड	२॥ तोला
तिल तैल	१ सेर
जल	५ सेर

निर्माण विधि—पहले त्रिफला और नीम पत्र एव सम्भालू के पत्रों को ५ सेर जल मे भिगोकर उबाल ले। चौथा हिस्सा जल शेष रहने पर उतार कर छान ले। फिर इस जल मे १ सेर तिलों का तैल, गूगल, राल, शिलाजीत, गन्धाविरोजा, मोम उपरोक्त मान के अनुसार डाल कर मन्दाग्नि से पाक करें। जब तैल सिद्ध हो जाये तो उतार कर छान ले। तत्पश्चात ३ तोला कार्बोलिक एसिड और ५ तोला कपूर को जल के रूप मे कर ले। यदि दोनों को बोतल में डालकर रख दिया जाये तो वे आपको तरल रूप में कुछ समय मे ही मिलेंगे। उसे छाने हुये उपरोक्त तैल मे मिलाकर बोतलों मे भरदे।

-यह तैल अधिक शीतल होने पर कुछ मलहम सदृश गाढ़ा भी हो जाता है। यदि इसकी प्रवाही रूप में आवश्यकता पड़े तो इसे किंचिदुष्ण करके ही कार्य मे लाना चाहिये।

उपयोग—यह तैल चोट लगने पर, मांस कुचल जाना, चोट लगकर रक्तस्राव होना, मांस फटकर घाव हो जाना, पूय निकलना, व्रण रोपण न होना, जले हुये भाग मे पूयोपत्ति हो जाना, तलवार आदि तीक्ष्ण शस्त्र एवं यन्त्रादि जन्य रक्तस्राव आदि आगन्तुक व्याधियों पर आश्चर्यजनक लाभ करता है।

यह तैल रक्त प्रवाह को तत्काल बन्द करने और व्रण शुद्धि के लिये प्रयोग करने से उसकी दुर्गन्धि को नष्ट करता हुआ शीघ्र ही नये मास की उत्पत्ति करके व्रण-रोपण कर्म सम्पादन कर देता है।

यदि इसे जले हुये रोगी के शरीर पर लगाया जाये तो यह बर्फ की तरह शीतलता उत्पन्न कर १५-२० मिनट में ही जलन को शात कर देता है। इसके प्रयोग से त्वचा और मांस आदि कोथ जन्य पूयोत्पत्ति भी नहीं होती।

वालकों के शिर पर या देह पर प्राय: ग्रीष्म ऋतु मे छोटे-छोटे फोड़े होकर पक जाते हैं। फिर उनमें से पूयस्राव होता रहता है। यदि उस अवस्था में इस तैल का प्रयोग किया जाये तो तीन चार दिन में ही इसके लगाने से फोड़े सूख जाते है। नये उत्पन्न नहीं होते, त्वचा स्वच्छ हो जाती है।

यदि कर्णपाक होकर पूयस्राव हो तो इसकी २-३ बूंद गरम-गरम कान मे डालते रहे। ५ घटे बाद कर्ण की शुद्धि हाईड्रोजन से करते रहने से कर्णस्राव मे अत्यन्त हितकारी है।

शल्यकर्म की प्राय. सब अवस्थाओं मे जब व्रण शोधन एवं लेखन तथा रोपण की आवश्यकता पड़े तो इस तैल का निर्भय प्रयोग कर सकते है। क्योकि केवल इससे सब सशोधन रोपणादि कर्म सिद्ध हो जाते है। यह तैल शल्य कर्म के लिये शतशोऽनुभूत एवं ईश्वरीप्रदत्त विभूति है।

इसका प्रयोग हमारे यहां प्रतिदिन होता है। जात्यादि तैल एवं अन्य एलोपैथिक औषधियो की इसके रहते कोई आवश्यकता ही नहीं पडती। जिससे कि उनका आश्रय लेना पड़े।

जिस समय मै अमर शक्ति फार्मेसी का अध्यक्ष था उस समय इस तैल को "अमर जीवन तैल" के नाम से फार्मेसी मे विक्रय किया जाता था। इसके नाम से प्रभावित होकर मेरे परम मित्र एलोपैथी के प्रकांड विद्वान् एव अनुभवी शल्य चिकित्सको ने इसका प्रयोग मेरे आग्रह से आरम्भ कर दिया था। आज ये लोग अन्य एलोपैथिक आयडोफार्म, टिंचर आयोडीन, जिंक मलहम, बोरिक मलहम, कार्बोलिक मलहम एवं हाईड्राजिरी लोशन आदि औषधियो का प्रयोग न करके इसी तैल से कीटाणुनाशन एवं व्रणरोपण कर्म करते है और पूर्ण सफलता प्राप्त कर रहे है।

—शेषांश पृष्ठ २६ पर।

आयुर्वेदाचार्य श्री पं० लीलाधर शास्त्री

अध्यक्ष–पंजाब सेवा समिति औषधालय, नं० १ हनुमान जी लेन, बडा बाजार, कलकत्ता।
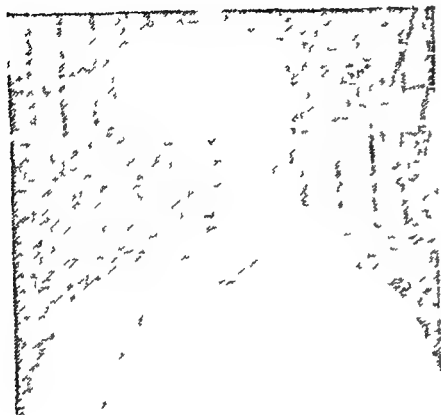
"श्री शास्त्री जी का जन्म स्थान जिला अलीगढ मे हरदुआगज के निकट बरौठा ग्राम है। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय स्कूल मे हुई, तथा आचार्य के खड कानपुर से किये, आपके आचार्य प शशिनाथ जी झा महामहोपाध्याय रहे। कलकत्ता से साहित्यतीर्थ करने के पश्चात् धन्वन्तरि के संस्थापक श्री राधावल्लभ जी व महात्मा मुशीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) के परामर्श से आपने आयुर्वेद का अध्ययन किया। आयुर्वेद का प्रारम्भिक अध्ययन मथुरा मे श्री बालकृष्ण जी सारस्वत से किया। उनके ही परामर्श से चरक का अध्ययन श्री उमाचरण जी भट्टाचार्य से तथा वाग्भट का श्री अर्जुन जी मिश्र से किया। आपने अपना चिकित्साकार्य कलकत्ते मे ही प्रारम्भ किया। रिलीफ सोसाइटी मे २० वर्ष रोगियो की सेवा की तथा बाद मे पजाब सेवा समिति के आयुर्वेद विभाग में अध्यक्ष का कार्य भार सभाला। बीकानेर मे भैरोदान ओसवाल कोठारी के औषधालय मे प्रधान वैद्य बन कर रहे। आप आयुर्वेद के उच्च कोटि के विद्वान है। कई विद्यालयो में आप प्रधान आचार्य के पद पर रहे हैं और आयुर्वेद की एक विशिष्ट अध्यापन की परम्परा डाली। आपके पढ़ाये हुए सैकडो विद्वान वैद्य भारत के अनेक स्थानो पर चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आप अपने नाम की ख्याति से कोसो दूर भागते है पर हम विवश हे परिचय तो देना ही है श्री शास्त्री जी हमे क्षमा प्रदान करे। आपके प्रयोग कितने सुन्दर और अनुभूत हैं इन्हे देखिए।" —सम्पादक।

वातारिरस—

अनेक वात रोगो मे जब शास्त्रोक्त वातरोगघ्न औषधों से कोई लाभ होते न देखा–तो महीनो चिंतन के बाद निम्न योग मेरे मस्तिष्क मे आया और एक छात्र को उसे तैयार करने का आदेश दिया। यहा पर साइटिकागृध्रसी के रोगी बहुत आते हैं, उनको उस प्रयोग से खूब लाभ हुआ। वर्षों तक योगराज गूगल जैसी उत्तम औषधि के सेवन से जो लाभ न हुआ था वह १५ दिन मे ही देखा। हां कंपवात में इसका कोई फल नहीं मिला। शेष साइटिका के अतिरिक्त विश्वाची अवबाहुक मे भी लाभ हुआ। मैं प्रथम ही कह चुका हूँ कि साइटिका के रोगियों का यहा बाहुल्य होने से उसकी ही प्रधान औषध हमे समझे, योग यह है—

अशुद्ध वत्सनाभ अशुद्ध धतूरा-बीज
" काली मिर्च कुचिला –प्रत्येक ५-५ तोला
गूगल १० तोला

—आरम्भ की तीन चीज कूटकर कपड़छान कर लेना या मैदा की चलनी मे छान लेना। कुचिला ४ दिन पानी में भिगोकर चाकू से खुरच लेना किनारे के जोड मे चाकू से छेद करके बीच की जिभी निकाल देना, खूब सुखा करके लोहे के खरल में १-१ टुकड़े डालकर मूसली से कुचल डालना फिर धूप में सुखाकर कूटकर वही मैदा वाली चलनी मे छान कर काम मे लेना। गूगल को त्रिफला के पानी मे पकाकर चलनी मे छान कर उस पानी को लोहे की कड़ाई में डालकर मावा (खोया) जैसा

बनाकर सुखाकर रखना इसी सूखे गूगल को १० तोले लेकर पानी में भिगोना और उपर्युक्त औषध डालकर २ तोले गव्य घृत लेकर रगड़ना, २-४ दिन घुटाई करके घी के चिकने हाथ से चना से कुछ बड़ी वटी बनाकर धूप में सुखाकर पात्र में रखना।

मात्रा—१ वटी रात्रि में, १ वटी प्रातः।

अनुपान—गरम दूध।

वक्तव्य—विश्वाची वायु का एक रोगी जिसकी भुजा स्कन्ध के पास से सूखनी आरम्भ हुई थी और अंगुली तक सूख गई थी। इसके ६ महीना सेवन से शुष्क भुजा आर्द्र हो गई थी। इसे मध्याह्न में त्रिफला, कभी छोटी हरड़ सनाय मिलाकर २-१ बार प्रायः गरम पानी से देता था।

पाठकों को धतूरा वत्सनाभ के अशुद्ध डालने में कोई आशंका नहीं करनी चाहिए। मैं इनका अशुद्ध ही प्रयोग करता हूँ, कभी कोई विकार नहीं हुआ। मृत्युञ्जय, आनन्दभैरव, त्रिभुवन आदि में भी मैं अशुद्ध का प्रयोग करता हूँ। हां बच्चों (शिशुओं) की दवा में इनके साथ शुद्ध टंकण अवश्य मिलाता हूँ। १-१ मास के शिशुओं को भी टंकण मिश्रित मृत्युञ्जय आदि की $\frac{१}{२}$, $\frac{१}{४}$ या $\frac{१}{८}$ गोली का अंश रख कर देता हूं कभी कोई बुरा प्रभाव नहीं हुआ। उत्तम वैद्यों को यह दिग्दर्शन यथेष्ठ है।

सिद्धामृत—

यह योग मेरा नहीं है। न मुझे किसी ने बतलाया ही है। प्राचीन ग्रन्थों में भी मैंने इसे कहीं नहीं पाया है। कैसे प्राप्त हुआ यह भगवान जाने। इसका प्रयोग करते हुए मुझे बहुत वर्ष हो गये हैं अक्षुण्ण फल प्राप्त हुआ है। स्वप्नदोष शुक्ल तारल्य में इसकी महिमा कभी कुंठित नहीं हुई।

वसन्तकुसुमाकर, योगराज गूगल, चन्द्रप्रभा आदि जहां व्यर्थ हो गये वहां भी इसके द्वारा अद्भुत लाभ हुआ है। जिन रोगियों को १-१ रात्रि में ५-६ बार तक स्वप्नदोष हो जाता है वहां सिद्धामृत अमृत ही है। ऐसे तो यह शिरोभ्रम चक्कर आना अम्लपित्त रज पित्तानलि जन्य यावन्मात्र रोगों में लाभदायक है और समय-समय पर अनेकों अन्य रोगों पर भी प्रयोग करता हूँ किंतु स्वप्नदोष शुक्रतारल्य पर ही पाठक इसका प्रयोग करके प्रसन्न होंगे। मेरे एक छात्र ने इसका नाम चन्द्रहास रख लिया है। योग यह है—

भुनी फिटकिरी	तीन छटांक
हल्दी पिसी	एक ,,
त्रिफला मिश्रित	एक ,,
गेरू	एक ,,

—पीस छान शीशी में रख छोड़े।

मात्रा—३ माशे से ६ माशे।

सहपान-चीनी १ तोला में मिलाकर जल के साथ।

अनुपान—जल

समय—दिन में तीन बार।

पथ्य—कुछ नहीं, सब वस्तुयें खाए, मस्त रहे। इसका अर्थ यह नहीं कि स्वस्थवृत्त का त्याग ही कर देना है।

सोमसिंही—

इसका प्रयोग प्रसूत रोगिणी स्त्रियों पर करता हूँ। सन्तान होने के बाद वातघ्न औषधि पौष्टिक स्निग्धाहार के अभाव से यह रोग जीवनीय शक्ति की कमी से होता है। वातसस्थान स्नायु मण्डल (नर्वस) की क्रिया शैथिल्य पड़ने से बोलना बंद हो जाता है। पसीने से तरबतर शरीर जड़वत् हो जाता है। भीतर से होश रहता है किन्तु बोलने की शक्ति नहीं रहती। शिर भारी सुन्न सा हो जाता है। रक्ताल्पता अधिक होने से किसी-किसी स्त्री के पांव में शोथ भी हो जाता है।

अंगमर्दो ज्वरः कंपः पिपासा गुरु गात्रता।
शोफः शोकोऽतिसारश्च सूतिका वातलक्षणम्॥

ग्राम्य बोलचाल की भाषा में इसे 'परसूत' भी कहते हैं।

यह बच्चा जनने वाली स्त्रियो ही को नहीं होता किन्तु प्रसव के बाद १०-१२ वर्ष पीछे या रजोधर्म बन्द होने पर भी होता है। साध्वी, ब्रह्मचारिणी, बाल-विधवा, अप्रसूता को भी होता है। मैंने प्रवल रक्ताल्पता ही इसका हेतु समझा है। इसी रोग मे यह औषधि रामबाण का काम देती है। योग यह है—

अशुद्ध कच्चा संखिया	३ तोला
कण्टकारी का स्वरस	१०० तोला

—सब को खरल मे डालकर घोटना, घोटते-घोटते गोली बनाने के योग्य होने पर छोटी ज्वार के समान गोली बनाना।

मात्रा—१ वटी । समय-प्रातः सायम् या एक बार।

अनुपान—पान मे रखकर खाना। पान की पीक नहीं थूकना उसे निगल जाना चाहिए। अथवा बिना लगाये पान मे रखकर खाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त यह श्वास, कास, रक्ताल्पता, दौर्बल्य, मदानल, जूहे के काटने पर ज्वरयुक्त विष में, वातपीड़ा गठिया, पुराने मंदज्वरों पर भी अच्छा काम करती है। इसे छोटे कफ प्रधान (लार टपकाने वाले) शिशुओ के ज्वर कास मे भी बेधड़क दे सके है।

मात्रा—½ या ¼ गोली या पूरी गोली भी दे सक्ते हैं।

स्मरण रखिये संखिया का प्रयोग तरुण तथा वृद्ध मनुष्य को जितनी गरमी पहुँचाती है उतनी शिशु को नहीं। क्योकि उनकी लार मे मल्ल नाशक शक्ति रहती है। कफ की प्रकृति होने से वातघ्न भी है। संखिया वात वृद्धिकारक है इस योग मे मल्ल की मात्रा अत्यल्प है। अत निर्विकार है। होमियोपैथी की डोज है।

शिवा रसायन—

यह औषधि निमोनिया मे कफ एवं जलीयाश को पचाती है, (जलीयाश को शुष्क करती है) शरीर के किसी भी भाग मे पीप हो उसको सुखाकर गांठ गूमड़े रोहू को नष्ट करती है। खासी जब बहुत क्लेश दे रही हो तो इससे उसका शमन होगा। यह औषध एम. बी. ६९३ या शिवाजोल के समकक्ष है। हूबहू वही चीज है ऐसा तो मेरा दावा नहीं है। किन्तु अद्भुत गुणकारी वस्तु पाठकों की सेवा मे उपस्थित है। यदि किसी को इससे कोई अपकार प्रतीत हो तो दूध पिलाना चाहिए। ऐसे मे यह भी विश्वास दिलाता हूँ कि कोई भी अपकार नहीं होगा। वैद्य बन्धुओ को यह भी समझ लेना चाहिए कि गधक संयुक्त कोई भी रसायन अधिक दिन खिलाने से उनकी रक्तस्थ श्वेत कणिकाओं की वृद्धि रक्तकणिकाओ की क्षति होने से जीवन का भी संशय उपस्थित हो जाता है। अत. इस प्रकार की औषधो को अल्प मात्रा मे अल्पकाल ही सेवन कराना उचित है। अपकार की कल्पना मे दूध देना श्रेयस्कर है। योग यह है—

शुद्ध आंवलासार गंधक सोडा बाईकार्ब
नौसादर का उड़ाया सत्व लोवान का फूल
—प्रत्येक २॥-२॥ तोला

—सब को खूब एक जी करके ६ ग्रेन (३-३ रत्ती की टैबलेट पानी से बना लेना। ३२० टैबलेट होगीं। अथवा पौडर ही रहने दीजिये। २ रत्ती से अधिक मात्रा एक बार मे नहीं देना। दिन मे ३-४ मात्रा दे सक्ते है। अवस्था विशेष मे ६ मात्रा तक भी।

अनुपान—जल । ऊपर की मात्रा पूर्ण वयस्क के लिये है। शिशुओ को ¼ या ½ मात्रा मे दिन मे ३-४ वार देना । कुल मात्रा अहोरात्र मे शिशुओ को २ रत्ती से अधिक नहीं होनी चाहिए। व्याधि निवृत्त होते ही इसका प्रयोग बन्द करके यथा योग्य आयुर्वेदिक औषध दीजिये।

श्री आचार्य चंद्रशेखर गौड़ B. A., D. I. M. S.

प्रोफेसर—आयुर्वेद विश्वविद्यालय, झांसी।

पिताका नाम—श्री प० भगवान सहाय जी गौड राज्यवैद्य

"आपका मूल निवास तथा जन्म स्थान नरसैना जिला बुलन्दशहर है। आपने ऋषिकुल कालेज हरिद्वार से D I M S तथा B A आयुर्वेदाचार्य आदि परीक्षायें प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण की है। बनारस से वेदान्त शास्त्री तथा हिन्दी प्रभाकर पंजब से किया है। आप सनातन धर्म आयुर्वेद कालेज मिर्जापुर में प्रधान तथा रामसहाय आयुर्वेद कालेज मेरठ में वाइस प्रिंसिपल रहे। सम्प्रति झांसी में प्रोफेसर है। आप योग्य सरल, परिश्रमशील नवयुवक चिकित्सक हैं। जहा भी रहे आपने स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य भी किया है तथा अपने को एक सफल चिकित्सक प्रमाणित किया। आपने अपनी चिकित्सा में सफल प्रमाणित ४ प्रयोग प्रेषित किये हैं, पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

उपदंश पर धूम्रपान—

हिंगुल	१ तोला
माजूफल	२ तोला
आक के जड की बकुली	४ तोला
भृङ्गराज (श्वेत फूल) पञ्चाङ्ग	८ तोला

निर्माण प्रकार—इन सबको एकत्र कर सुदृढ लोह खरल में बिना जल डाले ही मर्दन करना चाहिये। भृङ्गराज के हरे होने के कारण उसके स्वरस से ही पिण्ड सा बन जाता है। इसको दो माशा की मात्रा मे तम्बाकू की तरह सुल्फा चिलम में रखकर ऊपर से बन उपले की अग्नि रखकर दिन में तीन बार धूम्रपान करना चाहिए।

ज्ञातव्य—यह योग मेरे पिता जी का है वे इसका प्रयोग बीसो वर्ष करते रहे। वे हिंगुल को बिना शुद्ध किये हुए ही डाल देते थे और रोगी को लाभ हो जाता था। किन्तु मैं तो शास्त्रों का अधिक भक्त हूँ। रसशास्त्र मे हमें निम्न वचन प्राप्त होते हैं।

"अशुद्धो हिंगुलो मोह प्रमेह चित्तविभ्रमम्।
आन्ध्य क्लम तथा क्षैण्य कुर्यात्तस्माद् विशोधयेत्॥"

अर्थात् अशुद्ध हिंगुल मोह, प्रमेह, चित्तविभ्रम, अन्धापन, क्लम तथा क्षीणता को उत्पन्न करता है अत. उसका शोधन करना चाहिए। धूम्र-पान भी एक प्रकार से अन्तः प्रयोग ही माना जाता है। इस कारण पूर्वोक्त योग मे विशुद्ध हिंगुल का प्रयोग करना चाहिए।

भृङ्गराज श्वेत फूल का केवल ताजा हरा लिया जाता है तथा औषध प्रयोग भी नव निर्माण करके कराना चाहिए। इस योग को बना कर नहीं रक्खा जा सकता, क्योंकि उसमे वह प्रभाव नहीं रह पाता।

गुण—मैंने स्वय देखा है कि कितने ही भयङ्कर रोगी जिनकी इन्द्रिया सड़ गई थीं भयङ्कर वेदना से पीड़ित थे इस धूम्र पान से शीघ्र स्वस्थ हो गये।

पथ्य—बेसन की रोटी केवल घी से खिलाई जाती है उसमे नमक भी नहीं मिलाना चाहिए।

नोट—हिंगुल (सिंगरफ) 'जया कुसुमसंकाशो हंस पादो महोत्तम' इस प्रकार का लेना चाहिये तथा उसको शुद्ध करने के लिए अदरक रस अथवा निम्बु रस को खरल में (मर्दन) सात भावना देकर सुखा लेना चाहिए। भावना देकर अन्त में उससे जल भर देना चाहिए जब जल मात्र ऊपर आ जावे तो उस जल को नितार कर नीचे हिंगुल को सुखा कर काम में लाना चाहिए। यथा—

हिंगुल चूर्णितं खल्वे शृङ्गवेराम्भना ततः,
सप्तधा भावयेत् प्राज्ञो निर्मलो हिंगुलो भवेत्।

दद्रु नाशक वटी—

आमलासार गंधक	तोलियासुहागा
छाछागूगल	—तीनों समभाग

निर्माण विधि—इनको कागजी नीबू के स्वरस से मर्दन करना चाहिए। पुनः पुनः निम्बु रस की भावना देकर जितना भी मर्दन किया जावे गुणकारी प्रमाणित होता है। लगभग एक सप्ताह मर्दन के पश्चात् गोली बनाकर छाया में सुखा लिया जावे, तीव्र धूप का प्रकाश न पड़े।

प्रयोग विधि—इन गोलियों को निम्बू रस से अथवा अभाव में जल में घिसकर ही लेप करना चाहिए। यदि खुजलाना हो तो प्रलेप करने के पूर्व उपले से खुजाया जा सकता है।

गुण—मेरठ में कितने ही रोगी सड़े हुए दद्रु की भयङ्कर दशा में पहुँचे हुये इसी योग से ठीक हो गये। किंतु जो दाद बहुत पुराना काला भैंसा दाद था, उसमें मैंने प्रयोग नहीं किया। सम्भव है पूर्ण लाभ न कर सके।

ज्ञातव्य—इस योग में आमलासार गंधक को शुद्ध करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि बाह्य प्रयोग है। छाछा गूगल का अर्थ यह है कि स्वच्छ साफ की हुई गूगल। तेलिया सुहागा, सुहागे में से ही छाँट लिया जाता है जो अत्यन्त श्वेत चूना सा न हो। चिकना सा तेल जैसी चमक वाला हो।

प्रकाश विन्दु—

सूर्य छाप केशर	१ तोला
भीमसेनी कर्पूर	६ माशा
कूंजा की मिश्री	१ तोला
सच्चे मोती	१॥ माशा

निर्माण—गुलाब जल में प्रथम मोती को भिगो देना चाहिए। तीन दिन के पश्चात् मोती को अत्युत्तम मोती पीसने योग्य खरल में गुलाब जल से मर्दन किया जावे। उसी में केशर डालकर गुलाबजल से ही भली भांति ७ दिन तक निरन्तर मर्दन किया जावे पुन भीमसेनी कर्पूर तथा मिश्री डालकर पुन भली प्रकार मर्दन करके २० तोला गुलाबजल से घोल कर रख लिया जाता है। मैं इसे प्रकाश विंदु कहता हूँ।

गुण—इसे हिलाकर नेत्र में विंदु टपकाने से नेत्र में ज्योति बढ़ जाती है। आगरे के एक निरीक्षक (Inspector) महोदय जिनकी आंखों का मोतियाविंदु का २ बार मेडीकल कालेज में आपरेशन हुआ, इस योग के सजीव प्रमाण हैं—इससे पैत्तिक शिरः शूल (दाह) केवल नेत्र में डालने से दूर हो जाती है। नेत्र की तीव्र पीड़ा को शीघ्र शात कर लाली को भी काट देता है।

नोट—वैद्य समाज इस योग से सहर्ष लाभ उठावे—किन्तु इसे रजिष्टर्ड कराके व्यापारी दृष्टिकोण का दुस्साहस न करे। क्योंकि यह हमारा रजिष्टर्ड कराया हुआ योग है। जनसेवा के लिए लिख दिया गया है।

पांडुरोग पर योग—

तीक्ष्ण लोह का बुरादा	२० तोला
बूरा १ सेर	एक बड़ा तरबूज

—शेषांश पृष्ठ ५९ पर।

कविराज श्री धर्मदत्त चौधरी वैद्य शास्त्री आयुर्वेदा.

खन्ना (पंजाब)

पिता का नाम—चौधरी चरणदास जी दत्ता वैद्यरत्न

"आपका जन्म १६ मई १६१० को लाहौर मे हुआ। १६२६-३० लाहौर कांग्रेस के पश्चात् सनातन धर्म कालेज त्याग कर आयुर्वेदिक कालेज मे प्रविष्ट हुए जहा आपने कविराज, वैद्यशास्त्री और आयुर्वेदाचार्य की उपाधियां प्राप्त की। आप प्रारम्भ से ही उत्साही व उद्योग-शील रहे हैं। इस लिए आपने आयुर्वेद कालेज पत्ना व नि-भा. आयुर्वेद महामंडल से निबंध रचना पर स्वर्ण पदक प्राप्त किए। आप इसी कालेज में निर्माणशाला के अध्यक्ष रहे और तदनन्तर सन् ३६ में अपना स्वतन्त्र व्यवसाय किया। सनातन धर्म आयुर्वेद कालेज में प्रोफेसर रहे तथा नि भा आयुर्वेदिक विद्यापीठ तथा सनातन धर्म कालेज के प्रधान परीक्षक है। इनके अलावा अनेक संस्थाओं के व्यवस्थापक, आजीवन सदस्य, संचालक, सभापति एवं प्रधान रहे है। आप बालरोग व स्त्री रोगो के विशेषज्ञ हैं। आपकी श्रेष्ठ रचना गोमूत्र चिकित्सा है उच्च कोटि के लेखक हैं, 'लेखक समाज खन्ना' के आप प्रधान हैं। आपके प्रेषित तीन प्रयोग जो आशुफलप्रद सफल हैं, यहा प्रेषित हैं।" —सम्पादक।

इन्दुकला वटी—

इन्दुकला वटिका भैषज्यरत्नावली के मसूरिका-धिकार का योग है। हम अपने अनुभव से निम्न प्रकार से बनाते हैं।

शुद्ध शिलाजीत अथवा गोमूत्र घनामृत	
लोहभस्म १०० पुटी —दोनों	१-१ तोला
स्वर्णमाक्षिक भस्म	६ माशा
तुलसी घनसत्व	१ तोला
मुक्ताभस्म	६ माशा

—सब औषधियों को खरल में डाल कर एक जीव करें और २॥ तोला खूबकलां (खाकशी) तथा २॥ तोला काहजवान (गांजवा) (दोनों यूनानी द्रव्य) का क्वाथ डाल कर मर्दन करें। सूखने पर १-१ रत्ती की वटी बना छाया में सुखाले। (वर्षा ऋतु मे यह वटी चिपचिपी हो जाती है परन्तु गुण मे अन्तर नहीं होता।)

मात्रा—१-२ गोली अथवा १ रत्ती से २ रत्ती तक। रोगी की अवस्था देखकर दिन मे २ से ४ बार तक दे सकते हैं।

अनुपान—मुनक्का (द्राक्षा) के दाने मे रख कर अथवा अर्क काहजवान से प्रयोग मे लाई जाती है।

गुण—इसके सेवन से मसूरिका, व्रणरोग लोहित-ज्वर के अतिरिक्त भयंकर अवस्था में पहुँचा हुआ टाइफाइड ज्वर भी जाता रहता है। पित्ताधिक्य के कारण जहां आधुनिक प्रचलित क्लोरोमाइसिटीन काम नहीं देती वहां इन्दुकला से पूर्ण लाभ होता है। जहां क्लोरोमाइसिटीन के प्रयोग से मनुष्य क्षीण दुर्बल तथा बधिरता को प्राप्त होता है वहां इन्दुकला के प्रयोग से बल बढ़ता है, भूख लगती है, हृदय तथा आंतों में चेतनता आती है। हमने इसके प्रयोग से कई रोगियों को स्वास्थ्य लाभ दिया।

यवानी योग (आयुर्वेदिक एफिड्रिन)

यवानी योग कई वर्ष से हमारे प्रयोग में आरहा है। इसे हम निम्न प्रकार से बनाते हैं—

बढ़िया अच्छी अजवाइन लेकर साफ करली जाए। उसमें से ८ छटाक किसी मिट्टी के पात्र में डालकर उसमें अर्क दुग्ध डाल दें। अर्क दुग्ध इतना डालें कि अजवायन उसमें डूब जाये। फिर २ छटाक काला नमक (बिना पत्थर के) अथवा सेंधा नमक का टुकड़ा उसमें रखदें और कपरौटी करदें। सूखने पर गोबर के अम्बार में २-३ हाथ नीचे दबादें। एक मास पर्यन्त पड़ा रहने दें फिर निकाल कर किसी पुष्ट पाषाण खरल में डालकर ६ घण्टे रगड़ें। अच्छे परिश्रम से औषधि एक जीव होगी। ऐसी होजाने पर आधी रत्ती प्रमाण की वटी बना लें। यवानी वटी यही है।

मात्रा—१-२ वटी (यदि वटी न बन सके तो चूर्ण रूप में ही रखले और मात्रा ३ से १ रत्ती तक रखें) ऐसी मात्रा दिन में दो तीन बार दें।

अनुपान—मुनक्का (दाखा) के एक दाने में से बीज निकाल कर वटी अथवा चूर्ण भर दें। मुख में रख कर चबाये नहीं गले से निगलवा दें। आवश्यकता होने पर ऊपर से गरम जल, चाय इत्यादि दें।

गुण—इसके सेवन से श्वास कास आदि रोग दूर होते हैं। जहां एफिड्रीन (Ephedrine) की वटी श्वास के अधिक्य को रोक देती है वहां यह योग भी पूरा फलप्रद है। एफिड्रीन के बहुत दिन खाने से हृदय वेदना आदि कई रोग हो जाते है। इस योग के सेवन से अथवा योग्य अनुपान से ऐसे कष्ट नहीं होते। बलाबल विचार कर इसका प्रयोग अधिक लाभ देगा। हम इसे कई वर्ष से काम में लाते हैं।

शिलाजीत (आयुर्वेदिक घनामृत)

शिलाजीत आयुर्वेद की प्रसिद्ध रसायन है। रस में कटु, तिक्त और उष्ण होती है। कृमि, क्षय, उदर रोग, अश्मरी, सूजन, पाण्डु, खुजली, प्रमेह, कुष्ठ, कफ, वात और बवासीर आदि रोग नाश करती है। शुद्ध शिलाजीत तिनके के अग्रभाग से जल में डाले तो जल में तन्तु के समान नीचे चली जाती है, इसमें गोमूत्र की गन्ध आती है और इसका रंग मैला होता है।

ठीक यही गुण हमारी कृत्रिम शिलाजीत में होते है और वह है "गौमूत्र घनसत्व" इसका रूप रङ्ग और गन्ध तो मिलता ही है, गुण कहीं-कहीं उससे भी अच्छे मिलते है।

विधि—किसी ओसर गाय का मूत्र एकत्र कर अन्तर्धूम विधि* से घन कर ले, शिलाजीत बन गई। फिर इसे वाष्प यन्त्र पर सुखाया भी जा सकता है जो अधिक लाभप्रद है। (इसका

—शेषांश पृष्ठ ५२ पर।

* गौमूत्र अन्तर्धूम विधि से घन करना अच्छा है। जल भाग वाष्प द्वारा ढके हुए अथवा मिट्टी के बर्तन से भी निकल जाता है और शनै शनै घन होता है, इस लिए इसमें गुणवृद्धि होती है। आयुर्वेदिक ग्रन्थों में अन्तर्धूम घन किया गई स्थानों पर वर्णित है। —लेखक।

आचार्य श्री परमानन्द शास्त्री विद्या॰वाचा॰ डी॰लिट्

संचालक—इन्टर नेशनल आयुर्वेदिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पटना।

"बौद्ध विहार" के नाम से जिस प्रांत का नाम ही विहार है आचार्य महोदय का जन्म-स्थल है। आप आयुर्वेद के जाज्वल्यमान रत्न तो है ही उच्चकोटि के दार्शनिक भी है। आप प्रत्येक विषय को अन्वेषण की कसौटी पर कस कर ही ग्रहण करते हैं और उस गौरव-युक्त फल को लोक के सामने रखते है। वहीं पटना में गवेषणा के कार्य में रत रह कर इन्टरनशनल आयुर्वेदिक रिसर्च का संचालन कर रहे है, आपकी विद्वत्ता अपार, अगाध और अनिर्वचनीय है। भारतेतर देशो में आयुवद का रूप क्या है ? वहा की चिकित्सा पद्धति का वर्तमान विकास आयुर्वेद के मूल से कैसे प्रेरित हुआ है ? चीन में, तिब्बत मे तथा ईरान आदि देशो मे आयुर्वेद का रूप धन्वन्तरि में समय समय पर आपने दर्शाया है। उनके इस कार्य की हम पाठको के सहित सदैव प्रसशा करते है। एक चिकित्सक के नाते आपने जो अनुभव पूर्ण प्रयोग जनकल्याण भावना से प्रेषित किये है नीचे समर्पित है, पाठक ग्रहण करें।"

—सम्पादक।

जीर्ण तथा संश्लिष्ट रोगों मे जहां रोगी अत्यन्त दुर्बल नहीं हुआ हो, तथा क्षय रोग किंवा जीर्णज्वर की प्रारम्भिक अवस्था मे भी प्रयोगार्थ—

रामबाण योग—

सरफोका	सनाय	साहतरा
चिरायता	हरें (छोटी)	बहेडा
आवला	—ये सात द्रव्य समान भाग।	

—यवकुट फाट के विधान से इसका तरलसार सायं प्रात.। कोष्ठ की मृदुता तथा क्रूरता के आधार पर मात्रा का तारतम्य करना चाहिए।

पथ्य मे—हल्का एवं पौष्टिक भोजन।

परहेज—पेट की गड़बड़ी वालो को, तथा अत्यन्त निर्बल रोगी को यह नहीं दिया जाय।

आयुर्वेद के विराट वाङ्मय के अनुशीलन करने वालो के लिए यह स्पष्ट है कि किसी भी प्रयोग को शास्त्रीय प्रयोग कहना भी अशास्त्रीय नही है। इसलिए मै निजी परीक्षित चुटकुले जो यहा लिख रहा हूं मुझे भय है कि आयुर्वेद के पुस्तक-कीट अनुसन्धातागण उसमे भी शास्त्रीयता का स्वरस लाने का प्रयास कर न बैठें। किन्तु जहा तक मेरा अपना अनुभव है, ये चुटकुले मेरे अपने ही आविष्कृत है—किसी शास्त्रीय प्रयोग ग्रन्थ का सहारा इसमे नहीं लिया गया है।

—लेखक।

बच्चों के उदर विकार पर—

खुरसानी अजवायन को निर्धूम अग्नि पर रख कर इसका धूम्र घर में फैलने देना और यदि बच्चा पेट के दर्द से अधिक पीड़ित हो तो इसी अजवायन को सफेद कपडे में लपेट कर बत्ती बनाकर कडुए तैल में डुबोकर उसमें जलाते हुए उसकी लौ की गर्मी में चुटकी को तपा तपा कर बच्चे की नाभि को सेकना। प्रत्येक ३-३ घंटे पर इसका प्रयोग होना चाहिये।

अतिसार, ग्रहणी—

यदि बच्चे को अतिसार किंवा ग्रहणी विकार हो तो—बकरी के दूध में जायफल घिसकर (सम्भव हो तो दीपक की बाती पर गर्म कर) ३-३ घंटे पर चटाना चाहिए।

बालकों के ज्वर पर—

बच्चे को ज्वर यदि उतरता नहीं हो तो—सुदर्शन चूर्ण किंवा केवल पत्ती चिरायता को हल्दी के साथ पानी में उबालकर उसमें कपडे डालकर सुखाकर बच्चे को पहिनाना चाहिये।

ज्वर उतारने के लिये—

रोगी के घर में समानान्तर से पीले, लाल एवं काले कपड़े को ऐसे स्थान में टांगा जाय जिससे रोगी की दृष्टि कपडे पर पडती रहे तो यथा शीघ्र ज्वर उतर जाता है। यदि हो सके तो ज्वरघ्न धूप से रोगी के शिरहाने विष्णुसहस्र नाम के मन्त्रों से १००८ होम करना विशेष लाभप्रद होता है।

स्त्री रोगों पर—

हींग और मुसब्बर को उचित मात्रा में लेकर अफीम के पानी से मोठ के आकार की गोली बनानी चाहिए। सुबह शाम १-१ गोली अशोक-छाल घृत गोदुग्ध से सेवन करने पर आशातीत लाभ होता है।

ज्वरोत्तर गर्मी, कण्ठदाह, अरुचि किंवा पीतनेत्रता पर—

आमलक्यादि चूर्ण (शार्ङ्गधरोक्त) में विशद्ध गुडूची सत्व मिलाकर शीतल जल से सेवन करना चाहिए।

अथवा—

अजवायन, सेंधा नमक, गिलोय की लकड़ी, गूमे (द्रोणपुष्पी) का पंचाङ्ग तथा मोथे का कन्द (उचित परिमाण में) यवकुट कर क्वाथ बनाकर प्रातःकाल सेवन करना चाहिए। आवश्यकतानुसार प्रातः सायं शुद्ध वायु वाले स्थान में पर्यटन करना चाहिए।

इसके कुछ दिनों तक सेवन करने से स्थायी स्वस्थता प्राप्त होती है।

दोनों प्रकार के अर्श रोग पर—

सायं प्रातः शौच जाते समय—

खुरासान में टेनी साह, खूनीबादी दोनों जाए।

इस मन्त्र को मन ही मन जपते हुए शुष्क विशुद्ध मिट्टी से शौच शुद्धि करना चाहिये। धन्वन्तरि की कृपा से यह रोग सदा के लिए दूर हो जाता है।

पथ्य—पुष्टिकर तथा कोष्ठ शुद्धिकर आहार लेना चाहिये। शूरणकन्द तथा कागजी नीबू का व्यवहार करते रहना श्रेयष्कर रहता है।

नेत्र रोग पर—

पुनर्नवा की जड को नारी दुग्ध किंवा बकरी के दूध में घिसकर आंखों में लगाने से नेत्र के साधारण विकार तो दूर होते ही हैं। लगातार कुछ दिनों तक प्रयोग करने से धुंध, जाला, पडवाल आदि कई एक रोग सदा के लिये निर्मूल हो जाते हैं। ग्लुकोमा में भी यह लाभदायक है।

पथ्य—झप्पा भात और घी मिलाकर खाना चाहिए। झप्पा भात में माड़ पसावा नहीं होता है और भात उतारते समय तत्काल दुहा हुआ गाय का दूध उसमें छान कर डालदें और मुंह बन्दकर कुछ समय तक पडा रहने दें। फिर थोडा गरम रहने पर ही खावे।

परहेज—खाते समय या उसके बाद भी एक घंटे तक पानी नहीं पीना चाहिए। ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य रहता है।

आयुर्वेद महामहोपाध्याय

श्री पं. विश्वेश्वर दयाल वैद्यराज

सम्पादक—अनुभूत योगमाला, बरालोकपुर (इटावा)

पिता का नाम— राजवैद्य चेतराम जी द्विवेदी
आयु—६४ वर्ष जाति—कान्यकुब्ज ब्रा० द्विवेदी

"श्री वैद्यराज जी "अनुभूत योगमाला" आयुर्वेदीय मासिक पत्र के सफल एवं योग्य यशस्वी सपादक हैं। चिकित्सा आपका पैत्रिक व्यवसाय है। सफल सम्पादन के सिवाय आप उच्च चिकित्सक हैं, सस्कृत एवं आयुर्वेद के अच्छे विद्वान है, वैद्यसम्मेलनो से आपको कई वार प्रमाणपत्र मिले है। लगभग २० पुस्तको के रचयिता है। आपको सग्रहणी, यक्ष्मा एवं अर्शरोग पर विशेष अनुभव है। आप सरल प्रयोगो पर सदैव ध्यान देते हैं। आपके निम्न प्रयोग अनेक रोगियो पर अनुभूत एवं सफल प्रमाणित हो चुके हैं।"

—सम्पादक।
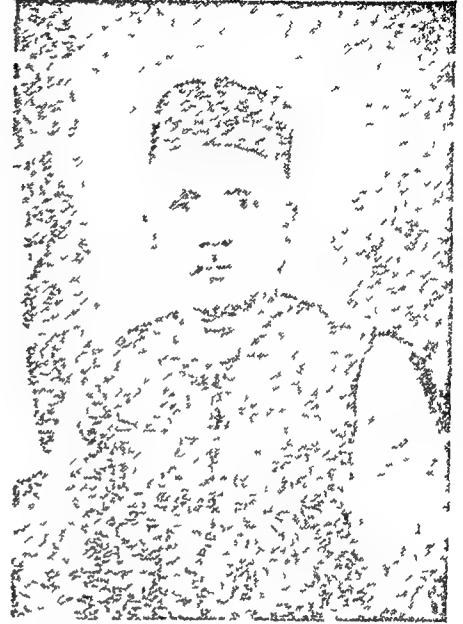
व्रणरोपक मलहम—

दारुहल्दी चूर्ण मुलहठी चूर्ण
निम्बपत्र चूर्ण काले तिलो का चूर्ण
—प्रत्येक समान भाग

—थोड़े गौघृत में ३ दिन घोटे। फिर उचित मात्रा में गौघृत और मिलाकर घोट कर मलहम बनाले।

व्यवहार विधि—घाव को नीम की पत्ती १ तोला पानी २० तोला मे पका, छान कर धोवे। घाव सुखाकर कपड़े पर मलहम लगा चिपकादे।

गुण—एक सप्ताह मे घाव भर देता है। यह वह मलहम है जो घाव को शीघ्र भरने मे आइडोफार्म आदि को मात कर देता है।

एक रोगी जिसकी अंगुली चारे की मशीन द्वारा मय हड्डी के कट गई थी सिर्फ जरा सी खाल अवशिष्ट थी। मेरे पास खाल कटाने आया मैंने नीचे एक तख्ती बांध कर अंगुलियो को ठीक जोड कर ऊपर से जख्मे हयात* का रस निचौड कर उसकी लुगदी रखदी और पट्टी बाध दी। दूसरे दिन से यही मलहम रूई मे लपेट कर रख देता, पीपल का पत्ता बांध दिया जाता। १२ वे दिन अगुली जुड़ी हुई पाई गई। तख्ती बांधना, ठीक जोडना, बस इसी मे हिकमत है और जोडना घाव भरना दवा का काम है। कई रोगियों पर इसका प्रयोग किया गया है।

सुखारोग पर माछीरुखा—

यह नील की एक जाति है इसकी साखे पतली

* यह मेरा स्वय का कल्पित नाम है। यह तालावो में पानी सूखने पर होती है। पत्ता गोल छोटा सा होता है, प्रत्येक पत्ते के सामने गोल बीज होते है जिन्हे फल कह सकते है इनमें छोटे बीज होते हैं। मारवाड़ की तरफ भी होती है वडी सुन्दर चीज है। इसका क्षुप जमीन से मिलता चलता है।

लम्बी ४-५ फुट तक की होती हैं। फल गोल पकने पर काले होते है। यह गुच्छों में लगते हैं जगंली बेर के सामान होते हैं। इसकी पत्ती के रंग से बनाया तिल तेल हरे रग का होता है। हरा तैल नाम से हमारे यहां प्रसिद्ध है। इसकी टहनी गले में बांधने से भी सूखा नष्ट हो जाता है। हर ऋतु में हरी रहती है। इसका घनसत्व बना मूंग प्रमाण गोली देने से भी लाभ होता है।

नाक के कीड़े—

कपूर तारपीन का तैल
—दोनों १-१ तोला

—शीशी मे डालें, द्रव बन जावेगा। इस द्रव की २-३ बूंद नाक में डालें, कीड़े मर जावेगे, आशु-फलप्रद दवा है।

आधाशीशी—

सिरका ईख १० तोला
नमक १ तोला

—दोनों को बोतल मे भरे, डाट लगादे। कुछ समय बाद खूब मिल जाने पर इस द्रव की ३-३ बूंद रोगी की नाक में डालदे तीक्ष्ण दर्द आधाशीशी बन्द होजावेगा। कफ की जमी गांठ पिघल कर निकल जावेगी। कफ के सूख जाने से ही यह दर्द होता है।

आग से जलना—

घर गृहस्थी में यह व्याधि आये दिन खड़ी रहती है कभी दाल चावल की बटलोई उतारने ही हाथ पैरों पर पड़ जाती है, कोयले पर पांव पड़ा जल गया, पूड़ी बनाते गरम घृत अंगुली को जला बैठना है, गरम पानी देह पर पड़ जाता है बिजली आदि मे भी जलना होता है। यह इन पर रामबाण योग है, हर गृहस्थ को याद रखना चाहिए।

शक्कर ८ तोला नमक १ तोला

—१० तोला पानी मे मिला लोशन बनाले। कपड़ा तर कर जले स्थान पर बांध दे और इसे तर रखे। लगाते ही चैन पड जावेगा। कपड़ों में आग लगने पर सारा शरीर जल जाने पर बड़े बतरन मे जिसमे सारा शरीर डूब सके इस लोशन को उसी प्रमाण मे बना समस्त शरीर डुबो रखे लाभ हो जावेगा। अनमोल योग है।

छींक लाने के लिए—

छींके आने से दिमाग हल्का होजाता है, शिर दर्द दूर होजाता है बडी सुन्दर दवा है—

नवसादर कपूर
—दोनों १-१ तोला

—दोनों को पीस शीशी मे बन्द रखे। नस्य की भांति प्रयोग करे। १/१६ रत्ती अंगुलियो पर रख सूंघे तत्काल छींके आकर दिमाग हल्का होजायगा।

—oo:o:oo—

:: पृष्ठ ४८ का शेषांश ::

विशेष विवरण हमारी पुस्तक "गौमूत्र चिकित्सा" में देखा जा सकता है)।

मात्रा—२-४ रत्ती। बच्चे और वृद्धो को बलाबल विचार कर न्यूनाधिक दी जा सकती है।

अनुपान—विविध अनुपानो से विविध रोगो मे दी जा सकती है। साधारण अवस्था मे दूध अथवा जल से दी जा सकती है।

गुण—शिलाजीत के गुण तो ऊपर लिखे जा चुके है। विशेषतया यह कोष्ठबद्धता मे अथवा अम्ल प्रकृति के रोगी को हितकर है। आधु-निक प्रचलित रोग रक्तचाप (Blood Pressure) मे तो यह रामबाण है। रोगी की अवस्था अनुसार चन्द्रभागा (सर्पगन्धा) चूर्ण के साथ रक्त-चाप रोग का मूलनाश कर देती है। चिकित्सक महोदय बनाकर प्रयोग करे और यश प्राप्त करे।

आयुर्वेदाचार्य वैद्य पं. सोमदेव शर्मा सारस्वत

प्रभाकर, ए एम. एस., डी. एस-सी. (आ.) रीडर-गवर्नमेंट आयुर्वेदिक कालेज, रायपुर।

पिता का नाम— पं० रघुनन्दन शर्मा सारस्वत

आयु—५१ वर्ष जाति—सारस्वत ब्राह्मण

"धन्वन्तरि मे अपनी लेखनी से एक गति मे धारा वहाने वाले हमारे लेखक श्री सारस्वत जी से धन्वन्तरि के पाठक सुपरिचित ही है। आपका जन्म स्थान अलीगढ़ प्रातान्तर्गत भवीगढ ग्राम है। आपका शिक्षा क्षेत्र अतरौली, खुर्जा तथा हिन्दू विश्व विद्यालय रहा, जहा से आपने मध्यमा विशारद, शास्त्री, साहित्य की शास्त्री व आचार्य कक्षाओं को उत्तीर्ण कर ए एम एस आयुर्वेद की उपाधि प्राप्त की तथा प्रभाकर और अंग्रेजी की इन्टरमिडियेट को उत्तीर्ण किया। छात्रावस्था मे ही अपना क्षेत्र वनाते रहे हैं और फतेपुर, जयपुर, लाहौर, पीलीभीत, मैडीकल कालेज नाभा स्टेट तथा स्टेट आयुर्वेद कालेज लखनऊ मे प्रोफेसर रहे। आपकी साहित्यिक रचनायें काव्य मीमासा का हिन्दी अनुवाद, मकरन्द की व्याख्या, आठ एकाकी नाटक, व्याख्या तथा आयुर्वेदिक—आयुर्वेद प्रकाश (हिन्दी तथा संस्कृत व्याख्या), आयुर्वेद प्रश्नोत्तरावली २ भाग, चरक मुनी, रससकेत कालिका अष्टाग सग्रह (हिन्दी व्याख्या), काश्यप सहिता (हि टी), अभिनव पदार्थ विज्ञान, अभिनव रस शास्त्र, आयुर्वेद का इतिहास, रसकामधेनु का हिन्दी अनुवाद आपकी प्रकाशित रचनायें हैं। इण्डियन मैडीसन वोर्ड यू पी ने आपको रस कामधेनु पर १५००) का पुरुष्कार प्रदान किया। आयुर्वेद प्रकाश पर लाहौर के आयुर्वेद महा सम्मेलन ने स्वर्ण पदक व प्रमाणपत्र प्रदान किया था। आपको अनेक पदक व सम्मानपत्र मिले हैं। प्रायः सभी पत्र-पत्रिकायें आपकी रचनाओ को वड़े चाव से छापती हैं। आप एक यशस्वी अध्यापक व लेखक हैं। सम्प्रति आयुर्वेदिक कालेज रायपुर में रीडर के पद पर सुयोग्यतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। आपने हमारे आग्रह पर तीन प्रयोग भेजे है। तीनो ही प्रयोग आपके अनुभूत सफल हैं ऐसा हमारा अटूट विश्वास है। लीजिये यही निम्न प्रयोग हैं।"

—सम्पादक।

बृहत्कर्पूरादि वटी—

शुद्ध कपूर		२ तोला
जायफल	जावित्री	लौंग
केशर	इन्द्रजौ	धोई हुई भाग
शुद्ध अफीम		अजवायन
नागरमोथा		छोटी इलायची

—प्रत्येक ६-६ माशा

विधि—इन सब औषधियों को पीसकर १० तोला पिंडखजूर के रस मे घोटकर काली मिर्च के बराबर गोली बनाले।

मात्रा—बच्चो को चौथाई गोली, युवा पुरुषो को १ गोली दिन मे दो-तीन वार दे।

अनुपान—गोली को पीसकर वरावर मिश्री मिला खा ले और ऊपर से दो घूंट पानी पी ले।

गुण—यह प्रवाहिका (पेचिश, आंव, मरोड़), हैजा, बदहजमी, वमन, अतिसार (पतली टट्टी आना)

हाथ-पैरों की ऐंठन (वांयटे), रात्रि मे सोते समय बच्चों का शय्या पर पेशाब करना, दांत चबाना तथा खांसी सर्दी और जुकाम, प्रदर शूल मे लाभप्रद है इसके अतिरिक्त स्वप्नदोष, प्रदर मे गुणकारी और रक्तरोधक है।

विशिष्ट अनुपान—हैजा, दस्त तथा वमन मे पोदीना, लौंग. इलायची, इन्द्रजौ के काढ़े के साथ दे, अधिक पेशाब आने पर कागजी नीबू के शर्बत के साथ दे, रक्तातिसार मे कच्ची लाख के साथ दे। शेष रोगों मे मिश्री के साथ दें।

ज्ञातव्य—यदि इस प्रयोग मे अभ्रक भस्म ६ माशा और शंखभस्म ६ माशा और मिला दे तो यह संग्रहणी में भी खूब लाभ दिखाती है।

मस्तिष्क दौर्बल्यहर तैल—

विधि—शुद्ध एवं मूर्च्छित तिल्ली का तैल १ सेर ले कढ़ाई मे डालकर उसमे ताजा ब्राह्मी का स्वरस २ सेर डालकर पकावे फिर उसको छान कर एक चौडे मुख की नीली काच की बडी शीशी या जार मे भर दे और उसमे नीचे लिखी वस्तुएं पीसकर डाल दे।

छारछबीला		नागरमोथा
कपूरकचरी	पानडी	धनियां
ताजा गुलाब का फूल		छोटी इलायची
दालचीनी	खस	ककोल
कबाबा	सुगन्धवाला	बालछड़

—ये तेरह द्रव्य १-१ तोला।

रतनजोत	६ माशा
बादामरोगन	५ तोला
सन्दल सफेद	५ तोला

—उस शीशी या जार का मुख बन्द कर दिन में सूर्य की तीव्र किरणों में और रात्रि मे चन्द्रमा की चादनी में १५ दिन रख दिया करें फिर उसको छानकर उसमें गुलाब का इत्र मिला कर शीशी मे रख ले।

गुण—यह तैल मस्तिष्क की दुर्बलता (दिमाग की कमजोरी) और गर्मी के कारण होने वाले शिर के शूल (शिर दर्द) को दूर करने मे अद्वितीय है

सन्धिवातहर—

नागोरी असगन्ध	५ तोले
सौंठ	५ तोले
विधारा	५ तोले
मिश्री	१५ तोले

विधि—सबको पीस कर रखले।

मात्रा—युवा पुरुष के लिए ६ माशा से १ तोला तक प्रातः सायं।

अनुपान—गर्म जल।

गुण—घुटनो और कमर मे होने वाले वायु के शूल में लाभप्रद है।

आयुर्वेद वृहस्पति श्री पं. रघुवरदयाल भट्ट वैद्य

कविराज, काव्यतीर्थ, नौघड़ा कानपुर।

पिता का नाम— श्री. यमुना नारायण भट्ट
आयु—७४ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री. भट्ट जी कानपुर के लब्ध प्रतिष्ठित, वयोवृद्ध अनुभवी वैद्यो मे से हैं। आपकी ख्याति सम्पूर्ण प्रांत में सर्वत्र व्याप्त है। आपने साहित्य, वेदान्त, आयुर्वेद आदि का उच्च अध्ययन किया है। आप में बाल्यकाल से ही जन सेवा की भावना एवं राष्ट्रीय विचार रहे हैं। देश की पराधीनता को निवारण करने के हेतु आपने कांग्रेस में बहुत पहिले से सक्रिय भाग लिया एतदर्थ अनेक यातनायें आपको सहन करनी पड़ी। अनेकों सार्वजनिक संस्थाओं की स्थापना एवं संचालन में आपका सहयोग एवं प्रधान हाथ रहा है। प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। अखिल भारतीय आयुर्वेद सम्मेलन विद्यापीठ के मन्त्री पद से आपने वैद्य समाज की बड़ी सेवा की है। आप उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध आयुर्वेद-सेवी रहे हैं। मेडीसन बोर्ड के कई वर्ष सदस्य रहे हैं। कानपुर म्यूनिसपैलिटी के २० वर्षों तक निर्विरोध सदस्य निर्वाचित रहे हैं। आप बालरोग विशेषज्ञ माने जाते हैं। हमारे विशेष आग्रह पर आपने दो प्रयोग सहस्रशः परीक्षित भेज कर आभारी किया है। आशा है पाठक आपके अनुभव से लाभ उठावेंगे।" —सम्पादक।
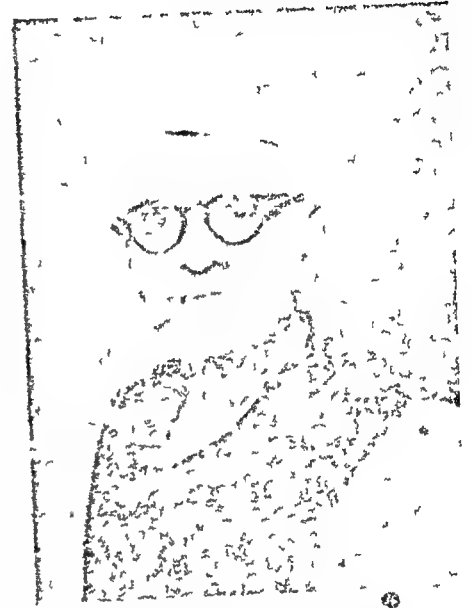
बाल उपदंश—

उपदंश एक ऐसा रोग है जिसके दूषित परमाणु तीन पीढ़ी तक चलते रहते हैं। परन्तु यह अव्यभिचारी नियम नहीं है और यह सम्पर्क केवल पितृवंश से ही नहीं अपितु मातृ कुल से भी कदाचित् हो जाता है। जिन माता-पिताओं को यह व्याधि उग्ररूप से ग्रसित करती है उनकी सन्तति जन्मकाल में बहुत स्वस्थ दशा में उत्पन्न होती है परन्तु दो मास के भीतर उनकी देह में रक्तविकार के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। यह लक्षण विभिन्न प्रकार के होते हैं। कतिपय नवजात शिशु तीसरे तथा चतुर्थ मास में ऐसे भी देखे गये हैं जिनका समस्त शरीर लाल हो गया है और देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि उनके देह की ऊपरी त्वचा निकाल ली गई है, बहुत भयावह स्थिति में उनका जीवन दिखाई देता है तथापि वह साध्य रहता है। बहुधा अभिभावक अपने दोष को व्यक्त न होने देने के कुविचार से चिकित्सक से यह दृढ़ता के साथ कहते पाये गये हैं कि हमको यह रोग कभी नहीं हुआ है, परन्तु चिकित्सक को इतने कथन-मात्र से अविलम्ब संतुष्ट न हो जाना चाहिए तथा इसके लिये अधिक अन्वेषण प्रयास प्रचलित रखना ठीक है। इसकी आशुफलप्रद चिकित्सा के लिए विशुद्ध पारद अत्युपयोगी है। मैंने निम्नलिखित प्रयोग बहुत सफल पाया है।

रस कपूर इन्द्रायण की जड़ का चूर्ण
लौंग मिर्च —प्रत्येक १-१ तोला

—इन सबको कूटकर बंगला पान के रस में खूब अच्छी तरह घोटकर छोटे चने के बराबर गोली बनाली जाये और छाया में सुखाकर रखली जाये।

मात्रा—प्रात सायंकाल एक-एक गोली पानी में घोट कर पिलाने से एक सप्ताह मे आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देता है। इसकी दो दो गोलियों के सेवन से प्रौढ़ जन भी लाभ उठा सकते हैं। यहां यह स्मरण रखना चाहिये कि यह गोलिया दांत से चबाकर नहीं खाना चाहिये। रसकपूर के दुगु ण-शान्ति के लिए लौंग पर्याप्त है।

लगाने के लिए—

पारा	१ तोला
राल कामा	२ तोला
मुर्दाशङ्ख	१ तोला
तूतिया भुना	१॥ माशे
विशुद्ध वढ़िया चमेली का तेल	१॥ छटांक

—लेकर खूब घोटा जाये। पारा राल के साथ मिल जाये तब तैल मिलाकर थोडा थोड़ा पानी डाल कर फेटा जाये और १०० बार पानी से धोया जाये यह मलहम मक्खन सा बन जायेगा। इसे पानी में रख देना चाहिए।

गुण—इसके लगाने से फोडे और फुंसी आदि शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

उपदंश रोग का एक और उपद्रव प्राय' शिशुओ मे पाया जाता है कि उनके जन्म काल से छठे महीने में घुटनो मे थोड़ी सूजन आ जाती है। उस समय शिशु न तो अपनी पीड़ा कह सकता है और न उसके चलने से ज्ञात की जा सकती है क्योंकि उस समय शिशु चलता नहीं है। इसलिए चिकित्सक को बहुत सावधानी से परीक्षा करनी चाहिए। किंचित असावधानी से अधिक हानि की सम्भावना हो जाती है, इसका परिणाम हृदयाघात होता है। यदि उस समय इस उपद्रव का निग्रह न हो सका तो हृदयगत झिल्ली मे छिद्र हो जाता है और छठे वर्ष मे बहुधा इसका पुनराक्रमण होता है, उस समय घुटनो मे भीषण पीड़ा के साथ हृच्छूल भी हो जाता है। हृदय रोगाधिकार के हृदयार्णव, चिन्तामणि तथा वाताधिकार के योगेन्द्र आदि रस उपयोग से थोड़ा लाभ होता है परन्तु सोड़ा सेलासिलास के देने मे जितना आशुफल होना है इनसे नहीं। मेरा विद्वान वैद्य बन्धुओं से सादर तथा सप्रेम अनुरोध है कि इस ओर ध्यान दें और यदि कोई विशेष अनुभव प्राप्त भैषज्य मिली हो तो उसका प्रकाश कर आयुर्वेद का अभ्युदय-वर्द्धन में सहकारी बने।

वाल यकृत्—

यह व्यथा भी पूर्वापेक्षया अब शिशुओं मे अधिक उपलब्ध होने लगी है। कतिपय ऐसे भी शिशु देखे गये हैं, जिनके जन्म काल से ही यकृत् विकार समुपस्थित है। इसका कारण गम्भीर गवेषणा से यह प्रतीत होता है कि पिता-माता का दैनिक आहार विहार अनुपयुक्त तथा विषम रहने से यह हो जाता है। अत' यकृत् वृद्धि के कारण पर सर्व प्रथम विचार करना उपयुक्त है। यकृत् वृद्धि के निदान पर विवेचना से यह प्रतीत होता है कि अन्य हेतुओं मे चिकित्सा सामञ्जस्य प्रत्यक्ष है परन्तु कोमलास्थि के कारण जो कल्पित यकृत वृद्धि प्रतीत होती है वह यकृद्रोग की चिकित्सा से सुसाध्य नहीं अपितु उसका उचित भैषज्य कोमलास्थि प्रकरण मे ही वर्णन किया जा सकता है। यकृत् रोग पूर्व की अपेक्षा अब छोटे बालकों मे व्यापक रूप से देखा जाता है. इसके अन्य कारणो मे माताओ का शिशुओं को पडे-पड़े दूध पिलाना मुख्य है। नये फैशन के मारे समाज मे शकर खाने का अभ्यास अत्यधिक हो गया है और परिश्रम न करने की प्रवृत्ति नारी समाज में भी बढ़ती जा रही है। यही कारण है कि यकृत् रोग वृद्धिगत अवस्था मे है। ऋतुचर्या आदि पर विचार होने तथा तदनुकूल कार्य करने से सम्भावनातीत लाभ हो सकता है। इस रोग की चिकित्सा मे कासनी के हरे पत्तो के स्वरस का उपयोग अत्यधिक लाभकारी है, तोरई के समान यकृत् के सूक्ष्म एव कोमल तन्तु विकृत् होकर कछुओ की पीठ के समान कड़े हो जाते है

आयुर्वेदाचार्य कविराज पं. नानकचन्द्र

वैद्यशास्त्री, आयुर्वेद रत्न, आयुर्वेद धुरीण,
श्री शैलेन्दु रसशाला, फतेहपुरी, दिल्ली।
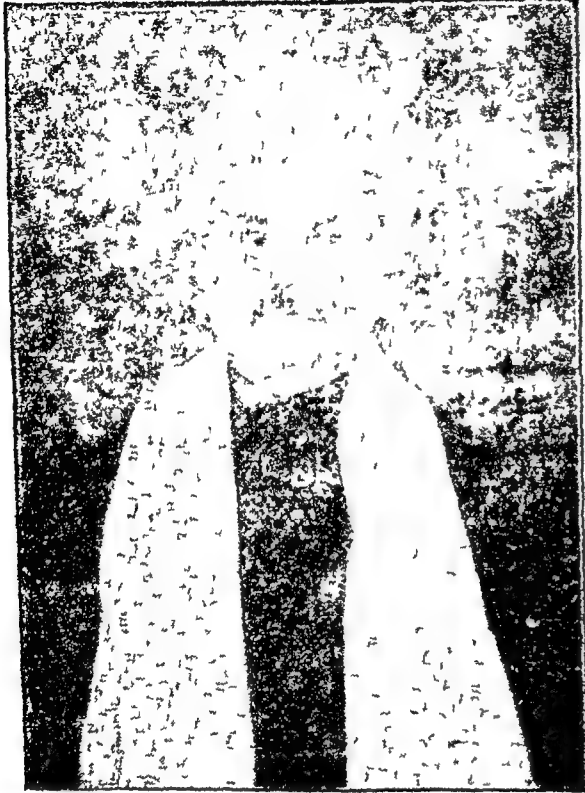
पिता का नाम— पं धनीराम जी शास्त्री

आयु—३६ वर्ष जाति—ब्राह्मण (सारस्वत)

"श्री शास्त्री जी आयुर्वेद शास्त्र के मर्मज्ञ, वयोवृद्ध अनुभवी चिकित्सक हैं तथा इस वृद्धावस्था में भी उत्साही सलग्न कार्यकर्त्ता हैं। आप हिन्दी के अच्छे लेखक भी हैं। पहिले आपने ज्वरतिमिर भास्कर का हिन्दी अनुवाद किया था तथा स्वास्थ्य-संहिता का प्रकाशन किया जो आजतक अ. भा. आयु विद्यापीठ के कोर्स में समाविष्ट है। अपने जीवन में निबन्ध व लेखो पर अनेक संस्थाओं से सम्मानसूचक स्वर्ण पदक रजत पदक व आयुर्वेद धुरीण आयुर्वेद रत्न आदि उपाधियां प्रशंसापत्र प्राप्त किये हैं। लाहौर में आपने शैलेन्दु रसशाला की स्थापना की अब उसी नाम से दिल्ली में आपकी शाला प्रगतिशील है। इस समय दिल्ली में निवास करते हैं। पहिले आप लाहौर में सनातन धर्म आयुर्वेद विद्यालय के प्रधान आचार्य थे। लाहौर में रहकर आपने १४ वर्ष वैद्यसभा के मंत्री पद से वैद्य जगत की सेवा की। १६५५-५६ में विद्यापीठ में प्रधान मन्त्री का कार्य सम्पादन किया। आपने ५ प्रयोग धन्वन्तरि के इस अङ्क के लिये प्रेषित किये हैं, पाठक उनसे लाभ उठावें।"

—सम्पादक

कासहर—

अजवायन चारो प्रकार की	१ तोला
सौंचर लवण	६ माशा

—सबको पीस कर कनक (धतूरा) फल के बीज निकाल कर उस फल मे सब चूर्ण भर दे और उसको बन्द कर ऊपर कपरौटी करे। फिर १ सेर उपलो की अग्नि मे भस्म करले। औषधि तैयार करके यथा दोष अनुपान के साथ देने से साध्यासाध्य कास को नष्ट करती है।

मात्रा—आधी रत्ती दें।

प्लीहा रोग हर—

जम्बूफल (जामुन) जो पक्के और रस से भरे हो, लेकर एक हांडी मे डालदे फिर एक सेर नौसादार पीस कर मिलादे और हिलादे। उस हांडी पर ढकना रख मुंह बन्द करदे। पुन. आठ रोज हांडी को गेहूँ की राशि मे दबा दे। पीछे निकाल कर उस रस को बोतल मे रख लेना।

मात्रा—यथाबल २ माशा से ४ माशा तक, बच्चो को १ माशा देने से तीन दिन मे भयङ्कर प्लीहा भी कट जाती है।

नोट—इसके सेवन से रोगी को रक्त के दस्त (अतिसार) आते हैं भय नहीं करना चाहिए। यह प्लीहा के कटने से ही रक्त आता है। पथ्य मे घृत का सेवन अधिक करे। लाल मिर्च, कच्चा मीठा (गुड़ आदि) दधि अहितकर है।

रक्तावरोध—

तिल काले पुराना गुड़ विनौला
—प्रत्येक समभाग

विधि एवं प्रयोग—विधिपूर्वक क्वाथ कर और जिसका ऋतु रुका हुआ हो उसे पिलाने से ऋतु शीघ्र ही आने लग जाता है

वालरोग में—

भुने चने का चूर्ण तुलसी पत्र भङ्ग
माजूफल नस पास (अनार की डोंडी)
—सवको सम भाग लेकर चूर्ण करले। इसे जिस वालक की घण्टी नीचे हो गई हो इस चूर्ण को थोड़ा सा अगूठे पर लगाकर बालक के गले मे ऊपर को दवाने से उसकी घण्टी● ठीक होजाती है। श्वास, कास, छर्दि को आराम होता है।

कृमि हर—

फिटकरी वच
—सम भाग ले दोनों को पीसकर सूक्ष्म चूर्ण करना पीछे नाक मे नस्य देकर पट्टी वाध देनी चाहिए। १५ मिनट बाद खोलने से जितने कृमि सिर मे होंगे सव निकल आवेगे।

गुदभ्रंश हर—

लसूडियो (ल्हिसोडे) को लेकर घृत मे जलालो और उसको घोटकर मलहम तय्यार करलो। इसको गुदा निकलने पर लेप करने से गुदा फिर नहीं निकलेगी।

:: पृष्ठ ४६ का शेषांश ::

निर्माण—उस तरवूज मे त्रिफला क्वाथ से सात वार भावित (घोटा हुआ) पूर्वोक्त लौह चूर्ण तथा बूरा को टांकी काट के भर दिया जाता है। पुन: उस टांकी को वन्द करके आटे की पिट्ठी से सन्धि वन्धन किया जावे और उसे किसी सुलौह निर्मित कढ़ाई या कलईदार वड़ी पतीली में रखकर ४० दिन तक भूसे के ढेर में दाव दिया जाता है। पुनः निकाल कर उसके पीले रङ्ग के द्रवभूत हुये गूदे को बोतलो मे भर कर पुनः राशन के ढेर मे दाव दिया जाता है। जव उस द्रव का रङ्ग रक्त हो जावे ४-६ महीना तक दवा रहना चाहिये। रक्तवर्ण होने पर उसका प्रयोग किया जाता है यदि द्रव गाढ़ा हो जावे तो उसमें वर्षा जल अथवा Distilled Water मिला दिया जाता है।

मात्रा—६ माशा की मात्रा प्रातः सायं अथवा रोगी के वलावल के अनुसार केवल प्रातः ही पिलावे।

ज्ञातव्य—औषधि एक गाढ़े से रक्तवर्णीय अर्क के रूप में तैयार होती है जो वर्षों तक सेवन की जा सकती है। लाहौर में एक जहरवाद का रोगी वैद्यों का छोड़ा हुआ इस योग के एक महीना तक निरन्तर सेवन से पूर्ण स्वस्थ हो गया था।

पथ्य—घी कम से कम १० तोला प्रतिदिन, पालक का शाक व वकरे का पतला रस (शोरुआ) भी खिलाया जा सकता है।

अपथ्य—गुड तैल, खटाई, मिर्च, चाय तथा अन्य कोई गोस्त नहीं खावे।

●घण्टी नीचे होने से अभिप्राय है काक (कौआ) गिरना। हर व्यक्ति के गले में एक मास की छोटी थैली जैसी लटका करती है, इस पर शोथ होजाने से वडी पीडा होती है। खाना पानी निगलना कठिन होजाता है, इसे ही घण्टी नीचे होना कहते हैं। उत्तर भारत में इसे घाटी आना भी कहा जाता हे। —सम्पादक।

श्री, आचार्य नित्यानन्द शास्त्री आयुर्वेदाचार्य

साहित्य शास्त्री, हिन्दी साहित्यरत्न, प्रभाकर, पिलानी।

पिता का नाम—विद्यामार्त्तण्ड पं० रूपराम जी शास्त्री
आयु—४० वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री आचार्य जी का परिचय देते हुए हमे हर्ष है। आप अपनी प्रतिभा से उत्तरोत्तर आयुर्वेद ससार मे अग्रसर हो रहे हैं। आप आरम्भ से ही नवयुवक का उत्साह लेकर आए हैं और उसी के कारण आपका क्षेत्र सामाजिक जीवन मय वना गया। आपने अपनी योग्यता से अनेक उपाधिया ससम्मान प्राप्त की हैं। उपरोक्त के अतिरिक्त वैदिक आयुर्वेद मार्तण्ड, आयुर्वेद सरस्वती, प्राणाचार्य, साहित्य शिरोमणि आदि से विभूषित है। हिन्दी, अग्रेजी, गुजराती, मराठी, बगला, गुरुमुखी आदि भाषाओ के ज्ञाता है। आपने अनेक सस्थाओ मे भाग लिया है। विरला आयुर्वेद विभाग पिलानी, राजस्थान आयुर्वेद सेवा मडल, आयुर्वेद सेवक समाज, सहकार भारती, विरला आयुर्वेद ऋषि अर्चन के अध्यक्ष, कई पत्रो के सम्पादक, अखिल भारतीय आयुर्वेद पत्रकार सम्मेलन के प्रधान मन्त्री, अनेक संस्थाओ के संयोजक, आयु० परामर्श दात्रि समिती, भारतीय चिकित्सा पजीयन वोर्ड जयपुर के सदस्य, भूतपूर्व नि० भारतीय आयु० विद्यापीठ के उपाध्यक्ष रहे हैं। आप 'वैदिक कालीन आयुर्वेद' के लेखक व 'रस सकेत कालिका' के व्याख्याता हैं। आप राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व प्रधान मत्री है। आपकी साहित्य तथा आयुर्वेद सेवाओ का राजस्थान को समुचित लाभ के साथ गौरव भी है। आपके भेजे हुए निम्न योग हैं, अपनी चिकित्सा की कसोटी पर कस कर देखें।" —सम्पादक।

क्षय में क्या करें—

यह रोग सारे हिन्दुस्तान मे फैला हुआ है और दिन दिन बढता ही जा रहा है। पहले राजपूताने में यह रोग नहीं के बराबर था, किन्तु वम्वई और कलकत्ता व्यापार के लिये जाने वाले व्यक्ति इसे लेकर लौटते है और रोग प्रसार मे सहायक होते है। पहाडी स्थानो का भी यही हाल है। अपुष्टिकर भोजन, निवास स्थान की गन्दगी, शुद्ध वायु का अभाव, शरीर की दुर्बलता और बहुमैथुन इस रोग के मुख्य कारण हैं। पहले रस फिर धीरे धीरे रक्त आदि धातुओ की कमी से 'अनुलोम क्षय' और पहले वीर्य के अधिक व्यय से क्रम होने के कारण मज्जा आदि नजदीकी धातुओ की कमी के कारण प्रतिलोम-क्षय होता है। आयुर्वेदिक प्रणाली के अनुसार दोनो प्रकारों मे एक ही चिकित्सा पूरा काम कर सकती है।

राजयक्ष्मा की प्रारम्भिक अवस्था मे 'स्वर्णवसन्त मालती' बहुत अच्छा काम करती है। खेद की बात इतनी ही है कि प्राथमिक अवस्था का ज्ञान बिना अनुभवी विद्वान के होना कठिन है। सूक्ष्म स्वर्णपत्र का प्रयोग प्रत्येक हालत मे अत्यन्त उपयोगी है।

चन्द्रोदय निर्माण में बनी हुई स्वर्णभस्म २ गुंजा, सहस्रपुटी अभ्रक ४ गुञ्जा, मृगश्रृङ्ग भस्म १½ माशा, चन्द्रपुटी प्रवालभस्म ६ माशा मिलाकर १-१ गुञ्जा, सबेरे शाम मधु से चाटे।

दोनों प्रकार से होने वाले राजयक्ष्मा के लिए अमृत है।

द्राक्षावलेह—

आयुर्वेद में जितने प्रयोग उष्ण गुणोत्कर्ष वाले हैं उतने शीत गुण प्राधान्य वाले नहीं। यह एक आश्चर्य की बात है कि इतने उष्ण प्रधान देश में भी ठण्डी दवाओं का बोल-बाला क्यों नहीं हो सका। चिकित्सा के सिद्धान्तों की बात छोड़िये, मेरे ख्याल से तो देश और काल के अनुसार इनमें भी अनुसन्धान-कार्य और प्रचार होने से चिकित्सा में नई सफलता प्राप्त की जा सकती है। नीचे एक इसी प्रकार का प्रयोग दिया जा रहा है जो अत्यन्त ही शीतल और बुद्धिवर्धक है। उन्माद, अपस्मार, भ्रम और सभी तरह के दैनिक विकारों में इसका प्रयोग किया जा सकता है। उष्णकालीन औषधियों में अनुपान के रूप से भी इसका प्रयोग किया जाता है।

प्रयोग—

ब्राह्मी		२ तोला
गाजवां		२ तोला
वालछड़		१ तोला
गुलाव फूल	काली मिरच	मुलहठी
शङ्खपुष्पी		—प्रत्येक १-१ तोला
इलायची वड़ी		इलायची छोटी
संफेद चन्दन		—प्रत्येक ६-६ माशा

—सबको लेकर अत्यन्त सूक्ष्म चूर्ण करलें। फिर भींगी हुई मुनक्का के बीज निकाल कर एक सेर लेवे, उसे खूब पीसकर गाय के एक पाव घी में मन्द अग्नि से भून कर १॥ सेर मिश्री की अवलेह योग्य चासनी बनाकर पहले ऊपर वाला चूर्ण डाले, फिर भुनी हुई मुनक्का डाल-कर अवलेह बना लेवे।

मात्रा—१ तोला तक।

दमे की दवा—

शेखावाटी के डाक्टर गुलझारीलाल जी अपने समय के बहुत सिद्धहस्त चिकित्सक थे। उनकी प्रतिभा की अनेकों दन्त कथाएं आज उस प्रदेश में प्रचलित है। डाक्टर होने पर भी आयुर्वेद में उनकी वड़ी श्रद्धा थी। मधुकोष व्याख्या के अनुसार अन्तर्विद्रधि और गुल्म पर उनका भेद प्रतिपादन सुनकर मैं तो आश्चर्य चकित रह गया था। उन्होंने अपने अनेक सफल प्रयोग पू. पिताजी से परम मित्रता होने के कारण मुझे दिये थे, जिन्हें यथावसर प्रकाशित करूंगा। पुराने दमे को भी जड़ से दूर करने वाला यह योग उन्हीं का है। जो अनेकों चिन्तामणि और श्वासकुठारों से निराश हो गये हों, इसका प्रयोग भी अवश्य करना चाहिये। मैंने उनके इस प्रयोग के साथ जल-चिकित्सा कराते हुए तमक श्वास को दूर करने में शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त की है।

सोडावाईकार्व १६ रत्ती और शङ्खिया २ रत्ती मिलाकर खूब पीस लेवे। एक जीव हो जाने पर १-१ रत्ती की १८ पुड़िया बना लेवें। सवेरे शाम १-१ पुड़िया शीतल जल के साथ लेवे। यह ६ दिन की दवा है। पूरा लाभ न होने पर दो सप्ताह के बाद फिर इसे लेना चाहिए। इसके सेवन-काल में घी में भुना हुआ दलिया खाना लाभदायक है। कब्जियत किसी भी अवस्था में न रहने दे।

वैद्य दारोगा प्रसाद मिश्र G. A. M. S.

व्याकरण–साख्य–योगाचार्य. काव्यतीर्थ, साहित्यशास्त्री,
प्रिंसिपल—आयुर्वेद कालेज, मोतीहारी।

"श्री मिश्र जी शाकद्वीपीय ब्राह्मण हैं तथा गया जिले के रहने वाले हैं। आपके यहा कई पीढियो ने ही नहीं अपितु ४०० वर्ष से आयुर्वेद चिकित्सा का कार्य होता आया है। आपका सम्पूर्ण परिवार ही आयुर्वेदज्ञ है। आपकी माता, स्त्री, भाई आदि सभी आयुर्वेद चिकित्सक हैं, आप पटना, इन्दौर आदि स्थानों में अध्यापक रह चुके हैं वर्तमान मे आप आयुर्वेद कालेज मोतीहारी मे प्रधान आचार्य हैं। आप प० हरिनारायण जी चतुर्वेदी, प० बृजबिहारी चतुर्वेदी, कविराज प्रतापसिंह जी आदि प्रकाण्ड विद्वानो के शिष्य रह चुके हैं। आपकी 'आयुर्वेदीय त्रिदोष विनिश्चय भाष्यम्' नामक संस्कृत पुस्तक विहार सरकार द्वारा प्रकाशित हुई है। नवीन रचना 'धारिदर्शनम्' और 'स्वास्थ्य मेखला' नामक शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली हैं। आप धन्वन्तरि के उत्साही एवं विद्वान् लेखक हैं। आपके अनुभवपूर्ण लेखो को पाठक अनेक वार पढ चुके हैं। आपके निम्न प्रयोग भी आशा है पाठको को रुचिकर प्रतीत होगे।"

—सम्पादक।

रक्त प्रदर पर योग—

गौंद बवूल (कीकर) एक पाव
नागकेशर छोटा पुष्प एक छटांक

—पहिले नागकेशर को वस्त्रपूत चूर्ण बनाले, बाद एक छटाक गौघृत कढ़ाही मे डालकर उसमे गोद बवूल को भूने, भूनने से लाजा बन जायगा। बाद इसे चूर्ण करले। आधा सेर तालमिश्री का पाक तैयार करके उसमे इन दोनो चूर्णों को डाल दे। शीतल होने पर १-१ तोले का मोदक बनादे। सुबह दोपहर शाम और रात मे एक-एक मोदक खाने से दो दिन मे रक्त बन्द हो जाता है। योनि मार्ग में कुकरोंधा के रस का पीचु अवश्य रखे।

तमकश्वास वेगावरोधक योग—

—नागदमन की जड का चूर्ण ४ आने भर की मात्रा मे तीव्र श्वासार्त को मधु के साथ चटा दे। नागदमन चूर्ण एक आना भर को एक आना भर पुराना गुण मे मिश्रित करके प्रायोगिक धूम्रपान करावे। आधा घण्टा मे निश्चित लाभ होगा।

कनकादि वटी—

श्वेतकनकवीज अशुद्ध काली मिर्च
लवङ्ग (लौंग)
—प्रत्येक १-१ तोला

—पानी से श्लक्ष्ण पीसकर मटर (कलाय) बराबर गोलियां बनाकर घर्म शुष्क करके रखलें।

व्यवहारविधि—श्वास पर—कनकादिवटी ५-५ गोलियां लेकर आठ आना भर गुड़ मे पीसकर धूम्रपान करने से श्वास का प्रबल वेग चन्द मिनटों मे कम होजाता है।

विषमज्वर पर—कनकादि वटी को १-१ घण्टे बाद १-१ गोली तुलसी के पत्ते के साथ चार बार खाने से विषमज्वर के चारों भेद शांत होजाते है। ज्वर उतरने पर इस दवा का प्रयोग करना चाहिए। यकृत-प्लीहा से युक्त विषमज्वर मे लाभ नहीं करती है।

प्रसूता नारियों को—प्रातः सायं और ६ बजे रात मे एक-एक गोली कनकादि वटी मधु से प्रयोग करे। अत्यन्त बल को देने वाली और देह मे गर्मी बढ़ाती एव बाह्य सर्दी से बचाकर देह मे शोथ आदि नहीं होने देती है।

अतिसार रोग (कफजातिसार) पर—सायं प्रातः दोपहर दिन और ६ बजे रात मे कनकादि वटी १-१ गोली तण्डुलोदक १ तो. मे घोल कर खिलावें।

स्नुह्यादि तैल—

—एक पाव कटुतैल लेकर कड़ाही मे सन्तप्त करे बाद उसमे एक छटांक वृत्तस्नुही मज्जा• को टुकड़ी-टुकड़ी काट कर पकावें। जब मज्जा लाल होजाय तब तैल को उतार कर ठण्डा होने पर छान ले।

इस तैल को भयङ्कर असाध्य व्रण, नाड़ीव्रण (साइनस), भगन्दर (फिश्च्यूला), कच्चा या पक्का व्रण पर लगावें निश्चित लाभ होगा। व्रण पर पानी नहीं पड़ना चाहिए अन्यथा बढ़ जाता है। कर्णमूल शोथ पर कान मे ३-४ बार दिन रात मे इस तैल की ५-५ बूंद पूरण करना चाहिए। ज्वर अगर जीर्ण होगया हो तो उसमे इस तैल का ३-४ बार मर्दन करावे और कान मे भी पांच बूंद डाले। वातज्वर, पित्तज्वर, वातपित्तज्वर मे मालिश करने से पनीसा देकर ज्वर उतर जाता है।

•वृत्तस्नुही से मेरा मतलब है गोल, दण्डस्वरूप थूहर भेद (मुठिया सीज) से, चार धार युक्त स्नुही नहीं बल्कि गोल स्नुही लें। ऊपर के कांटे, त्वचायें उतारने पर भीतर मे यह सफेद मज्जा युक्त होता है। —लेखक।

तुम्रक चूर्ण—

—पहाड़ी पपीता (चावलमुंगरा) के फल को लेकर छिलका तोड़कर मज्जा को वस्त्रपूत चूर्ण बनाकर रख छोड़े। मधुमेह के रोगियों पर दो आना भर की मात्रा मे सायं प्रातः दोपहर रात २-३ घूंट पानी मे पिलावे। सुगर निल होजाता है।

पथ्य—मधुमेह का होना ही चाहिए।

मधुमेह रोग पर मैं बसन्तकुसमाकर भी देता हूँ पर शास्त्र मे जो भावनाये वर्णित हैं उनसे भावना नही देता हूँ। दुग्ध, इक्षुरस आदि मधुमेह के लिए हानिप्रद हैं। मैं बसन्तकुसमाकर मे गुडुचि (गिलोय) रस की, त्रिकोल (बिम्बाफल) के रस, कारवेल्ल के रस, नढैल के रस, दारुहरिद्रा के क्वाथ, जामुन के छाल के रस बेल के छाल के रस की सात-सात भावनाऐं देता हूँ। बडा लाभ करता है। शास्त्रीय वसन्तकुसमाकर उतना लाभ नहीं करता है।

संग्रहणी रोग पर—

जाफर (जायफल)	अफीम
कलमीशोरा	लवङ्ग (लौंग)

—प्रत्येक १-१ तोला

—चूना के पानी (चूर्णोदक) मे पीस कर मसूर बराबर गोलियां बनाकर शुष्क करले। भयङ्कर से भयङ्कर संग्रहणी अतिसार पर प्रयोग करे, अवश्य लाभ होगा।

प्रयोगकाल एवं अनुपान—सांय प्रातः दोपहर रात या ३-३ घण्टे पर ५ बार तण्डुलोदक २॥ तोला मे घोलकर पिलावे, अवश्य लाभ होगा। पर्पटी कल्प से भी उत्तम लाभप्रद है।

कविराज महेन्द्र कुमार शास्त्री

वी. ए., वैद्यवाचस्पति, वम्वई।
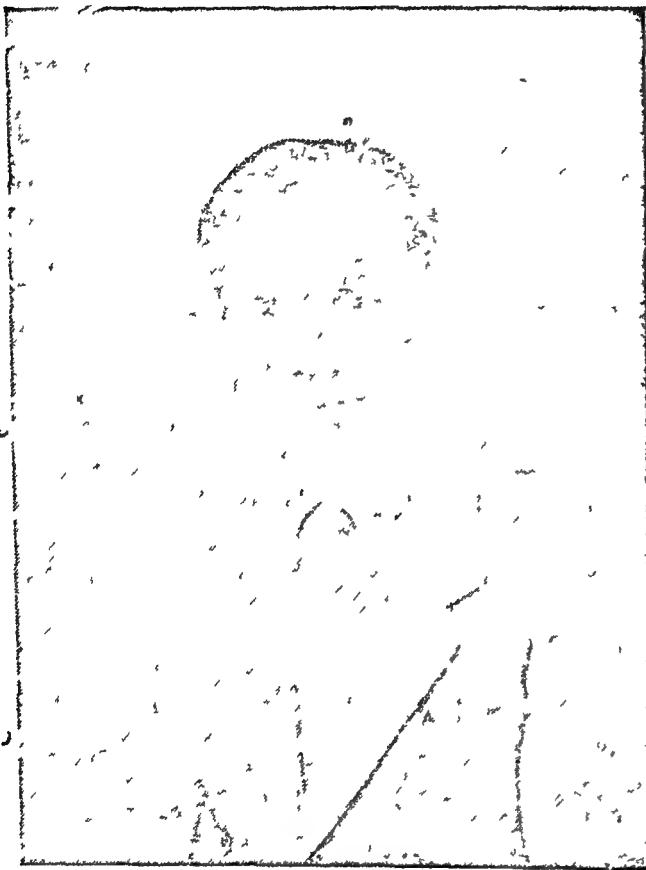
पिता का नाम— श्री० चौधरी रूपलाल जी

"ये धन्वन्तरि परिवार के सुपरिचित सफल लेखक हैं। आयुर्वेद ससार में आपने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। आप उच्चकोटि के वक्ता, लेखक व विज्ञ चिकित्सक हैं। चिकित्सा मे आपने वातिक रोगो व पाचन-विकार जनित रोगो मे विशेष दक्षता प्राप्त की है। आपके लिखे हुए 'आयुर्वेद का सक्षिप्त इतिहास, 'लघु द्रव्य गुणादर्श' ये दो ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है तथा अप्रकाशित ग्र थो मे औद्भिद शास्त्र, द्रव्य-गुणादर्श, चिकित्सातत्व प्रदीप मुख्य रचनायें हैं। आयुर्वेदिक प्रधान पत्रो मे आपके अनेक सारगर्भित लेख प्रकाशित हुए हैं। १६३६ मे ही अध्यापन तथा फार्मेसी सम्बन्धी अनुभव है। दयानन्द आयुर्वेदिक कालेज लाहौर व ऋषिकुल आयु कालेज हरिद्वार के उपाचार्य, रामविलास आनन्दीलाल आयु कालेज वम्वई में २॥ वर्ष तक आचार्य, गवर्नमेंट आयुर्वेदिक हास्पीटल (श्री महादेवी आनन्दीलाल पोद्दार हास्पीटल) के अध्यक्ष पद पर २॥ वर्ष तक कार्य करते रहे हैं। नि. भा आयुर्वेद विद्यापीठ, आयुर्वेदिक स्टेट फैकल्टी वम्वई, प्रयाग, जालन्धर, गुरुकुल कागडी आदि अनेक विद्यालयो के परीक्षक हैं। वर्तमान मे आप वम्वई सरकार वीमा योजना (स्वास्थ्य विभाग) वम्वई के परामर्शदाता है।"

—सम्पादक।

कारस्करादिवटी—

शुद्ध कुचला		१० तोला
रससिंदूर	लोहभस्म	१।-१। तोला
ताम्रभस्म		१ तोला
जायफल	तगर	लवङ्ग
छोटी एला	कालीमिर्च	प्रवालपिष्टी
सोठ		जटामांसी

—प्रत्येक १॥-१॥ तोला

खुरसानी अजवायन २॥ तोला

भावनार्थ द्रव्य—

शंखपुष्पी	वचा	दशमूल
आमला	जटामांसी	शरपुंखा
ब्राह्मी	घृतकुमारी	रसोन (लशुन) रस

—भावना द्रव्यो को छोड़कर सव पदार्थो का सूक्ष्म चूर्ण वनाकर रससिंदूरादि एकत्र मिलादे। पुन. भावना द्रव्यो का स्वरस या काढ़ा वनाकर

प्रत्येक की पृथक्-पृथक् ३-३ भावनाएं दे। यदि पृथक् न दे सके तो घृतकुमारी तथा लहसन को छोड़कर शेष सबका काढ़ा एकत्र बनाकर उनसे सात भवनायें दे। घृतकुमारी तथा लहसन का रस निकाल कर प्रत्येक की पृथक्-पृथक् तीन भावनाएं दें। सुखाकर २-२ रत्ती की गोलियां बनाले।

मात्रा—४ से ८ गोली प्रतिदिन।

गुण—उत्तेजक, अनुलोमक, बल्य, वातसामक। वात-व्याधियों मे, पक्षाघात, वातनाडी निर्बलता, शारीरिक निर्बलता, थकावट, सिरदर्द (कमजोरी) पाण्डुरोग तथा गुल्म, जीर्ण विबन्ध (विशेष कर आन्तों की निर्बलता से उत्पन्न), उदराध्मान (अफारा) और यकृत की शिथिलता में अति उत्तम योग है।

अश्वगन्धादि वटी—

अश्वगन्धा शतावरी चोबचीनी
स्योनाकत्वक् चूर्ण — चारों १-१ तोला
वंशमूल चूर्ण २ तोला
मीठा सुरञ्जान १ तोला
रससिंदूर अभ्रकभस्म ताम्रभस्म
—तीनों ६-६ माशा
त्रिफला चूर्ण ३ तोला
त्रिकुटाचूर्ण ३ तोला
सनाय २ तोला
पारसीक यवानी २ तोला
पुनर्नवा गुग्गुल या योगराज गुग्गुल
सब चूर्ण के समान

भावनार्थ द्रव्य —

रास्ना पुनर्नवा एरण्डमूल
देवदारु सोंठ गिलोय
गोखुरु चोबचीनी अनन्तमूल
अर्जुन हरीतकी पाषाणभेद
कालीजीरी कलौंजी
—सब समान भाग

—इन सबका काढ़ा बनाकर ६-७ भावनाएं देकर ४-४ रत्ती की गोलियां बनावे।

मात्रा—४ से ८ गोली प्रतिदिन गोमूत्र के साथ।

प्रयोग—आमवात तथा अन्य वातिक वेदनाओं मे विशेष लाभ देगा। किन्तु ३-४ मास तक निरन्तर प्रयोग करावे।

सूचना—कई रोगी गोमूत्र को पीना पसन्द नहीं करते उन्हे या तो गोमूत्र को पृथक् एक शीशी मे भरकर किसी मिक्श्चर या आसव के नाम से दे दिया करे अथवा गोमूत्र की ७-८ भावनाएं लगाले। अति उत्तम योग है।

शिवगुटिका—

अश्वगन्ध खरैटी नागबला
मुलहठी नागकेसर मायाफल (माजूफल)
पुत्रंजीव (पुत्रजीवक) कमलबीज
मखान्न (मखाने) कटफलत्वक्
—प्रत्येक १-१ तोला

भावनार्थ द्रव्य —

वटांकुर स्वरस या क्वाथ जीवन्ती

—उक्त सब औषधियों का चूर्ण कर उसमे वटांकुर की तीन भावनाये दे। यदि उपलब्ध हो सके तो श्वेत कंटकारी के स्वरस या क्वाथ की भावनाए भी दे डाले। जीवन्ती के नाम से उस लता को ग्रहण करना चाहिए, जिसे गुजराती मे "मीठी खरखोडी" कहा जाता है यदि यह न मिले तो अन्य वस्तु की भावना न दे। ४-४ रत्ती की गोलिया बनाले।

मात्रा—६ गोली प्रतिदिन जल के साथ।

गुण—यह योग पुत्रप्रद तथा गर्भस्रावहर है या जिन स्त्रियों के लड़किया ही लडकियां होती हो या जिनके बच्चे मर जाते हो, अथवा जिन्हे ३-४ मास का गर्भस्राव होजाता हो उनके लिए अति उत्तम है।

—शेषांश पृष्ठ ६७ पर।

कविविनोद श्री पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्यभूषण

अध्यक्ष—अमृतधारा फार्मेसी, देहरादून।

पिता का नाम— श्री. पं. मूलचन्द जी शर्मा

आयु—७७ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"आयुर्वेद जगत मे ऐसा कौनसा व्यक्ति है जो 'अमृतधारा' के साथ साथ श्री शर्मा जी को नही जानता हो। आपकी ख्याति सारे भारतवर्ष मे फैली हुई है। पाकिस्तान बनने के बाद आपने लाहौर को छोडकर देहरादून मे अपना अमृतधारा कार्यालय स्थापित किया है। यह सब उन्नति आपकी अपनी कुशाग्रबुद्धि एव व्यापार कुशलता का ही परिणाम है जो लाखो रुपयो का सकट सहकर भी पुन. अपना कार्य पूर्ववत ही चला रहे है। आप भारत के सफल व्यापारी, आयुर्वेद के उद्भट विद्वान एव उच्च अनुभवी चिकित्सक हैं। आप अपने जीवन मे अनेक प्रमुख सस्थाओ द्वारा समय समय पर सम्मानित किए गए है। आपने लगभग ६० पुस्तक भी लिखी है तथा अनेक लेख प्रकाशित कराए हैं। पुरुषरोगो के आप विशेषज्ञ है। आपने इस विशेषाक के लिए अनेक रोगो पर कार्यकर दो प्रयोग प्रेषित किए है जो पाठको के समक्ष प्रस्तुत हैं।"

—सम्पादक।

एक अद्भुत चूर्ण—

लाल चन्दन	श्वेत चन्दन	कचूर
मुलहठी	नीम के पत्ते	मेंहदी के पत्ते
मजीठ	गेरु	हिरमिची
बबूल के फूल		मूंगा भस्म

—प्रत्येक समान भाग

मात्रा—४ रत्ती, बालकों के वास्ते आधी रत्ती से १ रत्ती तक। २ बार दिन मे। रोगानुसार प्रयोग लिखने हों तो उसको कई जगह लिखना होगा। क्योंकि यह साधारण सा चूर्ण बहुत से रोगों के वास्ते रामबाण है।

हृदय रोग—

दिल की धड़कन, रक्तचाप (बल्ड प्रैशर), दिल की कमजोरी, दिल की गर्मी इत्यादि के वास्ते अर्क गाजबान, अर्क बेदमुश्क, अर्क केवडा, अर्क गुलाब इत्यादि से दें।

यकृत रोग—

कामला, पाण्डु, रक्त की कमी, पित्त से यकृत का बढ़ना ऐसे रोगों के वास्ते • काचमाच, अर्क कासनी, तक्र इत्यादि से दें।

गर्भाशय रोग—

रक्त-प्रदर, श्वेत-प्रदर, गर्भावस्था मे रक्त आना, गर्भस्राव या गर्भपात की आदत या अकस्मात होना इन रोगों मे आमले के पानी, शर्बत अजवार, शर्बत खशखाश, मक्खन या मलाई इत्यादि से दे।

बाल रोग—

बालको का दूध फेकना, हरे पीले दस्त, यकृत दोष, ज्वर, कास इत्यादि मे शर्बत अनार, शर्बत बनफशा आदि से दे।

रक्त विकार—

पित्त से रक्त विकार होवे, फोड़े फुन्सी निकलते हों, बालकों के सिर पर फोड़े निकलते रहते हों (पाका) तो ऐसे रोगों मे अर्क मुण्डी, अर्क चोब·

• इसे सस्कृत में काकमाची एव हिन्दी में मकोय कहते है।

चीनी, अर्क उशवा, अर्क शाहतरा इत्यादि से दे।

रक्त पित्त—ऊर्ध्व या अधोरक्तपित्त में शर्वत अंजवार, शर्वत खशखाश इत्यादि से दे।

पित्त रोग--पित्त के ४० रोगो मे उचित अनुपान से दें। आराम होता है।

पूर्ण वटी——

यह योग हमारा अपना निर्मित है और कई वर्षो से इसको सफलतापूर्वक वरतते है।

गिलोय पित्तपापड़ा चिरायता
सौंफ नीम छाल का भीतरी भाग

—प्रत्येक २-२ सेर

जो वस्तु हरी मिले, उसको दुगुना डालना। ८ गुना पानी मे भिगोकर क्वाथ करके मल-छान कर, फिर अग्नि पर चढ़ाकर घन बनाले। उसमें निम्न-लिखित पदार्थ और डाले—

रीठे का छिलका	२ सेर
चांदी भस्म	५ तोला
वंग भस्म	२० तोला
गेरु	१० तोला
सकमूनिया ×	७५ तोला

—इकट्ठा खरल करके २ रत्ती की गोली बनावें।

गुण—यह दूषित विष को निकालने के साथ कई रोगों को आराम करती है। वैद्य उचित अनुपान से निम्नलिखित रोगो पर वरत कर यश के भागी बने।

उपदंश, वात फिरङ्ग, मूत्रकृच्छ्र, सुजाक, अर्श, पुरानी सिरपीड़ा, उदर पीड़ा, अपचन, वृक्कशूल, कुष्ठ, प्लेग, भगन्दर, नासूर, दाद, चम्वल, खुजली, पेचिश, सग्रहणी, यकृत, प्लीहा, हृदय धड़कन, अर्दित वात, आमवात, अर्धांग वात, पार्श्व शूल, निमोनिया, कण्ठमाला, श्वास-कास, मिर्गी, हैजा, हिस्टीरिया, प्रमेह, शुक्र, घी दूध का हजम न होना, आतशिक, साप, विच्छू, कुत्ते का विष अन्दर रह गया हो जिससे कोई न कोई बीमारी सताती रहे तो इसको खाने से विष का प्रभाव जाता रहता है।

×इसे हिन्दी, मराठी, सिंधी, पंजावी भाषाओ मे सकमूनिया तथा तेलगू व तामिल भाषा में मामूदा कहते है।

:: पृष्ठ ६५ का शेषांश ::

हम ४ वर्षों से इसका प्रयोग करा रहे है। ६८ प्रतिशत सफलता मिली है।

उक्त तीनो योग स्वानुभूत-स्वकल्पित हैं, पाठक भी इनका प्रयोग करे और फल की सूचना लेखक को लिख भेजें ताकि "स्टेस्टेटिक्स" बना कर उन्हे आयुर्वेद के यश की वृद्धि के लिए प्रस्तुत किया जासके।

गण्डमाला पर वनस्पति——

निम्न वनस्पति का अनुभव हमने तो नहीं किया है किन्तु ग्वालियर की एक वृद्धा (अवैद्य) इसका प्र योग करती थी। जो वनस्पति को वताती नहीं थी। एक स्वयं स्वस्थ हुए रोगी ने वताया था। इस वनस्पति का नाम ग्वालियरप्र देश में 'रछेरहटा' 'छेरहटा' है। वासनवेल या जलजमनी नाम से भी इसे पुकारा जाता है। इसे घिसकर गण्डमाला पर लेप लगाया तथा ६ माशे से १ तोला तक की मात्रा मे खिलाया जाता है।

—गण्डमाला यदि पकी न हो तो पीने के लिए दे और शोथ बैठाने के लिए इसका लेप लगावे। यदि पक गई हो या अपची मे परिवर्तित होगई हो तो लेप लगाना और खिलाना दोनो ही करने चाहिए, जब तक वे भर न जावे, लगभग १ माह तक।

आयुर्वेदाचार्य पं. कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी B. A.

६११ राइट टाउन, जबलपुर ।

पिता का नाम— स्वर्गीय पं. गनपतप्रसाद जी त्रिवेदी
आयु–६८ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री त्रिवेदी जी की परिमार्जित लेखनी द्वारा चुने हुए लेखो से धन्वन्तरि के पाठक भली भांति परिचित है धन्वन्तरि पर आपकी सदैव स्नेह दृष्टि रही है और आप पत्र के पुराने स्थाई लेखको मे से हैं। अंग्रेजी अध्ययन के बाद आपने आयुर्वेद पढा और आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त की। ऐसे उभय ज्ञान विशिष्ट विद्वान् आयुर्वेद जगत मे थोडे ही हैं। आपने कई सारगर्भित पुस्तकें लिखी हैं। इस वृद्धावस्था मे भी जबकि आपकी दृष्टि कुछ दुर्बल होगई है कुछ न कुछ लिखते और पढ़ते रहते हैं। आप ब्रह्माण्ड घाट पर पिछले समय वानप्रस्थ आश्रम मे निवास करते थे। अब आप उस झंझट से भी मुक्त होकर (स्व० पत्नी जो ऋषि जीवन की सहधर्मिणी थी) आजकल अपने भाई के पास जबलपुर मे निवास करते है। गत ८-६ माह से आप विजयगढ मे ही रह कर एक विशाल ग्रंथ की रचना मे सलग्न है। हमारे आग्रह पर आपने अपने २ वनस्पतियो के प्रयोग दिए हैं। पाठक उनकी इस कृपा से लाभ उठायेंगे ऐसी आशा है।" —सम्पादक।

पाठकगण! मै गत कई वर्षो से वैद्यक चिकित्सा क्षेत्र से उपरत होकर, ईशकृपा से अध्यात्म-मार्ग मे अग्रसर होने का प्रयत्न कर रहा हूँ। शरीर जरा जीर्ण एवं अस्वस्थ दशा मे रहता है, तथापि मेरे परम सुहृद्, उदार प्रेमी वैद्यराज श्री देवीशरण गर्ग सम्पादक धन्वन्तरि के आग्रहवश, किसी प्रकार निम्न प्रयोगो को प्रकाशनार्थ भेज रहा हूँ। इन्हे ध्यानपूर्वक, नि.स्वार्थ भाव से कार्य रूप मे लाकर परीक्षा करे। आप अवश्य यशस्वी होंगे।

रक्तस्राव नाशक प्रयोग—

विशेपत रक्तार्श से पीड़ित रोगी जब असाध्य दशा मे पहुँच गया हो। डाक्टरी आदि सब प्रयोग व्यर्थ हो गये हो, ऐसी दशा मे—एक परिपक्व केले को, छिलका रहित कर (ऊपर का छिलका निकाल) उसमे २ से ४ रत्ती तक असली राई (बंगाली राई जो कृष्ण वर्ण की होती है, लाल वर्ण की नहीं लेना) का महीन चूर्ण अन्दर भरकर (रोगी को न मालूम होने पावे कि राई का चूर्ण भरा गया है) रोगी को पूर्ण श्रद्धा एवं लाभ की आशा दिलाते हुए सेवन करा देवे। तत्काल ही लाभ होगा। प्रात' साय इसी प्रकार १-१ केला केवल तीन दिन तक सेवन करावे।

पथ्य—पुराने चावलो की पतली खीचड़ी (मूंग की दाल की) मे त्रिफला चूर्ण ६ माशे तक मिलाकर खिलाना चाहिए।

नोट—एक योगीराज ने, जो स्वयं रक्तार्श से बहुत ही पीड़ित थे आपवीती हुई घटना का हाल सुनाते हुए, उक्त प्रयोग हमे बतलाया था। दैवयोग-से उसी समय एक वृद्ध रक्तार्श से पीड़ित रोगी वहां

आया। हमारे सामने ही यह प्रयोग उस पर किया गया। तत्काल लाभ तो नहीं हुआ, किंतु पश्चात् धीरे-धीरे लाभ अवश्य हुआ। यही प्रयोग मैंने अपने एक बम्बई निवासी एक शिष्य को बतलाया। उसने इसका प्रयोग कई रोगियों पर किया और मुझे सूचित किया कि इससे अधिकांश मे लाभ होता है। इनका पता—श्री रामकृष्ण चौधरी, २७६ डेरे विल्डिङ्ग, खाडिलकर रोड गिरगाव, बम्बई।

कृमिजन्य दन्त पीड़ा (डाढ़ दर्द)—

भंडारा जिला (मध्य प्रदेश) मे मेरा परिभ्रमण हो रहा था। वहां एक १६ वर्ष का लडका, डाढ दर्द की असह्य पीडा से बहुत ही त्रस्त था। कई प्रयोग किये गये, लाभ नहीं हुआ। समीप ही एक जंगली, गोंड़ की प्रसिद्धि थी कि वह कान मे किसी बूटी का रस डालता है, जिससे कीड़े निकलते है और डाढ़ दर्द बन्द हो जाता है। मैंने उस लड़के को उस गोंड के पास भेजा। उसने किसी बूटी की पत्तियो को हाथों ही से मसल कर जिस ओर दर्द था, उसी ओर के कान में रस को निचोड कर डाल दिया। थोडी ही देर मे कान से महीन श्वेत वर्ण के कीड़े निकले। दर्द मे कमी हो गई। फिर दूसरे दिन इसी प्रकार रस कान मे डाला गया, और भी कीडे निकले, तथा पीड़ा बिल्कुल बन्द हो गई।

मैंने कौतुहलवश उक्त बूटी की लुगदी जो उस गोंड ने जमीन पर फेंक दी थी, उठा ली। निरीक्षण कर, तत्काल पहचान लिया कि वह "सरफोंका" है। इसे संस्कृत मे शरपुंखा, कंठपुंखा; मरेठी मे उन्‍ बंगला मे वननील कहते है। इसका क्षुप होत पत्ते नील पत्र के जैसे, फूल लाल वर्ण के ब होते हैं। यह प्रायः सर्वत्र प्रचलित बूटी है। फूल वाला भी सरफोंका होता है, जिसक प्रायः जमीन पर फैला हुआ होता है। पत्ते अ प्रकार मे लाल सरफोंका जैसे ही किंतु छोटे होते इन दोनों मे भी छोटी-छोटी फलियां लगती जिन पर रूआं सा होता है। किन्तु श्वेत पुष्प की फलियो पर रूआं नहीं होता। प्रस्तुत प्रस लाल पुष्प वाला ही लेना चाहिये। यह बहुताय सर्वत्र सुलभ है। इसमें कई गुणों के साथ दंत नाशक गुण भी पाया जाता है।

मैंने उक्त प्रयोग को स्थानीय वैद्यो को बतल उन्होंने अपने कई रोगियों पर प्रयोग करके म कहा कि इससे अवश्य ही लाभ होता है। कान मे रस के टपकने के साथ ही, उसकी लुगदी रोगी की डाढ़ों के नीचे दबाने के लिए द चाहिए, तो और भी उत्तम लाभ होता है।

देखिये उक्त दोनों प्रयोग कितने सरल वगैर दाम के अनमोल है। किन्तु दुर्भाग्य है आधुनिक पाश्चात्य चाकचिक्य के कारण लोगं श्रद्धा ऐसे सरलातिसरल प्रयोगो पर नही जम तथा वे इतस्ततः भटकते हुये अपने स्वास्थ्य और अर्थ की व्यर्थ बरबादी करते हैं। यह स की बलिहारी है।

:: पृष्ठ ७० का शेषांश ::

उसे १ मास या ४० दिन तक प्रातः सायं १-१ वटी जल से रजःप्रवर्तिनी वटी (शास्त्रीय) देते रहे है।

मुक्ताभस्म भी (धनवानों के लिये) ऐसा ही लाभ करता है। इस विधि से कई स्त्रियो ने प्राप्त किया है।

नोट—प्रयोग सब उत्तम है। दोष, दूष्य, काल, देश प्रभृति का विचार करना चिकित्सक कार्य है।

श्री पं० गिरिजादत्त पाठक शास्त्री

साहित्यायुर्वेदाचार्य, कविरत्न, विद्या विनोद, साहित्य भूषण,
श्री. कालिकेश्वर औषधालय, बक्सर (आरा)
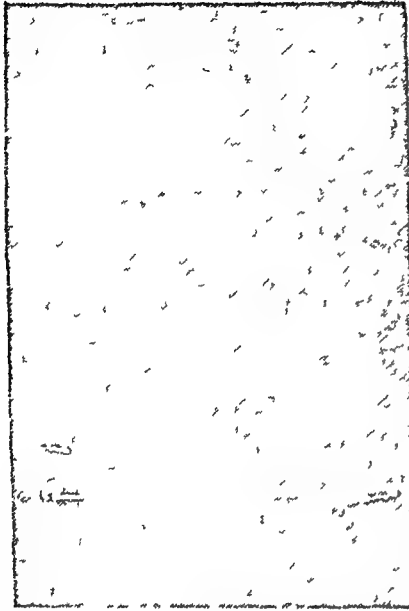
पिता का नाम— श्री पं० रामसफल जी पाठक

आयु—५६ वर्ष जाति—शाकद्वीप ब्राह्मण

"आयुर्वेद के महान विद्वान् श्री पाठक जी का परिचय धन्वन्तरि परिवार को भली भांति ज्ञात है। आपने अभी आयुर्वेद विश्वविद्यालय झांसी से आयुर्वेद वाचस्पति की उपाधि प्राप्त की है तथा उसके सदस्य भी है। नि० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन तथा शकरदा शास्त्री पदे स्मारक समिति के पहिले से ही सदस्य हैं। सम्प्रति आप स्थानीय एस के बी. सस्कृत विद्यालय के आयुर्वेद विभाग मे प्रधानाध्यापक के पद पर है। हम यहा आपके अनुभव पूर्ण २ प्रयोग प्रेषित कर रहे हैं, पाठक इन प्रयोगो को कार्य मे लाकर यश के भागी बनेंगे, ऐसी आशा है।" —सम्पादक।

कोष्ठ बद्ध—

५-७ छोटी हर्रें (जौगी) भोजन से बाद तुरन्त निगलने लायक टुकड़ा करके पानी के साथ निगल जावे, दोनों समय भोजन के बाद, तो कोष्ठबद्धता नहीं होती है। दांत से चबाकर न खावे। निगल जावे। दन्तस्पर्श का निषेध है।

भोजन के पूर्व एवं पश्चात् अन्दाज से सैंधव नमक मिला घी १ या २ तोला, ५ ग्रास अन्न के साथ खाकर बाद में इसी प्रकार ५ ग्रास पुनः घी नमक के साथ खावे। इससे उदरस्थ वात शान्त होकर सुगमता से मल निःसरण होता है। धैर्य से दोनों प्रयोगों को लगातार कुछ मास सेवन करें और विशेष लाभ देखे।

प्रतिश्याय पर—

प्रतिश्याय जब सूख गया हो, कफ निकलने मे कष्ट होता हो, कोष्ठबद्ध हो, मन्दाग्नि, ज्वरांश के साथ हो, उस समय दोनों समय—

घी	२ तोला
हरदी	६ माशा
अदरक	१ तोला
गुड़	२ तोला

—को पकाकर गर्म गर्म सेवन करे, एक घन्टे तक जल न पीवे, कफ निकलने लगेगा, प्रतिश्याय पक जावेगी। २-४ दिन मे पथ्यपूर्वक रहने से लाभ हो जायगा।

जिन स्त्रियों को गर्भपात होता था। प्रसव के बाद भी सन्तान मर जाती थी, ऋतुविकार था, उदरस्थ वायु प्रधान थी उन्हे हमने लगातार ८-६ मास घी मिश्री के साथ मुक्ताशुक्ति भस्म या पिष्टी २-२ रत्ती खिलाकर सन्तान सुख का अनुभव कराया है। हां, ऋतुविकार जिसमे आर्तव बन्द हो जाता था

—शेषांश पृष्ठ ६६ पर।

श्री कविराज एल. वी. गुरु

A. M. S., M. A.

लेक्चरर—काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

"श्री कविराज जी का पूरा नाम है—कविराज लक्ष्मीशंकर विश्वनाथ गुरु। आप अत्यन्त सरल हृदय, अध्ययनशील एव प्रतिभावान युवक है। आपकी लेखनी का रसास्वादन पाठक धन्वन्तरि विष-चिकित्सांक मे कर चुके है। आपने अपने चिकित्साकाल मे सफल सिद्ध होने वाले कतिपय प्रयोगो मे से दो प्रयोग धन्वन्तरि के पाठको के समक्ष प्रस्तुत किये हैं जिसके लिए हम आभारी है।"

—सम्पादक।

श्वित्रनाशक योग—

वाकुची	१० तोला
गेरू	१। तोला
चक्रमर्द वीज	५ तोला

—इनको खरल कर चूर्ण वनावे और भृङ्गराज स्वरस की तीन भावना देकर ३-३ रत्ती की गोलियां वनाले। ऐसी १ गोली प्रातः और एक सांय प्रतिदिन घिसकर श्वित्र पर लगावे। इस तरह चिकित्सा करने पर एक वर्ष मे प्राय. $\frac{3}{4}$ रोग नष्ट हो जाता है। जो रोगी ल्युडमील तथा मेलेन्डीन की चिकित्सा से त्रस्त होजाते हैं उनसे यह फायदा पहुँचाता है।

रसायन प्रयोग—

अभ्रकभस्म ५०० पुटी कस्तूरी अम्वर
प्रवालपिष्टी मुक्तापिष्टी मकरध्वज
—प्रत्येक १॥-१॥ माशा

स्वर्ण भस्म	४ रत्ती
अजवाईन चूर्ण	११॥ माशा

—इन सवको अलग अलग खरल कर चूर्ण वना लिया जाय तथा मिश्रित कर पुन खरल करे और २१ मात्राओ मे विभाजित करले।

व्यवहार विधि—रसायन सेवन प्रारम्भ करने से पहले १ तोला अमलतास के गूदे का क्वाथ बनाकर पिया जाय जिससे पाचन संस्थान की कुछ शुद्धि हो जाय। इसके पश्चात् प्रतिदिन प्रातः शौच मुख-मार्जन से निवृत होकर १ माशा चूर्ण कर १ पाव या आधा सेर दूध के साथ सेवन करे और शक्ति के अनुसार वायु सेवन के निमित्त भ्रमण करने निकल जायें। भोजन मे घी मे बनी आलू की तरकारी और अजवायन मिले हुए आटे की पूड़ियां खावे और दूध पीए। इस प्रकार से २१ दिन तक रसायन सेवन करे तथा उसके पश्चात् भी ११ दिन तक भोजन का क्रम यही रखे, खटाई पूर्णतया वर्जित है।

यह रसायन केवल शीतऋतु मे ही सेवन करना चाहिए तथा ४० वर्ष की अवस्था के पश्चात् ही सेवन कराना चाहिए।

गुण—यह रसायन शारीरिक, मानसिक दुर्वलता को तथा जरा जन्य विकारों को दूर करता है। नवीन शक्ति, उत्साह, कान्ति, स्मृति, स्फुर्ति एवं आयु को प्रदान करता है। अति उत्तम अनुभूत योग है।

कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार

सुपरिन्टेण्डेण्ट—आयुर्वेदिक फार्मेसी हिन्दू विश्व विद्यालय, काशी।
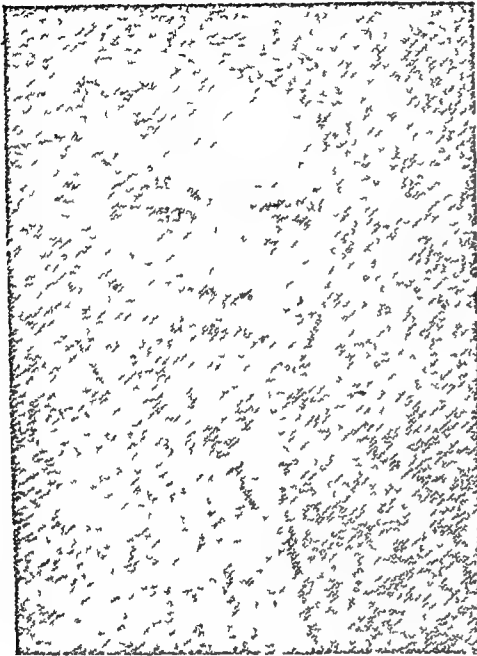
"श्री अत्रिदेव जी एक अतीव सरल, कर्तव्यपरायण व्यक्ति हैं। आप हिन्दू यूनीवर्सिटी मे आयुर्वेदिक फार्मेसी के अध्यक्ष हैं। इसके पूर्व गुरुकुल कागडी मे अध्यापक रहे है। ब्रह्मप्रदेश मे लगभग १२ वर्ष तक चिकित्सा कार्य कर चुके है। गुरुकुल कागडी से विद्यालकार जैसी उच्च उपाधि प्राप्त की है। निखिल भारत-वर्षीय आयुर्वेद महामण्डल बीकानेर एव भारतीय विद्या भवन बम्बई से ससम्मान स्वर्ण पदक प्राप्त कर चुके है।

सतत अध्ययन एव उसे लिपिबद्ध करना आपके जीवन का प्रधान कर्त्तव्य रहा है। बृहत्त्रयी का भाषानुवाद कर आपने आयुर्वेद विद्यार्थियो एव हिन्दी जगत का महान उपकार किया है। आपकी स्व-रचित पुस्तकें है—न्याय वैद्य और विषतन्त्र, स्त्री-शिक्षा, शिशुपालन, क्लीनीकल मैडीसिन, सस्कार विधि विमर्श, स्त्रियो का स्वास्थ्य और रोग, स्वास्थ्य और सद्वृत्त, भारतीय रस पद्धति आदि।

आपकी सम्मति में आयुर्वेद-शास्त्र-विचार करने से चिकित्सक सभी रोगो के सफल प्रयोग प्राप्त कर सकते हैं। शास्त्रो के पन्ने पलटो, उन-पर विचार करो, सभी कुछ वहा मिलेगा और इसी आधार पर आपको जो अनुभव हुए हैं उस अनुभव सागर की कतिपय बू दे धन्वन्तरि के पाठको के समक्ष प्रेषित हैं।" —सम्पादक।

इन्फ्लुएञ्जा (फ्लु) की बीमारी के लिए—

रोगी को प्रात मध्याह्न और सायंकाल मे कफ चिन्तामणि, अदरक स्वरस और मधु के साथ २ रत्ती की मात्रा मे दे दें। यदि कफ चिन्तामणि प्राप्य न हो तो लाल गुडा दे। लाल गुडा के दो पाठ हैं, इसमे जो पाठ उपादेय है, वह निम्न है—

रससिंदूर		८ तोला
नीमछाल		१ तोला
चिरायता	श्वेत सरसो	भार्गी (भारगी)
मुस्ता (मोथा)	बहेड़ा	तेजपात
वच	रक्तचन्दन	सुहागे की खील
पिप्पली		कूठ

—प्रत्येक १-१ तोला

—कुछ वैद्य तेजपत्र के स्थान पर हिंगुल १ तोला लेते है (मै भी हिंगुल ही वरतता हूँ)। इनको बारीक करके मिलाना चाहिए।

अनुपान—सामान्यत. तुलसीपत्र रस या अद्रक रस और मधु टाइफाइड या उच्चज्वर मे उत्तम है। इसको दिन मे तीन बार दे। दो दिन देने से ही लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र रोग में—

शतावरी	कुशमूल	काशमूल
सरालकन्द रस	ईक्षुमूल	शालिमूल
केशू		

—प्रत्येक सम भाग

—इनका क्वाथ मधु, चीनी, दोनो को मिलाकर देने मे अच्छा लाभ होता है।

चन्द्रप्रभावटी प्रदर या वीर्य सम्बन्धी रोगां मे मधु, चीनी और घी के साथ अन्य सब अनुपानों की अपेक्षा अच्छा लाभ करती है।

हृदयरोग पर—

हृदय रोग के लिए विशेपतः मेद वृद्धि के कारण जब हृदय पर दवाव, निष्क्रियता आती है, और हृदय मे मेद संचित होने से मृत्यु की सम्भावना होती है, उस समय मेद तथा अन्य कारणों से हृदय पर दवाव होने लगे तव यह औषधि उपयोगी है—

स्वर्ण	हीरक	वैक्रान्त
वंग	अभ्रक	पारद
गन्धक	—प्रत्येक समान भाग	
लौह		—सबके बराबर

—इसको अर्जुन छाल और जौ के क्वाथ से पृथक्-पृथक् सात वार भावना दे। पीछे से घृतकुमारी रस की तीन बार भावना दे। भावना के पीछे इसे पिण्डाकार वना कर अर्जुन के पत्रो मे लपेट कर धान्य राशि मे ३ रात तक रखे। पीछे २ रत्ती की गोली वनावे।

अनुपान—अर्जुन की छाल का क्वाथ, जौ का क्वाथ अथवा घृत के साथ दे।

नोट—हीरे की भस्म न मिलने पर वैक्रान्त की भस्म दुगनी डाल देनी चाहिए।

गुण—हृदय रोग के लिए यह औषध लाभप्रद है।

प्रमेह व शुक्रतारल्य पर—

प्रमेह (शुक्रतरलता या स्वप्नदोष) मे सामान्यतः वङ्गभस्म को उत्तम माना जाता है, परन्तु नागभस्म कई वार अच्छा प्रभाव करती है। इसके दो रूप हैं–

(क) सीसकभस्म और शिलाजीत समान मात्रा मे लेकर ३ रत्ती मात्रा मे गोली बनाये।

(ख) सीसकभस्म अभ्रकभस्म और शिलाजीत प्रत्येक सम भाग लेकर ३ रत्ती की गोली बनाकर दूध या मधु के साथ लेना चाहिए। आवले का रस और मधु उत्तम है। सीसक भस्म के स्थान पर वङ्गभस्म भी बरत सकते है।

योगों का प्रभाव—

"प्रभाव अचिन्त्य है, अर्थात् औषधों में जो कुछ दोष-हरण शक्ति एवं रोग-हरण शक्ति की विचित्र शक्ति है, उसका पता रस वीर्य विपाकादि से नहीं लगता, इसलिए और एक अचिन्त्य शक्ति की कल्पना करना आवश्यक होता है, जिसका नाम प्रभाव है। इस प्रभाव के सामने 'क्यो और कैसे' यह प्रश्न नही चलता। इसीलिए अनुभूत योगो मे जो कुछ अद्भुत और अचिन्त्य शक्ति का परिचय मिलता है सो प्रधानतः प्रभावजन्य समझना चाहिए। इस बात पर वैद्य लोगों का विश्वास दृढ़ है क्योंकि वे लोग नित्य ऐसे प्रभाव सम्पन्न वनौषधियों का प्रयोग करके चमत्कारी फल देखते और दिखलाते हैं। डाक्टर लोग प्रायः प्रभाव पर विश्वास नहीं करते हैं। ये लोग सभी औषधियों की क्रियाओ में हेतु का अन्वेषण करते हैं। ऐसा अन्वेषण ज्ञान की दृष्टि से अच्छा है परन्तु आर्षज्ञान के विचार से सर्वत्र फलप्रद नहीं है।

—श्री गणनाथसेन सरस्वती।

श्री पं॰ ताराशंकर मिश्र आयुर्वेदाचार्य

प्रधानाचार्य—अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय, काशी ।
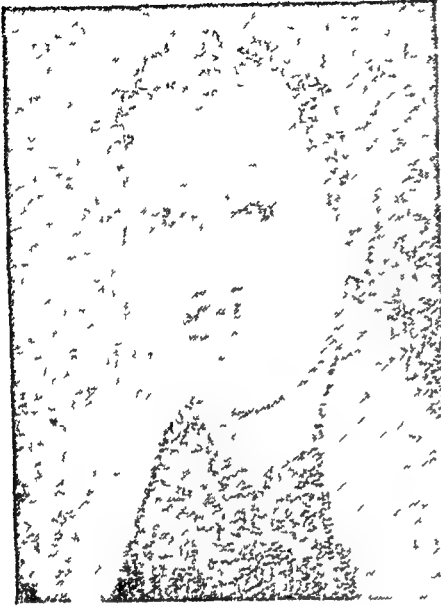
पिता का नाम— श्री पं॰ संकठा मिश्र

"धन्वन्तरि परिवार के सुपरिचित लेखक और सम्पादक हैं आपने अपनी विद्वत्ता से पूर्ण धन्वन्तरि के विष-चिकित्साक एव चिकित्सा समन्वयाक का सम्पादन किया। उत्तर प्रदेश इण्डियन मैडीसन बोर्ड के सदस्य हैं। अध्यापन के साथ साथ आप एक उच्चकोटि के चिकित्सक हैं। आयुर्वेद साहित्य वृद्धि मे तथा उसके प्रचार प्रसार मे अत्यन्त प्रयत्नशील रहते हैं। आपने सर्व प्रथम रेडियो से आयुर्वेद विषयक व्याख्यान प्रसारित किये। आप सदैव से ही प्रतिभावान छात्र, कार्यकर्ता एव नेता रहे हैं। स्थानीय चिकित्सकों मे आप अत्यन्त जनप्रिय हैं। आयुर्वेद के लिए सदा सच्चा प्रतिनिधित्व करने मे तत्पर एव गौरव का अनुभव करते हैं। आपके कुछ योग जो अत्यन्त अनुभवी हैं यहां प्रेषित कर रहे हैं।" —सम्पादक ।

उदरस्थ कृमि के लिए—

कम्पिल्ल (कबीला) चूर्ण	२ रत्ती
विडङ्ग चूर्ण	१ माशा
*क्रिमि घातनी वटी	२ रत्ती

—योग १ मात्रा ।
सहपान—तुलसी की २५ पत्ती का स्वरस ।
अनुपान—२ घूंट उष्ण जल ।

इस प्रकार प्रतिदिन प्रात. दोपहर सायं और रात को दें। द्वितीय दिवस से ही रोग के लक्षण या उपद्रव घटने लग जांयगे। १५-२० दिन प्रयोग कराइये। उदर के समस्त क्रिमि बाहर आ जायेंगे। आवश्यकता पड़ने पर १ माह प्रयोग करा सकते हैं। रोगी की निद्रावस्था में, शौच के साथ और या अन्यान्य प्रकार से क्रिमि निकल ही जाते है। यह योग सर्व प्रकार से निरापद है। उपर्युक्त मात्रा १० वर्ष से ऊपर की वय वालों के लिये है। इससे कम पर मात्रा कम कर दीजिये। यह स्मरणीय है कि अधिक मात्रा वमन करा देती है। इसलिए उपर्युक्त क्रम से धैर्यपूर्वक क्रिमि निकाल डाले। इस रोग मे अधिक उतावलेपन की आवश्यकता नहीं। इस योग से आमाशय, पक्वाशय और मलाशय के क्रिमि तो निकल ही जाते है कोष्ठ के अन्य अंगो अथवा समस्त शरीर के क्रिमि या जीवाणु अधिक दिनो तक प्रयोग करने से नष्ट हो जाते है।

रक्तप्रदर के लिए—

आप शास्त्रानुसार रक्तप्रदर के लिए चाहे जो

* कृमि घातिनी वटी—(भैषज्य रत्नावली कृमिरोगाधिकार) सोमराजी (कालीजीरी), हल्दी, पिप्पली, कमीला, गेरु, निसोत, हरड़ और ढाक के बीजो के चूर्ण को समभाग मे मिश्रित कर जल से ४ रत्ती की वटी बनावें। यह जी मिचलाना, शिथिलता, शोथ, शूल, क्षवथु, प्रतिश्याय, अरुचि, ज्वर, कृशता, वमन, मलबन्ध तथा बीसो प्रकार के कृमियो को नष्ट करती है। मात्रा २ माशा पर्यन्त ।

औषधि देते हों अवश्य दीजिये। हमारी प्रार्थना से उसका अनुपान तण्डुलीयक (वन चौराई) की जड़ का रस एक मात्रा में २ तोला कर देने की कृपा करें। ऐसी मात्रा दिन रात में आवश्यकतानुसार ५-६ बार चल सकती है। ४ बार तो अवश्य चलाइये। बिना किसी औषधि के स्वतन्त्र रूप से भी यह काम करती है।

श्वेत प्रदर के लिए—

इस रोग के लिए भी आप जो उचित समझें करते रहें। परन्तु हमारे अनुरोध पर स्फटिका घोल (फिटकरी ४ माशा जल १० तोला में घोलकर बनाये) से रुग्ण की योनि का प्रक्षालन पिचकारी द्वारा अवश्य करायें। उपर्युक्त मात्रा एक बार के लिए है। ऐसा दिन में २-३ बार करें, तुरन्त लाभ होगा। १०-१२ दिन तक कराते रहें।

मोच के लिये—

जिस मोच में हड्डी यथा स्थान हो और त्वचा विदीर्ण न हो गयी हो उसमें नालुका' का चूर्ण गरम-गरम जल में मिलाकर सहता हुआ लेप करें। स्मरण रक्खें ठण्डा होने से अथवा पतला होने से कम काम करता है। रोटी बनाने के लिए सने हुए आटे के समान यह लेप होना चाहिए, इसके ऊपर रुई, न मिलने पर कपड़ा सटा दें। दिन रात दो बार लगायें। दर्द को तुरन्त कम कर देगा। बाद में शोथ को भी कम कर देगा। टांसिल की सूजन पर बाहर गले में टांसिल पर ही लेप लगाने से, अपेण्डिसाइटस (उपान्त्र प्रदाह) पर लेप करने से, पापाणगर्दभ (मम्स) और व्रण शोथ पर लेप करने से यह अनुपम लाभ करता है।

यह तज या दालचीनी की जाति के वृक्ष की छाल है। वैसी सुगन्ध भी इसमें आती है। मोटी मोटी छाल ही लेनी चाहिए। तज के समान पतली छाल लेप करने से छाला डाल देती है और कष्ट बढ़ जाता है। अधिकांश व्यापारी इसे मोटा तज ही कहते हैं। आधी अंगुल या चौथाई अंगुल मोटी छाल ही लीजिए। हम तो केवल "रामभरोसे माताप्रसाद गोला दीनानाथ वाराणसी" के यहां से मंगाते हैं। वहां के श्री सियाराम इसकी विशेष पहचान रखते हैं। वाराणसी के हिन्दू सेवासदन और बिरला अस्पताल में इसका बहुत अधिक व्यवहार होता है। कुछ बंगाली कविराज भी इसका व्यवहार करते हैं। आप भी इसका व्यवहार करें और अनुपम लाभ उठायें। एक बार पहचान लेने पर कठिनाई न होगी। १) या १॥) प्रति सेर की यह चीज़ बड़ी लाभदायी है। बाजार में मोटा तज के साथ भी इसकी छाल आ जाती है। बाल वाले स्थान पर बाल हटाकर लेप करें।

:: पृष्ठ ७७ का शेषांश ::

क्षीर (डंडा थोहर के दूध) के साथ तीन दिन खरल करें। जब भली प्रकार सूख जाय तो इसे मिट्टी के प्याले में डालकर दूसरे प्याले से सन्धि सम्पुट करके जौहर उडालें। ज्ञात रहे कि मन्दाग्नि पर १२ घण्टे में जौहर उड़कर ऊपर वाले प्याले में लग जाता है। यदि पूरा जौहर न उड़े तो पुनः सम्पुट को बन्द कर शेष जौहर उडालें। कालिमा लिये हुए पीत वर्ण का जौहर निकलता है।

मात्रा—२ चावल से ४ चावल गौघृत २॥ तोला से ५ तोला तक के साथ दिन में एक बार।

गुण—इस महौषधि के एक सप्ताह सेवन से ही नासूर और भगन्दर जड से नष्ट होते हैं। यदि किसी पुराने और बढ़े हुए रोग में कुछ कसर रह जाय तो एक सप्ताह और सेवन करा सकते हैं। इस औषधि के सेवन काल में लवण बहुत कम खाना चाहिए और केवल गौघृत ही भोजन के साथ व्यवहार करना चाहिए।

श्री वैद्य कृष्णदयाल जी शास्त्री

प्रताप आयुर्वेदिक फार्मेसी; छहरटा, (अमृतसर)।

पिता का नाम— श्री० लाला रामलाल जी
आयु—७४ वर्ष जाति—आर्य

"आप अमृतसर के ही नहीं पजाब के ख्यातनामा वैद्यो मे से हैं। अनेक धनी रोगियो से आपने उपाधिया, प्रशंसापत्र एव स्वर्णपदक प्राप्त किये हैं। एक उच्च वैद्य के सिवाय आप विद्वान् साहित्यिक एव लेखक हैं। हिन्दी उर्दू तथा संस्कृत के विद्वान हैं। उर्दू भाषा मे आपने आयुर्वेद के कई विशाल ग्रन्थ निर्माण किये हैं जिनमे ७५०० पृष्ठ का मखजन तथा 'रसायन शास्त्र' 'वैदिक निघण्टु' 'जेबी वैद्य' आसव-प्रकाश' मुख्य हैं। हिन्दी मे आपका कृष्णानुभुत मजूषा के कई संस्करण हो चुके है। आयुर्वेद मे साहित्य सेवा के साथ आपने प्रताप फार्मेसी लि की स्थापना करके विशुद्ध औषधियो के निर्माण हेतु भी सक्रिय सेवा की है। आयुर्वेद के प्रति आपकी अनेक ठोस सेवायें हैं। अनेक सस्थाओ के आप अध्यक्ष-मंत्री व सदस्य रहे है। आपके प्रयोग जो हमारे आग्रह पर ही आपने प्रेषित किये हैं यहां देरहे हैं उन्हे वैद्य महानुभाव अवश्य व्यवहार करें।"

—सम्पादक।

अर्श रोग नाशक औषधि—

हरड का वक्कुल वहेड़े का वक्कुल
आवला —प्रत्येक ५-५ तोला

—इन तीनों का उत्तम चूर्ण वनाले, फिर इस चूर्ण में निम्न वनस्पतियों का स्वरस निकाल कर इस प्रमाण मे डालें कि सारा चूर्ण डूव जाय और धूप मे रखदें। जव रस सूखने पर आवे तो और डाल दे। इस प्रकार १५ दिन तक रस डालते रहे फिर रस सूख जाने पर चूर्ण को पीस लें और इस चूर्ण मे निम्न औपधियों का चूर्ण मिलावें।

—वनस्पतियां जिनका रस उपरोक्त चूर्ण मे डाला जायगा—

कुकरौंदा पितपापड़ा
सत्यानासी (स्वर्णक्षीरी) अतिवला

वे औषधियां जिनका चूर्ण मिलाना होगा:—

वायविडङ्ग ५ तोला
नीम के वीज का मगज १० तोला
चाकसू सफेद जीरा सनाय पत्ती
शुद्ध गधक —प्रत्येक ५-५ तोला

—सव चूर्ण मिलाकर १० तोला गौघृत से तर करे, इसके पश्चात् सारे चूर्ण का वजन करे और सव के वरावर वजन शुद्ध असली रसाञ्जन (रसौत) मिलावे और मूली के स्वरस के साथ २१ दिन खरल करे अथवा सर्व औषधियां से दस गुणा मूली स्वरस मिलाकर मन्दाग्नि पर पकाकर ४ रत्ती प्रमाण की गोली वनावे।

मात्रा—प्रात साय १ से २ गोली तक गौदूध के साथ सेवन करें।

गुण—४० दिन निरन्तर सेवन से सर्व प्रकार का अर्श सदा के लिये निर्मूल हो जाता है, शतशः अनुभविक है।

श्वेतकुष्ठ (फुलवहरी) की अचूक औषधि—

जङ्गली अंजीर (काकोदम्बर) पंजाबी में जिसको फगवाडा या फगूडा कहते हैं, इस की जड़ की छाल	आधा सेर
गौदुग्ध	३ सेर ५
वावची	५ तोला
पनवाड वीज	५ तोला
[illegible]	५ ।।

—वावची और पनवाड़ दोनों को कूट लें और फगूडा की जड की छाल को भी यवकुट कर सबको दूध मे मिला दें और दूध को चूल्हे पर चढ़ाकर औटालें और फिर इसे दही का जामन लगाकर जमा दें। प्रातः इसको विलो कर मक्खन निकाल ले, यह मक्खन श्वेतकुष्ठी के दागों पर लगाया करे और जो छाछ वने उसमें ५ तोला प्रति दिन छलनी से छानकर पीलिया करे। यह छाछ थोड़े दिनों में खट्टी हो जाती है, यहां तक कि गर्मियों के मौसम मे कुछ दिन पश्चात् इसमें कृमि भी पड़ जाया करते हैं ऐसी दशा में भी छान कर पीते रहना चाहिए। एक ही सप्ताह के सेवन से फुलवहरी के दागों पर लाल रंग आने लगेगा। किसी किसी रोगी के फुन्सियां भी निकला करती हैं, यह रोग-मुक्ति के शुभ लक्षण हैं, औषधि समाप्त होने पर पुन वनाले और निरन्तर व्यवहार करते रहें। जव रोग मुक्त हो तो किसी त्यागी ब्राह्मण को गौ दान दे, इस औषधि के व्यवहार से दो ही सप्ताह के भीतर फुलवहरी के दागों पर त्वचा के छोटे-छोटे विन्दु पडने लगते हैं। और वह धीरे-धीरे वड़े होते जाते हैं और आपस मे मिलकर त्वचा का असली रंग हो जाता है।

पुराने सुजाक और आतशक की अनुभूत औषधि—

रीठे का छिलका	५ तोला
उत्तम शुद्ध कत्था	२।। तोला
कलमी शोरा	१। तोला
शुद्ध तुत्थ (नीलाथोथा)	६ माशा

—सबको कूट-पीसकर जल से खरल करके ४ रत्ती प्रमाण गोली वनावे

मात्रा—प्रातः सायं एक-एक गोली जल के साथ सेवन करावे।

गुण—चाहे कितना ही पुराना आतशक व सुजाक हो इस महौषधि के २१ दिन सेवन से सदा के लिये नष्ट हो जाता है।

रक्त प्रदर के लिये महौषधि—

उत्तम लौह चूर्ण २० तोला किसी चीनी के पात्र मे डालकर इस पर मीठे अनार का रस १ सेर डाल दे और छाया मे सुरक्षित स्थान पर रखे। दिन मे दो तीन बार लोहे की कड़छी से हिलाते रहे। जब अनार का रस सूखने पर आये तो और डाल दें इसी प्रकार तीन चार बार रस डालने से लौह की वारितर भस्म हो जायगी। फिर इसको भली प्रकार खरल करके शीशी में रखे।

मात्रा—४ रत्ती प्रातः साय सेव के मुरब्बे के साथ दे।

गुण—जो रक्त प्रदर किसी भी औषधि से न जाता हो इसके दो सप्ताह सेवन से सदा के लिये नष्ट हो जाता है।

नासूर व भगन्दर के लिये रसायनामृत—

उत्तम हड़ताल वर्किया	२।। तोला
भिलावे	२१ नग

—पहले शुद्ध हड़ताल को खरल करे, इसके पश्चात् भिलावो को कूटकर इसमे मिलादें और स्नुही-

—शेषांश पृष्ठ ७५ पर।

कविराज आचार्य श्री गयाप्रसाद शास्त्री

साहित्याचार्य आयुर्वेद बृहस्पति, भिषग्रत्न, मुरलीधर बाग, हैदराबाद (दक्षिण)
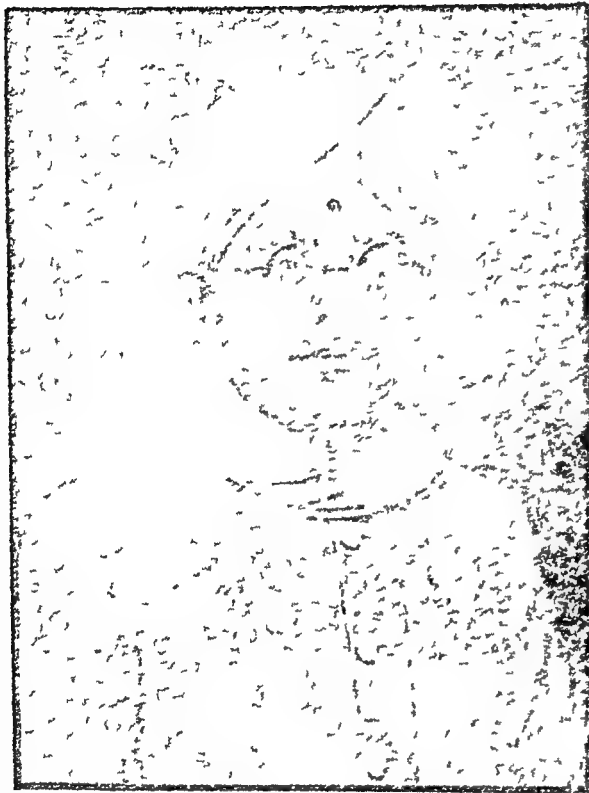
"आचार्य श्रीगयाप्रसाद जी शास्त्री का जन्म विक्रम सम्वत १९५१ में अपने नाना के स्थान पर हुआ। आपका पितृ स्थान खैराबाद (सीतापुर) है। आपकी आरम्भिक शिक्षा खैराबाद, सीतापुर तथा लखीमपुर मे हुई। उच्च शिक्षा काशी में। व्याकरण, न्याय, दर्शनशास्त्र, साहित्य, ज्योतिष तथा आयुर्वेद का गम्भीर अध्ययन आपने तत्कालीन लब्ध-प्रतिष्ठ गुरुजनो से किया। शिक्षा समाप्ति के अनन्तर २ वर्ष तक डी ए वी कालेज, देहरादून मे हिन्दी तथा सस्कृत के प्राध्यापक, ७ वर्ष तक गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी (हरिद्वार) मे विभिन्न विषयो के प्राध्यापक और लगभग २ वर्ष आप हिन्दी विद्यापीठ, प्रयाग के प्रधानाचार्य (Principal) के पद पर सम्मानपूर्वक कार्य करते रहे। सन् १९२८ से १९३४ तक आपने लखनऊ मे स्वतत्र चिकित्सा कार्य किया। सन् १९३५ से आपने हैदराबाद (दक्षिण) को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। "हैदराबाद राज्य आयुर्वेद महामण्डल" के आप कितने ही वर्षों तक अध्यक्ष रहे। इस समय उक्त सस्था के आप प्रधानमन्त्री तथा "आयुर्वेद विज्ञान परिषद" के अध्यक्ष हैं। इस समय आन्ध्र प्रदेश सरकार के "इण्डियन मेडिसिन बोर्ड" के आप सक्रिय तथा सम्मानित सदस्य हैं। आप "हिन्दी प्रचार सभा" के शिक्षा मन्त्री तथा "हिन्दी एकाडमी हैदराबाद" के कोषाध्यक्ष हैं। चिकित्सा कार्य के अतिरिक्त आप उस्मानिया विश्व विद्यालय से सम्बन्धित विवेक वर्धिनी कालेज, ए'यू कालेज तथा हैदराबाद इवनिंग कालेज इन तीनो डिग्री कालेजो मे हिन्दी के लेक्चरर हैं। आप उच्च श्रेणी के कवि, लेखक, पत्रकार तथा चिकित्सक है।" —सम्पादक।

मन्थर ज्वर—

शुद्ध हिंगुल	लवङ्ग	जायफल
अभ्रकभस्म (सहस्रपुटी)		मुक्तापिष्टी
जावित्री		केसर

—प्रत्येक १-१ तोला

विधि—शुद्ध हिंगुल को पके हुए अनार के दानो के स्वरस में २१ बार घोटकर सुखाना। अनन्तर अदरक के स्वरस की २१ भावनाएं देकर हिंगुल को सुखा लेना। लौंग, जायफल, जावित्री इन द्रव्यों को कूट-पीस छान कर पृथक् चूर्ण बना कर रखना। केशर को पृथक् खरल करके सूक्ष्म चूर्ण बनाना। समस्त वस्तुओ के सूक्ष्म चूर्ण को १०० पान के पत्तों के स्वरस से भलीभांति खरल करके बाजरा के दाने के बराबर गोलियां बना कर सुखा लेना।

मात्रा—छोटे बच्चो को १ गोली, प्रौढ़ लोगो को २ गोली।

अनुपान—पान स्वरस २ माशा से ४ माशा तक।

समय—प्रातः सायं। अधिक से अधिक २४ घण्टे या दिन रात में ३ बार।

विशेष—विधिपूर्वक तैयार किए जाने एवं प्रयुक्त होने पर यह योग मन्थर ज्वर में अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुआ है। औषधि की मात्रा अत्यल्प होने के कारण १ से २ रत्ती तक मुक्ताशुक्तिभस्म या शृङ्ग भस्म को आधार बना कर औषधि दी जा सकती है।

हृदरोग नाशिनी वटी—

पूर्णचन्द्रोदय स्वर्णभस्म मुक्तापिष्टी
प्रवालपिष्टी रजतभस्म अकीकभस्म
संगेयशवभस्म शृङ्गभस्म
—समान भाग १-१ तोला

विधि—खरल में डाल कर समस्त वस्तुओं को भलीभांति खरल कर लेना। अनन्तर अर्जुनवृक्ष की अन्तस्त्वक् (अन्दर की छाल) के ८ तोला स्वरस या क्वाथ में भलीभांति खरल करना और रात्रि में खरल को स्वच्छ उज्ज्वल सूक्ष्म वस्त्रखण्ड से ढंक कर चांदनी में रख देना। इस प्रकार तीन दिन करना। अनन्तर—

शुद्ध कपूर १ तोला अम्बर ३ माशा

—इन दोनों द्रव्यों को पृथक्-पृथक् भलीभांति खरल करके तथा सूक्ष्म चूर्ण बनाकर पूर्वोक्त भावित योग में मिलाना और पुनः भलीभांति खरल करना। औषधि द्रव्यों के एक जीव होजाने पर साफ शीशी में भर कर रख लेना। यदि गोली बनाना अभीष्ट हो तो गुलाब अर्क में खरल करके १-१ रत्ती की गोलियां बना लेना।

मात्रा—१ रत्ती।

अनुपान—शहद, गोदुग्ध या जल।

समय—प्रातः सायं या दिन में तीन बार।

रोग—सभी प्रकार के हृदय रोग, हृतकम्पन आदि।

विशेष—उपर्युक्त औषध १ रत्ती से २ रत्ती तक मधु के साथ देने पर तमक श्वास में भी लाभकारी सिद्ध हुई है।

बालक्षय हर—

मधुमालिनीवसन्त (रसतन्त्रसारोक्त)
प्रवालपिष्टी शृंग भस्म अकीकभस्म
जहरमोहरा खताई की भस्म गाण्डूरभस्म

—सभी औषधें समभाग १-१ तोला लेकर संजीवनी अर्क या गुलाब के अर्क में भलीभांति खरल करके और सुखा कर रख लेना चाहिए।

मात्रा—आधी रत्ती से एक रत्ती तक।

अनुपान—१ मास से १ वर्ष तक के शिशु को माता के दूध या गौदुग्ध के साथ, अनन्तर शुद्ध शहद के साथ।

समय—प्रातः सायं या दिन में तीन बार।

रोग—बालशोष, बालक्षय, कास-श्वास, रक्ताल्पलता तथा दुर्बलता।

लोहरसायन—

शतपुटी लोहभस्म	५ तोला
विशुद्ध संस्कारित पारद	५ तोला
गूलर का दूध	१० तोला

—गूलर के दूध में लोह तथा पारद को भलीभांति खरल करके १-१ तोला की १० चक्रिकाएं (टिकिया) बनाना एवं सूर्यताप में सुखाना। शराब सम्पुट विधि से इन टिकियों को सम्पुटित करके वन्य उपलों या गोबर के कण्डों द्वारा गजपुट की अग्नि में परिपाकित करना। इसी प्रकार ३ बार गूलर के दूध में टिकिया बना-बना कर गजपुट की अग्नि देना। स्वाङ्ग शीतल होने पर सम्पुट खोल कर भस्म को निकालना और पीस-छान कर साफ शीशी में रखना।

योग नम्बर १

पूर्वोक्त सिद्ध लोह भस्म	१ तोला
स्वर्णभस्म	१ तोला

मुक्ताभस्म	१ तोला
प्रवालभस्म	२ तोला

विधि—समस्त भस्मों को खरल में डाल कर गुलाब के अर्क में भलीभांति खरल करके १-१ रत्ती की गोलियां बनाना।

मात्रा—१ गोली।

अनुपान—शहद या गोदुग्ध।

समय—प्रात. साय तथा रात्रि में सोते समय।

रोग—रक्ताल्पता सर्वाङ्गीण दुर्वलता, वलीपलित, अकाल वृद्धता।

विशेप—यह योग अत्यन्त लाभकारी है। कम से कम ४० दिन और अधिक से अधिक ८० दिन तक नियमपूर्वक इस औपधि का सेवन करना चाहिए। औपध सेवन काल में दूध, घी, मक्खन और फलों का सेवन अत्यन्त हितकर है।

योग नम्बर २—

सिद्ध लोहभस्म	१ तोला
शुद्ध हिंगुल या रससिंदूर	१ तोला
मुक्ताशुक्तिभस्म	१ तोला
वंगभस्म	१ तोला
नागभस्म	२ तोला

विधि—समस्त औषधि द्रव्यों को खरल में डाल कर ३ भावनाऐं गुलाव के अर्क की देना और सूख जाने पर पीस छान कर साफ शीशी में भरकर रखना।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक।

अनुपान—शहद।

समय—प्रात सायं।

रोग—रक्त की कमी, दुर्वलता, वीर्यदोप तथा पुरुषत्वहीनता।

○ हिंगुलरसायन—

शुद्धहिंगुल की टिकिया		५ तोला
गोघृत	शहद	मिलावा
	—तीनों १०-१० तोला	
खुरासानी अजवायन		४० तोला

विधि – मिलावा और खुरासानी अजवायन इन द्रव्यों को लोहे के इमाम दस्ता में डालकर और कूट कर मोटा चूर्ण वनाना। अनन्तर इस चूर्ण को सावधानी के साथ खरल में डाल कर एवं गोघृत और शहद मिलाकर कल्क वनाना। चौडे मुख की हाडी के तलभाग में आधा कल्क रख कर उसके ऊपर ५ तोला हिंगुल की टिकिया को भलीभांति ढक देना। अनन्तर हांडी के मुख पर समानाकार की एक परिया रखकर कपड़-मिट्टी की विधि से हांडी के मुख को वन्द कर देना। इस हाडी को चूल्हे पर चढ़ा कर लगातार ३ घण्टे तक मन्दाग्नि द्वारा हिंगुल को पकाना। हांडी के स्वांग शीतल होजाने पर हिंगुल की टिकिया को सावधानी के साथ निकाल और पीस छान कर साफ शीशी में भर लेना।

मात्रा—आधी से २ रत्ती तक आयु तथा रोग के वलावल के अनुसार।

अनुपान—मधु, मक्खन या रोगानुसार।

समय—प्रातः सायं या अहोरात्रि में तीन वार।

रोग - मन्दाग्नि, दुर्वलता, संग्रहणी तथा पुरुषत्व हीनता आदि।

विशेप—यह एक दिव्य औपधि है। वृद्ध वैद्य अनुपान भेद से अनेक रोगों में इसका सफल प्रयोग करते हैं।

श्रीमती डा. इन्दिरा देवी शास्त्री आयुर्वेदमणि

अध्यक्षा—नारी आरोग्य मन्दिर, मुरलीधर बाग, हैदराबाद (दक्षिण)

"आप आचार्य श्री गयाप्रसाद जी शास्त्री की धर्म-पत्नी हैं। प्राचीन परम्परा के अनुसार आपकी सम्पूर्ण शिक्षा-दीक्षा पितृगृह तथा पतिगृह मे ही हुई। आप सस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी तथा गुजराती भाषा मे अच्छी योग्यता रखती है। कई प्रसिद्ध सस्थाओ की परीक्षिका है। आप एक चिकित्सिका होने के साथ हिन्दी की कवयित्री तथा लेखिका हैं। विगत १८ वर्षों से आप लखनऊ से हैदराबाद आई है। "नारी आरोग्य मन्दिर" के सचालन का सम्पूर्ण भार आप पर है। आतिथ्य सत्कार, मधुरभाषण तथा रोगियो के साथ अत्यन्त स्नेहपूर्ण मृदुबर्ताव के लिए आपकी विशेष ख्याति है। आप एक कुशल चिकित्सका तथा आदर्श नारी है।"

—सम्पादक।

नारीसंजीवन चूर्ण नं० १—

शतावरी, असगन्ध नागोरी, पठानी लोध, सफेद विधारा, समुद्रसोख, माजूफल, मोचरस, कमरकस, कतीरा गोंद, चुन्नीगोंद
—प्रत्येक ५-५ तोला

मिश्री या शक्कर ५० तोला

विधि—समस्त औषधो को कूट-पीस छानकर सूक्ष्म चूर्ण बना लेना चाहिए। मिश्री या शक्कर को भी पीस छानकर उक्त चूर्ण मे हाथ से मसलकर एक जी न करना। औषध को साफ शीशी मे भर कर रख लेना।

मात्रा—२ माशा से ४ माशा तक।

अनुपान—गोदुग्ध या जल।

समय—प्रातः सायं दिन मे दो बार।

रोग—सभी प्रकार के प्रदर, दुर्बलता।

नारीसंजीवन चूर्ण नं० २—

पठानी लोध, शतावरी, अनार के फूल, छोंकर की मांई, रूमीमस्तगी, धाय के फूल, कत्था, सफेद माजूफल, अनारफल के छिलके (भुना), कहरवा, वंशलोचन, राल सफेद, मोचरस, सेलखरी, सोनागेरू, शुद्ध फिटकरी
—प्रत्येक २।।-२।। तोला

शुद्ध हिंगुल — मोती की सीप की भस्म
त्रिवंग भस्म — सगजराहत की भस्म
—चारों २॥-२॥ तोला

विधि—शुद्ध फिटकरी पर्यन्त १६ औषधों को कूट पीस छानकर सूक्ष्म चूर्ण बनाना। इसी चूर्ण में खरल किया हुआ शु० हिंगुल तथा शेष भस्मादि को मिलाकर एवं खरल मे डालकर एक जीव करना। अनन्तर मिश्री या शक्कर (पिसी-छनी) मिलाकर शीशी में रखना।

मात्रा—१॥ माशा से ३ माशा तक।
अनुपान—मधु, गोदुग्ध या ताजा जल।
समय—प्रात' सायं या रात्रि मे सोते समय।
रोग—रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर, रक्ताल्पता तथा दुर्बलता।

नारी संजीवनी वटी—

शतावरी — सफेद मुसली — कालीमुसली
मुलहठी — मोचरस
अमृतासत्व (गिलोय का सत) — वंशलोचन
शुद्ध सोना गेरू — सफेद राल
कहरवा — —प्रत्येक १-१ तोला
प्रवाल भस्म — स्वर्णमाक्षिक भस्म
नागभस्म — त्रिवंगभस्म
लोहभस्म — —पांचों २-२ तोला

विधि—काष्टादि औषधों तथा अन्य द्रव्यों को कूट पीस छानकर सूक्ष्म चूर्ण बना लेना। उक्त चूर्ण तथा भस्मादि को खरल में डालकर एक जीव करना। अनन्तर पके हुए अनारदानों के रस तथा आंवलों के स्वरस की तीन-तीन भावनाऐं देकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लेना। साफ शीशी मे भर कर रखना।

मात्रा—१ गोली से २ गोली तक।
अनुपान—गोलियो को पीस कर शहद के साथ अथवा गोदुग्ध या जल के साथ।
समय—प्रात' सायं या रात्रि मे सोते समय।
रोग—रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर, सोमरोग, कटिपीडा, अंगमर्द, दुर्बलता।

पुत्रदा वटी—

एलुआ	५ तोला
मोचरस	५ तोला
केसर मोगरा	२॥ तोला
हींग अंगूरी (घी में भुनी)	१॥ तोला
लोहभस्म उत्तम	१ तोला
स्वर्णमाक्षिक भस्म	६ माशा

विधि—आरम्भ की तीनों औषधो को कूट-पीस छानकर सूक्ष्म चूर्ण बनाना। हींग तथा केसर दोनों द्रव्यों को पृथक्-पृथक् खरल करना। अनन्तर सभी चूर्णों तथा भस्मादि को खरल मे डालकर गुलाब के अर्क मे भली भांति खरल करना। अत्यन्त सूक्ष्म पिष्टि बन जाने पर २-२ रत्ती की गोलिया बनाकर छाया मे सुखा लेना।

मात्रा—१ गोली से २ गोली तक।
अनुपान—गोदुग्ध या गोली को पीसकर शुद्ध शहद के साथ।
समय—प्रातः साय या रात्रि मे सोते समय।
रोग—ऋतुदोष, ऋतुदोष के कारण सन्तान का अभाव, गर्भकोष की दुष्टि, कमर, पीठ तथा पेडू का दर्द दूर होता है।

योपापस्मारनाशिनी वटी—

शुद्धि कुचिला — मल्लसिंदूर — केसर
—प्रत्येक १-१ तोला
कस्तूरी — १ माशा

विधि—उपर्युक्त द्रव्यों के सूक्ष्म चूर्ण को खरल मे डालकर पके पान के स्वरस मे भलीभाति २-३ दिन खरल करना। सूक्ष्म तथा स्निग्ध पिष्टि बन जाने पर १-१ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया मे सुखा लेना।

मात्रा—१ गोली।
अनुपान—गोदुग्ध या शीतल जल।

समय-प्रात. सायं या रात्रि में सोते समय।

रोग—योपापस्मार (हिस्टेरिया) दुर्बलता तथा हृत्कम्पन।

विशेष—वात-पित्तप्रधान रोगिणियों को २ रत्ती मुक्ताशुक्ति भस्म या प्रवालपिष्टि को आधार-भूमि बनाकर एवं गोली को सूक्ष्म खरल करके शहद के साथ देना चाहिए। नारियों के अतिरिक्त पुरुषों के भ्रम, उन्माद, वातविकार तथा दुर्बलता आदि में भी ये गोलियां विभिन्न आधारभूमि तथा अनुपानों के साथ अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुई हैं।

सरस्वती वटी—

ब्राह्मी	शंखपुष्पी	मीठी वच
कूठ	जटामासी	मालकांगनी
कायफल	शुद्ध कुचिला	केसर
मुक्ताशुक्तिभस्म	अभ्रकभस्म	रससिंदूर

—प्रत्येक १-१ तोला

विधि—१ सेर सर्पगन्धा का जौकुट चूर्ण बनाकर ८ सेर पानी में २४ घंटे भिगोना। अनन्तर अग्नि पर चढ़ा कर २ सेर क्वाथ शेष रखना। क्वाथ के शीतल हो जाने पर मलकर मोटे कपड़े से छान लेना। इस छने हुए क्वाथ को कलई किये हुए साफ भगोने में पुन. चूल्हे पर चढाकर मन्दाग्नि द्वारा पकाना। पकते समय क्वाथ में ५ तोला गोघृत डाल देना चाहिए। क्वाथ जब पक कर लेई के समान गाढ़ा हो जाय तो पात्र को अग्नि से उतार कर भूमि पर रख देना चाहिए। पात्र की उष्णता से घनसत्व और भी गाढ़ा हो जायगा। पूर्णरूप से शीतल हो जाने पर इस सर्पगन्धा घनसत्व को पात्र से निकाल कर चौड़े मुख के ढक्कनदार किसी साफ शीशे की बरनी या पात्र में रख देना चाहिए।

काष्ठादि औषधों का सूक्ष्म चूर्ण, पिसी हुई केशर खरल किये हुए रसभस्मादि तथा सर्पगन्धा घनसत्व को किसी उत्तम खरल में डालकर गुलाब के अर्क से खूब घोटना चाहिए। उत्तम पिष्टि बन जाने पर २-२ रत्ती की गोलिया बनाकर छाया में सुखा लेना चाहिए।

मात्रा—१ गोली से २ गोली तक।

अनुपान—गोदुग्ध या शीतल जल।

समय-प्रात: सायं तथा रात्रि मे सोते समय-अहोरात्र ३ बार।

रोग—रक्त सम्भार (High blood pressure) उन्निद्र, उन्माद, अपस्मार, योपापस्मार (Hysteria) मूर्च्छा, भ्रम।

विशेष.—औषध सेवनकाल में सात्विक भोजन—गोदुग्ध, गोदधि, गोतक्र, गोघृत, ऋतुफलों का सेवन, सत्संग, गीता-रामायण आदि धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय तथा पवित्र आचार विचार रोग की निवृत्ति में अत्यन्त सहायक होते हैं।

आयुर्वेद विशारद पं. देवदत्त शर्मा वैद्य शास्त्री

म्युनिस्पिल कमिश्नर, पठानकोट (पंजाब)

"श्री शर्मा जी के पिता—स्वर्गीय पं सोहनलाल जी नाडी-विज्ञानाचार्य , आयुर्वेद केशरी, पीयूषपाणि चिकित्सक थे। पिता जी द्वारा संस्थापित श्री धनञ्जय आरोग्य भवन शकरगढ (गुरदासपुर) का कार्य आपने योग्यतापूर्वक सम्भाला। आप ऋषिकुल आयुर्वेद कालेज हरिद्वार के स्नातक हैं तथा स्वर्गीय गगाधर शास्त्री गुणे के प्रिय शिष्य। आयुर्वेद कालेज पठानकोट के प्रिंसीपल हैं। आप उच्च-कोटि के लेखक, अनुवादक तथा संशोधक हैं। आप जनप्रिय एव वयोवृद्ध चिकित्सक है फलस्वरूप गत धन्वन्तरि त्रयोदशी के अवसर पर स्थानीय वैद्य मण्डल ने मानपत्र भेंटकर आपको सम्मानित किया है। आपने अधिक योग न भेजते हुए अपनी सफल चिकित्सा का विशेष रत्न केवल एक प्रयोग तथा उसका विस्तृत गुणधर्म प्रेषित किया है। आपका लेखन अन्य लेखकों के लिये मार्गदर्शक होगा। प्रयोग के सभी पहलुओं पर विस्तार से लिखना पाठकों के लिए उपयोगी रहता है तथा वे उस प्रयोग से समुचित लाभ प्राप्त कर सकते हैं।" —सम्पादक।
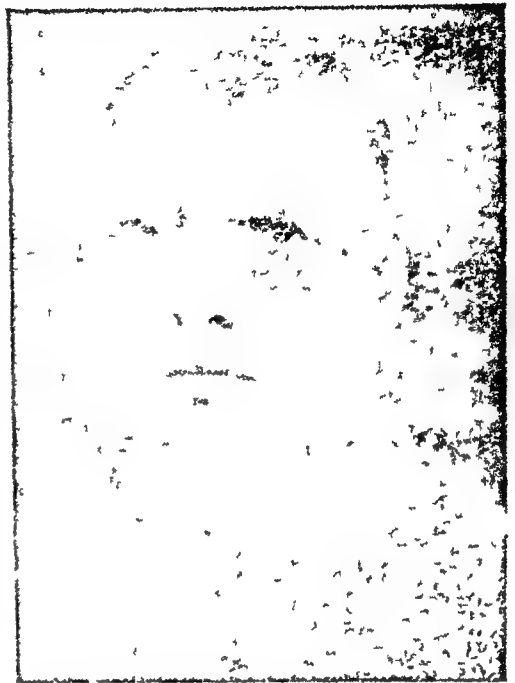
चतुर्भुज कल्प—

मैं स्वयं और मेरे पूर्वज वर्षों से 'चतुर्भुज-कल्प' को व्यवहार में लाकर पूर्ण लाभ उठाते रहे हैं, इसलिए आज इसी औषध के गुण धर्म पर कुछ अनुभव प्राप्त की चर्चा यहां करनी है। मैं चाहता हूँ कि मेरे समान धर्मी भी इससे अधिक से अधिक लाभ उठावें, इसी से संक्षेप में कुछ चर्चा इस कल्प पर की जाती है। इस कल्प के पीछे विस्तृत इतिहास है, गुण धर्म भी बहुत विस्तृत है, फिर यहां संक्षेप में इसलिए दे रहा हूँ कि पाठकों का इसकी ओर ध्यान हो। मेरे नियमित व्यवहार की औषधों में यह भी एक प्रधान अङ्ग है इसलिए भी मुझे आज इसी पर कुछ लिखना है। मूल योग इस प्रकार है—

चतुर्भुज-कल्प का प्रयोग

रस सिंदूर शुद्ध वर्किया हरिताल

मनशिल शुद्ध कस्तूरी नैपाली

—प्रत्येक ३-३ माशा

बढ़िया स्वर्णभस्म असली ८ रत्ती

विधि—प्रथम वर्किया हरिताल को पत्थर के खरल में डालकर इतना पीसे कि जिससे उसकी चमक दीखना बन्द हो जाय। अब इसमें मनशिल और रस सिंदूर मिलाकर तब तक घोटे जब तक इनके कण न मिट जावे। पीछे कस्तूरी और स्वर्णभस्म मिलाकर ६ घण्टे खूब खरल करें। अब खरल हुए पदार्थों में शुद्ध मीठा तेलिया (विष) ६ माशा मिलादे। विष मिलाने से पूर्व विष को किसी पत्थर के खरल में डालकर आर्द्रक स्वरस के साथ तब तक मर्दन करे जब तक फेनाभ न हो जावे, जब विष में घोटते हुए झाग उठने लगे तब समझ लीजिए कि अब विष मिलाने लायक

हो गया। विष मिलाकर जरा घोटें और फिर—

शृंगभस्म (बारहसिंगा भस्म) ८ तो.
प्रवाल पंचामृतरस १६ तो.

—और योग मे मिलादें। प्रवाल पंचामृतरस का योग इस प्रकार है—

प्रवाल भस्म शुक्ति भस्म कपर्दिकभस्म
शङ्ख भस्म मुक्ता भस्म —प्रत्येक १-१ तो.

—लेकर अर्क दूध मे पीस गोला बना सम्पुट कर गजपुट मे आग दें। ठंडा होने पर प्रवाल पचामृत रस निकाल लें। यही प्रवाल पचामृतरस इस चतुर्भुज रस के योग मे डाले। प्रवाल पचामृत रस मिलाने के बाद क्रमश—

तुलसी स्वरस, धत्तूरफलस्वरस, आर्द्रक स्वरस और कुमारी स्वरस की १-१ भावना देकर १-२ रत्ती की गोली बनाले।

मात्रा—एक गोली से ४ गोली तक उचित अनुपान से।

गुण—यह चतुर्भुज कल्प वातज्वर, विषमज्वर, कफज्वर, क्षय, श्वास, स्वरभेद, मूर्छा, तन्द्रा, निद्राभ्रम, आवृतवात, गलगण्ड, गलग्रह, श्लीपद, पाषाणगर्दभ, पीनस, सूतिका रोग, पारिगर्भिक रोग और बालग्रहो के लिए एक उत्तम महौषध है। विविध रोगो मे विविध अनुपानों के साथ इस औषध का निर्भय रूप से प्रयोग होता है। यह रसायन और वाजीकरण रूप से भी अपना कार्य उत्तम करती है।

चतुर्भुज-कल्प का व्यवहार प्राय. उपवास पूर्वक अवस्था मे ही होता है। पर कभी कभी रोगी बिना आहार के नही रह सकता, इसलिए इस अवस्था मे दूध चाय आदि देकर समय को पूर्ण किया जाता है। यदि रोगी- पूर्ण लवन के साथ इसका व्यवहार दिन मे ३-४ बार करे तो शीघ्र लाभ होता है।

इस रसायन मे वेदनाशामक, ज्वरघ्न और पाचक गुण है। इसलिए वात ज्वर, कफ ज्वर और द्वन्द्वज वात कफ ज्वर मे इसका व्यवहार होता है।

सर्वाङ्ग मे कफ, ज्वर वेग असमान, निद्रानाश, बार बार छींके, शरीर मे जकड़न, संधि-संधि मे वेदना, मस्तिष्क और कपाल मे दर्द, मुह मे बेस्वादता, मलावरोध, सम्पूर्ण शरीर मे भारीपन, हाथ पाव की शून्यता और टूटन, कानो मे शब्द, दांतों का भिचना, व्याकुलता, शुष्ककास, उबाक, किञ्चित् वमन, रोंगटे खड़े होना, तृषा, चक्कर, प्रलाप, बार बार जृम्भा, मूत्र का रंग पीला लाल या काला, उदर मे शूल और अफारा, असहनशीलता आदि वात प्रधान ज्वर के लक्षण दिखाई देने पर इस रसायन का मधु से व्यवहार कराना चाहिए। उष्णपेय के साथ भी यह रसायन दी जा सकती है।

इसी प्रकार ज्वर का वेग मन्द, अंगो मे जड़ता आलस्य, निद्रावृद्धि, अंगो मे अकड़ाहट, मुख से बार-बार जलस्राव, उबाक, वमन, उदर मे भारीपन, कास, अरुचि, बेचैनी, शरीर से वस्त्र उतरते ही शीत-बोध होना, नेत्रो के समक्ष अन्धकार मालूम होना, सूर्यताप, अग्निताप अच्छा मालूम होना आदि कफ प्रधान ज्वर के लक्षणो मे चतुर्भुज कल्प का मधु के साथ व्यवहार अवश्य करना चाहिए।

द्वन्द्वज कफ, वात ज्वर मे, जड़ता, गीलापन, मस्तिष्क जकड़ा हुआ और भारीपन अधिक मालूम होता है, जुकाम के समान नाक मे श्लेष्मा की उत्पत्ति अधिक होती है, हड्फूटन, तन्द्रा, कास, प्रस्वेद का अभाव, हाथ-पैर और नेत्रो मे दाह, भय, क्रोध और थकावट सी अधिक जान पड़ती है। इस प्रकार के वात कफ ज्वर मे चतुर्भुज-कल्प का मधु-उष्ण पेय से अवश्य व्यवहार करना चाहिये।

विषम ज्वरो मे उन्हीं औषधो का उपयोग होता है जो ज्वरघ्न और धातुगत दोषनाशक गुण

रखती हों। यह दोनों गुण 'चतुर्भुज-कल्प' में होने से संततज्वर—जिसमे ज्वर बना रहता है, सर्वाङ्गो मे जड़ता हो, मुंह से पानी आता हो, वमन, अरुचि, दाह, स्वल्प प्रलाप, तृषा, आक्षेप, शिरदर्द और चक्कर आदि लक्षण दिखाई देते हो। सततज्वर जो रोग आकर उतर जाता हो। एकाहिक, तृतीयक और चातुर्थिक इन सब प्रकार के विषम ज्वरो मे 'चतुर्भुज-कल्प सुदर्शन अर्क या तुलसी स्वरस अथवा हारसिंगार के रस से विचार पूर्वक व्यवहार कराना चाहिए। इस कल्प से धातुगत दोषों का नाश होने से विषम ज्वर शीघ्र ही विदा हो जाता है।

जन्तुघ्न और प्रतिविषोत्पादक गुणो के कारण स्वर्ण के विविध कल्पों का क्षय रोग मे उपयोग होता है। इसलिये स्थान-स्थान पर आयुर्वेद मे स्वर्ण कल्पो की चर्चा है। स्वर्णमिश्रित औषधो का प्रयोग तो क्षय रोग की सभी अवस्थाओ मे होता है। पर इसके लिए आयुर्वेद ने अवस्था, दोषदूष्य और स्थान आदि पर विचार के लिए खूब जोर दिया है। इसी से स्वर्ण के अनन्त प्रयोगों की कल्पना की गई है। अपने आयुर्वेद मे जो वेगरोध आदि कारण क्षय रोग के बताये हैं उनमें भी विचार से विविध स्वर्णयोगों का प्रयोग होता है। चतुर्भुज-कल्प का प्रयोग वेगरोधज राजयक्ष्मा में होता है। इस यक्ष्मा की प्रथम और द्वितीय अवस्था मे तो इस कल्प का अच्छा उपयोग होता है, पर तृतीय अवस्था मे जब बड़े-बड़े क्षत हो जावे, बल मास एक दम क्षीण हो गये हो, भयंकर शक्तिपात साथ-साथ चल रहा हो तब इस कल्प या स्वर्ण के अन्य कल्पो से कुछ भी लाभ नहीं होता। जब तक रोग निरोधक शक्ति का अधिक क्षय नहीं हुआ तभी तक चतुर्भुज कल्प का कार्य वेगरोधज राजयक्ष्मा मे होता है। जब निरोधक शक्ति का अधिक क्षय हो चुका हो तब इससे क्या किसी भी औषधि से कुछ लाभ नहीं होता। वेगरोधज राजयक्ष्मा की प्रथमावस्था में बहुधा सम्पूर्ण शरीर मे नाड़ियो का खिंचाव, शुष्ककास और मन्दज्वर आदि लक्षण देखने मे आते हैं। इस अवस्था की शंका होते ही चतुर्भुज कल्प प्रवाल मुक्ता अमृतासत्व और शृङ्ग मिलाकर अल्प मात्रा में दुग्ध या च्यवनप्राश से देना आरम्भ करना चाहिए। इसके कुछ दिन के व्यवहार से सब अरिष्ट अवश्य टल जायेंगे। पर इस अवस्था की ओर ध्यान बहुत कम रोगी और वैद्यों का होता है, इसलिए आरम्भ की इसी अवस्था से शान्ति नहीं मिलती। रोगी और वैद्यों का ध्यान तभी जाता है, जब ज्वर, कास बढ़ने लगते हैं और रोगी क्षीण होने लगता है। यह अवस्था तब और भी गुल खिलाती है जब शुष्कता और ज्वर अधिक, साथ ही साथ शुष्क कास, फुफ्फुस दूषित होने से श्वास और फुफ्फुस व्यथा आदि लक्षण दिखाई देने लगते है। तब वैद्य और रोगी दोनों की आंख खुलती है। वे चिंतित होते हैं और इधर-उधर दौड़ते है। घबराने की बात नहीं इस अवस्था मे भी यदि विश्वास पूर्वक दृढ़ता से स्वल्प मात्रा से चतुर्भुज-कल्प अमृतासत्व, शृङ्गभस्म, प्रवाल और अभ्रकभस्म मिलाकर दिया जाय तो निश्चय ही बहुत लाभ होता है। इसके बाद जो अवस्था आती है उसे क्षय रोग की तीसरी अवस्था कहना चाहिये। इस अवस्था के लिये विश्वस्त औषध कोई है यह हम नहीं कह सकते। हां, इतना अवश्य कह सकते है कि चतुर्भुज-कल्प बहुत अंशो मे तो इस अवस्था में लाभदायक है पर इससे पूर्ण सफलता प्राप्त होगी ऐसा विश्वास पूर्वक हम नहीं कह सकते। हमे इस विषय मे जो अनुभव है उसके सहारे तो हम कह सकते है कि इस अवस्था के लिये निश्चित रूप से कोई औषध नहीं है।

कीटाणुजन्य क्षय मे इस रसायन का कितना उपयोग होता है, यह तो अभी ठीक निर्णय नहीं हुआ पर इतना हम अवश्य कह सकते है कि कफ प्रधान दोषो से जब श्वासवाहिनियां रुद्ध हो तब कफ का स्राव शीघ्र ही कराने मे यह रसायन सहायक होकर रोगी को अवश्य लाभ पहुँचाती है।

कास और श्वास दोनो ही रोगों मे इस रसायन का व्यवहार होता है। पर यह ध्यान रखने

की बात है कि कास रोग के आरम्भ मे जब श्वास वाहिनियां क्षुभित हो और कास सर्वथा शुष्क बार-बार आती हो तब इस रसायन का उपयोग भूल कर भी न करना चाहिये। यदि कास की प्रथमावस्था मे ही इस रसायन का उपयोग होगा तो रोगी का कष्ट बहुत बढ़ जायगा। हा रोगी की दूसरी अवस्था मे जब क्षोभ न हो, श्वासवाहिनियो से पतला कफ स्राव अधिक हो, झाग युक्त सफेद थूक जैसा स्राव होता हो, मन्दज्वर साथ ही चलता हो, अग टूटते हो, देह भारी जान पड़ती हो, बैठने पर उठने की इच्छा न हो, उठा हो तो चलने की इच्छा न हो, मुंह मे बार-बार जल भर जाता हो, साथ ही मुंह बे-स्वाद जान पड़ता हो, खांसी के वेग के समय नाक और आंखों से जल स्राव सा बोध होता हो, इस प्रकार के अनेक लक्षण रहने पर इस रसायन का उपयोग करना चाहिये। इस रसायन से कफस्राव शीघ्र ही कम हो जाता है और सर्वाङ्ग में एक प्रकार की विशेष उत्तेजना का बोध होता है।

अपने आयुर्वेद मे महाश्वास, ऊर्ध्वश्वास, छिन्न श्वास, तमक और प्रतमक (संतमक) आदि की चर्चा है। इनमे किस प्रकार के श्वास पर, चतुर्भुजकल्प का व्यवहार होगा, यही एक विचारणीय विषय है। महाश्वास, ऊर्ध्वश्वास और छिन्नश्वास पर तो इस रसायन का कुछ भी उपयोग नहीं होता, पर इतना अवश्य है कि इन श्वासों मे भी श्वासयंत्र मे किसी भी कारण से (विशेषत. कफ प्रकोप के कारण से) श्वासोच्छ्वास क्रिया स्वल्प होने से नाड़ी मन्द होने, रोगी को शून्यताभास होने, जीभ भीतर खिंचने और रोगी को गाढ़ अन्धकार मे पड़ा भास होने आदि लक्षण उपस्थित होने पर श्वास यंत्रो को उत्तेजित करने का जो कार्य इस रसायन से सहज मे ही होता है वैसा कार्य अन्य बहुत कम औषधो से होता है। इस रसायन से श्वास मार्ग का नियमन होता है, वातवाहिनिया और सुषुम्नास्थितवातवाहिनियो के नियामक केन्द्रो पर उत्तम कार्य होने से श्वासोच्छ्वास उत्तेजित और नियमित बनता है, साथ ही साथ उसके प्रतिबन्ध दूर हो जाते हैं। इस रसायन मे वत्सनाभ अवसादक गुण वाला है सही पर शोधित वत्सनाभ मे अवसादकपन नाश होने से वह अपना अवसाधक प्रभाव दर्शित नहीं करता।

तमक और प्रतमकश्वास व्याधि की जीर्णावस्था मे जब कफ बहुत हो तभी इस रसायन का उपयोग होता है। नव्यावस्था मे इस रसायन का कुछ भी कार्य नहीं होता देने से उल्टी हानि होती है। यही इसके प्रयोग मे ध्यान रखने की खास बात है। तमक और प्रतमक श्वास मे जब कफ बहुत आरहा हो इसका प्रयोग कराइए। जीर्ण से जीर्ण रोगो मे भी अद्भुत लाभ शीघ्र दिखाई देगा। जब तमक और प्रतमक श्वास के कारण निर्बल रोगी को श्वास का वेग अधिक हो, श्वसनेन्द्रियां आगे थकती जाती हो, कफस्राव बहुत हो और उससे भी थकावट आती जाती हो, साथ ही कफ किसी विशेष स्थान मे अवरुद्ध हो, रोगी व्याकुल हो उसे श्वास लेने और छोडने मे बडा कष्ट मालूम होता हो कण्ठ और छाती मे धड-धड़ की आवाज आती हो और श्वास वेग तीव्र रहने पर भी प्राणवायु की योग्य पूर्ति प्राप्त न होती हो इन अवस्थाओं मे इस रसायन से तत्काल उत्तेजना आकर कफ स्राव नियमित बनता है जिससे स्वल्प मे ही लाभ होने से रोगी शान्त और निद्रावस्था मे चला जाता है।

तमकश्वास मे मधु पिप्पली साधित दुग्ध के साथ इस रसायन का २ रत्ती से ६ रत्ती तक प्रात' और सायं काल मे व्यवहार कराना चाहिए। रोग भयानक होने पर बहुत ही स्वल्प चौथाई से १ रत्ती तक दिन रात्रि मे कई बार मधु से देना चाहिए।

स्वरभेद (आवाज बैठ जाना) स्वरवहा नाड़ियो की अशक्तता से उत्पन्न होता है। इसमे बोलने की शक्ति कम होजाती है। रोगी बोलना चाहता है, पर बोलने के समय बोलने वाली स्नायुओं की शक्ति कम रहने से वह स्पष्ट उच्च स्वर से बोल नहीं सकता। उसका भाषण सुनाई नहीं देता। समीप का मनुष्य

भी उसे आसानी से सुन नहीं सकता। शब्द मुह के अन्दर ही अन्दर रहता है। यह कष्टदायक रोग महीनो नहीं कभी-कभी वर्षों तक चला करता है। इस रोग के विविध कारण और रूप हैं। विविध रोगों के उपद्रव रूप में भी यह रोग देखा जाता है। कुछ रोगी ऐसे भी होते है जो बोलना ही नहीं चाहते, ऐसे रोगियों के लिए तो यशदभस्म बहुत उत्तम महौषधि है, पर जिन रोगियों को फेफडो की अशक्ति के कारण स्वरभग (स्वरसाद) हुआ हो। जिसमे उदरस्थ कफ की विकृति हो और फुफ्फुस में विविध तीव्र चिरकारी विकार हो इस प्रकार के स्वरभङ्ग मे चतुर्मुज कल्प २ से ६ रत्ती प्रात. और स्वप्नकाल मे मधु से देना चाहिए।

प्रधानता से चतुर्मुजकल्प का व्यवहार कफज और मेदज स्वरभेद पर ही होता है, पर फुफ्फुस को शक्तिदायक होने से फुफ्फुस विकारजन्य स्वरभेद पर भी इसका सफलता से व्यवहार होता है।

मेदज रोगी बहुत मोटे होते हैं। इस प्रकार के मनुष्यों का शरीर भी डील-डौल मे बड़ा और बहुत मोटा होता है। स्थूल शरीर के मेदज रोगियो मे स्वरभेद अवश्य ही देखने मे आता है। इस प्रकार के रोगियों के स्वरभेद के लिए चतुर्मुजकल्प उत्तम महौषधि है।

मूर्च्छा, तन्द्रा, निद्रा, भ्रम—

इन रोगों का परस्पर बहुत संबंध है। मूर्छा प्राय. रक्तसंचय और रक्त के दबाव बढ़ने से ही होती है, इसलिए रक्त के दबाव को कम करने वाली औषधो का मूर्छा मे अधिक प्रयोग होता है। मूर्छा विकार मे पित्त का अनुबन्ध विशेष होता है, इसलिए पित्त-शामक चिकित्सा की जाती है। पर हमारा अनुभव है कि यदि पित्तशामक औषधो से पित्तविरेचक औषधि दी जावे तो बहुत उत्तम कार्य देखने मे आता है। रक्त का दबाव कम करने लिए आरोग्य-वर्धिनी और चन्द्रप्रभावटी के समान औषध दी जाती है पर जहा मूर्छा विकार मे कफ का अनुबन्ध हो वहा उन औषधो से कुछ भी लाभ नहीं होता। वहां यदि मलावरोध हो तो अश्वकंचुकी (घोडाचोली) और यदि मलावरोध न हो तो १ से २ माशा चतुर्मुजकल्प का मधु से बार-बार प्रयोग कराना चाहिए। चतुर्मुजकल्प का चूर्ण कर इसकी नस्य का भी जरूरत अधिक रहने पर मूर्छा मे अधिक प्रयोग कराना चाहिए।

शास्त्रों ने अर्धोन्मीलित नेत्रो को तन्द्रा संज्ञा दी है। तन्द्रा के लिए सूतशेखर, उन्मादगजकेशरी, स्वच्छन्दभैरव और स्मृतिसागर जैसी औषध उत्तम समझी जाती हैं, पर हमारा अनुभव यह है कि यदि तन्द्रा मे कफ का अनुबन्ध हो तो चतुर्मुजकल्प १ से २ माशा तक मधु से बार-बार प्रयोग कराना चाहिए।

निद्रा तमोगुण की अधिकता से आती है, चतु-र्मुजकल्प तमोगुण का नाशक है, इससे अधिक निद्रा या स्वभाव से अधिक आलस्य मे इसका अवश्य प्रयोग कराना चाहिए।

आयुर्वेद मे आवृत वातों की विचित्र रूप से कल्पना है। इस प्रकार की कल्पना अन्य किसी भी चिकित्सा पद्धति मे नहीं है। प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान से कफ या पित्त का आवरण। रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र मे वात का आवरण। अन्न मूत्र मल मे वात का आवरण और प्राण में अपान का, समान मे व्यान का, उदान मे प्राण का, व्यान मे अपान का आदि-आदि विविध आवरणों की चर्चा है। इन आवृत वातो मे कफ से आवृत उदान के रहने पर चतुर्मुजकल्प ४ से ६ रत्ती तक मधु से उदानकाल (साय भोजन के अंत मे) केवल एक बार देना चाहिए। एक ही बार की दी हुई पुडिया २–४ मात्रा मे ही अद्भुत लाभ दिखायेगी।

गलगण्ड—

यह मेद और कफ की वृद्धि से होता है। इस रोग मे गला फूलता है, उसमे शोथ जान पडती है। वास्तव मे यह एक ग्रन्थियो का विकार है, जिसे गलीय देशो मे अधिकता से देखा जा सकता है।

कफज और मेदज दोनों प्रकार की इस रोग की विविध अवस्थाओं में चतुर्मुजकल्प का व्यवहार होता है। इस रोग मे अधोभक्तअवस्था मे दो बार मध से व्यवहार कराना चाहिए। यदि वातज गलगंड हो तो घृत-मधु-दूध से चतुर्मुजकल्प देना चाहिए। वातज गलगण्ड पर भी इस रसायन का बहुत उत्तम कार्य होते देखा गया है। नवीन और जीर्ण दोनों ही गलगड की अवस्थाओ मे इसका प्रयोग होता है। स्थूल प्रकृति के रोगियो को ही यह रसायन अनुकूल बैठती है, इसलिए उन्हीं पर इसका प्रयोग करना चाहिए।

श्लीपद अधिक जलयुक्त बंगाल, कोचीन, मालाबार आदि प्रदेशो मे और अधिक शीतल-सील वाले स्थानो मे रहने वाले मनुष्यो को होता है। जब जलमय स्थान से दुर्गन्ध उत्पन्न होती है तब वहां के वासियो का त्वचागत कफदोष विकृत होता है, यही दोप रोग का कारण माना गया है। आज-कल नव्य विज्ञान वाले फाइलेरिया (Filaria) नामक कीटाणु इस रोग की उत्पत्ति मानते हैं। प्रधानता से यह रोग पैरो में ही देखा जाता है इसीलिए इसे हाथीपगा भी कहते हैं। पर सच बात तो यह है कि पैरो से भिन्न यह रोग वृषण, लिंग, हस्त आदि मे भी देखा जाता है। रोग के आरम्भ मे हाथ-पैर, कान की पाली, नेत्र पलक शिश्न, ओष्ठ और नाक आदि शरीर के किसी भी स्थान की त्वचा मोटी विषम और रुक्ष हो जाती है। त्वचा के नीचे की संयोजक कला स्थूल हो जाती है और उसमे लसीका का संग्रह हो जाता है। तभी मन्द ज्वर होता है और शोथ कष्टदायक रूप धारण करता है।

श्लीपद रोग के लिए जिन औषधो का प्रयोग होता है वह तो बहुत हैं पर हमारा अनुभव है कि यदि इस रोग की कफप्रधान चिकित्सा विधिपूर्वक समझ से बहुत दिन की जावे तो अवश्य इस रोग का अन्त हो जाता है। इधर पंजाब मे तो यह रोग सर्वथा होता ही नहीं इसलिए चिकित्सा के लिए विशेष अवसर नहीं आया। अपने जीवन मे जो ३-४ रोगी वातजश्लीपद के हमे मिले उन पर दो बार अन्तराभक्त अवस्था मे श्लीपदारि काथ के साथ २ से ६ रत्ती तक चतुर्मुज कल्प का हमने व्यवहार किया। बहुत दिन के व्यवहार मे हमे इस रोग मे पूर्ण सफलता मिली। हमे विश्वास है अन्य बन्धु भी समय-समय पर हमारे सत्य की पुष्टि करेंगे।

क्षुद्र रोगो मे एक रोग पाषाणगर्दभ कहा गया है। यह रोग क्वचित ही देखने मे आता है, पर जिन रोगियों को यह रोग होता है वही इसकी यातना को जानते है। आयुर्वेदशास्त्र मे इस रोग के विषय मे इस प्रकार कहा गया है—

> "वातश्लेष्म समुद्भूत. श्वयथुर्हनुसन्धिजः।
> स्थिरो मन्दरुज. स्निग्धो ज्ञेयः पाषाणगर्दभ.॥"

हमने इस रोग मे चतुर्भुजकल्प दिन मे अंतराभक्ता अवस्था मे २ से ३ रत्ती तक घृत शर्करा से प्रयोग करा कर अद्भुत लाभ उठाया है।

गले के विकारो मे "गलग्रह" भी एक बहु-व्यापक रोग है। इसके लिए यदि अंतराभक्ता अवस्था मे दिन मे तीन बार चतुर्मुजकल्प ३ से ६ रत्ती तक मधु शर्करा से दिया जाय तो शीघ्र से शीघ्र 'गलग्रह रोग' मे लाभ होता है।

पीनस रोग भी इस समय देशव्यापी रोग हो रहा है। जहा जाइये अवश्य इस के रोगी आपको मिलेंगे। इस रोग के लिए चतुर्मुजकल्प ३ से ६ रत्ती घृत क्षीर से दिन मे दो बार आद्याभक्त अवस्था मे देने से कुछ दिनो मे ही अद्भुत लाभ दिखाई देता है और रोग की जड़ स्थाई रूप से कट जाती है।

आयुर्वेद मे प्रसूता के अनन्तर होने वाले ज्वर, कोष्ठ शूल, शीर्षशूल, ग्रहणी, पाण्डु, वातविकार आदि सभी प्रकार के रोगो की गणना (जब तक प्रसूता अपनी पहली अवस्था के रूप में न जावे तब तक) प्रसूत विकारों मे दी है, पर इसी के साथ साथ—

"अङ्गमर्दो ज्वरः कम्पः पिपासा गुरुगात्रता ।
शोथ शूलातिसारौच सूतिकारोग लक्षणम् ॥"
—आचार्य माधव ।

इस प्रकार कहकर सूतिका नामक विशेष रोग की चर्चा की है। इस रोग मे प्रधानता मे प्रतापलंकेश्वर, लक्ष्मीनारायण, सूतिकाभरण, स्मृतिसागर और दशमूलारिष्ट जैसी औषधों का विचार से उपयोग होता है। जीर्ण पित्त प्रधान अवस्था मे जीरकारिष्ट और कफ प्रधान अवस्था में चतुर्भुजकल्प ४ से ८ रत्ती आद्याभक्ता अवस्था में मधु क्षीर से दिया जाता है। सूतिकारोग की इस कफ प्रधान अवस्था में चतुर्भुज रस से शीघ्र से शीघ्र हो निश्चित लाभ दिखाई देता है। महीनों का रोग दिनो मे जाता है, यही चतुर्भुजकल्प की विशेषता है। यदि इस औषध के साथ-साथ सहचर तैल या बलातैल की अनुवासनवस्ति, दशमूल की निरूहावस्ति और एरण्ड स्नेह मधुमिश्रित या दार्वीक्वाथ की उत्तरवस्ति विचार से दी जावे तो औषध कार्य मे बडी सहायता मिलती है। वस्ति से प्रथम योनिधावन के लिए स्फटिका, टंकण जल या पचवल्कल क्वाथ, त्रिफलाजल, निम्बजल आदि विचार से प्रयोग कराने चाहिए। चन्दनलाक्षादि तैल, सहचर तैल, बलातैल और पद्मकादि तैल का पिचु भी रोग नाशन मे सहायक होते है, इनसे भी लाभ उठाना चाहिए।

सगर्भा माता का दूध पीने वाले बच्चों को पारिगर्भिक रोग होता है, बालक शुष्क निर्बल होजाता है। उसके हाथ-पांव पतले और उदर घड़े के सामान बढ़ जाता है। कुछ भी खाने पर उसे वह आसानी से नहीं पचता। दिन भर बच्चा खाता रहता है पर उसे वह खाया लगता नहीं। इसी प्रकार का रोग छोटे बच्चों को क्षीरालसक भी होता है यह क्षीरालसक और कारण भेद और अवस्था भेद से आमाशय दोष ही कारण होता है। क्षीरालसक मे आमाशयस्थ कफ बढ़ कर पक्वाशय और बृहदन्त्र मे पचन व्यापार की विकृति और रक्तवाही स्रोतों को रुद्ध करता है। इसी के फलस्वरूप बालक दिन-दिन क्षीण होता जाता है। बालक का उदर बढ़ता है, हाथ-पैर कृश होते जाते हैं। मस्तिष्क बढ़ता जाता है बार-बार उसके मुंह से पानी आता है, कभी कोष्ठबद्धता और कभी अपक्व श्लेष्म मिश्रित पतले दस्त आते हैं। इसी प्रकार की अवस्था इस रोग मे बहुत दिन तक चलती रहती है।

सगर्भा माता का दूध अति स्निग्ध और अधिक गुरु होने से प्रथम से ही विकृति को प्राप्त हुआ होता है। यह विकृत दूध आसानी से बच्चों को पचता नहीं। इसी के फलस्वरूप आमाशयस्थ कफ दोष की वृद्धि होती है। बढ़ा कफदोष पाचन क्रिया को बिगाड़ कर स्रोतो का अवरोध कर देता है। फलस्वरूप बालक सूखने लगता है। प्राय: सभी लक्षण क्षीरालसक के समान तब दीखने लगते हैं। विशेष लक्षण केवल यही होता है कि बालक सारा दिन रोता रहता है। उसे किसी भी स्थिति मे चैन नहीं मिलता। उसके गाल और मस्तिष्क सूख जाते हैं। क्षुधामन्द, थकावट, बार-बार हरे दस्त और मुख मण्डल उदास तथा निस्तेज जान पड़ता है। इस प्रकार पारिगर्भिक विकार मे फंसे बालक दूर से ही पहचाने जाते हैं।

पारिगर्भिक और क्षीरालसक दोनो मे कारण भेद और अवस्था भेद से आमाशय दोष ही कारण है, इसीलिए इन दोनों की चिकित्सा भी एक सी ही होनी चाहिए। पर हमने केवल पारिगर्भिक रोग पर ही चतुर्भुज कल्प का १ से २ रत्ती तक अन्तराभक्त अवस्था मे मधु से व्यवहार कर लाभ उठाया है। क्षीरालसक विकार मे इसका अभी तक प्रयोग नहीं किया। हमे पूर्णविश्वास है, यदि क्षीरालसक रोग मे भी इसका व्यवहार होगा तो उसमे यह चतुर्भुज कल्प अवश्य कार्य करेगा। वैद्यबन्धुओं से प्रार्थना कि वह अवश्य इस रोग पर भी इसका अनुभव करें और लाभ उठावे। पारिगर्भिक रोग मे औषधि देने से पूर्व प्रथम उसारेवन्द चौथाई रत्ती से १ रत्ती तक माता के

—शेषांश पृष्ठ ६५ पर।

श्री पं. सुदेवचन्द्र पाराशरी वैद्यराज आयुर्वेदाचार्य

प्रधान चिकित्सक-केन्द्रीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, उदयपुर।
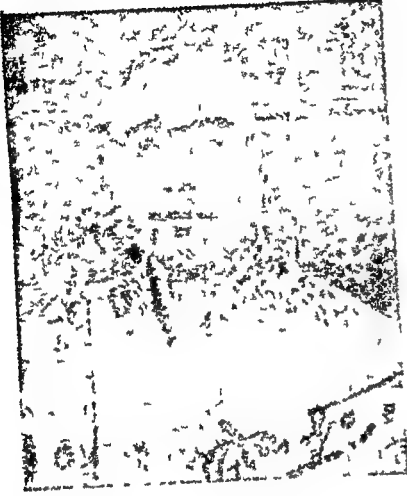
"आप ललितहरि आयुर्वेदिक कालेज पीलीभीत के स्नातक हैं। सर्व प्रथम छात्रसघ के सस्थापक व प्रधान मत्री रहे। स्नातकोत्तर आप उसी कालेज मे रस व भैषज्य कल्पना के प्राध्यापक रहे। तदनन्तर टनकपुर में चिकित्सक रहकर १६४६ से ५४ तक राजकुमार सिंह कालेज इन्दौर मे सीनियर प्रोफेसर का कार्य सम्पन्न किया। प्रिंस यशवन्तराय आयु० चिकित्सालय मे प्र० चिकित्सक रहे हैं। यहीं साथ साथ अध्यापन कार्य किया। वहा से अवकाश लेकर हरिद्वार ऋषिकुल आयुर्वेद कालेज मे अध्यापक छात्रावासाध्यक्ष एव परिषदाध्यक्ष पद पर रहे। सम्प्रति राजस्थान के सेवा आयोग के अन्तर्गत उदयपुर मे प्रधान चिकित्सक का कार्यभार सम्भाले हुए है। उत्तरप्रदेशीय इण्डियन मेडिसिन बोर्ड लखनऊ के आप परीक्षक रहे है। सुन्दर लेखक एव चिकित्सा प्रभावशाली वक्ता हैं। 'आधुनिक रसायनशास्त्र का विकास' व 'आयुर्वेदीय नामक आपकी दो अप्रकाशित रचनाए हैं जो प्रयोग हमारे आग्रह पर अपने धन्वन्तरि को प्रदान किये हैं वे सभी सफल एवं अनुभूत हैं।" —सम्पादक।

रक्तार्श नाशक योग—

बोलपर्पटी	१ तोला
शौक्तिक पिष्टी	३ माशे
मौक्तिकपिष्टी	३ माशे
प्रवालपिष्टी	३ माशे
शङ्खभस्म	२ माशे
कपर्द भस्म	१ माशे
स्वर्णगैरिक शुद्ध	६ माशे
नागपुष्प	३ तोले
कहरवापिष्टी	६ माशे

विधि—सबको खरल मे मिलाकर २४ घण्टे लगातार घोट कर शीशी मे डाट लगाकर रखले।

मात्रा—२ माशे से ३ माशे तक, उग्र रक्तस्राव में ३-३ घण्टे बाद रक्त बन्द होने तक दे सकते है। फिर ३-४ घण्टे बाद, ६-६ घण्टे बाद फिर केवल प्रातः सायं २ बार एव एक बार करके क्रमशः बन्द कर देवे।

अनुपान—शर्वत अंजबार या शर्वत गुलाब औषधि मात्रा के अनुसार ६ माशे से १ तोले तक मे मिलाकर चटावे।

पथ्य—मक्खन, तक्रमीठा, फलरस (मधुर), मोरट, बकरी का दूध, फिर क्रमश सौम्य शाक, सैन्धव, रोटी, चावल आदि देवे।

अपथ्य—लालमिर्च, गरम मसाले, चटपटी चीजे, खटाई, तैल व पिष्ट पदार्थ और गुड़ आदि से परहेज करावे।

गुण—सब प्रकार की चिकित्सा से हताश मरणासन्न रोगी, सगर्भा स्त्रियो, शस्त्रकर्मैक साध्य रोगी तक इस प्रयोग से अच्छे हुए है।

रक्तप्रदर, रक्तपित्त और रक्तष्ठीवन, पित्तविकार भ्रम तथा रक्तातिसार और जीर्ण ग्रहणी मे भी यह प्रयोग अमोघ सिद्ध हुआ है।

क्रोष्टुशीर्ष नाशक—

पुनर्नवादिमण्डूर विषाणभस्म

कर्पभस्म —प्रत्येक ४-४ तोले
समीरपन्नगरस लोहभस्म
—दोनो १-१ तोले

विधि—मिला कर २४ घण्टे खरल करके शुद्ध गुग्गुल ७१ तोले मिलाकर, घृत का हाथ लगा कर कूटते व मिलाते जावे। एक जीव होजाने पर गुग्गुल विधान से २-२ माशे की गोली बाध ले।

मात्रा—२-२ गोली प्रात सायं पुनर्नवादि क्वाथ के साथ देवे।

गुण—फिरंग व पूयमेह जन्य संधिवात से होने वाले जानुसंधि शोथ व शूल मे, तथा प्रत्येक प्रकार के जानुशोथ व शूल मे. एवं संधिवात और आमवात में अनुपम लाभकारी है।

पार्श्व व उर:शूल, प्लूरिसी, यकृद्शोथ व यकृद् विकार और शोथ में भी सुपर्याप्त लाभ करता है।

वातव्याधि नाशक—

कैशोर गुग्गुल	२४ तोला
लोहभस्म	२ माशे
समीरपन्नगस	२ माशे
कर्पदभस्म	१ तोले

विधि—खरल में खूब घोटकर पुनर्नवाष्टक क्वाथ की रस क्रिया (द्रवसत्व) चतुर्गुण डाल कर खूब घोटे, गोली बनाने योग्य होने पर २-२ माशा की गोली बनाले

मात्रा व गुण धर्म—२-२ गोली प्रात. सायं।

गृध्रसी में—एरण्डस्नेह मिश्रित गोदूध के साथ।

कटि, पृष्ठशूल मे—नागर चूर्ण मिश्रित गोदूध के साथ।

पार्श्व, उर शूल मे—पुष्करमूल क्वाथ के साथ।

अन्य वातवेदनाओं मे—रास्नादिक्वाथ अथवा उष्णोदक के साथ। प्रयोग करने से अद्भुत लाभ करता है।

उदरशूलारि—

शंखभस्म वज्रक्षार अग्नितुंडीरस
—प्रत्येक १-१ तोला
लवणभास्कर चूर्ण ३ तोला

विधि—मिलाकर खरल करे, चूर्ण को शीशी में बन्द कर रखलें।

मात्रा—३-३ माशे प्रात. मध्यान्ह सायं सोते समय उष्णोदक के साथ ले।

गुणधर्म—प्राय: वायु, अजीर्ण, विबंध तथा अन्य कारणों से होने वाले शूलों मे अतिशय लाभकर है। सहपान के रूप में २-२ तोले कुमार्यासव समभाग जल मिश्रित पिलाने से अतिशीघ्र और चिरकाल के उदर विकारों को समूल नष्ट करता है।

मधुमेहारि योग—

मुक्ताभस्म नागभस्म
—दोनों १-१ तोला
वंशलोचन असली ८ तोला
जम्बुफलमज्जा का कपड़छन चूर्ण १६ तोला

विधि—खरल कर जामुन की छाल और विल्वछाल के क्वाथ की ७ भावनाये देवे। फिर १-१ माशे की गोली बाधे।

मात्रा—२-२ गोली प्रात सायं जल के साथ ले।

गुणधर्म—मधुमेह मे उत्तम लाभ करता है। हर पन्द्रहवे दिन मूत्र परीक्षा कराके परिणाम देखता रहे। यथोक्त पथ्य सेवन आवश्यक है।

कविराज श्री सतीन्द्रनाथ वसु L. A. M. S

गवर्नमेंट आयुर्वेदिक कालेज, लश्कर (ग्वालियर)

"श्री कविराज जी आयुर्वेद शास्त्र के मर्मज्ञ आचार्य है। आप आयुर्वेद जगत के सुपरिचित स्वर्गीय महामहोपाध्याय कविराज श्री गणनाथ सेन जी सरस्वती के शिष्य है, तथा आपका आयुर्वेद का अध्ययन अगाध है। आप धन्वन्तरि मे गत वर्ष से प्रकाशित काय-चिकित्सा लेख-माला के सफल लेखक है अतएव धन्वन्तरि के पाठक आपकी योग्यता से भलीभांति परिचित है। आप इन्दौर के आयुर्वेद कालेज मे अन्वेषण विभाग के अध्यक्ष थे। सम्प्रति गवर्मेन्ट आयुर्वेद कालेज ग्वालियर मे प्राध्यापक हैं। आपने शास्त्रीय प्रयोगो के आधार पर ५ रोगों की सफल-सरल स्वानुभूत चिकित्सा-विधि धन्वन्तरि में प्रकाशनार्थ प्रेषित कर आयुर्वेद जगत को उपकृत किया है। आशा है पाठक आपके अनुभव से लाभ उठावेगे।"

—सम्पादक।

ज्वरातिसार—

साधारण ज्वरातिसार से लेकर आन्त्रिक ज्वरो मे अतिसार क्षेत्र तक परम उपयोगी औषध—

भैषज्यरत्नावली मे ज्वराधिकारोक्त आनन्दभैरवी—

विष	त्रिकटु	गंधक
सौभाग्यलाज	ताम्रभस्म	धुस्तरबीज
हिंगुल	—प्रत्येक	१-१ तोला

—भांग की पत्ती के स्वरस या क्वाथ से १ दिन भावित, चणक प्रमाण वटी।

नागरमोथा और आतपतण्डुलोदक व शहद के साथ आवश्यकतानुसार दिन मे उपयुक्त मात्रा में २ या ३ वार देने से अतिसार बन्द होकर शीघ्र ही ज्वर मोक्ष होता है २-३ दिन से अधिक प्रयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती। अतिसारयुक्त आन्त्रिक ज्वर मे पूर्वोक्त अनुपान से प्रयोग करने से ज्वर वेग मे विशेष प्रतिक्रिया अगर दिखाई न भी पड़े तो भी अतिसार में निश्चित ही फल मिलेगा। मल दुर्गंधयुक्त होने से गन्धप्रसारणी की पत्ती व नागरमोथा तण्डुलोदक मे एक साथ कुचलकर स्वरस छान लेना चाहिये और बाद मे शहद मिश्रित आनन्दभैरवी के अनुपान के रूप मे प्रयोग करने से विशेष लाभ मिलता है। गन्धप्रसारणी उपलब्ध न होने से केवल नागरमोथा व तण्डुलोदक के अनुपान से प्रयोग करने से भी लाभ होता है। नागरमोथा हरा होने से अधिक लाभ होता है—ऐसा देखा गया है। अन्यथा नागरमोथा चूर्ण ही प्रयोज्य है।

प्रवाहिका—

सरक्त व रक्तहीन दोनो प्रकार की प्रवाहिका में यह प्रयोग लाभप्रद है। प्रत्येक क्षेत्र मे विशुद्ध एरण्ड तैल के प्रयोग से रोगी की मल शुद्धि करा लेना आवश्यक है। वारम्बार मलत्याग देखकर एरण्ड तैल के प्रयोग से घबड़ाना नहीं चाहिये। विभाजित मात्रा मे एरण्ड तैल के प्रयोग से किसी भी प्रकार की हानि नहीं हो सकती है। अवश्य रोगी वृद्ध अथवा तीव्रावस्था-पीड़ित होने से विना

एरण्डतैल के प्रयोग से ही निम्नोक्त प्रयोग चालू किया जा सकता है।

भैषज्यरत्नावली में अग्निमान्द्याधिकारोक्त श्री रामबाणरस—

पारद	गन्धक	विष
लवङ्ग		—प्रत्येक १-१ तोला
काली मिरच		२ तोला
जायफल		आधा तोला

—कच्ची इमली के रस मे मर्दन कर १/२ रत्ती वटिका। इसके साथ—

अतिसाराधिकारोक्त-'महागंधककम्'—

पारद व गंधक की कजली ४ तोला

—मृदु अग्नि मे थोड़ा सा पकाकर उसमे—

जायफल जावित्री लवङ्ग
निम्बपत्र निगुण्डीपत्र, इलाइची का चूर्ण
—प्रत्येक २-२ तोला

—मिलाकर कर्दमलिप्त शुक्ति मध्ये रखकर लघुपुट मे पाक करना चाहिये। पूर्वोक्त—

नागरमोथा, तण्डुलोदक व शहद के अनुपान से दिन मे ३ वार प्रयोग करने से विशेष लाभ होता है। मल मे दुर्गन्ध अत्यधिक रहने से गंध-प्रसारणी का प्रयोग अभिप्रेत है। रक्त की मात्रा अधिक अथवा मामूली तीव्रतर क्षेत्र में निम्नोक्त क्वाथ अनुपान के रूप में प्रयोग करने से निश्चित फल अवश्यम्भावी है।

कुटजत्वक	इन्द्रयव	नागरमोथा
अनार का छिलका		मोचरस
सुगन्धवाला	अतीस	वेलगिरि

—प्रत्येक ३-३ माशा

—क्वाथ विधि से वनाकर पूर्वोक्त रामवाण महागन्धक योग के अनुपान के रूप मे दिन भर मे प्रयोज्य।

श्रीरामवाणरस ३ रत्ती व महागन्धक ३ से ४ रत्ती प्रति मात्रा मे प्रयोग करनी चाहिये। Amoebic व Bacillary दोनो जाति की प्रवाहिका मे लाभदायक है।

कास—

आयुर्वेद शास्त्र में कासरोगाधिकार में नाना प्रकार की औषधियों का प्रयोग लिखा हुआ है। भैषज्य रत्नावली मे कासाधिकार मे ३ अहिफेन घटित औषधियो का वर्णन हमे प्राप्त है—जिसका नाम सिंहास्यादि वटी, शशिप्रभावटी, व वृ० शशिप्रभा-वटी है। इन औषधो का प्रयोग साधारणतः वैद्य जगत् मे कम प्रचलित है। परन्तु सब औषधियो का प्रयोग उपयुक्त स्थल मे अति लाभदायक है।

सिंहास्यादि वटी—

वासापत्रस्वरस का कठिन अवलेह	८ तोले
अर्कमूलत्वक चूर्ण	२ तोला
अहिफेन	२ तोला
कपूर	१ तोला

—पानी मे मर्दन, १ रत्ती की वटिका।

शशिप्रभा वटी—

अहिफेन	यष्टिमधु
कपूर	बेर के बीज की मिंगी

—प्रत्येक समान भाग

—पानी में मर्दन, २ रत्ती वटिका।

वृ० शशिप्रभा वटी—

अहिफेन		कपूर
त्रिकटु	मुलहठी	वच
बहेड़े के बीज की मिंगी		वंशलोचन
बेर के बीज की मिंगी		—प्रत्येक समभाग।

—अद्रक स्वरस मे मर्दन, २ रत्ती वटिका।

पूर्वोक्त औषधियो के गुण विचार से इनके प्रयोगस्थल निर्दिष्ट होते हैं। सिंहास्यादि वटी—खासतौर से जहा कफ का अत्यधिक निर्गम होता है और साथ ही साथ श्वास-नलिकाओ मे आक्षेप होता रहता है—वहा अधिकतर लाभप्रद है। ऐसी अवस्था पाश्चात्य शास्त्रोक्त Bronchiactasis नामक रोग मे सचराचर दिखाई पड़ती है। इस अवस्था मे सिंहास्यादि वटी के प्रयोग से मुझे आशातीत फल मिला है। जो रोगी दिन रात सो

नहीं पाता था, दिन रात में कम से कम आधा सेर कफ निकलता था—उसको दो मात्रा में काफी लाभ मिला, दो दिनों मे हालत काफी सुधर गई। श्वास-कष्ट अधिक रहने से बहेड़ा के बीज की मिंगी व बेर के बीज की मिगी व वच (घोड़वच) उसमें मिलाकर देना अधिकतर लाभप्रद होगा। कफ का स्राव कम व श्वासकष्ट ज्यादा रहने से (Emphysemia with Bronchitis) में वृ० शशिप्रभा वटी का प्रयोग—अधिक लाभप्रद होगा। अहिफेन की मात्रा क्रमशः कम करना ही वाञ्छनीय है।

वमन—

किसी भी कारण से (विशेषत. प्रतिक्रिया से उत्पन्न Peflex Vomitting) वमन होने से निम्न लिखित प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद प्रतीत हुआ है।

छोटी से छोटी पपई (जिसमे बिलकुल नीलापन नहीं आया, केवल पीला भाग लेकर हरापन रहता है) का छिलका उतार कर ताजे चूने के पानी मे बारीक कुचल लेना चाहिए। इस तरह कपड़छन करके उसका स्वरस निकाल लेना चाहिये। नौसादर रहित केवल सोरा १ भाग व ¼ भाग फिटकरी से बनाई गई शुभ्रपर्पटी २ रत्ती की मात्रा मे पूर्वोक्त स्वरस के साथ देने से प्रथम मात्रा मे ही लाभ होता है। दो तीन मात्रा से अधिक प्रयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती है। हैजे के वमन मे भी लाभ होता है।

कस्तूरीभूषण रस—

मकरध्वज (षड्गुणबलिजारित)—½ रत्ती, कस्तूरी ¼ र. देशी कपूर २ रत्ती, Strychnine Sulphate या Hydrochlore—1/64 ग्रेन, Caffine citras १ से १½ रत्ती मिलाकर १ खुराक बनाना चाहिए।

प्रयोग—किसी भी प्रकार के हृद्दौर्बल्य मे आशुफलप्रद महौषधि। हृद्दौर्बल्यजनित शोथ (Cardiac Dropsy) में गोक्षुर युक्त तृणपंचमूल क्वाथ अथवा गोक्षुरयुक्त पुनर्नवाष्टक क्वाथ के साथ हृद्यावसाद (Cardiac Failure) मे अर्जुनत्वक के क्वाथ अथवा क्षीरपाक के साथ, और कैशिकीय रक्ताभिसरणावसाद (Periphral Circulory Failure) मे शहद के साथ बार-बार प्रयोग करने से विशेष लाभ होता है।

:: पृष्ठ ६० का शेषांश ::

दूध से देकर बालक को वमन कराने के बाद चतुर्भुज कल्प का व्यवहार करना चाहिए। बिना वमन कराये चतुर्भुज कल्प न देना चाहिए। यदि पारिगर्भिक विकार में चतुर्भुज कल्प देते हुए उसारेरेवन्द दूसरे तीसरे दिन वमनार्थ प्रयोग होता रहे तो शीघ्र लाभ दिखाई देता है।

बालग्रह (स्कन्दग्रह अहिपूतनाग्रह आदि) मस्तिष्क के आवरण की विकृति (मस्तिष्क मे रहे हुए वात की विकृति) से उत्पन्न होते है। इन बालग्रहों के अनेक कारण हैं। पर प्रधानता से १० मुख्य कारण कहे गये हैं। जैसे – (१) उदर अन्त्र की विकृति से वात संचय (२) दन्तोद्भव अवस्था (३) कृमि विकार (४) मूत्र द्वार की त्वचा चिपकने से मूत्रोत्सर्ग में बाधा (५) कर्ण पाक (६) मृद्वस्थि विकार (७) शीतला विस्फोट, रोमान्तिका आदि तीव्रपिडिकायुक्त ज्वर (८) कुक्करकास (९) मस्तिष्कावरणशोथ (१०) धनुर्वात या अपस्मार का पूर्वरुप। इन दस कारणो से उदर या अन्त्र मे वातसचय दुग्ध विकृति या आहार-जन्य विकृति उत्पन्न होती है, जिसके फलस्वरूप बाल ग्रह विकार देखने में आते हैं।

बालग्रह विकारों मे अनेक औषधियों का प्रयोग होता है पर जब तीव्र विकार शमन होने के बाद कफ प्रधान लक्षण हों तब चतुर्भुज कल्प १ से २ रत्ती अन्तराभक्त अवस्था मे दिन में ३ बार मधु से प्रयोग कराना चाहिए। चतुर्भुज कल्प बालग्रह विकारों के लिए अचूक औषधि है।

कविराज ब्रह्मदत्त शर्मा शास्त्री आयुर्वेदाचार्य

गवर्निंग डाइरेक्टर—नवशक्ति आयुर्वेदालय लि०, भुसावल।

पिता का नाम— श्री पं प्रभुदयाल शर्मा
आयु—४४ वर्ष जाति– ब्राह्मण

"आपने सन् ३७ से चिकित्सा क्षेत्र में प्रवेश किया और निरन्तर अग्रसर होते गए। अनेक सस्थाओ के उच्च पदो पर आप आसीन रहे है। जी पी जैन धर्मार्थ औषधालय पब्लिक ट्रस्ट के अवैतनिक चिकित्सक व मैनेजिग ट्रस्टी हैं। इण्डियनसिस्टम आफ मेडिसिन आफ आयुर्वेद एण्ड यूनानी बोर्ड वम्बई राज्य तथा फैकल्टी आफ आयुर्वेद वम्बई राज्य के सदस्य है। आप स्थानीय कई शिक्षा सस्थाओ के चेयरमैन व मैनेजिग कमेटी के सदस्य हैं। म्युनिसिपल सदस्य के अलावा, वम्बई राज्य वैद्य सम्मेलन, वम्बई महाराष्ट्र प्रातीय वैद्य मडल पूना, निखिल भारतीय आयुर्वेद कांग्रेस देहली की कार्य कारिणी के सदस्य हैं। निखिल भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ केन्द्र भुसावल के अध्यक्ष हैं। चिकित्सक व आयुर्वेद मासिक पत्र के सपादक व प्रकाशक हैं। अनेक आयुर्वेदिक सस्थाओ के अध्यक्ष, प्रधान मन्त्री, सयुक्त मन्त्री व स्वागताध्यक्ष रहे है। वैद्य जगत की एक मानी हुई प्रतिभा है। आपके प्रेषित तीन अनुभूत प्रयोग यहां दे रहे है।"

—सम्पादक।

सोमकल्पासव—

सोमलता अडूसा —दोनो १-१ सेर
धत्तूर पंचाग आधा सेर
महुआ मुलहठी कटेली
पीपल नागकेशर सोंठ
भारङ्गी तालसीपत्र काकडासिंगी
—प्रत्येक आधा-आधा पाव
शक्कर १५ सेर मुनक्का १। सेर
शहद ५ सेर धाय के फूल १ सेर
जल १ मन

—आसव विधि से निर्माण करे।

गुण—यह प्रयोग कनकासव मे कुछ फेरफार करके बनाया है। श्वास, दमा, क्षय, क्षीणता में अत्युपयोगी है। इससे फुफ्फुस व श्वासवाहिनी के दोष दूर होते हैं और दम के दौरे में अत्यन्त लाभ करता है। किंचित् मादक है।

प्रवाहिकारि मिश्रण—

इन्द्रयव शङ्खभस्म अनारदाना
—तीनो आधा-आधा सेर
पीपल पीपलामूल अजवायन
कालीमिर्च धनियां
जीरा सोंठ —एक-एक छटाक
वंशलोचन तज इलायची
तेजपात केशर —१।-१। तोला
शक्कर १ सेर

मात्रा—सुवह शाम ३ माशा, जल या तक्र के साथ।

गुण—यह आमातिसार प्रवाहिका, अरुचि पेचिस,

—शेषाश पृष्ठ ९८ पर।

कविराज श्री सुखराम प्रसाद B Sc. आयुर्वेदाचार्य

प्रोफेसर—गवर्नमेंट आयुर्वेदिक कालेज, पटना।

"श्री कविराज जी विहार प्रांत की एक विभूति हैं। आप एक कर्मठ, यशस्वी, हस्तकुशल और धर्मपरायण चिकित्सक है। बडे-बडे डाक्टर आपके रोग-निदान के कायल हे। आपकी लेखनी मे अपूर्व शक्ति है। अंग्रेजी एवं हिन्दी पत्र-पत्रिकाओ मे आपके लेख लोग बडी रुचि से पढते हैं। आप इस समय विहार आयुर्वेदिक यूनानी कौंसिल और फैकल्टी के सदस्य है। राजकीय आयुर्वेदिक कालेज और बेगूसराय आयुर्वेदिक कालेज की प्रवध समिति के सदस्य है। निखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन की स्थाई समिति के सदस्य है। विहार प्रातीय वैद्य सम्मेलन के तो आप प्राण ही है। प्रान्तीय आयुर्वेद यूनानी सम्मेलन के प्रधान मंत्री हैं। आप उद्भट विद्वान होने के साथ-साथ एक सफल एवं लोकप्रिय चिकित्सक भी हैं। मधुमेह एवं प्रवाहिका पर आपने अपने अनुभव पाठको के समक्ष रखे हैं आशा है पाठक आपके अनुभव से अवश्य ही लाभान्वित होगे।" —सम्पादक।

मधुमेह—

यह कितना भयकर रोग है, इससे सभी परिचित हैं। निम्न लिखित योग को मैंने अनेक रोगियो पर प्रयोग किया और अत्यन्त लाभदायक पाया। प्रयोग इस प्रकार है—

प्रात.—

चन्द्रकान्ति रस	१ गोली (२ रत्ती)
गुड़मार चूर्ण	१० रत्ती
आमलकी चूर्ण	५ रत्ती
जामुन फल मज्जा का चूर्ण	५ रत्ती
निम्बपत्र चूर्ण	५ रत्ती

—सब मिलाकर तिल कीट के पत्ते के रस के साथ मिलाकर खाना और आंवला का फुला हुआ पानी (हिम) पीना।

सायंकाल—

चन्द्रप्रभावटी	१ गोली
गुड़मार चूर्ण	१० रत्ती
आमलकी चूर्ण	५ रत्ती
निम्बपत्र चूर्ण	५ रत्ती
जामुन की गुठली चूर्ण	५ रत्ती

—सब मिलाकर ठडे पानी के साथ।

पथ्य—गेहू, यव और चना तीनो मिलाकर आधपाव अटे की रोटी, हरी तरकारिया, गूलर, आध सेर दूध, गाय के दही का तक्र, दो मील प्रतिदिन टहलना।

उपरोक्त औषधो के प्रयोग से और संयम के साथ रहने से मधुमेह मे शीघ्र लाभ होता है। मूत्र

में ११% शर्करा में भी इससे लाभ पहुँचा है।

ज्ञातव्य—चन्द्रकान्ति और चन्द्रप्रभा दोनो भैषज्य-रत्नावली के शास्त्रीय प्रयोग है। चन्द्रकान्ति मे स्वर्ण है। औषध शुद्ध और सभी द्रव्यो को डालकर बनाना चाहिए।

प्रवाहिका—

प्रवाहिका की प्रारम्भिक अवस्था मे यदि एरड तैल का विरेचन दे दिया जाय तो रोग का शीघ्र शमन हो जाता है। पूर्ण मात्रा दो औंस, गरम जल में मिलाकर लेना चाहिए। बच्चो के लिए आधी या चौथाई मात्रा, आयु के अनुसार देनी चाहिए।

प्रतिदिन प्रात और सायंकाल तण्डुलीयक का मूल ६ माशा, काली मिर्च ५ दाना एक साथ पीस कर और एक छटाक पानी मे मिलाकर पीना चाहिए। इससे अतीव लाभ होता है।

प्रवाहिका की प्रारम्भिक अवस्था मे ग्राही औषध का प्रयोग कभी भी नहीं करना चाहिए। इससे बडा अपकार होता है।

प्रवाहिका मे निम्न लिखित योग भी अतीव लाभदायक है। इसके उपयोग से भी मैंने हजारो रोगियो को अच्छा किया है।

विल्वादि चूर्ण	१॥ माशा
छोटी हरड़ का चूर्ण	३ माशा

—दोनो मिलाकर गरम पानी से प्रातः सायं देना।

दोपहर और रात में—

विल्वादि चूर्ण	१॥ माशा
रससिंदूर	½ रत्ती

—दोनो मिलाकर ठंडे पानी के साथ।

पथ्य-गाय के दही या तक्र और मुलायम भात, लाजमण्ड, बीदाना या उबाले हुये दुग्ध मे दें।

यदि प्रवाहिका मे रक्तमिश्रित मल आता हो तो शोणितार्गल ½ गोली विल्वादि चूर्ण के साथ मिलाकर देना चाहिए।

विल्वादि चूर्ण—

बेलगिरी नागरमोथा सोंठ
धनिया सौंफ धाय का फूल मोचरस
—प्रत्येक सम भाग।

शोणितार्गल—

लौह अभ्रक लाक्षा रससिंदूर
लोध्र —प्रत्येक ६-६ माशा
फिटकरी ३ माशा
रसौत खूनखराबा लालचन्दन
गेरू —प्रत्येक १-१ तोला

—बबूल के पत्ते के रस मे खरल करके २-२ रत्ती की गोली बनाना।

प्रवाहिका मे पेट या मरोड बन्द हो जाए और शरीर लघु मालूम हो किन्तु मल का निकलना बन्द नहीं हो तो कर्पूर रस का प्रयोग कर सकते हैं।

पृष्ठ ९६ का शेषांश

(आंव-खून की टट्टी) को नष्ट करता है।

पूयमेहहर चूर्ण—

राल कत्था माजूफल
लोहवान सफेदचन्दन इलायची
शीतलचीनी हजरतबेर पिष्टी
सतगन्धाबिरोजा वंशलोचन
—समान भाग
शक्कर १० भाग

मात्रा—३ माशा सुबह शाम दूध से।

गुण—यह पूयमेह, सुजाक, पेशाब की जलन पीव जाना, इत्यादि मूत्रविकारो को दूर करता है।

आयुर्वेदा० पं. शंकरदत्त शास्त्री काव्यतीर्थ भिषग्रत्न

मु० पो० माधौगढ़ (महेन्द्रगढ़)

"श्री शास्त्री जी का जन्म सूरजगढ़-शेखावाटी जिलान्तर्गत ग्राम काजड़ा में श्री प० गीराज जी जोशी के घर संवत् १९६५ में हुआ। आपने बनारस में गवर्नमेंट संस्कृत कालेज से व्याकरण शास्त्री, साहित्याचार्य तथा काव्यतीर्थ की परीक्षायें उत्तीर्ण करने के बाद कलकत्ता के कविराज स्वर्गीय श्री ज्योतिर्मय सेन जी से अष्टांग आयुर्वेद का सकर्माभ्यास अध्ययन कर बंगीय 'भिषग्रत्न' एवं आयुर्वेदाचार्य की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। ५ वर्ष तक मारवाड़ी आरोग्य भवन जसीडीह में प्रधान वैद्य के पद पर चिकित्सा कार्य करने के बाद से अब तक माधौगढ़ मे स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय कर रहे हैं। आपने शार्ङ्गधर संहिता की संस्कृत व्याख्या लिखी है जो अप्रकाशित है। सम्प्रति "अनुभूत योग रत्नाकर" नामक स्वतन्त्र ग्रन्थ-निर्माण में लगे हुए है। आपके 'राजयक्ष्मा तत्प्रतीकारश्च' नामक विस्तृत निवध पर पैप्सू सरकार से स्वर्णपदक एवं सम्मान पत्र प्राप्त हुआ है। आप विशुद्ध आयुर्वेद चिकित्सा के कट्टर पक्षपाती हैं तथा खिचड़ी चिकित्सा को अनुपयुक्त एवं हानिकर समझते है। आपके निम्न प्रयोगों से पाठक अवश्य ही लाभान्वित होंगे ऐसा विश्वास है।"

—सम्पादक।

निद्राकर—

ज्योतिष्मती जटामासी सर्पगन्धासितायुतम्।
मकरध्वजसंयुक्तं चूर्णं निद्राकरं परम् ॥
अनु० योग रत्नाकर ॥

मालकांगनी जटामासी सर्पगधा
—प्रत्येक ५-५ तोला

—लेकर कूटकर कपडछान कर मिश्री १० तोला पीसकर मिलादे। इसकी मात्रा ३ मासे और स्वहस्त किंवा विश्वस्तव्यक्ति द्वारा निर्मित सिद्ध मकरध्वज १ रत्ती सूक्ष्म पीसकर मिलादे। प्रातः सायं धारोष्ण अथवा गर्म करके ठंडा किया हुआ गव्य दुग्ध आध सेर के साथ दें। यह एक मात्रा है। इसी प्रकार अन्य मात्राएं बनाले।

गुण—उन्माद, मूर्च्छा, अपस्मार, चित्तभ्रम आदि रोगों में रुग्ण को जब रात-दिन कभी निद्रा न आती हो। आंखें लाल रहती हों। रुग्ण असंबद्ध भाषण करता हो, कपड़े वगैरह फाड़ने आदि की कुचेष्टा करता हो, तब "निद्राकर" सेवन कराना चाहिए। कुछ समय सेवन कराने से उन्माद रोग जड़ से चला जाता है। अनुभूत प्रयोग है।

कस्तूर्यादि वटी—

कस्तूरी असली मकरध्वज
अंबर असली रौप्यभस्म स्वर्णभस्म
—प्रत्येक १-१ माशा

स्वर्ण माक्षिक भस्म ३ माशा
वङ्ग भस्म ३ माशा
जायफल लवङ्ग जावित्री
केशर असली —प्रत्येक ४-४ माशा

विधि—काष्ठौषधों को प्रथम कूटकर कपड़छान कर ले। तदन्तर केशर को अच्छी तरह खरल में पीसले फिर भस्मों को मिलाकर बढ़िया और असली ब्राण्डी में मर्दन करे। ब्राण्डी अंदाज

४ औंस हो। मर्दन करते करते जब ब्राण्डी समाप्त हो जावे तब अद्रक स्वरस भी आधा पाव से मर्दन कर समाप्त कर दे और १-१ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया मे सुखाकर रख ले। प्रातः सायम् १-१ गोली गव्य दूध के साथ खाने को दें।

गुण—जाडे मे बडे आदमियों के खाने योग्य यह औषध है। प्रमेह, नामर्दी, ध्वजभग, इन्द्रिय-शैथिल्य, स्त्री को देखते ही स्खलित हो जाना, शुक्रतारल्य आदि वीर्य सबन्धि रोगों में और सन्निपात ज्वर मे जब नाड़ी क्षीण हो रही हो, पसीना आता हो, कफ की अधिकता हो तब "कस्तूर्यादि वटी" का उपयोग लाभप्रद सिद्ध हुआ है। बना कर देखे।

केशरादि वटी (उपदंश रोगे)—

असली केशर	काली मिर्च	जावित्री
शुद्ध रसकपूर	लाल चन्दन	अनंतमूल
लवङ्ग		—प्रत्येक १-१ तोला

विधि—प्रथम केशर और रसकपूर को एकत्र डालकर मर्दन करे। बाकी चीजो को कूटकर कपडछान करले और सबको मिलाकर नीम के पत्तों के स्वरस मे मर्दन करे। भलीप्रकार घुट जाने पर ३-३ रत्ती की गोली बनाकर रखले।

सेवन विधि—प्रातः सायम् १-१ गोली मक्खन के अन्दर अच्छी तरह दबाकर बिना दन्तस्पर्श किये निगलवा दे।

पथ्य—गेहूँ का दलिया या फुलका, गोदूध। पूर्ण संयम् और ब्रह्मचर्य का पालन।

अपथ्य—गुड, तैल, खटाई, नमक, लाल मिर्च, आदि उष्ण चीजे और मैथुन प्रभृति।

नोट—रसकपूर की शुद्धि इस प्रकार कर लेनी चाहिए प्रथम रसकपूर को त्रिफला के काढ़े मे घोटकर टिकिया बनाकर सुखाले, उस टिकिया को डमरू-यन्त्र मे देकर मन्दाग्नि से फूल उडाले।

घावों पर लगाने के लिए निम्नलिखित मल्हम का उपयोग लाभप्रद है—

नीम के पत्ते हरे	५ तोला
कपूर की डली	१ तोला
गव्य घृत	२० तोला
तुत्थ (तूतिया) ६ माशा	मोम २ तोला
सफेद कत्था जनकपुरी	२ तोला

विधि—प्रथम नीम के पत्तों को पत्थर पर खूब महीन पीसकर लुगदी बनाले, फिर लोहे की छोटी कढ़ाई मे घृत और नीम के पत्तों की लुगदी को रखदे। घृत की उष्णता से लुगदी को कुछ कुछ जलने दे। जब नीम की लुगदी जल जावे तब पात्र तलस्थ अग्नि को कुछ मंदी करके मोम डालदे, कत्था कपूर तुत्थ आदि वस्तुओं को महीन पीसकर डालदें। कुछ समय उसी प्रकार अग्नि पर रखा रहने दे और किसी कडछे से चलाते जावे। कुछ समय बाद कपडे से घृत मात्र को छान ले बाकी गूदा को फेंक दें। चोड़े मुंह की शीशी मे भरकर उस घृत को रखले।

प्रयोग विधि—प्रथम घावो को झड़बेरी के रग (जड से उबाले हुए पानी) से अच्छी प्रकार धोकर ऊपर से यह "निम्बादि मलहम" लगावे।

गुण—उपदश के व्रणों को सुखाकर भर देता है। खाने के लिये केशरादि वटी और लगाने के लिए यह मलहम एक साथ चलने चाहिए फिर उपदंश मे आशातीत लाभ होता है। हमारा अनुभूत प्रयोग है। दोनो प्रयोग स्वरचित अप्रकाशित "अनुभूत योग रत्नाकर" ग्रंथ से उद्धृत किये गये हैं।

तुवरकतैलम् (कुष्ठरोगे)—

विधि—तुवरक तैल की मात्रा २ बून्द से प्रारम्भ करके ६० बून्द तक मक्खन से दबा कर निगलवाना चाहिए। इस प्रकार १-१ बिन्दु कम करते हुए छोड देना चाहिए। खाने के लिए केवल गव्य

दुग्ध और अनार, मौसमी वगैरह फल, अन्य कुछ नहीं।

गुण—कुष्ठ रोग से अच्छा लाभ करता है। खाने और लगाने दोनों कामों मे आता है, प्रयोग करके देखें। इसका प्रयोग करीब ४-५ मास तक करना चाहिये शीघ्रता से कोई लाभ नहीं।

अमृतभल्लातकम्—

विधि—अच्छे सुपुष्ट, वजन मे भारी भल्लातक ढाई सेर लेकर उन सब को पानी में डाल दे। जो पानी मे डूब जावे उन्हे काम मे ले जो जल पर तैरते रहे उन्हे छोड दे। उन पके भारी भिलावो को ईंट के चूर्ण मे एक दिन तक घर्षण करे परन्तु घर्षण करने वाले को अपने मुख हस्तपादो मे गव्य घृत या नारियल का तैल अच्छी तरह लगा लेना चाहिए। हाथो मे टाट के दस्ते बना कर पहन ले तो और भी अच्छा। घर्षण करने के बाद भिलावों को युक्ति से गर्म जल से धोलें। सुखाकर उन सबकी टोपी (वृन्त) काट दें। किसी सरोता इत्यादि से। फिर भिलावे को तोल कर उनको चार गुने जल मे डाल कर औटावे। चतुर्थांश अवशिष्ट रखले और शीतल होने दे, फिर उसको वस्त्र मे छान लेवे, उस छने हुए काढ़े में चतुर्गुण गव्य दुग्ध डाल कर औटावे, (अन्दाज प्रचलित तोल का चार सेर दुग्ध अवश्य डाले) उसका भी चतुर्थांश बाकी रहे तब चतुर्गुण घृत डाल कर पाक करे, और उसके बराबर की बढ़िया मिश्री कूट छान कर डाल कर पाक करले, और मथानी से मथ कर चूल्हे से नीचे उतार कर शीतल करके किसी चीनी मिट्टी के भाण्ड मे सात दिन तक सुरक्षित रखदे।

—सात दिन के बाद एक तोला से लेकर तोला तक या १॥ तोला तक जितना सह्य हो जाय मात्रा मे सेवन कर ऊपर से दुग्ध पीवे दोनों समय इसी प्रकार सेवन करना चाहिये

"अमृतभल्लक" के निर्माण मे खूब सावधानी से का लेना, ऐसा न हो कि जरासी लापरवाही करलें और खराब होजावे। भल्लातक के औटते हुए धुवे से अवश्य बचे अन्यथा आखो मे धुवा लगने से विकृति होजाती है।

गुण—सर्व प्रकार के कुष्ठ इसके सेवन से ठीक हो है, चर्मरोग, उपदंशज चर्मविकृति और उ दंशजरक्त दुष्टि आदि रोगों मे अतीव लाभ सिद्ध हुआ है। इसके अतिरिक्त, प्रमेह, इन्द्रि शैथिल्य, ध्वजभङ्ग, नपुंसकता, आदि व विकारो, मे वातव्याधि और सब प्रकार शारीरिक दुर्बलता मे कभी निष्फल नहीं हुआ मैं जाड़े के दिनों मे दो–चार रुग्णो को "अ भल्लातक" का सेवन सदैव ही कराता हूँ, पर इसका प्रयोग करते हुए बड़ी सावधानी की आ श्यकता है, असंयमी पुरुष को, कुपथ्य सेवी कभी सेवन न कराना चाहिए। इसके सेवन में दु घृत की मात्रा अधिक लेनी चाहिए। इसके से काल मे अग्नि से तपना, सूर्य की धूप मे रह क्रोध करना, जिस कार्य से शरीर मे उष्ण पैदा होकर पसीना आवे ऐसा कार्य वर्जित देना चाहिए। नित्यप्रति शरीर में नारियल की खूब अच्छी प्रकार मालिश करनी चाहि अगर कहीं खुजली चले तो नाखूनो से कद न खुजलाना चाहिए, नारियल की गिरी के टु से खुजली मिटा सकते है। इसका सेवन जाड़े दिनो मे ही करना चाहिए. ग्रीष्म मे इसका योग ठीक नहीं रहता।

कविराज श्री सन्तोष कुमार जैन A. M. S आयुर्वेदाचार्य

मैडीकल आफीसर—राजकीय चिकित्सालय, नजीराबाद (भोपाल)

"कविराज जी बडे ही सरल प्रकृति, परिश्रमी एवं कुशाग्र बुद्धि हैं। आपने ओसवाल जैन परिवार में जूनिया (अजमेर) मे जन्म लिया और परिवार की निर्धन परिस्थिति के कारण जैन गुरुकुल व्यावर में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। आपकी बुद्धि प्रारम्भ से ही कुशाग्र थी अतएव सदैव छात्रवृत्ति (Scholarship) प्राप्त करते रहे और उसी के सहारे अपनी शिक्षा प्राप्त करने का साधन जुटाया। हिन्दू यूनीवर्सिटी वनारस से ए एम. एस परीक्षा उत्तीर्ण करने के साथ क्वीन्स कालेज वनारस से व्याकरण मध्यमा की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। शिक्षा समाप्ति के वाद कलकत्ता की मारवाडी रिलीफ सोसाइटी मे चिकित्सक नियुक्त हुए और अपने परिश्रम एवं लगन से अधिकारियो के मन को मोह कर उसी में ग्रह-चिकित्सक के पद पर प्रतिष्ठित हुए। भोपाल के चीफ मिनिस्टर श्री. शकरदयाल जी शर्मा ने आपकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर आपको नजीरावाद अस्पताल में मैडीकल आफीसर के पद पर बुला लिया जहा वे ग्रामीण जनता की वडी लगन से सेवा कर रहे है। आपने विविध प्रकार के शूलो मे अपने अनुभवयुक्त प्रयोग इस विशेषांक मे प्रकाशनार्थ भेजे है। आशा हे पाठक इन प्रयोगो से अवश्य लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।

अग्निदग्ध व्रण पर—

जब कोई भी मनुष्य वालक व स्त्री अग्नि से जल जाते है तव जले हुए स्थान पर अत्यन्त जलन और दर्द मालूम होता है और वेचैन हो जाते है। दिल की घवराहट वहुत वढ़ जाती है और कभी-कभी तो Shock के कारण एकाएक प्राणान्त तक (Heart Failure) हो जाता है। इसलिए जले हुए स्थान पर लगाने की ऐसी दवा होनी चाहिए जिससे अग्निदाह व शूल दूर हो और दिल की वढ़ी हुई धड़कन के लिए खाने की दवा ऐसी दी जाय जिससे Shock दूर हो और Heart Failure होने से वचे। इसके लिए मेरा निम्न प्रयोग अनुभूत रहा है और ग्रामीण जनता जो अत्यन्त गरीब है वडे अस्पतालो तक नहीं पहुंच सकती उनकी चिकित्सा सफलता के साथ मैने की है—

राल	२॥ तोला
कच्ची घाणी का अलसी का तैल	१० तोला
नीलाथोथा (Copper Sulphate)	४ र.
सिंदूर	६ माशा
साफ चूने का पानी	आवश्यकतानुसार

विधि—चूने के पानी को कांसे की थाली मे ले ले और बाकी की सब चीजो को कढ़ाही मे लेकर अग्नि पर रखकर पिघलावे। पिघल जाने पर तथा अच्छी तरह मिल जाने पर गरम-गरम ही एक कपडे से उस थाली मे छान ले। फिर कुछ ठंडा होने पर हथेली से उसे मंथन करके उस चूने के पानी को निकाल देवें। फिर दूसरा चूने का पानी उस थाली में डाले फिर मथन करे इस प्रकार १०८ वार बारम्बार चूने के पानी को डालते जांय और मथन करके धोते जाय।

अन्त में यदि मिल सके तो ४० बूंद यूकेलिप्टस का तैल मलहम में मिला ले फिर खूब मथन करके शीशी में भर ले। मलहम तैयार है।

उपयोग—आग से जले हुए किसी स्थान पर इस मलहम का तत्काल ही लेप कर दिया जाय। इससे उस स्थान पर हिम के समान शीतलता पैदा हो जाती है और रोगी को शाति मिल जाती है दाह बिल्कुल रहती ही नहीं है। रोगी की बेचैनी दूर हो जाती है। यदि फफोले उठ आते हैं या उठ गए हो तो उबाली हुई कैंची से फूली हुई त्वचा को काटकर पानी निकालकर इसी मलहम को लेप कर दे। मैंने इस प्रयोग को शतप्रतिशत १००% रोगियो पर अनुभूत एव अक्सीर पाया है। यह मलहम Antiseptic कृमिहर, पूयहर एवं व्रणरोपक होने से सामान्यतया विसर्प, दाहयुक्त व्रणशोथ और व्यूची (एक्जिमा Aczema) पर भी इसका उपयोग विशेष हितकारी देखा गया है।

घबराहट के लिए—

Allopathic विज्ञान के अनुसार आधुनिक जमाने मे दिल की मजबूती के लिए जैसे Coramine (कोरामीन की सुई) Injection तथा Plasma (प्लाजमा) देते है एवं घाव को साफ रखने के लिए Penicillin (पेनीसिलीन) की सुई तथा सीबाजोल आदि का पाउडर लगाते है, वैसे ग्राम्य जीवन मे पानी में शहद मिलाकर पिलाते रहे। इससे घबराहट दूर होती है तथा एकाएक जलने पर आक के कुछ पके हुए पीले पत्तों को मंगवाकर गीली पीली मिट्टी मे लपटे हुए कपड़े मे लपेटकर कंडो की आग मे थोड़ी देर रखकर बाहर निकाल कर फिर उसका रस निकाल ले और घावों मे टिंचर आयडीन की तरह २-२ घटे से लगाते रहे। इससे जलन शांत हो जायेगी और पूय नहीं पड़ने पायेगी। यह प्रयोग अनुभूत एवं अक्सीर है। इससे शतप्रतिशत लाभ होता पाया गया है। वैद्यगण एव अन्य ग्रामीण जनता भी इसका प्रयोग करके अवश्य देखे और जनता को आर्थिक स्थिति से भी कमजोर न होने दें।

बिच्छु दंश पर—

जब बिच्छु काट खाता है उसके जहर से शरीर मे काफी जलन एवं दर्द पैदा हो जाता है, रोगी बहुत बेचैन हो जाता है। इसके लिए मेरे निम्न दो प्रयोग अनुभूत हैं और ग्राम्य जीवन मे अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध हुए है।

द्रव्य—पुरानी गली हुई सुपारी का चूर्ण, चिलम, आग

विधि व उपयोग—सुपारी के चूर्ण को चिलम मे भरकर आग रख दे। फिर रोगी से चिलम पीने के लिए कहे। जैसे-जैसे उसका धुंआ मुंह मे जायेगा वैसे-वैसे उसका जहर हटता जायगा। फिर रोगी रोने के बजाय हसता हुआ पाया जायेगा।

शास्त्रोक्त परीक्षित योग—

वाग्भट्ट उत्तर स्थान अध्याय ३७ श्लोक ४३ मे वर्णित प्रयोग भी बिच्छु दंश पर सफल रहा है—

शिरीष (संहजन) के बीज आक का दूध पीपल

विधि व उपयोग—शिरीष के बीजो को आक के दूध से तीन दिन घोटकर उसी दवा के बजन के बराबर पीपल मिलाकर बेर बराबर गोली बनाले। जिस स्थान पर बिच्छु ने काट खाया हो वहां कुछ घाव करके थोडा खून निकाल ले बाद मे उस गोली को पानी मे घिसकर उस स्थान पर लगादे, जल्दी ही बिच्छु दंश का काटा हुआ रोगी का विष दूर हो जायेगा और वह रोने के बजाय हंसने लगेगा। यह भी मैंने प्रयोग करके देखा है। इधर पहाड़ी इलाका है और बिच्छु विशेष निकलते रहते है और रोगी भी काफी देखने को मिलते रहे है। उन पर आवश्यकतानुसार दोनो प्रयोगो मे से किसी एक प्रयोग को काम मे लेता रहा हूँ प्रत्येक मे सफलता मिली है।

कर्णशूल में—

शारीरिक व्याधियो मे शूल एक ऐसा रोग है जो रोगी को रात दिन के लिए बेचैन कर देता है और खान पान की ओर तथा स्वास्थ्य की ओर किसी प्रकार ध्यान नहीं जाता वल्कि सदैव वह शूल ही सामने अनुभव होता रहता है। कर्णशूल भी ऐसी ही व्याधि है जिससे रोगी न रात मे और न दिन मे ही सुख की नींद ले पाता है वल्कि हमेशा बेचैन रहता है। इसके लिए—

वकरी का ताजा मूत्र	१ तोला
लौंग	५ नग
अफीम	२ रत्ती
सैंधा नमक	२ रत्ती

विधि व उपयोग—वकरी के मूत्र को एक कटोरी मे कपडे से छान लो, अफीम को पत्थर पर पानी मे घिस लो और मूत्र मे मिला लो। इसी तरह लौंगे और नमक पत्थर पर पानी मे अच्छी तरह पीसकर उसी मूत्र मे मिला लो। वाद मे आग पर रखकर गरम करलो, फिर गरम ही रहने पर दूसरी कटोरी मे कपड़े से छानकर सुहाता-सुहाता जिस कान मे दर्द होता हो उसमे डाल दे। कान का किसी भी प्रकार का दर्द इस दवा से तुरन्त वन्द होता है और रोगी को फौरन आराम मिलता है। वह सुख की नींद सोता है। इसी तरह दूसरे दिन कान की सफाई करके और अच्छी तरह धोकर इसी दवा को कान मे डालो। इससे कर्णशूल तो अच्छा होता है वल्कि कर्णगूथ और कर्णपूय मे भी यह दवा अच्छी सफल हुई है। कान के नासूर मे भी कहीं-कहीं सफल हुआ है।

इस दवा के अलावा जिन दो प्रयोगो को मैंने इस ग्राम्य जीवन मे अनुभूत पाया है वे निम्नोक्त है—

अदरख का स्वरस	आवश्यकतानुसार
शहद	४ बूंद
सैंधानमक	२ रत्ती
शुद्ध तिल्ली का तैल	४ बूंद

विधि व उपयोग—इन सवको एक कटोरी मे लेकर गरम कर ले, फिर गरम-गरम सुहाता-सुहाता कान मे डाले। इससे भी कर्णशूल मे काफी फायदा होता है और ४-६ दिन तक वरावर कान की सफाई करके इसको डाले तो फायदा ही उठाते है। यह प्रयोग कान के दर्द मे ही नहीं कर्णनाद मे तथा कर्ण मे फुन्सी होने मे होने वाले दर्द मे तथा कर्णपूय से होने वाले दर्द में फायदेमन्द सावित हुआ है।

तिल तैल लाल मिर्च

विधि व उपयोग—कान मे विशेष दर्द होने व चटकने पर तिल्ली का तैल कान मे डाल लें और वापिस निकलवा दे। वाद मे पानी मे पीसी हुई लाल मिर्च को गीले कपडे मे लेकर उसकी ४-५ बूंद कान मे निचोड दे, दर्द तुरन्त वन्द होगा।

दन्तशूल में—

सव दर्दों मे दांत का दर्द वच्चे से लेकर वृद्ध तक को वहुत वैचेन करने वाला है। पानी पीना और भोजन करना तो दूर रहा सुख की निद्रा भी एक मिनट नहीं ले सकते। वरावर हाय-हाय मची रहती है। जिस घर मे यह दर्द होता है सारे घर वाले परेशान रहते है। इसके लिए मेरे अनुभव मे आए जो प्रयोग दन्तशूल को दूर करने मे अक्सीर सावित हुए है वे निम्नोक्त है—

कालीमिर्च	गेहूँ का आटा	घी
मुंह पर वांधने की पट्टी		आग
पानी		कटोरी

विधि व उपयोग—पहिले काली मिर्च ३ माशा लेकर महीन पीस लो। गेहूं के आटे को पानी मे सानकर मुंह मे आने लायक दो वाटी वनालो उन वाटियों के वीच मे कालीमिर्च का चूर्ण भरलो और वापिस वाटी जैसी वनालो। उनको आग मे मन्दी आंच पर पकालो, जव पक जावे

तब कटोरी में घी गरम करके उन वाटियों को थोड़ा सा नाखून से फोड़कर उस घी में डालदो और घी पीने दो। पांच मिनट पर उनमें से एक वाटी लेकर पूरी की पूरी मुंह में रखकर मुंह के आगे अच्छी तरह से पट्टी वाध लो जिससे गरम-गरम भाप वाहर न निकल सके। फिर उस वाटी को धीरे-धीरे दातों से चवाओ और फोड़ो जब वाटी विल्कुल ठंडी हो जाय तब मुंह खोल कर दूसरी वाटी को मुंह में लेकर पूर्वोक्त विधि से चवाओ। वाद में एक घंटे तक मुंह में पानी तक न जाने दो। यह प्रयोग दात के दर्द में, दात में लगे हुए कीड़े से उत्पन्न शूल में और पायरिया के कीड़ों में वहुत अच्छा लाभ करता है।

द्वितीय योग—

निम्बु (नीबू)	तिलतैल
कटोरी	आग

विधि व प्रयोग—निम्बु को चार फाके करले और वीज निकाल दे। कटोरी में तैल लेकर उसको आग पर तपावे उसमें निम्बु की फाके डाल दे। अच्छी तरह गरम होने पर थोड़ी-थोड़ी गरम रहने पर जिस दांत में दर्द हो उस दांत के बीच में लेकर खूब जोर से दबावें और सेक होने दे। इसी तरह चारों फाकों से सेक करें और सुवह शाम दोनों समय करें। दांत का दर्द जरूर कम होजाता है, क्योंकि यह अग्निदाह कर्म है और आयुर्वेद में इसका वर्णन शूलाधिकार में प्राप्य है।

तृतीय योग—

वड़ी कटेरी के वीज तिलतैल

लोहे की तीन अंगुल चौड़ी और दो फीट लम्बी शलाका, लम्बी नाल वाली चिलम, आधी पानी भरी चौड़ी किनार की थाली, एक कटोरी, आग

विधि व प्रयोग—पहिले कटोरी में तैल लेकर वीजो को मिलालो। फिर आग में उस लोहे की शलाका के वीच के हिस्से को खूब तपालो। तपाकर उस थाली पर रखदो फिर उस शलाका के तपे हुए हिस्से पर तैल में भीगे हुए वीजों को डालो उसमें खूब धुंआ निकलने लगेगा। उस पर चिलम रखकर उसकी लम्बी नाल को जिस दात में कीड़ा लगकर दर्द हो रहा है उस पर लगादो और धुआ पहुँचने दो। ऐसा करने से दांत में लगे हुए कीड़े थाली में आकर गिर पड़ते है और दर्द दूर होजाता है। ये तीनो प्रयोग प्रत्यक्ष अपने चिकित्सा काल में अनुभूत है। काफी जनता को लाभ पहुचा है।

नेत्रशूल में—

नेत्रो में दर्द तब ही होता है जब आखे आती है और खून का दोर विशेष होने से आखे लाल (सुर्ख) हो जाती है। पानी गिरने लगता है। प्रकाश की ओर देखा तक नहीं जाता है। ककर सा फिरता है और खटकती रहती हैं। इन आंखो के दर्द के लिए प्रारम्भ में निम्न छोटे से प्रयोग लाभप्रद हैं—

आंख आने लगती है उसी समय दोनों कनपटियो पर गीला चूना लगाकर २-४ मिनट मल दो और लगा रहने दो इससे आंख नहीं आवेगी और लाली फटकर आख का दर्द व खटकना दूर हो जायगा।

इसी तरह प्रारम्भ में आने वाली आखो के बगल में दोनो कनपटियो पर वड़ के दूध में रुई के दो फाहे तर कर के चिपकादे। नेत्रशूल व नेत्र लाली दूर होगी और आंखो का शूल आगे नहीं बढ़ने पायेगा।

जब नेत्र दाह होकर दर्द विशेष होने लगता है उस समय ववूल की कोमल पत्तियो को वारीक पीसकर दो टिकिया वनाले और कोरे ठडे पानी के घड़े पर जमादे। जब वे काफी ठडी अनुभव होने लगे तब आखो पर रखकर बाध ले और चित्त

लेट जावें । इस प्रयोग से नेत्रदाह अवश्य दूर होगा और दर्द भी बन्द हो जायेगा। दूध की मलाई का प्रयोग भी रात्रि मे इसके लिये अच्छा रहता है ।

ग्वारपाठे का गूदा	१ तोला
हल्दी	१ माशा
अफीम	२ रत्ती
सुर्ख फिटिकरी	४ रत्ती
लोध्र	४ रत्ती
रसौत	१ माशा
केशर	१ रत्ती

विधि व प्रयोग—इन सबको सिल पर अच्छी तरह पीस कर वारीक कपड़े में लेकर पोटली बनाले और कलई की कटोरी मे रखले। आई हुई कच्ची आंखों मे इस पोटली से अर्क निचोड़ते रहो और आखो के ऊपर फेरते रहो। इस प्रयोग से आखो के अनेक प्रकार के रोग दूर होते है और गर्मी मे आई हुई आखो के लिए तथा नेत्र दाह, जलन व आसुओ के ढलके मे, चोट खाई हुई आखों मे प्रत्यक्ष अनुभूत है । इसके सामने एलोपैथी की आरजीराल आईड्राप, लोकुला आईड्राप, सल्फासीड आईड्राप और पैनिसिलीन व टेरामाइसीन आई आयन्टमेन्ट कोई हस्ती नहीं रखते हैं । वैद्य समाज व जनता इस प्रयोग को कार्य रूप मे प्रयोग करके देखे ।

श्वसनक ज्वर में पार्श्वशूल पर—

अफीम	कपूर	जायफल
हींग		—प्रत्येक सम भाग

विधि व प्रयोग—इन सबको आवश्यकतानुसार बराबर मात्रा मे लेकर पानी में अच्छी तरह पीस लें, फिर कटोरी मे लेकर गरम करलें। जहां दर्द हो वहां चारों ओर इसका गरम गरम लेप देकर ऊपर से आधे जले हुए कपडे को हाथ में पकड़ कर सेक दें। इससे पार्श्वशूल पसली का दर्द जरूर दूर होता है और रोगी को जो दर्द से बेचैनी रहती है, वह तुरन्त दूर हो जाती है।

साधारणत: वेदना के लिए धतूरे की पत्ती के रस मे समुद्रफेन व मृगशृंग घिसकर गरम करके लगाया जाता है जिससे काफी आराम मिलता है। इसके अलावा धतूरे की पत्ती के रस मे सोंठ भुना हुआ चांवल समुद्रफेन बकरी की लेंड़ी बराबर लेकर एक साथ पीस कर गरम करके पुल्टिस के समान लगाया जाता है । यह दोनों प्रयोग भी अनुभूत है ।

अंगुष्ठ या अंगुलिविद्रधि शूल
(Witlow pain)

यह अगुली अगुष्ठ के नख के नीचे से आसपास पकाव लेती है और उसमे काफी दर्द होता है। अत्यन्त बेचैनी व परेशानी रहती है। इसमे विशेष पीप नहीं पैदा होती है लेकिन खून का दौरा बहुत होने से तीव्र जलन, दाह (Burning sension) होता है । मुंह काफी सूखता रहता है । कभी-कभी उल्टियां होने लग जाती है। रोगी को परियाप्त कष्ट रहता है। इसमे निम्न प्रयोग अनुभूत है।

अंगुली या अगुष्ठ के पकने की प्रारम्भिकावस्था मे ही जिसमे जलन व दाह और दर्द विशेष हो रहा हो, उसको मुर्गी के अंडे मे मुंह करके उसमे सिंदूर अच्छी तरह घोलकर घुसाकर रख दे और २४ घंटे रहने दे या पकी हुई कचरिया को लेकर उसके बीच मे अगुली या अगूठे को घुसाकर २४ घंटे रहने दे। एक बार में ही यदि पूरा पकाव लेले और फूट जाय तो ठीक है नहीं तो दुबारा २४ घंटे उसी तरह रखे रहे जिससे वह फूट जायगी और दर्द दूर हो जायेगा। यथेष्ट आराम मिलेगा। बाद मे व्रण पूरक कोई भी मलहम लगाते रहे एक हफ्ते मे घाव ठीक हो जायगा ।

—शेषांश पृष्ठ १०८ पर।

श्री १०८ स्वामी सन्तोषानन्द महाराज

श्री लक्ष्मणायुर्वेदिक रसायनशाला, १३ तिलक रोड, देहरादून

"श्री स्वामी जी ने बाल्यकाल मे ही घर छोड़ कर वैराग्य अपनाया। बनारस मे संस्कृत की उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्वर्गीय रसायनाचार्य श्री श्याम सुन्दराचार्य जी मे आयुर्वेद शिक्षा ग्रहण की। सन् १६२८ में आप देहरादून आए और उत्तराखंड के सुप्रसिद्ध श्री गुरु रामराय मदिर (दरबार) का प्रबन्ध किया। स्वर्गीय श्री १०८ महन्त लक्ष्मण दास जी की आप पर विशेष कृपा एवं वात्सल्यस्नेह रहा। उन्ही की पुण्य-स्मृति मे श्री लक्ष्मणआयुर्वेदिक रसायन शाला स्थापित कर आप रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा करते रहे हैं। आप अ भा उदासीन परिषद् के मन्त्री हैं। श्री लक्ष्मण सेवा समिति के २५ वर्षों से चेयरमैन हैं। आप वर्षों नगर व जिला वैद्य मडल देहरादून के प्रधान रहे और अब भी हैं। आपने अपने अगाध अनुभव सागर के कुछ रत्न पाठको को प्रदान कर हमको आभारी किया है।" —सम्पादक।

माणिक्य रसादि वटी—

माणिक्य रस● इन्द्रजौ
कोयल (गोकर्णी) के बीज कालानमक
सेन्धानमक शु. शिंगरफ पीपल
एलुवा —प्रत्येक २-२ तोला
अजवायन अकरकरा वायविडिग
सोठ मिरच लालबोल
सुहागे का फूला यवक्षार शु. मैनशिल
—प्रत्येक १-१ तोला
केशर जावित्री जायफल
तेजपात इलायची उसारेवंन
—ये प्रत्येक ६-६ माशे

● रस माणिक्य निर्माण विधि—बढिया वरकी हडताल के यव समान टुकड़े करके बडे-बड़े श्वेताभ्रक के पतरों के बीच बिछावे और उनके किनारों को कुटी रुई अथवा केवल गाचरी मिट्टी से बन्द करके गोबरी के कोयलो पर उलट पलट कर सेक ले। माणिक जैसा उन टुकडो का रङ्ग होजाने पर अलग रखे, रस तैयार है।

अथवा बिजली के बेकार बल्व का मुख खोल कर उसमे हडताल डालकर बल्व को चिमटे से पकड कर कोयलो पर सेके। जब हडताल पिघल जावे तब फौरन पत्थर के खरल या चीनी की तश्तरी वगैरह मे डाल दे ताकि वह ठंडा होजावे।

निर्माण विधि—प्रथम शिंगरफ, माणिक्य और मैनशिल मिला कर खरल करे फिर केशर को अलग खरल कर उसमें डाल कर खरल करे। फिर बाकी सब औषधियों का कपड छन किया चूर्ण मिलाकर ६-७ घण्टा खरल करे। बाद मे पान के रस मे ३-४ दिन खरल कर मूंग समान वटिका बना लें।

मात्रा—१ गोली पान के रस से २-३ बार दिन मे देवें।

गुण—इस वटी के प्रयोग से बच्चों का बुखार हृदय अवरोध, श्वास, कास, अफराजन्य शूल आदि रोग दूर होजाते हैं। पसली (डब्बा) रोग में तो इसका प्रभाव बहुत शीघ्र देखा गया है।

शतपत्र्यादि चूर्ण—

फूल गुलाब	२० तोला
असली गिलोय सत्व	कबाबचीनी

छोटीइलायची	श्वेत चन्दन	मौथा
जीरा	खस	वंशलोचन असली
खसखस	गोखरू	ईसबगोल की भुसी
नागकेशर	दालचीनी	तमालपत्र
सारिवा (अनन्तमूल)		कमलगट्टा
नीलोफर		अरारोट

—प्रत्येक १-१ तोला

मिश्री (मोटी दानेदार चीनी) ४० तोला

—कूट छान कर रखें।

मात्रा—१॥ माशे से ३ माशे, ताजे जल से दिन में २-३ बार।

गुण—अम्लपित्त, विदग्धाजीर्ण तथा पेट की खराबी से होने वाले मुखपाक मे इस चूर्ण का अच्छा उपयोग होता है।

:: पृष्ट १०६ का शेषांश ::

सज्जी पिसी हुई कलई चूना पिसा हुआ
कवेलु (कवीला) महीन पिसा हुआ

विधि व प्रयोग—तीनो बराबर लेकर पानी मे पीस कर जिस अंगुली या अगूठे मे दाह, जलन व शोथ है उस पर लेप करदे। ऊपर से गीला कपडा बाध कर उसको ठंडे पानी मे बराबर रखे रहें। ऐसा करने से आधे से एक घंटे के अन्दर वह विद्रधि अपने आप फूट जायेगी और पूय निकल जायेगी। मवाद निकल जाने पर रोगी का दर्द व बेचैनी दूर हो जायेगी। शान्ति मिलेगी फिर उस दवाई को हटाकर व्रण ठीक करने के लिये कोई भी घाव ठीक करने वाला मलहम का प्रयोग करे। घाव ठीक हो जायेगा। इस प्रयोग का उपयोग ग्राम्य जीवन मे काफी सफल पाया है।

आयुर्वेद बृहस्पति श्री रघुवीर शरण शर्मा वैद्य

रसायनशाला, बुलन्दशहर।

"आपका जन्मस्थान ग्राम जानखेड़ा जिला बुलन्दशहर में हुआ। आपकी शिक्षा प्रायः काशी मे हुई जहां पं० श्याम सुन्दराचार्य से आयुर्वेद का शास्त्रीय व क्रियात्मक ज्ञान लाभ किया। आपने अनेक विद्वानों से न्याय वैशेषिक तथा ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किया। हिन्दी के अनेक मासिक पत्रों में आपके अनेक विषयो पर लेख प्रकाशित हुए हैं। आपके रचित ग्रन्थों मे 'भारतीय जीवाणु विज्ञान' और धन्वन्तरि परिचय' प्रकाशित हो चुके हैं। प्रथम पुस्तक पर यू पी. राज्य से ८००) पुरस्कार रूप मे मिल चुका है और यह आयुर्वेद संस्थाओं के पाठ्यक्रम में स्वीकृत है। दूसरी धन्वन्तरि-परिचय पर आयु० तथा यूनानी तिब्बी एकेडेमी से २५०) का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इनके अलावा देवजाति का परिचय, पाताल लोक, सरल ज्योतिष, कृत्या और अभिचार, देवता, हिन्दू विवाह मीमांसा, वेद और आयुर्वेद आपके अप्रकाशित ग्रन्थ हैं। प्रयोगो के विषय मे पाठक स्वयं निर्णय करें कितने लाभकर हैं।" —सम्पादक।

नकसीर पर—

सेलखरी और सोना गेरू पीसकर रखलो।

मात्रा—२ माशे।

अनुपान—शीतल जल, दिन मे ३ बार।

गुण—इसके सेवन से नाक से रक्तस्राव होना बंद हो जाता है। यही योग रक्त प्रदर मे भी अच्छा लाभ करता है।

शङ्ख पुष्पी (शङ्खाहूली) ताजी	१ तोला
काली मिर्च	१५ नग
छोटी इलाइची	७ नग

—इसको ठंडाई की तरह सिल-बटना से पीस कर आध पाव जल मे छान कर पीलें।

मात्रा—प्रातः सायं दो बार। नकसीर मे अच्छा लाभ होता है।

वक्तव्य—इसका प्रयोग हमने गर्मियों मे किया है। जाड़ो मे नहीं।

काले गधे की लीद का रस १ बूंद नाक मे डाल दो। दिन में केवल एक बार। पहले ही दिन लाभ होगा। दूसरे दिन फिर डाल दो इसी में लाभ हो जायगा। इसी योग को कुछ अन्तर से सिद्ध भैषज मणिमाला मे भी लिखा है।

शिर दर्द पर—

कपूर (डली का)	१ तोला
सत्व अजवायन	६ माशा
पिपरमेंट	६ माशा
सौंफ का तैल	१ माशा
दालचीनी का तैल	१ माशा
यूकेलिप्टस का तैल	१ माशा

सत लोहवान	१ माशा
कार्वोलिक एसिड	५ बूंद

—इन सबको मिलाकर १० तोला वैसलीन सफेद मे घोटकर चौड़ी मुंख की शीशी मे भर कर कड़ी डाट लगाकर रखले। इसमे से थोड़ा सा ही शिर पर लगाने से तत्काल शिर दर्द दूर हो जाता है।

वक्तव्य—उपरोक्त औषधियां को वैसलीन मे न मिलाकर शीशी में भर कर भी रख सकते हैं। शिर दर्द पर फुरेरी से लगादे सत्वर लाभ होता है। इसी औषधि की ५-७ बूंद जल में डाल कर अथवा चीनी में मिलाकर खाने से वमन, अतिसार, प्यास आदि रोगों मे भी लाभ करती है।

इसकी फुरेरी लगाने से मधुमक्षिका तथा ततैया के विष मे भी शान्ति मिलती है और लाभ होता है।

रक्तार्श पर—

कासमर्द (कसौदी) के हरे पत्ते	२० तोला
निंवौरी की गिरी	१० तोला
शु. रसौत	१० तोला
काली मिर्च	१० तोला

—इन सबको जल मे पीस कर झड़वेरी के समान गोली वनाले। १-२ गोली दिन में ४ वार शीतल जल से दें। इसके सेवन से शीघ्र ही अर्श का रक्त रुक जाता है।

पांडु रोग पर—

लोह चूर्ण वाजारू जो कि लोहियाओं के यहां मिलता है २० तोला। इसको चीनी अथवा मिट्टी के चिकने वर्तन मे रखकर ऊपर से सूर्यावर्त (हुल-हुल) का रस २० तोला डालकर छाया मे रख दो। इस पात्र के ऊपर वारीक कपड़ा वांध दो ताकि धूल और कीटाणु प्रवेश न कर सके। वीच-वीच में लकड़ी से चलाते रहो जव पूर्ण शुष्क हो जाय तव पुनः २० तोला हुलहुल का रस डालकर पूर्ववत् विधि से शुष्क करलो। इस प्रकार सात वार सूर्यावर्त का स्वरस डाल-डाल कर शुष्क करलो। इसके वाद लोह को हिमामदस्ता मे कूटकर लट्ठे के कपड़े मे छान लो। छानने पर लगभग १५ तोला सूक्ष्म चूर्ण निकल आवेगा। इस सूक्ष्म चूर्ण को लोह के खरल मे सात घंटे तक और घोटलो। फिर एक शीशी मे भरकर रख दो। इसके वाद त्रिफला का चूर्ण ६ तोला कुटकी का सूक्ष्म चूर्ण १८ तोला और उक्त लोह चूर्ण २ तोला लेकर तीनो को मिलाकर खरल करलो। फिर इसको मिट्टी के चिकने वर्तन मे रखकर ऊपर से लगभग २०—२५ तोला हुलहुल का रस डालकर इसके ऊपर वारीक वस्त्र वांध दो और छाया मे सुखा लो। वर्षाऋतु मे धूप मे भी सुखाया जाता है क्योकि वर्षा में असावधानी होने पर इसमे क्रिमि पड़ जाते हैं औषधि विकृत हो जाती है। शुष्क होने के वाद खरल करके शीशी मे भरकर रखलो।

मात्रा—४॥ माशे प्रातः सायं।

अनुपान—जल।

—इसके ४० दिन पर्यन्त सेवन करने से कैसा ही पाण्डुरोग हो दूर हो जाता है। इसके अतिरिक्त यकृत् वृद्धि मे भी पूर्ण लाभ होता है। शरीर स्वस्थ हो जाता है।

पथ्यापथ्य—भोजन मे केवल वेसनी रोटी वह भी अकेली। इसके अतिरिक्त, दूध, दही, दाल, शाक आदि कोई भी वस्तु सेवन नहीं करनी चाहिए। ४० दिन के वाद मूंग की दाल और गेहूँ की रोटी देनी चाहिए। धीरे-धीरे पालक का शाक, टमाटर आदि सभी दिये जा सकते हैं किन्तु उर्द की दाल और अरवी ६ मास तक नहीं देनी चाहिए।

आयुर्वेदाचार्य पं. ब्रह्मानन्द जी दीक्षित विद्यालंकार

राजामण्डी, आगरा।

पिता का नाम— श्री. पं. चतुर्भुज जी दीक्षित तहसीलदार
आयु—६७ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री० दीक्षित जी उन जिज्ञासु चिकित्सकों में से हैं जो निरन्तर आयुर्वेद में अन्वेषण करके कुछ न कुछ प्राप्त करने की भावना रखते हैं। आप संस्कृत, आयुर्वेद व अंग्रेजी के ज्ञाता हैं। आप हमारे पूज्य पिता जी के समवयस्क एवं परिचित सहयोगी हैं। अखिल भारतीय स्नातक वैद्य सम्मेलन ग्वालियर के सभापति तथा यू पी वैद्य सम्मेलन आगरा के स्वागताध्यक्ष रह चुके हैं। आप योग्य चिकित्सक हैं, गत ७ वर्षों से कैंसर (Cancer), अस्थिक्षय, अपची, गंडमाला, अपस्मार तथा कुष्ठरोगादि पर परीक्षणात्मक प्रयोग कर रहे हैं इन पर पर्याप्त सफलता मिली है। आपने अष्टांग आयुर्वेदिक कालेज कलकत्ता में आयुर्वेद का अध्ययन किया। आप सन् १९१४ में गुरुकुल कांगडी से स्नातक हुए। आगरा में आपकी सुयोग्य वैद्यों में गणना है। आपने तीन प्रयोग भेजे हैं जो शतशः रोगियों पर परीक्षण में सफल हो चुके हैं। पाठक अवश्य लाभ उठायें। —सम्पादक।
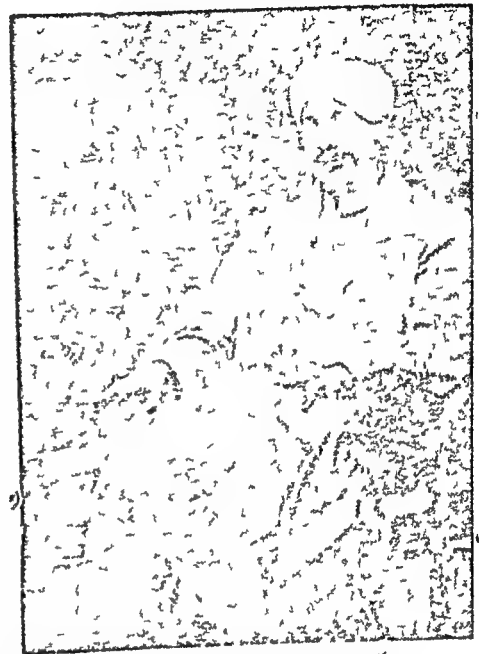
अश्मरी पथरी (Stone)—

निम्न लिखित चिकित्सा केवल वृक्काश्मरी अर्थात् मूत्रमार्ग की पथरी की है। यह पित्ताश्मरी की नहीं है। पित्ताश्मरी पर परीक्षण चालू है। उनके परिणाम के लिये अभी समय लगेगा। इस रोग का परिचय प्राय वृक्कशूल (गुर्दे का दर्द Kidney Pain) से होता है। प्रारम्भ में पसलियों के नीचे कुछ पीठ की ओर कुक्षि शूल प्रारम्भ होता है मूत्ररोध, वायुरोध भी हो जाता है। ऐसी दशा में निम्न प्रयोग सफल सिद्ध हुआ है। इसका प्रयोग अष्टांग आयुर्वेद कालेज के द्रव्यगुण के प्रोफेसर श्रीयुत गिरजाचरण जी गुप्त वंश परम्परा से कर रहे थे। तब मैं वहां द्वितीय वर्ष का छात्र था १९१६ के जनवरी मास में प्रथम बार इस प्रयोग का चमत्कार देखा।

रोगी १० मिनट में ही सो गया और पौन घंटा बाद दूसरी खुराक देने से अधिक मात्रा में विना वेदना के मूत्र निकला और रोगी जो दो दिन रात से जग रहा था फिर सोगया।

रीठा का छिलका	२ तोला
रीठा की गुठली की मींग	१ तोला
स्वर्णवङ्ग बनाने में शेष क्षार	३ माशा

—इनको पुनर्नवा अथवा गोखरु छोटा के पचाङ्ग के स्वरस या क्वाथ की ३ भावना देकर चना प्रमाण गोली बना लेवें।

मात्रा—१ गोली जल से निगलें। चबाऐं नहीं। फिर आधा अथवा १ घण्टा पश्चात् दूसरी गोली जल से देवें। शूल अवश्य शान्त होगा।

इसके बाद अश्मरी को खंड-खंड करके अर्थात चूर्णकर शर्करा रूप में निकाल देने के लिये निम्न

प्रयोग हितकर होता है।

कज्जली	६ भाग
लोहभस्म	२ भाग
ताम्रभस्म	१ भाग

—इन सबको घोट कर पर्पटी बना लेवे।

मात्रा—२ रत्ती से ४ रत्ती तक में जवाखार २ से ४ रत्ती तक, परस्पर घोटकर शहद में चाटे। प्रातः सायं २ बार। इसके आध घण्टा बाद निम्नलिखित काढ़ा पीवे।

छोटा गोखरू	६ माशा
पाषाण भेद	४ माशा
वेजवाडी बडी हरड का वक्कुल	६ माशा
वरुण छाल	६ माशा
जवासा	६ माशा
अमलतास का गूदा	२ तोला
यवक्षार	२ माशा
शिलाजीत	४ रत्ती

—इन सबको कूटकर आधा सेर जल में औटावे। आधा पाव शेष रहने पर उतार कर छान कर ठंडा होजाने पर २ तोला शहद डाल कर पिलावे। सुबह ताजा शाम को फोक औटा कर पीवे।

गुण—इस प्रकार प्राय एक मास में कैलशियम की पथरी तथा औग्जैलिक ऐसिड की पथरी भी खण्ड-खण्ड होकर निकल जाती है। तथापि १ मास तक आगे भी इन औषधियों का प्रयोग करना चाहिए। इससे जीवन में फिर कभी भी पथरी या वृक्कशूल नहीं होता।

मैं स्वयं इनका प्रयोग ३६ वर्ष से कर रहा हूँ और सभी रोगियों को लाभ हुआ है और आज तक भी उनको यह कष्ट नहीं हुआ।

पथ्य—दूध, घी गेहूँ की रोटी हलके शाक फल।

अपथ्य—मिर्च, मसाले, दालें, दही न खांय।

सन्तानदाता—

वीर्य और रज के संयोग से सन्तान उत्पन्न होती है वीर्य में कीटाणु यदि जीवित रह सकते हैं, तो सन्तान अवश्य होती है। निर्बल कीटाणु से निर्बल सन्तान होगी और बलवान से बलवान सन्तान होगी, रोगी से रोगी और स्वस्थ से स्वस्थ होगी। वीर्य स्राव के समय वीर्य के साथ अष्ठीला आदि ग्रन्थियों का भी स्राव मिश्रित रहता है। यह स्राव दो प्रकार का होता है। पहिली प्रकार का स्राव तो क्षारीय (Alkaline) होता है इस क्षारीय स्राव में वीर्य कीटाणु जीवित रह सकते हैं और ऐसे स्राव वाले पुरुषों के ही सन्तान होती है। दूसरी प्रकार का स्राव अम्ल बहुल अर्थात (Acidic) होता है। इसमें वीर्य कीटाणु शीघ्र ही मर जाते हैं। अतः सन्तान नहीं होती। नारियों का स्राव भी इसी प्रकार होता है। इस त्रुटि को मिटाने के लिये निम्नलिखित प्रयोग अनेकों व्यक्तियों पर किया है और प्रायः सर्वत्र ही सफल पाया है।

चिकित्सा पति पत्नी दोनों की ही की जाती है दोनों के अम्लपित्त और अम्ल प्रधानता के दोषों को शान्त कर देना आवश्यक होता है।

प्रारम्भ में इसके लिए श्री लोलिम्बराज का क्वाथ अत्युपयोगी सिद्ध हुआ है।

भूनिम्ब निम्ब त्रिफला पटोली,
वासाऽमृता पर्पट भृंगराजैः।
क्वाथो हरेत् क्षौद्रयुतोऽम्लपित्त
चिरं यथा वारवधूर्विलासः॥

इस काढ़े में भी निशोथ (त्रिवृत) २ तोला मिला कर विरेचन करा देना आवश्यक है। प्रायः ११ दिन तक नित्य क्वाथ पिलाना पर्याप्त होता है। इन ११ दिन के पश्चात्—

अपामार्ग का मूल	१ तोला
काली मिर्च	३ नग

—इनको सिल पर चटनी के समान पीस कर जवान गाय के दूध में या बकरी के दूध में घोल कर नित्य प्रात काल पिला देना चाहिये। धारोष्ण दूध उपयोगी होता है। दूध न मिले तो क्वथित

दूध भी काम देजाता है। दूध पाव भर से कम न हो अधिक हो सकता है। ४२ दिन पति पत्नी दोनों के ही पीने से उनकी दशा सन्तान उत्पन्न करने योग्य होजाती है। यदि अपामार्ग के पंचाङ्ग से सिद्ध किया हुआ घृत भी गरम करके इसी दूध में डाल दिया जाय तो अति शीघ्र लाभकर होता है। यह एक अचूक योग सिद्ध हुआ है।

अपथ्य—दही, खटाई, मिरच आदि न खावे।

जलोदर—

जब उदर के सम्पूर्ण रोग हो जांय उसके बाद यह रोग होता है। यकृत् प्लीहा दोनों ही बढ़ चुकते हैं आंतों में अति मल-सचय हो चुकता है। अग्नि नष्ट हो चुकी होती है। विषमज्वर भी प्रायः पहिले जीर्ण रूप में या बार बार रह चुका होता है। प्रायः पांडुरोग भी साथ में होता है। इन सब रोगों के शरीर में प्रविष्ट हो जाने के बाद जलोदर रोग का आगमन होता है। पसीना, मूत्र की मात्रा कम होने लगती है। चर्म शुष्क हो जाता है। शनैः शनैः पेट फूलता जाता है। जल से भरी हुई मशक के समान पेट प्रतीत होता है। अति बढ जाने पर जांघें, रानें, टांगे नितम्ब और पैर भी फूलने लगते हैं। जल के कारण शोथ ऊपर की ओर बढकर श्वास-प्रश्वास में बाधा डालने लगता है और रोगी की मृत्यु हो जाती है। अन्तिम दिनों में मूत्र प्रायः बिल्कुल ही नहीं होता।

चिकित्सा—

१—रस कुसुम २॥ रत्ती में २ माशा खाने का सोडा (Sodabicarb) मिलाकर जल से पकावे। ५-६ घंटा बाद ५ या ६ दस्त (विरेचन) होंगे। जल, मल, पित्त निकलेगा मूत्र भी होगा। तत्काल शांति प्राप्त होगी।

रस कुसुम की निर्माण विधि—

फिटकरी का फूला	५ तोला
हरी कसीस (कासीस) आग पर सुखाया हुआ	५ तोला
सैंधव लवण आग पर सुखाया हुआ	५ तो.
शुद्ध पारद	५ तोला

—इन चारों को खूब घोटकर दो हांडियो में यथा विधि रखकर मन्दाग्नि से ऊर्ध्वपातन कर लेवे। ऊपर की हांडी में श्वेत कुसुम के समान लगा हुआ ग्रहण करे।

२—आरग्वधादि क्वाथ—

आरग्वधग्रन्थिकमुस्ततिक्ता
हरीतकीभिः क्वथितः कषायः।
सामे सशूले कफवात युक्ते
ज्वरे हितो दीपन पाचनश्च॥
(भैषज्य०)

अर्थात्—अमलतास, पिप्पलीमूल, मोथा, कुटकी, हरड इनका समान भाग, कुल २ तोले। इसमें-

कासनी	३ माशा
पुनर्नवामूल	६ माशा
मकोय	६ माशा

—मिलाकर यथाविधि क्वाथ बनाकर पिलाना चाहिए। तीसरे दिन फिर 'रस कुसुम' की मात्रा देते रहना चाहिए। क्वाथ सुबह ताजा और शाम को फोक औटा कर पिलाना चाहिए। अधिक दस्त होने पर एक समय ही क्वाथ पिलावे। रसकुसुम वाले दिन क्वाथ न पिलावे। मल का रङ्ग लाल, काला, काई जैसा दुर्गन्धित, चिकना होता है। रसकुसुम का प्रयोग ३-३ दिन बाद केवल ४ बार से अधिक न करे।

३—पुनर्नवा, मकोय, कासनी का यथाविधि घृत पाक करे। इस घृत की मात्रा १ तोला दूध से दो बार या तीन बार पिलावें। इस घृत के कारण मल अधिक निकलता है। पेट में शूल भी विरेचन के समय कम होता है। निर्बलता भी अधिक नहीं होने

—शेषांश पृष्ठ १२० पर।

प्राणाचार्य श्री पं. हर्षुल मिश्र आयुर्वेद प्रदीप

आयुर्वेदाचार्य, सहायक आयुर्वेद निरीक्षक-मध्य प्रदेश शासन, रायपुर।

पिता का नाम— श्री पं० रामगोपाल जी मिश्र

"श्री मिश्र महोदय आयुर्वेद के चुने हुए विद्वान एव चिकित्सक, साहित्य सेवी, जन-सेवक, समाज के नेता एव कर्मनिष्ठ तपस्वी हैं। आप क्षयरोग, मथर ज्वर, श्वसनक (निमोनिया), सन्निपात ज्वर, प्रदर (रक्त और श्वेत), यकृत और प्लीहा के रोग, रक्तपित्त आदि रोगो के विशेष अनुभवी चिकित्सक हैं। उपरोक्त उपाधियो के अतिरिक्त आप आयुर्वेदरत्न हैं। आपकी साहित्यक रचनायें, मालदेव नदिनी (उपन्यास), श्री हर्षुल धर्म-विवेचन, क्षयरोग चिकित्सा विज्ञान, ज्वर रोग चिकित्सा विज्ञान, नाडी विज्ञान प्रकाशित हो चुकी है तथा आयुर्वेद पाठावली, सार चिकित्सा पद्धति, आयुर्वेद समन्वय चि. पद्धति, बाल आयुर्वेद, श्री हर्षुल आयुर्वेद विवेचन, गृहस्थ धर्म आपकी अप्रकाशित पुस्तकें हैं। जीवन मे आपने अनेक संस्थाओ का कार्य भार समय-समय सभाला है जिनके आप मत्री व अध्यक्ष रह चुके है। आपने राष्ट्रीय कांग्रेस मे रह कर देश की महान सेवा की है उसी प्रसग मे आपको जेल यात्रा भी करनी पड़ी। आयुर्वेद सगठन के लिए भी मध्य प्रदेश मे आपने अकथ परिश्रम किया। सन् ३५ मे मध्य प्रदेश आयुर्वेद मण्डल के उपमन्त्री एवं अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष रहे। वर्तमान मे मध्य प्रदेश छत्तीसगढ की सरकारी आयुर्वेद तथा यूनानी सस्थाओ के सहायक आयुर्वेद निरीक्षक के पद पर कार्य करते हुए जनता तथा आयुर्वेद की सेवा फरवरी १९५६ से कर रहे हैं। आपके भेजे हुए प्रयोग जो हमारे आग्रह पर अपना समय निकाल प्रकाशनार्थ भेजे हैं साभार पाठको की सेवा मे समुपस्थित हैं।" —सम्पादक।
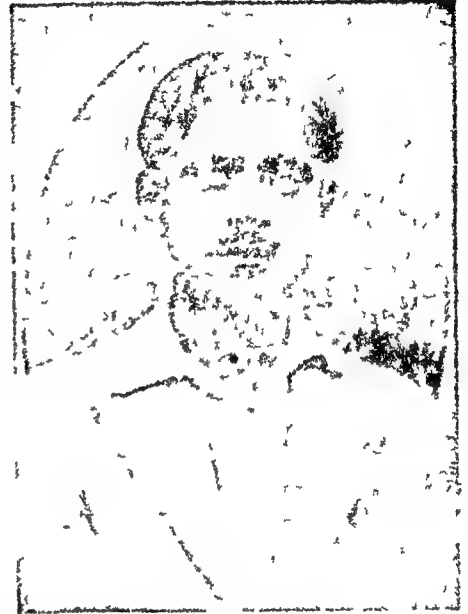
ऊर्जाकर महौषधि—

मैंने धातुदौर्बल्य, स्नायुदौर्बल्य, नपुंसकता, स्वप्नदोष, हृदयदौर्बल्य आदि पर अपने चिकित्सा काल मे अनेक रस भस्म और शास्त्रीय औषधियाँ का प्रयोग किया और इससे थोड़ा बहुत लाभ भी हुआ किन्तु उनका प्रयोग सफल चिकित्सा की दृष्टि से सतोषजनक नहीं रहा। क्रमशः अनुभव के आधार पर, विशुद्ध कुचला, जलतर जामनी रग की उत्तम कातलौहभस्म, प्रवाल पचामृत, नागभस्म वंगभस्म और श्वेत सखिया भस्म उपर्युक्त रोगो के लिये न्यूनाधिक मात्रा मे लाभप्रद सिद्ध हुई, किन्तु अलग अलग इन औषधियो का प्रयोग उतना प्रभावशाली नहीं मालूम हुआ, जितना इनका समन्वित योग प्रभावशाली मालूम हुआ। इसलिए उपर्युक्त रोगो की सफल चिकित्सा के रूप में उपर्युक्त महौषधियो का सिद्धयोग वैद्य बन्धुओ के समक्ष जनहित की कामना से प्रकाशित कर रहा हूँ—

कुचला (गौघृत मे पक्व बदामी रग का कुचला चूर्ण) २ तोला

हिंगुल भस्म (अजवाइन, भिलावा और गौघृत के कल्क के संपुट मे, लौहपात्र मे पक्व किंचित् लाल स्याम वर्ण) ½ तोला

कांत लोहभस्म (हिंगुलयोगेन जारित जलतर जामुनी रंग की उत्तम भस्म) ½ तोला
नागभस्म (तिलपर्णी के योग से जारित किंचित् हरित वर्ण) ½ तोला
वङ्गभस्म (हरताल योगन जारित खाकी रग की जलतर) ½ तोला
श्वेत संखिया भस्म (बैंगन के गर्भ मे रखकर लघुपुट मे फूंकी हुई खाकी रग की भस्म। २ माशा
लशुन का महीन चूर्ण मुलैठी का चूर्ण
श्वेत शुद्ध गुंजा चूर्ण प्रवाल पंचामृत
स्यामा तुलसी का चूर्ण —प्रत्येक २-२ तोला

विधि—समस्त औषधियो को उत्तम पत्थर के किस्ती-नुमा खरल में डालकर, कृष्णभांगरे के स्वरस की भावना देकर तथा लगातार ७२ घंटे मर्दन कर ५ रत्ती की गोलियां बना लेना चाहिये। इन गोलियो को अच्छी तरह छाया में सुखाकर काच की स्वच्छ शीशी में भरकर कार्क लगा-कर सावधानी पूर्वक रखना चाहिए।

प्रयोग—रोगी के वलावल के अनुसार ½ से १ गोली प्रात. भोजन के पूर्व और रात्रि को सोते समय शर्करायुक्त गाय के गर्म दूध के साथ सेवन करना चाहिए।

गुण—यह औषधि समस्त लकवा, गठिया और गृध्रसी. आदि वातरोग, स्नायुदौर्बल्य, हृदय रोग, श्वास, कास, पाण्डु, मंदाग्नि, धातुक्षीणता, नपुंसकता, स्वप्नदोष, मूर्च्छा, अंग शिथिलता, दौर्बल्य थकावट आदि को अवश्य दूर करती है। इस औषधि से शरीर के प्रत्येक अवयव को उत्तेजना और बल मिलता है। रतिशक्ति बढ़ाने के लिए इस औषधि का प्रयोग नित्य प्रात. सायं मुसली कन्द के मधुर हिम के साथ दे।

मूसली का हिम बनाने की विधि—

मुसली	१ तोला
मिश्री	२ तोला
जल	१ पाव

—सबको लकड़ी की मथानी से मथ कर एक मिट्टी या कांच के पात्र मे रातभर या दिनभर रहने दें। रात के रखे हुए हिम को प्रातः और दिन के रखे हुए हिम को संध्या के समय या रात्रि को सोते समय ऊर्जाकर महौषधि के साथ सेवन किया करे। इस प्रकार ४५ दिन सेवन करने से ६० वर्ष का वृद्ध मनुष्य भी कामवेग से आतुर हो उठता है, इसमे सदेह नहीं। हमने अपने जीवन मे, अनेक रोगियों पर सफल प्रयोग करने के बाद यह बात लिखी है।

टिप्पणी—यह बात ध्यान रहे कि इस योग के निर्माण मे द्रव्यों की उत्तमता पर विशेष ध्यान रखना चाहिये। हीन द्रव्य लेने पर औषधि के प्रभाव में भी हीनता आने की सम्भावना रहती है।

स्तनों में दुग्ध वर्धन करने वाला योग—

"लशुनमुसलीकंद के बीज"

यह वनौषधि बालाघाट जिले के जङ्गलों मे नाले के किनारे वर्षा के बाद जाड़े मे मिलती है। इसका पौधा लशुन के पौधे के सदृश्य होता है। पत्ते और गांठ सब लशुन के समान ही होती है। अतर इतना ही है कि लशुन कन्द मे ठोस कलियां होती हैं और लशुन-मुसली-कन्द की कलियों मे खसखस से भी बारीक बीज होते है। ये बीज जिस बच्चे वाली स्त्री को दूध नहीं होता, पान के बीड़े मे रखकर खिलाये जाते है। इन बीजों की मात्रा ४ रत्ती से ८ रत्ती है। केवल एक बार इसके बीजो के सेवन से १२ घटे के अन्दर स्तन दूध से इतना भर जाता है, कि दुग्ध स्तन से आप ही आप टपकने लगता है। यह प्रयोग पूर्ण सफल है। इसको सेवन करने वाली स्त्री के बच्चे तीन-तीन वर्ष की उमर होने तक पर्याप्त मात्रा मे मां का दूध पीते हैं और मा दुबल नहीं होती।

नार बरियारी (नागबला)

यह 'बला' जाति का पौधा है, जो लत्ता के समान जमीन पर फैलता है। इसी को वैद्यक में कदाचित्त नागबला कहते हैं। छत्तीसगढ़ में इसे नार बरियारी बोलते है। इस औषधि के २॥ तोला से ५ तोला स्वरस को मिश्री मिलाकर पीने से दो-तीन मात्रा में ही भयंकर अधिक और अस्वाभाविक रजःस्राव रुक जाता है। यह औषधि रक्तपित्त को भी तुरन्त रोकती है। धातुस्राव और पित्तज प्रमेह तो इसके सेवन से आठ दस दिन में ही आराम हो जाते हैं।

प्रमेह पीडिका (कारबंकिल) की अमोघ औषधि—

गूलरफल—

गूलर के पके फलों को सुखाकर चूर्ण करलो। १ तोला चूर्ण नित्य जल के साथ सेवन करने से प्रमेह पीडिकायें एक सप्ताह के अन्दर निश्चयपूर्वक आराम होने लगती हैं। एक माह में मधु प्रमेह और प्रमेह पीडिका के समस्त उपद्रव दूर हो जाते है। मूत्र सम्बन्धित समस्त विकार इससे दूर होजाते है। मधु प्रमेह और रक्त दोष पर हमारा यह सर्वोत्तम योग है। मधुप्रमेही को इसके सेवन काल में यव का अन्न ही पथ्य के रूप में लेना चाहिए।

क्षयज कासपर बहेड़े का प्रयोग—

बहेड़े के फलों के छिलको को कूटकर महीन कपडछान करलो। बहेड़े का महीन चूर्ण ऽ१ सेर और १ सेर बकरे का मूत्र दोनों को पत्थर के एक बड़े खरल में डालकर बहेड़े की लकडी के सोटे से खूब घोटो। जब बकरे का मूत्र सूख जाय तो पुनः १ सेर बकरे का मूत्र डाल दो और फिर उसी प्रकार घोटो। इस प्रकार बकरे के मूत्र की सात भावना देने के बाद सम्पूर्ण चूर्ण छाया में पूरी तरह सुखालो और महीन पीस कर शीशी में सुरक्षित रख दो।

मात्रा—१ माशा से ३ माशा तक।

अनुपान—मधु।

समय—प्रति ४ घंटे के बाद दिन में ३-४ बार दें।

गुण—यह औषधि क्षयज कास और कुक्कुर कास को तुरन्त आराम करती है। इसके सेवन करते ही खासी का वेग कम हो जाता है। खांसी के लिए यह हमारा सर्वोत्तम योग है।

श्वसनकज्वर—(निमोनियां की खासी और फुपफुस प्रदाह में इसका प्रयोग नीचे लिखी औषधियो के साथ करते है। इसी औषधि से हम निमोंनियां पर विजय पा लेते है।

अजामूत्र भावित बहेड़े का चूर्ण	१ माशा
अभ्रक भस्म निश्चन्द्र शतपुटी	½ या १ रत्ती
मृगश्रृंग भस्म	२ रत्ती
मुलैठी चूर्ण	४ रत्ती

मात्रा—सब १ बार में।

अनुपान—मधु या गर्मजल।

समय—प्रति ३ घंटे के अन्तर से दिन रात में ३-४ बार दे।

:: पृष्ठ ११८ का शेषांश ::

कफ कर्तरि—

फिटकरी सैंधव साभर सर्जीक्षार

—को आग पर अर्क दुग्ध में पका ले फिर शीतल होने पर ६ माशा रससिंदूर या अभाव में शुद्ध रूमी शिगरफ मिलाकर खरल कर ले। लाल रङ्ग का चूर्ण तैयार होगा।

मात्रा—१ से ४ रत्ती तक।

अनुपान—शहद या पान के साथ।

गुण—सहस्रो रोगियो पर सफलता प्राप्त अनुभूत प्रयोग है। चिपके हुए कफ को पतला कर निकाल देता है।

वैद्य पं. अम्बालाल जोशी आयुर्वेद केशरी

प्रभाकर 'साहित्यायुर्वेदरत्न'
अध्यक्ष—मोहन आयुर्वेदिक औषधालय (पुंगल पाड़ा) मकराना मोहल्ला, जोधपुर।

पिता का नाम— वैद्य मोहनलाल जी शर्मा
आयु— ४० वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री जोशी जी का परिचय पाठको को हम कई बार दे चुके हैं सभी विशेषांको मे आपका सहयोग रहा है। आप एक सफल चिकित्सक ही नही योग्य लेखक भी हैं। आप आंत्रिक ज्वर तथा उदर रोगो के विशेषज्ञ हैं। आपने १. योग संग्रह एव २. आन्त्रिक ज्वर नामक दो पुस्तकें लिखी हैं जो अप्रकाशित हैं। आपके परिवार मे पीढियो से आयुर्वेद चिकित्सा का व्यवसाय होता आया है। आप अपने उच्च निवन्ध रचना ज्ञान पर स्वर्ण पदक प्राप्त कर चुके हैं, आपको १८ वर्ष का चिकित्सा अनुभव है। आपके अनेक लेख धन्वन्तरि तथा अन्य पत्रो मे प्रकाशित होते रहे हैं। कई पत्रो के सम्पादक रहे हैं। आप सार्वजनिक कायो में उत्साह से भाग लेते हैं अतः बड़े जन-प्रिय हैं। आपके ६ प्रयोग यहां प्रेषित है पाठक उनसे लाभ उठावें और चिकित्सा में यश के भागी बनें।" —सम्पादक।

सरस्वती पाक—

ब्राह्मी शंखाहूली शतावर
शुण्ठी अमृता (गिलोय) अपामार्ग
विडंग वच केशर
जायफल जावित्री —प्रत्येक १-१ तो.
अकरकरा अश्वगन्धा
—प्रत्येक २-२ तोला

कस्तूरी २ माशा
बादाम की मिंगी आधा पाव
पिश्ता १ आना भर
चिरौंजी ककडी तरबूज
आल खरबूजे की मज्जा (मगज)
—प्रत्येक १-१ तोला

छोटी इलायची १ तोला
मुक्ताभस्म २ माशा
सुवर्ण पत्र १ माशा
रजत पत्र ७५ गोघृत १ पाव
मिश्री ३ पाव
पानी आधा सेर

निर्माण विधि—(1) काष्ठ औषधियो को अलग कूट कर वस्त्रपूत कर ले।

(ii) बादाम आदि मगजो को सिल पर अलग पीस कर रखे।

(iii) पाक विधि से पाक बनाकर केशर कस्तूरी मुक्ता पिष्टी आदि मिला दें ।

गुण—इस पाक का नित्य प्रति सेवन करने से स्मृति धी, धृति की वृद्धि होती है। मस्तिष्क तथा वातवाहिनी नाड़ियों पर इस पाक का सीधा प्रभाव पड़ता है, अनुभूत है। अपस्मार, उन्माद तथा योषापस्मार में लाभप्रद है।

अमृत भस्म—

प्रवाल शाखा मुक्ताशुक्ति अकीक पत्थर
बेर पत्थर शखनाभी पीतकपर्द
—प्रत्येक १-१ तोला।

निर्माण विधि—सबको शामिल कूट कर छान ले फिर ½ सेर गोदुग्ध में डालकर गजपुट दें। फिर गुलाब वारि में घोट कर टिक्की बनाकर सुखा ले तथा १० सेर कण्डों की अग्नि दें। ऐसे ३ पुट दें। आवश्यकता पड़ने पर पुनः पुट दें। जीभ पर रखकर इस भस्म को देख ले यदि तीक्ष्ण हो तो और गुलाबजल का पुट दें। फिर आधी बोतल गुलाब जल में घोटकर पिष्टी बनाले।

गुण—यह पिष्टी समस्त स्त्रीरोगों की अनुपम दवा है। गर्भिणी के तथा बालकों के चूने की कमी से होने वाले रोगों में लाभप्रद है। हृद्रोग को लाभ करती है। प्रमेह तथा मधुमेह में भी लाभ करती है। अधिक काल तक सेवन करने से चमत्कार प्राप्त होता है।

अनुपान-मधु, मक्खन या आवश्यकतानुसार परिवर्तित किया जा सकता है। यह प्रयोग-रत्न स्वामी श्री शान्तानन्द जी महाराज द्वारा प्राप्त हुआ था।

कुष्ठ हर योग—

सोमराजी गन्धक रसायन नं० १
कृष्ण जीरक आरोग्य वर्धनी नं० २
—प्रत्येक २-२ तोला

मात्रा—३ माशा।

अनुपान—पानी के साथ सेवन करें। इससे समस्त चर्म रोग, रक्त रोग शांत होते है। श्वेत कुष्ठ पर अधिक दिन सेवन करते रहने से यह औषधि अपना अमोघ प्रभाव दिखाती है। बृहद् सोमराजी तैल की मालिश भी इसके साथ आवश्यक है।

विचर्चिका मलहम—

आंवलासार गन्धक मनःशिल हरताल
तुत्थ (तूतिया) मृद्दार श्रृंग
—सम भाग अर्थात् १-१ तोला

कपूर ६ माशा
सिंदूर १ तोला
सुहागा १ तोला

—वस्त्रपूत कर मिश्रण कर ले तथा वैसलीन में मिलाकर मल्हम बना ले।

गुण—यह मल्हम दद्रु, विचर्चिका के लिए शतशोनुभूत है। कभी कभी लगाने पर जलन होने की स्थिति में अधिक वैसलीन मिला ले।

सिरशूलान्तक—

पुष्करमूल, शुण्ठी तथा चित्रक को पीसकर चूर्ण बना ले।

मात्रा—३ माशा।

अनुपान—दुग्ध या कौटी का पेड़ा●।

सम्पूर्ण सिर.शूल, अर्धावभेदक आदि पर परम लाभदायक है। हमें किसी भी व्यक्ति से इस औषधि के लाभ न करने की शिकायत आज तक न मिली। पूर्ण अनुभूत है।

सूर्यावर्त की दारुणतम स्थिति में इसे लाभप्रद पाया है। कभी-कभी षडबिंदु तैल को नासिका में टपकाना भी अत्यावश्यक हो जाया करता है।

—शेषांश पृष्ठ ११६ पर।

●कौटी का पेडा से अभिप्राय कम मीठा डाला हुआ मावा का पेड़ा है।

श्रीमती बेलारानी देवी भट्टाचार्य विद्यार्चना

कर्मनेत्री—नारीकल्याण योजना, झांसी।

पिता का नाम— श्री शारदा सुन्दर चक्रवर्ति
पति का नाम—आचार्य कवि. श्री कृष्णपद भट्टा.

"आप अखिल भारत वैज्ञानिक सत्योदय समाज, झासी के भारत प्रसिद्ध सस्थापक आचार्य कविराज श्री कृष्णपद भट्टाचार्य की धर्मपत्नी हैं तथा सत्योदय समाज की कर्मनेत्री-नारी कल्याण योजना। आपने उन प्रयोगों को प्रेषित किया है जिनको आपन अपने गुरु कविराज शिरोमणि पं योगेन्द्रनाथ दर्शनशास्त्री आयुर्वेदाचार्य (कलकत्ता) से प्राप्त किया तथा जिनको कविराज श्री कृष्णपद भट्टाचार्य जी ने भी अपने चिकित्सा व्यवसाय मे व्यवहार कर सफल प्रमाणित घोषित किया हे। आशा है पाठक इन प्रयोगो से पीडित जनता का कल्याण करने मे समर्थ होगे।"

—सम्पादक।

धातुक्षीणता के लिए—

जातीफल (जायफल) लौंग
कपूर काली मिर्च
—चारो १-१ तोला

सहस्रपुटित लौहभस्म स्वर्णभस्म
कस्तूरी रससिंदूर
—चारो १॥-१॥ माशा

—पान के रस मे ३ दिन तक भावना देकर २-२ रत्ती की गोली बनाले।

अनुपान—हस्तमैथुन मे पान का रस और मधु। स्वप्नदोष मे अश्वगन्धा चूर्ण १॥ माशा और मधु। अधिक स्त्री-सहवास मे श्री मदनानन्तक मोदक १॥ माशा और मधु। शोक एवं मानसिक पीड़ा में ब्राह्मी स्वरस ६ माशा, आमला स्वरस ६ मा और मधु के साथ

गुण—हस्तमैथुन, स्वप्नदोष एवं अधिक स्त्री-सहव

श्री कृष्णपद भट्टाचार्य।

शोक और मानसिक पीड़ा से जो धातुक्षीणता होती है उसमे यह प्रयोग अव्यर्थ सिद्ध हो चुका है।

यकृत रोग में यकृद्दारि क्वाथ—

हरड़	आवला	बहेडा	नीमछाल
मजीठ	वच	कुटकी	गिलोय
दारुहल्दी		—प्रत्येक ३-३ माशा	

—कुल द्रव्य ?। तोला, आधा सेर पानी मे उबालकर आधा पाव रहने पर उतार लेना चाहिये।

अनुपान—यकृत शूलापह योग के साथ दिन मे दोपहर, शाम लेना चाहिए।

गुण—यकृत मे किसी प्रकार की पीडा क्यो न हो इस प्रयोग से अवश्य ही लाभ होगा।

यकृत शूलापह योग—

शुद्धहिगु (हींग)	सोठ	पिप्पली
कालीमिर्च	कूठ	जवाखार
सेंधानमक	—साता १-१ तोला	

—सब वस्तुओ को एकत्र मिलाकर १॥ माशे से तीन माशे तक एक मात्रा के साथ।

अम्लपित्तान्तक योग—

शङ्खभस्म	४ तोला
खाने का सोडा	४ तोला
इमली छाल भस्म	बड़ी इलायची चूर्ण
सोंठ चूर्ण	—तीनों १-१ तोला

—सब चीजे एक साथ मिलाकर १॥ माशा की मात्रा मे गरम पानी के साथ देना चाहिए।

गुण—अम्लपित्त बदहजमी, पित्तशूल, अफरा आदि उदर सम्बन्धी रोगों मे यह चमत्कारी प्रयोग है।

बङ्गाल का प्रसिद्ध—

ज्वर का लाल गुड़ा या ज्वर विद्रावन—

सौंठ	पिप्पल	कालीमिर्च
हरड	बहेड़ा	आंवला
लालचन्दन	नीमछाल	पीलीसरसो
कूठ	हिंगुल	कुटकी
	—प्रत्येक ३-३ माशा	
रससिंदूर		३ तोला

—सब चूर्ण को एक साथ मिलाकर दो से आठ रत्ती तक मात्रा, हारसिंगार के पत्ते का रस १ तोला के साथ देने से ज्वर तीन दिन मे अवश्य बन्द हो जाता है।

गुण—मलेरिया ज्वर हो या मौसमी ज्वर हो आप इस लाल गुडा का प्रयोग सिर्फ हारसिंगार के रस के साथ कीजिये। देखेंगे यह लालगुडा कुनैन से भी अधिक फलदायी है।

शुक्रमेह की अचूक दवा—

जातिफल	अकरकरा (वच)	लौंग
सोंठ	काकोली	केसर
लालचन्दन	—साता १-१ तोला	
अभ्रकभस्म शतपुटी		४ तोला
अफीम (अहिफेन)		४ तोला

—पानी मे मर्दन करके ३-३ रत्ती की गोली बनाले।

गुण—धातुपुष्टिकर कोई भी अनुपान हो उसके साथ लेने से शुक्रमेह नष्ट होजाता है।

: पृष्ठ ११३ का शेषांश :

पाती। अब तक पथ्य मे केवल दूध ही देवें। गोदुग्ध छागदुग्ध या उष्ट्री दुग्ध ही देना चाहिए।

जब उदर तथा सर्वाङ्ग का शोथ समाप्त प्राय हो जाय, जलीय अंश न रहे तब शरपुंखा की अन्तर्धूम भस्म मात्रा १ तोला गोतक्र से दिन मे दो चार देवें। साथ मे वर्धमान पिप्पली का भी प्रयोग करे। 'पिप्पली' गोदुग्ध मे २४ घंटा भिगोकर सुखा कर रखली गई हों। ११ पीपल से अधिक न बढ़े। इस योग को १ मास या १½ मास तक गोतक्र से देवे। इसके बाद शनै. शनै अन्न देवे।

इतनी चिकित्सा के बाद पुन. जलोदर की आशंका नहीं रहती। दही का भोजन सर्वथा त्याग देवे॥

व्याकरणाचार्य श्री भवनाथ झा साहित्यरत्न

आर्यावर्त प्रकाशन मन्दिर, पटना ।
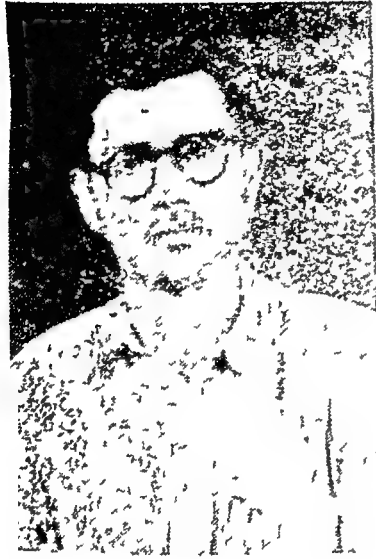
पिता का नाम— श्री पं पिनाकनाथ झा
आयु—३१ वर्ष जाति—मैथिल ब्राह्मण

"श्री झा महोदय आधुनिक पटना के एक रत्न हैं। आपका जन्म-स्थान लालगज पो. सरिसवपाही जि० दरभगा है। वर्त्तमान मे आप आर्यावर्त प्रकाशन मदिर शब्दकोष विभाग पटना मे कार्यरत है। सस्कृत हिन्दी के अतिरिक्त मैथिली साहित्य मे भी रत्न हैं। आयुर्वेद, कर्मकाण्ड तथा सांस्कृतिक पुरातत्व अन्वेषण विषय का आपका विशेष अध्ययन है। सन् ४१ से तीनो भाषाओ मे निरन्तर आपकी कवितायें व लेखादि प्रकाशित होते रहे है। सम्प्रति अखिल विश्व लेखक सघ (अन्तर्राष्ट्रीय पी. ई ए) की भारतीय शाखा के सदस्य है। आयुर्वेद की अन्वेषण अभिरुचि आपकी पैतृक देन है उसी के सफलीभूत ये निम्न प्रयोग जो इन्हे अपने अडोस-पडौस इष्ट परिवारो की सहायता के आधार पर प्राप्त हुए है, प्रेषित किए है।"

—सम्पादक ।

उन्माद—

—वच के चूर्ण को दूध और घृत के साथ सेवन करने से उन्माद रोग बहुत कुछ शान्त होजाता है।

मात्रा—वच का चूर्ण ४ रत्ती से ८ रत्ती, घृत आधा तोला तथा दूध आधा पाव। यह साधारण मात्रा है।

—रोगी के एवं उन्माद रोग के बलाबल को ध्यान मे रखते हुए पुराने गोघृत का यथानुपातिक मात्रा मे यथावश्यक सेवन प्रयोग विशेष लाभप्रद होता है।

अञ्जन एव नस्य—

कूठ वच तगर मुलहठी
हींग लहसुन का रस
सिरस के बीज का चूर्ण —सब समान भाग

—बारीक चूर्ण कर बकरी के दूध मे पीसकर यदि अंजन एव नस्य के रूप मे प्रयुक्त किया जाय तो तात्कालिक लाभ दीख पडता है।

उपदंश—

—कन्नेर (मैथिली—कनैल)* की जड़ पानी के साथ पत्थर पर पीसकर लेप करने से शान्त होता है।

—अगर की छाल को पीसकर लेप करने से भी व्रण दूर होता है।

—केवल सुपारी पीसकर लेप करने से भी व्रण का प्रकोप शान्त हो जाता है।

—दुपहरिया (फूल) के पत्तों के चूर्ण के लेप से व्रण पर विशेष लाभ होता है।

—गुप्तेन्द्रिय व्रण के लिए हरड़ और रसौत पीसकर लेप विशेष लाभप्रद देखा गया है।

---

*कन्नेर, सस्कृत एव मैथिली में करवीर, लाल रङ्ग के फूल वाली कन्नेर की जड। —लेखक

वाघी—

—प्रारम्भिक अवस्था मे पत्थर की टुकड़ी या पिसे हुए नमक की पोटली, या वालू की पोटली आग मे गरम कर वाघी के स्थान पर सेकना विशेष आराम पहुँचाता है।

—पीपल के पत्तो को गरम कर पट्टी देने से भी वाघी मे आराम पहुँचता है।

वद—

—प्याज को पीस कर घी और हल्दी के साथ सुसुम (गुनागुना गरम) कर वाधने से "वद" शीघ्र पक कर फूट जाता है।

श्वास—

—अपामार्ग (चिड़चिड़ी) के वीज एव मञ्जर (मञ्जरी) को यथानुपातिक मात्रा मे कूट-पीस कर धूमपान करने से वहुत आराम पहुँचता है।

प्रसव वेदना—

—अपामार्ग की जड़ को पानी मे पीसकर पेड़ू या पांव मे लेप करने से बच्चा शीघ्र निकल आता है। प्रसव हो चुकने के वाद तत्काल छुटा देना चाहिए।

—भृङ्गराज (मैथिली-भङ्गरिया) की जड को गङ्गा जल मे धोकर कुमारी कन्या या सधवा स्त्री द्वारा जनेऊ से बांधकर कमर मे बांध देने से भी निश्चय सुख प्रसव होजाता है।

अरुचि—

—खट्टे अनार के रस, कालानमक (मैथिली-विट-नोन), एवं शहद के साथ मुंह मे रखने से विशेष रुचि आजाती है।

अफीम खालेने पर—

—करमी* के पत्ते का रस आधी छटाक से लेकर एक छटांक तक या यथोचित मात्रा मे पिलाने से अफीम का नशा तत्काल उतर जाता है।

पथरी होजाने पर—

—वासी पर्य्युपित जल मे कचरी (हिन्दी–ककडी, संस्कृत–गोपाल कर्कटी) की जड को पीस कर लगातार तीन रात तक पीने से व्याधि शान्त हो जाती है। मात्रा–१ तोला।

मूत्रकृच्छ्र पर

—पीले कचनार (पीत कांचन–संस्कृत) के प्रयोग से इस रोग की विपमता दूर हो जाती है।

---

*करमी का सस्कृत पर्याय "कलम्बी" है, मिथिला मे इसे करमी कहते हैं और इधर के लोग इसका शाक भी खाते है। —लेखक।

वैद्य श्री खेमराज शर्मा छांगाणी

आयुर्वेद विशारद, छांगाणी आयुर्वेद भवन, आर्वी (वर्धा)

"श्री खेमराज जी के परिचय की विशेष आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आपका जन्म उज्ज्वल छांगाणी परिवार में हुआ है। भारत विख्यात वैद्य श्री गोवर्धन जी शर्मा छांगाणी के कनिष्ठ भ्राता व रामलाल जी के सुपुत्र हैं। वर्धा एवं आसपास के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त सफल चिकित्सक हैं। आप एक सफल सिद्ध हस्त चिकित्सक एवं औषधि निर्माता हैं। यही कारण है आप सर्व साधारण जनता में अत्यन्त लोकप्रिय हैं। धन्वन्तरि के पाठक आपकी लेखनी का रसास्वादन समय समय पर लेते ही रहते हैं। इनके कतिपय उत्तम प्रयोग, जो सरल एवं शतशोनुभूत हैं यहां प्रकाशित कर रहे हैं। चिकित्सक प्रयोग में लाकर लाभ उठावें।" —सम्पादक।

रक्तदोषहर गूगल—

नरकचूर	वायविडङ्ग	मजीठ
लोध	गुलबनफशा	त्रिफला
बबूल की अन्तर छाल		रेवन्दचीनी
चोपचीनी	कबाबचीनी	दालचीनी
उसवा	अनन्तमूल	अंजुबार

—प्रत्येक १-१ तोला।

शुद्ध कणगूगल — १ पाव

—प्रथम काष्ठादिक औषधों को कूटकर बारीक कपड़े से छान लेवें पश्चात् गूगल के साथ लोह खरल में डालकर खूब कूटें एवं घृत के सयोग से ४-४ रत्ती की गोलियां बनालें।

मात्रा—प्रात साय २ से ४ रत्ती तक भृङ्गराज स्वरस २ तोले के साथ अथवा किसी भी रक्तविकार नाशक क्वाथ यथा महामंजिष्ठादि क्वाथ, अर्क उसवा आदि के साथ सेवन करावें।

गुण—चर्म रोग जैसे फोडा, फुंसी खुजली, दाद, उपदंश जन्य रक्तदोष आदि में अति लाभकारी है, साथ ही शरीर में नया शुद्ध रक्त निर्माण होता है, वायुविकार में भी इस गूगल से लाभ होता है।

वातविकारान्तक गूगल—

काली मिर्च	५ तोला
नकछिकनी	१० तोला
नीम के ताजे पत्ते	२० तोला
शुद्ध कणगूगल	२० तोला

—इन सबको यथा विधि लोह खरल में कूटकर ४-४ रत्ती की गोलियां बनावें।

मात्रा—प्रातः साय १ से २ गोली तक उष्ण जल अथवा दुग्ध के साथ दो तीन मास तक दें।

गुण—वायुविकार यथा कमर, घुटनो, संधि स्थान आदि की वेदना में उचित लाभकारी है।

इन्द्रायण वटी—

शुद्ध हिंगुल	जायफल	जायपत्री
वायविडङ्ग	अकरकरा	सोंठ
सनाय	दालचीनी	बड़ी इलायची
पत्रज	यवक्षार	पांचो नमक

—प्रत्येक ५-५ तोला।

—सबको लेकर कूट कपडछान करें एवं इन्द्रायण के गूदे में १०-१५ बार मर्दन करें और २-२ रत्ती की गोलियां बनावें।

मात्रा—१ से ४ गोली तक अवस्थानुसार जल के साथ।

उपयोग—इसके प्रयोग से उदर सम्बन्धी प्रायः सभी व्याधियां यथा यकृतप्लीहा वृद्धि, अफरा, शोथ, मलावरोध इत्यादि तथा अर्श, विबन्ध, मन्दज्वर, शरीर निस्तेज रहना, पचनविकार, बालकों के नाना भांति के विकारों में अतीव गुणकारी है। इसके सेवन से नियमित उदर शुद्धि होती है एवं शरीर शोधन होकर रसरक्तादि धातुएं सबल होती है।

पौष्टिक प्रयोग—

ककड़ी के बीज	खरबूजे के बीज
बहमनलाल	उटंगन के बीज
कौंच के बीज	छोटी इलायची के दाने
बीजबन्द	खसखस के दाने
वंशलोचन असली	बेदाना (मुगलाई)

तोदरी तालमखाना कामराज
तुख्मबालंगा लाजवन्ती बीज मोतीपिष्टी
—प्रत्येक १-१ तोला

—सबके बराबर मिश्री लेकर यथा विधि सूक्ष्म चूर्ण बनालें।

मात्रा—३ से ६ माशा तक गौदुग्ध के साथ।

उपयोग—प्रथम उदर शुद्धि करके इसको ४१ दिन तक नियमपूर्वक सेवन कराने से वीर्य सम्बन्धी सभी विकार यथा वीर्य का पतलापन, स्वप्नदोष, वीर्य की ऊष्मा, शीघ्र पतन आदि नष्ट होकर अपार बल संचय होता है। शीतकाल में इसका सेवन विशेष लाभकारी है, वैसे इसके द्रव्यों को देखते हुए हर मौसम में सर्व साधारण के लिये उपयोगी है।

सूचना—तैल, तली हुई चीजे, तेज मसाले, नमकीन पदार्थों का त्याग तथा ब्रह्मचर्य व्रत आवश्यक है।

अनेक रोग नाशक बत्तीसा धूप—

बादाम देवदारु भोजपत्र
पिस्ता लालचन्दन सफेद चन्दन
दाख (मुनक्का) कस्तूरी कपूर
नारियल छुहारा गोरोचन
केशर पद्माख नागरमोथा
मधु हल्दी कपूर काचरी
शिलारस दारुहल्दी राल
गूगल छड़ीला जटामासी
तगर अगर कृष्णागर कचूर
घृत इलायची शर्करा लौंग
—ये सब यथा मात्रा में लें

कस्तूरी गोरोचन केशर
—ये सब थोड़े प्रमाण में डालें

—सबको यथा विधि जौकुट करके धूप के कार्य में लें। इसके धुएं से सभी ग्रहदोष, बाधा, भूतबाधा नष्ट होगी एवं वायु शुद्धि होकर रोग शमन में बहुत सहायता मिलती है। यह अति सुगन्धित एवं महान उपकारी धूप हवन कार्य में भी प्रयोजित हो सकती है। रोगी की श्वास प्रश्वास में धुंआ जाने से छुआछूत की व्याधियों का भय नहीं रहता। उपरोक्त धूप में घृत, शर्करा विशेष प्रमाण में भी मिलाकर नियमित उपयोग में ला सकते हैं। प्राय. रोगों की बाढ़ का कारण वायु की अशुद्धता है, यदि इसकी शुद्धि ऐसे धूप एव हवन सामग्री द्वारा की जावे तो रोग बहुत अंश में कम हो सकते है, परन्तु इस ओर जनता का ध्यान बिल्कुल नहीं रहा। वस्तुत. हमारे प्राचीन ऋषियों का इस ओर विशेष लक्ष था और वे हवन द्वारा बड़े-बड़े कष्टों का निवारण करते थे।

राजेन्द्र वंग—

इस प्रभावशाली कूपीपक्व रसायन का प्रयोग फलौदी निवासी वैद्यराज प० भैरवदत्त शास्त्री द्वारा प्राप्त हुआ है, यह औषध आजकल के स्वर्णवंग, मल्लसिंदूर समीरपन्नग आदि से भी अधिक लाभप्रद सिद्ध हुई है।

प्रयोग—

शुद्ध रांगा (वंग) एवं शुद्ध पारद १-१ छटांक लेकर प्रथम वंग को लोहे की कड़ाही में डाल अग्नि पर रखकर पिघलावें पश्चात् पारद डालकर मिलावे और खरल में डाल कर खूब मर्दन करें, पश्चात् सैंधव नमक एव जल डालकर मर्दन करके धोवें, जब तक मैला पानी निकलता रहे तब तक सैंधव नमक के पानी से मर्दन करते रहे जब केवल स्वच्छ जल ही निकले तब शुष्क करके एक-एक छटाक शुद्ध मल्ल एवं शुद्ध आमलासार गन्धक मिलाकर तीन दिन तक बलवान हाथों से घुटाई करके आतशी शीशी ((Sigol अथवा Pyrex की बनी Flask) में सारा द्रव्य भरकर मन्द मध्य एवं तीव्र अग्नि द्वारा औषधि सिद्ध करें। प्रथम दस घंटों के बाद गन्धक जारण होगा पश्चात् डाट लगाकर आच तेज करें। लगभग ३६ घंटों में औषध तैयार होगी तब शीतल होने पर शीशी फोड़कर उर्ध्वस्थ में लगी औषध मल्लसिंदूर एव तलस्थ में राजेन्द्र वंग होगा।

मात्रा—ऊर्ध्वस्थ की ½ रत्ती और तलस्थ की १ रत्ती।

अनुपान—मधु, मलाई बादाम का हलुवा, च्यवनप्राश इत्यादि।

गुण—शक्तिवर्धक हेतु एवं अन्य नाना भांति के वायु कफ रोगों में व्यवहार करे।

विषम ज्वर (मलेरिया) की अत्यर्थ औषधि

करंजगिरी	स्फटिका श्वेत
आमलासार शुद्ध गन्धक	नृसार
अभ्रकभस्म (श्वेत) —प्रत्येक	१-१ तोला
श्वेता अतीस	कौडी भस्म
—तीनों	२-२ तोला
कलमी शोरा	४ तोला

निर्माण विधि—श्वेता एव शोरा दोनो छोड़ प्रथम सबको खूब पीसकर एक दिन मूली स्वरस में एवं तीन दिन घृतकुमारी के रस में मर्दन करे पश्चात् श्वेता एव कलमी शोरा भी पीसकर मिलावे एवं चने प्रमाण वटी बनावे।

मात्रा—प्रातः साय एवं आवश्यकता पर दो पहर मे भी एक एक गोली सादा जल, अर्क गुलाब अर्क अजवाइन के अनुपान से दे।

गुण—यकृतप्लीहा वृद्धि के कारण ज्वर हो तो अर्क गुलाब से दे। चढ़े बुखार को पसीना लाकर साफ कर देती है। यह प्रयोग मित्रवर वैद्य शिवरामदास जी देहली निवासी द्वारा प्राप्त है। उनकी इस कृपा के लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। मेरा कई बार का अनुभूत है। (स्फटिका=फिटकरी, नृसार=नौसादर, श्वेता=मिश्री।)

:: पृष्ठ १२७ का शेषांश ::

वमनान्तक रस—

सभी प्रकार के कष्टसाध्य वमन पर—

मीठे अनार का रस	२॥ तोला
गंधक का तेजाब	३ बूंद
काली मिर्च	१॥ माशा
मिश्री या मधु	१ तोला

—अनार के रस में गंधक का तेजाब डालकर फिर पिसी हुई काली मिर्च मिलाले, बाद में मिश्री पीस कर मिलाले या मधु मिलाकर चटावे। पानी बन्द रखे। कैसा भी वमन हो आराम होगा। तीव्र वमन में भी अच्छा लाभदर्शक है।

वमन बन्द हो जाने पर मुसम्बी का रस या सन्तरे का रस चम्मच से धीरे-धीरे पिलावें। बाद में योग्य पथ्याहार दें।

आयुर्वेदाचार्य पं. चन्द्रशेखर जैन शास्त्री

सम्पादक—'आयुर्वेद चिकित्सक' लाखाभवन, जबलपुर।

पिता नाम— स्व श्री प नेकीराम जैन आयुर्वेदशास्त्री
आयु—३६ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"आपके बाबा वैद्य जानकी प्रसाद पाठम जि. मैनपुरी निवासी थे। पिता तथा पितामह से आयुर्वेद का अनुभव आपने प्राप्त किया। विविध शास्त्रो की उच्च शिक्षा विभिन्न स्थानो पर रह कर प्राप्त की और आयुर्वेद का आचार्य का पाठचक्रम बनारस मे पूर्ण किया। आप जैनधर्म के प्रकाण्ड विद्वान हैं। आप लेखक, पत्रकार तथा निबन्धकार है। सन् ३८ से बराबर पत्रो में आपके लेख प्रकाशित होते रहे हैं। धन्वन्तरि के सहकारी सम्पादक भी रहे हैं। सम्प्रति अपना स्वय का पत्र 'आयुर्वेद चिकित्सक' का प्रकाशन करते हैं। हिन्दी मे आपकी आयुर्वेद तथा स्वास्थ्य विषयक बडी सख्या मे पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जैन ग्रन्थो पर भी आपका पूर्णाधिकार है। सस्कृत के उच्च विद्वान होने के साथ साथ आप योग्य चिकित्सक भी हैं। आपके निम्न लिखित योग हैं।" —सम्पादक।

गर्भिणी और उसका स्तन शोथ—

अभी की बात है। देहात मे एक गर्भिणी का स्तन सूजकर तिगुना (इससे भी अधिक) मोटा हो गया था। दर्द के मारे बेहद परेशानी थी। घर वाले घबड़ा रहे थे। स्थानीय वैद्य ने इंजेक्शनों के साथ अनेक उपचार भी किए। दर्द मे १०-१५ मिनट को कमी हो जाती थी (इजेक्शन देने के बाद) और फिर वही बेहद अपार कष्ट!

एक अनुभवी देहाती गौंड ने केस देखा। उसने गैहूँ, जौ और मूंग २॥-२॥ तोले मगाये और पानी से पीसकर गरम करके स्तनो पर प्रलेप कर दिया। दर्द फौरन शान्त हो गया और सूजन भी पटक गई। शाम को दूसरा ऐसा ही प्रलेप चढ़ाया गया। दूसरे दिन रुपये में बारह आने आराम था।

रुग्णा एवं उनके अभिभावक स्वय इसे सुना गये थे।

क्षयज रक्तकास पर 'रक्तरोधक'—

एक रोगी जो वर्ष भर से क्षय ग्रस्त था। अन्य उपचार चल रहे थे- किन्तु रोग बढ़ता ही जा रहा था। शहर मे आया तो डाक्टर ने बताया कि तुम्हें आराम हो सकता है। इन्जैक्शन शुरु हो गये। ५-७ दिन कुछ आराम रहा और फिर कफ के साथ खून आने लगा। रक्त की मात्रा बढ़ती जाती थी। रोगी घबडाकर औषधालय में आया।

हमने नारियल की जटा जलाकर (काली, रखी, सफेद नहीं होने दी) मधु के साथ चटाई और चालू इन्जैक्शन देते रहे (डाई-हाइड्रो स्ट्रेप्टोमाइसिन के थे) रोगी ठीक हो गया।

आप भी क्षयजन्य कफ कास में रक्तस्राव रोकने के लिये बेधड़क 'नारियल की जटा जलाकर मधु में चटाइये' लाभ में देर न होगी।

मात्रा—१॥ माशे से ३ माशे तक। मधु १ से १। तोले तक दें।

शोथ रोग पर चिकित्सा क्रम—

नूजन का एक रोगी था। अभी जवानी थी, इसलिये रोग अधिक दिनों का होने पर असाध्य नहीं हो पाया था। हमने पुनर्नवादि मांडूर और दुग्ध वटी (शोथवाली) का प्रयोग किया। पथ्य में बकरी का दूध मात्र प्रारम्भ में रखा और फिर मकोय की भाजी दी। पैरों पर भी मकोय के पत्तों का लेप किया जाता था। रोग जो अनेक चिकित्साओं के बाद भी ठीक नहीं हो रहा था, इस औषध एवं पथ्य व्यवस्था से ठीक हो गया।

याद रखिये, चाहे कैसी भी परीक्षित औषध क्यों न हो, जब तक रोगी पथ्य व्यवस्था एवं योग्य चर्या न रखेगा, रोगमुक्त नहीं हो सकता। Neptal आदि के इन्जेक्शनों से (शोथ में) रोगी प्राय. ठीक जैसा दिखाई देता है, किन्तु वास्तव में ठीक नहीं होता। उसे कम से कम १ वर्ष तक योग्य पथ्य एवं व्यवस्थित चर्या पर रखना चाहिये।

जो वैद्य परीक्षित या तत्काल फलप्रद प्रयोगों की खोज में रहकर पथ्य व्यवस्था एवं योग्य चर्या पर ध्यान नहीं देते या उपेक्षा कर बैठते हैं, वे रोगी से धोखा करते हैं और ईमानदारी की चिकित्सा में कभी सफल नहीं कहे जा सकते।

पसली के दर्द (पार्श्वशूल) पर—

अकौए की जड़ को अकौए के दूध में चन्दन की तरह घिसकर लेप करदें। पसली का दर्द २-३ प्रलेपों में ही ठीक हो जायगा। यह प्रलेप ताजा ही बनाना चाहिए। एन्टीफ्लेमिन या एन्टीफ्लोजिस्टीन से यह प्रयोग अच्छा प्रभावक है।

औषधों में अभ्रक भस्म, शृङ्गभस्म, गोदन्ती, टंकण को योग्य मात्रा में देते रहना चाहिए। प्रारम्भ में लंघन ही कराना उपयुक्त है, पीने को गरम पानी देना चाहिए (अर्धावशेष)।

बाद में पथ्य एवं योग्य चर्या पर पूर्ण ध्यान रखें।

हृदय रोगों पर अत्युत्तम 'हृदय-रक्षक रस'—

जवाहर मोहरा — स्वर्ण भस्म
वसन्तकुसुमाकर रस — पूर्ण चन्द्रोदय
—प्रत्येक १॥-१॥ माशे

महा लक्ष्मीविलास रस — लौह भस्म
प्रत्येक ३-३ माशे

अकीक पिष्टि — प्रवाल पिष्टि
—प्रत्येक ६-६ माशे

वैक्रान्त भस्म — २ तोला

—पहिले लक्ष्मीविलास रस घोटकर फिर शेष चीजे १-१ करके डालते जांय और घोटते जांय इसके लिए उत्तम कसौटी का या चीनी-कांच का खरल रखे। १२ घण्टे अच्छी घुटाई करें। बाद में अच्छी शीशी में डाट लगाकर रखले।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती। गुलकन्द या सेव के मुरब्बे में प्रात सायं दोपहर ३ वार चटावे।

यह योग दुर्बल हृदय वालों के लिए अत्युत्तम है। राजवैद्य इस प्रयोग को बनाकर अवश्य रखते हैं। जिनका दिल थोड़ी सी फिक्र, चिन्ता या परिश्रम से बेहद परेशान हो जाता है या जिन्हे अधिकतर दुःस्वप्न आते है, जो सोते-सोते बेहोश हो जाते हैं या चौंक उठते है। थोड़ी दूर चलने-फिरने पर जिनके दिल में दर्द होने लगता है, जिनके पेट में से दर्द उठता-उठता हृदय तक पहुँचता है और पसीना शुरु हो जाता है, वे इसका अवश्य प्रयोग करे।

—शेषांश पृष्ट १२५ पर।

श्री विद्याभूषण वैद्य B A. भिषगाचार्य

घण्टाघर रोड, एटा।

❖

"आपने आगरा यूनिवर्सिटी से बी० ए० डिग्री प्राप्त करने के बाद आयुर्वेद की भिषगाचार्य उपाधि प्राप्त की है। एक वर्ष स्नातकोत्तर दीक्षा भी आपने ग्रहण की। इसके बाद पीलीभीत के एमी (AIMI) ग्राम सुधार औषधालय में ८ वर्ष चिकित्सा कार्य किया। आपके समय मे यह औषधालय सर्वश्रेष्ठ एव आदर्श औषधालय माना जाता था। सन् १६४७ मे आपने इससे त्यागपत्र देकर निधौली-कला मे स्वतत्र चिकित्सा कार्य प्रारम्भ किया। अब जनवरी १६५७ से एटा मे स्वतत्र चिकित्सालय स्थापित किया है। आपको चिकित्सा मे एलोपैथिक औषधियां बरतने से अरुचि हे। नाडी ज्ञान एव निदान में आपको विशेष रुचि है। आपने फोटो खिचवाने तथा उसे प्रकाशित कराने मे अपनी अरुचि एवं असमर्थता प्रकट की है अतः चित्र प्रकाशित नहीं कर सके है। आपने इस विशेषांक मे प्रकाशनार्थ ५ रोगो पर अपने अनुभव प्रेषित किए है जो आशा हे पाठको को रुचिकर और लाभप्रद सिद्ध होंगे।"

—सम्पादक।

(१)

मैं ग्राम सुधार औषधालय पीलीभीत जिले मे वैद्य था। एक पडौसी जाट का लड़का १०, १२ वर्ष की अवस्था थी, श्वास के दौरे से पीडित हुआ। यह रोग बड़े दारुण रूप मे उसके पिता जी को भी था उसका कारण यौवनावस्था मे यह सज्जन मद्यपान करते रहे थे। उस लड़के का भाई मेरे पास आया और बोला वैद्य जी क्या करे छोटा सा बालक है अब उसका जीवन ही नष्ट समझिये। बड़ी अनुनय विनय की मैंने कहा अच्छा थोड़ा सोचलूं। इन्हीं दिनो पीलीभीत एल० एच० कौलिज मे वैद्य सम्मेलन हो रहा था मैं उस बच्चे को वहां लेगया और दो एक प्रतिष्ठित वैद्यो को दिखाया उनसे सम्मति ली, तदनुसार कार्य भी किया किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। अकस्मात् एक बात की याद आगई मेरे पूज्य पिताजी ने कई बार निम्न योग लोगों को बनाकर दिया था उन्होने तथा उन सेवन करने वालो ने बडी प्रशंसा की थी। मैंने उसे बनवा दिया, सेवन कराया गया, उसको इतना लाभ हुआ कि उसे दस वर्ष तक श्वास का दौरा नहीं हुआ जो दौरा १,१ माह बाद हुआ करता था। आप भी परीक्षण कीजिये देखिये क्या कुछ होता है।

:—आंवला (ताजा सूखा हुआ, १ छटांक एक पाव बकरी के दूध मे रात को चीनी या कलई के बर्तन मे भिगो दीजिये। प्रातःकाल उसी दूध में उबाल कर मथ लीजिये फिर किसी झिर-झरे वस्त्र मे छान कर घी मे तल (अकोर) लीजिए। १॥ पाव मिश्री की चाशनी मे अवलेह बना लीजिये उसमे निम्न वस्तुये पीस कर डाले—

मुलहठी (वस्त्रपूत)	वशलोचन
मस्तंगीरूमी	सत गिलोय
इलायची छोटी	प्रवाल भस्म
मुक्ताशुक्तिभस्म	—प्रत्येक ६-६ माशा

—सब औषध प्रस्तुत होगई। अब इसे प्रातः सायं ६ माशा से १ तोला तक खिलाइये। बकरी के दूध का प्रयोग अधिक कराइये।

(२)

अपने ग्राम मे वैद्यक करता था। मेरे एक परम मित्र, हितैषी, सुयोग्य वैद्य थे उनसे कभी-कभी आयुर्वेद और आध्यात्मिक विषय पर चर्चा छिड जाती थी एक बार प्रसंग मे ही बोले भई! तुम वचा से क्या लेते हो? मैने कहा कि लेता क्या हूँ वही जो बाजार मे मिलती है। बोले, क्या दुध वच? मैने कहा हा जी,

तो हसे बोले अच्छा जी वैद्य जी ? क्या यह वचा है भी ? आपने कभी देखा निघण्टु ? अब मैं चुपथा, भावप्रकाश निघण्टु उठाया—देखा तो –

> वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ।
> क्षुद्र पत्री च मगल्या जटिलोग्रा च लोमशा ।
> वचोग्र गन्धा कटुका तिक्तोष्णा वान्ति वन्हिकृत
> विबन्धाध्मान शूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधिनी
> अपस्मार कफोन्माद भूतज न्तनिलान हरेत् ॥

दुग वच का एक टुकडा लेकर मिलान किया तो एक भी बात नहीं, पश्चात एक टुकड़ा घुड़वच का मंगाया पढ़ा, देखा, मिलान किया सब गुण मिल गये । मैंने उस दिन से दुधवच को त्याग दिया और घुडवच का प्रयोग करने लगा । इसका एक गुण मेरे हृदय मे घर कर गया ।

एक पड़ोस के ग्रामीण सज्जन अपनी ३,४ वर्ष की कन्या को लेकर आये, बोले, क्या करे ! हमारी लल्ली को न शौच आता है न मूत्र, पेट फूल गया है । मैने देखा तो लड़की पसीने मे तर-बतर, यद्यपि ऋतु संभवत. चैत्र की थी और गर्मी नहीं थी । मुझे याद आया "शकृन्मूत्र विशोधिनी" तुरन्त ३ रत्ती की मात्रा शहद से चटा दी । १५-२० मिनट मे शौच मूत्र दोनों होगये ।

एक अन्य ठाकुर साहब की पुत्र वधू २०-२५ वर्ष की अवस्था मे थी उसे साथ लाए, बोले साहब ! हमारी बहू को मूत्र नहीं आता । एटा राजकीय चिकित्सालय (डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल मे ८ दिन रखा, शलाई से मूत्र उतारते थे । आज लाये हैं, मार्ग मे फिर वही अवस्था है । मैंने कहा अच्छा ठहरिए, वचा १॥ माशा मात्रा मे शहद से दे दी । फिर वह जब कष्ट होता है ले जाते है । कहते है बड़ा लाभ करती है क्या बला है ।

मैंने इसके इस गुण का प्रभाव स्पष्ट देखा है । सदा ही "हिमवती चूर्ण" प्रस्तुत रखता हूँ प्रयोग करता हूँ आप भी परीक्षण कीजिए ।

(३)

अम्लपित्त पर शङ्खभस्म—

सुनने मे बडी साधारण सी औषधि शङ्ख की भस्म, किन्तु आपसे सत्य कहता हूँ कि गुणों मे अपना जोड़ नहीं रखती । इतनी कम लागत की वस्तु और लाभ रुपयों का—

एक बार मेरे अपने चिकित्सा काल मे एक स्त्री आई उसकी गोद से एक डेढ़ वर्ष का बालक था बोली वैद्य जी मेरे बच्चे को देख लीजिये । मैंने नाडी देखी प्रश्नादि करने पर उसने बतलाया कि मेरे ग्यारह बच्चे इतने ही बडे समाप्त हो चुके है इसी रोग से । केवल वमन ही होती थी । फिर मैंने उससे थोडा विस्तार मे बतलाने को कहा तो उसने बतलाया कि अभी पिछले ग्यारहवे बालक को इसी गर्मी मे कै होने लगी, गाव के वैद्यजी ने शर्बत उन्नाव मे कुछ दवा दी, सन्निपात होकर चल बसा । अब बारहवां यह लेकर आपके पास आई हूँ, आपका नाम सुना है यहीं रहूँगी । आप जो कहो सो दूंगी मेरा बच्चा ठीक हो जाय । मै सुनकर घबरा गया कि ग्यारह तो इसके मर चुके यह बारहवां है सो भी दारुण अम्लपित्त का रोगी । थोडा सोचकर कहा अच्छा रुको दवा देता हूँ और बालचातुर्भद्रिका १-१ रत्ती तथा शङ्खभस्म आधी-आधी रत्ती की ६ मात्राये दीं ।

पहिले २ दिन में कोई लाभ नहीं मालूम हुआ क्योकि धूप मे चल कर आया था, किन्तु रोग बढ़ा भी नहीं । तीसरे दिन से लाभ मालूम होने लगा १ माह मे बालक बिलकुल स्वस्थ होगया । उसकी माता के हर्ष की सीमा नहीं और मुझे तो न मालूम क्या मिल गया । वह बोली वैद्य जी औषध का मूल्य ? मैंने कहा मुझे तो बहुत कुछ मिल गया अब कुछ लेना नहीं । मेरे ही औषधालय पर १।) रुपया के बताशे लेकर बांटने लगी और दुआऐ देती घर चली गई ।

मै शङ्खभस्म की पूर्ण मात्रा २ रत्ती मानकर प्रयोग करता हूँ । तब से अब तक न मालूम कितने अम्लपित्त के रोगी अच्छे किये, कभी विफल मनोरथ नही हुआ ।

इसी का दूसरा सफल प्रयोग-एक देवी को ६ माह से उदर मे शूल था किसी औषधि से लाभ

ही नहीं होता था। अन्ततोगत्वा ४-४ रत्ती प्रात' सायं मधु के साथ तथा दोपहर साय भोजन के बाद रोहितकारिष्ट तथा अभयारिष्ट (चरक) बराबर मिलाकर १।-१। तोला पिलाया अब तक दर्द नहीं हुआ। अन्य एक दो रोगी को भी लाभ हुआ। फिर मेरे एक अन्य वैद्य मित्र ने इसी योग की बडी प्रशंसा की तब से अब तो दृढ़ निश्चय होगया है।

आप भी इस औषधि रत्न का प्रयोग कीजिये।

(४)

आजकल फैशन हो गया है हर समय नगे सर रहना–बर्फ पीना और अब्रह्मचर्य का पालन। तो परिणाम भी होता है २५-३० वर्ष की आयु मे बाल पकना और हर समय प्रतिश्याय बने रहना।

मेरे एक वकील मित्र जो साथ के पढ़े है उनका भी लगभग यही हाल है। चौबीस घटे बारहो महीनो जुकाम रहता है। मैंने कहा वकील साहब क्या हाल है? क्या बूढ़े हो गये, बाल सफेद हो गये, सुन्न-सुन्न हर समय करते रहते हो। बोले नेता जी! होश में रहो, नजला हो गया है नजला, मैंने कहा मुझे क्यों नहीं होता? बोले किसी-किसी को होता है।

इसी प्रकार के एक दूसरे रोगी मेरे पास आये और बोले चाहे हमारा कितना ही व्यय हो जाय लेकिन हमारा नजला ठीक हो जावे। मैंने कहा आपका नजला निश्चित् ठीक हो जावेगा किंतु थोडी हमारे ऊपर दया भी करना। श्रीमती जी से थोड़े दिन के लिए क्षमा याचना कर लेना और आठ दिन मे ही आप नजला भूल जायेंगे, वही हुआ। मैंने मृगाङ्करस आधी आधी रत्ती प्रात. साय मधु के साथ दिया और आठ दिन मे ४ वर्ष के लिए जवाब प्रूफ हो गये। मृगाङ्क रस यक्ष्मा की तो जगत प्रसिद्ध औषध है ही, इस नजले के लिए भी रामबाण है।

जल्दी-जल्दी जुकाम वालो को इसका प्रयोग कराना अतीव लाभकारी है। क्या कहूँ इससे सुन्दर औषध इस रोग के लिए मेरे अनुभव मे नहीं आई। कुछ मूल्यवान अवश्य है किंतु रोग देखे कुछ भी मूल्य नहीं है।

(५)

आज के समय मे ऐसा कोई ही व्यक्ति मिलेगा जिसका भोजन ठीक पचता हो और अजीर्ण की शिकायत नहीं हो। देहात की बात तो नहीं कहता किंतु शहर कस्बे का, जहा कृत्रिमता जीवन पर छा गई है, बिलकुल यही हाल है। कम से कम दिन मे ४ बार खाना, प्रात. नाशता दुपहर का भोजन तीसरे पहर फल या भोजन और रात को खाना यह तो न्याय है, इससे अधिक हो सकता है कम नहीं और इसी क्रम से चार पाच बार शौच, सो भी पतला अपच का। एटे के एक सज्जन बोले क्या करें वैद्य जी दुकान की छत पर पाखाना बनवा लिया है दिन मे ४-५ बार जाना पड़ता है घर इतनी दूर कौन जावे।

यह एक प्रकार का अजीर्ण है और आज व्यापक रूप धारण किये हुए है। विशेष कारणो मे, यथा बर्फ या शीतल जल का अधिक सेवन करना, उदर की वायु का चल और शीत गुण बढ़ जाना है और पित्त मन्दीभूत हो जाता है। अग्निमान्द्य होने के कारण भुक्त द्रव्य पूर्ण रूप से नहीं पचता और तरल मलरूप मे दिन मे २,३ अथवा अधिक बार प्रवर्तित होता है। इसमे शरीर मे आलस्य, भूख की कमी अथवा झूठी भूख, मुख का स्वाद खराब, पेट मे गुड़रु, गुडरु शब्द अथवा मुख में दुर्गन्धि होती है।

उक्त प्रकार के अजीर्ण मे रामबाण रस बडी उत्तम औषध है। विवेचनापूर्वक १-१ रत्ती की मात्रा मे २-३ मात्रा देने से ३-४ दिन मे ही लाभ हो जाता है।

मैंने इसका प्रयोग जिस पर किया लाभ पाया। ऊपर लिखे रहस्य को किसी प्रेरणावश आप लोगो के समक्ष रख दिया है तथापि किन्हीं महानुभाव को कोई बात अस्पष्ट रह गई हो जवाबी पत्र द्वारा पूछलें बताने मे मुझे कोई संकोच नहीं होगा।

वैद्य मिलापचन्द जैन B A. भिषगाचार्य

सावर (अजमेर)

"श्री वैद्य जी ने राजपूताना यूनीवर्सिटी से बी ए डिप्लोमा प्राप्त कर गवर्नमेंट आयुर्वेद कालेज जयपुर मे भिषगाचार्य तथा नि भा आयुर्वेद विद्यापीठ से आयुर्वेदाचार्य परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग मे साहित्यरत्न की परीक्षा भी उत्तीर्ण की है। एक वर्ष श्री दिगम्बर जन औपधायल जयपुर

में प्रधान चिकित्सक के स्थान पर कार्य करने के बाद इस समय आप आयुर्वेद के विशेष ज्ञान प्राप्त्यर्थ स्नातकोत्तर शिक्षण केन्द्र जामनगर में अध्ययन कर रहे है। आपके निम्न प्रकाशित दोनो योग सरल तथा अतीव गुणप्रद हैं, पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

श्वास कल्प—

फिटकरी (लाल)	२० तोला
धत्तूरे का स्वरस	२ सेर

निर्माण विधि प्रथम—सर्वप्रथम फिटकरी का चूर्ण कर लोह की कढ़ाही मे डालो और उसमे थोड़ा थोडा धत्तूरे का रस डालकर पकाते जाओ। जब द्रव्य सूख जाय तब उसे एक घंटे की अग्नि दो। इस विधि से आपको कृष्ण रंग की भस्म प्राप्त होगी। उसको खरल कर उपयोग करो।

द्वितीय विधि—फिटकरी का फूला कर उसको चूर्ण कर धतूरे के रस से घोटकर पुटविधान से पुट दो। इसमें जितने पुट दोगे उतनी ही औषधि अच्छी होगी। यह प्रकार अच्छा है पर अधिक श्रम व समय साध्य है। इस प्रकार का द्रव्य गुण भी अधिक दर्शाता है।

मात्रा—१ से ४ रत्ती तक।

अनुपान—मधु, वांसावलेह, कंटकार्यवलेह, च्यवनप्राश, लवकसपिस्ता के साथ मिलाकर चाटना।

द्रव्यगुण विरेचन—इसमे फिटकरी लेखन है। श्वास फुफ्फुस प्राणवह श्रोतस मे श्लेष्मादि के कारण श्रोतोरोध होने से होता। फिटकरी इस श्रोतोरोध को नष्ट करती है। आज भी इसी के स्वरूप मे अनेकों माताएं कफज कास मे व सूखी खांसी मे बच्चो को जन्म घुटी के साथ फिटकरी घिसकर पिलाती है।

इसमे धत्तूरक प्रधान घटक व उपयोगी है। वह कफ निकालने में व श्वास-प्रणालियो को फैलाने मे चिरस्थायी प्रभाव रखता है। अत इसका प्रयोग श्वास मे किया जाता है। इसमे इसके साथ ही वेदना कम करने की शक्ति भी है, इससे श्वास में रोगी को अत्यन्त प्रभावकारी सिद्ध होता है। इसी को डा० देसाई के शब्द मे धतूरा वेदनास्थापक, आक्षेपहर, कासहर, श्वासहर

—शेषांश पृष्ठ १३७

आयुर्वेद वाचस्पति

कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय आयुर्वेद विशारद

महेन्द्र रसायनशाला, कटरा, प्रयाग ।

"श्री पाण्डेय जी उच्चकोटि के विचारक और लेखक हैं। आप राष्ट्रीय विचार के हैं तथा आपने कांग्रेस स्वातन्त्र्य-संग्राम में सक्रिय भाग लिया है। आयुर्वेद विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आपने आयुर्वेद चिकित्सा क्षेत्र में पदार्पण किया। आप प्राकृतिक चिकित्सा को आयुर्वेद का ही एक अङ्ग मानते हैं तथा उससे रोग-निवारणार्थ सहायता लेते हैं। विविध चिकित्सा विषय पर लिखी आपकी लगभग २ दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा अन्य अनेक

अप्रकाशित लिखी हुई हैं। आपको 'रोगी-सुश्रुषा' पुस्तक पर उत्तर प्रदेश सरकार ने ४००) तथा विंध्य प्रदेश सरकार ने २०० के पुरस्कार दिए हैं। प्रयाग आयुर्वेद प्रचारिणी सभा के जनरल सेक्रेटरी तथा जिला आयुर्वेद सभा के उपसभापति हैं। आपने ज्वर, फाइलेरिया एवं रक्त-पित्त पर बड़े ही सरल किन्तु सुपरीक्षित प्रयोग प्रकाशनार्थ प्रेषित कर हमको आभारी किया है, आशा है पाठक इन प्रयोगों को प्राप्त कर प्रसन्नता का अनुभव करेंगे।"

—सम्पादक।

ज्वर—

ज्वर पर हजारों प्रयोग आयुर्वेद में है और एक से एक बढ़ कर हैं। नीचे लिखा काढ़ा हमारा हजारों बार का अनुभूत है और विषमज्वर और सामान्यज्वर दोनों में समान रूप से उपकारी है। कुनीन का प्रयोग इसके सामने फीका पड़ जाता है।

गुडूची धान्यकोरिष्ट. रक्त चन्दन पद्मकैः,
दीपन दाह हल्लास तृष्णा छर्दि ज्वर जयेत्।

गुडूचि ताजी हरी	धनिया
नीम की अन्तर छाल	लालचन्दन
पद्मकाठ	—प्रत्येक समान भाग

—सबको एकत्र कर जवकुट कर लेना चाहिये। इसमें से २ तोला मिलित औषधि लेकर २० तोला जल में मिट्टी के बरतन में शाम को भिगो दीजिए प्रातःकाल धीमी आंच पर (कण्डी की आंच हो तो अच्छा है) काढ़ा बना लीजिए। जब १ छटांक जल रह जाय तो उतार कर छान लीजिये और ठण्डा होने पर पिला दीजिए। जो औषधि बर्तन में शेष बची है उसमें एक पाव पानी और डाल दीजिये और भीगने दीजिए। शाम को इसका काढ़ा बनाकर पिलाइये। हठी से हठी ज्वर भी उतर जाता है। हम इसका एक प्रयोग और करते हैं, मिलित औषधि १ सेर से लेकर उसमें ८ सेर जल डाल कर रात को भिगो देते हैं और प्रातःकाल भभके से अर्क खींच लेते हैं। ५-६ बोतल अर्क निकल आता है। इसे हम पुराने ज्वर में देते हैं। रोगी के सन्तोष के लिए कुछ अन्य औषधि जैसे वसन्त मालती का प्रयोग भी करते हैं। पुराने ज्वर में

देते समय अर्क में थोड़ा मधु भी मिला देते हैं। काढ़ा देखने में तो छोटा है परन्तु जितना छोटा है उतना ही अधिक गुणकारी है। यही इसकी विशेषता है।

फाइलेरिया—

यों तो इस रोग की बड़ी-बड़ी औषधियाँ हैं। परन्तु जो औषधि हम नीचे लिख रहे हैं -उसका मूल्य एक कौड़ी भी नहीं है परन्तु बड़ी बड़ी औषधि को भी मात करती है। याद रखने की बात है कि हेट्राजन नामक औषधि भी कई मास खाने पर लाभ होता है और सैकड़ो रुपये खर्च होते हैं वह अलग से। मैंने फाइलेरिया के केवल १०-१२ रोगियों की चिकित्सा की है किन्तु जितने आये सब आराम होगये।

पाठक औषधि का नाम जानने के उत्सुक होंगे। वह औषधि गोमूत्र है। रोज गोमूत्र पिलाने से सूजन भी धीरे-धीरे आराम हो जाती है और दौरा भी रुक जाता है। जरा बे-स्वाद औषधि है। परन्तु लाभ अवश्यक करती है।

आजकल लोग औषधि के पीछे पागल रहते है अतः मैं शुद्ध रेंडी का तेल में छोटी हरड़ भून लेता हूँ। वही हरड खिला कर ऊपर से गोमूत्र आधी छटांक पिलाता हूँ। ३-४ मास में रोग का दौरा समाप्त हो जाता है। खाने के लिये कफकारी भोजन जैसे दूध, दही, चावल, आलू, लौकी, अरई आदि बन्द कर देता हूँ और करेला, खेकरा आदि कड़वी तरकारियां और परवल आदि की तरकारी और रोटी खाने की राय देता हूँ।

रक्तपित्त—

राजयक्ष्मा मे या यों भी जब व्यक्ति के मुख से रक्त गिरता है या खासी के साथ आता है तो रोगी इतना विचलित हो जाता है कि उसकी परेशानी का ठिकाना नहीं रहता। रोगी यही समझता है कि अब उसका अन्तकाल निकट आ गया। ऐसी दशा में मैं अक्सर रक्तपित्त-कुलकडन रस का प्रयोग करता हूँ और निश्चित् रुप से लाभ हो जाता है। रक्तपित्त कुलकडन रस का प्रयोग वही है जो शास्त्रो मे है उसे हम नीचे दे रहे है। कभी-कभी जब खासी अधिक रहती है तब हम अन्य औषधियो का भी प्रयोग करते है जैसे एलादि वटी चूसने को कह दिया या सीतोपलादि मिलाकर च्यवनप्राश दे दिया।

शुद्ध पारा, शुद्ध गधक, प्रवालभस्म, सोना-मक्खी भस्म, शीशा भस्म और रांगा भस्म, समभाग लेकर ३ घंटे घोटकर फिर नीचे लिखी वस्तुओं की ३-३ भावना दे अर्थात् नीचे लिखी चीजों के रस या काढ़े मे अलग अलग ३-३ बार इतना रस डाल कर घोटे कि दवा तर हो जाय। दवा तर होने पर उसे छाया मे सुखावे जब सूख जाय तब उसी तरह दूसरी बार करे।

चन्दन सफेद का काढ़ा, कमल के फूल का रस या काढ़ा, चमेली के पत्ते का रस, अरुसे के पत्ते का रस, धनियां का काढ़ा, गजपीपरि का काढ़ा, शतावर का रस या काढ़ा, सेमल की छाल का काढ़ा या रस, गुडुचि का रस, इन सब चीजो की ३-३ बार भावना दे। इसकी मात्रा २ रत्ती तक है। अरुसा (वांसा) का रस और शहद दोनो मिलाकर उसी मे औषधि को चटाना चाहिए। दिन मे ४-५ बार तक दिया जा सकता है। गूलर का काढ़ा मिलाकर भी कई रोगी आराम हुए है।
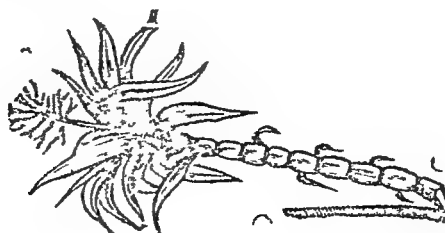
कविराज श्री सिद्धिनन्दन मिश्र

G. A. M. S. पटना (विहार)

"आप स्वर्गीय राजवैद्य श्री प० रामप्रसाद मिश्र जी के पौत्र हैं, जो सुयोग्य एवं पीयूषपाणि वैद्य थे। आपका जन्म-स्थान गया जिला के कन्दौल ग्राम में है, शाकद्विपीय ब्राह्मण हैं, उम्र २५ साल की है। राजकीय आयुर्वेद कालेज पटना विहार से जी ए एम एस की परीक्षा ससम्मान उत्तीर्ण की है. घर पर ही वर्षो तक चिकित्सा कार्य करने के वाद इस समय 'राजकीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषध निर्माण शाला' विहार पटना मे वैद्य की जगह पर आपकी नियुक्ति हुई है। आप एक सफल चिकित्सक हैं तथा आपके निम्न प्रयोग भी आपकी सफलता के द्योतक हैं।

—सम्पादक ।

आमवात, वातज्वर, मलेरिया तथा साधारणतया कभी-कभी सर्वाङ्ग शरीर में जो दर्द हो उसमे निम्न वटिका आश्चर्यजनक लाभ करती है—

विषमुष्टि वटी—

शुद्ध कुचिला (कपीलु)	१० तोला
शुद्ध सिंगरफ	२॥ तोला
स्याह मिर्च	५ तोला

निर्माणविधि—सर्व प्रथम कुचिला को इमामदस्ता मे खूब चूर्ण करें, वाद स्याह मिर्च को कपड़छन चूर्ण करे, फिर एक खरल मे तीनों को रखकर कागजी नीबू के रस की भावना देकर तीन दिन खरल करे, तत्पश्चात् एक-एक रत्ती की गोली वनाकर छाया मे सुखाले।

भौतिक स्वरूप—यह गोली देखने मे लाल रङ्ग की होती है तथा इसका स्वाद वहुत ही तिक्त होता है इसको चवा कर नहीं खाया जाता, वल्कि यों ही कोई द्रव पदार्थ के सहारे निगल लिया जाता है।

रोगानुसार मात्रा एवं अनुपान—

आमवात मे—सुवह शाम दोपहर रात एक-एक गोली गरम पानी से दे। १५ दिनो के वाद वहुत अच्छा होजाता है।

वातज्वर मे—सुवह शाम बुखार रहने पर गरम पानी से १-१ गोली दें। दो दिनों मे ठीक होता है।

मलेरिया में—२-२ गोली बुखार आने के पहिले १ घन्टा सिंगार हार (हारसिंगार) पत्र स्वरस और मध से दे, दो दिनो मे ही लाभ होगा।

साधारण दर्द मे—१-१ गोली सुवह शाम गरम गाय के दूध से दे। दो दिनो में ठीक होता है।

यो तो हर हालत मे अच्छी ही है, किन्तु अधिकतर वुढापा मे ज्यादा कमजोरी महसूस करना, रात मे अधिक ठण्ड लगना, रात्रि मे अधिक पेशाब करना आदि मे हर समय लाभ करता है, गरम पानी से खिलावे।

नोट—इसके सेवन से वातव्याधि आने की आशंका कम रहती है।

गर्भश्राव—

गर्भश्राव के समय रोगिणी को पूर्णरूपेण विश्राम देना चाहिए, यहां तक कि चलना-फिरना

आदि बन्द रहे। खाना, पीना, पेशाव आदि सब कुछ विस्तर ही पर हो तो अच्छा है। चारपाई उत्तान पाद होना चाहिए याने चारपाई का पैर की तरफ का हिस्सा कुछ उठा होना चाहिए।

प्रवाल भस्म	२ रत्ती
मधु शुद्ध	५ तोला
गाय का ताजा दूध	१ पाव

—तीनो को एक साथ मिला कर दे।

समय—प्रातः सायं।

पीपल वृक्ष की लाक्षा (लाख)	१ आना भर
रक्त चन्दन	१ आना भर
शुद्ध स्फटिक	२ रत्ती

—मधु के साथ मिलाकर ली जाय और ऊपर से ताजा गाय का दूध १ पाव पिलादें।

३—योनिमार्ग में लाजवन्ती-लजौनी का कल्क धारण करावे।

४—दिन दो बार योनि प्रक्षालन—

वट वृक्ष की छाल गूलर की छाल
पीपर की छाल —प्रत्येक समान भाग

—कूटकर चतुर्गुण जल मे डालकर क्वाथ करे। जब चतुर्थांशावशेष रहे तब उतार कर छान ले। बिलकुल शीतल हो जाय तब उसी से योनि प्रक्षालन करे।

५—क्षीर पाषाण (दुग्ध पाषाण)	१॥ माशा
दुर्वा स्वरस	१ तोला

—दोनो मधु मे मिलाकर पिलादे।

कोष्ठबद्धता नहीं हो इस पर ध्यान देना चाहिए। इसके लिए कोई साधारण रेचक देकर कोष्ठवद्धता दूर हो सकती है। उपर्युक्त दवाओ को प्रयोग मे लाने से बड़ी सफलता मिलती है।

पथ्य—पुराना चावल, गेहूं की रोटी, मूंग की दाल, परमल, लौकी का साग, टमाटर, गाय का दूध, घी, मिश्री ये सब पथ्य है।

अपथ्य—कटु-तिक्त, अम्ल, चरपरा, वातकारक द्रव्य, भैस का दूध, व्यायाम, मैथुन, चलना-फिरना आदि अपथ्य हैं।

सूतिका रोग तथा प्रसूत रोग——

यह रोग स्त्रियों को हर अवस्था मे होता है, इसके हो जाने पर हाथ-पैर में जलन तथा दिमाग मे चक्कर आता है। स्त्रियां बारम्बार अपने हाथ-पैरो को पानी मे भिगोये रहती है।

इसके लिए—

ईख का सिरका तिल का तैल १-१ छटांक

—दोनो दवाओं को खूब मिलाकर जहां जहा पर जलन हो वहां पर लगावे। ५ दिन मे ठीक हो जाता है।

२—लौह भस्म	२ रत्ती
अग्नि परपक्व परवल का स्वरस	१ तोला
मिश्री	१ माशा

—तीनों मिलाकर खिला दे।

दशमूलारिष्ट १ तोला

—बराबर पानी से-भोजनोत्तर दोनों समय दे। कब्जियत को दूर करना चाहिए।

नोट—पानी का स्पर्श नहीं करना चाहिये।

चौधरी चन्द्रसिंह वैद्य

मु० पो० चिडी (रोहतक)

"श्री चौधरी साहब को चिकित्साकार्य करते हुए २० वर्ष से अधिक होगए हैं। आप अनुभवी सफल चिकित्सक हैं। आपने चिकित्सा भास्कर तथा बाल चिकित्सा नामक दो पुस्तकें भी लिखकर प्रकाशित की है। ४-५ पुस्तकें अप्रकाशित भी आपके पास पाडुलिपि रूप मे प्रस्तुत हैं। निर्धन तथा निःसहाय रोगियो की नि शुल्क चिकित्सा करते हैं। आपके निम्न प्रयोग अनेक रोगियो पर सुपरिक्षित एव सफल प्रमाणित है।"

—सम्पादक।
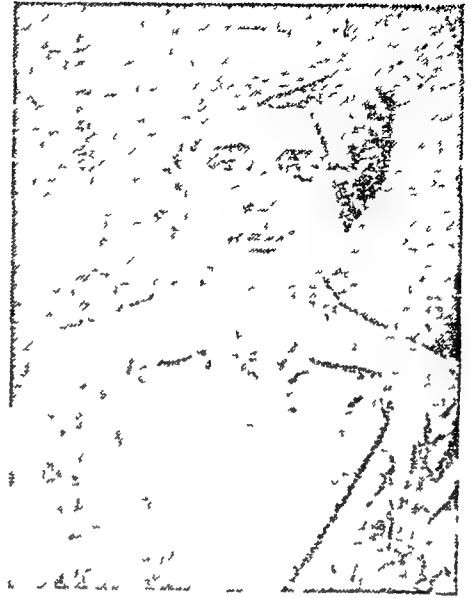
विशूचिकांतक वटी—

लाल मिर्चों का कपड़छान किया हुआ चूर्ण	२ तोले
घी मे भुनी हुई हींग	२॥ तोले
भीमसेनी कपूर	२ माशे
अफीम	१ माशे
चन्द्रोदय	३ माशा

—इनको खूब बारीक रगड कर ४ दिन तक प्याज के रस से घोटकर मूग समान वटी बनाना और छाया से सुखाकर रख लेना।

सेवन विधि—जिसको हैजा हो गया हो उसको १०-१० मिनट बाद १ या २ गोली आयु अनुसार निम्नलिखित क्वाथ के साथ ४-५ वार खिलाने से वमन, दस्त, शरीर का एंठना, प्यास, घबराहट इत्यादि हैजे की कुल शिकायतें नष्ट होती हैं। यह हमारा अनुभूत है।

क्वाथ का प्रयोग—

सूखा पोदीना बडी इलायची
खस —तीनो ५-५ तोला

—५ सेर पानी में पकावें। १॥ सेर शेष रहने पर छान ले। २॥ तोला की मात्रा मे एक बार मे उपयुक्त गोली के साथ दे।

रक्त प्रदरारि चूर्ण—

समुद्रशोष बीजबन्द तालमखाना
रूमीमस्तङ्गी दोनो तोदरी
कूंजा मिश्री सुर्मा सफेद

विधि—सब समान भाग लेकर बारीक चूर्ण बनावे।

मात्रा—६-६ माशे दवा दिन मे ३-४ वार सेवन करने से धाराप्रवाह रक्त भी बन्द हो जायगा।

समीर गजांकुश वटी—

शुद्ध कुचला शुद्ध अहिफेन अकरकरा
केशर असली जायफल जावित्री
लौंग कालीमिर्च कपूर

—सब समान भाग

विधि—सबको समान भाग लेकर अदरक और पान के रस मे घोट कर मिर्च प्रमाण वटी बनावे।

मात्रा—एक से दो गोली तक पान या अदरक रस से सेवन करावे।

गुण—यह गोली वातविकार हैजा, पेट दर्द, वाता-

निसार, शीताङ्ग, नसों का दर्द, बांयटा आना, अंग प्रत्यङ्गों का दर्द, मूर्छा, हिस्टेरिया आदि वात-विकारजन्य रोगों को समूल नष्ट करती है।

सर्पविष पर—

उसारे रेवन्द	१ तोला
रीटे का छिलका	१ तोला

—दोनों को खूब बारीक पीसकर रख ले।

मात्रा—४ रत्ती से १ माशा तक घी में मिलाकर २-२ घण्टे के अन्तर से ३ मात्रा दे। इन्हीं से आराम हो जायगा। कुछ कसर रह जाय तो पुन. दे दे। सर्पविष पर अच्छा प्रभाव करता है।

सुन्दरी रसायन—

अशोक की छाल ३ सेर लेकर १८ सेर जल मे क्वाथ करें। ६ सेर जल शेष रहने पर छान कर शुद्ध चिकने मटके में भरकर उसमें—

धाय के फूल		१० तोले
त्रिफला ३ तोले		गुड़ ४ सेर
पठानी लोध	कुशामूल	नागकेशर
वनफसा	असगन्ध	फल गुलाब
अडूसा	कमल	जीरा सफेद
मजीठ	शतावर पीपल	विदारीकन्द

—प्रत्येक १-१ तोला

—सबको खूब बारीक कूट कर मिलादे और कुछ सुरा मिलाकर बर्तन का मुख बन्द करके रखदे। आसव तैयार होने पर छान कर रख ले।

मात्रा—१-१ तोला सुबह शाम दूध अथवा ताजा जल मे मिलाकर ले।

गुण—इसके सेवन से स्त्रियों के समस्त प्रदर, रक्तस्राव, ऋतु दोष, योनिविकार, गर्भस्राव, सोमरोग, रक्त-विकार, वन्ध्यत्वादि गर्भाशय के विकार समूल नष्ट होते है। इसके बाजार मे अनेक नाम रख कर बिक्री हो रही है।

:. पृष्ठ १३१ का शेषांश .:

नियमित कालिक ज्वर प्रतिबन्धक शोथघ्न है।

इसी कारण अनेको स्थानो पर धत्तूरपत्र का धूम्र-पान स्वतन्त्र या बांसापत्र सौंफ आदि के साथ प्रचलित है। अनेको वैद्य इसे तमकश्वास मे प्रयोग करते हैं और लाभ उठाते हैं।

अवस्था—जिस श्वास मे कफ कम आता हो तो लऊकसपिस्ता या कंटकार्यवलेह के साथ दे। कफ अधिक आने पर मधु या च्यवनप्राश के साथ दे। यह सभी प्रकार के श्वास, कास मे अनुपान भेद से प्रभाव बताता है।

विशेष—यह केवल श्वास मात्र की औषधि है। योग्य वैद्य इसको अनेको रोगो मे प्रयोग कर सकते हैं। जिनमे से कुछ है—श्वास, कास, हिक्का, पार्श्वशूल, श्लेष्मा के विकार, ज्वर, आक्षेप आदि मे विशेष अनुभव व प्रयोगगम्य है।

रोपण द्रव—

स्प्रीट	४० तोला
लहसुन (स्वरस)	१० तोला
हल्दी (कुटी)	१ तोला

निर्माण विधि—सबको मिलाकर एक शीशी मे भर दे और ७ दिन बाद छानकर उपयोग मे ले।

गुण—यह सभी प्रकार के व्रणो मे टिंचर आयोडीन के स्थान पर काम देता है और उसी के समान कार्य करती है।

लहसुन कृमिघ्न, रोपण व पूयनाशक है। स्प्रीट शीघ्र त्वचा से प्रवेश करने वाला है। लहसुन भी त्वचा मे शीघ्र अन्त प्रवेशी होने से शीघ्र प्रभाव करता है। हल्दी व्रणरोपक है।

इस प्रकार यह योग भी अत्यन्त प्रभावकारी है।

श्री गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र' विद्या वाचस्पति

शान्ति कुटीर, आगर-मालवा।
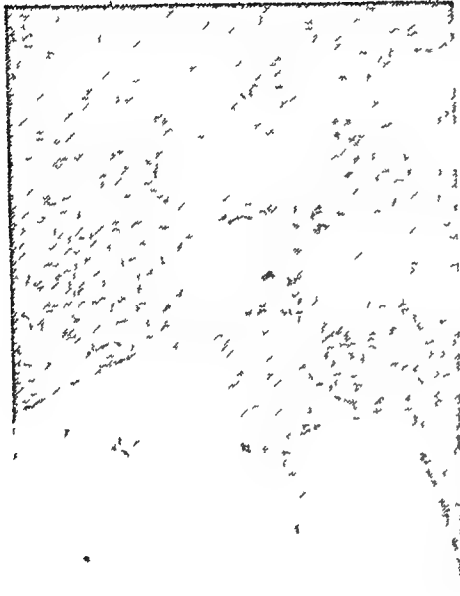
पिता का नाम— स्व० श्री प० शिवनारायण जी शर्मा

आयु – ६४ वर्ष जाति—ब्राह्मण

'आपका जन्म-स्थान, मालवा मे गुना है जो अब मध्यप्रदेश मे है। वर्तमान आगर तथा मूलनिवास-स्थान कोटपूतली (राजस्थान) है। आप उच्चकोटि के लेखक, पत्रकार एव निबन्धकार हैं आपने अपने जीवन में ८८-६० पुस्तको की रचना की जिनमे दीर्घायु, स्वास्थ्योपदेश, शरीर और व्यायाम, स्त्रियों के व्यायाय, सन्तानशास्त्र, यौवन के आसू, स्वप्नदोष विज्ञान, स्वप्नदोष चिकित्सा, दद्रु चिकित्सा, विशूचिका आदि स्वास्थ्य-विषयक रचनायें हैं। प्राकृतिक चिकित्सा के भी आप अच्छे ज्ञाता है। एतदर्थ आपके भेजे हुए ४ प्रयोग यहा प्रकाशित हैं जो परमोपादेय और सरल हैं। पाठक ग्रहण करें।'

—सम्पादक।

तिल्ली वृद्धि पर—

पेट के अन्दर तिल्ली बढ़ी हुई हो तो निम्न योग कैसी भी भयानक स्थिति हो नि'सदेह लाभकर होता है। असाध्यावस्था के अतिरिक्त ६६ प्रतिशत यह सफल सिद्ध है—

विना बुझे चूने (कलई) को ग्वारपाठा के रस मे तीन दिन तक खरल करके जंगली बेर के बराबर गोलिया बनालो। दवा तैयार हो गई।

सेवन विधि—प्रात काल खाली पेट एक मुट्ठी भूंगड़े (सिके हुए चने) चबाकर ऊपर से एक गोली मुंह मे डालकर पानी के साथ उतार जाओ।

पथ्य—तैल बने पदार्थ, लाल मिर्च, गुड़ की वस्तुए, इमली तथा अमचूर तथा गुरुपाक भोजन न करें।

नेत्राञ्जन—

नौसादर (रेशेदार) यदि रेशेदार न तो चौकिया ही लेवें।

विधि—मिट्टी की एक चौड़े मुंह की छोटी सी हाडी नौसादर के परिमाणानुसार लेवे। उसके मुंह पर मिट्टी का ढक्कन जो उस पर ठीक बैठे ऐसा लेवे। यदि ठीक न बैठता हो तो हांडी अथवा ढकने को पत्थर पर घिसकर उसे ऐसा बनावे कि दोनो फिट हो जावें। हाडी को कपडे से पोछकर साफ करले। फिर उसमे नौसादर के छोटे-छोटे टुकड़े डाल दे। ऊपर से ढकन (औंधा) लगाकर ढकने और हांडी की संधि को गेहूं के आटे को गीला करके अच्छी तरह बन्द कर दे। तब ऊपर मिट्टी करके उसे चूल्हे पर रख दे। चूल्हे मे मन्द-मन्द आग जला

दे। जब नौसादर उड़ जावे तब उसे होशियारी से खोल ले। हाडी को धीरे-धीरे हिलाकर समझ ले कि उसमें नौसादर की डलियां न रही हों।

हाडी का मुंह खोलने पर ढक्कन में और हांडी में आपको नौसादर उड़ा हुआ चिपका मिलेगा। इसे आप चाकू आदि की सहायता से आहिस्ता-आहिस्ता निकाल कर कांच की शीशी में भर लें। स्मरण रहे, हांडी या ढकने की मिट्टी का खुरचन इसमें न मिल जावे। दवा तैयार है।

प्रयोग विधि—आंखों में लगाने के पूर्व दवा को कांसे के पात्र में तांबे के मोटे पैसे से पीसकर बारीक करके एक शीशी में रख ले। स्मरण रहे, कांसे के पात्र और पैसे को काम में लाने के पूर्व अच्छी तरह धो-मांज कर सुखा ले। इस अंजन को सलाई के सहारे प्रातः सायं नेत्रों में लगाइये। यह अंजन आंखों में बहुत तेज लगता है किन्तु १५-२० सेकेंड में ही पानी के रूप में आंखों से टपक जाता है। इस दवा को सदैव काच की शीशी में अच्छी तरह बन्द करके रखना चाहिए।

पथ्य—तेल से बने पदार्थ, लाल मिर्च, गुड़ से बने पदार्थ, खटाई, बादी करने वाली वस्तुऐं नहीं खानी चाहिए। धूप में, धुआं में और गर्द भरे स्थानों में नहीं रहना चाहिए।

गुण—इस अंजन से आरम्भिक मोतियाबिन्दु, जाला, फूली, छड़, रतौंध, दृष्टिमान्द्य आदि सभी दोष दूर होकर नेत्र ज्योतिर्मय हो जाते हैं। ६० प्रतिशत लोगों को इससे लाभ पहुच रहा है।

बालकों का सूखा रोग—

—अतिबला (कंघी) की ताजी पत्तियों को पत्थर पर पीसकर रुपये के आकार की एक गोल टिकिया बनालो। फिर इसी के बराबर गुड की एक टिकली बनालो। बांधने के लिए एक शुद्ध पवित्र कपड़े की पट्टी तैयार करलो।

प्रयोग विधि—जिस बालक को सूखा रोग हो उसके ब्रह्मरंध्र पर (वह भाग जो खोपड़ी में पिलपिला होता है) पहले गुड़ की टिकिया रखो और गुड़ की टिकिया पर अतिबला की टिकिया रखो। उस पर शुद्ध कागज या रूई का फाहा रखकर पट्टी बांध दो, ताकि वह दवा इधर-उधर सरकने न पावे। यह दवा रात को सोते समय ही बांधना चाहिए ताकि बालक उसे निकाल न सके।

सुबह आप देखेंगे कि गुड़ गायब है और अतिबला की टिकिया मौजूद है। जब तक गुड़ गायब होता रहे तब तक नित्य बांधते ही जावे। जब गुड़ एक दो दिन रहने लगे तब दवा का प्रयोग बन्द करदें। बालक तन्दुरुस्त हो कर खूब बलिष्ठ हो जायगा। यदि आरम्भ में एक-दो दिन दवा बांधने पर गुड़ शेष रहे तो समझलो कि सूखा रोग नहीं है, तत्सम कोई अन्य रोग है।

जब आप उक्त दवा का प्रयोग करें तब बालक को प्रात कालीन धूप में लिटाकर उसके सारे शरीर पर 'कॉडलीवर आइल' की आहिस्ता-आहिस्ता मालिश किया करे तो अधिकाधिक लाभ होगा। यह योग ६५ प्रतिशत सफल है।

पुत्रदा वटी—

जिनके कन्या ही होती हो और पुत्र का मुख देखने को लालायित हो उन्हे नीचे लिखा प्रयोग काम मे लाना चाहिए। यह ८५ प्रतिशत सफल होता है।

बेलगिरी	१ तोला
विदारी कन्द	१ तोला

—दोनों को पीसकर कपड़-छान कर ले। अब इसमें १ रत्ती अनबिंधे मोतियो की पिष्टी और १ रत्ती स्वर्णभस्म मिलाकर पानी के सहारे नौ गोलियां बनाले।

—शेषांश पृष्ठ १४० पर।

कविराज हरनामसिंह वर्मा राजवैद्य

रसायन फार्मेसी, दरियागंज देहली।

"श्री वर्मा जी 'रसायन' नामक आयुर्वेद पत्र के सफल सम्पादक हैं। आपकी आयु ७४ वर्ष है। आपका कहना है-"मेरे जीवन का ज्यादा समय अनुभुत योगो की खोज और संग्रह तथा उनके प्रकाशन में व्यतीत हुआ है, जीवन मे लम्बी लम्बी यात्रायें की, अनेको सिद्ध और अनुभूत योग प्राप्त किए, उनका परीक्षण किया और सफलता भी मिली"। आप गिरनार के एक सिद्ध महात्मा से प्राप्त एक योग धन्वन्तरि के पाठकों को भेंट किया है। आशा है पाठक इस प्रयोग से लाभ उठावेंगे।" —सम्पादक।

गन्धक कल्प—

एक लोहे की कढ़ाई मे पावभर शुद्ध आंवलासार गन्धक और दो तोला असली घृत डालकर मन्दाग्नि पर रखकर पिघलावें, जब तैलवत् होजावे तब पहले से तैयार रखा हुआ उत्तम परिपक्व अनारो का आधा सेर रस (स्वच्छ वस्त्र से छना हुआ) थोडा-थोड़ा डालकर उसमें शोषित करादे। इसके बाद इसी प्रकार पक्व कागजी निम्बुओ का आध सेर कपडछन रस थोड़ा-थोडा डालकर जज्ब करादे। तद्पश्चात केले के झाड का आध सेर कपडछन रस भी उपरोक्त रीति से थोडा-थोडा डालकर गधक को पिलादे। इस बात का ध्यान रखे कि अग्नि समान रहे, अधिक तेज या मन्द नहीं होना चाहिये। इस क्रिया से गंधक जरा सफेद और निर्गन्ध तैयार होगी।

यह गन्धक कल्प है। इसकी मात्रा ६ रत्ती प्रात:काल और ६ रत्ती सायंकाल उत्तम ताजा घृत के साथ खिलाना चाहिए। इसके सेवन मे क्षय, वमन, अम्ल-पित्त, दाह, रक्तविकार, कुष्ठ, अर्श और संग्रहणी आदि रोग निर्मूल होजाते हैं। इस पर रोगी को दो चार निम्बु तक का रस पानी और शक्कर के साथ मिलाकर पिलाना चाहिए। संग्रहणी वाले को तीन चार निम्बु पानी में पकाकर उनमें से एक एक निम्बु का रस उपरोक्त विधि से दिन मे चार चार दे। यदि रोगी को अनुकूल आजावे तो ८ से १२ निम्बु तक का रस ऊपर की पद्धति से दे सकते हैं। संग्रहणी पर अनुभूत है।

∴ पृष्ठ १३६ का शेषांश ∴

सेवन विधि—एक गोली प्रात, एक मध्याह्न और एक सायंकाल के समय बछड़े वाली गौ के दूध से सूर्य की ओर मुख करके सेवन करे। जब नाक से दाहिना स्वर बहता हो तभी गोली लेवे। बाएं स्वर में कदापि न खावें। इस प्रकार नित्य तीन दिन तक सेवन करे।

यह दवा गर्भाधान के बाद के तीसरे महीने में सेवन की जाय। निश्चय ही पुत्र होगा।

पथ्य—गर्भवती को जिन पदार्थों से हानि होती है वे सभी वर्जित हैं। आहार-विहार उचित हो और पुत्रोत्पत्ति की धारणा दृढ़ तथा प्रबल रखी जाय।

चिकित्सक श्री पं० चन्द्रशेखर शर्मा

सुधाकर औषधालय, कूचासीताराम, बरेली।

"आप वयोवृद्ध सफल चिकित्सक हैं, आपके व्यवहार एवं चातुरी सरलता से आपके रोगी अत्यन्त प्रभावित रहते हैं यही कारण है आपके पास जटिल रोगी चिकित्सार्थ आते हैं। आपका चिकित्सा काल ३५ वर्ष है। आयुर्वेद का अध्ययन आपके पिता जी के संरक्षकत्व में हुआ। आपके पिता एक सम्भ्रान्त कुल के प्रतिष्ठित योग्य चिकित्सक थे। आप योगों की अत्युक्ति-पूर्ण प्रशंसा के विरोधी हैं। आपकी लिखी हुई 'अनुभूत सिद्ध चिकित्सा' नामक पुस्तक जिला वैद्य सभा बरेली द्वारा प्रकाशित हो चुकी है। आपके भेजे हुए प्रयोग चिकित्सार्थ प्रयोग में लाने योग्य हैं। आपके औषधालय के ये सभी योग पेटेन्ट हैं, उदारतावश आपने प्रकाशित किए हैं।"

—सम्पादक।

सुधाकर चूर्ण—

सोंठ, कालीमिर्च, पीपल छोटी, जीरा सफेद, जीरा काला
—प्रत्येक ५-५ तोला

नवसादर हाँडी का, कालानमक, संचानमक, कचलोना नमक
—प्रत्येक ५-५ तोला

सेंधाकचरी	आध सेर
असली हीरा हींग भुनी	१ तोला
टाटरी	७॥ तोला
सतअजवाइन	१ तोला
पिपरमेंट	६ माशा
शङ्खभस्म	२ तोला
यवक्षार	२ तोला

विधि—सब वस्तुओं को साफ कर कूट-पीस-छान कर चूर्ण विधि से चूर्ण बनाले और शीशी में सुरक्षित रखे।

मात्रा—१ माशा से ३ माशा तक।

गुण—इसके सेवन से जठराग्नि प्रदीप्त हो, अन्न का उत्तम रूप से परिपाक होता है। आनाह, शूल, खट्टी डकारों का आना, यकृत विकार, प्लीहा का बढ़ाव, जी का घबड़ाना, बार-बार कै होना, गर्भिणी की वमन, वायुगोला आदि रोग उचित अनुपानों द्वारा समूल नष्ट होजाता है।

खाने में अति स्वादिष्ट बनता है। मुख का स्वाद ठीक कर दुर्गन्धि को नष्ट करता है।

राजयक्ष्मा पर अर्क दुग्ध—

गिलोय	१ सेर
उशारेरेवन्द	१ पाव
फूल गुलाब (सेवती)	३ तोला
गाजवां के पत्ते	आध पाव
श्वेतचन्दन का चूर्ण	३ तोला
कासनी के बीज	एक पाव
खीरा ककड़ी के बीज	एक पाव
बीज कुलफा	तीन छटांक
धनियां नया	तीन छटांक
नीलकमल	एक पाव
लौकी के बीज	एक पाव

वेदसादा के पत्ते   बीह के पत्ते
सेव काश्मीरी   पालक के पत्ते

—प्रत्येक १-१ सेर

वांसा   एक पाव
वेदमुश्क का अर्क   १ बोतल

—इन सब वनस्पतियो को रात्रि के समय भभके (वाष्प यन्त्र) से १६ गुना जल में भिगोदे, प्रात पन्द्रह सेर बकरी का दूध भभके मे डाल देवे और १५ बोतले अर्क निकाल ले।

मात्रा—रोगी का बलाबल देखकर स्वयं निश्चित करे।

गुण—इसके सेवन करने से राजयक्ष्मा रोगी मे नवीन रक्त का संचार होता है, साथ ही खुश्क खांसी, उरक्षत आदि फुफ्फुस सम्बन्धी रोग शीघ्र नष्ट होते है। ज्वर भी नष्ट करता है।

सुधाकर पाचक—

सोंठ   काली मिर्च   पीपल छोटी
अजवाइन   अजमोद   दालचीनी
लौंग   सफेदजीरा   कालाजीरी
इलायची लाल   अकरकरा   हींगभुनी

—प्रत्येक १-१ तोला

सेंधानमक   कालानमक
किशमिश   छुआरे

—प्रत्येक दो-दो छटांक

अदरख के महीन टुकडे   १। सेर

—अद्रक को उबाल कर मिलावें। किसी शीशे के वर्तन मे डालकर बाद को नीबू के रस से इस वर्तन को भर कर १ माह सूखने को तेज धूप मे कपड़े से ढंक कर रक्खे। बाद को १-१ तोला निकाल कर दिन मे तीन बार।

गुण—अरुचि, मन्दाग्नि, अफारा, खट्टी डकारो का आना, जी का मचलाना, अजीर्ण आदि रोग समूल नष्ट करने वाला प्रसिद्ध स्वादिष्ट योग है।

प्रतिश्याय नाशक—

त्रिफलाचूर्ण   १५ तोला
छोटी हर्र का चूर्ण   ५ तोला
धनिया   ५ तोला
उस्त खद्दूस   ५ तोला

—इन सबको कूट-पीस छान १० छटाक मिश्री की चासनी कर उस चासनी में उक्त चूर्ण मिलाकर (अग्नि से कटाह उतार कर) मधु गावजबान रोगन बादाम मीठा १० तोला मिलाले और चीनी के वर्त्तन मे रखकर प्रात—सायं १॥-१॥ माशा निकाल कर खावे, ऊपर से ५ तोले पानी गर्म कर के पीवे।

गुण—इसके सेवन से हर प्रकार का कास, श्वास, नजला, शिर दर्द, नेत्रविकार, कर्णविकार, सम्पूर्ण के रोग, पुराने से पुराना कब्ज, आतों की खुश्की आदि नष्ट करने की उत्तम महौषधि है।

सुधाकर मरहम—

वंशलोचन   माजूफल   दाना इलायची
शीतलचीनी   मुरदासंग
सेलखडी   सिन्दूर
मेंहदी पिसी   सफेदा कास्तकारी

—प्रत्येक १-१ तोला

रसकपूर   ६ माशा

—सबको कूट-पीस कपड़छन कर रसकपूर मिलाना चाहिये, बाद को मक्खन लोनी या वेसलीन में मिला कर लगाना चाहिए।

गुण—इस मरहम के बाह्य प्रयोग कराने से सिर से लेकर पैर तक के हर प्रकार के जख्म, फोड़ा फुन्सी, दाद, खाज, छाजन, टीका गुदा (बच्चों का), मकड़ी का विष, स्त्रियों के गर्भाशय के जख्म, पुरुषो के जख्म, उपदंश जनित समस्त शरीर के चर्म-विकार नष्ट करने वाला अपूर्व योग है।

सुधाकर अञ्जन—

नवसादर हांडी का स्वच्छ   ५ तोला

—इसका चूर्ण करे और काली बकरी का दूध ऽ॥ लेकर किसी ताम्र पात्र मे दोनो वस्तुओ को

मिलाकर सूर्य की तेज धूप मे रक्खें। रोज तांबे की डंडी से चला दिया करे। १ सप्ताह मे यह दोनों वस्तुऐं भली प्रकार सूख जाती हैं। तब दोनो को छुरी से खुरच कर भले प्रकार तीन दिन खरल करे। बाद को शीशी मे सुरक्षित रक्खे।

गुण—जिस किसी के नेत्र मे जाला, माढ़ा, टेंट, कितना ही पुराने से पुराना क्यो न हो प्रात.काल की ओस अजन मे मिलाकर अंगुली से रगड़ना चाहिए। यदि नेत्रो मे इसके लगाने से लाली पैदा हो जावे तो १-२ दिन को अजन लगाना बन्द कर दे।

नेत्रसुधा लाल अञ्जन—

स्वच्छ गेरू	५ तोला

—लेकर महीन कपड़छन कर ले। बाद को ७॥ तोला फिटकरी सफेद लेकर कढ़ाई मे डाल नीचे अग्नि देवे। जब सब फिटकरी का भले प्रकार फूला हो जावे तो थोडा-थोड़ा गेरू चूर्ण डालकर मिलाते जावें, जब दोनों वस्तुऐं खूब मिल जावे तो ठंडा होने पर खरल मे सुरमावत महीन करना चाहिए। बाद को शीशी मे सुरक्षित रक्खें।

विधि—नेत्रों के परवाल किसी योग्य जानकार से उखड़वा कर इस अजन को नित्य प्रातः सायं रगडने से नेत्रों के परवाल नहीं होते, सिद्ध महौषधि है।

पीनस पर साधुप्रदत्त योग—

—दोनामरुवा बूटी के पत्तों के स्वरस मे कपूर मिलाकर रोगी को नस्य देने से नाक से कृमि झरना शुरू हो जाता है। यह प्रयोग नये पीनस रोग मे १ सप्ताह और पुराने मे २ सप्ताह में लाभ करता है। रोगी सदैव के लिए अच्छा हो जाता है।

शाही जुलाब—

साहपसन्द	६ माशा
जलापा हर्र	४ माशा
दाना इलायची श्वेत	२ माशा
मिश्री	१ तोला

—इन सबको महीन चूर्ण बना ३ मात्रा बना ले और अर्क गुलाब ½ बोतल अर्क गाजवां ½ बो. मिलाकर एक बोतल मे कर ले। उसमे कन्द (मिश्री) १० तोला मिला दे। ऊपर की ३ मात्रा प्रात से २-२ घंटे बाद खिलाकर ऊपर से अर्क ५-५ तोला बोतल वाला पिला दे और जब-जब दस्त आवे तभी-तभी ५-५ तोला अर्क पिलाते रहे। इस प्रकार रोगी को बिला किसी तकलीफ के दस्त आजाते हैं, किसी प्रकार की तकलीफ रोगी को नहीं होती। शाम को मूंग की खिचड़ी पतली बनाकर ताजे दही के साथ दे। फिर सोते समय खमीरा गाजवां २ तोला वर्क चांदी १ मिलाकर ठंडाई के स्थान पर खिलाकर अर्क गाजवा ५ तोला शर्बत अनार १॥ तोला डालकर पिला दे। रोगी को खुश्की गर्मी कुछ भी न व्यापेगी और साथ की कमजोरी भी न मालूम पड़ेगी।

सरल विरेचन—

कबीला	१० तोला
स्वच्छ गोमूत्र	१० तोला

विधि—खरल मे डाल घोटे। चने प्रमाण गोली बनाले, छाया मे सुखा ले।

मात्रा—१-१ वटी सोते समय गर्म पानी या गर्म दूध से ले।

गुण—प्रात मल स्वच्छ होगा कोई हानि न होगी। अनुभूत है।

कमलवाय पर सरल प्रयोग—

—विषखपरे की जड के १०८ टुकड़े करके रोगी के गले से कलावा मे माला की तरह बांधकर पहिना दे। इसके प्रयोग से बच्चों व बड़े रोगियो की कमलवाय नष्ट होती है। यह योग एक माली द्वारा प्राप्त किया था।

—शेष।श पृष्ठ १४५ पर।

वैद्य मुन्नालाल गुप्त आयुर्वेद भिषग

पुरानी दालमण्डी, कानपुर।

पिता का नाम— श्री बाबूलाल जी अग्रवाल
आयु—५० वर्ष जाति—अग्रवाल वैश्य

"श्री गुप्त जी वर्तमान समय मे कानपुर में स्वतंत्र चिकित्सा व्यवसाय करते है। आपका पैतृक निवास-स्थान महोबा है। यहीं आपने श्री नागानन्द आयुर्वेद विद्यालय मे आयुर्वेद का अध्ययन किया तदनन्तर कानपुर में श्री रामप्रिय जी त्रिवेदी से शिक्षा ग्रहण की। आपका सभी आयुर्वेद पत्र-पत्रिकाओं से सम्बन्ध रहा है जिनमें सैकड़ो लेख छप चुके हैं। आपको सदैव से लिखने का व्यसन है, बड़े योग्य चिकित्सक हैं। चिकित्सा मे ३० वर्ष का अनुभव है। आप आर्तजनों की सेवा करने में सदैव तत्पर रहते हैं। सामाजिक तथा जातीय सेवाओं मे आपने भरपूर भाग लिया है अतः अधिक सम्मान है। धन्वन्तरि से आपका घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। आपने ५ प्रयोग हमारे आग्रह से प्रकाशनार्थ भेजे है जो निम्न लिखित है।"

—सम्पादक।

(१) श्वेत प्रदर—

श्वेत प्रदर की उत्पत्ति प्रायः रक्त की कमी से होते देखी जाती है। इसके लिए निम्न योग अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुआ है –

भस्मत्रयी—त्रिवगभस्म माण्डूरभस्म
स्वर्णमाक्षिक —प्रत्येक आधी-आधी रत्ती

—यह एक मात्रा है। सुबह-शाम, मधु से या मक्खन से दे, आशातीत लाभ होगा।

कोष्ठबद्धता पर—

कोष्ठबद्धता अधिकतर उदर मे वायु की विकृति और रूक्षता से होती है। उसके लिए—

भिलावे का तेल, स्वयं निकाला हुआ हो

मात्रा—१ बूंद, बादाम तेल ६ माशे, दूध पाव भर, यह एक मात्रा है। सुबह और रात्रि को सोते समय सेवन करावे। कुछ दिनों के नित्य सेवन से कैसा ही पुराना कब्ज हो, नष्ट होजाता है। यही नहीं इसके उपयोग से अनेक स्नायु रोग भी नष्ट होते देखे गये हैं। पक्षाघात में भी लाभप्रद प्रमाणित हुआ है।

शीतला रोग—

चेचक निकलते-निकलते दब गई हो, शरीरस्थ सम्पूर्ण विष दानों से न आया हो, व्याधि ने भयंकर रूप धारण कर लिया हो तो प्रसारिणी (खीप) बूटी के क्षुप और मुनक्का, पूर्ण मात्रा खीप की २ तोला मुनक्का ७ दाने, बच्चों के लिए यथा आवश्यक वय के अनुसार, क्वाथ बनाकर एक दिन मे २ या ३ बार दे। सिर्फ एक दिन देना ही पर्याप्त

होगा। दाने सब बाहर निकल आते है और उपद्रव नष्ट हो जाते है। अद्भुत चमत्कारिक औषध है।

बच्चों के निमोनिया पर—

जिसे डब्बा या 'पसली चलना' भी कहते हैं, इस पर निम्न योग निश्चयेन लाभकर सिद्ध हुआ है। इसकी ४-६ मात्रा मे ही बच्चा नवजीवन लाभ प्राप्त करता है।

अर्क दुग्ध के योग से तैयार की गई सावर-शृंगभस्म १ रत्ती एम. बी ६९३ (नामक पेटेंट दवा) चौथाई टिकिया, अनुपान–पान का रस और शहद, दिन मे ४-५ मात्रा दे। ठण्ड से बचाये, किन्तु रोगी को स्वच्छ वायु में रखे, यह ध्यान रहे वायु का थपेड़ा न लगे। प्रथम दिन ही लाभ होगा। दूसरे दिन तो रोगी बालक आरोग्य हो जाता है। यदि फिर भी औषधि देने की आवश्यकता रह जाय तो निम्न औषधि दें—

संजीवनीवटी शृंगभस्म
भुना चौकिया सुहागा —आधी-आधी रत्ती
—दिन भर मे ४ बार।
अनुपान—पान का रस और मधु।

डिफ्थीरिया (ग्लोध) रोग—

यह रोग प्रायः बच्चो के ही होता है, अत्यन्त भयंकर माना जाता है। इसकी सीरम चिकित्सा के अतिरिक्त अन्य कोई औषधि आविष्कृत नहीं हुई। निम्न औषधि का अनुभव करके देखे, हमने एक दो रोगियों पर पूर्ण लाभप्रद पाया है।

पारद गधक योग से तैयार की गई कम से कम ४० पुटी लोह (फौलाद) भस्म, सिद्ध गधक रसायन (गधक को भिलावे के तेल मे शुद्ध कर, बाद मे गधक रसायन विधि से अन्यान्य द्रव्यो की भावना देवें।) शृंगभस्म, योगेन्द्ररस

मात्रा—सब मिलाकर १ रत्ती।

अनुपान—पान का रस और मधु। प्रत्येक ३-३ घंटे मे दे। गले मे शुद्ध गधक और पान का रस मिलाकर लगावे। पहले दिन ही लाभ मिलेगा। ३-४ दिन में रोगी निरोग हो जायेगा। अनुभव करे।

पृष्ठ १४३ का शेषांश

उपदंशनाशक अपूर्व योग—

माजूफल अकरकरा हिंगुलरूमी
सुहागा चौकिया —प्रत्येक ५-५ माशा
वशलोचन रसकपूर १-१ माशा

विधि—इन सबको खरल कर छोटी-छोटी गोली बनालें और रात्रि के समय ३-३ घंटे बाद यह सब गोलिया चार बार मे चिलम मे तम्बाकू के स्थान पर रखकर धूम्रपान करना चाहिए। ध्यान रखे कि रोगी रातभर सोने न पावे।

पथ्य—भोजन मे उर्द की दाल, नसीली तुरई, परवल ही केवल बिना मिर्च का दे। इसका छौंकन देशी घी से कराना चाहिए।

नोट—इन गोलियों के धूम्रपान करने से मुआं हो जाता है और मुख से लार द्वारा रोग बह-बह कर नष्ट हो जाता है। इस प्रयोग को केवल १ ही रात्रि करना चाहिए।

गुण—इसके सेवन करने से बिगडा उपदश शीघ्र ही ठीक होने लगता है।

यह योग १०० वर्षीय मुंशी दुर्गाप्रसाद जी हकीम से प्राप्त किया गया है। योग अति श्रेष्ठ है।

मुआं की औषधि—

चमेली के पत्ते जुही के पत्ते
गोदनी के पत्ते गिलोय हंसराज
शहतूत के पत्ते हरड़ बहेडा
दारुहल्दी आवला —प्रत्येक ६-६ माशे
उन्नाव ५ छटाक
मुनक्का ७ छटांक

—पानी १ सेर मे उबाल कर तथा ठडाकर शहद २ तोला मिला बार-बार कुल्ले करना चाहिए।

भोजन—दूध और भात करना चाहिए।

आयुर्वेदाचार्य पं० उमादत्त शर्मा त्रिवेदी काव्यतीर्थ

आयुर्वैदिक आरोग्य भवन, राजा का रामपुर (एटा)
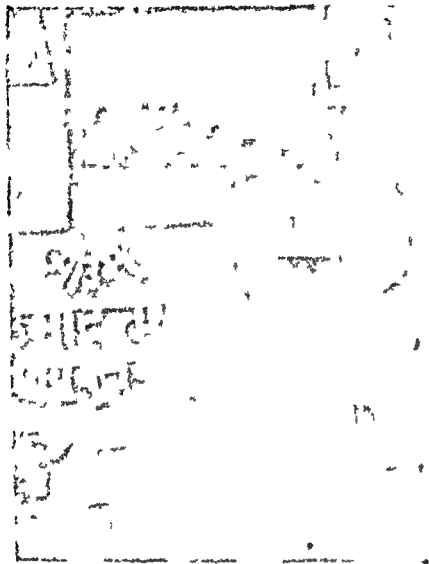
"श्री त्रिवेदी जी वयोवृद्ध, अनुभवी एवं विद्वान चिकित्सक हैं। आपने आयुर्वेद कालेज जयपुर में श्री नरहरि शास्त्री, श्री स्वामी लक्ष्मीराम जी तथा पं० गंगासहाय जी शास्त्री से आयुर्वेद का उच्च शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त किया। आप मन्थर ज्वर, संग्रहणी, जलोदर एवं सन्निपात ज्वर के अनुभवी सफल चिकित्सक हैं। आपने सिद्ध भैषज्य संग्रह नामक एक पुस्तक भी लिखी है जो अभी प्रकाशित नहीं हो सकी। धन्वन्तरि पर आपकी सदैव से कृपा रही है तथा अपने अनुभव समय-समय पर धन्वन्तरि पाठकों को देते रहे हैं। आशा है पाठक आपके निम्न अनुभवों से यथोचित लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।

संजीवनी वटी—

इस जगत् प्रसिद्ध वटी से संभवतः सभी वैद्य एवं जनता परिचित होगी। कोई भी वैद्य न होगा जिसके औषधालय में यह वटी न होवे, सभी इसका साधारणतया व्यवहार करते हैं। पर मुझे इस वटी पर विशेष श्रद्धा एवं अनुभव है। मैं प्रायः इस वटी को (पेटेंट मेडीसन) के रूप में मन्थर ज्वर, श्वसनक-ज्वर, विशूचिका, सन्तत ज्वर एवं सन्निपातादि ज्वरों की अवस्थाओं में दैनिक व्यवहार करता हू और अवश्य सफलता प्राप्त करता हू। आजतक मेरे अनुभव में साध्य रोग होने पर कभी भी निष्फल नहीं हुई है। पर निर्माण विधि मेरी कुछ शास्त्रीय लेख से पृथक् है जिसके कारण ही मुझे विशेष आस्था है।

वायविडङ्ग	सोंठ	छोटी पीपल
हरड़	आवला	बहेड़ा
ढुधवच	गुडूची	शुद्ध भिलावा
शुद्ध सिंगिया		शुद्ध हिंगुल

—प्रत्येक समान भाग

—लेकर कुटपीस छान कर गौमूत्र में भिगो देवे। गौमूत्र सूखने पर फिर नवीन गौमूत्र डालता जावे और घोट-घोटकर उसको सुखाता जावे, इस प्रकार कम से कम ४० दिन इसको गौमूत्र में भावित कर गुंजा प्रमाण इसकी वटी बना लेवे।

साधारणतया वैद्य इसमें हिंगुल नहीं डालते हैं तथा 'गौमूत्रेणैव पेपयेत' के अनुसार सिर्फ गौमूत्र में पीसकर ३-४ घंटे में ही गोली बना-लेते हैं।

मैं उसमें ४० दिन तक गौमूत्र की भावना देता हूँ, यही इसकी विशेषता है। इसी निर्माण विधि के आधार पर यह वटी वस्तुत. रामबाण सिद्ध हुई है, वैद्यों से प्रार्थना है कि वैद्य बन्धु इसको मेरे लेखानुसार निर्माण करें और इससे लाभ उठावे।

जब मन्थर ज्वर का विष (दाने रूप) मे वाहर नहीं निकलता होवे और नाना प्रकोप के उपद्रव उत्पन्न करे उस समय इस वटी का प्रयोग निम्न विधि से करे–

संजीवनी वटी	२ गोली
मुक्तापिष्टी	१ रत्ती
प्रवालपिष्टी	२ रत्ती
विषाण भस्म	१ रत्ती

—मिलाकर १ मात्रा, शहद आदि समुचित अनुपान से देवें। दिन-रात मे इस प्रकार की ३-४ मात्रा दी जाती हैं।

इस प्रयोग से १-२ दिन में ही समस्त दाने निकल आते हैं और रोगी में विद्यमान उपद्रव क्रमश शान्त होने लगते हैं। यह औषध पाश्चात् पेटेंट औषध (एरोमाइसीन) जिसकी आज डाक्टर तारीफ करते नहीं अघाते हैं, उससे कहीं उत्तम सिद्ध औषध है। यह किसी दशा में हानिकारक नहीं, इसमे विशेषता यह है कि कभी-कभी यह विष कम होने पर शीघ्र ही दोषों का पाचन करके ज्वर को शान्त कर देती है।

इसी प्रकार शास्त्र में वर्णित सभी रोगी पर सफलतापूर्वक इसका व्यवहार किया जा सकता है।

कामला—

कामला रोग मे निम्न लिखित योग अधिकतर लाभ करता है। जहां डाक्टरो के इन्जैक्शन तथा मिक्श्चर कुछ भी नहीं करते है वहां पर यह योग शीघ्र ही लाभप्रद है। यह सिद्ध भैषज्य संग्रह का योग है।

—१-१ तोला कासनी के नवीन बीजों को प्रातः साय ५ तोला पानी मे भिगोकर पीस कर उसी पानी मे घोलकर किंचित् (६ माशा) शहद डालकर दोनो समय पीवें, भोजन बन्द करके केवल पथ्य में सन्तरा, मौसमी आदि का रस पीवें तो ४-५ दिन मे ही कामला अवश्य शान्त हो जाता है।

रक्तपित्त पर—

—उत्तम लाख पीपल की लेकर जल मे धोकर, सुखाकर, कूट-पीस कपडछान करके वरावर मिश्री मिलाकर हरी दूर्वा के स्वरस के साथ देने से शीघ्र ही रक्तपित्त ऊर्ध्वग एवं अधोग शान्त होता है। स्त्रियों का धारा प्रवाह रक्त-स्राव भी शीघ्र लाभ हो जाता है, वहुत सी स्त्रियों को मैंने इसका प्रयोग कराकर लाभ पहुँचाया है।

मात्रा—इसकी ६ माशा से १ तोला तक की है।

श्वास रोग—

श्वेत मल्ल	१ माशा
उत्तम वंशलोचन	१ तोला
सफेद उत्तम कूंजा की मिश्री	१ तोला

—सबको २४ घंटे निरन्तर खरल मे घोटकर शीशी (कांच की डाट वाली) मे रख लेवे।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक शहद मे अथवा मलाई मिश्री मे मिलाकर प्रातःसायं सेवन करे।

गुण—इससे श्वास कास कफ शीघ्र ही शान्त हो जाता है एवं वल्य, वृष्य एवं रक्त संवर्धक है। यह एक सन्यासी का वतलाया हुआ प्रयोग है, इससे बहुत अधिक लाभ होता है।

वातारि तैल—

मिट्टी का तैल ऽ— मे १ तोला कपूर डालकर मिलाकर रख लेवे।

—इसकी मालिश करने के वाद रुग्ण स्थान को गरम रुई से सेक देने से दर्द एवं वातव्याधि (कमर आदि) का दर्द शीघ्र शान्त हो जाता है। इसी तैल को फोहा द्वारा दाढ़ के दर्द मे लगाने पर भी दंष्ट्राशूल (कृमिजन्य) शीघ्र ही शान्त होता है। यह दोनों मेरे अनुभूत साधारण मुष्टि योग है।

साहित्यायुर्वेदाचार्य

श्री पं० शचीन्द्र पाठक शास्त्री B. A, काव्यतीर्थ

अध्यक्ष—श्री चन्द ज्योति औषधालय, मधुवनी (दरभगा)

"श्री पाठक जी बडी लगन के व्यक्ति हैं जब तक कार्य पूर्ण नही कर लेते चैन नही लेते। आपने अपनी लगन मे ही काव्यतीर्थ, साहित्याचार्य और आयुर्वेदाचार्य परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। सन् ४४ से ४७ तक जिलाबोर्ड के औषधालय में प्रधान वैद्य रहे। तदनन्तर आपने मधुवनी मे अपना स्वतंत्र औषधालय स्थापित किया जो निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। आप सार्वजनिक कार्यो मे अधिक भाग लेते रहे हैं, आपके प्रयत्न से जिला वैद्य सम्मेलन मधुवनी में शिवगंगा आयुर्वेद महाविद्यालय की स्थापना हुई जो राजकीय सहायता से कार्यरत है। आप इस सस्था मे द्रव्यगुण विभाग के प्रधान हैं। आपने अपने चिकित्साकाल की कुछ अनुभूतिया प्रेषित की हैं जिन्हें पाठक निम्न पंक्तियों में प्राप्त करेंगे।"

—सम्पादक।

नवजीवन कल्प—

कुष्माण्ड स्वरस*	४ सेर
वासामूल क्वाथ	१ सेर
बबूलत्वक् क्वाथ	१ सेर
मधुयष्टी क्वाथ	१ सेर
कंटकारीक्वाथ	१ सेर

—इन्हें वाष्प स्वेदन यन्त्र द्वारा घन बना लिया जाय उसमें गोघृत तीन पाव देकर उसी यन्त्र, द्वारा तब तक स्वेदन किया जाय जब तक जलीय भाग पूरा सूख न जावे। घृत के साथ इसे बराबर चलाते रहना चाहिये। फिर उसे उतारकर मधु १ सेर वंशलोचन एक पाव, छोटी इलायची बीज का चूर्ण एक छटांक देकर अच्छी तरह घोट दें।

गुण—यह योग कास, यक्ष्मा, कमजोरी, स्त्रीरोग, श्वेत रक्त प्रदर, पुराने ज्वर में अमोघ लाभदायक है। मेरे यहां यक्ष्मा रोग मे इसकी पूरी सफलता देखी गई है।

देवी सुधा—

दशमूलक्वाथ	८ सेर
अशोकक्वाथ	४ सेर
जीरकक्वाथ	४ सेर
लोध्र क्वाथ	४ सेर
मधुयष्टी क्वाथ	४ सेर
चीनी	१६ सेर

—उक्त द्रव्य तब तक औटाया जाय, जब तक चीनी की चिकनाहट हाथ मे लगने लगे। फिर उसमें—

*स्वरस निकालने का विधान यह है कि उसके छोटे-छोटे टुकड़े बनाकर मन्द अग्नि से खूब सिद्ध किया जाय फिर उसे फिल्टर पेपर द्वारा छान कर स्वरस निकाला जाय।

धातकी पुष्प	१ सेर
अर्जु नत्वक्	आधा सेर
अश्वगन्ध	आधा सेर
चन्दनचूरा	१ पाव
कमलपुष्प	१ पाव
कुमुदिनी पुष्प	१ पाव

—लेकर एक महीने तक अरिष्ट के रूप मे सन्धान करले।

गुण—यह स्त्री रोग की अमोघ दवा है। योपापस्मार प्रभृति भयङ्कर रोग भी शीघ्र दूर होते हैं।

उदर-क्रिमिहर—

कुटकी क्वाथ	डेढ़ सेर
कुमारी स्वरस	आधा सेर
चित्रक क्वाथ	आधा सेर
निम्ब मूलक्वाथ	आधा सेर

—इन द्रव्यों को वाष्प स्वेदन यन्त्र द्वारा घन वनाकर इसमें—

वायविडङ्ग इन्द्रयव पलाश
पीपल —प्रत्येक ७।।-७।। तोला

—इन सबका चूर्ण डालकर छोटे वेर के समान वटी वना कर प्रात. सायं उष्ण जल के साथ देने से पेट के सभी तरह के कीड़े गिर जाते हैं।

वातारि वटी—

संखिया श्वेत हिंगुल तबकीहरताल
—प्रत्येक १-१ तोला

—इन्हे ४८ तोले निम्वु स्वरस मे खूब घोटे। निम्वु का रस क्रमश डालना चाहिये। फिर उसे कदली के कोमल पत्र मे सूत के द्वारा लपेट कर कुष्माण्ड के बीच मे गढ़ा खोद कर उसमे तीन दिनो तक रखे। इस तरह ७ कुष्माण्ड मे २१ दिनो तक शोधन करना चाहिये। कदली पत्र वरावर वदलना आवश्यक है। इस तरह शोधन कर लेने के वाद उसमे असली लोहभस्म ६ तोला सौभाग्य चर्ण १२ तो. डालकर खूव वारीक घोटकर उरद की भाति वटी वनाले

गुण—यह वातव्याधि, वात विकार, सन्निपात, रक्त-विकार, फिरङ्ग, श्लीपद, विषमज्वर मे आशातीत लाभ करता है।

कुमार जीवन —

शतपुष्पार्क	४ सेर
चूना	२।। सेर
अजमाइन	१ छटाक
वायविडग	इन्द्रयव
पलासपीपर	कमलगट्टा
कमल का फूल	मुस्ता (मौथा)
छोटी हरीतकी	—प्रत्येक १-१ छटांक

—इन द्रव्यो का वारीक चर्ण कर २४ घण्टे घोटकर उसके ऊपर के साफ भाग को कपडछान कर निकाल ले और उसमे चीनी ढाई सेर रङ्ग कासीस ५ छटांक डालकर अरिष्ट के रूप मे दवा तैयार करे। यह वालरोग यकृत-विकार मे पूर्ण लाभदायक है।

उत्तम चटनी—

सुण्ठि (सौंठ), धनिया, कचरी, अमचूर, सेधानमक—पांचो १० १० तोला। जीरा भुना लालमिर्च कालानमक तीनो ५-५ तोला। हींग भुनी, इलायची के दाने—दोनो १-१ तोला।

—सवको वारीक पीसकर चूर्ण करले। तथा कढ़ाई में थोड़े घी के साथ मंदाग्नि पर अकोर ले।

इस चूर्ण को ६ माशा की मात्रा मे प्रतिदिन गरम जल के साथ खाने से अजीर्ण व उदरशूल नहीं होता है। थोड़ा वूरा मिला पानी से पीस लेने से स्वादिष्ट चटनी वन जाती है। इसे दाल-शाक मे भी उनको स्वादिष्ट वनाने के लिये मिलाया जाता है। —धन्वन्तरि भाग २ अङ्क ३ से।

साहित्याचार्य

श्री पं. महावीर प्रसाद जोशी आयुर्वेदाचार्य

प्रधान चिकित्सक—श्री मोहता दातव्य औषधालय, सादुलपुर (राजस्थान)
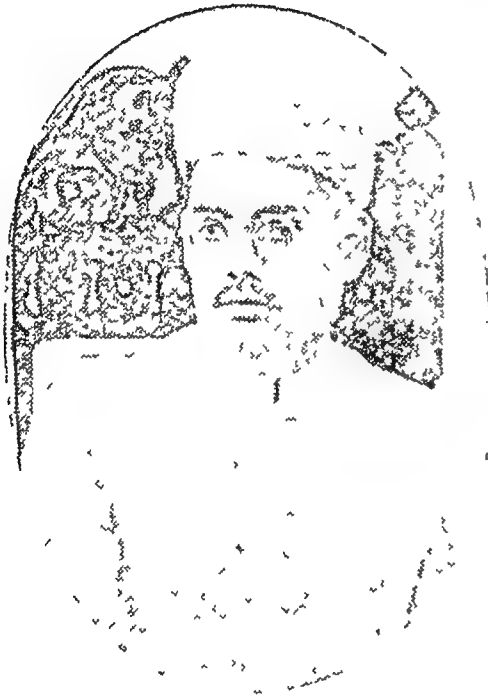
"श्री जोशी जी का जन्म झुंझुनूं जिले के डूंडलोद ग्राम में हुआ। आपके पिता श्री पं ब्रजमोहन जी शर्मा शेखावटी प्रान्त के वयोवृद्ध अनुभवी एवं यशस्वी चिकित्सक हैं। आप श्री मोहता दातव्य औषधालय मे १५ वर्ष से प्रधान चिकित्सक के पद पर सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। आप सफल चिकित्सक होने के साथ-साथ योग्य लेखक भी हैं। सस्कृत तथा हिन्दी में कई पुस्तकें लिखी है। पचतत्र का हिन्दी पद्यानुवाद छप रहा है। आपके निम्न दो प्रयोग पूर्ण परीक्षित एव सफल प्रमाणित हैं।"

—सम्पादक।

पुष्पधन्वा रस—

मल्ल चन्द्रोदय	केशर	स्वर्णवङ्ग
स्वर्णभस्म		मुष्टि (शु. कुचला) चूर्ण
अकलकरा		—प्रत्येक १-१ तोला
मुक्तापिष्टी		जावित्री
अम्बर		जायफल
मृगमद (कस्तूरी)		वीरवहूटी
कान्तलौह भस्म		लौंग

—प्रत्येक ६-६ माशा

—काष्ठौषधियो को कूटकर कपड़छान कर, सारी चीजो को खरल मे डाल करेला स्वरस, पान स्वरस एव अदरख के स्वरस मे ३-३ दिन घुटाई करके चने प्रमान वटी बनाले।

उपयोग—यह योग ध्वजभंग-नाशन एवं वाजीकरण मे तो अव्यर्थ है ही किन्तु समस्त वातव्याधियो मे भी अमोघ फल देता है। जीर्ण वातव्याधियो मे १ रत्ती की मात्रा मे अच्छा लाभ करता है। यदि अपतन्त्र, अपस्मार मे इसका प्रयोग किया जाय तो इस की मात्रा निम्न लिखित चूर्ण एक आने भर की मात्रा मे मिलाकर कर प्रयोग करे। शतशः परीक्षित है।

ब्राह्मी	शङ्खपुष्पी	वच
कुष्ठ	रास्ना	मरिच

—सब समान भाग ले कपड़छन कर चूर्ण बनाले।

—सुबह शाम गर्म दूध से लेना चाहिये।

पाचन शक्ति ठीक हो तो दूध मे अच्छा गाय का घृत भी उचित मात्रा मे मिलाया जा सकता है।

—रस परिपाक न होने के कारण होने वाले हृच्छूल

में भी इस का प्रयोग फलप्रद है।

—पुराने शीत पित्त (पित्ती) में इसका तीन चार दिन प्रयोग करने से ही बहुत लाभ देखा गया है।

इस तरह यह योग अकेला ही अनेकों रोगों पर प्रभावशाली है।

कुङ्कुमासव—

केशर	लौंग	जायफल
जावित्री	दालचीनी	इलायची बड़ी
काली मिरच		मस्तंगीरूमी
अकलकरा	बालछड़	सौंठ
पीपल	पीपलामूल	सुरंजान शीरीं
असगन्ध		—प्रत्येक १-१ तोला
धाय के फूल		३ तोला
कस्तूरी		३ माशा
चीनी		४० तोला
जल		४ सेर

—इनमें केशर लौंग और कस्तूरी इन तीन चीजों को छोड़ कर बाकी सब औषधियों को जौकूट करके पानी में भिगोदे। पानी को थोड़ा सा गर्म कर मिट्टी के आसवारिष्ट के बर्तन में भरकर मुख बन्द कर धूप में बीस दिन छोड़ दे। छान कर चीनी मिट्टी के अमृतवान में भरदे। एक सप्ताह पड़ा रहने के बाद नितार कर फिर छान ले। निर्मल होजाने पर उसमें लवङ्ग, केशर एवं कस्तूरी गुलाबजल में घोटकर मिलादे और कांच की शीशियों में भरकर छोड़ दे।

मात्रा—१ से २ तोला तक समभाग जल में मिला कर भोजनोत्तर पीवे।

उपयोग—कास, श्वास, मन्दानल, हृदौर्बल्य, अपतत्र एवं अन्य वातव्याधियों में बहुत अच्छा कार्य करता है। रक्त एवं बल की वृद्धि भी करता है। पुष्पधन्वा रस के प्रयोग के समय भोजनोत्तर इस आसव का प्रयोग अपूर्व चमत्कार दिखाता है। आशा है वैद्य बन्धु इन दोनों प्रयोगों को काम में लाकर देखेंगे।

तुलसी की चाय

छाया में सुखाये हुए तुलसी के पत्र	तीन पाव
सौंफ	आधा सेर
इलायची	एक पाव
अगिया घास	तीन पाव
बनप्सा	एक छटाक
ब्राह्मी बूटी	एक पाव
लाल चन्दन	आधा सेर

—उपरोक्त सामिग्री शुद्ध-स्वच्छ और ताजा लें, जवकुट कर दरकच करलें। चाय की भांति दूध मीठा डालकर तैयार कर सेवन करें। यह समशीतोष्ण पेय बारहों महीने पिया जासकता है।

यह चाय प्रचलित चाय की अपेक्षा अधिक स्फूर्ति, बल एवं शक्तिप्रदायनी है। साधारण चाय के सभी दोषों से रहित और स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध सभी के लिये समान उपादेय है। सर्दी, जुकाम, कफ, वात, हृदय और फैंफड़ों के समस्त विकारों के लिए अत्युपयोगी है। यदि आप आपना, अपने परिवार इष्टमित्रों अतिथियों और राष्ट्र का हित चाहते हैं तो इस चाय का सेवन कीजिये और इसका यथा शक्ति प्रचार भी।

—'आरोग्य' से साभार।

श्री पं० हरिश्चन्द्र जी तिवारी वैद्य

खत्तीवाड़ा, मेरठ ।
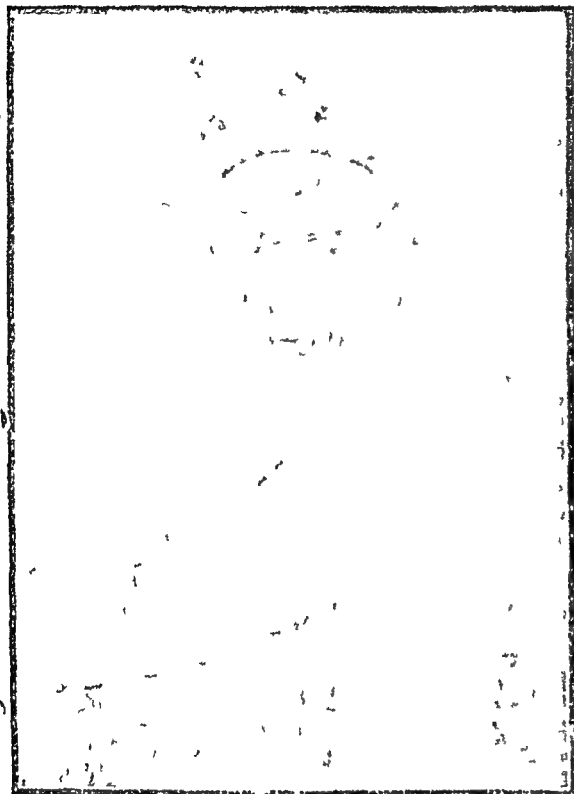
पिता का नाम— श्री पं. बिहारीलाल जी
आयु—६५ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री पंडित जी वयोवृद्ध अनुभवी रसायनज्ञ हैं। मेरे स्वर्गीय पिता वैद्यराज राधावल्लभ जी के समय में धन्वन्तरि निर्माणशालाध्यक्ष के पद पर कई वर्ष तक काम किया था। यहां से जाकर आप मेरठ में स्वर्गीय श्री राम सहाय जी वैद्य की रसायनशाला में योग्यतापूर्वक अब तक औषधि-निर्माण कराते रहे हैं। आप एक-अनुभव प्राप्त योग्य चिकित्सक भी हैं। आपका सदैव ही हमारे ऊपर अनन्य वात्सल्य भाव रहा है। अत्यधिक शोक है कि आपके प्रयोग छपते समय हमको सूचना मिली है कि आपका देहावसान होगया। ईश्वर से प्रार्थना है कि आपकी आत्मा को चिर शांति प्रदान करे। लीजिये आपके पांच प्रयोग प्रेषित हैं।"

—सम्पादक।

जीवन रसायन—

विशुद्ध आंवलासार गंधक	१ तोला
वायविडङ्ग	१ तोला
शङ्खपुष्पी	१ तोला
भांगरा सूखा	२ तोला
आंवला सूखा	४ तोला
बड़ी हरड	१ तोला
श्वेत चन्दन	६ माशा
छोटी इलायची	६ माशा
मिश्री	१५ तोला

—इनको कूट-पीस कर रख ले।

मात्रा—१ माशे से २ माशे तक जल के साथ।

गुण—यह स्वादिष्ट रसायन उदर रोग, वात रोग, वृद्धावस्था की शिथिलता को लाभप्रद है।

प्रतिश्यायनाशक पेय—

मुनक्का	१० दाने
फूल गुलाब	६ माशा
गुलबनफ़्सा	१ तोला
मुलहठी	१ तोला
उन्नाव	१० दाने
खतमी	६ माशे
खब्बाजी	६ माशा
बुरादा श्वेतचन्दन	६ माशा
सौंफ	१ तोला

सोंठ २ तोला
बीज खरवूजा २ तोला

—इन सब चीजों को जौकुट कर १॥ सेर पानी में २४ घटे भिगोवे और अगले दिन मिट्टी या चीनी के पात्र मे उबालो। आध सेर पानी रहने पर मलकर छान लो, एक सेर मिश्री की चाशनी बनालो।

मात्रा—इसको बार-बार चटाना, १ तोले से ३ तोले तक थोड़ा-थोड़ा चटाना।

गुण—यह खासी, जुकाम, नजले की व्यथा को शीघ्र दूर करता है।

चर्मरोगारि प्रलेप—

शुद्ध गंधक कपूर सुहागा
रक्तचन्दन मिश्री
—प्रत्येक समान भाग

विधि—गंधक, कपूर, सुहागा, मिश्री को अनुमान से सिल पर डाल कर रक्त चन्दन से चन्दन की तरह उतार कर प्रलेप करे, न दुर्गन्ध है और न कपड़े खराब होते हैं। अन्यथा सब चीज बराबर लेकर कूट-छान गुलाब जल से वटी बनाले। आवश्यक होने पर पानी मे घिसकर लगावे।

गुण—यह छोटी-छोटी फुंसी तथा झाईं और साधारण दद्रु, पामा, अधिक दिन सेवन करने से छाजन तक चला जाता है।

काम कौतुहले (कामराज वटी)—

अभ्रक भस्म १०० पुटी लोहभस्म (वारितर)
जावित्री शुद्ध सिंगरफ
- प्रत्येक ६-६ माशा

वङ्ग भस्म	१ तोला
अहिफेन	३ माशा
शुद्ध शिलाजीत	२ तोला
केशर	३ माशा
जायफल	६ माशा
कपूर	३ माशा

—शतावरी क्वाथ से वटी बनाले।

गुण—यह वटी अधिक गुणकारी, पुष्टिकारी, स्त्री पुरुष दोनो को सेवन करने योग्य है।

:: पृष्ठ १५८ का शेषांश ::

सेवन काल—प्रात मध्याह्न एवं शाम के समय। चक्रधरोक्त फलत्रिकादि क्वाथ १ तोला परिमाण मे दिन मे दो बार अवश्य लेवे। पीने का पानी—१ सेर पानी मे १॥ तोला वालों डालकर औटाले और १ वोतल बराबर का पानी रखले। यह पानी पीने को काम मे लिया जावे।

पथ्य—ताजा मट्ठा दिन मे ३-४ वार लेवे। नारंगी, सन्तरा, मौसमी आदि का रस खूब पीवे। गन्ने (ईख) खूब चूसे। दूध, घी, मलाई, दही आदि सब छोड़ दें। अन्न भी कुछ समय तक छोड़ दे।

श्री वैद्य सरयूप्रसाद भट्ट 'मधुमय' विशारद

मु० पो० भुवाबिछिया (मण्डला)
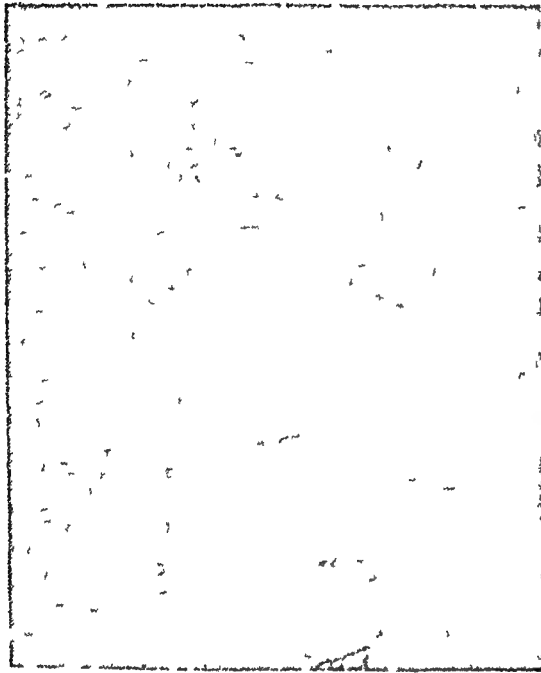
"श्री भट्ट जी की सरल सरस कविताओं से पाठक सुपरिचित हैं। आपने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से मध्यमा (विशारद) की परीक्षा उत्तीर्ण की है तथा अनेकों पुस्तकें लिखी हैं। आप शास्त्र-अनुशीलन कर शास्त्रीय वचनों को अपनी कविताओं में रखने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। यहां भी आपको तीन शास्त्रीय प्रयोगों का विवेचन मिलेगा जिनको श्री भट्ट जी अनेक रोगियों पर सफलतापूर्वक बहुत समय से व्यवहार करते रहे हैं। प्रयोग सरल है किन्तु है उपयोगी, अतएव पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

'त्रिकटुकादि चूर्णम्'

हमारा व्यवहारिक नाम 'त्रिकुटा' की सेवन विधि

त्रिकटुकमजमोदा, चित्रको, हिंगु◉ भार्गी
विडमपिसह चव्य, सैंधवम् यावशूकम्।
अमृतमिति◎ भिषग्भि पूजितश्चूर्णराज.
कफ पवन हन्ता शूलहा दीपनश्च ॥

अर्थ—सोंठ, मिर्च, पीपल, अजमोद, चीता, हींग◉, भारङ्गी, विडनमक, चव्य, सैंधव, जवाखार, वच्छनाग विष◎
—समान भाग चूर्ण बना ले।

◉हींग शुद्ध लें। ◎वच्छनाग विशेष शुद्ध लें।

साधारण उपयोग और गुण—३ माशे अदरख स्वरस तथा तीन माशे शहद में १ माशे यह चूर्ण मिलाकर खाने से कफ, वायु शूल नष्ट होते हैं तथा अग्नि दीप्त होती है।

विशेष—उपरोक्त गुणों के अतिरिक्त यह बच्चों के डब्बा रोग, कफ, खासी, अपचन, पेट दर्द में मुफीद है। औरतों के मक्कलशूल को अमृतवत है, (प्रसव के पश्चात् जो दर्द होता है उसे मक्कशूल कहते हैं) आयु के अनुसार नीचे लिखे तरीके से दें—

सेवन विधि—२ से ३ साल के बच्चे को २ रत्ती दवा ३ बूंद अदरख रस तथा ६ बूंद शहद में मिला कर चटावें। सुबह-शाम या रोगानुसार। यदि बच्चा अदरख रस की वजह से न खा सके तो

मां के दूध में घोलकर पिला दे। तथा मां को भी यही दवा १ माशे, ३ माशे अदरख रस ३ माशे शहद मिलाकर दे। इसी तरह उम्र के अनुसार मात्रा बढ़ाते हुये। जवान स्त्री-पुरुषों को १ माशे दवा, ३ माशे अदरख रस ३ माशे शहद से मिलाकर सुबह शाम दे। शीत, वायुजन्य सभी रोग उपरोक्त वर्णित विविध प्रकारेण अवश्य नष्ट हो जाते है।

गुण—बच्चों के ज्वर, खांसी, डब्बा, अफरा, अपचन को दूर करता है, हल्का १ दस्त तथा पेशाब होकर पेट के सभी विकार दूर हो जाते हैं, बड़ा सस्ता सुन्दर अनमोल योग है। बच्चों को नींद लाने का इसमे विशेष गुण है। बिलकुल निरापद योग है, वैद्य इसे बनाकर अवश्य धनमान लें।

नोट—चिकित्सक यदि मेधावी है, तो वास्तव मे इस औषधि का प्रयोग क्षेत्र विस्तृत है। विशेषता इसमे यह है कि एक बार बना लेने से वर्षों टिकाऊ और रस की भांति गुणकारी होता जाता है क्योंकि यह रस जैसा ही है। मूल पुस्तक मे यह रस पटल मे आया हुआ है। शीशी मे डाट मजबूत लगावें। हम तो छः महीने के बच्चों को तथा उसकी मा को दवा देकर बच्चो के डब्बा कफ खांसी ज्वर मे फायदा लेते है।

आनन्द रस (वृ. नि. र. अति.)

जातीफल सैंधव हिंगुल च वराट शुण्ठी विष हेमबीजम्।
सपिप्पलीक वटिका च कुर्याद् गुञ्जा प्रमाण जठरामयघ्नं॥
निहंति वात कफ शूल मात्रमामातिसारं ग्रहणी विकार।
निहन्ति शुष्कं सितया समेत रसोयमानंद, इति प्रदिष्ट.॥

अर्थ—जायफल सेंधालवण सिंगरफ शुद्ध
कौड़ी भस्म सोंठ का चूर्ण
मीठातेलिया शुद्ध धतूरे के बीज शुद्ध
पीपल —सब समान भाग ले

—जल के साथ घोट कर १-१ रत्ती की गोलियां बना ले।

प्रयोग—इसको खांड के साथ सेवन करने से, उदर रोग, वात, कफशूल, आमातिसार, सग्रहणी और सूखिया मसान का नाश होता है।

विशेष टिप्पणी—अतिसार के पश्चात्, संग्रहणी होकर शरीर सूखता जाता है, हाथ पैर कृश हो जाते है, पेट बढ़ जाता है (विशेषतया बच्चों मे) छोटे-छोटे सभी को यह बीमारी (थोड़े भेद से) होती है तब इस प्रयोग रत्न के व्यवहार से संग्रहणी, समस्त उदर विकार, तज्जन्य सूखिया मसान (सूखा विशेषतया बच्चों में) अवश्य नष्ट हो जाता है। यह छिपा शास्त्रीय नुस्खा बहुत कम वैद्यो ने बनाया होगा। निरन्तर व्यवहार-गुणोत्कृष्टता के वशीभूत हो, प्राणीमात्र के लाभार्थ धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगाङ्क मे वैद्यो के सम्मुख रख रहा हूँ।

उपदंश रत्न

तुत्थ औ' कपर्दभस्म तोले तोले लीजिए।
तोले एक हर्र का भी चूरण मिलाइए॥
तोले-तोले पपरिया खैर चूरण सभी का ले।
नीबू के स्वरस इन्हे खूब ही घुटाइए॥
वटिका बनावे नेक चने के समान जो हो।
एक एक गोली इस विधि से खिलाइए॥
दीजिए सुबह शाम दूध की मलाई से ही।
दो ही हफ्तो मे रोग गरमी भगाइए॥

\+ \+ \+

फायदा तो चार पांच दिनो मे ही ज्ञात होवे।
पथ्य परहेज कुछ इसमे नहीं ही है॥
करें आप भोजन अभीष्ट जो लगे भी वह।
औषधि-प्रभाव होवे सुन्दर सही ही है॥
गरमी के घाव पर पानी संग घिसकर।
गोलिया लगावे अहा सुन्दर यही ही है॥
यह उपदंश रत्न वैद्य भी बनावे सब।
यश धन लाभ करें भावना यही ही है॥

—जानकीदास गणपतराय झारसुगडा का योग
('सिद्ध योग पद्यावली' अपनी रचना से)

श्री वैद्य दुर्गविजयसिंह D.I. M S.

चिकित्साधिकारी–राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, कोटरा (जालौन)

"श्री वैद्य जी उत्साही एव योग्य नवयुवक सफल चिकित्सक हैं। आप १६४४ मे D I M. S परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद से राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय मे प्रधान चिकित्सक के पद पर कार्य कर रहे हैं। आप झासी के रहने वाले हैं। आपने चार रोगो पर सक्षिप्त एव सिद्ध परीक्षित चिकित्सा विधि एवं प्रयोग प्रेषित किए हैं जिनसे पाठको को अवश्य ही लाभ प्राप्त होगा।" —सम्पादक।

रक्तातिसार—

कार्क (काग-डाट) जिसको हम सब दिन प्रति दिन शीशियो मे लगाने के लिए प्रयोग करते है तथा फेंक दिये जाते हैं। साफ व नये ले कर आग मे जलाले। इतना जलाये इतना जलाये कि उनकी कृष्ण वर्ण की हलकी भस्म बनकर तैयार हो जाए।

मात्रा—१ से ३ रत्ती तक अनेक बार दिन मे।

नोट–आवश्यकता पड़ने पर अहिफेन अथवा अहिफेन घटित योग में मिला सकते है। रक्तप्रदर मे भी लाभप्रद पाया गया है।

नासापाक—

अ—नासा को प्रतिदिन सोडावाई कार्ब के २ प्रतिशत घोल से धोना चाहिये।

ब—व्याघ्री तैल (वसवराजीवं) का नासा मे अवपीडन करना चाहिये।

स—समीरपन्नग रस १ रत्ती, लवङ्गादि चूर्ण ८ रत्ती के साथ। प्रातः सायं मध्याह्न मक्खन के साथ रखना चाहिए।

द—पथ्य तथा अन्य व्यवस्था शास्त्रोक्त करना चाहिये।

पोथकी—

सिंदूर	४ तोला
शोराकलमी	६ माशा
सफेद मिर्च	१॥ तोला

—समस्त औषधियो को घोट कर अंजन बनालें। प्रातः सायं काच की शलाका से लगावे तथा आध घन्टे बाद बोरिक से सेक करे। तीन दिन मे अशातीत लाभ मिलता है। यदि कठिनता हो तो प्रथम तुत्थ का प्रयोग करके फिर इसका अंजन करे।

परिसर्प (Herps zoster)—

(जो जनेऊ की आकृति मे प्रसार करता है)

यशदभस्म कर्पदभस्म
—दोनो ४-४ रत्ती

शोरक (नौसादर) कंकुष्ठ (मुर्दाशंख)
गंधक —तीनो १-१ रत्ती

कवीला ४ रत्ती

—के श्लक्ष्ण चूर्ण को नैनू (नवनीत) करने से लाभ मिलता है। यदि महुआ के तैल मे लगाया जाय तो अति लाभ करता है। शरीर यदि कृष (निर्बल) है तो विटामिन "ए" की मौखिक मात्रा तथा सूचीवेध प्रयोग करना चाहिए।

साहित्यरत्न पं० रामचन्द्र प्रफुल्ल B A साहित्य० विशा०

डी० ४५, कमलानगर, दिल्ली–६

"श्री प्रफुल्ल जी ने अंग्रेजी में बी० ए०, हिन्दी मे साहित्यरत्न, आयुर्वेद मे विशारद परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। आपको गुजराती एव मारवाडी भाषा का भी ज्ञान है। आयुर्वेद विषय के आपके लेख पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित होते रहते है। 'गर्दन-तोड ज्वर" शीर्षक विस्तृत निबध पर नि० भा० वैद्य सम्मेलन से प्रमाणपत्र भी आपको मिला हे। "कतिपय जटिल रोग और उनकी चिकित्सा" नमक पुस्तक भी आपने लिखी है जो अप्रकाशित है। आप सन् १६३५ में नि० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की स्थायी समिति के सदस्य रहे हैं। सम्प्रति विडला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि० दिल्ली के श्रम-मगल विभाग मे सहकारी लेवर वैलफेयर आफीसर के रूप मे कार्य सम्पादन कर रहे है। आपके निम्न प्रयोग अनुभवपूर्ण एवं सफल सिद्ध है, पाठक लाभ उठावें।" —सम्पादक।

मोतीज्वर (मन्थर ज्वर) पर प्रयोग—

श्लेष्मा दोषयुक्त मन्थर ज्वर की तीव्रावस्था मे निम्न अनुभूत योग अत्युपयोगी सिद्ध है—

महालक्ष्मी विलास रस	१ रत्ती
रस सिन्दूर	½ रत्ती
अभ्रक भस्म	½ रत्ती
प्रवाल भस्म	१ रत्ती
कणा (पीपल)	१ रत्ती

—यह एक मात्रा है।

अनुपान—मधु।

समय—प्रात काल और सायंकाल।

महालक्ष्मीविलास रस	१ रत्ती
रस सिंदूर	½ रत्ती
कस्तूरी भैरव रस	½ रत्ती
माण्डूर भस्म	१ रत्ती
प्रवाल भस्म	१ रत्ती

—यह एक मात्रा है।

अनुपान—मधु।

समय—दुपहर और रात मे।

दस्त के न होने पर 'ग्लसरीन सपोजीटरी' की बत्ती गुदा मे लगावे। यदि आवश्यकता पड़े तो ग्लसरीन एनीमा का उपयोग किया जाय। तीन डिग्री से बुखार बढ़ने पर सिर पर कोलावटर की पट्टी लगाई जाय। बादाम रोगन सिर मे आहिस्ते दिन मे दो बार लगाया जाय। यदि बीच मे दस्तो का उपद्रव उत्पन्न हो जाय तो निम्न भांति अनुभूत योग प्रयोग किये जांय, ये अत्यन्त उपयोगी तत्काल प्रभावोत्पादक है :-

महालक्ष्मीविलास रस	१ रत्ती
सिद्ध प्राणेश्वर रस	१ रत्ती
रस सिंदूर	½ रत्ती
प्रवाल भस्म	१ रत्ती
कृष्ण चतुर्मुखरस	½ रत्ती

—यह एक मात्रा है।

अनुपान—मधु के साथ।

समय—प्रात. व सायंकाल।

महालक्ष्मी विलास रस	१ रत्ती

रस सिंदूर	½ रत्ती
सिद्ध प्राणेश्वर रस	१ रत्ती
कस्तूरी भैरव रस	¼ रत्ती
प्रवाल भस्म	१ रत्ती

--यह एक मात्रा है।

अनुपान--मधु के साथ।

समय--दुपहर और रात को।

पथ्य--३ भाग दूध मे १ भाग जल डाल कर मामूली सी चाय की पत्ती डालकर पिलावें। फलो मे खरबूजा दिया जाय। अनार का पुट-पाक करके उसका रस दिया जाय। पीने को पानी (जल का चौथाई भाग जलाकर एक लौंग भी पानी मे उबालते समय डाल दी जाय उसको) उपयोग मे लिया जाय। प्यास को बिलकुल न रोका जाय।

रक्तविकार पर--

खाज, खुजली, एक्जेमा आदि रक्त विकार व्याधि मे निम्न प्रयोग का उपयोग करने से अवश्य लाभ होगा। पूरा लाभ होने तक नीचे परिमाण मे औषधि सेवन करते रहना आवश्यक है।

मंजिष्टादि क्वाथ	१॥ तोला
चिरायता	४ माशा
उपवा	४ माशा
गोरखमुण्डी	४ माशा

—यह एक मात्रा है, ऐसी ११ पुडियां बनावे। १ पुड़ी सुवह १० वजे और १ पुड़ी शाम को ६ वजे क्वाथ तैयार करके लेवे।

रसमाणिक्य	½ रत्ती
महातिक्तघृत	३ माशा

--के साथ सुवह ७ वजे लेवे। इसके लेने के वाद एक पाव दूध अवश्य पी लेना चाहिए।

पथ्य--सुपाच्य हलका भोजन दुपहर को १२ वजे और शाम को ८ वजे करे। तैल, गुड, लाल मिर्च, खटाई तथा अति तीक्ष्ण एवं गरिष्ट पदार्थों का बिलकुल उपयोग न किया जाय। नमक का उपयोग भी बहुत सूक्ष्म करना चाहिए।

संग्रहणी रोग पर--

स्वर्ण पर्पटी	२ रत्ती
प्रवाल पिष्टी	१ रत्ती
कणा (पीपल)	२ रत्ती

अनुपान--सुवह ५ तोला दूध के साथ देवे। केवल एक समय ही यह औषधि सेवन करना है।

महागंधकरस पियूषवल्लीरस --२ रत्ती

—भुने हुए जीरे और मधु से सुवह ६ वजे और तीसरे पहर तीन वजे यह औषधि सेवन की जाय।

पुटपाक विषमज्वरान्तक	१ रत्ती
प्रवालपिष्टी	१ रत्ती
मुक्तापिष्टी	½ रत्ती

—मधु से यह औषधि रात को ७ वजे सेवन कराई जाय।

वृहत्वातचिन्तामणि रस—

—केवल एक वार रात को सोते समय १० वजे मधु से सेवन कराया जाय। अनार पुटपाक खाने को लिया जाय और लाजामण्ड का उपयोग किया जाय।

तैयार करने की विधि—केवल १ तोला खिल्ली १॥ पाव उवलते पानी मे डालदे, जव २ छटांक पानी रह जावे उसको अग्नि से उतारकर उस पानी मे १॥ रत्ती सोठ डालकर उक्त पानी पीने के काम मे लावे।

पीलिया (पाण्डु) रोग पर--

पुनर्नवा मण्डूर	२ रत्ती
मण्डूर भस्म श्वेत पर्पटी	२-२ रत्ती
महाक्षार (नरसार)	१ रत्ती

अनुपान—पुनर्नवा का रस या मूली के पत्तो के रस के साथ।

—शेषांश पृष्ट १५३ पर।

श्री पं. विरञ्चि लाल वैद्य भिषक्रत्न,

आयुर्वेद वाचस्पति (M. Sc. A.)
श्री माहेश्वरीय आयुर्वेदीय दातव्य औषधालय, इस्लामपुर (राजस्थान)

"आप आयुर्वेद के प्रकाण्ड विद्वान हैं। मध्यमा संस्कृत परीक्षा के बाद आपने आयुर्वेद का अध्ययन किया। नवलगढ़ और चिडावा मे प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण कर श्री ताराचन्द आयुर्वेदिक विद्यालय महेन्द्रगढ में आयुर्वेदाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके पश्चात् बुन्देलखण्ड आयुर्वेद कालेज झांसी से स्नातकोत्तर परीक्षा देकर आयुर्वेद वाचस्पति (M. Sc A) की उपाधि प्राप्त की। आप ६ वर्ष सरस्वती भवन चक्रधरपुर मे कार्य करके सम्प्रति इस्लामपुर मे माहेश्वरी आयुर्वेदिक औषधालय में रोगी सेवा कर रहे हैं। आप राजनैतिक कार्य करते हुए अनेक आयुर्वेदिक संस्थाओ से आपका घनिष्टतर सम्पर्क है। राजस्थान सेवा मंडल के मंत्री, नि भा. आयुर्वेद महासम्मेलन की कार्य समिति के सदस्य हैं। कई संस्थाओ के सदस्य तथा अध्यक्ष आदि रह चुके है।"
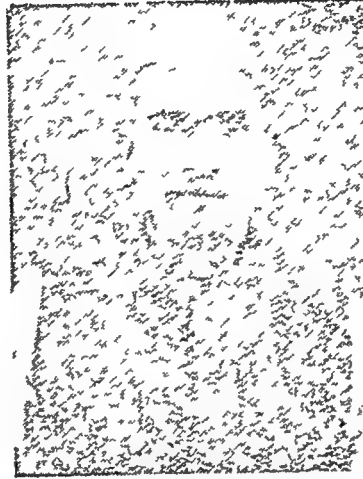
—सम्पादक।

पायोरिया के लिए (दन्तवेष्ट रोगार्थ)—।

—कचूर कूट कपड़छान कर सुबह शाम दन्त-दसन (दन्त मंजन) के रूप में व्यवहार से पुराने से पुराना पायरिया ठीक होजावेगा।

नाड़ीव्रण (नासूर) नाशक—।

—काली वूई (जो कि राजस्थान शेखावाटी मे बहुतायत से होती है) नाडीव्रण (नासूर) पर मनुष्य के मूत्र से पीसकर लगावे। कितने ही दिन का पुराना क्यों न हो ठीक होजावेगा। साथ ही यदि गीला हर समय न मिले तो उसे छाया में सुखा कर आवश्यकता के समय नर-मूत्र से पीस कर लेप करावे।

जीर्णातिसार—

—कुटजत्वक ७ तोला लेकर कपड़छान कर लेवे और ६ माशा की पुड़िया बना लेवे।

—सुबह मट्ठे के साथ शाम को उष्ण पानी के साथ दो-दो रत्ती शङ्खभस्म मिला कर लेवे। और मीठे मिरचा का बिल्कुल परहेज रखे। देखिये कैसा फायदा करता है।

जूं-लीख नाशक—।

—सीताफल के बीज कूट-पीर कर बालो को उसके पाउडर (चूर्ण) से साफ करेंगे तो यूका (जूं) लिक्षा (लीख) बिल्कुल नष्ट होजाती है। ऊपर से छाछ से शिर धोने से बाल मुलायम रहते हैं।

कामोत्तेजक सरल योग—

—कुलीजंन ६ माशा की एक खुराक दूध आधा सेर पानी आध सेर मे डाल कर औटावें, दूध मात्र शेष रहे तब छानकर मीठा मिलाकर सुबह शाम पिलाने से एक बार नपुंसक मे भी जान आजाती है अर्थात् कामोत्तेजक है तथा शक्ति भी बढ़ती है।

श्री पं. देवेन्द्रदत्त जी कौशिक आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि

लोकहितकारी रामरसायनशाला, मेरठ ।

पिता का नाम— श्री पं रामसहाय जी शर्मा वैद्यशास्त्री
आयु—४३ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"मेरठ के श्री पं राममहाय जी वैद्य को कौन नही जनता ? आप उन्ही योग्य विद्वान् पिता के अनुरूप ही सफल एवं विद्वान् चिकित्सक पुत्र हैं। पिता के ही श्री रामसहाय सस्कृत महाविद्यालय से संस्कृत शिक्षा ग्रहण करने के बाद तिब्बी कालेज देहली से आयुर्वेद ज्ञान प्राप्त किया। श्री पिता जी के निकट रह कर ही प्रत्यक्ष ज्ञान एवं अनुभव लाभ किया। आप अपने पिता की रामरसायनशाला तथा लोक हितकारी औषधालय का सचालन सुव्यवस्थित रूप से करते हैं । आपका अत्यन्त ही सफल केवल एक योग ही पाठकों की भेंट करते हैं।"

—सम्पादक।

स्नायुशूलनाशक सफल प्रयोग—

अर्क मूलत्वक	४ तोला
अहिफेन (अफीम)	१ तोला

—जल के साथ मर्दन करें और मटर के समान गोली बना ले।

अनुपान—जल।

समय—प्रात. सायं।

तैल—

सखिया	१ तोला
कुचला	७ दाने
धतूरे के पत्ते	११ नग
आक के पत्ते	११ नग
तैल सरसों का उत्तम	७० तोला

— तैल-निर्माण विधि से तैल तैयार करे। इसकी पीडा स्थान पर मालिश करे।

अवसिंचन—

पिसादू (विसादूं) के पत्ते	२० तोला
फिटकरी	५ तोला
नमक देशी	१० तोला
गेहूँ	१० तोला
पानी	१५ सेर

—सबको गरम करे। खूब खौल जाने पर उतार कर सुहाता-सहाता जल से पीड़ा-स्थान पर धार बाधकर सिंचन (तरेड़े) दे।

गुण—इन तीनो औषधियों का व्यवहार करने से स्नायुशूल मे शीघ्र ही लाभ होता है।

श्री वैद्य देशराज शास्त्री वैद्यभूषण,

देशबन्धु औषधालय, डेरा बस्सी।

"श्री शास्त्री जी वयोवृद्ध एव अनुभवी चिकित्सक हैं। आपकी आयु ६५ वर्ष है। आपके यहां वैद्यक व्यवसाय वंशपरम्परागत होना प्राप्त है। आप सन् १६२१ से उक्त औषधालय चला रहे हैं। आपने परोपकार भावना से प्रेरित होकर निम्न दो प्रयोग प्रकाशनार्थ प्रेषित किए हैं तथा विश्वास है कि ये प्रयोग चिकित्सक समाज द्वारा सफलतापूर्वक व्यवहार मे लाये जासकेंगे। आगे भी आपने अपने अनुभव धन्वन्तरि द्वारा वैद्य समाज के समक्ष प्रस्तुत करते रहने के लिए निश्चय किया है।" —सम्पादक।
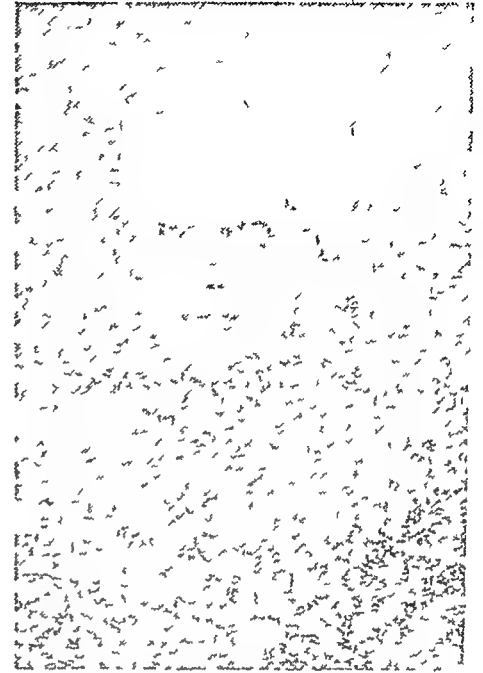
हिंगुल रसायन (नपुंसकत्व नाशक)—

हिंगुल शुद्ध ५ तोला

—वराडी असली (फ्रांस की) मे इतना खरल करे कि एक बोतल ब्रांडी उसमें समाप्त हो जावे। यह कार्य ग्रीष्म ऋतु मे शीघ्र हो सकता है। उसका गोला बनाले। एक मुर्गा लेकर उसको काटकर हर प्रकार का गन्द (मल-मूत्र) दूर कर उसके कलेजे मे उस हिंगुल के गोले को रखकर सी दिया जावे या तार से सुदृढ़ बाँध दिया जावे, पुनः उसको गौ के घृत में पकावे ऐसा पकावे कि मुर्गा बिल्कुल जल जावे, उसके शीतल होने पर हिंगुल को निकाल ले, गेरू के समान गहरे रक्त वर्ण का हिंगुल प्राप्त होगा। ओषधि तैयार है, जले हुए मुर्गे को फेंकदे, घृत रखले।

व्यवहार विधि—दूध आधा सेर, गौघृत १॥ तोला मलाई ७॥ तोला, गिरी बादाम छिलका उतार कर बारीक कुतरी हुई २ तोला, किशमिश २ तोला, पिस्ता कुतरा हुआ १॥ तोला, मिश्री ३ तोला, वर्क चांदी २ नग, दूध में पानी २ छटांक। सब वस्तुओं को अग्नि पर धीमी आंच पर पकावे जब पानी जल कर दूध कुछ लालिमा लिये हो जावे तो उतार ले। इस गरम दूध से २ रत्ती उपरोक्त हिंगुल रसायन नित्य प्रति प्रात अथवा रात्रि को एक बार सेवन करना चाहिये।

पुत्रदायक योग—

शास्त्रोक्त रीत्यानुसार स्त्री और पुरुष की परीक्षा—
१—दो अलग-अलग पात्रों मे खेत की मिट्टी डालकर उसमे सरसों साफ करके बो दी जावे, इन दोनो पात्रों मे स्त्री और पुरुष को पृथक्-पृथक् उनके मूत्र से सिंचन करावे। यदि सरसो भली भांति अंकुरित हो जावे, तो दोनों निर्दोष है अन्यथा जिसका मूत्र अंकुर उगाने मे असफल रहे वैद्य उसकी चिकित्सा करे।

(II) स्त्री के मासिक धर्म सम्बन्धी सब दोषो की परीक्षा करे जैसा शास्त्रों में वर्णित है। यदि मासिक धर्म दूषित स्त्री है, तो प्रथम उसका मासिक धर्म शुद्ध करे, और स्नेहनादि कर्म करके निर्दोष करे। तत्पश्चात्

—शेषांश पृष्ठ १६५ पर।

राजवैद्य श्री पं. बेनीप्रसाद शर्मा

सराय आकिल (प्रयाग)

"आपका जन्म सम्वत् १६५५ मे रामायण प्रसिद्ध एतिहासिक ग्राम शृङ्गवेरपुर मे हुआ। आप परम्परागत वैद्य वंशज हैं आपके पूर्वजो की अद्भुत चिकित्सा प्रणाली के कारण ही तात्कालिक शासक नवाबो के द्वारा जागीर भी प्रदान की गई थी जो जमीदारी उन्मूलन के कारण समाप्त होगई है। आप भी सिद्ध हस्त चिकित्सक हैं, अनेक असाध्य रोगी आपके द्वारा स्वास्थ-लाभ प्राप्त किया करते हैं। अन्य चिकित्सा पद्धतियो के ज्ञाता होते हुए भी आप सदव मूल चिकित्सा प्रणाली आयुर्वेद ही के द्वारा चिकित्सा करनो श्रेयस्कर मानते हैं। वर्तमान समय में सराय आकिल (प्रयाग) ही आपका चिकित्सा केन्द्र स्थान है। आप त्यागमय विरक्त जीवन व्यतीत किया करते हैं। आपके अनुभूत गुप्त चार प्रयोग लोक कल्याण हेतु प्रेषित किये जा रहे हैं।" —सम्पादक।
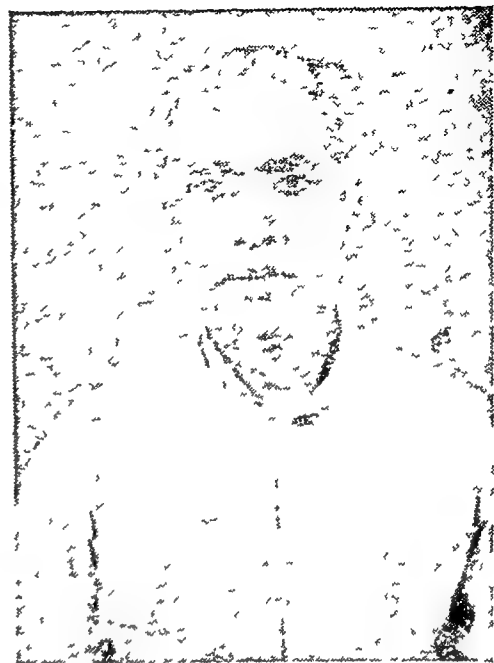
सर्पदंश के लिये—

चौकिया सुहागा भुना हुआ ३ माशा
प्याज का अर्क १ तोला

—बेहोशी दूर होने तक एक-एक घण्टे पर पिलावे तुरन्त लाभ होगा तथा घी के साथ चौकिया सुहागा पिलाने मे संखिया का विष भी तत्काल ही नष्ट हो जाता है। इस प्रयोग के द्वारा कलकत्ते जिले के एक व्यक्ति ने लाखो रुपये कमाये हैं।

नेत्र-रोग नाशक—

वङ्ग भस्म बढ़िया दो आने भर
वंशलोचन असली १ तोला

—इनको खब घोटकर सलाई से लगावे।

गुण—हर प्रकार के नेत्र रोग जाला, माड़ा, मोतियाबिंद, फूली, धूमिल दीख पड़ना, पानी आना आदि के लिए विशेष उपयोगी है।

इस प्रयोग से बम्बई की एक फर्म ने हजारों रुपये कमाये हैं।

कामला-पांडुनाशक अञ्जन—

हल्दी गेरू आंवले की सूखी कली
—प्रत्येक समभाग

—एक मे पीस-छान घोटकर जब एक दिल हो जावें तो गोभी के रस में सान कर अजन करे।

गुण—कामला पाण्डु एक सप्ताह मे अवश्य नष्ट हो जाता है।

दमे की दवा—

दुद्धी* ६ माशा
जीरा सफेद ३ माशा

—पानी मे पीसकर एक गिलास जल मे छानकर रोगी को मगल और इतवार के दिन पिलावें।

गुण—कुछ दिनो मे दमा जड़ से मिट जायगा, अथवा—

चित्रकूट की दमा की दवा

अर्जुन वृक्ष की छाल ६ माशा गाय के दूध की खीर एक पाव मे मिलाकर शरद पूर्णिमा

*लाल हरे रङ्ग की छोटे गोल पत्ते की दुद्धी जो सर्वत्र पाई जाती है।

या कार्तिक की पूर्णिमा को चांदनी रात में खुले में रखकर रातभर रोगी को जगाकर चार बजे रात को स्नान कराके खिलावे ।

चित्रकूट में हजारों आदमी शरद पूर्णिमा को इसके लिए जमा होते हैं।

मोतीझरा या मियादी बुखार पर—

अजीर	छुहारा	७–७ नग
मुनक्का		३५ नग
परवल की पत्ती		गुरुचि
मुलेहठी		अमलतास का गूदा

—प्रत्येक ३½-३½ तोला ।

—इन सबको लेकर ७ मात्रा बना लेवे। एक मात्रा आधा सेर जल मे पकावे। एक छटाक शेप रहने पर मल कर छान ले और ६ माशा मिश्री डालकर पिलावे। इसी प्रकार संध्या को ले।

गुण—यह योग तीव्र ज्वर, प्रलाप, संज्ञाहीनता, व्याकुलता, चिन्ता, भ्रम इत्यादि अनेक उपद्रवो को शात करता है।

नोट—यदि रोगी को दस्त अधिक हो तो अमलतास के स्थान पर बेल के गूदे का प्रयोग करे।

श्वेतकुष्ठ के लिए अद्भुत योग—

केशर असली	१ तोला
वाकुची	१ छटांक

—गोमूत्र मे २४ घण्टे भिगो दे। वाद मे पीसकर घोटकर गोली बनाकर सुखा ले और पानी मे घिसकर स्थान को गीले वस्त्र से रगड़कर लगावे।

जल और ब्लडप्रैशर

मेरे गांव से दो मील पर एक वेदपाठी पण्डित रहते थे। उनकी आयु ७० साल की थी। उनको ब्लडप्रैशर था। दो फर्लाङ्ग चलने पर बेहोश होकर गिर जाते थे। वे मेरे पास सलाह के लिए आए। मैंने उनसे कहा कि "मेरी सलाह आपके काम की नहीं है। क्योंकि आप निष्ठावान है जहां-तहां खाना-पीना आपके लिए कठिन है।"

"नहीं–नहीं! आप जैसा कहेंगे मैं वैसा करने को तैयार हूँ।"

"आप केवल भोजन करते समय ही पानी पीते हैं न"

वे हंसकर कहने लगे कि "आप मेरी बीमारी का ठीक–ठीक कारण समझ पा रहे हैं।"

मैंने समझाया कि पानी न पीना ही आपकी बीमारी का कारण है। आप रोज दो सेर पानी पीवें और इस तरह १ महीना करे तो आपकी बीमारी ठीक हो जायगी। केवल इतना ही करने को मैंने उनसे कहा। पथ्य के बारे मे कुछ नहीं कहा। बीस दिन बाद दो मील पैदल चलकर के आये तो मैंने कहा—

"आप तो दो मील चलकर आए हैं। फिर दो मील वापस कैसे जा सकेंगे? इसलिए आज मेरे यहां हीं ठहर जाइये।"

वे कहने लगे "आज मुझे घर जाना ही पड़ेगा। क्योकि मैं घर पर कह कर नहीं आया हूं। आप चिन्ता न करे, अब मुझ मे इतनी शक्ति है कि जरूरत पड़े तो दो मील क्या आठ मील भी चल सकता हूं।"

आरोग्य से साभार]

—श्री डा० पी० वैंकटरमैया।

वैद्य कविराज श्री पं० देवराज शास्त्री मिश्र

आयुर्वेदाचार्य, चेयरमैन, श्रीकृष्ण फार्मेसी लि०, अमृतसर ।

पिता का नाम— श्री पं० रामजीदास जी मिश्र
आयु–५६ वर्ष जाति— ब्राह्मण

"आपका जन्मस्थान होशियारपुर जिला मे ग्राम कुगठन है। आपने प्रारम्भ मे सस्कृत पढी, प्राज्ञ परीक्षा मे सर्व प्रथम रहे। फिर यूनीवर्सिटी तथा ओरिएन्टल कालेज लाहोर मे पढे यहा दोनो ही जगह अपनी योग्यता से छात्रवृत्ति प्राप्त की श्री दयानन्द आयुर्वेद कालेज लाहोर मे आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की और १६२६ मे कविराज परीक्षा प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण की। लायलपुर मे सस्कृत अध्यापन के साथ साथ चिकित्सा भी की। २८-२६ मे पजाब आयुर्वेदिक फार्मेसी के मैनेजर के पद पर कार्य किया। अगले वर्ष जनवरी मे श्रीकृष्ण फार्मेसी की स्थापना की जो आज भी लिमिटेड के रूप मे निरन्तर कार्य कर रही है। आप उसके अध्यक्ष है। नि० भा० आयुर्वेदिक सस्थाओ तथा प्रातीय सस्थाओ के आप उच्च से उच्च पदो पर आसीन रहे है तथा सदस्य और मत्री का कार्य किया है। वर्तमान मे अनेक सामाजिक कार्यों में रत है। आपका बडा ही उज्वल जीवन रहा है। जीवन के सहस्रशः अनुभवो में से कुछ धन्वन्तरि के पाठको को हमारे आग्रह पर भेज कर सेवा का अवसर दिया है, सधन्यवाद यहा प्रकाशित कर रहे हैं। पाठक आपके अनुभव से लाभ उठायें।"
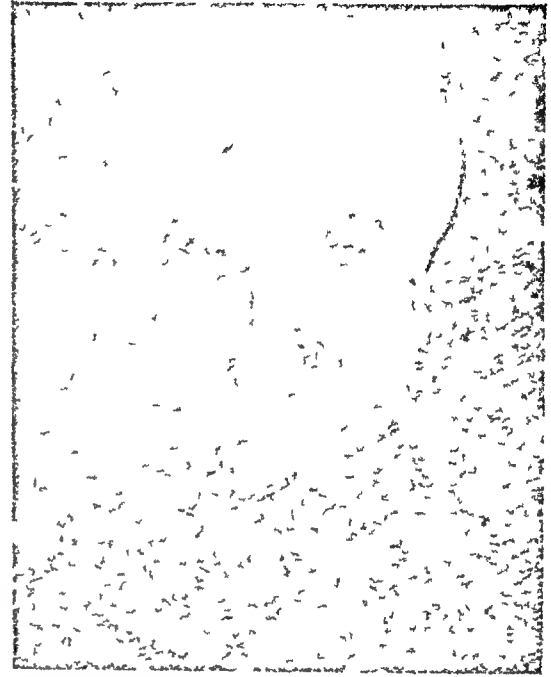
—सम्पादक।

पौष्टिक शक्तिप्रद रसायन—

सिद्ध मकरध्वज	४ तोला
स्वर्णभस्म	६ माशा
केशर काश्मीरी	२ तोला

विजया वीज विधारा वीज लाग
पलाण्डु बीज कौंच वीज गाजर वीज
विदारी कन्द शतावरी
तालमखाना आंवला सालवदाना
—प्रत्येक ५-५ तोला

कस्तूरी	६ माशा

निर्माण विधि—मकरध्वज को खूब खरल करे, थोड़ा पान का रस डालकर फिर स्वर्णभस्म मिलादे। फिर केशर डालकर १ दिन तक रगड़ कर शुष्क करले। फिर सब वस्तुओ का चूर्ण पृथक्-पृथक् तोल कर डाल दे। फिर इतना मधु डाले कि गोली योग्य बन जावे। अन्त मे कस्तूरी रगड़ कर मिलादे। ध्यान रहे कि मधु विशेष ध्यान रखकर मिलावे कि गोली बन जाय, गोली ४ रत्ती की बनावे।

सेवन—१ गोली प्रात १ साय गरम दूध के साथ।

गुण—इसके १ मास निरन्तर सेवन से नपुंसकता जाती रहती है। परम वृष्य और पौष्टिक है।

प्रदर नाशक—

त्रिवङ्गभस्म	३ तोला

अएड वल्कल भस्म	१ तोला
अशोक घनसत्व	१ तोला

—अशोक क्वाथ से घोटकर अथवा जल मे घोटकर ३ रत्ती की गोलियां बनाले।

मात्रा व अनुपान—१ गोली प्रातः १ गोली सायं तण्डुलोदक से, रक्तप्रदर मे वांसा क्वाथ से, श्वेत प्रदर (ल्यूकोरिया) मे सलाई या मधु में मिला कर प्रात साय चटावे।

अपथ्य—खट्टे तीक्ष्ण पदार्थ मिर्च आदि न खावे।

मूत्राघात तथा अश्मरी—

यवक्षार	मूली क्षार	४-४ रत्ती
बेर पत्थर भस्म		३ रत्ती

मात्रा—सबकी १ मात्रा। दिन मे ३ मात्रा देना, जल से या कुलथी के क्वाथ से।

गुण—मूत्राघात, पथरी मे विशेष अनुभूत है। १ मास लगातार सेवन करने से पथरी (अश्मरी) निकल जाती है। दूध की लस्सी मे भी यह औषध देना ठीक है।

सुखप्रद रेचक योग—

बड़ी हरड़	सौंफ	२०-२० तोला
सनाय		४० तोला
एरण्ड तैल		२० तोला

विधि—अरण्ड तैल (कास्ट्र-आइल) को तपाकर बड़ी हरड को थोड़ा तलले और फौरन निकालले। फिर उसी मे थोड़ा सोंफ भी तलकर पौनी से निकाल ले। फिर सनामक्की (सनाय पत्ती) साफ बिना डंडी लेकर तीनो चीजे मिलाकर इमामदस्ता मे कूटकर ६० या ८० नम्बर की छलनी मे छान ले, छानने पर शेष बचे एरण्ड तैल को बीच मे ही मिलादे। चूर्ण तैयार हो गया।

गुण—जहां पर इच्छाभेदी आदि रस रेचन मे काम नहीं करते वहा यह औषध उत्तम काम करती है।

मात्रा—२ माशे से ६ माशे तक। कोष्ठ, प्रकृति एवं आयु के अनुसार दे।

अनुपान—गर्म दूध या गर्म पानी से दे। कभी थोडी ऐंठन भी हो जाती है। दूध के साथ देने से अन्य कोई दुगुर्ण नहीं होता।

—केवल जङ्गी हरड (चेतकी) का चूर्ण कर ले, २० तोला चूर्ण मे २॥ तोला बादाम रोगन डालकर रखले। इसकी मात्रा ३ माशा से ६ माशा तक रात को सोते समय गर्म दूध से देने से प्रात. १-२ रेचन आवेगे। किसी प्रकार की ऐंठन आदि नहीं होती। सहस्रो पर अनुभूत है।

:: पृष्ठ १६१ का शेषांश :.

शुद्ध ऋतुस्नाता स्त्री को चार दिन तक अधोलिखित योग सेवन करावे।

> अश्वगन्धा कषायेण सिद्धं शुद्धं घृतान्वितम्।
> ऋतुस्नाताङ्गना प्रातः पीत्वा गर्भंदधाति हि ॥"

शुद्ध अश्वगन्धा चूर्ण	१ तोला
जीवित वत्सा गौ का दूध	आधा सेर
जल शुद्ध	आधा पाव

—अश्वगन्धा की शुद्ध मलमल के वस्त्र मे पोटली बनाकर दूध में छोड दे। दूध को अग्नि पर मन्द मन्द पकावे। जब दूध मात्र शेष रह जावे तब उतार कर अश्वगन्धा की पोटली निचोड कर फेंक दे। उस दूध मे मिश्री २॥ तोला, शास्त्र विधि निर्मित फलघृत १ तोला मिलाकर शुद्ध शिवलिङ्गी बीज ५ दाने निगल कर ऊपर से उपरोक्त दूध पिलावे।

तत्पश्चात् युग्म रात्रि मे निर्दोषवीर्यपुरुष, भगवदुपासना तथा दानादि करके अर्धरात्रिगमन पर्य्यन्त स्त्री-गमन करे। भगवान् अवश्य कामना पूरी करेगा। यदि गर्भ प्रतीत होजावे तो नवमास तक फलघृत खिलाते रहें।

प्रथम बार असफलता प्राप्त होने पर पुनः पुन उपरोक्त योग प्रत्येक मास मे उपयोग मे लावे। योग ६५ प्रतिशत अनुभूत है। यदि पुरुष दोषी है तो हमारा प्रथम नपुंसकताहर योग खिलावे।

प्रोफेसर श्री गंगाचरण शर्मा आयुर्वेदा० वैद्य मार्तंड

प्रधान चिकित्सक—रायबहादुर हलवासिया ट्रस्ट फ्री औषधालय, भिवानी हिसार)

पिता का नाम— श्री पं० भवानी सहाय जी राजमिश्र पाटन

आयु—६१ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"आप धन्वन्तरि के पुराने लेखक हैं। सर्वप्रथम पजाब से मेट्रीक्यूलेशन की तथा उर्दू की शिक्षा प्राप्त कर सस्कृत मे प्राज्ञ और विशारद करके शास्त्री का अध्ययन किया, फिर आयुर्वेद का सागोपाग अध्ययन कर सन् १६१६ मे अखिल भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ मे आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की, जिसमे आपने सस्था की ओर से स्वर्णपदक प्राप्त किया। आपने सर्वहितैषी औषधालय कराची तथा नोहर मे तथा भीनासर मे प्रधान वैद्य के पद पर कार्य किया। पजाब के दो उच्च विद्यालयो मे प्रिंसिपल और सीनियर प्रोफेसर रहे है। १४ वर्ष लगातार हिसार जिला वैद्य मंडल के मन्त्रित्व का कार्य भार सभाला है तथा वर्तमान मे आप उपरोक्त औषधालय मे प्रधान वैद्य के पद पर सुशोभित है। हमारे प्रेमवश आपने कुछ प्रयोग भेजे है। ये प्रयोग आपके बहु-परीक्षित व अनुभूत हैं। आशा है पाठक लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।
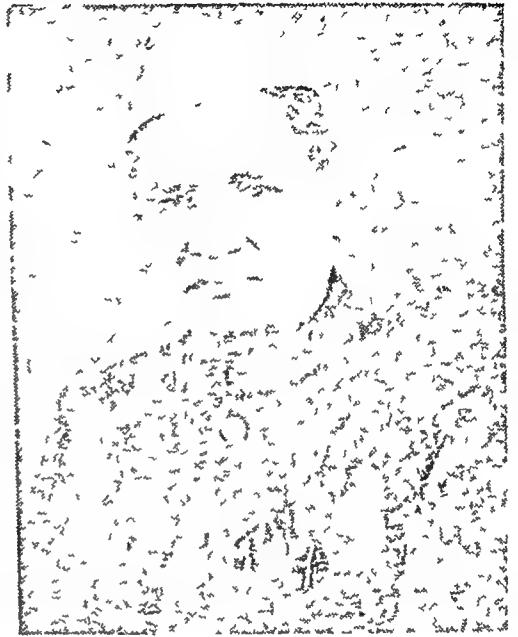
औपसर्गिकमेहहर योग—

राल	सत्वबेरोजा
शीतलचीनी	इलायची छोटी
वंशलोचन	—प्रत्येक २-२ तोला
प्रवालभस्म	१ तोला
मिश्री	११ तोला

विधि—समस्त औषधियों का सूक्ष्म वस्त्रपूत चूर्ण बनाकर रख लेवे।

मात्रा—३ माशे से ६ माशे तक।

अनुपान—कच्चे दूध की लस्सी से लेवे।

समय—प्रात साय।

उपयोग—नये पुराने सुजाक मे। इससे दो सप्ताह मे पीव जाना और मूत्र नली का दाह बन्द होजाता है। पुराने सुजाक मे ४ सप्ताह लेने से पुराना रोग भी नष्ट हो जाता है।

वेदनांतक योग—

शुद्ध अहिफेन	३ माशा
शुद्ध कर्पूर	३ माशा
शुद्ध खुरासानी अजवाइन	६ माशा
रससिंदूर	६ माशा

विधि—उपरोक्त सब द्रव्य खरल मे डालकर घुटाई करे तदनन्तर ६ माशा भांग को १ छटांक जल मे खूब बारीक रगड़ कर छान लेवे और उस जल की भावना देकर घुटाई करते जावे जब तक सबका सब जल शुष्क न होजावे। इसके उपरात दो दो रत्ती की गोलिया बनावे।

मात्रा—१ गोली से दो गोली तक।

अनुपान—शीतल जल।

उपयोग—सर्व प्रकार के स्नायुशूल चाहे सिर में हो या हाथ-पाव अथवा शरीर के किसी भी भाग मे

तीव्र वेदना हो इसकी १ गोली से तत्काल शांति मिलती है। तीव्र वृक्क शूल, अनन्त वात (शिरःशूल), दष्ट्राशूल, आंत्रिकशूल और विषूचिका में शूल हो तब भी आक्षेपक सहित शूल को यह गोलियां नष्ट करती हैं।

कासहर वटी—

काकडासिंगी	पीपलामूल
सेंधानमक	गोंद बबूल

—समान भाग

विधि—उपरोक्त चार औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण करके जल के संयोग से छोटे बेर प्रमाण गोलिया बनाले।

उपयोग—इन गोलियो को मुख में रख कर चूसने से कफज कास और गले की खासी मे तत्काल लाभ होता है। हमारे औषधालय मे ४० वर्ष से इन का प्रयोग होता है।

रक्तावरोधक चूर्ण—

नागकेशर	वंशलोचन
छोटी इलायची	स्वर्ण गैरिक
दम्मुल अखवीन(हीरादोखी गोंद)	मजीठ
गिले अरमनी	—प्रत्येक समान भाग

विधि—इन सब औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण तैयार करे और बोतल मे बन्द करके रखदे।

मात्रा—३ से ५ माशा। अनुपान—शीतल जल।

उपयोग—रक्तार्श में खून जाना, रक्तपित्त में किसी भी मार्ग से खून जाना, सुजाक प्रमेह में खून जाना आदि मे अतीव हितकर है। यक्ष्मा रोग मे जब फेफड़ो से खून जाता हो तो इसे नवनीत के साथ देने से लाभ होता है।

मलेरिया ज्वर की अनुभूत औषधि—

अजवायन खुरासानी	फिटकरी फुलाई हुई
सुहागे का लावा (फूला)	नमक सैंधव

—सब समान भाग

विधि—उपरोक्त सब औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण करे। तदनन्तर धतूरे के पत्तो के स्वरस की एक भावना देकर चणक प्रमाण गोली बनावे।

उपयोग—ज्वर आने से दो या चार घन्टे पूर्व या दो गोली जल के साथ देने से पहिले ही दिन ज्वर रुक जाता है नहीं तो दूसरे या तीसरे दिन अवश्य ज्वर रुक जाता है। ❖

:: पृष्ठ १७१ का शेषांश ::

कृष्णा गौमूत्र	२० तोला
केशर (उत्तम)	१ तोला

—सबको खरल मे डालकर, हलकर शीशी मे भर देना चाहिए। १-२-३ वर्ष के अवस्थानुसार क्रमश. बालक को पूरे दिन मे १०-२०-३० बूंद समजल मिलाकर मां के दूध या गौ के दूध मे चार बार देना चाहिये।

बच्चे के शरीर भर मे लाक्षादि तैल की मालिश करनी चाहिए। दो तोला तैल धीरे-धीरे मालिश कर शरीर मे सुखा देना चाहिए। इन दोनो प्रयोगो के साथ-साथ उपचारो से रोगी १५ से २० दिन मे स्वस्थ हो जाता है।

मुखपाक (जिह्वालसक)—

अधिक उष्ण पदार्थ सेवन, तीक्ष्णौषधि सेवन, पाचन शक्ति विकार, उदरकृमि, अम्लपित्त, रक्तविकार, उपदंश आदि मे रोगी की जीभ पर, अन्दर के गलफड़ मे, तालु मे, लाल-लाल छाले आजाते है। जीभ का मांस कटा हुआ सा प्रतीत होता है। तब रोगी तीक्ष्ण मसालेदार, मिर्चे, तेज नमक आदि खाने मे असमर्थ हो जाता है।

यदि रोगी की जीभ पर साधारण छाले है। उपदश का संसर्ग नहीं है तो १ रत्ती यशदभस्म मधु मे मिलाकर चटाना चाहिए। चाटी हुई औषधि को मुंह मे थोडी देर तक फिराते रहना चाहिए। ऐसा दिन मे तीन बार करना चाहिए। यदि उपदश ससर्ग हो तो १ रत्ती नीलाथोथा पाव भर पानी मे मिलाकर सुबह शाम दो बार, तीन दिन तक कुल्ले कराना चाहिए। औषधि-मिश्र जल पेट मे नहीं जाने देना चाहिए। साथ ही मे प्रथम औषधि मधु मे देते रहना चाहिए। पहिले दिन से ही लाभ होने लगता है। ४-५ दिन मे जीभ के छाले अच्छे हो जाते है। शतप्रतिशत लाभदायक है।

श्री राजवैद्य पं. रामलाल जैन

ऑनरेरी स्पेशल मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी, कल्याण फार्मेसी, अलीगढ़।

"श्री वैद्य जी एक अनुभवी एवं वयोवृद्ध चिकित्सक हैं। आप सरल प्रकृति, मृदुभाषी एवं योग्य व्यक्ति हैं। पर्याप्त समय से आप प्रथम श्रेणी के स्पेशल मजिस्ट्रेट हैं तथा न्यायप्रियता के लिए आप सुप्रसिद्ध है। धन्वन्तरि पर आपकी सदैव कृपादृष्टि रही है। लगभग ३५ वर्ष से आप चिकित्सा कार्य कर रहे है। इस दीर्घकालीन अनुभव के आधार पर आपने अपने चार सफल प्रयोग धन्वन्तरि में प्रकाशनार्थ प्रेषित कर पाठकों को आभारी किया है।"

—सम्पादक।
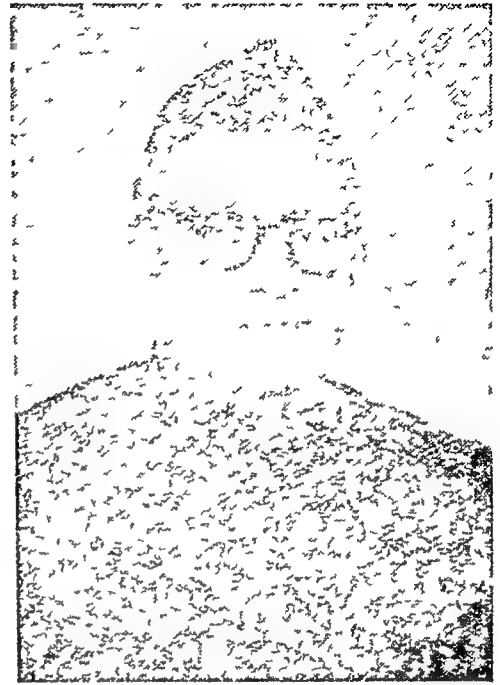
पुराने जुकाम नजले की दवा—

मुनक्का उत्तम बीज निकाले हुए	१० तोला
काले धतूरे के बीज शुद्ध	१॥ तोला
खुरासानी अजवायन	६ माशे

—सर्व प्रथम एक कलईदार डेगची में २ सेर पानी भरकर उसमें मुनक्का डाल दें और धतूरे के बीज शुद्ध और अजवायन एक साफ कपड़े में पोटली बांधकर डेगची पर दोला यन्त्र समान लटका दें और डेगची को चूल्हे पर रखकर धीरे-धीरे अग्नि जलावे, किसी कल्छी से मुनक्को को हिलाते रहें ताकि वह डेगची की पैंदी में लग कर जल न जाये। जब पानी जल जाये तब मुनक्को को निकाल ले और धतूर बीजों को सावधानी से फेंक दें। उन निकाले हुए मुनक्को को खरल करलें उसमें—

केशर	३ माशा
लौंग	३ माशा
दालचीनी	३ माशा
वंशलोचन	६ माशा
छोटी इलायची के दाने	६ माशे
कालीमिर्च	६ माशे

—सब मिलाकर मर्दन करें और चने बराबर गोलियां बना ले।

मात्रा—१ गोली से २ गोली तक, दिन में २ बार गर्म पानी के साथ सेवन करावे।

गुण—इस औषधि के सेवन से पुराना जुकाम जो निरन्तर बना रहता हो, नाक और मुंह से कफ निकलता रहता हो, जरा सी ठण्ड लगने पर जुकाम का असर हो जाता हो। सर भारी सा बना रहता हो या नजला गले पर गिरकर छाती पर जम जाता हो, या श्वास की नली में कफ का जमाव होकर श्वास में ऊभ (अवरोध) मालूम होती हो या श्वास की प्रथम अवस्था हुई हो तो ऐसी दशा में यह औषधि अपना आश्चर्यजनक चमत्कार दिखाती है।

वक्तव्य—मैं इस औषधि को सन् १६२३ से

व्यवहार मे ला रहा हूँ। मगर ध्यान रहे यह औषध केवल कफ प्रधान प्रकृति वाले रोगियों पर ही व्यवहार करें। यदि औषधि से कुछ खुश्की प्रतीत हो तो मात्रा बलाबल देखकर कम कर दे।

पथ्य मे घी, गाय का दूध, दाल, रोटी आदि दे और बादाम पानी मे भिगोकर छीलकर पीसकर शहद या शर्बत बनफ्सा मे मिलाकर चटाये, इससे भी खुश्की दूर हो जाती है। खटाई, तैल, गुड, सुर्ख मिर्च आदि का परहेज करावे।

अतिसार, प्रवाहिका, संग्रहणी पर—

सिंगरफ का निकाला शुद्ध पारा १ तोला
गन्धक भांगरे के रस से शुद्ध किया १ तोला
हड़ताल वर्की शुद्ध — कांतीसार
अभ्रक भस्म २५० पुटी — अफीम
केशर काश्मीरी —प्रत्येक १-१ तोला

—सबको कूट छान करके रख ले और—

अनार की कली सूखी — मोचरस
मरोरफली — धाय के फूल
लोध पठानी —प्रत्येक १-१ तोला

—सबको अलग कूट छानकर तैयार करले बाद मे ऊपर की दवा मिलाकर पानी मे मर्दन कर २-२ रत्ती की गोलियां बनाले।

मात्रा—१ से २ गोली तक दिन मे ३ वार बलाबल विचार कर अतिसार रोग मे सांठी चावल के धोवन के साथ और सग्रहणी मे दही के साथ दे। संग्रहणी मे केवल मट्ठा या दही खाने को दें। आशातीत लाभ दिखाती है।

वायुगोले के दर्द की दवा—

अजवायन देशी ५ तोला
नौसादर कत्तल का (डडा) २॥ तोला

—दोनो को कूटकर एक कांच के बर्तन मे डालकर उसमे २ तोला गन्धक का तेजाब मिला दे और उसे एक सप्ताह बाद निकाले तो काले रङ्ग का कीट समान पदार्थ बन जावेगा। उसे निकाल कर झड़बेरी के बेर समान गोलियां बनाले।

मात्रा—१ से २ गोली तक।

गुण—शूल से व्याकुल छटपटाते हुए रोगी को सेवन कराये, १॥-१॥ या २-२ घण्टे बाद २-३ मात्रा देने से शूलवन्द होकर रोगी को आराम मिलता है। गोली हलक मे डालकर गर्म पानी से निगलवा दीजिए, दांत न लगने दे।

उपदंश और फिरंग रोग पर—

कत्था सफेद १ तोला
कंजे की मिश्री १ तोला
सखिया सफेद शुद्ध ३ माशा
काली मिर्च ३ माशा
तूतिया हरा शुद्ध ३ माशा

—सबको कपडछान कर पानी मे मूंग जैसी गोली बनाले।

मात्रा—१-१ गोली बासी पानी के साथ कुछ खाने के बाद खिलाये और खटाई, तैल, गुड़ और सुर्ख मिर्च का त्याग कर दें। पथ्य में घी की मात्रा कुछ बढ़ा देनी चाहिए। औषधि प्रयोग से पूर्व कोष्ठशुद्धि करा लेना आवश्यकीय है।

गुण—१ सप्ताह के सेवन से उपदंश रोग नष्ट होगा।

घरेलू दवाएं

[सकलित]

ततैया के काटने पर—१—पीले कागज को पानी मे भिगोकर लगावे।

२—नौसादर व चूने को मल देवे।

मकडी के विष पर—नीबू के रस मे चूना पीसकर लगावे।

खाज होने पर—चूने के पानी मे सरसो का तैल डाल कर खूब फेंटे, गाढ़ा हो जाने पर खाज पर मालिश करें। शीघ्र आराम होता है।

अफीम का नशा चढ जाने पर—१—थोडी सी हींग पानी मे घोल कर पिलावे।

कायचिकित्सक पं. नागेशदत्त शास्त्री आयुर्वेदाचार्य

ऋषि चिकित्सालय, नया बाजार, जालना (दक्कन)

"श्री शास्त्री जी ने विद्यापीठ से आयुर्वेदाचार्य, हिन्दी सा स. प्रयाग से आयुर्वेदरत्न एवं साहित्यरत्न, बनारस से साहित्य शास्त्री तथा कलकत्ता से काव्यतीर्थ की उपाधियां प्राप्त की हैं। आप राष्ट्रीय हिन्दी विद्यालय तथा जालना संस्कृत विद्यालय के मंत्री, हिन्दी प्रचार सभा जालना के उपाध्यक्ष, रामचरितमानस मण्डल के अध्यक्ष हैं। आयुर्वेद विद्यालय जालना के अवैतनिक अधिकारक है तथा अ भा आयुर्वेद विद्यापीठ के जालना परीक्षा केन्द्र के व्यवस्थापक हैं। आप विद्वान तथा सफल आयुर्वेद चिकित्सक हैं। आपने तीन रोगो का सफल चिकित्सा-क्रम लिखते हुए उत्तम परीक्षित प्रयोग धन्वन्तरि के पाठको को दिए है।" —सम्पादक।

मन्थर ज्वर—

मन्थर ज्वर एक महान् कष्टदायक रोग है। यह ज्वर वर्षारंभ से आश्विन तक विशेषकर फाल्गुन के बाद यत्र-तत्र देखा जाता है। ज्वर के प्रारम्भ मे तीन लक्षण प्राय दीख पड़ते है—सततज्वर शिरः-शूल और कास। पेट में साधारण सूजन रहती है। अन्त्रपुच्छ का स्पर्श करने से रोगी को पीड़ा होती है। मन्थरज्वर विषमज्वरान्तर्गत सन्ततज्वर है। उपद्रव मे श्वसनक (न्यूमोनिया) और अतिसार होता है। रोग के प्रारम्भ मे रोगी के गले के सामने वाले भाग मे सरसो के आकार के सफेद-सफेद छोटे-छोटे दाने दो चार चमकने लगते है। यह दाने धीरे-धीरे अधिक संख्या मे दीखने लगते है। यह दाने छोटे मोती की तरह होते हैं। अत. इसे मौक्तिक ज्वर मोतीझरा कहते हैं। ये दाने गले से छाती, उदर, कटि तक नीचे-नीचे बढ़ते जाते है और ऊपर के गले आदि के दाने ढलते और भूसी की तरह उड़ते जाते हैं। जब दाने गले और उरःस्थल पर रहते है तो रोगी को अधिक कष्ट होता है, और जैसे-जैसे दाने नीचे उतरते उत्पन्न होते जाते हैं रोगी का कष्ट घटता जाता है। ज्वर दोषो के अनुसार मुद्दत पूरी होने पर ही उतरता है। अत' इसे मुद्दती ज्वर, मियादी ज्वर भी कहते है।

रोग मुक्त होने मे, मुक्ताओं के ढलने मे दोषो के अनुसार समय की विषमता होती है। रोग का प्रभाव आंतो मे अधिक होता है अत. इसे आंत्रिक ज्वर, आंत्रिक सन्निपात ज्वर कहते है। किसी रोगी को ज्वरमुक्ताऐ दस दिन मे गले से कमर तक उतरते बनते ढलती चली जाती हैं। किसी को २१ दिन और अधिकाधिक ४१ दिन लग जाते है। किन्हीं रोगी के शरीर मे ज्वरमुक्ताओं का दर्शन नहीं भी होता है। अदर्शन होने पर रोगी को कष्ट अधिक होता है। रोग अन्तर्वेग रहता है। सभी रोगी के शरीर मे दुर्गन्ध आती है। गन्ध परीक्षक वैद्य रोगी के वस्त्र को सूंघ कर मन्थर ज्वर का निर्णय करते हैं। रोग के निर्णय हो जाने पर, उत्तम उपचार और पथ्य द्वारा रोगी निश्चित् स्वस्थ हो जाता है। आरम्भ मे रोगी की अनिर्णीतावस्था मे इसे केवल प्राकृतज्वर मानकर यदि तिक्तकषाय या किनाईन आदि दिये गए तो ज्वर प्रकुपित हो जाता है और

रोगी का जीवन संकट मे पड जाता है। किन्हीं रोगियों मे शीतज्वर भी साथ में बना रहता है। मन्थर ज्वर की चिकित्सा से वह स्वयं शांत हो जाता है। या सन्ततज्वर की उपस्वास्थ्यावस्था में शीतज्वर का उपचार कर रोगमुक्त किया जाता है।

टायफाईड के लिए ऐलोपैथी की प्रसिद्ध औषधि क्लोरोमायसीटीन को अमोघ अस्त्र माना जाता है।

इस प्रदेश मे मन्थरज्वर बहुधा देखा जाता है। मै अपने औषधालय मे केवल आयुर्वेदिक औषधि ही व्यवहार मे लाता हूँ। इससे मुझे इस रोग की चिकित्सा के लिए खोज के प्रयत्न में लगना पडा। भगवत् कृपा से मैं निम्न-लिखित योग का प्रयोग कुछ काल तक बदलते-बदलते पा सका। मैंने मन्थर ज्वर के अनेक रोगियो पर इसका प्रयोग किया है। अस्सी प्रतिशत रुग्ण अच्छे हो जाते हैं। अनेक रोगियों के विवरण मैंने सुरक्षित रखे हैं। यहां पर केवल योग लिख रहा हूँ। मन्थर का निर्णय हो जाने पर योग का प्रयोग करना चाहिए। रोगी के शरीर के वस्त्र रोज स्वच्छ बदल देने चाहिए। शय्या, रोगीकक्ष, पात्र स्वच्छ रखने चाहिए। पीने के लिए गरम पानी, खाने के लिए गौ का गर्म दूध मुनक्का, मौसम्बी, पका पपैया देना चाहिए।

रोगी को निम्न योग मधु मिश्रित प्रातः मध्यान्ह तथा रात्रि मे देना चाहिए।

योग—संजीवनी वटी (शार्ङ्गधरोक्त)	६ रत्ती
शुक्तिभस्म	६ रत्ती
गोक्षुरादि गुग्गुल (शार्ङ्गधरोक्त)	१ माशा
ब्राह्मी चूर्ण	१॥ माशा

—सबको मिलाकर तीन मात्राऐं बनाकर दिन भर मे देना चाहिए।

नोट—शास्त्रोक्त गोक्षुरादि गुग्गुल मे गोक्षुर का जितना प्रमाण है उससे द्विगुण गोक्षुर डालना चाहिए। हम इसे अष्टगुण गोक्षुरादि गुग्गुल कहते हैं।

मेरे पास जो रोगी, रोगारम्भ के दस दिन बाद चिकित्सा के लिए आते हैं और ज्वर का मान १०४-१०५° रहता है तो उन्हे संजीवनी वटी के स्थान मे ६ रत्ती लक्ष्मीनारायण रस मिलाकर उपर्युक्त योग देता हूँ।

यदि रोगी को श्वसनक (न्यूमोनिया) हो गया हो तो संजीवनी वटी और लक्ष्मीनारायण रस के स्थान पर बृ० कस्तूरीभैरव ४॥ रत्ती उपर्युक्त योग मे मिलाकर दिया जाता है। जब तक न्यूमोनियां शांत हो जाये, तब तक पूर्वोक्त योग दिया जाता है।

यदि अतिसार हो गया हो तो, प्रथम योग मे ४ रत्ती पंचामृत पर्पटी मिला देते है और ब्राह्मीचूर्ण के स्थान मे ३ माशा भुने जीरे का चूर्ण मिलाकर देते हैं तब तक के लिये गोक्षुरादि गुग्गुल बन्द कर देते है और पीने के लिए शतपुष्पा कथितवारि देते है।

रोग के प्रारम्भ से रोगी को उक्त औषधि देते रहने पर ज्वर वेग तीव्र नहीं होता। ज्वर विष, मल मूत्र और स्वेद से बहिर्गत होता रहता है। रोगी मे प्रलाप, अनिद्रा, अतिसार, श्वसनक आदि उपद्रव नहीं होते हैं। रोगी दस से १५ दिन के अन्दर स्वस्थ हो जाता है। रोगी यदि देर से आया तो, मध्यकाल से भी प्रथम औषधि देने पर १५ दिन लग जाते है।

बालशोष—

एक साल से लेकर तीन साल तक के बच्चो मे बालशोष (अस्थिक्षय Rickets) पाया जाता है। रोगी मे ज्वर, कास, मन्दाग्नि, अतिसार लक्षण पाये जाते है। शरीर रक्त-मांस-क्षीण, तालू दबा हुआ, तन्द्रा, नितम्ब मास क्षय, सर्वाङ्ग क्षीण देखा जाता है। किसी-किसी को अस्थिकंकाल मात्र शेष केवल जीवित देखे जाते है। भगवत् कृपा से यह भयङ्कर रोग एक साधारण योग से वरदान की तरह अच्छे होते अनेक बार देखा है।

योग का नाम है "बालसुधा"

—शेषांश पृष्ठ १६७ पर।

आयुर्वेद वाचस्पति डा० रघुवंशलाल शर्मा M. Sc. A.

नेत्रविशेषज्ञ, शल्यशास्त्री, शर्मा आयुर्वेद फार्मेसी, कांठ (मुरादाबाद)

पिता का नाम- श्री पं जीराजदत्त जी शर्मा त्रिवेदी
आयु-४५ वर्ष जाति-गौड ब्राह्मण

'आपने आयुर्वेद शिक्षा कलकत्ता, काशी, लाहौर आदि मे मान्य विद्यालयो से प्राप्त करके आयुर्वेदाचार्य आदि परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। इसके अतिरिक्त झांसी आयुर्वेद विश्व विद्यालय में बहुत समय रह कर नेत्र विशेषज्ञ, आयुर्वेद शल्य-शास्त्री तथा आयुर्वेद वाचस्पति (M Sc. A) की उपाधियां सैद्धान्तिक और क्रियात्मक अध्ययनय के द्वारा प्राप्त की हैं। पाश्चात्य चिकित्सा का भी अध्ययन किया है। सरकारी औषधालयो में प्रधान चिकित्सक के पद पर कार्य किया है। आपने अपने निम्न प्रयोगो के विषय मे लिखा है कि जहा एलोपैथी इन्जेक्शनादि फेल हो जाते है वहा इन प्रयोगो से सफलता प्राप्त होती है।"

—सम्पादक।
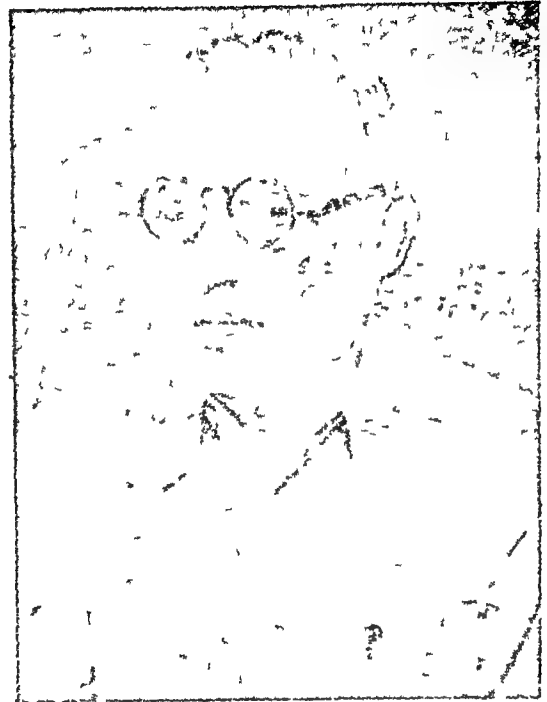
यक्ष्मा नाशक वटी—

बसरे का सच्चा मोती १८ माशा लेकर बढ़िया अर्क गुलाब मे खरल करे। तीन छटाक अर्क गुलाब खरल करने मे शुष्क करदे। इसके पश्चात् असली मलियागिरि चन्दन को पत्थर पर रगड कर ६ तोला घिसे और इसे भी खरल मे मिलाकर मोतियो के साथ खूब घोटदे, जब उपरोक्त दोनो औषधियाँ ठीक हो जाय तब इसमें—

धनिये के चावल	बीहदाना
असली बंसलोचन	मगज कद्दू

—प्रत्येक १८-१८ माशा

गोंद बबूल	३ माशा
भीमसेनी कपूर	६ माशा
चिन्तामणि रस	१८ माशा

—इन सबको मिलाकर और अर्क केवडा मे खरल करके १८० गोलियां बनाले।

मात्रा—यक्ष्मा के रोगी को प्रातः सायं १-१ गोली गौ या बकरी के दुग्ध के साथ दे।

उपरोक्त वटी के साथ देने की दूसरी औषधि-

चिन्तामणि रस	१॥ माशा
सूतशेखर रस	३ रत्ती
श्लेष्मान्तक चूर्ण	३ माशा
खाने का सोडा	३ माशा

—इन सबको एकत्र कर तीन पुडिया बनाकर दिन मे तीन बार दे।

पथ्य—४० दिन तक केवल फल और दुग्ध ही दे।

गुण—इसके सेवन से यक्ष्मा रोगी दिन प्रति दिन स्वस्थ, बलवान, कांतिवान होने लगता है।

उपरोक्त चिकित्सा के साथ ही नवनीत (नैनी घृत) १ सेर लेकर उसको १००० बार शीतल जल मे धुलवालें । उसमें भीमसेनी कपूर ६ माशा, गेरू शुद्ध १ तोला अच्छी प्रकार मर्दन कर मिलाले और यक्ष्मा रोगी के सर्वाङ्ग पर नित्य मालिश किया करे। शतशोऽनूभूत है ।

शीतपित्त (पित्ती निकलने) पर—

चिरायते के पत्ते	१ माशा
छोटी हरड़	६ माशा
उन्नाव	७ दाने
मधु (शहद)	२ तोला
घी	१५ तोला

—सब औषधियो को पत्थर पर पीस कर जल मे मिलालें। तत्पश्चात् एक मिट्टी का अल्वा (शकोरा) अग्नि मे गर्म कर उपरोक्त दवाई तप्त शकोरे मे छोड़कर फाट बनाले और शहद डाल कर रोगी को पिलादें तत्क्षण लाभ करेगा।

मूत्रकृच्छ (सुजाक) नाशक—

गोंद बबूल बंशलोचन श्वेत राल

श्वेत इलायची दाने —चारो १-१ तोला

मिश्री ४ तोला

—इन सबको कूट-कपड़छान कर १४ पुड़िया बनाले। प्रात. सायं १-१ पुडिया गौ के धारोष्ण कच्चे दूध के साथ दें ।

गुण—प्रथम खुराक से ही पूयुक्त सुजाक को लाभ करती है ।

उपदंश (आतशक) नाशक वटी—

शुद्ध कपूर शुद्ध शिंगरफ

पपरिया कत्था श्वेत इलायची

—चारो ६-६ माशे ।

—इन चारो औषधियो को गौ के कच्चे दूध मे खरल करके चने जैसी वटी बनाले। प्रात.-सायं १-१ वटी मलाई मे रख कर रोगी को निगलवा दें । पांच दिन मे भयङ्कर उपदंश दूर होगा।

पथ्य—दुग्ध, भात, मूंग की दाल, घृत आदि ।

बहुसूत्रहर वटी—

रसवत (रसौत)	५ तोला
वच	५ तोला
नीम छाल हरड़ बड़ी बहेड़े की मींग	
भांग के वीज अजवायन	
कनेर के पुष्प	—प्रत्येक ६-६ माशा
अफीम	३ माशा
मिश्री	३ तोला

—इन सबको खरल करके १-१ माशा की वटी बनाले। प्रात सायं १-१ वटी केवल जल या गौदुग्ध से दें ।

गुण—यह वटी पुराने से पुराने बहुमूत्र रोग मे लाभ करती है ।

घरेलू दवाएें

[सकलित]

बवासीर होने पर—रसौत और कलमी शोरा इनको बराबर-बराबर लेकर मूली के रस में घोटकर चने के बराबर गोली बनाले। एक-एक गोली दोनों समय खावे। २० दिन के अन्दर आराम होता है ।

कुक्कर खासी में—१ केले के सूखे पत्तो की राख बना कर यदि शरद ऋतु हो तो शहद मिलाकर और ग्रीष्म ऋतु हो तो नमक मिलाकर चाटे। एक दिन मे आराम होता है ।

२. तुलसी की मंजरी अदरख के रस मे पीसकर शहद मे मिलाकर खावे ।

गले मे खाज सी रहने पर—बड़ी हरड़ का छिलका मुह मे रखकर रस चूसता रहे शीघ्र आराम होता है ।

वैद्य मिश्रीलाल गुप्त विशारद

गुप्ता आयुर्वेदिक औषधालय, इछावर (भोपाल)

"श्री गुप्त जी सदैव ही आयुर्वेद प्रकाशन मे सहयोग के लिए प्रस्तुत रहते हैं। आयुर्वेद उन्नति की यह उनकी सुरुचिपूर्ण भावना है, हमारे प्रथम सकेत पर ही आपने जनकल्याण भावना से प्रेरित होकर तत्काल प्रयोग भेज दिए। आप उच्च विचारक और श्रेष्ठ चिकित्सक हैं। आपने अपने अध्यवसाय से हिन्दू यूनीवर्सिटी वनारस से विशेष सम्मान प्राप्त किया। श्री कविराज प्रतापसिंह जी के विशेष कृपापात्र रहे हैं और उनके सम्पर्क से वहुत कुछ सीखा है। अनेक धर्मार्थ औषधालयो के प्रधान पद पर रह कर ७ वर्ष से अपना स्वतंत्र औषधालय स्थापित कर प्रति वर्ष लगभग दस-वारह सहस्र रोगियो को चिकित्सा लाभ पहु चाते हैं। आयुर्वेद के साथ साथ आप यूनानी चिकित्सा पद्धति से भी चिकित्सा मे यशोलाभ प्राप्त करते हैं जिसके आप क्रियात्मक मर्मज्ञ हैं।"

—सम्पादक।

पाचक अर्क—

डायलूट सल्फ्यूरिक एसिड	½ औंस
पानी	२४ औंस
आयल मेंथा	½ ड्राम

—सवको मिलाकर बोतल में रखले।

मात्रा—१ औंस दिन मे ३ वार।

गुण—इस अर्क को नियमित सेवन करते रहने से विशूचिका के दिनों मे रोग होने का भय नहीं रहता और यदि होगया तो उसकी एक एक मात्रा दो-दो घन्टे मे पिलाते रहने से वडा लाभ होता है। इसके साथ ही यह अर्क अजीर्ण, शूल, गुल्म और मन्दाग्नि में भी वडा लाभ करता है।

रक्तावरोधक चूर्ण—

गेरू रालसफेद संगजराहत
दम्मुल अखवेन अंजुवार की जड़
वंशलोचन कहरवा शमई दाने इलायची
—प्रत्येक समान भाग

—सवको मिला चूर्ण वनालें।

मात्रा—प्रातः चार-चार घन्टे से ६-६ माशे जल के साथ खिलावे।

गुण—रक्तपित्त, अर्श, रक्तप्रदर आदि किसी भी कारण से होने वाले भयंकर रक्त प्रवाह को दो दिन मे ही वन्द करता है, रक्तप्रदर और अर्श के रक्त को तुरन्त वन्द करता है।

भयंकर दन्तशूल के लिए—

नाय● की पत्तियो को पिसवा कर टिकड़ी वनावें और जिस ओर की दाढ़ मे दर्द हो उसके विपरीत

—शेषांश पृष्ठ १७८ पर।

●वैद्यक मे इसे नाकुली कहते है। भावप्रकाश निघण्टु मे हरीतक्यादि वर्ग के अन्तर्गत इसका वर्णन है। यह जगंली बूटी है। छोटे छोटे पौधो के रूप मे लम्बे-लम्बे पत्तो सहित होती है। इसके पत्ते बास के पत्तो के आकार के किन्तु उससे बहुत छोटे और स्वाद में बहुत कडवे होते है। हमारे यहा बहुत मिलती है। —लेखक।

श्री स्वामी कृष्णानन्द जी

सिद्धाश्रम मालिन खोह, चन्देरी (म० प्र०)

"श्री स्वामी जी वयोवृद्ध एवं अनुभवी व्यक्ति हैं। पीडित जन की नि स्वार्थ सेवार्थ चिकित्सा भी करते रहते हैं। आपके निम्न प्रयोग चन्देरी के श्री पं गौरीशकर बृजकिशोर चौबे ने बडे प्रयत्न एव आग्रह से प्राप्त कर धन्वन्तरि मे प्रकाशनार्थ प्रेषित किए है। आप एक सिद्ध पुरुष हैं तथा आपके प्रयोग भी निश्चय ही सफल सिद्ध प्रमाणित होगे यदि नि.स्वार्थ भाव से पीडित जन की सेवार्थ दिए जांय। श्री चौबे जी ने भविष्य मे भी स्वामी जी के प्रयोग प्राप्त कर प्रकाशनार्थ भेजते रहने का विश्वास दिलाया है। आशा है स्वामी जी के प्रयोगो से पाठक लाभ उठावेंगे।" —सम्पादक।

श्वासघ्न योग—

यह वह योग है, जो श्वासदमनी औषधि विषयक दो सिद्ध पुरुषों की बात-चीत द्वारा प्राप्त किया था। यह दीर्घकालीन समय की बात है, यद्यपि अधिक समय गत हुई बात की ठीक स्मृति बने रहना कठिन है, तथापि मुझे उस बात की अभी तक ठीक स्मृति बनी हुई है, क्योंकि वह बात मैंने उसी समय यथातथ्य रूपेण नोट करली थी। तद्यथा उन महापुरुषों के नाम से शायत आप भी परिचित हों, कुछ काल गत हुए विश्व विद्यालय के प्रधानाध्यक्ष स्वर्गीय महामना पं० मदनमोहन मालवीय जी को जिस योगी पुरुष ने काया-कल्प कराया था वही योगी पुरुष एक अन्य सिद्ध पुरुष के साथ एक स्थान पर बैठे हुए बातचीत कर रहे थे कि संसार में श्वास बहुत ही दु साध्य एव कष्टप्रद रोग है। इसके प्रतिषेध का आजतक अप्रतिहत उपाय किसी की समझ मे नहीं आया, यदि आपके पास एतद् विषयक कोई अनुभूत योग हो तो उन श्वास पीड़ित व्यक्तियों के प्रति आपका बडा ही उपकार होगा। इस प्रकार प्रश्न करने पर वे सिद्ध पुरुष श्वास नाशक योग बतलाने के हेतु तत्पर ही थे अर्थात् आरम्भ करने के ठीक समय पर (शैलोदक नाम से प्रसिद्ध जलीय विशेष सज्ञा का वाचक एक द्रव पदार्थ है जिसके मध्य डाले हुए काष्ठ पत्रादिक कालान्तर मे पाषाण रूप हो जाते हैं, इसी हेतु इसका नाम शैलोदक है। "उदकस्य उदके वा शिलम् भवतीति" इस पदार्थ के विषय मे मुझे पूरा अनुभव है, यह कपोल कल्पित बात नहीं है नि.संदेह यथार्थ समझे, इस पदार्थ मे इत्याकारक शक्ति निहित है। मैंने लाखो की सख्या मे बहुत सी वस्तुये काष्ठ पत्रादिक इस जल के प्रभाव से पाषाण रूप हुई उप- लब्ध की है, एवं सदेह निवृत्ति के हेतु एक-दो स्थानो के दृष्ट उदाहरण भी देख रहा हूँ।

पन्ना राज्य एव शहर से ८ मील दूरी पर पठार घाटी के नीचे पाण्डव कुण्ड है, वहा जाकर स्वय देख सकते हैं आप आश्चर्यान्वित हो जायेगे, साथ ही विश्वास भी होजायेगा कि इस जल मे इत्याकारक शक्ति अवश्य निहित है एव द्वितीय उदाहरण इलाहबाद-मानिकपुर स्टेशन से पूर्व अष्टक्रोश की दूरी पर भेदक हनूमान नाम से प्रसिद्ध एक जाङ्ग-

लिक स्थान है, वहां जाकर भी देख सकते हैं, वहुत सी वस्तुये पाषाण रूप हुई आपकी दृष्टि मे आयेगी, प्राचीन हस्थ लिखित रसार्णव ग्रन्थ से नागार्जुन भट्ट के मतानुसार एव वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस जल मे पारद आदि के अद्भुत योग सिद्ध किए जाते हैं। उक्त पदार्थ की प्राप्ति के हेतु अन्वेषण काल में) विचरता हुआ अकस्मात् मैं भी जा पहुँचा और मैंने भी उस योग को ध्यानपूर्वक सुना तथा कागज पैन्सिल मेरे पास मौजूद थी अत उसी समय ज्यो का त्यों नोट भी कर लिया जो आज अवसर पाकर आपकी सेवा मे समर्पण कर रहा हूँ।

प्रयोग—

दीमक के छत्ते को संग्रह करके एव सुखाकर भलीभाति स्वच्छ करलो, पश्चात अर्वसम्भाग मात्रा मे अग्नि सस्कार रहित अर्थात् कच्चा तथा इतनी ही मात्रा मे अग्नि सस्कारित जलाया हुआ (राख) को लेकर दोनो को सम्भाग मात्रा मे हो कूट पीस कर तथा छानकर ५ तोले मे १ तोला परिमाण के माप से काली मिर्च पीसकर मिला दो। बस सुन्दर श्वासारि औषधि वन कर तैयार है। आवश्यकता पडने पर श्वास-पीडित रोगी को शक्ति-बल के अनुसार बाल एवं वृद्ध को विचार कर मात्रा २ से ४ रत्ती तक शहद मे मिलाकर व्यवहार कराइये। प्रात साय दोनो समय २१ या ३० दिन तक परहेज से रहे, ईश्वर की कृपा से अवश्य लाभ होगा। अनुभूत योग है।

अथवा कुचिला ५ तोला लेकर कडाही मे घृत डालकर मन्द आच द्वारा जलालो पश्चात् पीस कर चूर्ण करलो; पुन —

सोंठ काली मिर्च पीपर
सुहागा फूला किया हुआ दालचीनी
—प्रत्येक १-१ तोला

—इन सब को वारीक पीस कर उक्त चूर्ण मे मिलाकर रखलो। आवश्यकता पडने पर ४ रत्ती ऐफेड्रिन हाईड्रोक्लोर मे ४ रत्ती चूर्ण सम्मिश्रण करके रोगी को ताजे पानी के साथ प्रात. साय सात दिन तक सेवन कराइये, अवश्य लाभ होगा।

पित्तज श्वास पर तान्त्रिक उपचार—

पित्तज श्वास के लक्षण—हृदय मे जलन, मुख सूखना, तथा ज्वर से पीडित रहना एव मुख का स्वाद कडवा, तृषा से व्याकुलता, पीला, कडवा अथवा चरपरा वमन होना, खांसी आना, सर्वाङ्ग मे तथा गले और नाक मे दाह होना, आदि लक्षण वतलाये हैं।

उपाय—किसी सिद्ध योग नक्षत्र वार मे छोटी दुद्धी जिसको पञ्जाब मे हजारदानी नाम से कहते हैं, नाम बूटी के आधार पर ही है, प्रात कालीन सूर्योदय से पूर्व पाव भर मात्रा मे उखाड़ कर ले आओ एव घोट पीस कर आधा सेर जल सम्मिश्रण करके रोगी को पिला दीजिये। पश्चात् २ घन्टे वाद लाल साठी के चावल पकवाकर दही के साथ खाने को दीजिये। ईश्वर कृपा से एक ही बार के सेवन से सफलता प्राप्त होगी।

हमारे अनुभूत योगों को आप चाहे जब परीक्षा करे, असफल नहीं होंगे।

प्रत्येक भस्म प्रचुर मात्रा मे सम्पन्न करने के एवं सरल अनुभूत योग हम पुन कथन करेंगे। यहा प्रसगवशात् केवल श्वास दमन प्रयोगों का ही समुल्लेख करते है।

साधारण खांसी पर अनुभूत—

त्रिफलादि वटी—

त्रिफला त्रिकुटा —दोनो ३-३ तोला
सैंधव अजवाइन लहशुन
काकडासिंगी —प्रत्येक १-१ तोला

—लेकर सबको एकत्रित करके पीस-छान कर जल के योग से एक-एक माशे की गोलिया वनाकर रखलो। आवश्यकता पडने पर रोगी को सेवन कराइये। गोली खाने के साथ ही खासी शान्त होगी। अथवा—

(11) मिर्च काली १ तोला
पीपर जवाखार —दोनो ६-६ माशा
पुराना गुड ६ माशा
अनारदाना ४ माशा

—इन सवका चूर्ण वनाकर प्रात साय ६-६ माशा सेवन करने से पुरानी असाध्य खासी नष्ट होजाती है।

स्वर्गीय श्रीमान् रामचन्द्र व्यास

(वोहड़ाकाला, गुड़गावां निवासी)
५ देवनगर, करौलवाग नई दिल्ली।

"श्रीमान् स्वर्गीय व्यास जी आयुर्वेद के प्रकाण्ड पडित थे। आपने वाल्यावस्था मे ही गुरु ने आयुर्वेद की दीक्षा ली और १६ वर्ष की अल्पायु मे आप एक आयुर्वेदिक चिकित्सक के रूप में चादनी चौक दिल्ली मे चिकित्सा कार्य करने लगे। कुछ समय पश्चात् आपने नया रूप धारण किया और आप राजा महाराजाओ और रईसो के चिकित्सक वने। वहुत समय तक इसी प्रकार चिकित्सा करते रहने पर आपकी विचारधारायें कुछ वदली और आप गरीवो तथा दुखियो की सेवा ध्येय से कार्य करने लगे और सवके लिए सस्ती एव सुलभ चिकित्सा प्राप्त करने में सफल हुए। चिकित्सा कार्य करते करते आप ६० वर्ष की आयु मे अव से दो वर्ष पूर्व परमधाम को सिधार गये। आपके पुत्र-पौत्र भी चिकित्सा कार्य करते हैं।

व्यास जी शास्त्रीय योगो के साथ साथ अनुभव से भी निजी योग वनाया करते थे। और वास्तव मे वह योग वहुत सस्ते एव कार्यकर हैं। उनमे मे कुछ योग उनके पौत्र श्री वैद्य शिवकुमार जी व्यास ने धन्वन्तरि मे प्रकाशनार्थ प्रेषित किए हैं जिनके लिए हम उनके आभारी है। —सम्पादक।

जैसा कि स्वर्गीय व्यास जी के जीवन परिचय से सुविदित है कि आप शास्त्रीय औषधियो के साथ ही साथ अनुभूत योग भी चिकित्सा मे व्यवहार करते थे जो सम्भवत. आपके इतने लम्बे समय के अनुभव का ही प्रसाद है। आपके सभी अनुभवो का तो हमे पता नहीं लग सका, हा आपकी हस्त-लिखित दो-तीन पर्चियो मे आपके १५-२० अनुभव-प्राप्त योग मिल सके हैं जो कि हमारे सामने भी कई वार प्रयोग किए और समय-समय पर इन प्रयोगों का प्रभाव हम देखते रहते थे। उन्हीं प्रयोगों मे से कुछ प्रयोग हम धन्वन्तरि के पाठको के सम्मुख भी रखते हैं जो अवश्य ही लाभप्रद सिद्ध होंगे, ऐसी आशा है। —प्रयोग प्रेषक।
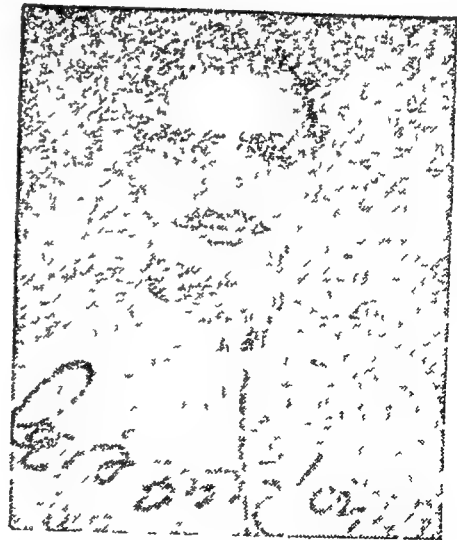
मूत्र विरेचक योग—

यवक्षार शीतलचीनी
रेवतचीनी एला (इलायची वडी) जीरा

—ये सब १-१ भाग

कलमी शोरा	२ भाग
मिश्री	४ भाग

—सबको कूट कर कपडछन चूर्ण बना लें और ३ माशे की मात्रा मे दूध की पतली लस्सी से दिन मे तीन बार दे। मूत्र का विरेचन प्रथम मात्रा से ही होने लगेगा। लस्सी का प्रयोग न कराया जा सके तो साधारण जल से भी लिया जा सकता है।

रज:प्रवर्तक योग—

भुनी हींग	१ भाग
भारङ्गी	२ भाग
त्रिकटु	६ भाग

—सबको कपडछान चूर्ण कर ले और ३ माशे की मात्रा में जल से या दूध से प्रात. सायं दे। इससे बन्द हुआ मासिकस्राव तथा आता आता बीच मे रुका हुआ रज आने लगता है।

ज्वरघ्न योग—

गौदन्ती भस्म	१ भाग
चूना (कलई)	१ भाग

—मिलाकर रख ले। गोदन्ती भस्म नीम के पत्तों के स्वरस की भावना देकर बनाई गई हो तथा चूना बुझा हुआ हो। ऐसे चूर्ण को ४ रत्ती की मात्रा में मधु शर्करा अथवा अन्य साधारण जल के अनुपान से दे, जो अवस्थानुसार चिकित्सक विचार कर बतावे। ऐसी तीन मात्राएं दिन मे दे। साधारण ज्वर के लिए यह सस्ता सुलभ तथा आशुकारी प्रयोग है।

प्रदरान्तक योग—

चिकनी सुपारी		माजूफल
जौलाई मूल	धायपुष्प	स्वर्णगैरिक
मोचरस	लोध	राल

—ये सब १-१ भाग

मिश्री	८ भाग

—सबका कपड़छान चूर्ण कर १ तोला की मात्रा में चावल के मांड के अनुपान से दिन में तीन मात्राएँ दे। सफेद प्रदर मे शीघ्र लाभकारी है तथा रक्तप्रदर के लिए लाभप्रद है।

:: पृष्ठ १७४ का शेषांश ::

हाथ की भुजा पर (मांसपेशी पर) कपड़े से टिकिया बांध दी जावे, अवश्य ही दन्तशूल से स्थाई लाभ होगा। अनुभूत है।

बाल यकृत हर—

माण्डूरभस्म	२ रत्ती
शङ्खभस्म	१ रत्ती
पिप्पली चूर्ण	२ रत्ती
कुटकी चूर्ण भुना हुआ	२ रत्ती

मात्रा—यह एक मात्रा है, ऐसी ३ मात्रा नित्य शहद के साथ प्रात मध्यान्ह और सायंकाल को सेवन करावे। साथ ही इस औषधि के एक घन्टे पूर्व या पश्चात् प्रात सायं स्वस्थ कृष्ण गौ का मूत्र वस्त्रपूत करके १ तोले से १ औंस तक बलाबल विचार करके पिलाते रहे। लगभग १ मास तक यह क्रम चलाना आवश्यक है। कोई कारण नहीं कि लाभ न हो।

क्षय पर अनुभूत—

सितोपलादि चूर्ण	२ माशे
प्रवालभस्म चन्द्रपुटी	२ रत्ती
अमृतासत्व	१ माशा
स्वर्णबसन्त मालती	१ रत्ती

—यह एक मात्रा है। प्रतिदिन ऐसी ३ मात्रा शहद के साथ प्रात' मध्यान्ह और साय चटावे।

भोजनोत्तर यदि कास अधिक हो तो वासारिष्ट आधा औंस समान जल मिश्रण कर दोनो समय देवे और चूसने को एलादिवटी दस से १५ गोली तक दिन भर मे दे। शरीर पर लाक्षादि तैल की मालिश करे। ब्रह्मचर्य से रहे, उबाल कर शीतल किया हुआ जल पिएँ। क्षीर पाक की विधि से पकाया हुआ दूध देवे। यदि शुष्क कास हो तो मक्खन भी दिया जावे परन्तु मक्खन खाने के दो घन्टे तक जल पीना वर्जित है।

श्री वैद्य सुन्दरलाल जैन वैद्यभूषण

अध्यक्ष—महाकोशल आयुर्वेदिक फार्मेसी, मु. पो. कुड़ई (दमोह)
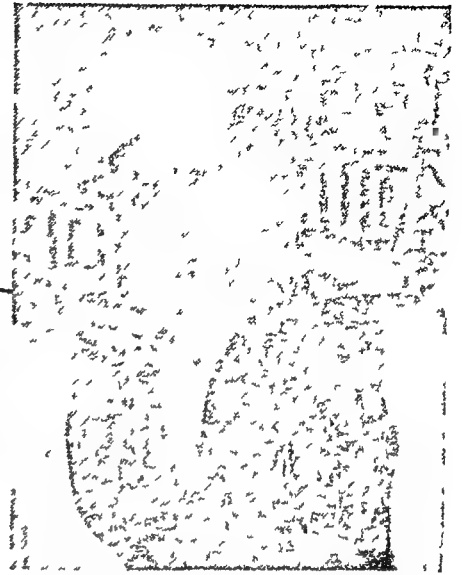
"आपने श्री प. दयाचन्द जी आयुर्वेदाचार्य से आयुर्वेद-शिक्षा प्राप्त की तथा आप गत १८ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे है। आपने "प्रयोग सर्वस्व" एक पुस्तक लिखी हे जिसमे अनेक सफल सिद्ध प्रयोगो का उपयोगी सग्रह आपने किया है। इसी पुस्तक के वे प्रयोग जिनको आप स्वय परीक्षा करने पर सफलता प्राप्त कर चुके है, प्रेषित किये है। प्रयोग उपयोगी प्रतीत होते हैं अत आपके द्वारा प्रेषित सभी प्रयोग यहा प्रकाशित कर रहे है।"

—सम्पादक।

योगवाही वटी—

काली मिर्च — सत्व नौसादर
शुद्ध धत्तूर बीज — शुद्ध स्वर्ण गेरु

—यथा विधि पीस कर पान के रस मे घोट १-१ रत्ती की गोली बनालें, मात्रा १-२ गोली बलानुसार उचित अनुपान से दे।

गुण—विषमज्वर (मलेरिया), अजीर्ण, वमन, अरुचि, शिर शूल, वृक्कशूल, श्वास, कास, प्लीहावृद्धि, शोथ आदि रोगो पर यह एक ही साधारण योग रोगानुसार अनुपान से उत्तम लाभप्रद है, संक्षेप में इसे गृहस्थी मे तैयार रखने से यह समय पर एक घरेलू चिकित्सक का कार्य करती है। अनुपान की साधारण रूप रेखा यह है—

मलेरिया का दौरा रोकने को—२-२ गोली शक्कर के साथ फाककर ऊपर से जल दें। ऐसी ३ मात्रा मे पारी रुक जाती है।

अजीर्ण मे— उष्ण जल के साथ।

वमन मे—शहद के साथ।

पेट शूल मे—कोरे पान में रख कर चबावे अथवा पीसकर शक्कर मे फाक लें।

अष्ठीला आनाह मे—भुनी हींग व गरम जल से।

अम्लपित्त मे—धनियां भिगोये पानी से।

अरुचि मे—नीम्बू की सिंकजबीन के साथ।

शिर शूल मे—प्रात पेड़े मे रख कर।

वृक्कशूल मे—घी या मक्खन के साथ।

श्वास मे—पान का रस या शहद के साथ।

कास मे—तुलसी स्वरस, शक्कर की चासनी से।

प्लीहा वृद्धि—गौमूत्र १ तोला के साथ।

शोथ—पुर्ननवास्वरस १ तोला व शहद से।

सक्षेप मे यह विवरण दिया है, अधिक के लिये चिकित्सक स्वयं योजना कर सकते है।

ज्वरहर वटी—

फूली फिटकरी — करज के पत्ते
नीम के पत्ते — आग पर तवे पर भुना-
सेंधा नमक — —प्रत्येक सम भाग

—यथा-विधि पीस कर ३-३ रत्ती की गोली बनाले।

मात्रा—१ से २ गोली जल के साथ ज्वर वेग के प्रथम, तीन वार अथवा प्रात. सायं दे। यह साधारण

योग मलेरिया, विपम ज्वर, सब प्रकार के साधारण ज्वर, अजीर्ण आदि पर बहुत ही उत्तम है। आप शायद कह सकते हैं कि यह इतना छोटा योग क्या असर रखेगा पर यह शंका व्यर्थ है, जिस तरह निम्बादि चूर्ण सर्व ज्वरों पर अचूक लाभ करता है उसी तरह यह योग भी जो अन्य वैद्य "करंज गिरी" से ज्वरहर योग बनाते हैं उनमें वामक अरुचिप्रद दोप रहते है पर इसमें करंज पत्र का व्यवहार होने से व नमक साथ मे होने से यह एक दम निरापद और रुचिकर है। धमार्थ औषधालयो मे इसका वितरण सर्वथा उपयुक्त और कार्यकारी है।

न्यूमोनिया हरण—

अजवाइन	कल्मीशोरा
बारासिंघा का बुरादा	—प्रत्येक १-१ तोला
श्वेत आक की जड की छाल	आफीम
—दोनों ४–४ माशा	

—सबको घृतकुमारी के रस मे घोट टिकिया बना कर सुखा कर शराव सम्पुट मे बंद कर अरने उपलों की भट्टी मे (गज पुटी) मे फूंक दे, कृष्ण रंग की भस्म होगी, घोट कर शीशी मे रखे।

मात्रा—२-२ रत्ती शक्कर की चासनी से अथवा रोगानुसार अनुपान से दे। यह पार्श्व शूल, हृदयशूल कास, श्वास एवं निमोनिया के लिए सर्वोत्तम प्रयोग है।

यह प० कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी द्वारा 'अनुभूत योग माला' में प्रकाशित हुआ था, पूर्ण परीक्षित है। पर रोगी की शक्ति की रक्षार्थ कस्तूरीभैरवरस या समीरपन्नग (कुप्पीपक्व) भुना सुहागा व शहद से,यदि रोग अधिक है तो देना जरूरी रहता है। यह साधारण उपरोक्त योग रोग पाचन, व शमन करने मे बहुत उपयुक्त लाभकारी है।

क्षुधा प्रकाशन—

इधर हमारे प्रांत मे (ग्रामीण संस्था मे) दोषज ज्वरों मे अथवा फुफ्फुस, सन्निपातादि मे 'लंघन' चिकित्सा का अभी भी प्रचार है जो सर्वथा उपयुक्त और आयुर्वेदीय है, पर रोग के समय उपयुक्त चिकित्सा न होने से कभी-कभी ऐसा प्रसङ्ग आ जाता है कि रोगी १५-२० या २५ दिन के बाद भी अन्न की इच्छा नहीं करता अथवा भूख नहीं लगती इस समय अनेक दीपक व पाचन योग (अग्नितुण्डी अथवा अग्निकुमारादि) लाभ नहीं करते। उस समय इस योग से अचित्य लाभ होता है, योग यह है—

चना		२१ नग
सोंठ	मिर्च	पीपल
जीरा सफेद	अजवाइन	सेंधानमक

—प्रत्येक २-२ माशा

—आधा सेर जल में अष्टावशेप क्वाथ कर साधारण उष्ण पिलादे व वस्त्र ओढ़ा कर रोगी को लिटादे। तीन खुराक तीन दिन मे रोज प्रातः दीजिये पहिली खुराक मे ही नाडी 'पित्त' पर आ जायगी और भूख पैदा हो जायगी, । यह एक महात्मा का योग है जो प० लक्ष्मीनारायण शर्मा द्वारा प्रकाश पा चुका है, चिकित्सक समाज को ऐसे योगों की सदैव आवश्यकता है।

कल्प सुधा—

पीपल के पत्ते	५
बेल के पत्ते	१५
तुलसी के पत्ते	४५
लवङ्ग (लौंग)	१६

—सबको यव-कुट करके आधा सेर जल मे चतुर्थांश क्वाथ बनाले।

मात्रा—१-१ तोला २-२ घंटे पर देते रहे। यह इन्फ्लुऐंजा (वातकफज्वर), सन्निपात, प्लेग, मंथरज्वर, मलेरिया आदि दोषयुक्त ज्वरो के दोषो को ४८ घंटे मे 'पाचन' कर देता है आशा है, वैद्य-वर्ग इसका अनुभव करेगा।

संग्रहणी पर सरल योग—

रेवन्दचीनी स्याह जीरा कल्मीशोरा

काला नमक निसोथ सनाय
जवाहरड़ (छोटी) वंशलोचन अराली
शीतलचीनी इलायची

—प्रत्येक सम भाग

—मिश्री सब से चौथाई. चूर्ण करले।

मात्रा—३ माशा दूध की लस्सी के साथ 'बलानुसार, प्रयोग करे।

पथ्य—गैहूँ का दलिया बिना नमक का दे। यदि रोगी कमजोर हो तो प्रात सायं १-१ रत्ती पचामृत पर्पटी भी जीरे के क्वाथ मे घोटकर दें। यह संग्रहणी के लिए अद्‌भुत कार्यकारी प्रयोग है। मूत्र खूब लाता है, वायु अनुलोमन कर्त्ता है।

विशूचकांतक वटी—

देशी शुद्ध कपूर मोथा पीपल

—प्रत्येक समभाग

—हींग आधाभाग सबको जल से घोट २-३ रत्ती की गोली बनायें।

अनुपान—नमक का जल* रोग शांत होने तक १५ मिनट या आध घंटे पर जल्दी-जल्दी दें, यह 'सरल योग' हैजे पर अचूक है, साथ ही सस्ता होने से धर्मार्थ बांटने योग्य है।

विशेष—नमक के जल का प्रयोग हैजे मे आयुर्वेदज्ञों को बहुत पहिले से मालूम था यह इस योग से प्रमाणित होता है, चूंकि यह योग सन् '१६३२' मे अनुभूत योग माला मे प्रकाशित हो चुका है।

विशूचिका प्रतिबन्धक—

जायफल कपूर श्वेतचन्दन
लवंग —प्रत्येक १-१ तोला
पिपरमेट ६ माशा

—समभाग जल से पीसकर मटर प्रमाण गोली बनाले। प्रात.-साय, दोपहर को रोज ले। मुर्दों मे पड़े रहने पर भी हैजा न होगा। यदि साधारण वमनादि उपद्रवो मे देंगे तो संतोषजनक लाभ दृष्टिगत आयेगा।

अर्कमूलादि वटी—

आक की जड़ की छाल १ तोला
काला नमक ६ माशा
कालीमिर्च ३ माशा

—जल से चने प्रमाण गोली बनावें।

उपयोग—किसी अंग मे दर्द हो तो ६ माशा घी के साथ प्रातः सायं दें, परम अनुभूत है। हैजे मे गंभीर अवस्था के समय यह गोलियां ईश्वरीय प्रभाव दिखाती है। (आयुर्वेदीय विश्वकोष)

अर्शहर सुलभ योग—

नमक सेंधा सत्यानाशी मूल हरी
पंवाड़ बीज —प्रत्येक १-१ माशा

—मट्ठे मे पीस-छान कर ४० दिन पीने से मस्सा सूखकर गिर जाता है। यह सरल योग अर्श पर बहुत उपयुक्त है।

रक्तपित्तहर—

सफेद राल मिश्री
मोचरस (सेंभल का गोंद)

—प्रत्येक १-१ तोला

अफीम १ रत्ती

—सबको एकत्र खरल कर ३ मात्रा बनाये। दिन मे तीन बार दे। ऊर्ध्व अधोगामी रक्तस्राव शीघ्र ही विलीन हो जाता है। सुपरीक्षित है।

अनुपान—दूध। दोषापचन के लिए—
आंवला अडूसा

—दोनों समभाग का क्वाथ प्रात. साय ७ दिन

---

* नमक का जल—१ सेर शुद्ध जल मे १। तोला सेंधा-नमक मिला घोल छान कर रखलें, प्रति गोली के साथ २॥ तोला और प्यास लगने पर भी यही जल पीने को दो। प्यास कम होगी, रोग शांत होने पर भी २ दिन यही जल दें, पुनः रोग न होगा।

सेवन करायें । रक्तपित्त समूल नष्ट हो जायगा, शक्ति की रक्षा के लिए मकरध्वज रुसा-स्वरस मधु से देते रहें ।

कफ विकार—

—सत्यानाशी (जिस वृक्ष पर फल फूल न आये हो) की जड़ ३ भाग, पीपल १ भाग लहसुन के रस मे गोली बना चुसावे या गरम जल से दें। कफ पानी हो जायगा । कफ विकार एव कफज कास पर अद्वितीय प्रयोग है ।

हिक्का एवं अत्युद्गार नाशक—

मयूरपंख का चदेवा	२ तोला
वडी इलायची (डोडा) की भस्म	२ तोला
शङ्ख भस्म	२ तोला

हरड बहेड़ा आंवला
पीपल लौहभस्म प्रवाल भस्म
—प्रत्येक १-१ तोला ।

—सबको यथा विधि पीस ले ।

मात्रा—४ रत्ती से १ माशा तक, शहद से प्रात' सायं या आवश्यकतानुसार ।

गुण—यह योग हिक्का (हिचकी) और अत्युद्गार (डकार) दोनो के वेग को शमन कर देता है, हिचकी को दूर करने के लिये यह अचूक योग है, ऊर्ध्वगत वायु का शमन कर देता है । पांचो प्रकार की हिक्का को नष्ट करता है ।

क्षय की तृतीयावस्था—

ऊंट की हड्डी (जो ऊट मङ्गलवार को मरा हो) लेकर चन्दन की तरह घिस कर ६ माशा गधी का दूध ५ तोला मिलाकर पिलावे, यदि वमन हो जायगी तो २४ घण्टे में मृत्यु हो जायगी । यदि वमन न हुआ तो रोगी अच्छा हो जायगा, परन्तु यह दवा नित्य प्रात' ३ दिन देने के वाद वमन विरेचन (किसी औषधि द्वारा) अवश्य करा दिया जावे अन्यथा उपद्रव वढ़ जाने पर फिर किसी औषधि से शान्त न होंगे । उपद्रव—गलशोथ, कास, शूल आदि होते हैं । ७ दिन ही दवा दी जाय । यह प्रयोग पण्डित रामेश्वरदयाल द्विवेदी द्वारा प्रकाशित हुआ था पर इस योग की मैं परीक्षा नहीं कर सका क्योकि दवा का मूल द्रव्य सुलभ नहीं था इसीलिए प्रकाशित कराई है कि जिन्हें सुविधा हो, प्रयोग कर (सावधानी से) परीक्षाफल प्रगट करें जिससे संसार का भला हो । जहां तक हमारा विचार है, यह क्षय रोग की रामवाण दवा सिद्ध होगी, अतः अनुभव करें ।

वमनारि चटनी—

हरे पुदीने की पत्ती	४० नग
काली मिर्च	५ दाना
काला नमक	२ माशा
पकी हुई इमली	४ माशा

—यथा विधि चटनी वनालें ।

मात्रा—थोड़ी-थोडी मुख मे डालकर चुसावें, यह सभी प्रकार की छर्दि (वमन) रोग की रामवाण दवा है । हैजे पर भी काम करती है, वमन पर सिद्ध योग है ।

बुद्धि वर्धक—

पीपल वृक्ष की जड की छाल पानी मे घिसकर ३ से ६ माशा मिश्री मिलाकर चाटने से बुद्धि बहुत तेज हो जाती है ।

निद्राप्रद—

ब्राह्मी की पत्ती	२५ नग

—आध सेर धारोष्ण दूध मे घोटकर दें । २ सप्ताह में असाध्य अनिद्रा रोगी सुखपूर्वक निद्रा लेने लगता है ।

ब्राह्मी चूर्ण—

ब्राह्मी मुण्डी शंखपुष्पी
—तीनो १-१ तोला

त्रिफला	३ तोला
मिश्री	६ तोला

—सब मिला कर चूर्ण करले

मात्रा—६ माशा प्रात. सायं बकरी के दूध से, ४० दिन सेवन से पागलपन, मृगी, बुद्धि भङ्ग, दिमाग की कमजोरी, हाथ-पांव आखो की जलन, दिल की घबराहट, बुद्धि और मन की चचलता, स्मरणशक्ति की कमी दूर होकर भूख बढ़ती, दस्त साफ होता, पठन-पाठन में मन लगता है। यह लघु योग उत्तम लाभप्रद है, बहु-परीक्षित है, मैंने इसे १९३६ मे अनुभत योगमाला मे प्रकाशित कराया था।

योपापस्मार नाशक वटी—

केशर असली काश्मीरी — जावित्री
—दोनो ४-४ माशा

असगंध — जायफल
पीपल (गौदूध मे उबली हुई)
—तीनो १-१ माशा

अदरख ताजा — २ तोला
श्वेत पके हुए बगला पान — १० नग

—यथा विधि पीस कर २-२ रत्ती की गोली बनाले। पान के बीड़े मे रख कर १ गोली दे, दिन मे ४ समय योपापस्मार हिस्टीरिया मृगी मूर्च्छा पर अव्यर्थ योग है, २ माह सेवन कराये, पूर्ण परीक्षित हैं।

मलावरोधारि चूर्ण—

मुलेठी — सौंफ — शु गंधक
निसोथ — गुलाब के फूल
—प्रत्येक २-२ तोले

सनाय — ५ तोला
मिश्री — १० तोला

—यथा विधि कूट-पीस लें।

मात्रा—६ माशा से एक तोला गर्म दूध या गर्म जल से दें, यह कब्ज को दूर करने मे बिल्कुल निरापद, रक्त शुद्धि कर, पित्तशामक और सात्विक प्रयोग है, मृदु कोष्ठ वालो को बहुत उत्तम है।

आमवातारि चूर्ण—

सौंठ — अश्वगंध — कुटकी
निसोथ — —सम भाग

—सबका चूर्ण करे, पश्चात मिश्री सबसे आधी मिला घोट रखे।

मात्रा—६ माशा गर्म जल या गर्म दूध से, यह आम एवं वात रोगो पर सद्य फलप्रद है।

वातजशूल—

सौंठ — एरण्ड मूल
—दोनो १-१ तोला

—कूट कर आध सेर जल मे अष्टाव शेष क्वाथ बना थोड़ा नमक मिला पिलादे, इजेक्शन की तरह वातज शूल (पेट दर्द) दूर करेगा।

पित्तभंजी—

असली वंशलोचन — इलायचीदाना
जहरमोहरा खताई पिष्टी — कहरवा शमई
सतगिलोय — वर्कचांदी
—प्रत्येक समभाग

—अर्क गुलाब मे घोट ले।

मात्रा—१ से ४ रत्ती मिश्री, या आवले के मुरब्बे से पित्तज्वर के वमन, दाह, भ्रम, बैचेनी, तृषा, आदि उपद्रव तथा दिल की धड़कन, हृदय रोग बच्चो के सूखा रोग, बच्चो के सूखा रोग, दूध डालना, ज्वर की बेहोशी, एवं रक्त पित्त आदि पित्त-प्रधान रोगो पर बेखटके प्रयोग करे।

पथरी के लिए—

पपीते की जड़ — ६ माशा
जल — १ छटाक

—पीस-छान कर प्रात काल २१ दिन पीने से पथरी गल कर निकल जाती है।

स्वप्न-मेहान्तक वटी—

शुद्ध शिलाजीत — १ तोला

वंगभस्म उत्तम	८ माशा
भीमसेनी कपूर	२ माशा
सतविरोजा	१ तोला
सफेद मूसली का चूर्ण	४ तोला

—बबूल के गोंद के जल से घोट कर ४-४ रत्ती की गोली बना छाया मे सुखाले।

मात्रा—१-२ गोली, धारोष्ण मिश्रीयुक्त दूध से प्रात: सायं।

गुण—स्वप्नमेह, प्रमेह, धातुविकार, सुजाक, श्वेत-प्रदर की रामवाण महौषधि है, हमारी सैकड़ो पर परीक्षित है। हमारे यहां शक्ति सचारक वटी के नाम से प्रयुक्त होती है। यह योग प० महावीरप्रसादजी मालवीयजी का है।

वातविध्वंसनी—

शुद्ध कुचला		शुद्ध हिंगुल
जायफल	जावित्री	लवङ्ग
शु मीठा तेलिया (काला)		—समभाग

—पान के रस मे २४ घण्टे घोट कर १-१ रत्ती की गोली बनाले।

अनुपान—दूध या पान का रस और शहद, प्रातः सायं या आवश्यकतानुसार।

गुण—यह सर्व प्रकार के वात रोगो को दूर करने मे एक अनुपम महौषधि है, परीक्षित है।

अर्दित (लकवा)—

मल्लसिंदूर	५ तोला
शु. गन्धक	२ तोला

—इन दोनो को घोट ले।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती अदरक रस व शहद के साथ, प्रात. सायं।

पथ्य—गेहूँ की रोटी और बकरी का दूध। इससे उत्तम लकवे के लिए दवा हमारी जानकारी मे नहीं आई. सर्वाङ्ग लकवे के रोगी भी इससे अच्छे हुए है। यह योग पं० सुखनन्दन जी का है।

वातगज केशरी—

एक हांडी मे आध सेर धतूरे के कटे हुए फल रखदे ऊपर से आध सेर सोठ रखदे फिर आध सेर अजवाइन रखदे, फिर आध सेर धतूरे के फल कटे हुए रख कर हांडी मे गले तक जल भरदे और मन्दाग्नि से पकाये। ६ घण्टे के बाद नीचे उतार कर सोठ निकाल ले और सुखाकर चूर्ण करले, यह सोठ का चूर्ण और कालानमक एक पाव, घी की भुनी हींग आध पाव, फूला सुहागा एक पाव सबको मिलाकर सहजने (शोभाजन) की छाल के स्वरस मे अड़तालीस घण्टे घोटकर २-२ रत्ती की गोली बनाये।

मात्रा—१ से २ गोली, गरम जल अथवा अदरक रस व शहद से दें।

गुण—सभी प्रकार के वायु रोग एवं उदरशूल, प्रसूत रोग, एवं वात कफ प्रधान सभी रोगो मे इसका बेखटके प्रयोग करे। यह योग श्री त्रिवेदी जी की कल्पना है, अव्यर्थ है।

माजून लुकमान—

त्रिफला	त्रिकुटा
—प्रत्येक १–१ भाग	
अजवाइन	चौथाई भाग

—कूट-पीस ले, मधु मिला अवलेह बनाये (मधु सबसे दूना ले)।

मात्रा—१ तोला तक।

गुण—यह उदर रोग, कमर दर्द, नेत्ररोग मदाग्नि, जीर्ण ज्वर, खांसी एवं वायु विकार पर लुकमान हकीम का प्रसिद्ध योग है।

प्लीहावृद्धि हर—

कुनाइन	सेधा नमक	यवक्षार
भुना सुहागा		शुद्ध गंधक
—प्रत्येक २-२ तोला		
पीली कौड़ी साफ की हुई		१६
नीबू का स्वरस		१ सेर

—यथा विधि कांच की बरणी मे रखले। १ माह बाद प्रयोग करे। यह प्लीहावृद्धि, मलेरिया, गुल्म रोग, मंदाग्नि पर सुपरीक्षित योग है।

पुनर्नवा सीरप—

—पुनर्नवा का ताजा हरा पंचाग एक सेर ले। कूट कर ४ सेर जल मे क्वाथ करें, आधा सेर शेष रहने पर छान ले, आधा सेर शक्कर मिला चाशनी करे। शर्बत की तरह होने पर ५ तोला कल्मी शोरा पीस कर मिला दे और शीशी में रखे।

मात्रा—२॥ तोला प्रात. सायं दे। इससे मूत्र अधिक होकर शोथ रोग बहुत शीघ्र अच्छा होता है। यह 'वैद्य' मासिक से संग्रहीत, सुपरीक्षित योग है।

शोथहर सरल योग—

—एरण्ड पत्र का कपड़छान चूर्ण करे।

मात्रा—४-४ माशा गर्म जल या गर्म दूध से प्रातः साय दें। यह शोथ रोग, आमवात एव पांडु रोग को नष्ट करने मे सरल योग है धन्वन्तरि प्रथम वर्ष की फाइल से सग्रहीत है।

छर्दि (वमन) वेग रोकने के लिए—

—अरहर की दाल २ तोला लें १ छटांक जल मे भिगोदे। मसल कर एक घटे बाद छान कर यह जल पिलादें, वमन बंद करने मे यह सरल योग रामबाण का प्रभाव रखता है।

अभिघात (चोट) हर योग—

—विजयसार २ तोला कूटकर आधा सेर जल मे क्वाथ करें, दो छटांक रहने पर छान कर ६ माशा हल्दी का चूर्ण फक्का कर ऊपर से यह क्वाथ गर्म ही पिलादे। यह भीतरी चोट के लिए सुपरीक्षित अव्यर्थ योग है। धन्वन्तरि परीक्षित प्रयोगाक मे संग्रहीत है।

कृमि रोग हर—

—असली कमीला (जो स्वय संग्रह की गई हो) ३ माशा, १ तोला गुड़ मिलाकर शाम को देदे, इससे प्रात. दस्त होगा। ३ दिन देने से पेट के समस्त कृमि मर कर निकल जाते है, यदि न निकले तो ३ दिन के बाद कोई रेचक योग दे। कृमि रोग को नष्ट करने मे यह रामबाण प्रयोग है।

कामनी मदभंजन वटी—

अफीम	केशर	शुद्ध एलुआ
शु. धतूरा	शुद्ध विष	शु. कुचला
जायफल		रससिंदूर

—प्रत्येक १-१ भाग

शु. भाग (जल से धुली) ८ भाग

—यथा विधि पीसकर ताड की जड़ के रस मे घोट कर १-१ रत्ती की गोली बनाये। प्रात' सायं पान के रस व शहद से। यह स्तम्भक और अपूर्व शक्तिवर्धक है, कब्ज नहीं करती, निर्बलता को दूर करने मे अपूर्व है, उत्तम वाजीकरण औषधि है।

प्रदरारि जड़ी—

—धाय की जड़ को छाल २ माशा प्रात' सायं जल में घोटकर पिलादें। यह प्रदर रोग को नष्ट करने मे रामबाण योग है। श्री हरि प्रपन्नाचार्य बम्बई का परीक्षित योग है।

मूढ़गर्भ के लिये—

—भैस के गोबर का रस २ तोला, भैस का दूध पाव भर मे मिलादें, यह कष्ट प्रसव, एव मूढ़ गर्भ पर पर सैंकड़ो बार का परीक्षित योग।

श्री पं० गुणप्रकाश शर्मा आयुर्वेदा०

शकर औषधालय, नहटौर (बिजनौर)

"आपका जन्म गौड ब्राह्मण परिवार मे श्री प० लीलापति जी शर्मा के घर हुआ। आपकी आयु लगभग ६० वर्ष की है। आपने विभिन्न स्थानो पर विधिवत् अध्ययन कर आयुर्वेद का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त किया। आप योग्य लेखक तथा सफल-अनुभवी चिकित्सक है। आपका विचार है कि वैद्य समुदाय जब तक आपसी मतभेद त्याग कर सुदृढ सगठन न बनाएगा तब तक आयुर्वेद चिकित्सको की दशा सुधर नहीं सकती। आपके निम्न प्रयोग बहुत ही सरल किन्तु अतीव गुणप्रद हैं। पाठक लाभ उठावें।" —सम्पादक।
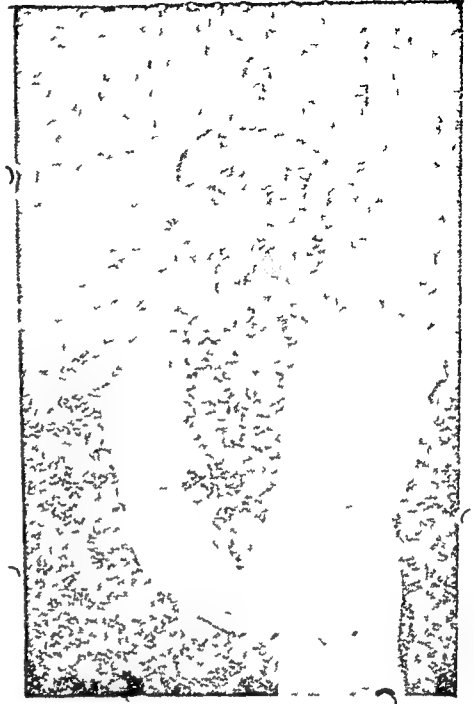
सूखी खुजली की शर्तिया दवा—

चक्रमर्द (पवांड) के बीज १ छटांक को खूब महीन पीसकर गाय के एक सेर तक्र मे तीन दिन तक भिगोए रखे। चौथे, पाचवे और छठे दिन अर्थात् तक्र मिश्रित दवा ३ दिन तक सब शरीर से उबटने की तरह मला करें और उसके बाद गरम पानी से स्नान कर लिया जाय, किंतु यह ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि स्नान के बाद नित्य धुले हुए साफ कपडे पहने जावे। ३ दिन मे खुजली निश्चय जाती रहती है।

मलेरिया पिस्तौल—

सफेदा काशगरी	१ पाव
खाने का सोडा	१ पाव
गेरू	६ माशा

—तीनों खरल करके रखलो और शीशी का मुख एक सुदृढ़ कार्क से बंद रखो।

मात्रा—४ रत्ती से २ माशे तक।

अनुपान—गरम जल, जाड़ा बुखार आने से ८ घंटे पहले से २-२ घटे बाद १-१ मात्रा देते रहो। प्रथम तो उसी दिन ज्वर (मलेरिया) नहीं आवेगा, यदि आभी जावे तो पेट साफ करके आगामी पारी पर फिर दो, तो निश्चय ही ज्वर नहीं आवेगा। हर प्रकार के मलेरिया के लिए यह रामबाण यथा नाम तथा गुण वाला प्रयोग है।

डा० श्री कृष्णदास जी प्रपन्नाश्रमी आयुर्वेदाचार्य

सर्वोदय सेवा आश्रम औषधालय, दौगवां पो० कसेरकलां (बुलन्दशहर)

"श्री प्रपन्नाश्रमी जी चिकित्सकों व लेखकों में गण्यमान व्यक्ति हैं। आपको अपने जीवन के २७-२८ वर्ष के चिकित्सा काल का अपार अनुभव प्राप्त है। सहस्रों रोगियों ने आपसे औषधि लेकर जो लाभ प्राप्त किया उसी के कारण आपको बहु-प्रशस्ति प्राप्त हुई है। आप स्त्रीरोगों के विशेषज्ञ हैं। आपकी योग्यता अगाध है। डाक्टरी में L. S. M. F. A, आयुर्वेद में आयुर्वेदाचार्य, होम्योपैथिक में *M. D. M. S.* (स्वर्णपदक प्राप्त) हैं। व्यवहारिक मनोविज्ञान शाखाओं के पूर्ण ज्ञाता, सफल चिकित्सक, ग्रन्थकार, पत्रकार, समाजसेवी, एवं रचनात्मक कार्यकर्त्ता हैं। धन्वन्तरि के पाठक आपकी लेखनी से सुपरिचित हैं, सर्वोदय सेवा आश्रम में आप चिकित्सा द्वारा सेवा करते हैं। आपके प्रयोग सभी अनुभूत और सिद्ध हैं।"

—सम्पादक।

क्षत निसूदन—

गोला का तैल	७ छटांक
जैतून का तैल	२ तोला
सौंफ का तैल (आयल एनिसी)	२० बूंद
नैपथलीन की छोटी गोली	१
सिंदूर पीली	१ माशा

—इन सबको मन्दी आंच पर पिघला कर एक जी होने के बाद मलहम बनाइए। त्रिफला के गुन-गुने काढे से पीडित स्थान को धो-पोंछ कर इस मलहम को दोनों समय लगाइए। साधारणत. सर्व प्रकार के क्षत पर इसका प्रयोग एक सप्ताह कीजिये। अवश्य लाभ होगा।

घाव का मलहम—

तिल का तैल (विशुद्ध)	१० तोले
चन्दन का तैल	२॥ तोला
जंगी हरीतकी (पीले रग वाली बड़ी) का बारीक चूर्ण	५ तोला
हिंगुल पिष्टी	आधा तोला
सुहागा का फूला	आधा तोला
जल	पाव भर

—पहले हरीतकी चूर्ण औटा कर काढ़ा बनाले (अर्धावशेष), काढ़े को छान कर उसमें अवशिष्ट वस्तु सभी डालकर मलहम बनाले। हर प्रकार की फुंसिया, फोडे और घाव जल्दी ठीक करने का विलक्षण कार्य इस मलहम द्वारा कीजिये।

दग्धक्षतारी—

गव्य घृत (गाय का घी)	हल्दी पिसी
सफेद पियाज की पिष्टी	गेहूँ की मैदा

अकरकरा चूर्ण घी गुवार का गूदा
—प्रत्येक समान भाग

—वर्तन मे दश तोले घी रख आंच पर गरम कीजिए, हल्दी की टिक्की (लुगदी सवा तोला) प्याज की पिष्टी तोला भर उसमें छोडे और धीरे-धीरे चलाते जाइये। अधभुना हो जाय तभी अन्य सभी सामग्री डालकर अच्छी तरह से हिला-चला भून ले। बाद मे पीस कर डाट वाली शीशी में सुरक्षित रखिए। सर्वविध दग्धक्षत पर इसकी बुरकी लगाने से जला हुआ घाव जल्दी ठीक हो जाता है।

शक्तिदाता रसायन—

विशोधित मल्ल (संखिया)	आधा तोला
सस्कारित उत्कृष्ट हिंगुल	सवा तोला
कुंकुम (जाफरान)	१॥ माशा
अकरकरा का चूर्ण	६ माशा

दस अण्डो का पीतांश (अंडा दस अदद ले उनमे से पीले रग की वस्तु निकाल ले)

निर्माण विधि—पहले हिंगुल व संखिया आदि को छः घंटे तक अच्छी तरह से खरल करें, बाद में अंडे की जर्दी उसमे डालकर घोटले। लकड़ी के कोयले की तेज आंच पर खूब जल्दी-जल्दी चलाते जाइए। पिघल कर जब बादामी रग जैसा तैल बन जाय तभी उतारिए। छानकर शीशी मे रखे।

सेवन विधि—सींक डुबो पान के साथ खिलाने से एक सप्ताह के अन्दर इसका प्रभाव आश्चर्य-सा प्रतीत होगा।

गुण—जननेन्द्रिय की शिथिलावस्था थोड़े समय के अन्दर ही समाप्त हो जाती है। इसके सेवन के प्रारम्भ मे रोगारोग्य समयावधि रोगी को पौष्टिक पदार्थ का भोजन घी, दूध, हलुआ, मेवे आदि का अधिक से अधिक उपयोग होना जरूरी है। यह प्रयोग कफ प्रकृति वाले मनुष्यों के लिए विशेष लाभदायक सिद्ध हुआ है। आवश्यकतानुसार इसका प्रयोग तिला के स्थान पर भी किया जा सकता है। इसके सेवन और मर्दन द्वारा नव शक्ति प्राप्त करना सम्भव होगा।

बाल-बान्धव योग—

एक बड़ा अच्छा छुआरा लेकर उसके अन्दर से बीज निकाल, उसमे—

जायफल	२ माशा
कस्तूरी	१ रत्ती
अफीम	१ माशा

अकरकरा का घनसत्व—(एक तोला जौकुट अकरकरा पाव भर जल मे मन्दी आंच पर ओटाया जावे, काढ़ा बन जायगा उस काढ़े को छान कर दुबारा आच पर चढा घनसत्व गोली के लायक बनाले) ३ माशा

—इनको उक्त छुहारे मे रखकर उसका मुंह बन्द करके 'सप्तावरण' कपड़मिट्टी यानी सात पर्दा कपड़ा चढ़ा मिट्टी का लेप लगा जङ्गली कण्डो की आंच में फूंक ले। शीतल होने पर सावधानी से फूंकी हुई भस्म निकाल मर्दनान्तर मूंग के बराबर गोलियां बनालें।

सेवन-विधि—मा के दूध में अथवा गुन-गुने पानी मे मिलाकर दोनों समय दीजिए।

गुण—बच्चों को दस्त होना, उलटी के साथ कफ आना, दन्तोद्गमन कालीन सारे उपद्रवो तथा कास, ज्वर, अनिद्रा, निर्बलता, चिड़चिड़ापन आदि पर लाभदायक यह योग प्रत्येक चिकित्सक को अपनाना चाहिए।

विद्याभास्कर श्री परमेश्वर दयाल घिल्डियाल

आयुर्वेदाचार्य बी. आइ. एम. एस.

अध्यक्ष–राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, हरचन्दपुर (रायबरेली)
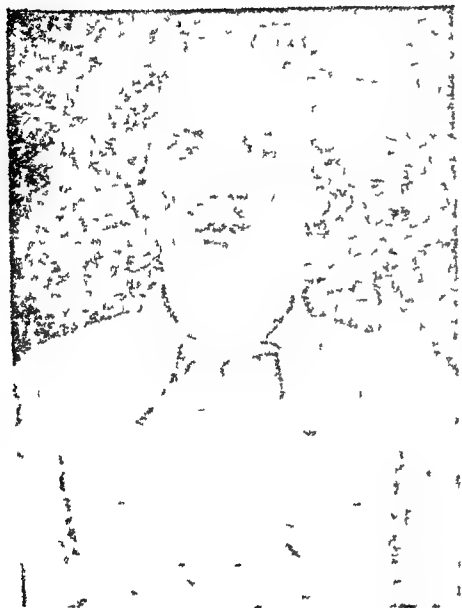
"आप गढवाल मण्डलान्तर्गत खोला–श्रीनगर निवासी हैं। आपकी शिक्षा दीक्षा ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालेज हरिद्वार में सम्पन्न हुई जिसमें आप सर्व प्रथम व चरक मे विशेष योग्यता से उत्तीर्ण हुए। सन् ५१ से राजकीय आयुर्वेदीय चिकित्सकालय मे सेवा कर रहे है। वर्तमान में आप हरचन्दपुर (रायबरेली) में प्रधान वैद्य पद पर स्थित हैं। आपको आयुर्वेद पद्धति पर अटूट श्रद्धा व विश्वास है। आप अपने को गौरव के साथ वैद्य कहाते और लिखते है। नवीन पाठ्य प्रणाली वाले अपने को डाक्टर कहते हैं उनके आप सदैव विरोधी रहे हैं। ऐसे वैद्यो से आयुर्वेद को कोई लाभ नही और उनके ज्ञान में कमी का ही द्योतक है, उनमे आत्म विश्वास की हीनता है, ऐसा आपका मत रहा है। आप य ोग चिकित्सक हैं और जनता को आयुर्वेद के द्वारा चिकित्सा लाभ पहुंचाते हैं। हमारे आग्रह पर आपने अपने अनुभव मे जो प्रयोग उत्तम पाये हैं वे धन्वन्तरि द्वारा आपको भेंट किये है। आशा है वैद्यबन्धु लाभ उ ायेंगे।"

–सम्पादक

विषमज्वर (मलेरिया बुखार) मे शुद्ध स्फटिका

हमारा अनुभव है कि मलेरिया को दूर करने में शुद्ध लाल फिटकरी जितनी लाभप्रद साबित हुई हैं उतनी शायद ही सर्व सुलभ कोई स्फुट द्रव्य हुआ हो। विषमज्वर का आक्रमण होने से २ घंटे पूर्व तक रोगी को ४-४ रत्ती की तीन मात्राऐ सम भाग मिश्री या शक्कर मिलाकर रोगाक्रमण के समय को दृष्टिगत करते हुए तीन-तीन या दो-दो घंटे बाद गरम जल से देते रहे। परिणाम यह होता है कि तीन ही मात्राए यदि कोष्ठ शुद्ध होने पर दी गई हों तो वे रोगी को रोग मुक्त कर देती है। दूसरे तीसरे दिन भी हम यही क्रम चालू रखते है। ऐसा करने से मलेरिया का बार-बार दौरा होने का भय जाता रहता है। मल विबन्ध हो तो प्रथम दिन कोष्ठ शुद्धि के लिए 'पंचसकार' या 'पट्सकार चूर्ण' की एक मात्रा गरम जल या गोदुग्ध से दें। कोष्ठ शुद्धि के उपरान्त शुद्ध लाल फिटकरी का प्रयोग करने से मलेरिया में चमत्कारिक लाभ दृष्टिगोचर होता है।

पथ्य में–दूध, साबूदाना और बार्ली देना हितकर है।

विषमज्वर की तापमानावस्था अर्थात् चढ़े हुए बुखार में जब तापमान अधिक हो जाता है तब शुद्ध लाल फिटकरी एक रत्ती, गोदन्ती भस्म २ रत्ती प्रवालपिष्टी २ रत्ती को तुलसीपत्र स्वरस तथा मधु के साथ ताप कम न होने तक यथा समय देते रहें।

हैजे की अचूक दवा—

हैजे का आक्रमण होने पर रोग की तीव्रतानुसार संजीवनी वटी दो गोली (शार्ङ्गधर संहिता) और जहरमोहरा खताई पिष्टी २ रत्ती (यूनानी योग) प्रति आधा घंटे पर सौंफ के अर्क या पोदीना अर्क या अर्काभाव में मधु से देना चाहिए। रोग की तीव्रता कम होने पर औषध देने का अन्तर बढ़ाते जाना चाहिए। रोग के तीव्र आक्रमण होने पर उपर्युक्त औषधि को १५-१५ मिनट बाद दिया जा सकता है। दिन में १२ गोलियों से अधिक संजीवनी वटी न दे। यह हमारा शतशोनुभूत योग है।

हैजे की शीतांगावस्था (Stage of Callapse) में वृ० कस्तूरीभैरव रस १ रत्ती, मकरध्वज १ रत्ती २-२ घंटे बाद या आवश्यकतानुसार मधु से दे। हाथ-पैरों में, भुनी सोंठ व भुने चने कवोष्ण कडुवे तैल की मालिश करवानी चाहिए। इससे परम लाभ होता है।

बच्चों के निमोनियां में सिद्धयोग—

रससिंदूर, शृंग्यादि चूर्ण, टंकण को बालक की आयु को दृष्टिगत करते हुए यथा मात्रा में तीन तीन घंटे बाद मधु या मातृदुग्ध से देवे तथा सुप्रसिद्ध पंचगुण तैल को कवोष्ण कर छाती पर लिनिमेंट के स्थान पर मलने से इस महा व्याधि से हमने कई बच्चों के प्राणों की रक्षा की। यह योग यथा मात्रा में वयस्कों को भी दिया जाता है। इससे रोगी की शक्ति का ह्रास नहीं होता। हृद्दौर्बल्य होने का भय जाता रहता है एवं फुफ्फुसों में कफ की विकृति नहीं होने पाती है।

सर्वांग शोथ पर अनुभूत शास्त्रीय योग—

हमने सर्वांग शोथ पीड़ित कई रोगियों को निम्न लिखित योग से रोग मुक्त किया है—

पुनर्नवादि मण्डूर	२ रत्ती
प्रवालपंचामृत	२ रत्ती
शु. नरसार	६ रत्ती

—इनकी १-१ मात्रा दिन में ३ बार पुनर्नवारिष्ट क्वाथ से रोगी को देनी चाहिए। क्वाथाभाव में ऐक्सट्रैक्ट पुनर्नवा लिक्युड चम्मच भर तथा मधु से हम रोगी को देते हैं। शोथ स्थान पर शुष्कमूलादि तैल की मालिश करवाई जाती है। रोगी को नमक खाना वर्जित कर दिया जाता है, केवल दुग्धाहार या वार्ली पथ्य में देने से रोगी कुछ दिन में ही रोग मुक्त होते पाये गये है।

सर्पदंश की अनुभूत चिकित्सा—

हमने अपने वितरक श्री रणजीत बहादुर सिंह को सर्पदंश रोगियों को निम्नलिखित सर्वसुलभ योग प्रयोग में लाकर रोग मुक्त करते देखा। इनके कथनानुसार सर्पदंश पीड़ित को द्रोणपुष्पी (गूमा) के दो वृक्षों को (पचांग सहित) तथा ११ काली मिर्चों को एक में पीस कर रोगी को पिलाया जाता है। यदि रोगी मूर्छितावस्था में है तो उपर्युक्त औषधि को नस्य के रूप में प्रयोग करे। नस्य देते समय दो-तीन आदमी उसके शिर और बदन को पकड़े रहे जिससे कि नस्य की तीव्रता के कारण रोगी छटपटा न सके। प्रथम मात्रा देने के २ घण्टे बाद फिर उर्पयुक्त मात्रा में पिलावे। रोग की तीव्रता को ध्यान में रखते हुए यदि आवश्यक हो तो तीसरी मात्रा ३ घण्टे बाद और पिलाई जा सकती है। तीन मात्राओं से ही रोगी रोग से मुक्त हो जाता है।

एक अन्य योग—स्थानीय नगर निवासी श्री रामेश्वर चौरासिया ने भी हमें एक अनुभूत योग बतलाया। हमने भी इसका तीन रोगियों पर अद्यावधि प्रयोग किया। इनमें से एक रोगी तो काल कवलित हुआ और दो बच गये।

रीठा (अरिष्टक) के फल का छिलका निकाले उसे कूट कर छान कर रखले। सर्पदंश रोगी को आधा तोला पाव भर पानी में मिला कर पिलावे। प्रथम बार पिलाने से यदि वमन न हो तो फिर आध घंटे बाद उर्पयुक्त मात्रा में दे। इससे अवश्य वमन

—शेषांश पृष्ठ १६५ पर।

श्री बद्रीप्रसाद शर्मा वैद्य भिषग्रत्न

भारत-बन्धु आयुर्वेदिक औषधालय, सूरतगढ़ (राजस्थान)

"आप सूरतगढ में गत २२ वर्षों से स्वतंत्र चिकित्सा कार्य कर रहे हैं तथा स्थानीय प्रमुख वैद्यों में आपकी गणना है। आपने आयुर्वेद विशारद एव शास्त्री की परीक्षायें उत्तीर्ण की है। भिषगरत्न परीक्षा में आपको स्वर्णपदक प्राप्त हुआ है। स्वपरिचय लिखना आप आत्मा-श्लाघा समझते है

अतएव आपके विषय में अधिक हम नही जान सके। आपसे हमारा सम्बध बहुत समय से है तथा आप धन्वन्तरि के परम प्रशसक है। आपके प्रयोग एव लेखनशैली आपको स्वय व्यक्त करने मे समर्थ हैं। पाठक, आशा है आपके प्रयोगो को सफल सिद्ध पायेंगे।" —सम्पादक।

शांतिकर—

शु हिंगुल टार्टरिक जायफल
—प्रत्येक १-१ तोला

—इन तीनों को पीस कर शीशी में सुरक्षित रक्खें।

मात्रा—२ से ४ रत्ती पूर्ण वयस्क के लिए। बच्चों को देख कर उचित मात्रा की व्यवस्था की जा सकती है।

गुण—प्रत्येक प्रकार की वमन, उत्क्लेश, अरुचि, अग्निमांद्य, आदि विकारों पर सद्यः फलप्रद है।

यकृदरि—

रेवन्द खताई कलमी शोरा
नृसार —प्रत्येक २॥-२॥ तोला

—इनको पीस कर सुरक्षित रखे। शीशी का कार्क मजबूत होना चाहिए नहीं तो वायुस्पर्श से औषध हीनवीर्य और शीघ्र ही खराब होजायेगी।

मात्रा—२ से ४ रत्ती। दिन मे तीन बार। गरम जल, अर्क काशनी, अर्क मकोय आदि किसी से भी दे सकते हैं।

भोजनोत्तर कुमारी आसव के साथ शंखद्राव भी यदि १० से १५ बूंद साथ मिलाकर देते रहे तो बड़ा ही आशुफलप्रद योग है।

गुण—यकृत वृद्धि, यकृत का आकुञ्चन, यकृत का विद्रधि रहित काठिन्य, आमाशायिक विक्षोभ, पित्तानलिकावरोध-जन्य कामला, और यकृत-विकृति जन्य अनेक उपसर्गों और ज्वरादिकों पर जो यकृत जन्य हो शीघ्र लाभ करता है।

शामक—

विशुद्ध, स्वच्छ नौसादर लेकर पीसकर रखले।

मात्रा—१ माशा। सूर्योदय से १ घण्टे पूर्व जल से दे।

गुण—सूर्यावर्त, अर्द्धावभेदक, सशूल उसी दिन शान्त हो जायेगी।

चन्द्रज्योत्स्ना—

गोदन्ती हरिताल को निम्ब स्वरस से भावित कर मध्यम पुट से भस्म करले।

मात्रा—२ से ४ रत्ती।

—शेषांश पृष्ठ १६३ पर।

वैद्याचार्य पं० राधेमोहन मिश्र आयुर्वेद केशरी

मोहन आयुर्वेदिक भण्डार चौक बाजार, बहिराइच (उ प्र०)

"आपका जन्म २५ नवम्बर सन् १६१५ ई० में बहराइच नगर मे हुआ। नि० भा० आयुर्वेद महामण्डल विद्यापीठ से वैद्याचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। झासी वैद्यसम्मेलन से "आयुर्वेद केशरी" की उपाधि मिली, आप गत १५ वर्ष से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं, साथ ही स्थानीय नव निर्माण' पाक्षिक पत्रिका के सम्पादक तथा विभिन्न प्रसिद्ध दैनिक पत्रो के बहराइच के प्रेम-प्रतिनिधि भी हैं। जिला वैद्य सभा एव राजर्षि पुस्तकालय के सयुक्त मत्री और जिलापत्रकार सघ के महामत्री हैं।

—सम्पादक।

प्रदरान्तक चूर्ण—

करंज के बीज की मगज	५ तोला
राल	२॥ तोला
अनार के फूल की कली सूखी	२ तोला
कुड़ाकी छाल	२॥ तोला
श्वेत चन्दन का बुरादा	२ तोला
नागकेशर	२॥ तोला
शीतलचीनी	२ तोला
सूखे आवले	५ तोला
हरड़ का चूर्ण	२॥ तोला
लोध	२॥ तोला

—इन सबको कूट कर कपड़े से छान लेना चाहिए। सूखे अंजीर को सन्ध्या मे भिगोकर सवेरे उनको मसल कर उस पानी को छानकर उसकी सात भावना देनी चाहिए, उसके पश्चात् मुनक्का का क्वाथ बनाकर उसकी सात भावना देनी चाहिए। जब चूर्ण सूख जाय तब उसमें—

वशलोचन सोना गेरू शङ्ख जराहत
प्रत्येक २-२ तोला

—इन सब चीजो का चूर्ण मिलाकर बोतल मे भर कर रख देना चाहिए।

मात्रा—प्रतिदिन ६ ६ माशे चूर्ण दोनो समय लेना चाहिए।

गुण—सब प्रकार के प्रदर रोगों मे चमत्कारिक लाभ होता है।

मण्डूर वटी—

पांच तोले मण्डूर भस्म को अदरक के रसमे पत्थर के खरल मे इतना घोटे कि खरल गारे चिकनाई से जमीन से उठ जाय। नींबू का रस डाल कर भी खरल उठने परियन्त उसे घोटे। उसके पश्चात्—

पीपलामूल पीपल चव्य
चित्रक सोंठ —प्रत्येक ५-५ तोला

काली मिर्च	३० तोला

—लेकर कूटकर कपड़छान करके डालदे। इस साठ तोले औषधि को अनारदाने के रस के साथ घोटे। दो-तीन दिन घोटकर चने के समान गोलियां बनाले।

गुण-मात्रा—प्रतिदिन १-१ गोली प्रात. सायं सेवन करने से भूख लगती है। कास मे भी लाभकारी है।

प्रसूति ज्वर नाशक क्वाथ—

ज्वरांकुश रस	६ माशा
खाकसीर	६ माशा
मुनक्का	१ तोला
बरियारे की जड़	३ तोला
नीम की गिलोय	३ तोला
भटकटैया की जड़	२ तोला

—इनको लेकर आधा सेर जल मे पकाये। चौथाई रहने पर छानकर शहद मिलाकर प्रात सायं पिये। यह दो मात्रा क्वाथ है।

प्रतिश्याय हर योग—

तुलसी का रस	६ माशा
लहसुन रस	६ माशा
सोंठ चूर्ण	२ तोला
काली मिर्च	१ माशा

—गर्म दूध आध पाव के साथ प्रात साय सेवन करे तो एक दिन मे आश्चर्यजनक गुण दिखाई देता है।

रक्तगुल्म व गोला की परीक्षित दवा—

मुंडी मिश्री रेवन्दचीनी

—प्रत्येक ५ ५ तोला

—सब मिला कर चूर्ण करे।

मात्रा—१-१ तोला प्रात. सायं जल के साथ ले।

गुण—देखने मे यह योग साधारण ज्ञात होता है किन्तु गुण मे अधिक है। यह योग एक ग्राम के वयोवृद्ध वैद्य द्वारा ज्ञात हुआ था।

:: पृष्ठ १६१ का शेषांश ::

गुण—नक्तान्ध यानी रात्रि में न दीखने मे एक चमत्कारी योग है।

अनुपान—गुवार नामक धान्य जो पशुओं विशेष कर गऊओं और भैंसों को खिलाया जाता है उसके पत्तो के रस मे २॥ से ५ तोला की मात्रायें दें। यदि हरा न मिल सके तो उसकी फलिये जो सुखा कर शाक बनाने के लिये व्यवहृत होती हैं उनको उबाल कर उस रस मे देवे। दो दिन मे चमत्कार दिखा कर रोग शान्त हो जाता है।

शूलारि—

अर्क मूलत्वक् अहिफेन

—प्रत्येक ४-४ माशा

शोरा कलमी	१ तोला

—इन तीनो को पीस कर व्यवहार मे लाये।

गुण—प्रत्येक शूल पर जो छाती से सम्बन्ध रखता हो, हृच्छूल, पार्श्वशूल, वृक्कशूल श्वसनक ज्वर के भयकर शूल मे उसी क्षण शान्तिप्रदान कर श्वास काठिन्य और वेदना को निर्मूल कर देता है।

मात्रा—२ से ४ रत्ती बलाबल देखकर व्यवहार मे लाये।

अनुपान—उष्णजल, या किसी उचित क्वाथ या चाय से किसी भी प्रकार से औषधि अन्दर जानी चाहिये।

श्री वैद्य विद्याप्रकाश शर्मा

विशारद

मिहींपुरवा (बहिराइच)

—०—

"श्री वर्मा जी की आयु ३७ वर्ष हैं तथा आप १७ वर्ष से सफलतापूर्वक चिकित्सा कार्य कर रहे है। सार्वजनिक कार्यो में भी आपका महत्वपूर्ण योग रहना है। आप मिहींपुरवा कांग्रेस कमेटी के विशेष उत्साही कार्यकर्ता हैं। आपके ही विशेष परिश्रम के फल स्वरूप गांधीभवन, पंचायत भवन तथा माध्यमिक विद्यालय भवन आदि का निर्माण हुआ। आप स्थानीय पंचायती अदालत के आदर्श सरपंच हैं। आपके प्रयोग सरल और शीघ्र लाभप्रद है।"

—सम्पादक।

उपदंशनाशक मरहम—

शिंगरफ	१ भाग
कपूर देशी	२ भाग
कत्था	४ भाग
गाय का मक्खन नीम के पानी से १०० बार धुला हुआ	१६ भाग

—उक्त औषधियों को अलग-अलग वस्त्रपूत करके धुले हुए मक्खन मे मिला डिबियों मे रख ले।

प्रयोग विधि—नीम, त्रिफला का पानी अथवा नीम या लाइफबॉय साबुन से व्रण को धोकर दिन मे तीन-चार बार लगाया जाय।

गुण—गर्मी के घाव, फुसिया, खाज, जले हुए घाव आदि अच्छे हो जाते है।

खाज का मरहम—

गन्धक पिसा हुआ	१ भाग
बोरिक एसिड	२ भाग
फिटकरी	½ भाग
कपूर देशी	½ भाग
मोम	४ भाग
सरसो का तैल	८ भाग

—पहिले मोम को तैल मे गर्म करके गला लेवे बाद मे उक्त औषधियों को बारीक करके उसी मे घोट कर मिला दे और शीशे के डिब्बा मे रख ले।

गुण—सभी तरह की खाज अच्छी हो जाती है, साधारण दाद, अकौता मे भी लाभ करता है।

कासारि वटी—

अपामार्ग क्षार	१ भाग
छोटी इलायची	१ भाग
कपूर देशी	२ भाग
कत्था	८ भाग
बबूल की छाल	६४ भाग

—बबूल की छाल को आठ गुने पानी मे औटावे जब चौथाई से भी कम रह जाय तब छानकर पुन. एक कढ़ाई मे रखकर मन्द आंच से औटावें जब गाढ़ा होने लगे तो उसी मे उक्त औषधियो को बारीक करके डाल दें और जब गोली बनाने लायक हो जाय तब उतार ले। कपूर को गोली बनाते समय डालना चाहिए बारीक पिसी हुई सेलखडी को लगाकर बडे मटर के समान गोली बनाकर छाया मे सुखा ले।

मात्रा—दिन मे ८-१० गोली चूसना चाहिए।

गुण—सभी तरह की खांसी प्राय' सूखी खांसी क्षय की कास तथा रक्त करते हुए खांसी मे लाभ करती है।

खांसी की अचूक दवा—

शरबत रूसा	१ पाव
शहद	१ पाव
पिपरमेंट	६ माशा
कपूर देशी	६ माशा
जवाखार	१ तोला

—सभी औषधियो को मिलाकर एक दिल करले।

मात्रा—½ तोला से १ तोला तक दूना पानी मिलाकर दिन मे तीन चार बार ले।

गुण—इससे सभी तरह की खांसी मे पूर्ण लाभ होता है।

शरबत रूसा बनाने की विधि—अडूसा (वांसा) का पंचाग लेकर अठगुने पानी मे औटावे जब आठवां भाग शेष रहे उतार कर छान लेवे और बराबर की मिश्री मिलाकर पनले तार की चाशनी आने पर उतार ले। कपूर को रेक्टीफाइड स्प्रिट मे गलाकर डालना चाहिए।

पृष्ठ १९० का शेषांश

होकर विष का निर्हरण हो जायगा। यदि रोगी मूर्छित अवस्था मे हो तो आधा तोला औषधि लेकर उसके दांतो मे रगड़ देना चाहिए। यदि पर्याप्त मात्रा मे वमन न हो कर विष का पूर्ण निर्हरण न हुआ जान पडे तो दो घंटे बाद तीसरी मात्रा देनी चाहिए। तदनन्तर छटाक भर गोघृत का पान कराना चाहिए। इससे वमनजन्य रूक्षता एवं अन्य उपद्रव शांत हो कर रोगी स्वस्थ होजाता है। इस योग को हमने कई भांग के नशे मे चूर व्यक्तियो को देकर भंग के नशे से रोगियो को रोग मुक्त किया है।

उपर्युक्त व्याधियो मे इसका प्रयोग शास्त्र सम्मत है। निघंटु मे रीठा के गुणो मे "वमनाद्विपनाशनम्" का हमे स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

घरेलू दवाएँ

[संकलित]

दाद पर—पीली कौड़ी, पारा, गन्धक इन तीनो को बराबर बराबर लेकर खरल मे खूब पीसे। जब बारीक हो जाय तब दाद पर नीबू का रस लगा कर दवाई को मले। दाद की जड़ तक भी जाती रहेगी।

कान में पीडा होने पर—१—तुलसी के पत्तों का गुनगुना रस डाले।

२—सुदर्शन के सेके हुए पत्ते का रस डालें।

आंख दुखने पर—त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आंवला) पोस्त के डोडे इनको रात मे भिगोकर प्रात काल उस पानी से प्रतिदिन आंखे धोने से आंखो का दुखना आराम होता है और कभी-कभी धोते रहने से आंखे कभी नहीं दुखतीं।

कम सुनाई देने पर—मूली की जड का रस गर्म कर सुहाता हुआ कान मे डाले। शीघ्र आराम होता है।

वैद्यराज पं० पूर्णानन्द व्यास आयुर्वेदाचार्य

आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी, सुजलाना (मध्यभारत)

"आपके पिता वैद्यभूषण प० श्यामलाल जी व्यास, इस समय भी आयुर्वेद पद्धति द्वारा पीडित-जन की सेवा मे सलग्न हैं। योग्य चिकित्सक पिता के पुत्र मे जन्मजात सस्कार होने के कारण आप भी योग्य चिकित्सक है। आपने नि भा०' विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य, हिन्दी साहित्य सम्मेलन की आयुर्वेदरत्न एव महामण्डल बनारस की आयुर्वेदाचार्य तथा अन्य अनेक परीक्षायें उत्तीर्ण की है। आयुर्वेद के अतिरिक्त आपने सस्कृत, काव्य, धर्म, वेद आदि की परीक्षायें भी दी है। गत ६ वर्षों से शासकीय औषधालय सुजलाना मे प्रधान चिकित्सक पद पर कार्य कर रहे है। आपके निम्न चारो प्रयोग बहुत ही सरल, सस्ते-किन्तु अत्युपयोगी प्रतीत होते हैं। पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

वातहर भस्म—

अशुद्ध कुचला	१० नग
अच्छी लहसुन की साफ कली	१० नग

निर्माण विधि—उपरोक्त दोनो वस्तुओ को पृथक्-पृथक् अच्छे उपलों के अंगारो पर रख कर जला देवे। अच्छी तरह जल कर जब कोयला बन जावे तब चिमटे से पकड़ कर एक-एक करके उतार लेवें। जलाते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि निर्माण क्रिया खुले मैदान मे होनी चाहिए व उससे निकलने वाले धुऐ से अपने शरीर को बचाते रहना चाहिये अन्यथा शोथ, कंडु आदि उपद्रव हो जाते हैं। खुली जगह मे निर्माण करने से धुआं एकत्र नहीं होता। घर मे धुआं रुक कर श्वास द्वारा शरीर मे जाकर हानि पहुँचाता है। जब उक्त औषधि के कोयले ठंडे हो जावे तब देख लें कच्चे तो नहीं है। अच्छे जल जाने पर खरल मे पीस कर साफ शीशी में भर लेवे।

मात्रा—½ रत्ती से १ रत्ती तक।

उपयोग—उपरोक्त भस्म अवस्था के अनुसार मात्रा में शहद के साथ दिन मे दो या तीन बार चटावे।

गुण—इसके सेवन से समस्त ८० प्रकार की वात व्याधियो मे लाभ होता है। वात से होने वाले दर्द तो इस औषधि के सेवन से बहुत जल्द दूर हो जाते हैं। बच्चे को होने वाले "हव्वा-डव्वा" रोग मे इसके सेवन से आशातीत लाभ होता है। पार्श्वशूल पर शृंगभस्म के साथ सेवन करने से बहुत लाभप्रद है।

कुक्कर कास हर—

बादाम की गिरी	३ कली
काली मिर्च	१ नग
मिश्री	१॥ माशा

निर्माण—बादाम की गिरी को पानी मे डाल कर पत्थर पर अच्छी तरह घोटे, बाद मे क्रमशः काली मिर्च व मिश्री डालकर घोटे।

उपयोग—तैयार लुगदी की गोली मुंह मे रखकर इसे दिन मे चार बार प्रयोग करे। सूखी खासी मे बहुत लाभ होता है।

प्रवाहिका नाशक चूर्ण—

शतपुष्पा (सौंफ)	५ तोला
सूखा धनियां	२।। तोला
विल्व का गूदा	१। तोला
विजया (भंग) धोकर सुखाई हुई	१। तोला
मोचरस	१ तोला
सुण्ठी	२ तोला
कुटजत्वक्	१ तोला
जायफल	१ तोला

निर्माण विधि—कुटज अतर छाल एवं जायफल का कपड़छान चूर्ण बनाकर अलग रख लेवे, शेष औषधियो को टुकड़े कर लोहे की कढ़ाई मे डाल कर भून ले। जब सोंफ की सुगन्ध आने लगे तब उतार लें व कूटकर कपडे मे छान ले। जायफल व कुटजत्वक का चूर्ण मिला देवे और शीशी मे भर कर रखले।

उपयोग—उपरोक्त चूर्ण प्रवाहिका रोग में बहुत उत्तम कार्य करता है। इस औषधि का प्रभाव इमेटीन के इन्जेक्शन के समान जल्दी ही हो जाता है।

मात्रा—१।। माशा से ३ माशा तक। अवस्थानुसार एवं समयानुसार चार या पाच बार तक के साथ सेवन कराने से आशा से भी अधिक व स्थायी लाभ होता है।

दर्द नाशक मलहम—

उत्तम साबुन कपूर तारपीन का तैल

निर्माण—साबुन सनलाईट लेवे व चाकू से बारीक बारीक फूल जैसे छिलके उतारे इस प्रकार ५ तोला साबुन लेवे व खरल अच्छा संगमरमर का लेवे उसमे साबन डाल कर आईल टरपेन्टाइन (तारपीन का तैल) आवश्यकतानुसार डाल कर घुटाई करे ज्यो-ज्यों द्रवत्व सूखे तब और भी तारपीन का तैल डाल कर घुटाई करे। घोटते-घोटते साबुन का पूर्ण अंश तारपीन के तेल मे मिला कर मलहम का रूप बन जाना चाहिये। जब तक पूर्ण रूप से साबुन का विलय न हो तब तक तारपीन का तैल डालकर घोटे, पूर्ण विलय होने पर एक तोला कपूर डाल कर पुन. घुटाई करे। शीशी मे भरकर रख लेवे।

उपयोग—शरीर के किसी भाग मे जहां दर्द हो रहा हो थोड़ा सा लगा कर अच्छी तरह मालिश कर दीजिये व कुछ सेक कर देवे कैसा भी दर्द हो तुरन्त बन्द हो जावेगा। श्वसनक ज्वर मे पसलियो पर लगाना बहुत लाभप्रद है। साधारण दर्द हो तो केवल लगाकर मालिश कर धूप मे बैठे। यह गुप्त प्रयोग जनता जनार्दन के लाभार्थ प्रसारित करता हूँ।

:: पृष्ठ १६८ का शेषांश ::

गुण—इसके प्रयोग करते-करते मूत्र परीक्षा कराते रहे, शक्कर की कमी होने पर एक वार ही दे। हमारा यह खास प्रयोग है।

संग्रहणी—

कुड़ा की छाल	१६ तोले
छोटी इलायची के दाने	वंशलोचन
शीतलचीनी	लोहभस्म

—प्रत्येक १-१ तोला

—सबको कूट छान बारीक करके चूर्ण बनाकर रखे।

मात्रा—२ माशा।

पथ्य—जब भी भूख लगे दही ही खाने को दे। बहुत मन करने पर मूंग की दाल चावल की खिचड़ी कम मात्रा मे दही के साथ दे सकते है। दही ही पथ्य है।

वैद्य सत्यपाल गुप्ता आयुर्वेद भास्कर

जगरांव (लुधियाना)

—०—

"श्री गुप्ता जी योग्य एव उत्साही व्यक्ति हैं। आपने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करके गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से आयुर्वेद भास्कर की उपाधि प्राप्त की है। आपके परिवार में बहुत समय से चिकित्सा व्यवसाय होता रहा है। आप मालवा आयुर्वेद मण्डल के प्रधान मत्री हैं तथा प्रान्तीय आयुर्वेद सम्मेलन की कार्यकारिणी के सदस्य हैं। आपने अपनी गुप्त प्रयोगो की नोटबुक से ४ उत्तम प्रयोग प्रकाशनार्थ भेजे हैं। पाठक लाभ उठवें।"

—सम्पादक।

कुक्करकासहर योग (काली खांसी)—

गोदन्ती हरताल भस्म	१ तोला
पुठकडा (अपामार्ग) भस्म	१ तोला
सुहागा भुना हुआ	१ तोला
काकडासिंगी	१ तोला
लोवान	१ तोला

—कूटने वाली चीजो को कूटकर सबको कपड़छान करके मिलाकर रख ले।

मात्रा—२ रत्ती, मधु मिलाकर दिन मे तीन वार।

गुण—कुकर खासी के लिए लाभप्रद प्रमाणित है।

ज्वर भस्म—

कुटकी	६ तोले

नृसार भुना सुहागा फिटकरी भुनी —प्रत्येक १-१ तोला

कलमी शोरा	२ तोला

—सबको पृथक्-पृथक् कूट-छान कर मिलाले, और एक दिन खरल करे। अच्छी डाट वाली शीशी मे रखें।

मात्रा—६ रत्ती से १½ माशे तक ताजा पानी से दे।

गुण—साधारण ज्वर, खासकर विषमज्वर की हर अवस्था मे लाभदायक है। चढे ज्वर मे देने से ज्वर उतर जाता है। ज्वर चढ़ने से पहले देने से ज्वर को रोकता है।

मधुमेह—

(पेशाव मे शक्कर आना मूत्र का वार-वार आना)

गिलोय का चूर्ण	२ तोले
जामुन की गिरी	२ तोले
वङ्ग भस्म उत्तम	३ माशे
प्रवाल भस्म	३ माशे
मुक्ताशुक्ति भस्म	३ माशे

गुलाव पुष्प गुलानार
गिलेअरमनी खसखस खुरफा
मुलेहठी काचूर्ण गाजवा गुलगोजिह्वा
—प्रत्येक १-१ तोला

गुड़मार चूर्ण	२ तोला
गोंदकीकर	१ तोला
गोंद कतीरा	१ तोला
काहू	१ तोला
अफीम (अहिफेन)	४ माशा

—सबको पृथक्-पृथक् रगड कर भस्मे मिलाकर रखे।

मात्रा—२½ माशा प्रातः सायं जल से।

अपथ्य—खाड वाली चीजे, मीठी वाली चीजें न ले।

—शेषांश पृष्ठ १६७ पर।

वैद्यशिरोमणि श्री लक्ष्मीचन्द

जमौरिया

प्र चिकित्सक—श्री परमार्थ जैन औषधालय, नसीराबाद (अजमेर)

"अपने पिता जी श्री मुन्नालाल जी तान्त्रिक तथा वद्यराज श्री रामप्रसाद जी शास्त्री की प्रेरणा से आयुर्वेद पढकर अपने मामा श्री सिद्धसागर जी प्राणाचार्य ललितपुर के पास आपने चिकित्सा का सक्रिय ज्ञान प्राप्त किया। आप सार्वजनिक कार्यो मे भाग लेते रहते हैं। नसीराबाद में वैद्य सभा के आप मुख्य मत्री हैं अन्य कई सस्थाओ के मत्री तथा उपप्रधान रहे हैं। नसीराबाद की जनता ने आपको प्राणाचार्य की उपाधि प्रदान की है आपके सभी योग स्वानुभूत हैं जो सैकडो रोगियो पर सफलतापूर्वक प्रयोग किये जा चुके हैं।"

—सम्पादक।
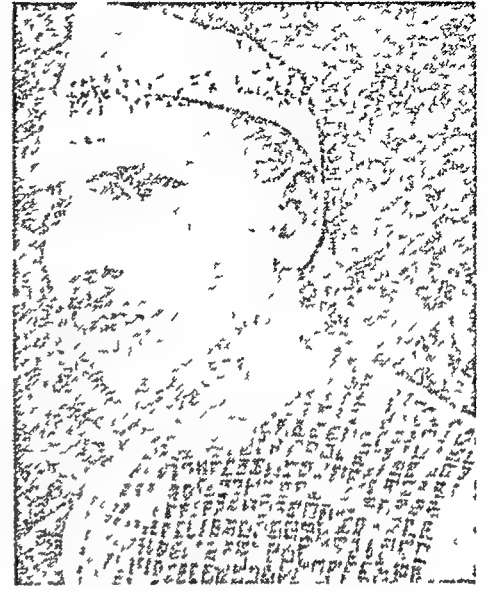
नवरत्नी दवाएउलमुश्क—

द्रव्य नं० १

सोंठ काली मिर्च पीपर छोटी
पीपरामूल —प्रत्येक १०॥-१०॥ मा.
वालछड़ ७॥ माशा
लौंग १३॥ माशा
जायफल ४॥ माशा
अकरकरा चन्दन सफेद
बहमन लाल बहमन सफेद गाजवां
दालचीनी खुरपा बीज तेजपात
गुलाब फूल रूमी मस्तङ्गी छरीला
नरकचूर —प्रत्येक १-१ तोला
आवरेशम २ तोला
गुलगाजवा १॥ तोला

द्रव्य नं० २

प्रवाल शाखा मोती सोनावर्क
—प्रत्येक १-१ तोला
कस्तूरी चांदी के वर्क अकीक
जहरमोहरा कहरवा केशर
सगयसव इलायची दाना
—प्रत्येक २-२ तोला
अम्बर पन्ना पुखराज माणिक
—प्रत्येक ६-६ माशा
वंशलोचन असली ५ तोला
अर्क वेदमुश्क गुलाब जल
—प्रत्येक १-१ बोतल

बनाने की विधि—द्रव्य नं० २ की सभी वस्तुएं गुलावजल, अर्क वेदमुश्क मे घोटे (पिष्टी बना लेना चाहिए)।

द्रव्य नं० १ की सभी वस्तुएं अठगुने पानी मे भिगोकर क्वाथ करे, चौथाई रहने पर मसल कर छान लेवे। उसमे नं० २ की पिष्टी की हुई पुनः घोटे जब द्रव गाढ़ा हो जावे। उस समय ३॥ सेर शहद लेकर अग्नि पर गर्म करे। एक जोश आने पर उतार लेवे। उसमें उपरोक्त दवाऐं मिलाकर खूब घोटे। ठडा हो जाने पर अभ्रक भस्म १ तोला लौह-भस्म १ तोला और मिलाकर इमर्तवान मे रख देवे।

गुण—यह दवा दिल, दिमाग, फेफड़ा, अतड़ी, यकृत की निर्बलता मे, वायुविकार, सन्निपात, शीताग, निमोनिया, गन्थरज्वर, हैजा, प्लेग, मूर्च्छा उन्माद, नाड़ी-क्षीणता, अशक्ति में आश्चर्य-

जनक लाभ करती है ।

अनुपान—१-१ रत्ती दवा, सुबह शाम दूध चाय मुनक्का, ग्लोकोज आदि मे घोलकर लेवें या चाटकर ऊपर से पेय पदार्थ पीवे ।

विशेष—मथरज्वर मे जब रोगी अशक्त हो जाता है भयङ्कर प्रलाप करने मे लगता है, किसी भी औषधि से फायदा नहीं दिखाई देता है उस समय इसके देने से आश्चर्यजनक लाभ होता है। भयङ्कर उन्मादी पागल रोगियो पर यह जादू जैसा असर करती है। मरणासन्न रोगी को पुन जीवन देने की शक्ति रखती है। निमोनियां सन्निपात जैसे भयङ्कर रोगियों पर तो ग्रामवासी वगैर चिकित्सक के दिवालमुश्क की सहायता से विजय प्राप्त करते रहते हैं। वातज हृद्रोग, दिल की धड़कन घबराहट को लगे हाथ बन्द करती है। आमाशय के दोषो को दूर कर पाचन-शक्ति बढ़ाती है। रोग के बाद की निर्बलता मे शरीर शीघ्र ही हृष्ट-पुष्ट बलशाली चमकदार बन जाता है। नया खून बनकर चेहरा कान्तिमय हो जाता है। स्तम्भक और कामोत्तेजक भी है।

वातनाशक तैल—

यह प्रयोग एक ऐसे विद्वान द्वारा प्राप्त हुआ था जिनका जीवन देशाटन में ही पूर्ण हो रहा है। इसे उनके कहने से बनाया जो अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुआ है। वर्षो से अपने रोगियों को दे रहे हैं और वातज भयङ्कर वेदना मे लाभ उठा रहे है।

पारा गधक मेनशिल
हरताल —प्रत्येक १-१ तोला

—सभी चीजे अशुद्ध हो। पारा-गधक कीक जली बनावे। सब चीजो को लोहे की कडाही मे एक सेर सरसो का तैल डालकर पकावे। खर-पाक हो जाने पर छान लेवे। बाद मे ६ माशा अफीम और २॥ तोला कपूर मिलाकर बोतल मे रख देवे।

गुण—यह तैल हर प्रकार के वायु दर्द, निमोनियां, पसली छाती दर्द पर लाभ करता है।

सुगठी पुटपाक गुटिका—

निर्माण विधि—१ सेर सोठ बढिया पीसकर उसमें एरड मूल रस की भावना देवें-तत्पश्चात भावित द्रव्य का गोला बनाकर ऊपर एरड के पत्ते लपेट कर कपरोटी कर देवे। ५ सेर उपलों मे रख सेके। (सिकने से मतलब है अन्दर की दवा जले नहीं बाटियों की तरह सिक जावें) अग्नि समशीतल होने पर गोला निकाल कर फोड़कर झरबेरी के बराबर गोली बनावे।

अनुपान मात्रा—छोटे को १ गोली बडे को २ गोली दिन मे तीन बार ठडे पानी या छाछ (तक्र से लेवे।

गुण—आमातिसार, मरोड़, उदरपीड़ा, वायुगुल्म, शूल, मन्दाग्नि पर अत्यन्त लाभकारी है।

अनन्त अभया—

छोटी (जवा) हर्र १ सेर

निर्माण विधि—गौमूत्र २ सेर मे भिगो देवे। १५ दिन तक भीगी रहे। गौमूत्र रोजाना सुबह का सुबह बदल दिया करे। १५ दिन पूरे होने पर हर्र को छाया मे सुखा लेवे। सूखने पर पीस छानकर शीशी मे सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—३-३ माशा सुबह शाम-रोगानुसार ठडे या गर्म जल से लेवे।

गुण—उदर सम्बन्धी तमाम बीमारियो को दूर कर आमाशय को बलवान बनाती है। रक्तविकार रक्तचाप, वायुविकार पर लाभ करती है तथा मेद को हल्का करती है।

प्लीहारि रसायन—

कालानमक १ सेर

निर्माण विधि—अनन्त अभया मे से निकाला हुआ गौमूत्र मिट्टी के बर्तन मे डालकर उसमे नमक डाल धूप मे सुखावे-१५ दिन का गौमूत्र डाल

देवे। सूखने पर अर्क दुग्ध की एक भावना देकर गजपुट में फूंक देवें। शीतल होने पर पीस कर शीशी में रख लेवे।

मात्रा—३ रत्ती से १ माशा तक।

अनुपान—

यकृत-प्लीहा वृद्धि में-गुड़, गौमूत्र या गर्म पानी के साथ।

उदर शूल में—कोरे पान में रख कर चबावे, ऊपर से गर्म पानी पीवें।

अग्नि मांद्य, अरुचि, पेट का भारीपन, जी मिचलाने में-नीबू के साथ।

अजीर्ण में—दस्त साफ लाने को गुलकन्द या हरड़ छोटी के साथ।

मन्थरज्वर में—पीपर छोटी मिलाकर पानी के साथ इसके अलावा पेट सम्बन्धी सभी भयङ्कर वेदनाओं में गर्म पानी से दे सकते है। अत्यन्त गुणकारी औषधि है।

कामदुधा रसायन—

गेरू लाल	१ सेर

निर्माण विधि—आंवला रस, शतावरी रस, बकरी दूध, रसौत व केले की ७-७ भावना देकर छाया में सुखाते जावे। अन्तिम भावना के बाद सुखा पीसकर रख लेवे।

मात्रा—१-१ माशा दिन में ३ वार बकरी या गाय के दूध से देना चाहिए।

गुण—रक्तातिसार, रक्तपित्त, क्षय, खूनी ववासीर, नक्सीर और रक्तप्रदर पर जादू सा असर करती है। महीनों का जाने वाला रक्तप्रदर २-३ दिन में बन्द होते देखा गया है।

हृदयवल्लभ चूर्ण—

अर्जुन छाल	१ सेर
वंशलोचन	१ पाव
इलायची छोटी	२॥ तोला
जहरमुहरा पिष्टी	२॥ तोला

—सबको कूट-कपड़छान चूर्ण कर लेवे।

मात्रा—सुबह शाम ३-३ माशा दवा खमीरा गाजवा या दूध से लेवे।

गुण—हृद्वेदना, घबराहट, उन्माद, गर्मी, पागलपन श्वेतप्रदर पर लाभ करता है।

शक्ति संजीवन टानिक—

पलास (ढाक, टेसू, छेवला, केसुडिया) के पेड़ की जड का रस	१ पाव
शिलाजीत शुद्ध	१ छटाक
केशर	१ तोला
कस्तूरी	३ माशा
अफीम शुद्ध	३ माशा

निर्माण विधि—पलास के बड़े पेड़ के पास से जड के पास की मिट्टी खोदे, जड निकल आने पर उस जड को इस नाप से काटे कि पेड में लगी हुई जड शीशी में कार्क (ढक्कन) की तरह लग जावे-शीशी जड में लगाकर गढ्ढे में रख देवे। ऊपर से मिट्टी ढक देवे। १ हफ्ते बाद शीशी निकाल लेवे। जितना अर्क निकले उपरोक्त परिमाण से शेष औषधिया पीसकर मिला देवे।

मात्रा—पूरी उम्र वालो को १५-१५ बूंद, मलाई, पान से रोगानुसार दिन में दो बार देवे।

गुण—नपुंसकता, अशक्ति, रक्ताल्पता, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, मधुमेह, दमा, श्वास, वायुविकार, प्रतिश्याय पर लाभकारी महौषधि है। इन्द्री शिथिलता के लिए ५ बूंद पान में रखकर खावें तथा ५ बूंद दालचीनी के तैल में मिलाकर इन्द्री पर मालिश करे। दमा वाले रोगी को कोरे पान में ५-५ बूंद दवा रात्रि में २ बार देवे। सरसों के तैल में कुछ बूंदे मिलाकर सीने पर मालिश करे। कमजोरी वीर्यस्तम्भन धातुदोष के लिए दवा दूध या मलाई से लेवे।

परहेज—तैल, खटाई, लाल मिर्च, अधिक गर्म चीजें न लेवे। घी दूध ज्यादा सेवन करे।

आयुर्वेदाचार्य कविराज श्री धीरेन्द्रमोहन भट्ट G A M S.

चिकित्सक–राजकीय जनपद औषधालय, बतौली, पो० सरगुजा (मध्य प्रदेश)
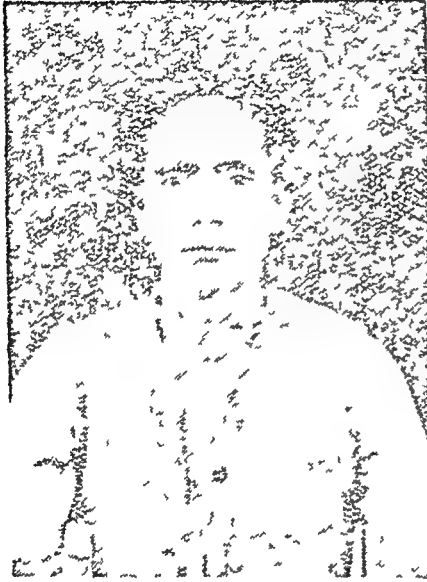
'आपके पिता जी एक योग्य चिकित्सक हैं जो सम्प्रति पटना मे चिकित्सा कार्य करते है अत भट्ट जी योग्य पिता की योग्य सन्तान है। आपका चिकित्सा कार्य वशपरम्परागत है। आप विहार सरकार की जी ए एम एस परीक्षा उत्तीर्ण है। वाद मे विहार गवर्नमेट सस्कृत एसोशियेशन से आयुर्वेदाचार्य उपाधि प्राप्त की है।

आपने राष्ट्रीय कांग्रेस मे सक्रिय भाग लिया किन्तु मतभेद के कारण उससे त्यागपत्र देकर किसान मजदूर प्रजापार्टी दरभगा में जिला मत्री रहे। आपको सार्वजनिक कार्यक्रम सदैव से रुचता है। आपने छात्रो से सम्बन्धित सभी सस्थाओ में विहार की ओर से कुछ न कुछ कार्य किया। आप चिकित्सा व्यवसाय मे मुख्यत सन् ५३ से पड़े है और निरन्तर उत्तरोत्तर वृद्धि समुन्नति की ओर जारहे हैं। आपको प्रारम्भ से ही पत्रकारिता का व्यसन रहा है, पूर्ण लेख लिखने मे सिद्धहस्त है। इस समय आप राजकीय किकित्सलय मे प्रधान वैद्य है। पाठक भट्ट जी के प्रयोग देखें बनावें और लाभ उठावें।" —सम्पादक।

ज्वर नाशक वटी—

शु गधक शु पारद शु. मीठाविप
शु. जायफल —प्रत्येक १-१ तोला
टंकण (सुहागा) फूल सोंठ
शु स्फटिक (फिटकिरी) पीपल छोटी
मरिच (काली मिर्च) —प्रत्येक २-२ तोला

निर्माण विधि—पारद गन्धक की कज्जली कर लेने के वाद शेप दवाओं का महीन चूर्ण एव कज्जली सहित निम्बू स्वरस से खूब खरल कर उड़द बराबर गोली बना कर धूप मे सुखाकर बोतल मे रखले।

मात्रा–वयस्कों के लिये १ गोली और बच्चों के लिये अवस्थानुसार ज्वर आने से ४ घण्टा पूर्व २,२ घन्टे पर एक-एक मात्रा, तुलसी स्वरस अथवा द्रोणपुष्पी और शहद के साथ।

गुण—अन्येद्युष्क ज्वर, तृतीयक एवं चातुर्थिक ज्वर को ३ से ४ गोली सेवन करने से दूर कर देता है।

नोट—उपरोक्त योग 'खानखाना रचित लीलावती वटी नामक योग है जिसमे आवश्यकतानुसार, परिवर्तन और परिवर्द्धन करके मैं २-३ साल से प्रयोग मे लाकर चिकित्सा क्षेत्र मे यशोपार्जन कर रहा हूँ।

कांकायन वटी—

कचूर पुष्करमूल दन्ती बडी की जड
चीता की जड़ अरहर की पत्ती
सोंठ वच सफेद निशोथ (पंचाग)
—प्रत्येक १-१ तोला

हींग भुनी ३ माशा

यवक्षार अमलवेत
—दोनो २-२ तोला
अजवायन जीरा सफेद भुना
मरिच धनियां
स्याह जीरा भुना अजमोदा
—प्रत्येक ३-३ माशा

निर्माण विधि—प्रत्येक द्रव्यों को एकत्र कर खूब कपड़छान चूर्ण करें। पुनः इस चूर्ण मे निम्ब के रस की भावना देकर अच्छी तरह घोटने के पश्चात् १-२ माशा की गोली बना कर रख लेवे।

मात्रा—वयस्कों के लिए दो या तीन गोली एक वार मे सुवह सायं आवश्यकतानुसार।

अनुपान—अवस्था और चिकित्सक के मतानुसार सुखोष्ण जल के साथ, कांजी मधु मांस यूप, घृत या दूध के साथ।

गुण—गुल्म, अर्श, हृदय रोग, कृमि रोग आदि पर।

विशेष रोगानुसार अनुपान—

कफज गुल्म मे—गोमूत्र के साथ या दूध के साथ।

पैत्तिक गुल्म मे—मद्य के साथ।

वातिक गुल्म एवं स्त्रियों के रक्तगुल्म मे—उष्ट्री-दूध के साथ दे।

नोट—काकायन वटी और कुमार्यासव के सेवन से ही मेरी पूज्या भाभी जो फरवरी ५६ से ही वातिक गुल्म से रुग्ण रहा करती थी जिन्हे पटना के डाक्टरों ने असाध्य कह कर छोड़ दिया था, उनकी बीमारी १६ जून ५६ से इस दवा के प्रयोग से अगस्त तक काफी अच्छी हो गयी और वजन मे ८ सेर की वृद्धि हुई। अब पूर्ण स्वस्थ हैं व्यवस्था मेरे पूज्य पिताजी के द्वारा की गई।

काकायन वटी भैषज्य रत्नावली से उद्धृत किया गया है।

वालकाला करने दवा—

केशर २॥ तोला
रेक्टी फाइड स्प्रीट ४ औंस

निर्माण विधि—केशर को स्प्रीट मे ५ दिनों तक छोड़ने के वाद विशुद्ध नारियल अथवा सरसो के तेल मे मिलाकर एक माह तक प्रयोग करने से वाल काले हो जाते हैं।

प्रयोग विधि—सायं-सुवह इस तेल को सिर मे रगड़-रगड़ कर मालिश करना चाहिए, ताकि तैल बालो की जड़ो तक प्रवेश कर जाय। सेम्पु का व्यवहार करे। कड्वी एक दूसरे की प्रयोग न करे। जामुन के पत्ते को पीस कर सप्ताह मे दो वार पीना चाहिये।

नोट—यह प्रयोग मुझे अपने एक मित्र से कुछ ही दिन पूर्व मिला है जिस कारण प्रयोग करने का अवसर नहीं आया है। किंतु मेरा अनुमान है तथा मित्र का कहना है कि इसके प्रयोग से बालकाला अवश्य होगा। अनुभवी व्यक्ति अपने अनुभव को धन्वन्तरि द्वारा जनता के सामने रखे। परीक्षा प्रार्थनीय है।

धातुदौर्वल्य नाशक योग—

स्वर्णवंग ३ माशा
वंग भस्म ६ माशा
स्वर्ण वसन्त मालती रस ३ माशा
अमृता (गुरुची) सत ४ तोला

—इनको मिलाकर खूब महीन करके अपने पास रखले।

मात्रा—२ रत्ती से ४ रत्ती तक, वलकालानुसार मात्रा निश्चित करे।

अनुपान—मक्खन, मलाई, दूध, व शहद आदि।

गुण—किसी भी तरह से धातु-दौर्वल्य हो अथवा वहुमूत्र, शीघ्रपतन, स्वप्नप्रमेह आदि पर शतशोनुभूत है। उपरोक्त दवाओ मे यदि तुलसी ८ माशा, अफीम दो माशा मिलाकर तुलसी स्वरस मे खरल कर २ माशे की गोली वनाकर सम्भोग से २-३ घण्टा पूर्व २ से ४ गोली का

प्रयोग दूध के साथ किया जाय तो स्तम्भन का काम करता है।

पूयनाशक चूर्ण—

चन्दन चूर्ण रूमी मस्तङ्गी शीतलचीनी
इलायची बड़ी दालचीनी गोखुरचूर्ण
-- प्रत्येक समान भाग

मिश्री —सभी के बराबर

निर्माण विधि—मिश्री के अतिरिक्त शेष दवाओं को चूर्ण करे, फिर मिश्री मिलाकर बोतल मे बन्द करके रख लेवे।

मात्रा—३ माशा से १ तोला तक, सायं प्रातः दिन मे २ बार जल अथवा दूध के साथ दे।

गुण—पूयमेह (सुजाक) में विशेष गुण करता है। इसके अतिरिक्त मूत्रकृच्छ्र पर भी कदली कंद स्वरस या मूली स्वरस के साथ देने से लाभ करता है।

विशूचिका पर—

अर्क छाल स्वरस १ तोला

देशी शराब या मृतसंजीवनी सुरा अथवा रेक्टीफाईड स्प्रिट ११ तोला मे मिलाकर रखले।

मात्रा—१ से दो बूंद।

अनुपान - चीनी अथवा बताशे मे।

समय—दिन में ३ वार अथवा चिकित्सकों की सम्मति के अनुसार।

गुण—विशूचिका के प्रथम और द्वितीयावस्था तक मे प्रयोग किया है और गुण किया है।

स्वप्नदोष पर—

शुद्ध कपीलु (कुचीला) चूर्ण १ तोला
देशी शराब या रेक्टीफाईड स्प्रिट १० तोला

निर्माण विधि—चूर्ण को शराब मे देकर विलयन करदे।

मात्रा—२ से ४ बूंद।

अनुपान—दूध या जल।

समय—दिन मे दो बार।

गुण—स्वप्नमेह के रोगियों पर मैं प्रयोग करता हूँ। यदि रोग जीर्ण है, तब भी लगातार कुछ दिनों के प्रयोग से लाभ अवश्य होता है।

: पृष्ठ २०६ का शेषांश :

तथा उसमे एक रत्ती हींग तथा सैंधा नमक एक माशा मिलाना। यह तीन खुराक दवा है। दिन मे तीन वार पिलाना। छोटी उम्र के बच्चों के लिये आधी या चौथाई मात्रा देनी चाहिये।

पांडुरोग पर—

मांडूरभस्म २ रत्ती
कुटकी १ रत्ती
शहद ६ माशा

—सबकी १ मात्रा। इस प्रकार की ३ मात्रा प्रतिदिन लगभग तीन सप्ताह तक। बच्चो के लिये आधी मात्रा।

बाल यकृत वृद्धि के लिए—

मांडूर भस्म आधी रत्ती
कच्चे पपीते का दूध १ माशा
अर्क मकोय ६ माशा
शहद ४ माशा

—यह एक मात्रा है। इस प्रकार की ३ मात्रा प्रतिदिन लगभग ४ से ६ सप्ताह तक।

श्रीमती विमला देवी भट्ट वैद्या

हिन्दी विशारदा
मु. पो बतौली (सरगुजा) म० प्र०
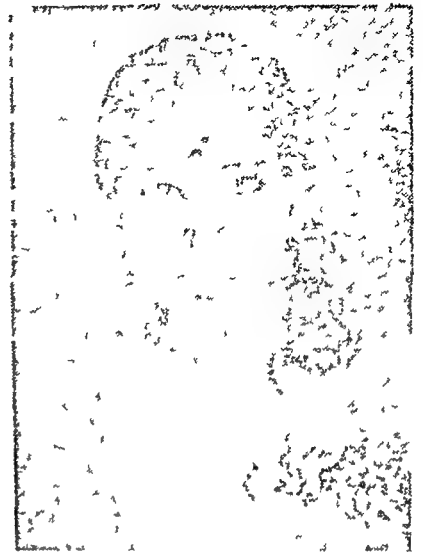
"श्री वैद्या जी स्व प रामनारायण जी मिश्र बीहट निवासी की पुत्री तथा श्री वैद्य धीरेन्द्रमोहन जी भट्ट आयुर्वेदाचार्य की सुयोग्य पत्नी हैं। पति-पत्नी दोनों ही अपनी सफल चिकित्सा मे पीडित जनता की सेवा मे संलग्न है। यद्यपि इतनी कम आयु के किसी चिकित्सक के प्रयोग इस विशेषांक में स्थान नही पासके हैं किन्तु प्रयोग ग्रहस्थोपयोगी होने के कारण प्रकाशित कर रहे है आशा है पाठक इन प्रयोगो को अवश्य ही उपयोगी पायेंगे।" —सम्पादक।

पोथकी (नेत्रगत) रोग पर अंजन—

टंकणाम्ल	२ माशा
कर्पूर	१ माशा
लौंग	१० फूल
मैथी	२ माशा
अफीम	२ रत्ती
गौ घृत	१ तोला

विधि—प्रथम गौघृत को सौ वार पानी से धोकर कांसे या फूल की थाली पर रख देने के पश्चात् शेष चारों दवाओं को उस समय तक तलहथी से मथते रहे, जब तक कि सभी मिल न जांय। फिर टंकणाम्ल को खूब मिलाकर पानी से धोकर शीशी मे रखले। अब अंजन तैयार हो गया।

प्रयोग—दिन मे दो बार सूर्योदय से पूर्व और सूर्यास्त के पश्चात् नेत्र मे अंजन लगादे। लगाने के २-३ मिनट तक कुछ लगेगा फिर ठंडा मालूम देगा।

नोट—इसके प्रयोग से पोथकी, वर्त्मशर्करा, रोहा आदि नेत्र रोग दूर होते है।

उपरोक्त मलहम के पीछे एक कहानी है जिसका उल्लेख कर रही हूँ। ११ दिसम्बर ५५ को मुझे बच्ची पटना अस्पताल मे हुई और मैं १८ दिसम्बर को अस्पताल से अपने डेरे पर आ गई। २० दिसम्बर से ही बच्ची की आंख मे कुछ तकलीफ हुई और वह आंख खोलती ही नहीं थी। फलस्वरूप २२ दिसम्बर से पटने के डाक्टरों की राय से पेनिसिलिन-आई-आइन्टमेन्ट आदि एलोपैथिक औषधियां चलने लगीं। संयोगवश २४ दिसम्बर को बच्ची के पिता पटना आये और २८ दिसम्बर को बच्ची अपने बड़े चचा और पिता के साथ पटना अस्पताल ले जायी गई और वहां के प्रसिद्ध चिकित्सकों की राय से कुछ दिनो तक *"पैनिसिलिन-आई-ड्रोप"* आंख मे डाली गयी। लेकिन कोई लाभ नजर नहीं देखा, तब घरेलू चिकित्सा ही प्रारम्भ की गयी। इस बीच बच्ची कभी-कभी आंख खोलती थी लेकिन पीडा से रोती अधिक थी।

११ जनवरी ५६ को अपने पति महाशय के साथ यहा आने पर बच्ची की आंख को खोलकर देखा गया तो ऊपर के वर्त्म मे लाल सरसों के बराबर फुंसी दिखाई दी, जिससे स्राव और खाज

निकलती थी। फिर १३ जनवरी को उपरोक्त औषधि से युक्त अंजन मेरी पूज्यनीया सास ने बनाया और उसी के प्रयोग से २ दिनों में बच्ची की आंख खुल गई और तब से अब तक बिल्कुल ठीक है।

नोट—उपरोक्त अंजन, नेत्रगत लगभग सभी व्याधियों में लाभप्रद है, यह अनुभव सिद्ध है।

बाल अतिसारहर चूर्ण—

पीपल छोटी   नागरमोथा   अतीस
काकाड़श्रृङ्गी   धावाका फूल (धाय पुष्प)
सोंठ (सुण्ठी)   शुष्क पुदीना पत्र

—प्रत्येक १-१ तोला

विधि—उपरोक्त सभी द्रव्यों को लेकर कूट पीसकर कपड़े में छानकर अपने पास रखलें।

मात्रा—१ रत्ती से ४ रत्ती तक। अवस्थानुसार मधु अथवा माता के दूध में। दिन में ३ बार दें।

प्रयोग—१ से ४ साल तक के बच्चों के अतिसार हरे, पीले दस्त, दांत के समय होने वाले दस्त, आमातिसार में अधिक गुणप्रद है।

नोट—यदि दस्त में खून आता हो तो 'मरोर-फली' का चूर्ण उपरोक्त औषधियों में १ तोला मिलाले और मात्रानुसार दें, तीन-चार मात्रा देने पर पाखाने से खून आना बन्द हो जायेगा। अनेक बार का परीक्षित है।

प्रसवकारक योग—

बच्चा होने के समय यदि प्रसव पीड़ा अधिक हो और बच्चेदानी से बच्चा निकल नहीं रहा हो तो 'अपामार्ग' के वृक्ष को जड़ सहित दाहिने हाथ से उखाड़ कर प्रसवा की कमर में बांध दें। इसके बांधने से बच्चा शीघ्र निकल आयेगा। बच्चा हो जाने के बाद कमर में बांधी हुई अपामार्ग की जड़ को शीघ्र ही उतार लेना चाहिए अन्यथा गर्भाशय के निकल कर बाहर आने की सम्भावना है।

मासिक स्रावहर शर्बत—

आम   महुआ   जामुन
बबूल   अशोक त्वक

– प्रत्येक १-१ सेर

दशमूल के द्रव्य —प्रत्येक आधा-आधा सेर

—लेकर एक मन पानी में क्वाथ करें फिर अवशेष १० सेर रहने पर उतार कर छान लें। इसके पश्चात् ५ सेर चीनी लेकर शर्बत तैयार करें। जब एक तार हो जाय तो उतारते समय कली चूना एक सेर और लाक्षा चूर्ण आधा सेर डालकर उतार कर शीतल होने पर बोतल में बंद करदें।

मात्रा—सुबह-शाम २ तोला।

प्रयोग—श्वेत प्रदर, रक्तप्रदर, मासिक स्राव के समय होने वाली पीड़ा को दूर करके मासिक स्राव को ठीक करता है।

घरेलू दवाएं

[संकलित]

आधाशीशी पर—सूर्योदय से पूर्व अर्क (आक) की फुनकी (कोमल पत्ती) गुड़ में लपेट कर जल के साथ दीजिये।

पीनस रोग में—बन तुलसी के बीजों को पीस कर हुलासवत् सूंघने से कीड़े निकल पड़ते हैं।

बिच्छूदंश पर—अपामार्ग की जड़ को पीसकर लेप करें या पानी में मिला पिलावें।

अहिफेन विष पर—नेत्रवाला (नाड़ीशाक) स्वरस १० तोला तक, थोड़ी-थोड़ी देर बाद पिलावें। अफीम की डली पर नेत्रवाला स्वरस डालने से वह गुणहीन हो जाती है।

आयुर्वेदाचार्य श्री पं. सुरेन्द्रमोहन जी भट्ट वैद्य

२३, लेजिस्लेटर्स क्लब गार्डनर रोड, पटना ।

"बिहार जिस प्रकार चुनचुन कर महा पुरुषो को देता रहा है उसी प्रकार चिकित्सक भी बिहार मे प्रतिभावान क्रियाकुशल व अनुभवी सदैव से होते रहे हैं। वर्तमान मे पटना नगर ख्यातनामा वैद्यो का पुन्यकीर्त्ति यश स्थल है । श्री सुरेन्द्रमोहन भट्ट भी इस समय पटना मे चिकित्साकार्य करते हैं । आप अपनी ६१ जन्मतिथिया पार कर चुके है । स्वर्ण पदक प्राप्तकर आयुर्वेदाचार्य व आयुर्वेदोपाध्याय है । गतकाल में आप दरभगा जिलाबोर्ड के औषधालय से अवकाश प्राप्त कर अब स्वतत्र चिकित्सा द्वारा जनता जनार्दन की सेवा में सलग्न है । बिहार प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन के उपसभापति हैं । आपके ही सुयोग पुत्र प. धीरेन्द्रमोहन भट्ट हैं जो योग्य पिता के योग्य पुत्र कहलाने के अधिकारी हैं । आपने चार प्रयोग वैद्यजन लाभार्थ प्रेषित किये हैं आशा है पाठक पसन्द करेंगे ।"

—सम्पादक ।
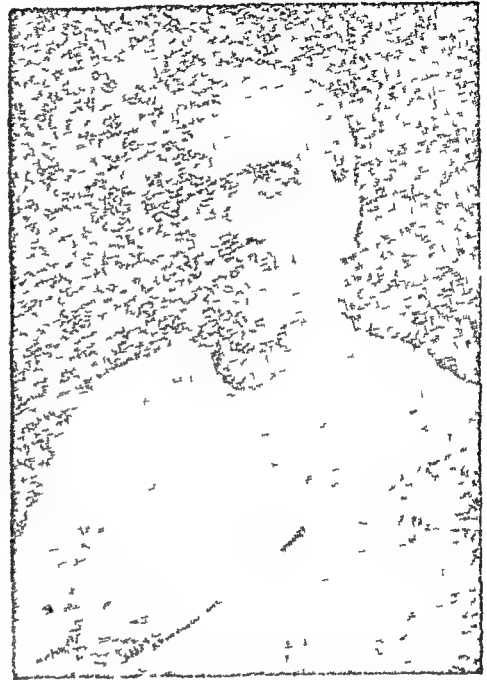
यवतिक्ताद्यरिष्ट—

(क) कालमेघ — शरपुङ्ख
चिरायता — चित्रक

—प्रत्येक २॥-२॥ सेर

(ख) सोंठ — पीपर — मिर्च
हर्रे — बहेरा — दालचीनी
छोटी इलायची — तेजपत्र — कपूर
कंकोल — लवङ्ग — गिलोय
निम्बमूलत्वक — वासा — सज्जीक्षार
यवक्षार — टंकणक्षार — सेंधानमक
सौवर्चल नमक — बिडनमक

—प्रत्येक ५-५ तोला

धाय के फूल — ५० तोला

(ग) जल — २ मन
गुड़ — १० सेर

निर्माण विधि—(क) वर्ग की दवाओ को जौकुट कर (ग) वर्ग मे दर्शाये गये जल मे देकर औटावे जब अवशेष क्वाथ आधा मन रह जाय तब उतार कर दस सेर गुड घोलकर मिला दे । फिर ऊपर से (ख) वर्ग की दवाओं का चूर्ण एवं धाय के फूल का चूर्ण मिलाकर संधान कर दे । समयानुसार देखते रहे और जब अरिष्ट तैयार हो जाय तब छानकर बोतलो मे रखले ।

मात्रा—दो तोला दवा बराबर जल मिलाकर दिन मे दो बार ।

गुण—जीर्ण ज्वर, तृषा, कालाजार पर शतशोऽनुभूत है । यदि प्लीहा वृद्धि विशेष हो तो निम्नरूप से व्यवहार करे—

सायं प्रात-वृ० लोकनाथ रस — १ रत्ती
पिप्पली का चूर्ण — २ रत्ती
मधु — ६ माशा

—चटाकर, यवतिक्ताद्यरिष्ट मात्रानुसार पिलाये। १ सप्ताह के प्रयोग से चिकित्सकों को आशातीत सफलता मिलती है।

विषमारि वटी—

(क) करंज चूर्ण — २० तोला
गोदन्तीभस्म (निम्बस्वरस से भावित भस्म°)
सौभाग्य (सहागा) भस्म — स्फटिक भस्म
—प्रत्येक-५-५ तोला

(ख) करंजपत्रमूल — तुलसी — निम्ब
सप्तपर्ण — द्रोणपुष्पी — शृंगहार (हारसिंगार)

निर्माण विधि—(क) वर्ग की औषधियों को लेकर (ख) वर्ग के द्रव्यों के साथ यथा सम्भव स्वरस या क्वाथ से अलग-अलग ७-७ बार खरल कर झरबेरी बराबर गोलियां बना छाया में सुखा कर रख ले।

सेवन विधि—ज्वर आने से ४ घंटा पूर्व २-२ घंटा पर १-१ गोली जल के साथ निगल जाय। दवा सेवन से पूर्व बार्ली या साबूदाना खा ले।

गुण—नूतन विषमज्वर को दूर करता है।

°विषमारि में देने के लिए गोदन्ती की भस्म को निम्ब स्वरस में खरल कर पुट देकर भस्म बनाना है जो अधिक लाभप्रद सिद्ध होती है। —लेखक।

उदरामृत—

दालचीनी	इलायची बड़ी	लौंग
तेजपत्र	धनियां	रास्ना
अनन्तमूल	चित्रकमूल	तालिसपत्र
सौंफ	नागकेशर	मिर्चे
शीतलचीनी	निम्बपत्र	खस

—प्रत्येक समान भाग

—सब द्रव्यों का चूर्ण बराबर और सभी के समान खाने वाला सोडा मिलाकर बोतल में भर ले।

मात्रा—६ माशा।

अनुपान—चीनी के शर्बत में निम्बू स्वरस आवश्यकतानुसार डाल कर दवा खिला कर ऊपर से पिला दे।

गुण—उदर सम्बन्धी सभी विकारों पर उपयोगी है।

त्रिशक्ति—

अजादुग्ध से शोधित पारद — गन्धक
हिंगुल (एरण्ड बीज से भस्म किया हुआ)
स्वर्णमाक्षिक भस्म —प्रत्येक समान भाग

निर्माण विधि—उपरोक्त द्रव्यों को समान भाग लेकर कुमारी स्वरस से भावना देकर सराव सम्पुट कर फूंक दे। स्वाग शीतल होने पर खरल कर रख ले।

मात्रा—१ से २ रत्ती।

अनुपान—पान, अद्रक, तुलसी इन द्रव्यों में से किन्हीं एक द्रव्य के स्वरस के साथ।

गुण—सभी प्रकार के मियादी बुखार (ज्वर) में लाभप्रद है।

घरेलू दवाएं

[सकलित]

मूत्रावरोध पर—कलमी शोरा ३ तोला, टेसू (ढाक) के फूल १ तोला। दोनों को पानी के साथ पीस टिकिया बनाकर पेडू पर रक्खें। प्रति आध घण्टा बाद बदलते रहो। थोड़ी देर में मूत्र अवश्य होगा।

प्राणाचार्य वैद्य वी० एल० गुप्ता ब्यावरावाला

साहित्यायुर्वेद रत्न, आयुर्वेदसेवा सदन, ६ यशवंत गज, इन्दौर।

"आपका जन्म सम्वत् १९७० मे व्यावरा नगर मे श्री गोरेलाल जी विजयवर्गीय के यहां वैश्यकुल मे हुआ। आपने बी ए (पूर्वार्द्ध), साहित्यरत्न एव आयुर्वेद की प्राणाचार्य उपाधि प्राप्त की। आपने सन् १९३? में व्यावरा मे आयुर्वेद सेवा सदन की स्थापना की तथा पीड़ित समुदाय को नि:शुल्क चिकित्सा सहायता देते हुए पर्याप्त यश लाभ किया है। उच्च अधिकारी वर्ग एव विद्वत्समाज से आपको अनेक प्रमाणपत्र एव अभिनन्दन पत्र प्राप्त हुए हैं। सम्प्रति इन्दौर मे आप चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आपके निम्न प्रयोग अनेक रोगियो पर पूर्ण परीक्षित हैं।"

—सम्पादक।

ज्वररोधक अचूक प्रयोग—

गोदन्ती हरताल भस्म	१॥ रत्ती
भाग शु धुली हुई	१॥ रत्ती
तुलसी पत्र	२१ नग
कालीमिर्च	२१ नग
नीम की पत्ती	२१ नग

—इन पांचो को घोट कर तीन गोली वनावे तथा एक-एक गोली ज्वर आने के पूर्व दो-दो घन्टे के के अन्तर से पानी के साथ दें। एक दिन मे चार गोली से अधिक न दें। इस प्रकार यह प्रयोग ३-४ दिन तक चालू रखें। मलेरिया को रोकने के लिये रामबाण है।

प्रतिश्याय नाशक—

गेहूँ का चोकर	२ तोला
मुलहठी	१॥ माशा
काली मिर्च	६ नग
हल्दी	१॥ माशा
बताशे	१ तोला

—इन पाचों को मिलाकर आधा सेर पानी मे पकावें। जब आधा सेर पानी शेप रहे तब उतार छान लें। गुन-गुना हो जाने पर छ' माशा शहद डाल कर सुवह शाम पिलावे। यह प्रयोग ५-७ दिन तक चलता रहने दे।

सभी प्रकार के प्रदर पर—

आंवले की गुठली के अन्दर-की मींगी	४ रत्ती
मिश्री	१॥ तोला
अशोकारिष्ट	१ तोला
जल	३ तोला

—कुल की एक मात्रा। इस प्रकार की दो खुराक दिन मे दो वार, भोजनोपरान्त। यह प्रयोग लगभग एक मास तक चलने दे।

ब्रांको-न्यूमोनिया पर—

भटकटैया का पचाग ढाई तोला लेकर आध सेर जल मे मिट्टी के पात्र मे क्वाथ तैयार करना। जब पौन छटाक जल शेप रहे तब उतार कर छान लेना

—शेषांश पृष्ठ २०४ पर।
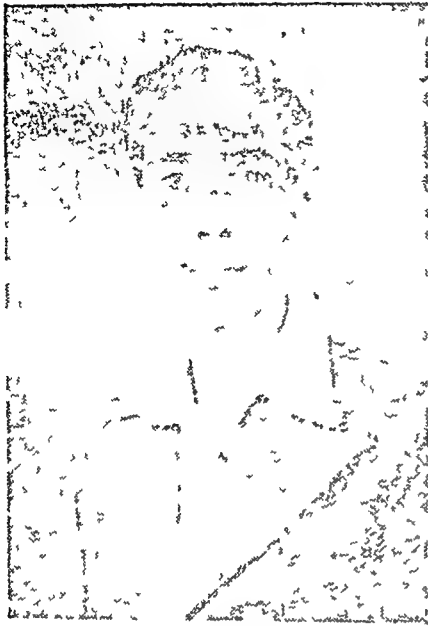
श्री वैद्य रामधन गुप्ता वैद्यभूषण

ग्राम गुहना (करनाल)

"आपने श्री सन्त शरणदास वैद्य शास्त्री रणजीत आयुर्वेदिक औषधालय, जो एक सुप्रसिद्ध विद्वान वैद्य हैं, के पास शिक्षा प्राप्त की और उनके योग्य शिष्य हैं। अब आप स्वतन्त्र रूप से ग्राम गुहना जिला करनाल मे चिकित्सा का कार्य कर रहे और आप प्रसिद्ध वैद्य है" —सम्पादक।

पाण्डु रोग के लिए

लौहराज रस—

लौहभस्म अकीकभस्म प्रवालभस्म
शुक्तिभस्म शङ्खभस्म
जहरमोहरा भस्म संगजराहभस्म
स्वर्णमाक्षिक भस्म बीज छोटी इलायची
कोल डोडा (कमलगट्टा) गिरी चादी वर्क

—प्रत्येक १-१ तोला

स्वर्णवर्क बड़े ६ नग

—सबको बारीक करके अर्क वेदमुश्क मे खूब घोटे और शीशी मे रख लेवे।

मात्रा—४-४ रत्ती दिन मे दो बार।

अनुपान—मक्खन मे देवे।

भोजनोत्तर—तरबूजासव

तरबूजासव का प्रयोग—

त्रिफला	३ पाव
चारो मगज (कद्दू, खीरा, तरबूज-खरबूज)	१ पाव
मजीठ	१ पाव
जंगी हरड़	१० तोला
कीकर की फली	१० तोला
लोह चूर्ण	१ सेर
मिश्री	३ सेर
तरबूज का पानी	१५ सेर

—लोह पात्र या पीपे मे सब चीजो को कूट कर डालदे और ऊपर से बन्द कर देवे। १५ दिन धूप मे रखे, बाद मे छान कर बोतलो मे भर लेवे।

मात्रा—२॥ तोले जल मिलाकर भोजनोत्तर देवे।

गुण—यह दोनो योग पाण्डु रोग के लिये शत-प्रतिशत अनुभूत है।

रक्तप्रदर नाशक—

पाठा जामुन की गिरी गिरी आम्र बीज
शु रसौत मजीठ मोचरस
नागरमोथा विल्व कत्थ (वेल का गूदा)
लोध्र सोनागेरू कायफल
कालीमिर्च सोठ लालचन्दन
अरलु छाल इन्द्रजौ अनन्तमूल
धातकी पुष्प मुलहठी कहरुवा
अर्जुन की छाल संगजराह (सेलखड़ी)

दमुलाखवायन　　गिलेअरमनी
फिटकरी सफेद　　नागकेशर
—प्रत्येक १-१ तोला

—सबका बारीक चूर्ण कर लेवे।

मात्रा - १ से ३ माशा तक।

अनुपान अशोक छाल का क्वाथ या चावलों का धोवन या दार्व्यादि क्वाथ।

गुण—रक्तप्रदर, अतिसार, रक्तातिसार के लिये अद्भुत योग है।

अवश्य लड़का ही होगा—

भांगबीज　　गुड़ नया　　दोनों १-१ तोला
मोर चन्द्रिका　　५ नग

—सब को अच्छी तरह घोटकर १४ गोलियां बना लेवें।

प्रयोग विधि—जब गर्भ २॥ मास का हो तो उसके पश्चात् प्रयोग करे। १ गोली प्रात बछड़े वाली गाय के दूध के साथ और १ गोली सायं गाय के दूध से दें।

गुण—अवश्य लड़का ही होगा, अनुभूत योग है।

हिस्टेरिया नाशक—

(ग्रीष्म ऋतु में)

शुक्तिभस्म　　तवाशीर　　कहरुवा समई
संगयशव　　अकीकभस्म　　प्रवालभस्म
चांदीभस्म　　—प्रत्येक ६-६ माशा

—अर्क वेदमुश्क और अर्क केवड़ा में अच्छी तरह घोट कर शीशी में रख लेवें।

मात्रा—४ रत्ती से १ माशा तक।

अनुपान—शान्ति शर्बत, जो निम्नलिखित है।

शर्बत—

जटामांसी	१६ तोला
असगन्ध नागोरी	४ तोला
खुरासानी अजवाइन	३ तोला
ब्राह्मी बूटी	१ तोला
खाण्ड	२ सेर

—शर्बत विधि से शर्बत बनाकर प्रयोग करे।

मात्रा—३ तोला पानी मिलाकर।

(शरद् ऋतु में)

जुन्दवेदस्तर　　गोरोचन　　असलीकेशर
पपीता बीज　　मुरमकी
—प्रत्येक १-१ तोला

—अर्क गुलाब और वेदमुश्क में खूब खरल करे। सूख जाने पर शीशी में सुरक्षित रख लेवे।

मात्रा—१ रत्ती प्रात. और १ रत्ती सायं।

अनुपान—गाय का दूध या ताजा जल।

गुण—३-४ सप्ताह के प्रयोग से ही हिस्टेरिया रोग जाता रहता है। अनुभूत योग है। मूर्च्छा और अपस्मार रोग में भी लाभ करता है।

सर्पदंश पर अनुभूत योग—

असली बिल्लोर पत्थर　　लोटासज्जी
नूसार (नौसादर)　　सफेद फिटकरी
सेलखड़ी　　कत्था
नीलाथोथा　　—प्रत्येक १-१ तोला

विधि—बिल्लोर पत्थर को अच्छी तरह कूट कर सात बार कपड़छान कर और बाकी चीजों को बारीक पीस कर शीशी में भर कर रख लेवे।

मात्रा—१ माशा, दिन में दो तीन बार।

अनुपान—ताजा जल।

पथ्य—घी पीने को, काली मिर्च और प्याज खाने के लिये देवे।

नोट—१—इस औषधि से जुलाब आवेंगे।

२—इस औषध का नेत्रों में अंजन भी करे।

सर्पदंश पर लगाने के लिये—

बिल्लोर पत्थर　　सफेद रत्तियां
हुक्के का गुल (मकू)　　नीलाथोथा
लोटा सज्जी　　नूसार

—शेषांश पृष्ठ २१४ पर।

श्री सन्त शरणदास वैद्य शास्त्री

(पहला नाम श्री सन्त गुरदीपसिंह जी)

रणजीत आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय, भारत नगर, लुधियाना।

"आप श्री महन्त रणजीतसिंह जी के सुपुत्र हैं। आपने श्री महन्त गुरुमुख दारा जी ग्राम डुलर जिला गुरदासपुर श्री चन्द्रा आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय मे शिक्षा प्राप्त की। आपके गुरुजी सुप्रसिद्ध विद्वान है उनके पास अनेको शिष्य अब भी शिक्षा प्राप्त करते हैं। आपने ५ वर्ष गुरु जी की सेवा करके औषधि निर्माण और रोग निदान का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। अब आप अपने पिता जी के पास चिकित्सा का कार्य कर रहे है।

—सम्पादक।

आमवात (गठिया रोग) के लिए—

आमवात मे पहले रेचन देकर निम्न औषधि प्रयोग करे—

रेचन के लिये—

शुद्ध सफेद संखिया १ तोला लेकर खरल मे डालकर २½ तोला आक के दूध मे खूब घोटे। २१ बार आक के दूध मे घोटें, इसके पश्चात् २१ बार घीकुमार मे घोटे, २½ तोला घीकुमार का रस प्रत्येक बार डाले और ¼ रत्ती की गोली बना लेवे।

मात्रा—१ गोली केवल एक बार।

अनुपान—घी के साथ।

गुण—इस योग से विरेचन होंगे, दर्द और शोथ भी ठीक होजायगा।

आमवात के लिए औषधि—

जायफल	जावित्री	लौंग
पिप्पली	सोंठ	काली मिर्च
अकरकरा		—सातो ५-५ तोला

—असली काश्मीरी केशर — २ तोला
शुद्ध वत्सनाभ — ४ तोला
हिंगुल भस्म (भलातक वाली) — ४ तोला
शु० अहिफेन — ४ तोला
शु० कुचला (एरण्ड तैल वाले) — २० तोला

विधि—सबको बारीक पीसकर इन्द्रायण फल के स्वरस से खूब घोटे और १-१ रत्ती को गोलियां बना लेवे।

मात्रा—एक गोली प्रात. और एक गोली सायं।

अनुपान—गर्म दूध।

हिंगुल भस्म भल्लातक वाली बनाने की विधि—

विधि—हिंगुल के जौ के समान टुकड़े ४ तोले और और भिलावा ४० तोले लेवें। भिलावे को मोटा-मोटा कूट ले फिर भिलावो के आधे चूर्ण को एक लोहे की कड़ाई मे नीचे बिछावें ऊपर हिंगुल फैला कर शेष भिलावो के चूर्ण से दबा दे। चूल्हे पर चढाकर मन्द अग्नि दे। जब भिलावो का तैल टपकने लगे, तब दियासलाई से जला देवे। जलकर ठण्डा होने पर जामुन के रंग के समान हिंगुल होजाता है फिर सम्हालपूर्वक

निकाल कर बारीक पीस लेवे। यह हिंगुल भस्म भल्लातक वाली है।

शुद्ध कुचला एरण्ड तैल वाले–

बनाने की विधि—कुचलो को ७ दिन गोमूत्र मे भिगो देवे। रोज गोमूत्र बदलते रहें। फिर छिलका नरम होने पर उसको उतार देवे और भीतर से जीभी को निकाल देवे, पश्चात् कुचलों को १६ गुने दूध में दोलायन्त्र विधि से उबाले, दूध रबडी जैसा हो जाने पर उतार कर धोलेवे फिर सम भाग एरण्ड तैल मे भून लेवें। यही शुद्ध कुचले एरण्ड तैल वाले हैं।

आमवात में मालिश के लिए तैल—

महा नारायण तैल — महा विषगर्भ तैल
तारपीन तैल — तैल बबुना
—प्रत्येक १–१ छटांक
अहिफेन — ३ माशा
कपूर — १ तोला

—सबको मिलाकर मालिश करे। आमवात रोग का रोगी ठीक होजाता है।

गृध्रसी रोग के लिए गृध्रसीहर वटी–

योग–शुद्ध हिंगुल — शुद्ध सफेद संखिया
रूमी मस्तङ्गी — काली मिर्च
लाल कत्था — —पांचों १-१ तोला

—सबको बारीक पीसकर आर्द्रक स्वरस की भावना देकर ३ दिन खूब घोटें और १-१ रत्ती की गोलियां बना लेवे।

मात्रा—एक गोली प्रात'।

गृध्रसी हर रेचनार्थ चूर्ण—

योग—सुरजान — ४० माशे
सरनायपत्र (सनाय पत्ती) — २८ माशे
बड़ी हरड़ का छिलका — ३६ माशे
केशर कश्मीरी — १६ माशे
त्रिवृत — ३ तोले
मुसब्बर — १६ माशे
खाण्ड — १० तोला

—सबको बारीक पीसकर रख लेवें।

मात्रा—एक माशा, सायं।

अनुपान—गर्म पानी।

प्रातः गृध्रसीहर वटी प्रयोग करे और सांय गृध्रसीहर चूर्ण। एक सप्ताह इस तरह प्रयोग करने से गृध्रसी रोग नष्ट होजाता है।

उपदंश (आतशक) के लिए–

योग—शुद्ध पारद हिंगुलोत्थ — तिल काले
खोरा गरी पुरानी — –प्रत्येक १-१ तोला
शु० भल्लातक — १० दाने
गुड़ पुराना — २ छटांक
चारों अजवायने — ४ तोला

नोट—१–देशी अजवाइन, खुरासानी अजवाइन अजमोद, बाल अजवाइन।

—सबको बारीक करके मिलाकर सवा लाख चोट लगावे, और १-१ माशे की गोलियां बना लेवें।

मात्रा—केवल १ गोली।

अनुपान—आम के अचार में लपेट कर देवे और ऊपर से गोदुग्ध की लस्सी।

गुण—२१ दिन प्रयोग करने से पुराने से पुराना उपदंश ठीक होजाता है।

पथ्य—घी और चने की रोटी।

बच्चो का शोष रोग—

पत्थरबेर पिष्टी — जहरमोहरा पिष्टी
दरयाई नारियल — —प्रत्येक १-१ छटांक
तबासीर — २½ तोला
कछुआपरी कच्ची (कछुए की पीठ) ५ तोला

—सबको बारीक पीसकर अर्क बेदमुशक, अर्क

गुलाव, रूह केवड़ा की भावना देवे। सूख जाने पर शीशी में रख लेवे।

मात्रा—४ रत्ती से ८ रत्ती तक।

अनुपान—अर्क गुलाव या लाईमवाटर अथवा वजूरी शरवत।

गुण—एक महीने के प्रयोग से वच्चा मोटा हो जाता है। हरे पीले दस्त ठीक हो जाते हैं। शोपरोग के लिए लाभप्रद है।

नोट—महालाक्षादि तैल की वच्चे के शरीर पर मालिश भी करनी चाहिए।

तालुकण्टक रोग के लिए
(वच्चो के गण्डिका रोग मे)

तवाशीर	२० तोला
छोटी इलायची के वीज	१० तोला
कमलगट्टा की गिरी पित्ता रहित	१० तोला
जहरमोहरा खताई	१० तोला
कावली मिश्री	१० तोला
जीरा सफेद शीतलचीनी	
शकरतिगाल फूल अनार कचूर	
माजूफल	—प्रत्येक ५-५ तोला
कत्था	१० तोला
चांदी वर्क	६ माशे

—सवका वारीक चूर्ण करके रख लेवे।

लगाने की विधि—नीम की हरी शाखे जो वहुत वारीक होती है एक शाखा ले लेवे और शाखा के वीच मे मक्खन लगाकर चूर्ण लगा देवे। शाखा को मोड़कर गण्डिका उससे उठा देवे। तीन दिन ऐसा करने से तालुकंटक रोग ठीक हो जाता है।

खाने के लिए—इसी चूर्ण को २ माशे लेकर उसमें एक रत्ती कपूर रस मिलाकर ४ मात्रा कर लेवे।

मात्रा—दिन मे ४ वार १-१ मात्रा।

अनुपान—ताजा जल या अर्क गुलाव। अनुभूत योग है।

:: पृष्ठ २११ का शेषांश ::

शीशा नमक (कचलौना)—हरेक	१-१ तोला
पोटाशियम परमेगनेट	२ तोला
संखिया सफेद	६ माशे

वनाने की विधि—पहले रत्तियो को आक के दूध मे भिगो देवें। वाकी सव औषधियो का वारीक चूर्ण कर लेवे, फिर सवको आक के दूध मे घोट कर १-१ रत्ती की गोलियां वनाले।

लगाने की विधि—सर्प दंश स्थान पर गहरा × मार्का पछना लगा कर गोली को आक के दूध मे घिस कर गाढ़ा लेप करे। एक ही वार लगाने से ठीक होजाता है। वाद में जख्म पर कोई मलहम लगा कर ठीक कर लेवे।

श्री वैद्य सत्यपाल वढ़ावन

आयुर्वेद भिषक्

लक्कड़ बाजार, लुधियाना।

"आप सुप्रसिद्ध विद्वान पं० मुल्कराज वैद्य वाचस्पति के शिष्य हैं। पाकिस्तान गुजरावाला से मदोक धर्मार्थ औषधालय मे आपने गुरू जी के साथ लगातार १० वर्ष तक औषधि निर्माण और रोग-निदान का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। पश्चात् सन् ४८ मे आयुर्वेद विद्यापीठ से आयुर्वेदभिषक् की परीक्षा उत्तीर्ण की। अब १० वर्ष से लुधियाना मे स्वतन्त्र रूप से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आप लुधियाना के प्रसिद्ध वैद्य हैं।" —सम्पादक।
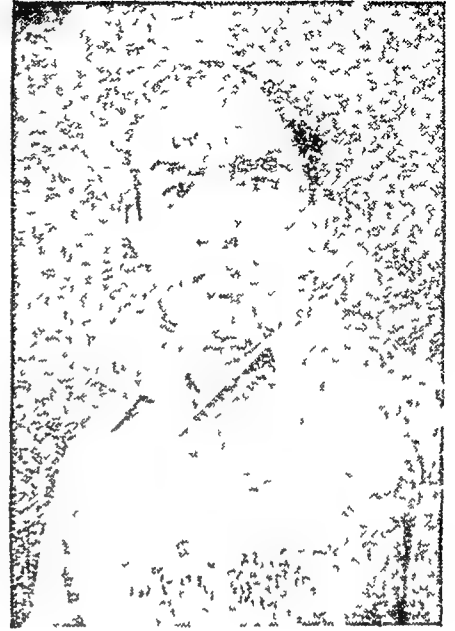
बच्चों की काली खांसी के लिए—

अमलतास की फली (जलाकर कोयले के समान कर लेवें) १० तोला
काकड़ासिंगी, भारङ्गी
पोहकरमूल, शकरतिगाल
—प्रत्येक १¼-१¼ तोला
मुलहठी चूर्ण ५ तोला
कालानमक (आक के दूध मे भस्म करके)
अपामार्ग क्षार, नृसार
फिटकरी सफेद, सुहागा, यवक्षार
खुरासानी अजवायन —प्रत्येक २½-२½ तो
कंटकारीफल ४ छटांक

—नृसार से कंटकारी तक सबको सम्पुट मे बन्द कर आग मे भस्म कर लेवें। यह सब की भस्म २॥ तोला और उपरोक्त सब द्रव्यो को २॥ तो बारीक मिलित चूर्ण करके शीशी मे लेवे या जितना बनाना चाहें दोनो चूर्ण और भस्म बराबर ले।

मात्रा—१ माशा से ३ माशा तक दिन में ३ बार।

अनुपान—शहद मे मिलाकर चटावें।

गुण—यह योग कई बार प्रयोग किया है, काली खासी के लिए शतप्रतिशत अनुभूत है।

प्रवाहिका के लिए—

कालीमिर्च, रूमीमस्तङ्गी
आम की गुठली, खरैयटी (खिरैटी)
माई, बेर की लाख, धातकी (धाय) पुष्प
कत्था, अनार पुष्प, बिल्व (गूदा)
मोचरस, नागरमोथा
—प्रत्येक २-२ माशे
गुठली रहित छुहारे ६ नग
जायफल ३ नग
माजूफल १६ नग
शुद्ध सिंगरफ ३ माशे
शुद्ध अहिफेन १ तोला

—सब औषधियो को बारीक कपडछान कर लेवें और पोस्त के क्वाथ की भावना देकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लेवे।

मात्रा-१ गोली प्रात' १ गोली सायं ।

अनुपान-गाय के दही की लस्सी या चावल का धोवन अथवा शर्बत अजवार ।

गुण—प्रवाहिका पहली ही मात्रा मे देने से ठीक हो जाती है ।

अमीरी जुलाब—

सकमोनिया	बादाम गिरी छिली हुई
त्रिवृत (निसोथ)	सरनापत्र (सनाय पत्ती)
जुलाफा हरड	काला दाना

—प्रत्येक ३-३ तोला

चारो मगज +	४ तोला
मुनक्का बीज रहित	५ तोला
गुलकन्द असली	२५ तोला
बादाम रोगन	६ तोला

—कूटने वाली औषधियों का बारीक चूर्ण करके सबको खरल मे घोटकर शीशी मे रख लेवे ।

मात्रा-१ से ३ माशे दूध के साथ ।

गुण—दाईमी (पुराने) कब्ज को ठीक करता है। प्रतिश्याय, कास और पीनस रोग भी ठीक करता है ।

स्वप्नदोष नाशक—

त्रिवंग भस्म	६ माशे
स्वर्ण वङ्ग	६ माशे
शुद्ध शिलाजीत सूर्यतापी	१ तोला
कौड़ियालोवान	२ तोला
मुनक्का बीज रहित	५ तोला
शुद्ध अहिफेन	२ माशे

—सबको बारीक घोटकर १-१ रत्ती की गोलिया बना लेवे ।

+कद्दू, खीरा, तरबूज, खरबूज की मिंगी ।

मात्रा—१ गोली प्रात. और १ गोली सायं ।

अनुपान—गाय दुग्ध के साथ ।

गुण—स्वप्नदोष, धातुस्राव और प्रमेह के लिए अचूक है ।

अठराह (मृतवत्सा) रोग के लिए—

बालक जन्म के समय नाड़ी-छेदन के पश्चात नाभि मे रखने की औषधि—

गोरोचन असली	हीरा हींग कच्ची
नीलाथोथा कच्चा	—प्रत्येक १ १ माशे

—सबको बारीक पीस कर गगाजल या अर्क गुलाव मे अच्छी तरह घोट लेवे । यव आकार और उसी प्रमाण की गोलिया बना लेवे । नाड़ी छेदन के पश्चात् बच्चे की नाभी में रख देवे ।

गुण—बच्चा अवश्य जीवित रहेगा, अनुभूत योग है।

मृतवत्सा को खाने की औषधि—

त्रिफला	१५ तोला
कौलडोडेगिरी पित्तारहित*	निम्बपत्र शुष्क
शु चाकसू	शुद्ध रसौत
लाल चन्दन	कीकर का बन्दा

—प्रत्येक ५-५ तोला

—सबको बारीक करके गंगाजल या अर्क गुलाब मे घोटकर ४-४ रत्ती की गोलियां बना लेवे ।

सेवन विधि—गर्भ होने से ही इसे प्रयोग करे और बच्चा होने तक प्रयोग करते रहे ।

मात्रा—१ गोली प्रात ताजा जल से ।

—और इसी गोली को पानी मे घिसकर बालको को चटा देवे । ३ माह तक बच्चे को प्रयोग करावे । बच्चा अवश्य जीवित रहेगा ।

*कौलडोडे—कमलगट्टा—काला छिलका उतार लें । बीच में सब्ज पित्ता होता है उसे निकाल दे ।

श्री महन्त रणजीत सिंह जी

श्री रणजीत आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय भारतनगर, लुधियाना।

"आप श्रीमान् १०८ महन्त गुरुमुख दास जी वैद्य ग्राम डुलर जिला गुरुदासपुर के शिष्य हैं। आपके गुरु जी ने प्रसन्न होकर इन्हें राजगुरु की पदवी प्रदान की है। आप लुधियाना मे रणजीत धर्मार्थ औषधालय मे प्रधान चिकित्सक के पद पर कार्य कर रहे हैं। लुधियाना के सुप्रसिद्ध वैद्यो मे आपकी गणना है आपके अनुभव-पूर्ण प्रयोगो का पाठक स्वागत करेंगे।"

——सम्पादक।

जलोदर रोग—

(विरेचन के लिए)

शुद्ध पारद (हिंगुल से निकाला हुआ)	१ तो.
शुद्ध गंधक	१ तोला
त्रिफला	३ तोला
त्रिकुटा	३ तोला
खुरासानी अजवाइन	१ तोला
देशी अजवाइन	१ तोला
अजमोद	१ तोला

सौंफ धान्यक (धनियां) हल्दी
चित्रकमूलत्वक् ढाक के बीज
लाहौरी नमक साभर नमक
काला नमक मनिहारी नमक

—यह सब १-१ तोला

त्रिवृत (निशोथ)	८ तोला
शु. जयपाल	१५ तोला
डण्डा थोहर की जड़	३ तोला
डण्डा थोहर का दूध	२ सेर

बनाने की विधि—पहले पारद और गन्धक की कज्जली बना लेवे, डण्डा थोहर का दूध को छोड़ सबको बारीक चूर्ण करके छान लेवे और कज्जली मिला देवे, फिर डण्डा थोहर के दूध की भावना देकर ४-४ रत्ती की गोलियां बना लेवे।

मात्रा—दिन मे ४ गोलियां देवे।

अनुपान—शरदऋतु मे गर्म जल और गर्म ऋतु मे गौदुग्ध की लसी से देवे।

गुण—इससे विरेचन होकर बहुत लाभ होगा। ताजा जल न देवे, और निम्नलिखित अर्क देवे—

अर्क

हरी मकोय	२ सेर
सौंफ	आधा सेर
कासनी	आधा सेर
पुनर्नवा मूल	१ सेर

—जल २० सेर डाल कर रात्रि को भिगो देवे और प्रात अर्क विधि से अर्क निकाल लेवें। रोगी को जल के स्थान पर यही देवे।

शोथ के लिए दुग्ध वटी—

शुद्ध शिगरफ	अहिफेन
शु काले धतूरे के बीज	—हरेक १-१ तोला

—बारीक करके धतूरे के स्वरस की भावना देकर एक एक रत्ती की गोली बना लेवे।

मात्रा—१ गोली प्रात १ गोली साय।

अनुपान—गाय का दूध।

नोट—एक सप्ताह इसका प्रयोग करने के पश्चात् फिर एक बार पहले की तरह विरेचन देवें।

प्रात. साय दुग्ध वटी और रात को—

शङ्खभस्म	१ माशा
माण्डूरभस्म	१ माशा
ताप्यादि लौह	४ रत्ती

—यह एक मात्रा है। मधु से चटाकर ऊपर से गाय का दूध देवें।

एक मास प्रयोग करे जलोदर अवश्य ठीक होजायगा।

संग्रहणी रोग के लिए अनुभूत योग—

कुटजत्वक चूर्ण	४ छटाक
शुद्ध रसौत	२ छटाक
अनार का छिलका (नसपाल)	१ छटाक
इन्द्रजौ	१ छटाक
बड़ी हरड़ का वक्कुल	१ छटाक
अहिफेन	६ माशे
फौलाद हिंगुल वाला*	२ तोला
गोघृत	१॥ छटांक

—सबको बारीक पीस कर मिलाकर अच्छी तरह घुटाई करे और ४-४ रत्ती की गोलिया बना लेवें।

मात्रा—दिन मे ३ गोलिया देवे।

अनुपान—दही, तक्र या चावल धोवन के साथ।

—यह योग शतप्रतिशत अनुभूत है। इस योग के प्रयोग से महाराजा पटियाला की ओर से ३०० बीघा जमीन इनाम मे मुझे मिली थी।

बवासीर के मस्से निकालने के लिये—

सफेद सखिया	नीलाथोथा
कलमी शोरा	यवक्षार
वरकिया हरताल	सुहागा
सफेद फिटकरी	नवसादर ठीकरी
सज्जीखार	—प्रत्येक ६-६ माशा

विधि—पहले निम्बु स्वरस की भावना देकर फिर ककरौदा की पत्ती के रस की भावना देवे और शिवलिंगी के आकार की गोलिया बनावे। पानी मे घिसकर बड़ी सावधानी से मस्सों पर गाढ़ा लेप करे। जब लेप सूख जाये तो ऊपर ठंडा हलवा वांध दे। दिन मे २ बार लेप लगावे। अगर मस्सो मे दर्द हो तो घी या मक्खन या दही का पनीर बाध देवे। १२ दिन के प्रयोग से मस्से काले रङ्ग के हो जायगे। इसके बाद मस्सो पर खाड डालकर ऊपर दही का पनीर बाध देवे। २-३ दिन के बाद मस्से निकल जायगे। दाह होने पर निम्न लिखित मलहम लगावे—

---

*फौलाद हिंगुल वाला के बनाने की विधि—शुद्ध लोह के बारीक चूर्ण को पहिले त्रिफला क्वाथ के ६ पुट दे। फिर गोमूत्र के ६ पुट दे। इसी तरह केले और घीकुआर के रस की ६-६ पुटे देवे। फिर यह लोहभस्म ४८ तोले लेकर उसमें ४ तोले शुद्ध हिंगुल मिलाकर घीकुआर के रस में १२ घण्टे घुटाई कर २-२ तोले की टिकिया बनाकर तेज धूप में सुखाले। फिर सराव सम्पुट मे बन्द कर गजपुट मे फूंक रखे। इस तरह बार १२ गजपुट देवे। बार-बार हिंगुल मिलाते जावें। अन्त मे जामुन की छाल के क्वाथ की ३ पुट देने से नीले रङ्ग की उत्तम लोह भस्म बनती है। यही फौलाद हिंगुल वाला है।

मलहम—कत्था कर्पूर सोना गेरू

—प्रत्येक १-१ तोला

—सबको बारीक करके घी में मिलाकर ऊपर लगावे। २-३ दिन से दाह ठीक हो जायगी। बाद मे व्रणो पर मलहम—

सुहागा फूल सफेद सेलखड़ी
सिंदूर राल —प्रत्येक समभाग

—सबको पीसकर घी मिलाकर लगावे। मस्सो का स्थान ठीक हो जाएगा।

नाड़ी व्रण नाशक—

सफेद संखिया का ऊपर का जोहर• और नीचे का अवशिष्ट भाग मिलाकर १ तोला
छोटी इलायची बीज १ तोला
सिंदूर १ तोला

—ऊपर की सब चीजो को खरल मे डालकर चार पहर खूब घोटे और शीशी मे रख लेवे।

व्रण पर लगाने की विधि—४ रत्ती औपध को घी मे मिलाकर व्रण स्थान पर लगा देवे। नया रोग हो तो ३ दिन, पुराना हो तो ७ दिन लगावें। इस से धोने के पश्चात् साठी चावलों को तक्र में उबाल कर और दही के पानी के साथ घोटकर बांध देवे। ७ दिन के बाद मांस गल जायगा। फिर निम्न लिखित मलहम जख्म को भरने के लिए है।

हिंगुल रसकपूर दालचिकना
मैनशिल गन्धक आमलासार

—प्रत्येक १-१ तोला

नीलाथोथा कवीला सफेदाकासगरी
मुर्दासङ्ग कत्था लाल शुष्क बैरोजा

—प्रत्येक २-२ तोला

हड़ताल वरकिया ६ माशे
राल १० तोला
सिंदूर ५ तोला

•जोहर निकालने की विधि—सफेद संखिया २॥ तो लेकर सम्पुट बनाकर बेरी की लकडी की चार पहर आंच देवें जौहर ऊपर उडकर लग जायेगा ऊपर और नीचे की चीज दोनो को मिलाकर १ तोला लेवे।

तिल तैल ३ पाव

—सबको बारीक पीसकर तिल तैल मे घोटे। घोटते समय थोड़ा-थोड़ा डालते जावे जब फूल जाए तो शीशी मे भरकर रख लेवे। यह मलहम गम्भीर स्थान पर लगावे। कुछ दिनों मे व्रण ठीक हो जायगे। यह मलहम अन्य प्रकार के जख्म को भी ठीक करती है।

नाड़ी व्रण मे खाने की औपधि—

शु कुचला (एरड तैल में बना हुआ) ४ तो.
नीलाथोथा फुला छोटी इलायची बीज
तवाशीर दाल चिकना

—प्रत्येक १-१ तोला

—सबको बारीक करके अद्रक स्वरस मे घोटकर २-२ रत्ती की गोलिया बना लेवे।

मात्रा—१ गोली प्रातः और १ साय।

अनुपान—हलवे मे मिलाकर एक मास तक प्रयोग करे। नमक न दे बेसन और घी की रोटी देवे। अनुभूत योग है।

मधुमेह के लिये—

लोहभस्म हिंगुल वाला चांदी भस्म
त्रिवङ्ग भस्म (हरताल द्वारा) स्वर्णवंग
प्रवाल भस्म शुक्ति भस्म
अकीक भस्म अभ्रक भस्म

—प्रत्येक १-१ तोला

शुद्ध शिलाजीत सूर्यतापी २ तोला
शुद्ध अहिफेन ६ माशे
कुक्कुटाण्डत्वक भस्म १ तोला

—पोस्त के पानी मे घोटकर १-१ रत्ती की गोलियां बना लेवे।

मात्रा—३ गोली प्रतिदिन।

अनुपान—जामुन की गुठली आम की गुठली
इमली की गुठली विल्व (गूदा)

—प्रत्येक १-१ माशा

गुड़मारवटी ३ माशे

—इसका बारीक चूर्ण बनाकर ३ गोलिया मिलाकर खाकर ऊपर से ताजा जल पीवे, अनुभूत है।
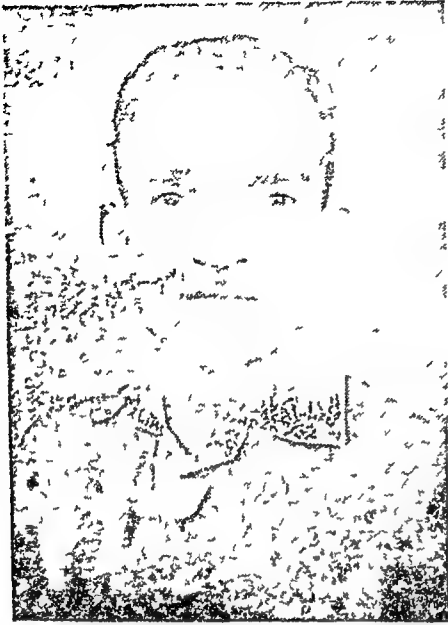
श्री पं. आशाकरण आचार्य

आयु. भिषक् बी. ए. साहित्याचार्य प्रभाकर,
नारायण हाईस्कूल, विजयनगर, (अजमेर)

"राजस्थान के उदयपुर डिवीजन के भीम कस्बे मे आपका जन्म हुआ। सन् २८ मे मैट्रिक पास करके उदयपुर के विख्यात वैद्यराज प लक्ष्मी नारायण जी शर्मा के चिकित्साश्रम अजमेर में शिक्षा प्राप्त की और सन् ३१ मे नि भा. आयु विद्यापीठ से भिषक् परीक्षा उत्तीर्ण की। आप अध्यापन के साथ-साथ आयुर्वेद की सेवा करते है। वासा से आपका विशेषस्नेह है उसी पर कुछ सफल योग आपने प्रकाशनार्थ प्रेषित दिये है।" —सम्पादक।

प्रथम योग—

अड़ूसा वांसा	२ तोला
मैथी के दाने	६ माशा

विधि—यवकुट कर आधा सेर जल मे चतुर्थांश क्वाथ करके छान ले। तत्पश्चात् आधी छटाक शहद (मधु) मिलादे।

मात्रा—एक-एक घण्टे के अन्तर से १¼ तोला परिमाण मे दिन और रात्रि मे कम से कम ८ वार पिलावे। साथ मे २-२ वटी अमृत सजीवनी देना और भी हितकर होगा।

लाभ—सभी प्रकार के श्वास, कास, उदर पीड़ा, शिर शूल, आलस्य, प्रतिश्याय व वात विकार मे लाभदायक है।

पथ्य—आहार—हल्का व सात्विक भोजन।

विहार—हवा के झोंके से वचते हुए शुद्ध वायु मे विश्राम।

द्वितीय योग—

अड़ूसा	२ तोला
मैथी	६ माशा
गावजवॉ	६ माशा

विधि—उपयुक्त विधि से क्वाथ बनाकर शहद मिलावे।

मात्रा—उपर्युक्त परिमाण व समयान्तर से अमृत संजीवनी वटी के साथ दें। ज्वर की तीव्रता मे शहद न मिलावे।

लाभ—मंथरज्वर (मोतीझरा) आदि मियादी व्याधियो को निरुपद्रव व शान्तिपूर्वक दूर करने मे एक योग्य चिकित्सक का कार्य करेगा।

आहार—दूध, बाजरे का दलिया, मुनक्का आदि सुपाच्य स्वल्प आहार दे। क्वथित जल बार २ थोड़ा-थोडा पीने को दे।

विहार—वायु के झोंके व सर्दी से वचते हुए शुद्ध वायु मे पूर्ण विश्राम। रोगी के कमरे मे सूर्य का प्रकाश या तिल तैल का मन्द प्रकाश रहे। मिट्टी के तैल, गैस या विजली का प्रकाश न रहे। शान्त स्वभाव, धीर व शुद्धाचरण वाला स्वस्थ परिचारक हो।

—शेषांश पृष्ठ २२३ पर।

कविराज डा. तेजबहादुर चौधरी D. I. M., B I. M. S.

आयुर्वेदाचार्य

मु० पो० नवागढ़ (दुर्ग) म० प्र०

"श्री चौधरी साहब उत्साही नवयुवक, मर्मज्ञ सफल लेखक तथा योग्य अनुभवी चिकित्सक हैं। धन्वन्तरि के पाठक आपसे सुपरिचित हैं। आपने ही इन्जेक्शन-विज्ञानांक दोनो भागों को निर्माण कर धन्वन्तरि के पाठको के समक्ष प्रस्तुत किया था। पुरुषो के विशेष रोगो के विषय मे आपका गहन अध्ययन है। आप जिस विषय को लेते है उसको पाठको के समक्ष तर्कपूर्ण ढग से रखते हैं। आप पहिले राजकीय चिकित्सालय मे प्रधान चिकित्सक के पद पर कार्य कर रहे थे अब अपना स्वतंत्र चिकित्सा कार्य करते हैं। शीघ्र ही पाठक कामविज्ञान पर आपके धारावाहिक रूप में लेख पढ़ेंगे। आपके निम्न प्रयोग भी (आयुर्वेद एवं एलोपैथि के समन्वय रूप मे) पाठको को उपयोगी प्रमाणित होगे।"

—सम्पादक।
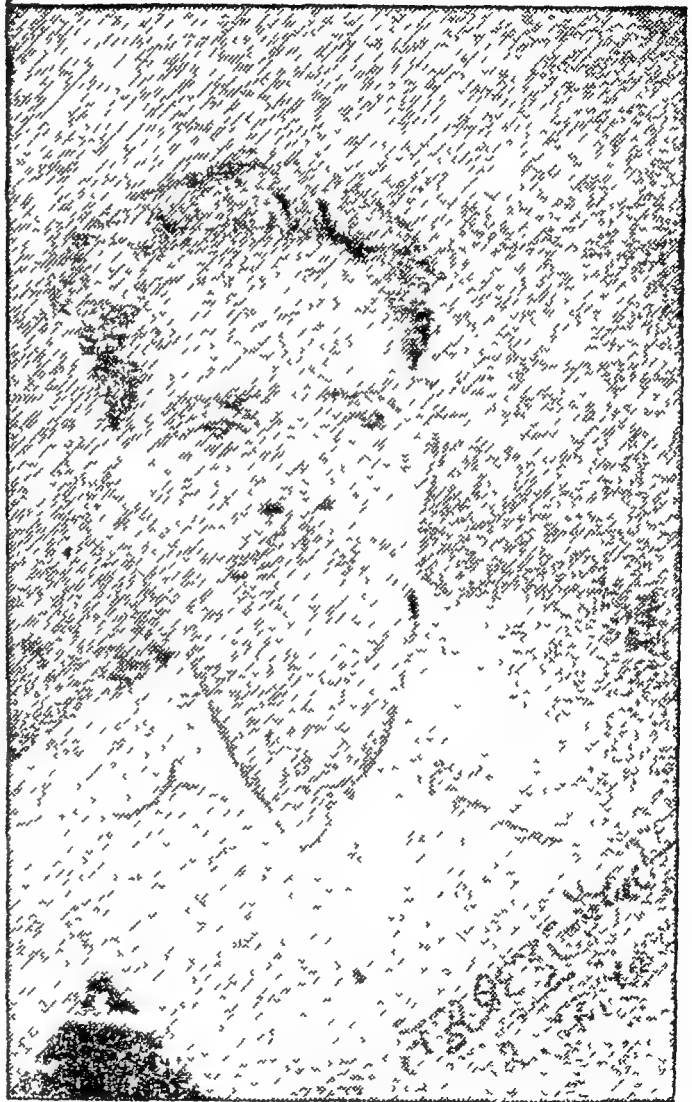
आज कई वर्षों के उपरान्त धन्वन्तरि के पाठकों की सेवा मे उपस्थित होने का सौभाग्य इस विशेषांक द्वारा मिल रहा है। सम्पादक महोदय की आज्ञा टालना मेरे लिए सम्भव नहीं था, अतः अपने चिकित्सा काल में हुए अनुभवों का कुछ लेखा जोखा पाठको के सम्मुख रख रहा हूँ। योग तो कोई भी शतप्रतिशत सफल नहीं उतरता, हां अगर देश काल, दशा के अनुसार योग सेवन कराया जाय तो पूरा उतरता है।

वीरस—

पाठकों ने धन्वन्तरि के हमारे द्वारा लिखे गए इन्जेक्शन विज्ञानाङ्क में वीरस नामक विज्ञापन देखा होगा जो तरल रूप में प्रस्तुत की गई है। इसकी १०-१५ बूंद-१ गिलास ठण्डे पानी में डालकर अण्डकोषो को ही केवल (लिंग को नहीं) उसमें लगभग १५ मिनट डुबोया जाय। तदुपरान्त बिना पोंछे अण्डकोषों को ४-५ मिनट अगुलियों से हल्का-हल्का मर्दन किया जाय ताकि दवा का पानी सूख जाय और मर्दन से दवा त्वचा के अन्दर पहुँच जाय और साथ-साथ अण्ड कोषों में कुछ फुलाव आजाय। यह क्रिया दिन में दो बार करनी पर्याप्त होती है। और यह क्रम लगभग १५-२० दिन अथवा १ माह करने से, अण्डकोषों का निर्जीव होना, पुंवीज का न बनना, या कम बनना, कमजोर बनना, लिंग की छोटाई, अशक्ति, ढीला लटका रहना, उत्थान या हर्ष का न होना और साथ-साथ स्वप्नदोष के लिए तो रामबाण की तरह उसी दिन बन्द करने में समर्थ होती है। इसके साथ पुरुष जननेन्द्रिय सम्बन्धी अधिकाश विकारों को शनै. शनै. शमन करती चली जाती है।

दवा खाने और लगाने की जरूरत नहीं है।

जैतून का तैल	१ पौण्ड
लौंग का तैल	४ ड्राम
कॉड लिवर आयल	२ औंस
कर्पूर देशी	१ तोला

—सबको एक साथ मिलाले और रखले। दवा तैयार है। उपरोक्त विधि से प्रयोग करे।

विशेषता—जल शीतल ही होना जरूरी है। मर्दन अंडकोषो का हल्के हाथों से खूब देर तक होना चाहिए ताकि एक बार वे फूल जाय अर्थात् रक्त से भर जाय। दोनों समय यह क्रिया करे। रात को सोते समय तो अवश्य करे। सम्भोग से १० दिन तक परहेज रखे।

औषधि कुछ-कुछ चरमरी सी पैदा करके अंडकोषों का रक्त-संचार बढ़ाती है। उधर मर्दन क्रिया से भी उनके अन्दर का रक्त संचार बढ़ता है और उसके अन्दर से निकलने वाला मद (Harmone) अधिक मात्रा में निकलने लगता है। फलत. कामाङ्गों की वृद्धि होने लगती है। शीतल स्पर्श अंडकोषों के लिए महान् Tonic का काम करता है।

(२)

जब आपका रोगी, काम-सम्बन्धी शक्ति-हीनता, विबंध, निरुत्साह, भोजन मे अरुचि, रक्त-हीनता शारीरिक मानसिक दुर्बलता इत्यादि लक्षणों युक्त हो और इसके अतिरिक्त आप उसे स्फूर्तिदायक तथा सरल उपाय से निरोग करना चाहे तब मेरा अनुभव है कि ऐसे समय मे धीरज के साथ—

सुदर्शन चूर्ण	२ माशा
मण्डूर भस्म	२ रत्ती
अथवा लौह भस्म	१ रत्ती

—भोजनोपरान्त बराबर देते रहने से अभीष्ट लाभ होता है। एलोपैथी मे—

टिंचर कैशा	३० बूंद
फेराई-एट-अमोनिया सायट्रास	१५ ग्रेन से ३० ग्रेन तक

—भोजन के उपरान्त देने से आशातीत लाभ होता है। हमारे यहां सदैव व्यवहार में आने वाला योग रहा है।

शुक्र सम्बन्धी विकार वाले को फिर सितोपलादि की ३-४ पुड़ियां ३-३ माशे की देकर उन्हे बिना अनुपान के यों ही फाकने का आदेश दे दिया जाता है। दो सप्ताह का प्रयोग पर्याप्त होता है। पुड़िया फांकने से ½ घण्टा पहले और पीछे कुछ भी नहीं खाना चाहिये।

इस योग के प्रभाव का कारण योग मे चिरायता अथवा Quassia (क्वैशा) का कड़ुवा स्वाद (रस) है जिसके कारण आंतो मे रक्तसचार बढ़ जाता है, और उनकी शक्ति Tone जो प्राय नष्ट होगई होती है, या कम होजाती है, पुन' जीवित हो उठती है। ऐसी दशा में फिर लौह का प्रयोग शरीर मे

नवीन रक्तोत्पादन करने में परम योग देता है। तब आंतें काम करने लगती हैं, उधर रक्तवृद्धि होने लगती है, तब रोगी अपने अन्दर एक विशेष स्फूर्ति और उत्साह का अनुभव करने लगता है। इन योगों में सबसे बड़ी विशेषता है कि बिना रेचक दिये, मल का दोनों समय निकलना शुरू होजाता है।

अब बहुत बार ऐसा भी हुआ है कि सुदर्शन चूर्ण नहीं मिलता, तब केवल चिरायता चूर्ण ही लेकर और लोहभस्म मिलाकर उतना ही काम निकाला जा सकता है। योग में जो सबसे बड़ी बात है वह यह है कि चिरायता और Quassia ऐसे कड़वे द्रव्य हैं जिनमें Tannic acid या Tannin नहीं होता, जिसके कारण लौह के साथ इन्हें बड़ी सफलता के साथ प्रयुक्त किया जासकता है। अगर Tannin होता तो लौह से मिलाकर शीघ्र काला पड़ जाता और स्तम्भक प्रभाव वाला होजाता।

इसमें ध्यान में रखने वाली बात यह होनी चाहिये कि जहां पर उदर सम्बन्धी लक्षणों में पीड़ा, वमन, शोथ या व्रण, आमाशय का केंसर हो वहां यह प्रयुक्त नहीं करना चाहिये नहीं तो रोग बढ़ने की आशंका रहेगी, और अपयश मिलेगा। इससे Rickets, Struma, क्षत, Phthisis रक्तहीनता Chlorosis, Neuralgia नाड़ीवात, अपच, शोष, मांस क्षय, तथा उन रोगों में जहां रोगी हताश हो गया हो शक्ति-रहित आंतों के लिये Atonic-Dyspepsia के लिये तो अमृत तुल्य है। निर्धन व्यक्ति जिन्हें सदैव कूड़े कर्कट में अशुद्ध वायु में, शहरी जीवन व्यतीत करना पड़ता है और सस्ता भोजन पाकर रहना पड़ता है, और उन्हें भूख बिना ही खाना खाने पर मजबूर होना पड़ता है तब यह योग अपना चमत्कार दिखाकर, आमाशय के रक्त संचार को बढ़ाकर रोगी को नया जीवन दान दे डालता है। इस योग की प्रशंसा लन्दन के प्रसिद्ध चिकित्सक लार्ड हॉर्डर G. C. V. O , M. D., F. R. C. P. ने मुक्त कण्ठ से की है, वे प्रतिवर्ष इसी योग की दो लाख मात्रायें अपने रोगियों को प्रयुक्त करा देते थे। आश्चर्य नहीं यदि अपने यहां चिकित्सकों के हाथ में पड़कर यह महान् गुणकारी सिद्ध योग सिद्ध हो। अन्तर यही है कि टिंचर क्वैशा के स्थान पर हम चिरायता, फेराई-एट-एमोनिया साइट्रास के स्थान पर लौह या मण्डूर भस्म प्रयोग करते हैं।

: पृष्ठ २२० का शेषांश :

तृतीय योग—

अडूसा	२ तोला
नीम पत्र	६ माशा
गावजबां	६ माशा

विधि—उपर्युक्त विधि से क्वाथ तैयार करके २ माशा नमक मिलादें।

मात्रा—उपर्युक्त परिमाण व समयान्तर से पिलावें।

गुण—मलेरिया, एकान्तर, तृतीयक, चातुर्थिक आदि विषम ज्वरों व जीर्णज्वर में लाभदायक। ज्वरावस्था में भी देते रहें।

पथ्य—लंघन, सुपाच्य स्वल्प गौदुग्ध, दलिया, उष्ण जल, क्वथित जल।

विहार—विश्राम। धूप से बचें।

साहित्यायुर्वेदरत्न

डा० अर्जुन सिंह वर्मा आयुर्वेदाचार्य

चन्द्रफार्मेसी, कुमावास रोड, जेजूसर (नवलगढ़) राजस्थान।
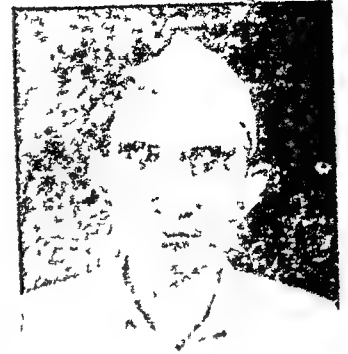
"आप वैद्यरत्न चौधरी भोमसिह जी वर्मा के सुपुत्र है। आपके यहां वशपरम्परागत चिकित्साकार्य चलता आरहा है। आप चन्द्रफार्मेसी जेजूसर का सफलतापूर्वक सञ्चालन कर रहे हैं। आप साहित्य, अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के तथा आयुर्वेद, होमियोपैथिक, बायोकैमिक चिकित्सा विज्ञान के ज्ञाता एव अनुभवी चिकित्सक है। आपके प्रयोगो से आशा है वैद्य समाज का उपकार होगा।" —सम्पादक।

अतिसार पर—

देशी कपूर, धाय के फूल, सफेद कत्था, इन्द्रजौ, जायफल, सफेद राल, नागरमोथा, मोचरस, भुनी हींग, शुद्ध अफीम, गोंद —प्रत्येक सम भाग

—सबको बारीक पीस कर मिलाले और कुड़े की छाल के काढे (कुटजत्वक क्काथ) मे खरल करके बारीक पीस कर १-१ रत्ती की गोलियां बनाले।

मात्रा—१ से दो गोली ३-३ घण्टे बाद अर्क सौंफ, प्याज के रस, छाछ या दही के साथ सेवन करे।

कुनैन की दादी—

फिटकिरी भस्म, नौसादर, करज के बीज की मींग, गेरू, शु. धत्तूरे के बीज, तुलसी के पत्ते, गोदन्तीहरताल भस्म, आक की जड की छाल —यह सब १-१ तोला

काली मिर्च ६ माशा

—सबको प्रथम ग्वारपाठे के रस मे खरल करे। बाद मे नीम के पत्तों के रस मे खरल करके २-२ रत्ती की गोलियां बनाले।

सेवन विधि—ज्वर चढ़ने से पूर्व २-२ गोली अर्क मकोय, अर्क सुदर्शन वा ताजा जल के साथ ३ बार ले।

गुण—उसी रोज ज्वर न रहेगा अन्यथा दूसरे दिन तो किसी हालत मे भी नहीं होगा।

अकसीर नकसीर—

(पुरानी नकसीर मिटाने का योग)

दूब का रस	१ पाव
तिली का तैल	५ तोला
फिटकरी	२॥ तोला

—तीनो को मिलाकर दिन मे तीन-चार बार इसका नस्य लेने से नकसीर का आना बन्द होता है।

रतौंधी पर—

—काली मिरचों को लार मे घिस कर आखो मे डालने से रतौंधी (अन्धराता) दूर होता है।

आंख फूले पर—

—फिटकरी, नौसादर और काले कबूतर की बीट सम भाग को पीस कर किसी तांबे के बर्तन मे डाले और इसमे नीबू का रस डालकर एक हफ्ते तक पड़ा रहने दे। सूखने पर इसे खरल करके शीशी मे रखे और आंख मे लगावे।

शूलनाशक—

सोंठ	मिर्च (काली)	हरड़
पीपल	कुचला	हींग
सेंधानमक		शुद्ध गंधक

—समान भाग

—सबको बारीक पीस ग्वारपाठे के रस मे खरल करके जगली बेर के समान गोली बनाले।

मात्रा—१ से २ गोली गर्म पानी से सेवन करें।

गुण—इससे त्रिदोषज शूल का नाश होता है।

बिच्छू काटे की दवा—

नौसादर	४ भाग
कलमीशोरा	१ भाग
पोटाशपरमेंगनेट	२ भाग

—सबको मिलाकर एकत्र करके बिच्छू काटे स्थान पर लगाकर पानी की बूंद डाल दे। तत्काल लाभ होगा।

कर्णबिन्दु—

तिल का तैल	२० तोला
धत्तूरे के पत्तों का रस	१० तोला
आक के पत्तों का रस	१० तोला

—तीनों मिला कर अग्नि पर पकावे। जलांश जल जाने पर वर्तन को आग से उतार ठण्डा होने पर छान लें। फिर उसमें ४ तोला कपूर, ५ तोला ग्लेसरीन मिलाकर घोटकर स्वच्छ शीशी मे भरकर रखले।

गुण—इसकी ४ बूंद कान में डालने से पीव स्राव, कर्णनाद, वधिरता आदि का नाश होता है।

स्वप्नदोष नाशक—

असली शिलाजीत	१ तोला
पोटाश ब्रोमाईड	२ तोला
आमले का चूर्ण	६ तोला
कबाबचीनी	२ तोला
वङ्गभस्म	१ तोला

—सबको बड के दूध मे पीस कर गोलियां बनाले।

मात्रा—२ गोली सुबह, २ गोली सायंकाल धारोष्ण दूध के साथ।

काला दुथ-पाउडर—

कोयले का बारीक चूर्ण		२० तोले
अजवाइन	नमक	६-६ माशे
प्रेसिपिटेटेड चाक		५ तोला
फिटकिरी	कपूर	पीपरमेंट का सत

—तीनों ६-६ माशे

—पहिले कपूर को स्प्रिट मे घोलकर उसे द्रव बना ले फिर सभी वस्तुओं को एक मे मिलाकर उसमे उस द्रव्य की १-१ बूंद करके मिलादे।

हैजे की अक्सीर दवा—

आक की ताजा जड़	२ तोला
कालीमिर्च	१ तोला

—दोनों को अदरख के रस मे घोटकर चने के समान गोलियां बनावे और हर २ घंटे बाद १-१ गोली अर्क गुलाब से दें।

देशी चाय—

वनफशा	१ तोला
अदरख	६ माशा
तुलसी के पत्ते	१० नग
काली मिर्च	१० ~~तोला~~ नग
चाय	१ तोला
पानी	३ छटांक

—५ तोला दूध मे चाय की तरह खूब पका छान पीना चाहिये।×

×प्रेषक मीठा मिलाना भूल गये है उचित परिमाण मे बताशा या चीनी डालें।

श्री पं० शिवकुमार मिश्र वैद्य विशारद

आर्य औषधालय, बछवल पो० महोली (सीतापुर)

"श्री मिश्र जी का जन्म ३६ वर्ष पूर्व श्री प० बाबूराम जी मिश्र के यहा हुआ। आपके यहा गत ७० वर्षो से वैद्यक व्यवसाय हो रहा है। आपके स्वर्गीय पिता अनुभवी चिकित्सक तथा वनस्पतियो के ज्ञाता थे, वे वनस्पतियो से ३-४ पैसो मे बिगडे हुए रोगियो की चिकित्सा करने मे सफल होते थे। श्री मिश्र जी ने संस्कृत मध्यमा पास कर हिन्दी साहित्य सम्मेलन की वैद्य विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की तथा अपने पिता से प्रत्यक्ष वनौषधि परिचय तथा क्रियात्मक चिकित्सा अनुभव प्राप्त किया है। आपके पिता के अनुभवपूर्ण प्रयोगो का एक विशाल सग्रह हस्तलिखित पुस्तक रूप मे आपके पास है जिससे आपको बडी सहायता मिलती है तथा उसी सग्रह से कुछ प्रयोग यहा प्रकाशित हैं।" —सम्पादक।
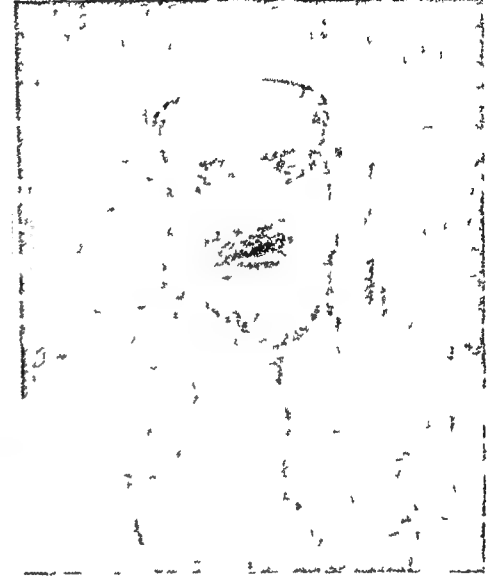
जीर्णज्वर कास—

दशमूल	१ तोला
शतावर	१ तोला
मुनक्का	५ दाना
पीपर बड़ी	२ नग

—इन सबको आध सेर दूध गाय तथा ऽ॥ पानी मे चढ़ावे। जब केवल दूध शेष रह जावे तो मल छान कर रख लेवे।

मात्रा—दिन मे ३ बार मे इसको पीले।

गुण—जीर्णज्वर कास मे इससे शीघ्र लाभ होता है।

२—सोंठ ५ तोला
पीपर बड़ी ५ तोला
गुर्च चिरायता सकोय
—तीनों ७-७ तोला
बुरादा चन्दन श्वेत तथा लाल ३॥-३॥ तो.

विधि—इन सबको जौकुट करके ७ सेर पानी मे १ दिन-रात भिगोकर आग पर चढ़ा दे। जब क्वाथ २ सेर बाकी रह जावे तब मलकर छान लेवे और १॥ सेर शक्कर डालकर शरबत की चाशनी बना लेवे।

मात्रा—प्रात साय १ तोला से २ तोला तक रोगी की शक्तिअनुसार सेवन करावे।

गुण—सभी प्रकार के ज्वर, कास तथा स्त्रियो के प्रसूत ज्वर पर शतशोनुऽनुभूत है।

कास सुधाकर—

पिपरमेंट कपूर सत अजवायन
सत लोवान वासा क्षार
—प्रत्येक ६-६ माशा
मधु शुद्ध २॥ तोला

—शेषांश पृष्ठ २३१ पर।

दीर्घ रोग चिकित्सक

पं. शिवनारायण देव पांडेय

आयुर्वेदरत्न

बरौंधा (मिर्जापुर)

—०—

"श्री पाण्डेय योग्य अनुभवी आयुर्वेद चिकित्सक हैं। आपकी परमार्जित भाषा में विशेष परिकल्पनायुक्त प्रयोगों को प्राप्त कर पाठक अवश्य ही लाभान्वित होंगे। आपने प्रयोगों के साथ अपना परिचय नहीं दिया है अतएव आपके विषय में अधिक लिखने में असमर्थ हैं।"

— सम्पादक।

निम्न योग यथा शक्ति शुल्वौषधों के प्रयुक्त स्थान की पूर्ति उसके ही मिश्रण से करता हुआ अनुपान भेद से विषमज्वर, जीर्णज्वर, रक्ताल्पता, श्वास, श्लीपद, ग्रंथिक एवं वात सम्बन्धी विकृति में उपयुक्त एवं श्रेयष्कर है।

विविध रोग नाशक योग—

हिंगुल	५ तोला
ताल पत्रक	२॥ तोला
फेनाश्म (संखिया)	१। तोला

—सबको सुदृढ हाथों से कज्जलवत् घोटलें। पुन शनैः शनैः अर्क दुग्ध डालते हुए तब तक घोटें जब तक १० तोला दुग्ध अवशोषित न हो जाय। एकत्रित कर ३ इंच की परिधि में चक्राकार चक्रिका बना आतप शोषित कर मिट्टी की दो तश्तरी किसी समान मुख वालों में स्थापित कर ३ कपरौटी चढ़ालें। सुखा लेने के पश्चात् एक गड्ढे में रख ऊपर से ३ अंगुल मिट्टी का स्तर बना ऊपर ७ दिन तक अनवरत ५-७ उपलों की अग्नि जलाते रहे। ७ वे दिन अग्नि हटा दें। स्वयं शीतल होने पर सम्पुट को संभाल कर निकालें और पुनः पलट कर उसी गढे में पूर्ववत्त रख ७ दिन तक अग्नि जलावें। पुनः अग्नि हटा शीतल होने पर औषध खूब घोटकर रखलें। यह शिवास्त्रस्वरूप रोग निर्मूल एवं यश प्रदान में आपको सहयोग देगा।

उक्त व्याधियों में अभिज्ञानार्थ प्रयुक्त प्रकार जिसे मैं व्यवहार में लाता हूँ अंकित है—

विषम ज्वर में—वेग के एक घंटे पूर्व ही विजया शुद्ध १ रत्ती, मिश्री ४ रत्ती, औषध ½ रत्ती ऐसी मिश्रित ३ मात्रा एक-एक घंटे पर प्रयुक्त करना चाहिए। वेग यदि कोष्ठबद्धता न रही तो पहले ही दिन अवरुद्ध हो जायगा। नहीं तो २-३ दिन में रोग निर्मूल हो पुनरावर्तित नहीं हो पाता।

जीर्णज्वर के लिए—लौहभस्म ½ रत्ती, जीरा ४

रत्ती, गुड़ ८ रत्ती औषध ½ रत्ती विनिर्मित वटिका प्रातः सायं प्रयोजित हो, आशुफल प्रद है।

रक्ताल्पता मे–लोहभस्म ½ रत्ती, नृसार, कर्पूर १-१ रत्ती, औषध ½ रत्ती मिश्रण को पाव भर गौतक्र मे आधा तोला निम्बुस्वरस मिला उसके अनुपान से प्रयुक्त, यावतीय रक्ताल्पता निर्मूलक हैं।

श्वास रोगी को—चीनी ८ रत्ती, भर्जित (भुना) सैंधव २ रत्ती, औषध ½ रत्ती मधु से प्रात. सायं प्रयुक्त हो, सफलता प्रदायक है।

यदाकदा समयानुकूल ५ रत्ती, सितोपलादि १ रत्ती वासकमूल त्वक्चूर्ण २ रत्ती यष्टिमधु चूर्ण से व्यवहृत शुष्कता एवं तरलता मे तत्तदनुपान युक्त प्रयुक्त आशुफलप्रद है।

श्लीपद को—सिहोरे की अन्तर छाल चूर्ण ५ रत्ती मे मिश्रित मधु से लेहित, कुछ ही दिनो मे लाभदायक है।

इसके प्रयोग काल मे मर्दनार्थ सहायक निम्न औषध का योग उच्चतम फलदाता हो जाता है।

मैथलेटेड् स्प्रिट		½ बोतल
गौमूत्र		१ बोतल
घोड़ावच	आजवायन	राई
सोंठ	देवदारु	सिहोड़

—प्रत्येक १-१ तोला

—कुट्टित कर मिला हिलाते हुए १५ दिन तक धूप में रखे। मुख मुद्रा सुदृढ़ होनी चाहिए। निचोड़ कर छान लेने के बाद रुग्ण स्थल पर दिन मे २-३ बार धीरे-धीरे मालिश करनी चाहिए।

वातरोग मे—अफीम ¼ रत्ती, कुचला ½ रत्ती औषध ½ रत्ती ऐसी मात्रा मधु से दिन मे दो बार उचित अनुपान से प्रयुक्त गृध्रसी अपवाहुक यावतीय वात विकृति एवं अन्य-व्याधियो मे भी उपयुक्त अनुपान से प्रयुक्त आशु गुण प्रदर्शनकारी है।

चर्मरोग एवं रक्त-दोष जन्य रोगो पर—

हिंगुलोत्थ पारद	१ तोला
सबल गन्धकाम्ल	५ तोला

—किसी फ्यूज हुए बल्ब का मुख खोलकर अर्धस्थान रिक्त रखते हुए कोयले की तीव्राग्नि पर स्थापित करिए। कुछ ही क्षण मे धूम्रोद्गम होने लगेगा। जलते जलते गंधकाम्ल के किंचिन्मात्र अवशेषित रहने पर नीचे उतार शनै. शनैः हिलाते हुए जल से भर दीजिये। ऐसा करने से एक सबल पीत वर्ण का घोल प्रस्तुत हो जायगा। उसे कुछ क्षण स्थिर होने दीजिए। तलस्थायी पीताभ चूर्ण को बचाते हुए स्वच्छ जलीयांश को किसी कांच के पात्र में एकत्रित करते जाइए, इस क्रिया को तब तक बार-बार दुहराइए जब तक ५० तोला जल व्यय न हो जाय। फिर उस तलस्थाई पीत पारद भस्म को आतप शोषित कर रखले। इस तरह "आम के आम और गुठली के दाम" वाली कहावत चरितार्थ होती हुई दो औषधाख्य विनिर्मित हुए।

इस पारद भस्म को सड़ने वाले क्षत, पूयमेह, उपदंश की भयानक स्थिति मे समयानुकूलानुपान से प्रयुक्त करे, रोग निर्मूलक स्थिति शीघ्रातिशीघ्र उपस्थित होती है।

उस जलीयांश को नाड़ीव्रण मे थोड़-थोड़ा भरने से व्रण को चौड़ा एवं शुद्धकर शीघ्र ही पूरित कर देता है।

इसी तरह से स्थिति को अध्ययन करते हुए, किसी रक्त-शुद्धिकर मौखिक प्रयोग के साथ हठीले उकौत के लिए भी प्रलिप्त करिए। सफलता आपके हाथो मे ही होगी।

उक्त प्रयोग निर्माण-काल मे जल न डालते हुए गंधकाम्ल को एक दम जला डालने पर श्वेत भस्म की उपलब्धि होती है। इन श्वेत पीत दोनों ही को सम मात्रा मे मिश्रित कर हलुआ में ¼ रत्ती रख कर, तैल, मिर्च, मास, मद्यादि प्रभूत मात्रा मे खाते हुए भी ऐसी प्रतिदिन प्रयुक्त १ मात्रा उपदंश की किसी भी स्थिति को प्रायः एक सप्ताह के अन्तर्गत ही ठीक करती है। अपथ्य मे घी को छोड़ कर दुग्ध

निर्मित सब प्रकार की वस्तुएं आती हैं और उपरोक्त रोगों में ½ रत्ती से क्रम वर्द्धित मात्रा दृष्टि रखते हुए एक रत्ती तक प्रयुक्त हो सकती है। इसके प्रयोग काल में कभी ही पारद दोष दृष्टि में आते है। यदि दोषोदय हो तो रस-व्यथा प्रतिकार प्रयुक्त करना चाहिए। इसके प्रयोग काल में घृत प्रयोग की महत्ता है।

यकृत्प्लीहा-वृद्धि नाशक—

तनुना प्राप्त गन्धकाम्ल १ बोतल, हीराकसीस ५ भर, भुना टंकण ५ भर मिला २-३ दिन हिलाते हुए १५ दिन तक स्थिर होने को रख छोड़े। स्थिर स्वच्छांश को नितार ले।

इसकी पूर्ण मात्रा चार आने भर अर्क, सौंफ में मिला देने से प्लीहा यकृत विकृति एव तज्जन्य रक्ताल्पता को नष्ट करने में अद्वितीय है। ½ रत्ती हिंगुल १ रत्ती स्वच्छ एलुआ की वटी बना खिलाकर पूर्ववत् प्रयुक्त, सोपद्रव कष्टार्तव को नष्ट करने मे समर्थ है।

नैर्बल्य नाशक—

कलई किए हुए पात्र में विदारीकंद स्वरस स्वच्छ किया हुआ अत्यन्त ही मंद मंद आंच से चतुर्थावशेषित घनीभूत तरल मे अर्धभाग मद्य तथा सर्वसम कोई उत्तम सुरा मिला दिन मे २-३ बार हिलाते हुए २-३ दिन के पश्चात् कुछ दिन सुस्थिर होने के लिए रख छोड़े। फिर स्थिर स्वच्छांश को नितार तथा बैठे हुए भाग को किसी मोटे कपड़े से चुवाले और प्रति ५ तोले पीछे ½ रत्ती कस्तूरी एवं १० रत्ती केशर को गुलाब जल से विघुटित खूब मिश्रित कर रख छोड़े।

यह महौषध यावतीय क्षयज कार्श्य, नैर्बल्य, अनायास रुग्ण भावना मे सफलतापूर्वक व्यवहृत होती है। मात्रा—२ चम्मच से ८ चम्मच तक।

ध्वज शैथिल्य नाशक—

शूकर वसा	रीछ की वसा	१-१ तोला
काडलीवर आयल		२ तोला
मोम		६ माशा

—गरम कर मिला घनीभूत करके। पुनः जातीफल तैल, तज तैल, लौंग तैल, धत्तूर तैल प्रत्येक ६० बूंद तथा २ तोला तेज मद्य मे विघुटित मीठा विष, टंकण लाजा, केशर, कपूर, अहिफेन प्रत्येक चार-चार आने भर को उक्त वसात्रय के साथ खूब मिलाले और व्यवहार मे लाऐ।

इसको मणि भाग छोड़ ध्वज के पृष्ठ भाग पर कुछ दिन मर्दन करने से ध्वज-शैथिल्य शीघ्रपातादि निर्मूल होते हैं। स्तम्भनार्थ एवं मैथुनानन्द के लिए अंडकोषों पर भी मर्दन करना चाहिए। कार्य के १ घण्टे पूर्व इस क्रिया को सम्पन्न कर किंचित् लिप्त-ध्वज से दोनों ओर प्रगाढ़ आनन्द की अनुभूति होती है। यदि स्थिर गुण प्राप्त करना हो तो उपरोक्त चतुर्थ प्रयोग भी कुछ दिन तक ब्रह्मचर्य व्रत पालन करते हुए व्यवहार में लाएं तो अत्यन्त ही आश्चर्यजनक गुण प्रदर्शित होता है। विगत-वय व्यक्ति भी तरुण स्पर्धी हो जाता है।

:: पृष्ठ २३४ का शेषांश ::

गण्डमाला में—

कचनार	अमलवेत	फिटकरी (लावा)
सुहागा (लावा)	हल्दी	पीपर रीठा

—प्रत्येक २॥-२॥ तोला

—सभी दवाओं को कचनार स्वरस मे खूब घोटकर उसमे पुराना गुड़ मिलाकर जङ्गली बेर के समान गोलियां बना ले।

मात्रा—प्रातः साय १-१ गोली गरम जल से सेवन करे।

गुण—कुछ दिनो तक सेवन करने से गंडमाला निर्मूल हो जाता है। साथ ही साथ यदि Dicrysticin के १५ इन्जेक्शन भी लगाले तो बड़ा ही उत्तम होगा।

वैद्य पं. बिहारीलाल शर्मा मिश्र आयुर्वेद विशारद

सरकारी आयुर्वेदिक दवाखाना, सिहोरा (भण्डारा)

"श्री मिश्रा जी ने स्वर्गीय श्री प. गोवर्द्धन शर्मा छागाणी से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया है, अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री गुलराज जी शर्मा आयुर्वेदाचार्य से चिकित्सा एव निर्माण विषयक सक्रिय ज्ञान प्राप्त किया है। नि भा आयुर्वेद विद्यापीठ की आयुर्वेद भिषक् एव आयुर्वेद विशारद की परीक्षायें उत्तीर्ण की है। कुछ समय श्री धन्वन्तरि आयुर्वेद महा विद्यालय के धर्मार्थ चिकित्सालय मे चिकित्सक पद पर कार्य करने के बाद अपना स्वतन्त्र चिकित्सा व्यवसाय किया। सम्प्रति उपर्युक्त सरकारी चिकित्सालय मे चिकित्सक हैं। आपकी सफल चिकित्सा एवं सरल स्वभाव से जनता सन्तुष्ट है। आपके सफल प्रयोगो से आप भी लाभ उठाइये।" —सम्पादक।

आमातिसार नाशक (सतपुष्पादि चूर्ण)—

सौफ	७॥ तोला
सफेद जीरा	३॥ तोला
मिश्री	११ तोला

निर्माण विधि—प्रथम सौफ को तवे पर गाय का घृत डालकर सेक ले, बादामी रङ्ग होने पर उतार कर तीनो को मिलाकर बारीक चूर्ण बना शीशी मे भरकर रख ले। यह एक दिन की मात्रा है। इस प्रकार तीन दिन सेवन करने से आमातिसार मे लाभ होता है।

पक्कातिसार नाशक चूर्ण—

आम की गुठली	जायफल
बेलगिरी	अफीम शुद्ध

—सब समान भाग

—प्रथम अफीम को छोड़ कर उपरोक्त तीनो चीजो को पानी की सहायता से पत्थर पर चन्दन की तरह अन्दाजन १॥-२ माशा घिस ले और फिर अग्नि मे सेका हुआ अर्थात् फूला की हुई अफीम १ रत्ती मिलाकर शहद के साथ चटाने से आमातिसार मे तत्काल लाभ होता है।

अग्निवर्धक योग—

बाल हरड़	निम्बू का रस
अनार का रस	चने का खार
जामुन का सिरका	—प्रत्येक २०-२० तोला
स्याह जीरा	२॥ तोला
सफेद जीरा	२॥ तोला

सोठ	काली मिर्च	पीपल छोटी
काला नमक	सैंधा नमक	अकरकरा

—प्रत्येक ५-५ तोला

निर्माण विधि—प्रथम बालहरड़ो को जामुन के सिरके आदि रसो मे भिगो दे। हरड़े दो-तीन दिनो मे भीजकर नरम हो जांयगी, बाद मे उपरोक्त द्रव्यो का कपडछान किया हुआ चूर्ण मिला दे।

गुण—यह परम पाचक और वायु को अनुलोमन करने मे अद्वितीय प्रयोग प्रमाणित हुआ है। इसी प्रकार मलावरोध को दूर करने मे भी अद्वितीय है।

मात्रा—रोगी का वल-वय अवस्थानुकूल एक या दो हरड़ व द्रवरस देवें।

कृमिघ्न सर्वश्रेष्ठ योग—

अजवायन खुरासानी	६ माशा
पलासपापडा	६ माशा
वायविडङ्ग	१ तोला
यवक्षार	६ माशा
छोटी हरड़	६ माशा
भुनी हुई हींग	३ माशा

पीपल नीम की छाया शुष्क पत्ती
सेंधानमक —प्रत्येक १-१ तोला
नीम निबोली की गिरी १॥ तोला

निर्माण विधि—इन सबका कपड़छान चूर्ण वनाकर मधु (शहद) के साथ मर्दन कर चना प्रमाण वटी वना लेवे, अथवा चूर्ण रूप में ही रखे।

समय—प्रात. सायं निम्न क्वाथ के अनुपान से दे।

कृमिघ्न क्वाथ—

त्रिफला नागरमोथा
सहजना की छाल देवदारु
मूपापर्णी वायविडङ्ग

—इन सबको २॥ तोला के प्रमाण में लेकर एक पाव पानी में क्वाथ करले और चतुर्थांश शेष रहने पर छान कर उपरोक्त दवा खिलाकर ऊपर से क्वाथ पिला देवे।

गुण—यह कृमि रोग में वहुत लाभकारी सिद्ध हुआ है। उपरोक्त दोनो प्रयोगो के सेवन करने से कैसा भी कृमि रोग क्यो न हो, अवश्य लाभ होगा।

पांडु रोग पर कुटकी योग—

—प्रात. सायं ३-३ माशे से ६-६ माशे तक की मात्रा में जल के साथ लेने से केवल कुटकी का चूर्ण ६ दिन में निःसंदेह पांडुरोग को लाभ करता है। हम इसको सरकारी आयुर्वेदिक दवाखाने में ३ साल से रोगियों को देकर लाभ उठा रहे हैं।

शेषांश पृष्ठ २२६ का

—सबको मिलाकर रख ले और खांसी तथा दमा में १ बूंद पान के साथ खावे, तुरन्त फायदा होता है।

नोट—इस प्रयोग के प्रथम की चार वस्तुएं मिलाकर पहले द्रव बनालें बाद को शेष चीजे मिलावे। पूर्ण लाभदायक है।

गृध्रसी व अर्कुम्निसा पर—

सुरंजान मीठा मुसव्वर
हर्र वड़ी का छिलका प्रत्येक १॥-१॥ तो.

—सबको पीसकर पानी से मटर के बराबर गोलियां बनावे। रात को सोते समय ४ गोली गरम पानी से खावे। प्रात. कोष्ठ शुद्ध होकर दर्द दूर हो जाता है।

प्रमेह रोग नाशक—

गोंद ववूल तज मोटी अलसी भुनी
भूसी ईसवगोल —प्रत्येक समान भाग

—चारों का चूर्ण वनाकर वरावर शक्कर मिलाकर रखे।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक प्रात' सायं दूध से।

गुण—प्रमेह को दूर करता है।

राजवैद्य पं० अश्विनी कुमार शर्मा

आयुर्वेदाचार्य
श्री बलभद्र महौषधालय, बल्देव (मथुरा)

"श्री राजवैद्य जी वयोवृद्ध अनुभवी चिकित्सक हैं। आपकी शिक्षा गुरुकुल आयुर्वेद विद्यालय वृन्दावन मे हुई। आपके पूर्वज पीयूषपाणि चिकित्सक थे तथा राजा महाराजाओ की चिकित्सार्थ राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा गुजरात आदि प्रदेशो मे जाते रहते थे। आपने भी अपने पूर्वजो से बहुत कुछ अनुभव प्राप्त किया है। आशा है आपके प्रयोगो से पाठक अवश्य लाभ उठावेंगे।" —सम्पादक।
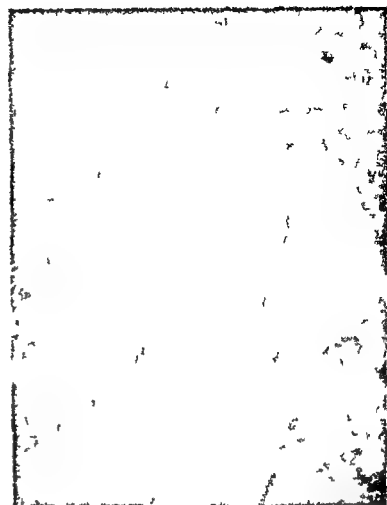
पुटपक्व विषमज्वरान्तक लौह—
(भै० रत्नावली ज्वरा०)

यह योग स्वर्णमुक्ता घटित है अत. हृदय को बल देने वाला है तथा रक्तचाप की उत्तुंग गति को भी शमन करता है। विशेषतया विषमज्वर की जीर्ण अवस्था मे जब रोगी को अत्यन्त शीत लगकर ज्वर आता है, तापमान १०४ से १०६ 'फारेनहाईट' होजाता है तथा रोगी प्रलाप Delirium करता है। रोगी को दाह पिण्डिकोद्वेष्टन, तृष्णा, मस्तकशूल आदि उपद्रव उत्पन्न करते है, तथा रोगी पुन' पुन. करवट बदलता है तब "पुटपक्व वि० ज्व० लौह" २ रत्ती की ३ मात्रा १-१ घटे के अन्तर से देनी चाहिए। इसकी एक ही मात्रा अपना चमत्कारिक लाभ १५ मिनट के अन्दर दिखाती है। तुरन्त ही शनै. शनै तापक्रम न्यून होजाता है।

यह हमारा सहस्रोऽनुभूत शास्त्रीय योग है।

मात्रा—१ से ४ रत्ती अवस्थानुसार।

अनुपान—१ लवङ्ग, सोंठ ४ रत्ती, जीराश्वेत भर्जित २ रत्ती, सैन्धवलवण ४ रत्ती, सभी द्रव्यों को शिला पर पीस कर दवा मिलादे तथा कवोष्ण जल मे घोल कर पिलावे।

प्रतिश्यायान्तक क्वाथ—

गुलबनफ्सा	गाजवा	मुलहठी
एरण्डजड़	सनाय	सोंठ
हसराज		अडूसा (वासा) जड़
तुख्म खतमी		तुख्म खुब्बाजी
उन्नाव		लिसोड़े के पत्ते

—समान भाग

—३-३ तोला की पुड़िया बनावे। अष्टावशेष क्वाथ कर छान कर पीने को दे।

प्रक्षेप—मधु आठ आने भर।

यह योग जीर्ण प्रतिश्याय की उस अवस्था मे जिसे विविध चिकित्सक क्षय की प्रथमावस्था समझते है यह क्वाथ व्योपादि वटी (शा० ध० स०) के साथ प्रयोग करने से विविध लक्षणो यथा—अतितीव्र शुष्ककास, रक्तनिष्ठीवन, फुफ्फुसपीड़ा, क्षुधानाश, अशक्ति, अरुचि, सामान्य विबन्ध आदि मे फायदा होता है। विशेषतया—जब रोगी स्वयं को श्वास रोग समझ लेता है उस समय यह योग अपना आशुगुण प्रदान करता है। रोगी को प्रात' सायं व्योपादि वटी २-२ के साथ क्वाथ पिलावे रात्रि को सोते समय "चित्रक हरीतकी" (चक्रदत्त) आधा से एक तोले तक कवोष्ण दूध से दे। शतशोऽनुभूत योग है।

श्वेतप्रदरान्तक रस—

निर्माण विधि—गंधाविरोजा लेकर किसी धातु के वर्तन में डालकर अग्नि पर पिघलावे। जब पिघल जाय तो एक हांडी मे दूध (भैंस) का भर कर ऊपर से मुंह पर कपड़ा बाध दे। पुन: उस गलित विरोजे के द्रव को कपड़े में से छानदें पुनः पुन: इसी क्रम से ३ वार करे। फिर सुखा कर समान भाग मिश्री मिलाकर चूर्णकर शीशी मे रखले।

मात्रा—१ माशा।

अनुपान—मधु ६ माशा के साथ ऊपर स धारोष्ण, गौदुग्ध।

गुण—यह योग नवीन श्वेतप्रदर की उस अवस्था में जब दाह, कटिशूल, क्षुधानाश, अशक्ति, आलस्य, चक्कर आना, योनि से कपिल तथा धूसर वर्ण का स्राव होता हो आशातीत लाभ करता है।

१ सप्ताह तक इसके साथ भोजनोत्तर "अशोकारिष्ट" (भै० र० खी०) २ तोला पीने से अव्यर्थ लाभ होता है।

नोट—विरोजा को दूध में डालने से दूध के ऊपर पपड़ी जम जायगी। उस पपड़ी को ही पुन पुन: गर्म करे।

अनिद्राहर लेप—

अण्डी की मिंगी निकाल कर उनको वकरी के दुग्ध मे घोटकर गाढ़े कपड़े पर फैलाकर शीतल ही लगावे।

यह लेप सन्निपातजन्य अनिन्द्रा, रक्तचापोद्वेगजन्य मस्तिष्क श्रम, वायुशूल, प्रलापावस्था, सञ्ज्ञानाश आदि में शीघ्र लगाते ही लाभ करता है तथा तुरन्त निन्द्रा आजाती है। विशेषकर यह लेप उन्माद व अपस्मारजन्य मस्तिष्क पीड़ा व अनिन्द्रा में आशुफलप्रद है।

रक्तार्शहर चूर्ण—

लाल फिटकरी का फूला	५ तोला
असली नागकेशर	५ तोला
सेलखरी	५ तोला
छोटी इलायची के दाने	२।। तोला
छोटी हरड़	५ तोला

—सबका कपड़छान चूर्ण करके शीशी मे भरले।

गुण—यह विशेषकर रक्तार्श मे तथा अन्य किसी भी प्रकार के रक्तस्राव यथा योनिज, मुखज तथा अन्य किसी आघातजन्य रक्तस्राव मे भी लाभकर है।

मात्रा—१ से ३ माशा।

अनुपान—नवनीत या मलाई १ तोला मे मिश्री डालकर।

समय—प्रातः सायं, दिन मे २ वार।

नोट—भोजनोत्तर यदि द्राक्षासव भी ले तो अधिक उपयोगी रहे।

:: पृष्ठ २३७ का शेषांश ::

मधुमेह पर—

गुड़मार बूटी का पंचाङ्ग अथवा केवल पत्तों का चूर्ण	३ माशा
शुण्ठी चूर्ण	१।। माशा
जामुन की गुठली का चूर्ण	१।। माशा

—इसकी दो पुड़ियां बनाये। १ पुड़िया प्रातः व १ पुड़िया साय पानी के साथ अथवा विना शक्कर के दूध के साथ दें। कुछ दिनों सेवन करने से अवश्य लाभ होगा।

आचार्य श्री कमलापति शास्त्री B. A.

साहित्यायुर्वेदाचार्य काव्यतीर्थ, व्याकरणतीर्थ,

जहानावाद (गया)

"आचार्य श्री कमलापति शास्त्री का जन्म २२ जुलाई १६२३ ई० मे गया जिला के मुबारकपुर नामक ग्राम मे एक सम्भ्रान्त ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आपके पितामह स्वर्गीय वैद्यराज श्री प० शिवानन्द जी मिश्र संस्कृत के विद्वान एवम् आयुर्वेद के सुविख्यात चिकित्सक तथा इनके पिता स्वर्गीय प० सोमेश्वर मिश्र जो संस्कृत हिन्दी के अच्छे विद्वान एवम् सुकवि थे।

श्री शास्त्री जी ने प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की थी। जिसमें संस्कृत, आयुर्वेद एवम् हिन्दी की ओर विशेष रुचि रही। इनकी विशेष शिक्षा काशी मे ही हुई है। काशी में वैद्य प्रवर श्री त्रयम्बक जी शास्त्री की सेवा मे कुछ काल रहे एवम् क्वीन्स कालेज तथा काशी विश्वविद्यालय की परीक्षायें दी, आप साहित्य, आयुर्वेदाचार्य, काव्य व्याकरणतीर्थ, वेद शास्त्री, साहित्य, आयुर्वेदरत्न, बी ए आदि परीक्षायें काशी, पटना, कलकत्ता एवम् प्रयाग से उत्तीर्ण कर चुके हैं। आप चिकित्सक के साथ एक योग्य कवि हैं। इन दिनो आप जहानावाद में आयुर्वेद प्रशिक्षण संस्था के आचार्य है तथा उदीयमान चिकित्सक माने जाते हैं।" —सम्पादक।

चर्मरोग नाशक मलहम—

गन्धक	तूतिया	कमलागुण्डी
मुर्दाशङ्ख	मैनसिल	धूना
गन्धाविरोजा		कपूर

—प्रत्येक १-१ तोला

मोम देशी १० तोला

निर्माण विधि—गरी का तैल (नारियल के तैल) १० तो में मोम को गरम कर उसमे धूना और गन्धा-विरोजा को डाल दवे जब मोम मे दोनो घुल मिल जांय तत्पश्चात उपर्युक्त दवाओ को भी मिलाकर एक बडे वर्तन मे जल भर कर उसी मे इन सभी मिश्रित दवाओ को डाल दें और पानी वाले वर्तन की दवा को खूब एक चम्मच या लकड़ी से चलाते जाये जब मक्खन की तरह सभी दवाऐ पानी के संयोग से दीखने लगे तब उनको सावधानी से निकालकर डिब्बे में रख ले।

गुण—यह मलहम सभी प्रकार के घाव (व्रण) एक्जिमा, खुजली आदि के लिए रामवाण है।

वादी बवासीर मे—

वनलहसुन २ तोला

सफेद धूना २ तोला

—दोनो को एक साथ मिलाकर वादी बवासीर मे कुछ दिनों तक लगाने से लाभ हो जाता है।

—शेषांश पृष्ठ २२६ पर।

कविराज श्री दिव्यकुमार साहू

आयुर्वेदाचार्य सिद्धान्तशास्त्री

जनपद-चिकित्सक-आश्रमपुर पो. लाखमरा (सम्बलपुर)

"श्री कविराज जी उडीसा प्रान्त के सम्बलपुर जिले के 'पान-गोरा' ग्राम के निवासी हैं। वैद्यक व्यवसाय उनकी पैतृक देन है। हिन्दी, बंगाली, उडीसा, सस्कृत-अग्रेजी व उर्दू भाषाओ के योग्य विद्वान है। आप नृसिंह नाथ के वनो मे बहुत घूमे है। जहा से अनेक जडी-बूटियो का अन्वेषण किया है। उडिया भाषा मे आपने विविध पुस्तको का लेखन किया है। आपको एक ताडपत्र पर लिखित पुराना आयुर्वेद ग्रन्थ प्राप्त हुआ है जो अप्रकाशित हैं। ये योग उसी के दिये जाते हैं, गर्भिणी स्त्री के रोगो पर तथा यक्ष्मा पर सुन्दर योग हैं।" —सम्पादक।

गर्भिणी रोग पर—

अभ्र रसायन—यह प्रयोग पुराने ताड़ पत्रग्रन्थ मे है तथा अनेकों बार इसकी परीक्षा की जा चुकी है।

सोंठ	नागकेशर	दालचीनी
कपूर	काकड़ाश्रृङ्गी	रससिन्दूर
छोटीइलायची		जायफल
जावित्री	सफेदचन्दन	लौंग

—यह सब समान भाग

अभ्रकभस्म ३ भाग

—इन सबको कूट-छानकर पान मे मिलाकर वटिका बनाना। प्रत्येक वटिका का आकार प्राय. एक लाल गु जा (रत्ती) के बराबर का।

मात्रा—२ से ४ गोली तक।

अनुपान—गाय के दूध के साथ।

गुण—गर्भिणी स्त्री के समस्त रोगों मे प्रथम मास से द्वादश मास पर्यन्त सेवन किया जाता है गर्भिणी के समस्त रोगों मे कब्जियत, कृमि, वात, विषमज्वर, अजीर्ण, भ्रूण बालरोग, इत्यादि समस्त प्रकार के रोग दूर होते है।

कृमि—

द्रोणपुष्पी (गूमा) के पचाङ्ग का स्वरस	१ तोला
गोल मिर्च (काली मिर्च)	८ दाना
चीनी	३ माशा

—शुद्ध जल से पीस कर १ खुराक पिलाना। ३ खुराक पिलाने से समस्त प्रकार का कृमि रोग दूर होता है। पूर्ण वयस्क के लिए पूर्ण १ खुराक व बच्चों के लिए थोड़ी मात्रा में दिया जाना चाहिये।

निमोनिया—

पाताल गरुड़मूल	३ माशा
कालीमिरच	८ दाना

—गरम पानी मे पीसकर पिलाने से निमोनिया (वक्षस्थल का कफ) दूर होता है। परीक्षित है।

यक्ष्मा—

निदान या लक्षण—याने फेफडा मे पककर घाव होजाता है एव खून, पीव दोनो जमा होकर,

दुर्गन्ध आती है और खांसते समय बदबू जाहिर होती है तथा ज्वर व नस-नस मे दर्द होता है। पार्श्व मे पीड़ा होती है।

इस रोग के लिए प्रकाशित ग्रन्थों मे तैल, वटिका इत्यादि का वर्णन है। किन्तु निम्न योग का प्रयोग दो प्रकार का है—१-वाह्य प्रयोग २-स्थानिक प्रयोग। उपरोक्त जितनी चिकित्सायें हैं वे सब वाह्य प्रयोग है। पुराने ताड़पत्र आदि ग्रन्थो मे धूम्रपान एवं रस चिकित्सा का वर्णन है, किन्तु आधुनिक पुस्तको मे इसका इस प्रकार का वर्णन नहीं है।

यक्ष्मा की धूम्रपान चिकित्सा—

१ प्रथम में निम्न काथ १४ रोज दोनो समय पिलाना होगा जिससे ज्वर दूर हो जाता है।

उपचार पाचन—

दशमूल की दसो औषधियां		कुटकी
जवासा	रक्तचन्दन	हरड़
गिलोय	पाठा	सोंठ
धनियां	खस की जड़	इन्द्रजव

—यह २० वस्तुयें प्रत्येक समान भाग लेकर कूट कर क्वाथ बनाना। इस क्वाथ मे बोडन्तरा बटिका● ४ मिलाकर पिलाना। दोना समय पिलाने से बुखार हट जाता है।

● बोडन्तरा बटिका—शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध मनसिल शु टकण (सुहागा) शु. हिंगुल —चारो समान भाग। अद्रक रस मे १ दिन घोटकर मुंग बराबर गोली बनाले। यह सर्वज्वरनाशक प्रसिद्ध रस है।

उपचार धूम्रपान—

राजहंसमूल	२ तोला

—कूटकर १ सेर पानी मे क्वाथ बनावे। आधा पाव शेष रहने पर छान ले। इसमें १॥ माशा रससिंदूर घोल दे। कुलयारी (कचनार) की पत्ती ४ नग उसमे डालकर पुन: आग पर चढ़ादें। काढे का जल सूख जाय किन्तु पत्ते न जलें। पुन: पत्ते निकाल कर छाया मे सुखाले और सूखने पर इन पत्तों को हाथ से मसल चूरा करलें और सराई (साल वृक्ष के) पत्ते मे ४-५ बीड़ी बनाले।

इस बीड़ी को दिन मे २ बार रोगी को इस प्रकार पिलावे कि इसका धुआं अन्दर जाये। दो तीन दिन मे, किसी-किसी को चार दिन मे रोगी का मुंह फूल जायगा, मुंह से पीव खून मे यक्ष्मा के मृत कीड़े निर्गत होते है। जब पीव आदि निकलने लगे तब धूम्रपान बन्द करदें। निर्गमन काल मे खाने को गाय का दूध व चावल दे। पर्याप्त निकल जाने पर दूध गुड मिलाकर पिलाना, इससे निर्गमन बन्द होजायगा। बाद में बकरे का मांस का जूस देवे।

गुण—इसका धुआं रोगी के फेफड़ों मे जहां घाव, दूषित रक्त व पीव आदि है, उसी मे पहुँचेगा और कीटाणु मर जांयगे, घाव सूखने लग जायगा तथा क्रमशः रोग नष्ट होगा। मुंह मे रक्त या दूषित पीव आदि प्रायः २ सेर तक निकल जाता है। यह परीक्षित है।

:: पृष्ठ २५४ का शेषांश ::

हरतालभस्म	६ माशा
हींग ३ माशा नमक काला	१ माशा

—अपामार्ग (लाल) के पत्तो मे घोटकर गुंजा प्रमाण गोलियां बना लीजिये।

मात्रा—बलाबल देखकर आधा रत्ती से १२ रत्ती तक मां के दुग्ध मे दो-दो तीन-तीन घंटे से दीजिए।

यदि पेट पर फूलन हो तो इसी गोली को जल में पीस कर पेट पर लेप कराव दीजिए।

श्री वैद्य दुर्गाशंकर गर्ग आयुर्वेद-विशारद

नवजीवन फार्मेसी, दरगाह बाजार, अजमेर।

पिता का नाम— हकीम रामचन्द्र जी गर्ग

आयु—३६ वर्ष जाति—अग्रवाल वैश्य

"श्री गर्ग महोदय नि भा आयुर्वेद विद्यापीठ से आयुर्वेद विशारद उत्तीर्ण हैं। उच्च चिकित्सक के नाते आपको अनेक प्रशसापत्र व स्वर्णपदक प्राप्त हैं। आपके पिता जी भी चिकित्सक थे, उनकी छत्र-छाया में ही अपनी यूनानी चिकित्सा शैली मे योग्यता प्राप्त की। सामाजिक कार्यो में सदैव भाग लेते रहे हैं। आप एक योग्य लेखक, वक्ता व कई भाषाओ के ज्ञाता हैं। पाठको की सेवा मे आप अपने योगो को अर्पण करते रहे हैं। यहां आपके चार सफल प्रयोग प्रकाशित कर रहे हैं।"

—सम्पादक।

श्वास (दमा) रोग पर—

विष्णुक्रान्ता	२ तोला
अडूसे (वासा) के पत्ते	२ तोला
मधकाष्ठ (मुलहठी)	१ तोला
काली मिर्च	१ तोला
नागरमोथा	३ तोला
शाहतरा (पित्तपापडा)	२ तोला

—आधा सेर जल मे रात को सब औषधियां भिगो दे, प्रातः क्वाथ की विधि से औटावे जब १॥ छटांक पानी रह जाय तब उतार कर छान ले और उसमें २ तोला मधु मिला करके रोगी को पिलावे। कुछ दिनों में ही अवश्य लाभ होता है।

रक्तशुद्धि पर—

सत्यानासी के बीज खूब बारीक पीसकर पानी के साथ चणक प्रमाण गोलियां बनाले। रोगी को १ गोली प्रात. व १ गोली सायं ताजा पानी के साथ दे।

नोट—यदि उक्त प्रयोगो मे गन्धक आमलासार शुद्ध और भी शामिल करदें तो अधिक हितकर होगा।

इसी प्रकार कोई फोड़ा ऐसा हो गया हो जो किसी चिकित्सा से लाभ न होता हो ऐसी अवस्था मे सत्यानासी के बीजों को बारीक पीस कर पानी मे मिलाकर मरहम के समान फोड़े पर लेप कर दें, ३-४ दिन मे फोड़ा बिल्कुल आराम हो जायगा।

रक्त दुग्धा पर—

रक्तदुग्धा वह रोग है जिसमें स्त्री के दूध के स्तनों से दूध के साथ रक्त आने लगता है।

पाढ़	देवदारु	चिरायता
मोरवेल	कुटकी	गिलोय
सोंठ	नागरमोथा	इन्द्रजौ

—प्रत्येक समभाग

—लेकर बारीक चूर्ण करले।

मात्रा—६ माशा चूर्ण मधु मिले हुए उष्ण जल से एक सप्ताह सेवन करावे।

अपथ्य—बासी अन्न, अति तरल पदार्थ तथा रूक्ष भोजन नहीं कराये।

—शेषांश पृष्ठ २३३ पर।

श्री वैद्य हरि रामजी वराटे

श्रीशंकर आयुर्वेद सेवाश्रम, भुसावल।

पिता का नाम— श्री रामजी वराटे

आयु—६१ वर्ष जाति—लेवा हिन्दू

'श्री वराटे जी आयुर्वेद के विद्वान्, वयोवृद्ध एवं अनुभवी चिकित्सक हैं। आपको आयुर्वेद विद्यादान का चाव है अतएव सदैव ४-६ विद्यार्थी आपसे आयुर्वेद-ज्ञान प्राप्त करते रहते हैं। आपने आंग्ल मिश्र आयुर्वेद विद्यालय सतारा तथा अ० भा० विद्यापीठ से आयुर्वेद विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की हैं। आपके निम्न प्रयोग उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

मगज शांति मधु—

गुलैठी १० तोला
बेलची (इलाइची) दाने तज तमालपत्र
असली नागकेशर जायफल
जायपत्री लौंग वंशलोचन
खसखस —प्रत्येक २॥-२॥ तोला

—इन द्रव्यों को कूट-कपड़छान कर चूर्ण बनावें। पश्चात—

बादाम मगज धनिया का मगज
खरबूजे के बीजों का मगज 'ककड़ी के बीजों का मगज' 'तरबूज के बीजों का मगज'
'घीया तुरई के बीजों का मगज' 'सौंफ का मगज'
बीदाना अनार अरण्डी के बीज की गिरी (भीतर की झिल्ली निकली हुई)
—प्रत्येक १०-१० तोला

—इन सबको पत्थर पर पीसकर बारीक पिट्ठी सी बनावें। पश्चात् किंचित घृत में भून लेवें और उपरोक्त चूर्ण में मिला दें।

असली केशर सुवर्ण माक्षिक भस्म
अभ्रक भस्म प्रवाल भस्म
—प्रत्येक १-१ तोला

अमृतासत्व २॥ तोला
मुक्तापिष्टी ३ माशे
मिश्री २० तोले
विशुद्ध मधु १ सेर

—सबको एक चीनी की बरणी में भरें। औषधि अच्छी तरह मिलादें। बरणी का मुख बन्द करके अनाज की कोठरी मे ७ दिन तक बन्द कर दें। आठवे दिन बरणी को कोठरी के बाहर निकाल कर कलछी से सब औषधि मिलादें।

मात्रा—प्रातः सायं १-१ तोला औषधि को खावें। ऊपर से दूध या जल भी पिया जा सकता है।

अपथ्य—तैल, लालमिर्च, गुड़ एवं खटाई वर्जित हैं। कब्ज हो तो रात को सोते समय त्रिफलादि विरेचन चूर्ण ३ से ६ माशे मात्रा में पानी के साथ लेवें।

गुण—उदर रोग, प्रदर रोग, नेत्रों के रोग एवं सिर के रोग तथा 'ग्लॉकोमा' या पटल की बीमारी में अत्युत्तम है। निरन्तर कुछ दिनों तक इस प्रयोग के सेवन करने पर सिर की पीड़ा तो जन्म भर के लिए र दूर हो जाती है।

त्रिफलादि विरेचन चूर्ण—

त्रिफला	छोटी हरड़
सुरवारी हरड़ की छाल	मुलहठी
सौंफ	विशुद्ध गन्धक

—प्रत्येक ५-५ तोले

—इनको कूटकर कपड़छान करे।

मात्रा—३ से ६ माशा चूर्ण रात को सोने के समय घी के साथ दें। या पानी के साथ देवे।

उदररोगहर वटी—

निर्माण विधि—उत्तम और बड़ी १। सेर हरड लेकर ५ सेर गोमूत्र मे पकावे, जब वह सीज जाय तब उतारकर उनकी गुठली निकालकर फेक दे और गूदे को पत्थर पर पीसकर पिट्ठी सी बना ले।

पश्चात् उसमे—

सैंधानमक		संचर नमक
सांभरनमक	सज्जी	जवाखार
सौंठ	कालीमिर्च	छोटीपीपल
अजवायन	अजमोद	चव्य
चीते की जड़ की छाल		कलौंजी
शरपुङ्खाक्षार		सूरण क्षार

—प्रत्येक २-२ तोला

घी मे भुनी असली हीरा हींग	१ तोला
निम्बू रस	४० तोला

—सब मिलाकर खूब खरल करें और ३-३ माशे की गोलियां बनालें। छाया मे सुखा ले। जब खूब सूख जांय तब कांच के पात्र मे भरकर रख दें।

उपयोग—प्रतिदिन प्रातःकाल १ गोली शीतल जल से सेवन करें।

गुण—इसके सेवन से बवासीर, मन्दाग्नि, अजीर्ण, आध्मान, बढ़ी हुई भयङ्कर प्लीहा, आनाह, गुल्म आदि रोगों मे लाभ होता है। सम्पूर्ण उदर रोगो की यह उत्तम औषधि है।

सूर्यावर्तहर योग—

आक के एक नये निकले हुए अंकुर को ६ माशे गुड़ के भीतर रखकर गोली बना लेवे। गुड़ कम ज्यादा कर सकते हैं। गुड़ अच्छी तरह लिपट सके उतना लेना चाहिए। फिर सूर्योदय के २ घंटा पहले रोगी को निगलवा देने से (न निगल सके तो चबा देने से) सूर्यावर्त और अर्धावभेदक एक ही दिन में दूर हो जाता है। यदि शिर दर्द कुछ शेष रह गया हो तो दूसरे दिन फिर एक गोली खिला देवें। आवश्यकता पर तीसरे दिन भी दे सकते हैं। सूर्योदय होने पर बादाम का हलुआ या मगजशांत मधु खिलावे। यह न मिले तो गोदुग्ध देवे।

करंजवटी—

करंज की गिरी	१० तोले
शुद्ध गन्धक	१० तोला
शुद्ध फिटकरी	५ तोला
गोदन्ती हरताल भस्म	१० तोले
महासुदर्शन घनसत्व	५ तोला
असली अतीस	५ तोला

—इन सब औषधियो को लेकर निम्ब के छाल के क्वाथ की सात भावनाये देवे। २-२ रत्ती की गोलिया बनाकर छाया मे शुष्क करे।

उपयोग—प्रतिदिन सुबह और शाम १-१ गोली जल के साथ सेवन करने से विषमज्वर (मलेरिया) आदि सभी ज्वर शीघ्र नष्ट होते है। ज्वर पर अनुभूत है।

पौष्टिक चूर्ण—

शतावर	असगन्ध	सफेदमूसली
कौंच के बीज	गोखरू	अमृतासत्व
आमला	—प्रत्येक ५-५ तोला	

—सबको एकत्र मिलाकर रखें।

उपयोग—इसमे से ३ से ६ माशे की मात्रा मे मिश्री मिलाकर दूध के साथ खाने से अतीव बलवीर्य की वृद्धि होती है।

वैद्यभूषण, वैद्य मार्तण्ड कविराज ब्रह्मानन्द चन्द्रवंशी

स्थान—बरोदा, पो० पनागर (जबलपुर)

"श्री चन्द्रवंशी जी ने आयुर्वेद एवं काव्य-रचना की शिक्षा अपने पूज्य ज्येष्ठ भ्राता कविवर बाबू बद्री प्रसाद जी से प्राप्त की। सम्वत् १९८१ मे आयुर्वेद विद्यापीठ कानपुर की वैद्य मार्तण्ड परीक्षोत्तीर्ण हुए, मध्यप्रान्तीय आयुर्वेद मण्डल कटनी से "निदान-निर्णय विषये" प्रथम श्रेणी का प्रमाणपत्र लेकर सम्मानित हुये। सामयिक पत्र सुकवि, कवि, कवीन्द्र, रसराज, धन्वन्तरि, अनुभूत योगमाला, राकेश, इत्यादि मे लेख, कवितायें समय समय पर प्रकाशित होती आ रही हैं। स्वरोदय विद्या द्वारा व्याधि और जीवन मरण इत्यादि बता देते हैं। जबलपुर वैद्य सभा के उपमंत्री हैं। चिकित्सा सम्बन्धी कई एक पुस्तकें भी लिखी है जो प्रकाशित हो चुकी हैं।"

—सम्पादक।

प्लेग पर—

शार्ङ्गधरोक्त संजीवनी वटी	आधी रत्ती
नीम की छाल का रस	१॥ माशा

—दोनों को मिलाकर प्रातः, दोपहर और सायंकाल देना चाहिए। यदि खांसी भी आती हो तो १॥ माशा तालीसादि चूर्ण मिलाकर उपरोक्त औषधि मधु के साथ देनी चाहिए। यदि वमन का उपद्रव हो तो केवल संजीवन वटी शक्कर के शर्बत के साथ देनी चाहिए अथवा १ माशा सितोपलादि चूर्ण भी मिलाकर देना अच्छा होता है। डाक्टरी स्ट्रेप्टोमाइसीन इंजेक्शन [illegible] २४ घण्टों में एक बार देने से आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देता है।

पथ्यापथ्य—पीने के लिये औटाया हुआ जल देना चाहिए, सबेरे का औटाया हुआ शाम तक और शाम का औटाया जल रात्रि में देना चाहिए। रोगी को भूख लगना आरम्भ होवे तो तुलसी की चाय बनाकर देना अच्छा है। चाय मे थोड़ी शक्कर या ग्लूकोज मिलाना चाहिए।

प्लेग की गिल्टी पर लगाने की पट्टी—

गंधा विरोजा	१ पाव
नीलाथोथा महीन पिसा हुआ	१ तोला

—गंधाविरोजा को थोड़ा गर्म कर नीलाथोथा भलीभांति मिलादें, औषधि तैयार हो गई। अब गिल्टी के आकार की साफ कपड़े की पट्टी काटलें, पट्टी पर औषधि चुपड़ कर थोड़ा सेक कर गिल्टी पर चिपका देवें। यह पट्टी अच्छी तरह चिपक जाती है निकालने पर भी नहीं निकलती है। इसके ऊपर गर्म रुई से समय समय पर सेकते जाना चाहिए। जब गिल्टी बैठ जावे तब पट्टी अग्नि की गर्मी दिखा कर अलग कर देना चाहिए।

आयुर्वेदाचार्य श्री दयानन्द पाठक D. I. M. S.

भूतपूर्व शिक्षक-ऋषिकुल आयुर्वेद कालेज, हरिद्वार
प्रधान वैद्य—राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय मु पो. बल्लिया (बरेली)

"श्री पाठक जी ने क्विन्स कालेज बनारस से व्याकरण की मध्यमा, इंग्लिश की हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की तथा उर्दू का ज्ञान भी प्राप्त किया। ऋषिकुल आयुर्वेद कालेज से *D. I. M. S.* की डिग्री प्राप्त करने के उपरान्त उसी कालेज मे अध्यापक नियुक्त हुए। कविराज ज्ञानेन्द्रनाथ सेन एव श्री गणेशदत्त जी सारस्वत से क्रियात्मक अनुभव प्राप्त किया। फिर जिला बोर्ड चिकित्सालय में प्रधान वैद्य के पद पर रहे और १९५० में विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की। डी आई एम. वालो को राजकीय सेवा करते हुए भी डी आई एम एस परीक्षा मे बैठने की अनुमति मिल जाने से उसे भी आपने उत्तीर्ण किया। आपने जो ४ प्रयोग प्रकाशनार्थ प्रेषित किए हैं वे अपने पिता जी श्री पं० गंगासहाय जी पाठक से प्राप्त किए। आपकी चिकित्सा भी में अनेक रोगियो पर सफल प्रमाणित हैं।" —सम्पादक।

बाल रोगहरी वटी—

वंशलोचन, बेलगिरी, अतीस, काकड़ा सिंगी, नागरमोथा, पीपल छोटी, वच सफेद, सेंधानमक, काला नमक —प्रत्येक २-२ तोला

धनियां, सुगन्ध बाला, जावित्री, काली मिर्च, मस्तङ्गी रूमी, मुलहठी, इन्द्रजो मीठा, सुहागा भुना, पोदीना सूखा, गुलाब के फूल, कुलञ्जन, हींग भुनी, जहर मोहराखताई —प्रत्येक ६-६ माशा

जायफल दक्षिण — २ नग

छोटी इलायची के बीज, कपूर, केशर —प्रत्येक ३-३ माशा

अनार की कली (जिनका मु ह बन्द हो) — ५ नग

अफीम — १ माशा

—अर्क गुलाब में खूब घुटाई कराकर चना प्रमाण वटी बनाले।

अनुपान—मां का दूध अथवा तुलसीपत्र स्वरस।

गुण—बच्चो के ज्वर, कास, छर्दि, अतिसार, शोथ, दौर्बल्य, उदरशूल, विबन्ध और अजीर्ण आदि दूर होते है।

प्रमेह हर—

सालिम मिश्री	१ तोला
मूसली सफेद	२ तोला
कतीरा गोंद	४ तोला
ईसबगोल की भुसी	८ तोला

—सबको कूट-पीस कपड़छान करके रक्खे।

मात्रा—बलाबलानुसार निर्धारित करे।

अनुपान—दूध अथवा जल में घोलकर ले।

गुण—अनुलोमक, पाचक, अग्निदीपक और शुक्र-दोषहर है।

सर्पदंश पर अर्क दुग्ध—

दंश स्थान को थोड़ा कुरेद कर अर्क दुग्ध लगाना प्रारम्भ करें और जब रोगी व्रण में पीड़ा से चिल्लाने लगे, लगभग एक छटाक रक्त निकल जावे तब ठहर जावें। शून्यता एवं तन्द्रा प्रतीत होने पर फिर लगावें। वमन के लिये रीठा का चूर्ण घी के साथ सेवन करावें। विषैले सर्प का ज्ञान होने पर गेसे पीस कर खिलावें, प्यास के लिए केले की जड का रस पिलावें तथा घृत भी पिलाते रहें।

अनुभव—

बड़ागांव जिला कानपुर में लल्लू की स्त्री को दो गज से भी अधिक लम्बे काले फन वाले Cobra सांप ने काटा, वह इसी चिकित्सा से ठीक हो गई। बदायूं के स्टेशन मास्टर की माता जी को कछला गंगा जी पर धर्मशाला में काटा वह भी इसी चिकित्सा से ठीक हो गई। गण्डहा में मास्टर शिवचरनलाल को कोहलियागडैल ने काटा जिसके काटते ही कुछ देर उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं दिया. जब सर्प छिप गया तब उन्हें दिखाई पडने लगा। जिला बदायूं में तहसील दातागंज में सर्प बहुत होते हैं, अतः गण्डहा में कई रोगी मिले सभी ठीक हो गये। जब गण्डहा राजकीय चिकित्सालय से स्थानान्तरण हुआ बच्चे और सामान की गाड़ियां प्रस्थान कर चुकीं, उसी समय पं० निरञ्जनलाल जी के भतीजे जगदीशनारायण को १ बड़े काले सर्प ने काट लिया उनके बन्द लगाने पर मैं पहुंचा। सामान और बच्चे मास्टर शिवचरनलाल जी ने बिसौली पहुंचाये मुझे वहीं रहना पड़ा। बन्द से नीचे के सब हाथ में फफोले पड़ गये। इस चिकित्सा से वह बच गये किन्तु हाथ सूख कर अस्थि शेष रह गया। मैं शिवपुर ग्राम जिला उन्नाव से जब बिसौली आया तो मुझे हाथ दिखलाया गया. मैंने लाक्षादि तैल और विषगर्भ तैल लगाने को कह दिया। हाथ में फिर मांस बढ़ गया और आज तक ठीक है।

बालातिसार नाशक—

बच्चों के घातक अतिसार में जब बड़े वेग से अतिसार होता है आंखें बैठ जाती हैं। श्वास बढ़ने लगता है तब—

श्वेत पर्पटी — आधी रत्ती
मृगशृङ्ग भस्म — आधी रत्ती
सिब्राजौल — चौथाई टिकिया

—यह एक मात्रा है। ऐसी दिन भर में ४ मात्रा,

अर्क सौंफ — १० बूंद
अर्क पोदीना — ३ बूंद
अर्क पाषाण भेद — ३ बूंद
क्लोरोडीन — ५ बूंद

—मिलाकर १ मात्रा है, यह भी पूर्वोक्त औषध के २ घंटे के अन्तर से ४ मात्रा दिन में दें। यदि पेट भी फूला हो तो दारुषटादि* लेप (सु० स.) लगावे।

* देवदारु, वच, कूठ, सोया, हींग, सेंधानमक काजी में पीस कर लेप करें।

श्री वैद्य शरद कुमार जी मिश्र 'शरद'

सम्पादक—जागरण, सहारनपुर।

"आपका मूल निवास-स्थान देवबन्द तथा जन्म स्थान देहरादून है। वैद्यक व्यवसाय आपका परम्परागत है, तथा १६४० से चिकित्साकार्य प्रारम्भ किया है। आप एक उच्चकोटि के साहित्यज्ञ भी हैं, पत्रकारिता से प्रारम्भ से ही प्रेम रहा है अत. विविध पत्रो का सम्पादन किया। वर्तमान में सहारनपुर से 'जागरण' का सम्पादन करते हैं और आरोग्य भवन रसशाला के डाइरेक्टर हैं। स्वास्थ्य से सम्बन्धित तथा आयुर्वेदिक अनेक सस्थाओ के सदस्य. मत्री, उपमत्री आदि पदो का कार्यभार संभाले हुए है। आप एक साहसी नवयुवक कार्यकर्ता हैं। आपके अत्यन्त लाभप्रद ४ योग यहा दे रहे है।"

—सम्पादक।

रक्तस्राव हर— १

यह योग मुझे राजपुरोहित नहान से प्राप्त हुआ था उन्होंने कुछ योग मुझे और भी दिए थे पर दो योगों को छोड़कर और योग बहुत कीमती होने पर मैं उनका लाभ नहीं उठा सका हूँ। अपने योग की अधिक प्रशसा नहीं करनी चाहिए। फिर भी मैं यह कहे बिना न रहूँगा कि इस योग को मैं चेलैंज के साथ बरतने मे सफल हुआ हूँ। योग मेरी रसायनशाला का रजिस्टर्ड पेटेन्ट योग है। जहां डाक्टर और इन्जेक्शन फेल होगए हो वहां भी योग कभी चूका नहीं।

फिटकरी	५ तोला
सुरमा काला	१० तोला
कत्था सफेद	५ तोला
संगजराहत	५ तोला
अकाकिया	२० तोला
दम्मुल अखवायन	१२॥ तोला
गोंद बबूल	१२॥ तोला
कतीरा सफेद	१२॥ तोला
समुद्रझाग	२५ तोला
मुक्ताशुक्ति	२० तोला
प्रवाल शाखा	५ तोला
मुक्ता	२॥ तोला

निर्माण विधि—सब चीजो को अलग अलग कूट पीस कर कपड़छान चूर्ण करलो और फिर फिटकरी, सुरमा, संगजराहत, मुक्ताशुक्ति, दम्मुल अखवायन को अर्क गुलाब मे सुरमे की तरह बारीक करलो। सूख जाने पर बाकी चीजो को मिलाकर फिर खरल कर एक जान करलो, जितना बारीक होगा उतना ही लाभदायक है।

मात्रा—४ रत्ती से २ माशा तक आवश्यकतानुसार २ माशा से ८ माशा तक दिन रात मे।

सेवन विधि—रक्तप्रदर, गर्भस्राव आदि मे चावलो के पानी के साथ या कुम्हार के लाये हुए जल के साथ देना चाहिए। रक्तपित्त, नक्सीर या मुंह से आने वाले रक्त मे पेठे के स्वरस से, आवले के स्वरस से या जल से देना चाहिए। तात्कालिक आवश्यकता मे इसे ताजे जल के साथ आध-आध घंटा के अन्तर से दे। खून रुकने पर

समय बढ़ाकर ३ या ४ घंटे का बीच देदे ।

उपयोग—यह योग शरीर के किसी भी भाग से जाते हुए रक्त को तत्काल रोक देता है। मैंने इसे विशेषतः रक्तप्रदर, रक्तपित्त, नकसीर, रक्तार्श और गर्भश्राव के रक्त रोकने में ८५% सफल पाया है ।

नागकेशर योग—

नागकेशर	५ तोला
असली वंशलोचन	५ तोला
छोटी इलायची के बीज	२॥ तोला
असली केशर	६ माशा
मिश्री कुञ्जा	१५ तोला

निर्माण—मिश्री को छोड़ कर सभी वस्तुओं को गुलावजल में सुरमे की तरह खरल करें, सूख जाने पर मिश्री मिलाकर खरल कर शीशी में भरकर रख लेवे ।

मात्रा—३-३ मात्रा प्रातः सायं गौदूध के साथ ।

नोट—ध्यान रहे दूध उसी गाय का हो जिसका बछड़ा मरा न हो, गाय काली भी हो तो और भी लाभकर है ।

गुण—यह योग बच्चे पैदा होकर मर जाते हों, (मृत वत्सा) रोग में या गर्भ रह कर गिर जाने में लाभकारी है। इसे गर्भ रहने से पूर्व से ही शुरू कर बच्चा होने तक देते रहना चाहिए ।

अश्मरी तोडक—

पाषाणभेद बूटी	१ पाव
कलमी शोरा	५ तोला
नवसादर सत्व	२॥ तोला
बेर पत्थर	५ तोला
मूलीक्षार	५ तोला
फिटकरी लाल	२॥ तोला

—सबको मूली के पत्तों के स्वरस में घोटकर सुखालें और फिर एक ऐसी हांडी में भरें जो दवा भरने के बाद तीन हिस्सा खाली रहे । मुख-मुद्रा कर गजपुट में फूंक दे और स्वांग शीतल होने पर निकाल कर मजबूत कार्क की शीशी में भर कर रक्खें ।

मात्रा—१ रत्ती से ४ रत्ती तक, दिन में तीन बार तक । गोखरू ६ माशा और अरहर की दाल ६ माशा के क्वाथ के साथ दें ।

गुण—इसके सेवन से पथरी टुकड़े-टुकड़े होकर निकल जाती है ।

नोट—इसमें मूलीक्षार बाजारू न होकर विश्वस्त क्षार होना चाहिए, नवसार सत्व यानी नोसादर का उड़ाया हुआ जौहर ही डालें ।

दर्दगुदा रोकने पर—

—कूकड़ी के बालों (यानी मकी के अन्दर से निकलने वाले बाल) का क्वाथ कर शहद मिला गर्म-गर्म पिलाने से दर्द गुर्दा रुक जाता है और पेशाब खुलकर आता है ।

श्री वैद्यराज सूरजमल जोशी

आयुर्वेद वाचस्पति M. Sc A.
श्री संजीवन दवाखाना, मक्सी (मध्य प्रदेश)

"आपके पिता श्री नथमल जी जोशी हकीम थे और आप १५ वर्ष की उम्र से चिकित्सा का कार्य कर रहे हैं। वैद्यराज जी पहिले सरकारी स्कूल मे प्रधान अध्यापक थे सन् १६४० से सुप्रसिद्ध तीर्थ मक्सी पार्श्वनाथ, मैनेजर के स्थान पर नियुक्त होकर तीर्थ का श्री दिगम्बर जैन औषधालय व श्री संजीवन दवाखाने का संचालन सफलता पूर्वक कर हजारो रोगियो को लाभ पहुंचाया है, आपके कार्य से उच्च अधिकारी एव जनता पूर्ण सन्तुष्ट रही है। वास्तव मे आप सेवाभावी, दयालु तथा मिलनसार हैं और जनता के कार्य मे सक्रिय योग देते हैं।"

—सम्पादक।
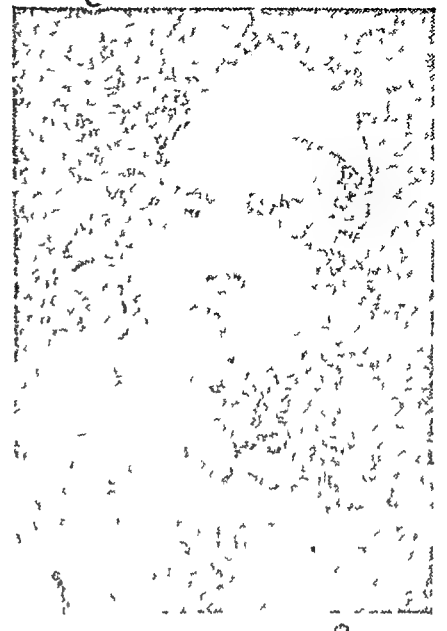
स्वादिष्ट पाचक अजवाइन—

अजवाइन	३ पाव
सोंठ	५ तोला
मिर्च काली	१० तोला
पीपल	५ तोला
सेंधानमक	२० तोला
कालानमक	१० तोला
जीरा	७॥ तोला
अमलवेत	५ तोला
धनियां	५ तोला

पीपरामूल संचर नमक तालीसपत्र
नागकेशर दालचीनी तेजपत्र
—प्रत्येक ४-४ तोला

बड़ी इलायची के बीज	२॥ तोला
अनारदाना	७॥ तोला

निर्माण विधि—अजवाइन को नीबू के रस में तीन दिन तक भिगो रक्खें। बाकी की औषधियों को महीन पीसकर कपडछान कर लेवें। इस चूर्ण मे नीबू के रस का भीगा हुआ अजवाइन डाल कर लोथ-पोथकर अजवाइन पर यह चूर्ण लग जाने पर सुखा लेवे, यह स्वादिष्ट अजवाइन तैयार हो गया।

गुण—मन्दाग्नि, बवासीर, पेट की सूजन, आमदोष, उदर विकार, तिल्ली, पेटदर्द, कृमि आदि रोग दूर होकर अग्नि को खूब बलवान बनाता है, भूख खूब लगती है।

लाल मंजन—

कपूर	२॥ तोला
फिटकरी का फूला	५ तोला
छोटी इलायची दाना	५ तोला
माजूफल	५ तोला
कत्था	१० तोला
खैरसार	१० तोला
सेलखडी	१० तोला
तुत्थ (भुना हुआ)	५ माशा
चाक मिट्टी	५० तोला
तगर	५ तोला
पतग लकडी	५ तोला

हरडे बहेड़े आंवले
सोठ मिर्च पीपल

—प्रत्येक २।।-२।। तोला

सैंधा नमक	१० तोला
गेरू	१० तोला
पोदीना फूल (पिपरमेंट)	३ माशा

—सबको कूट-पीस कर कपड़छान कर लेवें।

गुण—इस मंजन का सदैव उपयोग करने से पायरिया रोग तथा दांतों की अन्य व्याधियां नष्ट होकर दांत स्वच्छ रहते हैं।

विशालीहर लेप

(उँगली पर यह रोग होता है)

पान	घृत	सिंदूर
कालीमिर्च	कपूर	इलायची

—सब समान भाग

प्रयोग करने की विधि—काली मिर्च, कपूर तथा इलायची को कूट-पीसकर बारीक कर लें। पान पर घृत लगाकर उपरोक्त अन्य वस्तुओं का चूर्ण डालकर, मामूली तरीके से पानी के छींटे दवायुक्त पान पर देकर तर कर लेवें। बाद में यह पान विपाली पर लगाकर कपड़े की पट्टी से बांध देवें, १२ घण्टे बांधने पर उंगली पक कर उससे मवाद बहने लगता है। किसी-किसी को दो बार भी पट्टी बांधनी पड़ती है। विपाली फूटने पर घी का फोया बांधने से घाव निश्चिन्त ठीक हो जावेगा।

मसूड़े दर्द हर मंजन

(सरल प्रयोग)

जीरा (तवे पर भून लें)	४ तोला
सेंधा नमक	४ तोला

—दोनों का पावडर कर घुटाई कर लेवें।

प्रयोग—मसूड़ों पर धीरे-धीरे मंजन करें व लार टपकावें।

गुण—यह मंजन मसूड़े फूलना, दर्द, टीस होना आदि में बहुत उपयोगी है।

:: पृष्ठ २४८ का शेषांश ::

मात्रा—६ से ६ माशा तक रोगानुसार निम्नलिखित अनुपान से दें।

कामला—६ माशा चूर्ण, रक्त पुनर्नवा मूलत्वक १ तोला लेकर पाव भर जल में घोटकर इसके साथ देने से शीघ्र लाभ होता है।

पाण्डु—गरम जल या गौमूत्र से दें।

वातगुल्म—गरम जल से।

अर्श—त्रिफला क्वाथ से।

कोष्ठबद्धता, अफरा तथा शूल को नष्ट कर अग्निवर्द्धक है।

मौक्तिक ज्वरहारी—

मुक्ताशुक्ति भस्म	गौदन्ती भस्म
केशर	इलायची दाना
प्रवालभस्म	तुलसी बीज
स्वर्णमाक्षिक भस्म	सत्वगिलोय
ब्राह्मी सत्व	

—प्रत्येक १-१ तोला

—गुलाब के फूल के स्वरस, अथवा अर्क से ३६ घंटे खरल कर १-१ रत्ती की गोली बनालें।

अनुपान—तुलसीपत्र का स्वरस अथवा शर्बत अनार।

गुण—भयङ्कर मोतीझला में भी अमोघ लाभकारी है। प्रलाप बेचैनी और तृषा नष्ट कर हृदय को शक्ति देने वाला अनेको वर्षों का हमारा अनुभूत योग है। इसके साथ ही पैत्तिक ज्वर, विषम ज्वर और क्षय रोग में भी लाभकर है।

आयुर्वेदाचार्य

श्री पं. कालीशंकर वाजपेयी

व्याकरण शास्त्री

श्री आयुर्वेद मार्तण्ड औषधालय १२८ डी, कौशलपुरी, कानपुर।

"श्री वाजपेयी जी का मूल निवास स्थान बिठूर के पास विष्णुपुर ग्राम है। आपकी शिक्षा ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम ब्रह्मावर्त में हुई। आयुर्वेद का ज्ञान कानपुर में किया और नि भा. विद्यापीठ से आयुर्वेदाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। ज्येष्ठ भ्राता स्वर्गीय जानकीप्रसाद वाजपेयी से सक्रिय ज्ञान प्राप्त किया। जे के. सेन्ट्रल आयुर्वेदिक औषधालय मे आपने सफलतापूर्वक कार्य किया है। सम्प्रति स्वतत्र चिकित्सा व्यवसाय कर रहे हैं। आपने वही प्रयोग प्रेषित किए हैं जिनको आपने पर्याप्त अनुभव करके सफल पाया है।" —सम्पादक।

आंख दुखने पर—

१ छटांक घीग्वार का ताजा गूदा १ पाव गङ्गा-जल या शुद्ध कोई भी जल हो एक कटोरे में डाल कर आग पर चढादे और घी ग्वार के गूदे को उसी जल मे डाल दे। उसमें १ चने भर (अहिफेन) अफीम व १ माशे भुनी लाल फिटकारी, चार आने भर रसौत डालदे। जब धीमी आच से पक कर जल १॥ छटांक या आधा पाव रह जाय उतार कर एक दूसरे प्याले में एक साफ कपड़े से छान ले और जो ग्वार के गूदे की लुगदी कपड़े पर बचे उसकी पोटली बनाकर उसी सहते हुए गुनगुने रस में पोटली डुबोकर आख के ऊपर सेकते रहे। आख के अन्दर यदि दवा जायगी तो कोई हानि नहीं बल्कि लाभ ही होगा। दिन-रात में चार बार आध-आध घंटे सेके। दो दिन में भयङ्कर दुखती हुई आख मे शान्ति आजायगी और इस तरह अच्छी हुई आख पुनः शीघ्र नहीं दुखती।

बिच्छू काटने पर—

यदि बिच्छू काटने पर आदमी विकल हो तो अर्कपत्र का रस निकाल कर नाक से खूब सघाइये दिमाग मे रस जाने पर छींक पर छींक कई छींके आजायगी और बीछू का जहर ५ मिनट मे ही उतर जायगा।

मूत्राघात (सुजाक) या मूत्रकृच्छ्र पर—

माजूफल	छोटी इलायची के दाने
वशलोचन असली	शीतलचीनी
सत बिरोजा	कत्था पापड़ी

—प्रत्येक ६-६ माशा

—इन सबको कपडछान कर रखले और असली मैसूर के सन्दल मे २-२ रत्ती की गोली बनाले। यदि गोली न बनती हो तो थोडा सा जल डाल कर घोट कर गोली बनाले।

मात्रा, समय—जल से सुबह दोपहर शाम १-१ गोली सेवन करावे। साथ में पिचकारी की दवा से काच की पिचकारी से दो बार दिन मे सफाई करनी आवश्यक है।

पिचकारी की दवा—

खून खराबा	सफेदा काशगरी
संगजराहत	कत्था सफेद
गिले अरमानी	—यह सब ६-६ माशे
तवे पर भुना तूतिया	१ माशा

विधि—इन सब चीजों को कपड़छान कर पत्थर के खरल मे डालकर ५ तोला दही के पानी मे घोट कर ३० तोला दही का पानी और मिलाकर रख दे, जब निर्मल होजाय तो ऊपर-ऊपर निथार कर शीशी मे भरले और ७॥ तोला गुलाबजल अच्छा मिलाकर अन्दाज २ तोला दवा पिचकारी मे भरकर लिङ्गी के अन्दर भरकर ५ मिनट पानी अन्दर बन्द रखें, इसी तरह २ बार और करे। सात दिन सुबह शाम पिचकारी लगाने से मवाद ३-४ दिन मे बन्द होकर पूर्ण आराम हो जाता है।

आमातिसार पर काढा—

सौंफ	सोठ	अजवायन
मरोरफली	सौंचर नमक	नागरमोथा
राई बनारसी		छोटी हरड़

—यह आठो १॥-१॥ माशा

—यह एक मात्रा है, सब जौकुट करके १५ तोला पानी मे एक मिट्टी के कुल्हड़ मे पकावे, जब १ छटाक शेष रह जाय छान कर सुबह शाम पिलावें। बच्चो को कम मात्रा मे दे।

आमातिसार (खूनी आव) पर—

सौंफ	सोंठ	बेलगिरी
गोंद बबूल		—चारों ५-५ तोला
विजया		२॥ तोला
मिश्री		२२॥ तोला

—सौंफ आधी भून लो और सब के साथ पीस कर चूर्ण बनालो।

मात्रा—पूरी मात्रा ६ माशा। ताजे जल से २ मात्रा मे आराम मालूम होगा।

पथ्य—खिचड़ी, दही, मुरब्बा बेल आदि।

गङ्गाधर रस (अतिसार)

(शतप्रतिशत लाभ करने वाला)

पारा	गन्धक	मोचरस
इन्द्रजौ	नागरमोथा	जायफल
बेलगिरी		अफीम

—प्रत्येक समान भाग

—कपड़छान कर घोटलें। इन्द्रजौ व कुटज की छाल के क्वाथ की भावना दे। अहिफेन क्वाथ मे ही घोलकर डाले। शुष्क होने पर शीशी मे सुरक्षित रखले।

मात्रा—आधी रत्ती से १ रत्ती। अधिक वेग की दशा मे अधिक मात्रा दे सकते हैं।

अनुपान—शहद, भुना जीरा।

समय—सुबह शाम या आवश्यकतानुसार।

गुण—अतिसार पर शीघ्र लाभप्रद है। हजारो रोगियो पर परीक्षित है।

राजवैद्य सिद्धिसागर जी

प्राणाचार्य

अध्यक्ष—आ इ. बाहुलि औषधालय, ललितपुर।

"श्री राजवैद्य महोदय 'सिद्धि फर्मेसी' आल इण्डिया बाहुबलि औषधालय, अ भा एस एस विद्यापीठ के सफल सचालक एव सिद्धि मासिक पत्र के सम्पादक है। आप विश्व कल्याण, इन्जेक्शन रहस्य और वैज्ञानिक चमत्कार, सिद्धि-चिकित्सा सागर आदि पुस्तको के यशस्वी लेखक है। आपकी धर्मपत्नी श्री शातीदेवी वैद्य विशारदा भी योग्य चिकित्सिका एव लेखिका हैं। आप अपने ज्येष्ठ पुत्र को एम. बी बी एस की शिक्षा प्राप्त करा रहे है। आपके भेजे हुए प्रयोग जनता के लाभार्थ हम यहा प्रकाशित कर रहे है।"

—सम्पादक।

प्रमेहान्तक वटी—

वङ्गभस्म	६ माशा
प्रवाल भस्म (चन्द्रपुटी)	१ तोला
सिद्ध मकरध्वज (स्वर्णघटित)	१ तोला

लघु पिप्पली चूर्ण   सुहागा भुना
कबाब चीनी का चूर्ण   कालीमिर्च चूर्ण
—प्रत्येक १-१ तोला

—सबको खरल कर दूध मे घोटकर २-२ रत्ती की गोली बनाले।

अनुपान—भोजनोपरान्त २ घटे बाद एक गोली दूध से दे। दिन मे २ बार दे।

गुण—प्रमेह की सम्पूर्ण अवस्थाओं पर मैं इस योग का प्रयोग अनेक वर्षों से कर रहा हूँ। परीक्षित सफल सिद्ध है।

अनेक रोग नाशक सफल योग—

सोठ	११ तोला
सेंधव नमक	२ तोला
शु हींग	१ तोला
पीपल	३ तोला
पीपलामूल	४ तोला
अनारदाना	८ तोला
आमला	६ तोला
अजवायन	६ तोला
विभीतक (बहेडा)	१२ तोला
चित्रक	१० तोला
हरड़	७ तोला

—घोट-पीस कर कपड़छान कर चूर्ण बनाले। यह अनुपान भेद से देने पर अनेक रोग नाशक हमारा सफल प्रयोग है। —शेष २४६ पर।

श्रीमती शान्तीदेवी वैद्या विशारदा

संचालक-अखिल हिन्द महिला औषधालय, ललितपुर (उ० प्र०)

"श्री देवी जी राजवैद्य श्री सिद्धसागर जी वैद्य प्राणाचार्य की धर्मपत्नी हैं। अखिल हिन्द महिला औषधालय आपके निरीक्षण मे चलता है। स्त्री-रोगों पर आपका विशेष अनुभव है। चिकित्सा मे अपने पतिदेव से अनुभव एव सहायता मिलती रहती हे। आपके परिवार का सम्पूर्ण वातावरण ही आयुर्वेदमय है। आपके अनुभूत योगो मे से कुछ योग निम्न हैं।" —सम्पादक।

जिन बहिनो को मासिक धर्म समय से नहीं होता हो, मासिक धर्म के समय कटि-वेदना होती हो, उन्हें समय से १० दिन पूर्व से निम्न योग लेना चाहिए—

कुमार्यासव	१ तोला
लोहासव	३ माशा

—बराबर पानी मिलाकर २ वार भोजनोपरांत दे।

प्रात' और सायंकाल—१-१ गोली रज प्रवर्तक वटी गरम पानी से दिया करे। मासिक धर्म प्रारम्भ होने के सायकाल निम्न क्वाथ ले—

कपास की सिकडियां	४ तोला
पुराना गुड	४ तोला
पीपल की दाढ़ी	२ तोला
गाजर के बीज	१ तोला
सोया के बीज	१ तोला

—सबको आधा सेर पानी मे चुरावे। आध पाव शेप रहने पर छानकर गुड मिलाकर पीले। यह एक मात्रा है।

गुण-इससे कैसा भी रुका हुआ मासिक धर्म हो सवेरे विना कष्ट साफ हो जाता है। मेरा अनेको बार का अनुभत है।

आर्तवकर, योनिदाह हर—

कासनी के बीज, ककड़ी के बीज, खरबूजे के बीज, कद्दू के बीज, सौंफ —प्रत्येक २-२ तोला
कासनी की जड़ की छाल, खत्मी, मुलहठी, बालछड़, गुलबनफ्सा, गाजवां —प्रत्येक १।।-१।। तोला

—सबको जौकुट कर चौगुने जल में पकावें। चतुर्थांश शेप रहने पर छान कर ६० तोला शक्कर मिलाकर चाशनी बना कर रखलें।

मात्रा—२ तोला से ३ तोला तक। प्रात' सायं १ छटांक अर्क मकोय गर्म कर उसमें मिलाकर पिया करे।

गुण—मूत्र खुलकर आवेगा, रज'स्राव स्वच्छ होगा, दाह कम होगी और आतरिक शोथ नष्ट होगा।

जीर्ण गर्भाशय शोथ पर—

गुलबनफ्सा, बरियाली, कासनी की जड़ —प्रत्येक ७-७ माशा

तुख्म कद्दू	५ माशा
गाजवां	५ माशा
मुनक्का	६ दाना

—रात्रि को पाव भर गरम पानी में भिगोकर प्रात'-काल मलकर छानकर पीने से एक सप्ताह मे गर्भाशय शोथ नष्ट होता है।

योनि रक्तस्राव पर—

शुद्ध गोदन्ती	३।। तोला
गिलोय	१। तोला
शुद्ध फिटकरी	७।। माशा
शुद्ध स्वर्ण गेरु	७।। माशा

—सबको अच्छी तरह घोट एक शीशी मे रख ले।
मात्रा–१ से ३ माशा ।
अनुपान–केले की जड का स्वरस अथवा गौ दुग्ध से ।

रक्त या श्वेत प्रदर पर—

कटूमर फल का चूर्ण	४ रत्ती
फिटकरी	४ रत्ती

—दोनों को दूध मे खूब घोटकर सवेरे शाम पीने से दोनों प्रदर अवश्य नष्ट होते हैं। शीघ्र लाभ-कारी योग है।

रक्तप्रदर—

फालसे की जड की छाल — १ तोला

—साठी चावल के पानी में पीसकर प्रातः सायं देने से २-३ दिन में ही पूर्ण लाभ होता है।

जीर्ण रजःस्राव पर—

मीठी इन्द्रायण का चूर्ण ३-३ माशा सवेरे शाम शहद के साथ खाने से आशातीत लाभ होता है।

हिस्टीरिया हर— (नवीन)

खुरासानी अजवायन	४ रत्ती
मीठी वच	४ रत्ती

—दोनों को खूब पीसकर अनार के रस या शर्बत अनार के साथ देने से शीघ्र लाभ होता है।

बार-बार गर्भस्राव या गर्भपात होने पर—

गर्भपाल रस	१ रत्ती
वसन्त मालिनी	१ रत्ती
मधुयष्टी (मुलहठी) चूर्ण	६ रत्ती

—यह एक मात्रा है। प्रातः सायंकाल गौदुग्ध से लेना चाहिए। जिन बहिनों के बालक थोड़े दिन जीते हैं या होते ही मर जाते है उन्हे—गर्भ प्रतीत होने के बाद से प्रसवपर्यन्त "फलघृत" सेवन करना चाहिए। प्रत्येक मास मे ८-८ दिन लेना।

मात्रा—१-१ तोला।

अनुपान–गौ दुग्ध।

नोट—तीसरे, पांचवे, सातवे महीने मे पूरे माह तथा प्रसव होने के ४० दिन बाद से २ मास तक प्रयोग करना चाहिए।

इस प्रकार इन सरल अनुभूत और घरेलू योगो द्वारा हमारी अनेकों बहिने अपना रोग नष्ट कर स्वस्थ रह सकती हैं।

आपका कर्त्तव्य

धन्वन्तरि आयुर्वेद का सर्वोत्तम सचित्र मासिक है। धन्वन्तरि का प्रचार करना आयुर्वेद का प्रचार करना ही है। अतएव अपका कर्त्तव्य है कि धन्वन्तरि के नवीन ग्राहक बना कर धन्वन्तरि का अधिकाधिक प्रचार करें। यह कठिन भी नहीं है जिसे भी आप इस विशेपांक को दिखावेंगे, वही इसका ग्राहक बनने की अवश्य इच्छा करेगा। थोड़ा प्रयत्न कर स्व-कर्त्तव्य पालन कीजिये।

श्री शिवकुमार वैद्य सि० शास्त्री

अध्यक्ष—श्री शिव चिकित्सालय रावतपाड़ा, आगरा।

"आप सस्कृत एव आयुर्वेद के सुयोग्य विद्वान् तथा पूर्ण अनुभवी वैद्य है। वैद्यक आपका वश परम्परागत व्यवसाय है। आपने सन् १६२७ में स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य प्रारम्भ किया। आप अपने सौम्य स्वभाव, सद् व्यवहार एवं सफल चिकित्सा के कारण पर्याप्त जनप्रिय होगए है। आपकी इस लोकप्रियता ने प्रसन्न होकर उत्तर प्रदेशीय सरकार तथा आगरा म्यूनिसिपैलिटी वार्षिक अनुदान दे रही हे। आगरा जिला परिषद (District Board) से भी समय समय पर सब प्रकार की सहायता एवम् सेवायें प्राप्त होती रहती है आपका ध्यान अब आयुर्वेद शिक्षा के प्रसार की ओर गया हे। एतदर्थ गत दो वर्षो से आपने उक्त चिकित्सालय में ही आयुर्वेद विद्यालय की स्थापना कर दी हे। यहा साहित्य सम्मेलन प्रयाग तथा आयुर्वेद विद्यापीठ की सभी परीक्षायें दिलाने का समुचित प्रबन्ध हे। प्रयत्न किया जारहा है कि निकट भविष्य मे यह विद्यालय सरकार द्वारा सम्मानित हो जाय।"

—सम्पादक
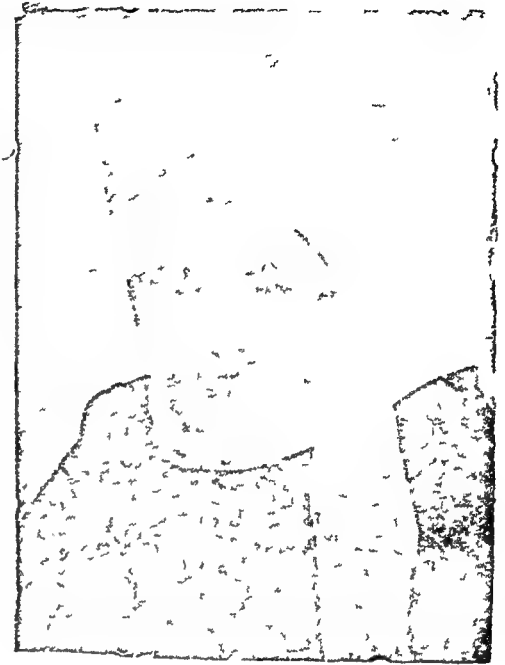
वातव्याधि की आयुर्वेद शास्त्र मे महारोगो मे गणना की है। यह संख्या मे अस्सी प्रकार का होता है। इसका जैसा पीड़ा कारक रोग अन्य बहुत ही कम है। वर्तमान काल मे वात की व्याधियो का जितना प्रचार बढ़ता जा रहा है उतना सम्भवत किसी अन्य रोग का नहीं। अन्य रोग का तो कभी कभी भीषण प्रकोप हो जाया करता है, किन्तु इसका तो सदैव ही विशेष प्रकोप रहता ही है। ऐसी दशा मे इसका ऐसा प्रयोग जो मास, रक्त आदि अखाद्य पदार्थ रहित हो, रोगी का मांस, बल और अग्नि को बढ़ाने वाला हो और सब प्रकार के वात-व्याधियो को अच्छा करने वाला हो मिलना आयुर्वेद जगत की आवश्यकता को पूरा करने वाला होगा। हमारा यह योग ऊपर की सब बातों की पूर्ति करने वाला तथा हमारे वैद्य-बन्धुओं को निश्चय यश दिलाने वाला तथा निराश रोगियों को जीवनदान देने वाला है। प्रसगानुसार इस प्रयोग द्वारा अनेको असाध्य तुल्य होकर जीवन दान लेने वाले रोगियो में से केवल एक रोगी का इतिहास लिखकर प्रयोग बनाने की पूर्ण विधि और सेवन विधि लिखना उचित प्रतीत होता है।

रोगी का वर्णन—

नाम कान्ता देवी, आयु १० वर्ष को मेनेन्जाइटिस (गर्दन तोड़) हुआ जिसका इलाज ऐलोपैथिक हुआ। दो मास बाद रोगिणी इस रोग से मुक्त हुई। किंतु रोगिणी की कमर और गर्दन बिल्कुल टूटकर बेकार हो गई, जबान की आवाज अस्पष्ट और बहुत कम निकलती थी। इसकी चिकित्सा एलोपैथिक, यूनानी, आयुर्वेदिक, हाम्योपैथिक आदि सब ही रोगिणी के घर वालो ने लगभग तीन मास तक घर पर ही कराई। इसके पश्चात् आगरा हॉस्पिटल मे

दो मास रोगिणी को एडमिट कराके चिकित्सा कराई किंतु लाभ के बदले रोग बढता ही जा रहा था। जब रोगी के घर वाले पूर्ण निराश हो गये तब वे हमारे श्री शिव चिकित्सालय में रोगिणी को एक दो सज्जनों के आग्रह से चिकित्सा के लिए लाये। दशा पूर्व वर्णन के अनुसार थी किंतु और बढ़ चुकी थी, यहां तक कि वे रुग्णा वालिका को चिकित्सालय की गद्दी पर मुर्दे की भांति हाथों पर से उतार कर रख लिया करते थे, क्योकि कमर और गर्दन किंचिन्मात्र भी ठहरती ही नहीं थी अर्थात् पूर्ण रूप से टूट चुकी थी। लिखित प्रयोग दो सप्ताह के सेवन करने के पश्चात् लाभ प्रतीत होने लगा और लगभग ३-४ मास के सेवन मे रुग्णा वालिका पूर्ण स्वस्थ हो गई। इस प्रयोग ने सैकडो वातजनित विकृताङ्गो को सुन्दर अंग वाला वना दिया।

प्रयोग विधि—

गोमूत्र ताजा का मिट्टी या कांच के भवके द्वारा अर्क खींच ले, दूसरी तरफ अच्छी लहसुन को छील कर साफ कर कली निकाल कूट पीसकर वस्त्र मे छान स्वरस निकाल लें। इसी प्रकार विश्वस्त मधु भी तैयार रखे। पुन: तीनो द्रव्यों को समान भाग तामचीनी या कलई के वर्तन मे मिला २-३ वार वस्त्र से छान ले। यह वातगज केशरी द्रव्य तैयार कर कांच के कार्क वाली शीशी मे भर ले। इसमे से ६ मा. से १ तोला तक प्रातः सायं अवस्था और रोगी के वल के अनुसार २-२ गोली महायोगराज गु. को खिला कर पिला दे। यही वह अद्भुत गुणकारी अति गोपनीय योग है जो आज हम वैद्यो और जनता के उपकारार्थ स्पष्ट कर रहे हैं। यह थोड़ा और नवीन ही तैयार करना चाहिए क्योंकि अधिक दिनों का दुर्गन्ध वाला होजावेगा जो पीने मे मुश्किल होता है।

पथ्य—

आयुर्वेद शास्त्र मे वातव्याधि के लिए कहे अनुसार करावे।

लहसुन के फॉक का तैल वनाने की विधि—

यह वे-कौड़ी पैसे का वात व्याधियो के लिए तथा साधारण गाठो पर गर्म करके लगाने से वैठा देने के लिए वडा लाभकर सिद्ध हुआ है। लहसुन फोक लुगदी २० तोला, तैल तिली १ सेर, जल १ सेर, मन्दाग्नि से पका तैल मात्र रहने पर उतार छान तैयार करे, अद्भुत गुणकारी है। इन दोनो प्रयोगो का व्यवहार कर धन्वन्तरि पत्र का गुणगान करे और पत्र की उन्नति करने के लिए प्रयत्नशील रहे

अद्रक के कतिपय उपयोग—

—पुराने दस्तों मे अद्रक या सौंठ मे सैंधा नमक और भुना हुआ जीरा मिलाकर पीसे तथा भोजन के वाद दोनो समय ठंडे जल से सेवन करे।

—अपचन के कारण उल्टी की बीमारी हो, तो अद्रक के रस के साथ पोदीना का रस मिलाकर सेवन कराने से लाभ होता है।

—खांसी नयी हो या पुरानी, यदि अद्रकरस के साथ शहद मिलाकर तथा अधिक बढ़ी हुई खांसी की अवस्था मे पान का रस भी मिलाकर दिन मे २-३ वार चटाने से लाभ होता है।

—जुकाम की अवस्था मे अद्रक का काढ़ा वनाकर थोडी-थोडी देर से पीना हितकारी होता है। यही काढ़ा आमवात, तथा हृदय की वेदना मे भी लाभप्रद है।

— शीत लग जाने से यदि वुखार आता हो तो अदरक डालकर वनाई चाय बार-वार देने से वह शीत को कम करती है तथा खासी आदि उपद्रव भी नष्ट कर देती है। ज्वर की इस अवस्था मे सोठ का चूर्ण १ माशा गरम जल से सेवन करने से भी लाभ होता है।

कविराज डा. गौरिशंकर श्रीवास्तव

वीना।

"कविराज श्रीवास्तव महोदय वीना के निवासी है तथा चिकित्सा मे सभी पद्धतियो के ज्ञाता है, आप आयुर्वेद मर्मज्ञ होने के साथ साथ साहित्यज्ञ भी हैं। अंग्रेजी के इन्टरमिजिएट, हिन्दी मे साहित्य-रत्न तथा साहित्य महोपाध्याय एव आयुर्वेद के आयुर्वेदाचार्य की उपाधियो से विभूषित है। लेखक, कवियों एवं कहानीकारो मे आपकी गणना है। अनेक आयुर्वेदीय तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओ मे आप खूब ही लिखते रहे हैं। धन्वन्तरि के पाठक आपसे भली भाति परिचित हैं यहा आपके भेजे हुए तीन प्रयोग प्रकाशित किए जारहे हैं जो सरल होते हुए भी आशा है सफल प्रमाणित होगे।"

—सम्पादक।

श्वेत प्रदर पर—

असगन्ध (नागौरी)	रूमीमस्तंगी
राल (ऊना)	—यह सब २-२ तोला
मिश्री	६ तोला

—सबका कूट-पीसकर छान लीजिए, ऊपर से ६ माशे वर्क चादी डालकर घोट लीजिये और २१ पुडियां बना लीजिये।

मात्रा—लगभग ६ माशे। मिश्रीयुक्त गौदुग्ध के साथ।

नोट—यह प्रयोग तात्कालिक लाभप्रद है, अतः ३-४ मात्रा में ही लाभ प्रतीत होता है, किन्तु पूर्ण रोग शमन हेतु कुछ अधिक समय सेवन करना उचित है।

रक्तप्रदर—

(त्रिदोपज)

चूहे की मेंगनी	१ माशा
ऊन की राख	१ माशा
बोल पर्पटी	४ रत्ती
ताम्रभस्म	१ रत्ती
रसौत	१ माशा

—यह १ मात्रा है।

—सुबह शाम मिश्रीयुक्त गौदुग्ध के साथ।

गुण—विवेकपूर्वक अनुपान भेद से वातज, पित्तज, कफज तथा त्रिदोपज रक्त प्रदरो पर अचूक लाभकारी है।

नोट—रक्तप्रदर रोगी का स्तर बन्द होजाने पर भी २-४ दिन औषधि और देना चाहिए। मासिक धर्म के दिनों मे यदि प्राकृतिक अवधि मे वृद्धि दृष्टिगोचर हो तो उसे उक्तप्रयोग उस समय भी देना चाहिए।

बालकों पर हब्बा (डब्बा) पर—

शङ्खभस्म	६ माशा

—शेषांश पृष्ठ २३६ पर।

गुण—प्रमेह, मधुमेह, ध्वजभङ्ग, स्तम्भन के लिये अत्युपयोगी है।

मदनानन्दरस—

अकरकरा	जायफल	जावित्री
छोटी इलायची बीज		केशर
शु. धतूरे के बीज		कस्तूरी
शु. कुचला		शु. अहिफेन
शु हिंगुल		भांग के बीज
अम्बर		सिद्धचन्द्रोदय
सोने के वर्क	—प्रत्येक १-१ तोला	

विधि—पहिले हिंगुल और अहिफेन को वट वृक्ष के दूध मे एक दिन मथकर छुआरों की गुठली निकाल उसमें भर देवे और कच्चे सूत से लपेट कर ऊपर से गेहूँ का आटा लगा घी से पाक करे, अच्छी तरह सिक जाने पर कढ़ाई में से निकाल आटा आदि पृथक् कर छुआरों सहित औषधियों को खरल में डाल कर पीसे, फिर उपर्युक्त औषधियों के चूर्ण को मिला कर सात बार पोस्त डोडे के क्वाथ मे घोटे फिर सात बार बंगला पान के स्वरस मे घोटे। उसके बाद एक बार बड़ के दूध मे घोटे कि वह शुष्क होजाय, या एक दो रत्ती की गोलियां बनावे। छाया मे सुखा कर शीशी मे भर देवे।

मात्रा—एक या दो गोली बलानुसार मिश्री मिले दूध से प्रातः सायं लेवे।

गुण—इससे समस्त इन्द्री विकार, नपुंसकता, स्वप्नदोष, ध्वजभङ्ग आदि दूर होते है।

नोट—जिसके पत्नी नहीं हो उसको यह दवा नहीं सेवन करना चाहिए अन्यथा अनर्थ होना सम्भव है।

स्पेशल तिला—

जङ्गली प्याज		१ तोला
जमालगोटा (जयपाल) के बीज		६ माशा
केशर	जायफल	जावित्री
अफीम		लौंग
	—पांचों ६-६ माशा	
बादाम की मींग		१ तोला
गाय का असली घी		२० तोला

विधि—प्रथम अफीम को छोड़ कर बाकी की दवा खूब बारीक पीसे, बाद मे अफीम मिलाये और इसमें थोड़ा-थोड़ा घी डालते जांय। बाद में खरल मे इसकी घुटाई इतनी करे कि मूसली खरल से चिपकने लग जाय। फिर बढ़िया से बढिया मलमल-लेकर उसकी दो पोटली बनाये, पीतल की थाली मे रखे। फिर मामूली धीमी आंच बन-उपलो की देवे, वह पिघल कर थाली मे गिर जायगा, उसे शीशियों मे भरलें।

प्रयोगविधि—इन्द्री के अग्रभाग (सुपारी) को छोड़ तथा नीचे सींवन को छोड ऊपरी भाग पर मालिश करे। ऊपर से बङ्गला पान कुछ गरम बांध दे।

गुण—इससे शैथिल्य, ध्वजभङ्ग, नपुंसकता सब प्रकार की इन्द्रिय दुर्बलता नष्ट होजाती है।

नोट—मैं इसका प्रयोग काफी समय से रोगियो पर करता हूँ, अति लाभदायक है।

कविराज डा. जनार्दन शर्मा आयुर्वेदाचार्य

श्री विश्वनाथ औषधालय, रायगढ़ (म प्र)
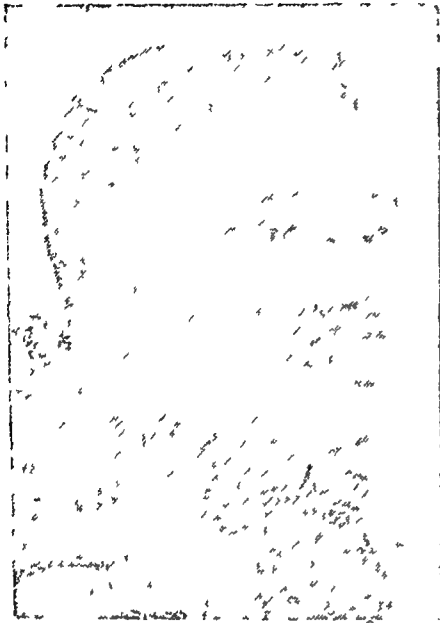
"श्री कविराज जी ने भिवानी (हिसार) मे श्री वैद्यराज प० मुरलीधर जी शर्मा के घर जन्म लिया। आपकी आयु ३६ वर्ष है। आपने होमियोपैथी एव आयुर्वेद उभय चिकित्सा पद्धतियो का अध्ययन किया है। प्रथम तीन वर्ष भोपाल मे स्वतत्र चिकित्सा व्यवसाय करने के वाद, सन् १९४७ से १९५६ तक किरोडीमल दातव्य औषधालय मे प्रधान चिकित्सक के पद पर सफलतापूर्वक कार्य किया और उसके वाद श्री विश्वनाथ आयुर्वेदिक एण्ड होमियोपैथिक औषधालय स्थापित कर स्वतत्र चिकित्सा कार्य मे रत है। आप एक सफल एव योग्य चिकित्सक हैं तथा आपके निम्न प्रयोग निश्चय ही सफल प्रमाणित है। चिकित्सक समुदाय इनसे लाभ उठावें।" — सम्पादक।

हव्वेनिशात—

चादीभस्म ४॥ माशा
जावित्री केशर रेगमाही
—यह १॥ १॥ तोला
जायफल ६ माशा
समुद्रशोप ६ माशा
जहरमोहरा कस्तूरी
—यह दोनो १॥-१॥ माशा

विधि—केशर कस्तूरी चांदी की भस्म को गुलाव के अर्क मे खरल करे और वाकी दवाइयो को महीन करके उसमें मिलावे। फिर सवको पान के रस मे घोट कर जंगलीवेर के वरावर गोली वनावे।

प्रयोग विधि—१ गोली प्रसग से १ घंटा पहिले कागजी नीवू पर पीसकर छिडके और उसे आग पर रखे जव कुछ गरम हो जाय ठडा करके उसका अर्क कंठ मे निचोडे। अगर नीवू न मिले तो पाव भर दूध के साथ १ गोली लेवे।

गुण—यह अति स्तम्भक धातुपौष्टिक शैथिल्य नाशक है।

नोट—यह योग ऊंझा फार्मेसी द्वारा प्रकाशित 'चारु-चिकित्सा' पुस्तक का है और मेरे द्वारा अनेक वार का अनुभव मे आया सिद्ध प्रयोग है।

स्तम्भन वटी—

शुद्ध शिलाजीत (सूर्यतापी) २ तोला
अफीम जावित्री खैर का गोद
—तीनो १-१ तोला
अकरकरा जायफल केशर
—यह तीनो ६-६ माशा

—सवको कूट पीस कपड़छान करे। वड़ के दूध मे तीन दिन घोटकर चार चार रत्ती की गोलिया वनावे।

श्री सियाप्रसाद अष्ठाना साहित्य मनीषी

आयुर्वेद रत्न, वैद्यभूषण, अस्थाना दातव्य औषधालय, वसतपट्टी (मजफ्फरपुर)

पिता का नाम— श्री मुन्शी कमला प्रसाद जी

आयु—४७ जाति—कायस्थ

"आपने संस्कृत की मध्यमा परीक्षा देने के अनन्तर आयुर्वेद का ज्ञान गोरखपुर मे प्रसिद्ध वैद्य श्री पं रामावतार शर्मा आयुर्वेदाचार्य से ५ ६ वर्ष रह कर प्राप्त किया। कलकत्ता इन्स्टीट्यूट से आयुर्वेद रत्न परीक्षा पास की। घर पर आपका दातव्य औषधालय चलता है। आपकी कविता, लेख एवं कहानी विहार तथा उत्तर प्रदेश के कतिपय पत्रो मे प्रकाशित हुआ करती हैं। आप एक साहित्य सेवी व्यक्ति हैं। आपके प्रयोग चारो ही सरल आशुफल-प्रद प्रतीत होते हैं। पाठक मनन करें और लाभ उठावें।" —सम्पादक।
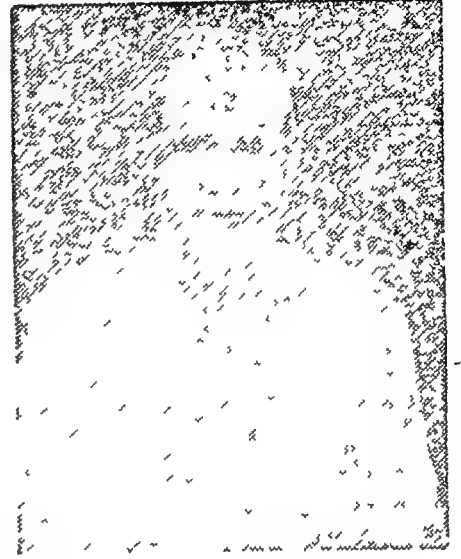
बालजीवन—

कुमारी आसव	(सिद्ध भैषज्य मणिमाला)
अरविन्दासव	(भै० र० बालरोगाविकार)
रोहितकारिष्ट	(भैषज्यरत्नावलि)
लोहासव	(गदनिग्रह)

निर्माण विधि—चारों आसवारिष्टों को समभाग मिलाकर बोतल मे रख लें।

मात्रा—६ माह के बच्चे को ३ बूंद। १ वर्ष से ३ वर्ष के बच्चे को ६-७ बूंद। ४ वर्ष से ५ वर्ष के बच्चे को ८-१० बूंद। ६ वर्ष से १० वर्ष के बच्चे को १५ बूंद। अवस्थानुसार दवा की मात्रा बढ़ा कर दिया जा सकता है। औषधि सुबह और शाम को ही देनी चाहिए।

अनुपान—औषध से अष्टगुणा ताजा जल मिलाकर दिया जाता है। दूध पीने वाले बच्चे को मां अथवा बकरी के दूध के साथ दिया जा सकता है।

गुण—बालकों के सम्पूर्ण उदर रोग, प्लीहा, यकृत, सूखारोग, खून की कमी, आंव-खून का दस्त, शोथ, पेट निकल आना, मन्द ज्वर, साधारण खांसी आदि रोगो पर सुपरीक्षित योग है।

परहेज—औषध सेवन काल मे गुड़, खटाई, दही, मांस, मछली, तैल, घी आदि नहीं खाना चाहिए।

पथ्य—बकरी का दूध और हलका सात्विक आहार का सेवन श्रेयष्कर है।

नारी-जीवन—

बृहद्योगराज गुग्गुल	(शाङ्गधर संहिता)
कुमारी आसव	(योगरत्नाकर)

सेवन विधि—सुबह और शाम बृहद्योगराज गुग्गुल १-१ गोली बकरी के दूध से, अभाव मे ताजा जल से लिया जाय। भोजनोपरात कुमारी आसव दो तोला और उतना ही ताजा जल मिलाकर सेवन किया जाय।

गुण—स्त्रियों के आर्तव शूल, अनार्तव, भयङ्कर शूल के साथ नाम मात्र का मासिक स्राव, कमर, पीठ, जंघा, पेडू, पेट मे दर्द, गर्भधारण मे प्रतिबन्ध, खून की कमी आदि रोगों मे अत्यन्त गुणकारी परीक्षित योग है।

अपथ्य—लाल मिर्च, तैल, खटाई, दही, केला, कटहल गुड़, रति-क्रिया आदि से परहेज रखना चाहिये। सात्विक आहार एवं थोड़ा परिश्रम करना लाभदायक होगा।

शूलान्तक—

अकवन (अर्क) पुष्प ताजा	४ तोला
(अभाव मे सूखा पुष्प	२ तोला)
सीप अथवा शम्बुक (घांघा) भस्म	१ तोला
गुड़	२ तोला

विधि—अकवन के फूल को अच्छी तरह सिल पर बिना जल के ही पीसा जाय। पश्चात भस्म और गुड़ को उसमे मिलाकर अच्छी घुटाई करे। एक जीव हो जाने पर ३-३ माशे की गोलियां बनाली जांय। अगर गोली बनाने मे परेशानी हो तो थोड़ा करैला के पत्तो का रस मिलाकर गोलिया बना ले।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली आधे-आधे घण्टे पर सीधे निगल जांय। अगर रोगी को जल की इच्छा हो तो थोड़ा ठहर कर ताजा जल एक-दो बूंद दिया जाय। जल की इच्छा नहीं होने पर नहीं दिया जाय।

उपयोग—एकाएक पेट में दर्द शुरू होकर पतला दस्त एवं कै होती हो और शूल मे रोगी बेचैन हो उसमे यह रामबाण है। दो तीन गोली पेट में जाते ही शूल, दस्त और कै बन्द हो जाती हैं।

नोट—अन्य रोगों मे उपर्युक्त लक्षणों के रहते हुए यह औषध नहीं व्यवहार करना चाहिए।

बालरोगान्तक—

अपामार्ग पत्र	२ तोला
तुलसी पत्र	१ तोला
अतीस लौंग वंशलोचन	—प्रत्येक ३-३ माशा
छोटी इलायची	६ माशा

विधि—सबको कूट-पीस कपड़छान चूर्ण कर जल में अच्छी तरह मर्दन करके चना प्रमाण गोलियां बना छाया मे सुखा लें।

मात्रा और अनुपान—१-१ वटी प्रातः और सायं माता के दूध या उष्ण जल से दिया जाय।

गुण—बच्चों के हरे पीले दस्त, आंव के दस्त, दूध न पचना, उल्टी होना, खांसी आदि रोगों में अत्यन्त गुणकारी सिद्ध प्रयोग है। परीक्षित है।

आचार्य श्री दौलतराम सोनी आयुर्वेदरत्न

विशेष सम्पादक—धन्वन्तरि-माधव निदानांक, गोहलपुर, जबलपुर।

"श्री सोनी जी से धन्वन्तरि के पाठक सुपरिचित है। गतवर्ष का धन्वन्तरि माधव-निदानांक आपके ही विशेष सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ है। माधव-निदानांक में प्रकाशित माधव-निदान की टीका तथा एलोपैथिक निदान से समन्वय आयुर्वेद विद्वानो ने अत्यधिक पसन्द किया है। आप जबलपुर के महाविद्यालय के योग्य आचार्य हैं तथा विद्वान एवं अनुभवी चिकित्सक हैं। आपके लेख धन्वन्तरि मे प्रायः प्रकाशित होते रहते हैं तथा आप 'यौन विज्ञान' पर एक विस्तृत पुस्तक भी लिख रहे हैं। आपके प्रयोग भी सरल तथा अत्युपयोगी हैं। पाठक लाभ उठावें।" —सम्पादक।

क्षुधावर्धक—
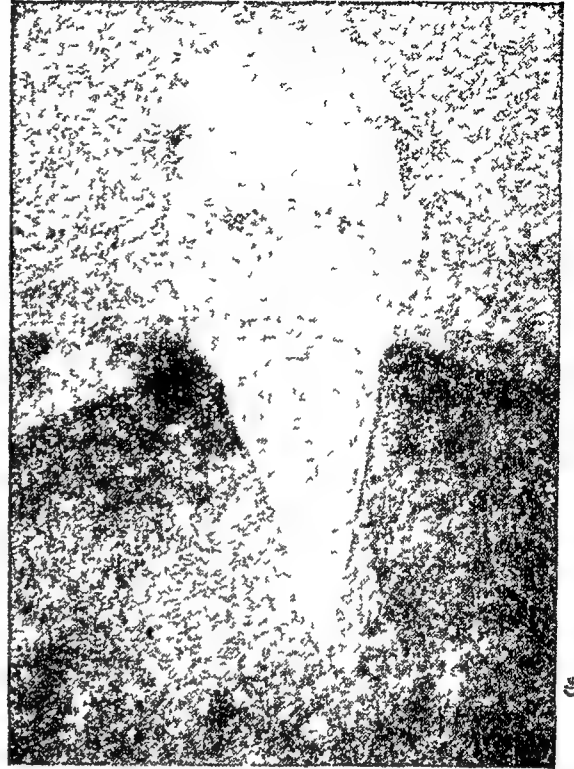
इन्द्रायण मूल   शुद्ध कुचला
नीम के पत्ते   गिलोय के पत्ते
—प्रत्येक समभाग

—लेकर सूक्ष्म चूर्ण करे।

मात्रा—½ रत्ती, १ तोला (आधा घूंट) जल के साथ, भोजन के ठीक आधे घण्टे पूर्व। आमाशयिक स्राव को बढ़ाकर भूख और पाचन-शक्ति को बढ़ाता है। ज्वरादि रोगों के बाद पायी जाने वाली अरुचि एवं निर्बलता के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है। जहां किसी रोग की उपस्थिति के कारण अरुचि हो वहां इसका प्रयोग उस रोग की चिकित्सा करने के पश्चात् ही करे।

सुविधा के लिये निम्बु स्वरस या जल मे घोट कर गोलियां बना सकते हैं अथवा औषधि को १ घण्टे पूर्व जल मे डाल दे फिर समय आने पर वह जल छान कर दे सकते हैं। एकसा लाभ होगा।

ध्वजामृत—

सफेद कन्नेर की जड़ की छाल   लाल-
आक की जड़ की छाल   भाग की पत्ती
बीर बहूटी   —सब समभाग

—लेकर चूर्ण करे और काले धतूरे के पत्तो के स्वरस की ३ अथवा अन्य धतूरे के रस की ७ भावना देकर गोली अथवा चूर्ण बनाकर रखलें।

प्रयोग विधि—रात्रि को आवश्यकतानुसार औषधि लेकर अपने मूत्र के साथ अच्छी तरह घोंटकर लिंग पर लेप करें और पान, धतूरा या एरण्ड का पत्ता लपेट कर पट्टी से बांध कर ऊपर लंगोट चढ़ाकर सो जावें और प्रात. खोलकर गर्म जल से धो डाले। जितने दिन प्रयोग करे उतने दिनो तक शीतल जल का स्पर्श लिंग से न होने दे। लिङ्ग के मुण्ड, सीवन और अण्ड कोषों पर लेप न होने दें अन्यथा हानि होती है।

गुण—बिना छाले उत्पन्न किये लिङ्ग की शिथिलता को लगभग ८-१५ दिनों मे दूर करता है। यदि शिथिलता के कारण शीघ्रपतन होता हो तो उसे भी दूर करता है।

इन्ही वस्तुओं से तैल सिद्ध किया जाता है। वह भी इसी तरह प्रयुक्त होता है और यही गुण करता है।

वाजीकरण लेह—

दालचीनी	४० तोला
काले तिल	४० तोला
उड़ाया हुआ कपूर	१ तोला
शहद	आवश्यकतानुसार

—दालचीनी और काले तिल को अलग-अलग अत्यन्त सूक्ष्म पीसे, फिर मिलाकर पीसें और अन्त मे कपूर और शहद मिलाकर अवलेह या मोदक बनाले।

१-१ तोला सुबह शाम गुन-गुने दूध या जल के साथ ले। अत्यन्त सस्ती, सरल, निर्दोष एवं गुणकारी औषधि है। इतनी उच्च कोटि की वाजीकरण औषधि है कि ४० दिन ब्रह्मचर्य पूर्वक सेवन करना कठिन होता है और कर चुकने के बाद यह दशा होती है कि स्खलित होने के बाद भी काफी देर तक दृढता बनी रहती है और यदि मनुष्य चाहे तो तुरन्त ही दुबारा प्रवृत्त हो सकता है। यह योग स्त्रियों के लिए भी कामोत्तजक है।

ग्रहणी व्रणारि—

कपर्द (कौड़ी) भस्म	३ रत्ती
सोंठ का चूर्ण	१ रत्ती

—यह एक मात्रा है। ऐसी ४ मात्राएं प्रतिदिन (सुबह ८ बजे, १२ बजे, शाम को ४ बजे और रात्रि के ८ बजे) घी शक्कर के साथ सेवन करें। घी इतना मिलावे कि दवा चाटने योग्य हो जावें, फिर पिसी हुई शक्कर मिलावें।

पथ्य—मूंग की दाल के साथ गेहूँ का दलिया। शेष सभी पदार्थ बन्द। इस योग को ३-४ सप्ताह सेवन करने से आमाशय व्रण, ग्रहणी व्रण, जीर्ण प्रवाहिका, चिरकारी अतिसार एवं संग्रहणी तक मे लाभ होता है।

यदि अतिसार अधिक होता हो तो प्रारम्भ मे कुछ दिनो तक प्रत्येक पुड़िया मे कपूर रस ½ रत्ती मिलावे। यदि दुर्बलता अत्यधिक हो तो प्रत्येक पुड़िया मे शुद्ध कुचला ¼ से ½ रत्ती तक मिलावे।

नोट—कपर्दभस्म नयी हो तथा इतनी तीव्र हो कि जीभ पर रखने से छाला पड़ जावे तभी यह योग पूर्ण रूप से लाभप्रद होगा।

सूत्र-कृमि हर वस्ति—

नीम की छाल अथवा पत्तों का क्वाथ बनावें। क्वाथ का बीसवाँ भाग नमक मिलावे और उचित मात्रा मे गुदा में प्रविष्ट करे। इसके पश्चात् रूई के फाहे से कुछ देर तक दबाये रखे। प्रयत्न यह करें कि दवा काफी देर तक भीतर ही रुकी रहें। १ माह बाद पुनः वही बस्ति दे। सूत्र कृमि निर्मूल हो जावेगे।

बस्ति के पूर्व अथवा ३ घण्टे पश्चात् रोगी को साबुन लगाकर अच्छी तरह नहाना चाहिए और गुदा के आसपास के भागो को साबुन लगे तौलिये से खूब रगड़ना चाहिए। नाखून अच्छी तरह कटे हुए रखना चाहिए।

श्री डा० पृथ्वीरसिंह वैद्य

छतरसा (कानपुर)

"श्री डाक्टर साहब एक सफल एवं उदार प्रकृति के चिकित्सक है। 'सुखामहार' महौषधि के आविष्कारक हैं। निर्धन व्यक्तियो की चिकित्सा पर आपका विशेष ध्यान रहता है। आपने अनेक सामान्य प्रयोग न लिखते हुए बहुप्रचलित प्रदर रोग नाशक केवल एक प्रयोग पाठको की भेंट किया है। आशा है चिकित्सक समुदाय पीडित नारी समाज का इस प्रयोग से उपकार कर सकेगा।" —सम्पादक।

प्रदर नाशक योग—

नागरमोथा	रसौत	लाल चन्दन
देवदारु	चिरायता	दारुहल्दी
हाऊबेर	मजीठ	धायफूल
ढाक का गोंद	जीरा सफेद	मोचरस

—प्रत्येक २०-२० तोला

गूलर के कच्चे फल	सेम्हर के फूल
बेल के बड़े फल का गूदा	आम की छाल
रुसाहे (अड़ूसे) की जड़ का वक्कल	दुद्धी
पीपर की छाल	बरगद की छाल

—प्रत्येक ४०-४० तोला

मुण्डी के फल	कटीली चौलाई की जड

—प्रत्येक १।-१। सेर

—इन सबको जौकुट करके एक मन पानी में भिगो दें। ४ दिन के बाद सिर्फ एक कनस्तर अर्क खींच लें। फिर दस सेर शक्कर डालकर एक तार की चाशनी बना लें। अब इस बनी औषध में हर ५ सेर औषध में एक पाउण्ड पोटाश ब्रोमाइड, दो औंस आयल क्यूबेब, दो औंस असली मैसूर का सन्दल डालकर अच्छी तरह मिला दें। बस प्रदर की मीठी दवा तैयार है।

सेवन विधि—गाय या बकरी का आध पाव दूध गरम किया हुआ ठंडा ले। उसमे बीस बूंद यह औषध डालकर रोज प्रात केवल एक बार पीना चाहिए।

पथ्यापथ्य—लाल मिर्च, गुड़, खटाई, तैल, गरम मसाले, गरिष्ठ भोजन आदि न खाये-पूर्ण आराम होने तक ब्रह्मचर्य से रहे। सात्विक सुपाच्य भोजन करे।

गुण—यह दवा हर प्रकार के प्रदर के लिए अद्वितीय लाभकर प्रमाणित है।

श्री वैद्य पं० परशुराम जोशी

श्री महावीर औषधालय, भीलवाड़ा (राजस्थान)

"हमारे नवयुवक लेखक प० जोशी जी बड़े ही कर्मठकार्य-कर्त्ता हैं। आयुर्वेद की उन्नति अपनी ही उन्नति समझ कर रात-दिन-कार्य रत रहते हैं। वनौषधियों के अन्वेषण संग्रह करने में आपकी विशेष रुचि है। आपके संकलित ग्रन्थ, १ स्वास्थ्य एव खाद्यगुण संग्रह, २ स्वादिष्ट संग्रह, ३ पुरुष जीवन सन्देश प्रकाशित ग्रंथ हैं तथा स्त्री-जीवन सन्देश, वनौषधि विज्ञान, प्राथमिक चिकित्सा एवं पथ्यापथ्य नामक पुस्तकें आपकी अप्रकाशित रचनायें हैं। आप परम्परागत वैद्य है। अनेक संस्थाओं के मंत्री अध्यक्ष एव प्रवन्धक के रूप मे कार्य कर चुके हैं।" —सम्पादक।

काला सुरमा—
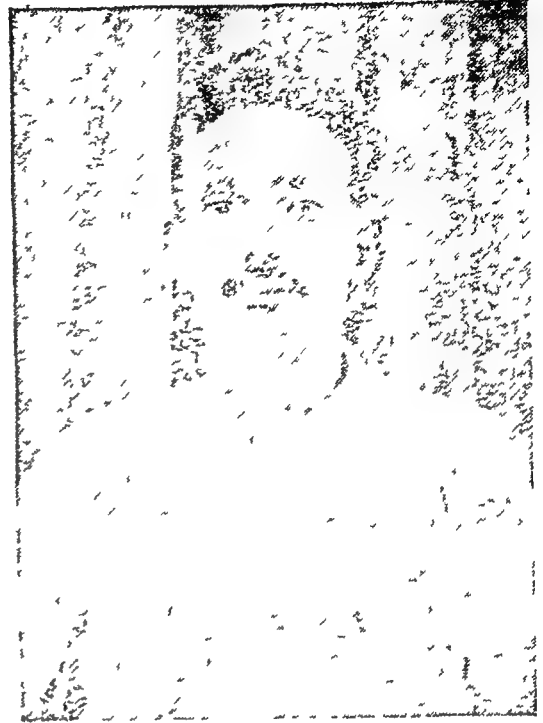
शुद्ध काला सुरमा	१ सेर
समुद्रफेन	४ तोला
असली सैंधव नमक	४ तोला
ममीरा	४ तोला

—उपरोक्त चार वस्तुओं को पहले कूट-पीस कर कपड़े से बारीक छाने, तत्पश्चात् एक साफ व चिकनी लोहे के खरल मे डाल निम्बु पत्र स्वरस मे ४ दिन व पुनर्नवा पत्र स्वरस मे चार दिन घोटकर सुखाले फिर डेली वाला कपूर देशी ४ तोला पिपरमेन्ट १ तोला मिलाकर ६ घण्टे घोटकर बोतल में भर मजबूत कार्क लगा कर रखदे।

उपयोग विधि—दिन मे प्रातः एवं रात्रि को सोते समय शान्ति एव धैर्य से प्रयोग करने पर दृष्टि-हीनता, अंकुर, मांस वृद्धि, तिमिर और पटल आदि नेत्र-विकार नष्ट हो जाते हैं।

नोट—१-मलावरोध रहने पर त्रिफला चूर्ण ४-४ माशा ताजा पानी के साथ सवेरे एवं रात्रि को सोते समय दे।

२—शिरःशूल या निर्बलता मे ५ बादाम रात्रि को भिगोदे, प्रातः सिला पर पीसकर १ तोला घी मे भून आधा गोदूध में औटा मिश्री मिलाकर प्रातः पिलावे।

हिमांशु लेप—

अशुद्ध पारद गंधक मूठिया सिंदूर
अशुद्ध तवकिया हरताल अशुद्ध मेनसिल
कपूर उड़ा हुआ —प्रत्येक २-२ छटाक
शु. घृत १०१ बार धुला हुआ १४ छटांक

निर्माण विधि—पहले ६ वस्तुओं को भली प्रकार कूट-पीस कर कपड़छान करे। तत्पश्चात् घृत में मिलावे। साफ बरणी में भर कर रखदे। ऊपर मजबूत ढकन लगावे।

उपयोग—दाद, खाज, पामा, गंज, गुप्त स्थान की फुन्सियां, कुष्ट आदि चर्मरोगनाशक है।

सूचना—पीड़ित स्थान को कृमिनाशक साबुन एवं गर्म पानी से साफ धोकर उपयोग करें। दवा लगाते समय दवा का हाथ नेत्रों पर नहीं लगाना चाहिए।

मलावरोध हो तो रसतन्त्रसार सिद्ध प्रयोग संग्रह का स्वादिष्ट विरेचन अवस्थानुसार दें।

बालरेचनी वटी—

शुद्ध जयपाल	१ तोला
कुटकी	२ तोला
शुद्ध स्वर्ण गैरिक	१ तोला

निर्माण विधि—कूट-पीस कर बारीक करें। बाद में घृतकुमारी के स्वरस से घोटकर मूंग प्रमाण वटी बनावें।

मात्रा—१ से २ गोली तक अवस्थानुसार प्रयोग करें।

अनुपान—माता का दूध या गर्म पानी से घिस कर दें।

उपयोग—बच्चों की कब्जियत (मलावरोध), कफ बोलना, अफरा, पसली (डब्बा) को दूर करने में अति हितकर है।

अंगूरासव—

अंगूर स्वरस	॥ऽ६।
शक्कर	।ऽ४॥=
दालचीनी	इलायची
नागकेशर	तेजपात
वायविडङ्ग	प्रियंगफूल
मिरच काली	पीपल
मधु	

—प्रत्येक आध-आध पाव

निर्माण विधि—अंगूर के स्वरस में शक्कर डाल कर मिलावें। बाद में अन्य औषधियों को कूट-पीस कर मिलावें, तद्पश्चात एक बड़े अमृतवान में भरकर १ माह तक बन्द कर रखें। एक होने पर मोटे कपड़े से छान कर बोतलों में भरलें।

मात्रा—१ से २ तोला तक दिन में २ बार भोजन के बाद जल के साथ।

उपयोग—रक्तवर्धक, शक्तिप्रद उत्तम टॉनिक है। खांसी, अनिद्रा, पाण्डुता, मन्दाग्नि आदि को नष्ट करता है।

रक्तरोधक चूर्ण—

नागकेशर	वंशलोचन
इलायची	विजयसार का असली गोंद
मजीठ	—यह २०-२० तोला
स्वर्णगैरिक	१० तोला

निर्माणविधि—उक्त सब द्रव्यों को कूट-पीस कपड़छान कर चूर्णवत् बनावें।

अनुपान—शहद, शर्बत चन्दन, दूध के साथ।

मात्रा—१ माशा से ६ माशा तक दिन में तीन बार।

उपयोग—रक्तपित्त, रक्तार्श, रक्तातिसारनाशक है।

नेत्रज्योति सुधारक

सफल क्रिया

नित्य प्रातः शौचादि से निवृत हो मुंह-हाथ धोते समय, मुंह में जल भर कर खुले नेत्रों पर ठंडे ताजे जल के छींटे लगाइए। अंजलि में भर कर हलके-हलके ५०-४० बार छींटे लगाने चाहिए। इस प्रकार नियमित अधिक समय तक करने से नेत्रज्योति सुधर जाती है तथा चश्मा तक छूट जाता है। अनेक वृद्ध पुरुषों द्वारा सफल सिद्ध प्रमाणित सरल क्रिया है। कोई परेशानी नहीं, कोई व्यय नहीं। नेत्रों को स्वस्थ रखना चाहें तो इस क्रिया का अपने जीवन में अभ्यास अवश्य डालिये।

श्री रामेश्वर बख्शीसिंह सूर्यवंशी 'कोविद'

आयुर्वेद रत्न, महावीरपुर अलीगंज कुर्सी-मार्ग, लखनऊ।

"श्री सूर्यवंशी जी आयुर्वेद के एक उच्च सेवक, ज्ञाता, अन्वेषक एवं रसायन शास्त्र के परिपोषक हैं। वैद्यक शास्त्र के साथ आप अच्छे साहित्यज्ञ भी हैं तथा साहित्य सम्मेलन से आयुर्वेद रत्न की उपाधि प्राप्त की है। अंग्रेजी, मराठी आदि अन्य भाषाओं के भी ज्ञाता हैं। आपके प्रकाशित ग्रन्थ रसोपरसों की वैज्ञानिक शब्दावली, जलौका, सर्प, रसायनाचार्य नागार्जुन हैं। ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक आधार पर आयुर्वेदिक विषयों की सत्यता प्रकट करने मे आपकी अधिक अभिरुचि है। आप रस रत्नसमुच्चय की आधुनिक खनिज वैज्ञानिक दृष्टिकोण से टीका लिखने का विचार कर रहे हैं। धन्वन्तरि के पाठक कोविद जी के अनेक विविध विषयो पर लेख धन्वन्तरि मे पढ चुके हैं। आपके भेजे हुए यहा तीन अनुभूत प्रयोग दे रहे है जो अति सरल और गुणप्रद हैं।" —सम्पादक।

बादाम का कम्पवात पर प्रयोग—

कम्पवात पर वातादपङ्क का मधु के साथ सेवन बहुत ही सफलप्रद सिद्ध हुआ है°। जिन लोगो को लिखने का काम अधिक करना पडता है, उनके हाथ मे यदि यह रोग हुआ, तो हाथ कांपने के कारण सुवाच्याक्षर लिखने मे रुकावट पड़ जाती है। ऐसे रोगियो की चिकित्सार्थ एव मानवहितार्थ अमूल्य गुप्त प्रयोग प्रकाशित किया जाता है।

बलानुसार एक या दो बादामों को लेकर उनका बाह्य कठिन त्वक् निकाल कर बीजो को पानी मे १॥ से २ घण्टे तक भिगो देवे। नर्म होने पर बीजवर्ती पतला छिलका भी निकाल देवे और साफ मिंगी को जल मे चन्दनवत् घिस लेवे इस प्रकार प्राप्त बादाम (चटनी) मे सम मात्रा मे मधु मिला कर अवलेहन करे। एक मास सेवन करने पर नूतन रोग मे आशातीत लाभ होता है।

° वातादो वातवैरी स्यान्नेत्रोपमफलस्तथा।
वातादमज्जा मधुरो वृष्य: पित्तनिलापह: ॥
—भाव० निघण्टु फलादि वर्ग।

अटहुली का उष्णवातादि रोगों पर प्रयोग—

अटहुली ● Trichodema indicum

● औषधीर्नामरूपाभ्या जानते ह्यजपा वने।
अविपाश्चैव गोपाश्च ये चान्ये वनवासिनः॥
चरक सहित, सूत्रस्थान, अध्याय १

बकरी चराने वाले, गड़रिये तथा अहिर एव वनो मे रहने वाले अन्य मनुष्य वहां वहां की औषधियों को नाम एवं रूप द्वारा जानते है।

अन्धारुली आदि एवं रेतीली भूमि ।। यह आपाढ़ मे पुन- और ज्येष्ठ मे प्राय युक्त और पुष्प श्वेत त्तर दिशा मे लगभग र ग्राम मे कुकरायल त्रेपुलता है ।

प्रयोग विधि—१।। तोला अटहुली लाकर सायंकाल ताजे जल में रात्रिभर भीगने को छोड़ दे । जल की मात्रा इतनी लेवें कि रोगी दिन भर मे उसे पी सके । प्रात उसे शिला पर पीस उसको पानी में मिलाकर छान लेवे ।• इस शीतकपाय मे इतनी शर्करा और गाय का दूध डाले कि समस्त द्रव शरवत सा बन जाय । इसे जब-जब रोगी को प्यास लगे तब-तब पिलावे । श्वेदाधिक्य पुरुप को व उपदंश और उष्णवात (Syphiti-gonorrhoea) रोग मे इसके प्रयोग की सभी पद्धतियो के चिकित्सको ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है । पशुओं की प्रवाहिका मे भी यह लाभप्रद है ।

• आसृनीय निपीड (osmotic pressure) द्वारा वनस्पतिस्थ जल द्रव्य रासायनिक द्रव्यो का कुछ अंश जल मे आजाना है । इसलिए भिगोए हुए जल मे ही पीस कर और मिला कर छान लें । लेखक ।

पथ्य—इसके सेवन काल मे खटाई लाल मिर्च सेवन न करे ।

आतपज्वर शमनार्थ (Sun stroke)—

चणक शाक का उपयोग—

मिट्टी के जल विशुद्ध कुल्हड मे जल डालकर उसमे लगभग २ छटांक चने के शुष्क शाक को सायं-काल भिगो देवे । प्रात चने (Gram, Cicer arietinum) के शाक को कुल्हड से निकाल कर उसके जल को लू लगा हुआ रोगी पी लेवे । चणक शाक को शिला पर पीस कर रोगी के वक्षस्थल पर उसका लेप करे ।

पथ्य—रोगी आम के पने का सेवन करे ।

आमवात (गठिया) नाशक

सरल-सफल प्रयोग

कहीं-कहीं इस रोग को संधिवात भी कहते हैं । यह बड़ा पाजी रोग है । मेरा अनुभव है कि इस रोग मे घी गुवार (ग्वारपाठा) अक्सीरे आजम का काम करता है । विधि इस प्रकार है—

—घी गुवार (ग्वारपाठा) की एक अच्छी मोटी फांक लेकर ऊपर का छिलका और कांटे साफ करदे । गूदा थाली मे रख चाकू से वारीक करलें । उस पर गेहूँ का आटा थोडा-थोड़ा डालते जांय और गूंदते जांय, जब आटा बाटी बनने योग्य कड़ा होजाय तब उसकी बाटी बना कण्डों (गोवरियो) की आग मे सेके । जब दाडिम की तरह बाटी फट जाय तब समझले कि बाटी पक कर तैयार हो गई ।

सेवन विधि—घी ५-७ तोले और गुड़ या शक्कर के साथ बाटी का चूरमा बना कर सात दिन तक खाये ।

गुण—इसके सेवन से चाहे जैसी गठिया हो अवश्य नष्ट होती है ।

पथ्यापथ्य—प्रात.काल उक्त बाटी का चूरमा ले, अन्य भोजन न करे । सन्ध्याकाल इच्छानुसार भोजन करे । तैल, दही, छाछ आदि वायुकारक चीजे नहीं लेनी चाहिए ।

वातरोगाङ्क से]

—स्वर्गीय श्री पं० गोवर्द्धन शर्मा छांगाणी ।

वैद्य भंवरलाल गोठेचा, भिषगाचार्य, आयुर्वेदाचार्य

चिकित्सक—जयपुर जिलाबोर्ड औषधालय, पो. वासंखोह (जयपुर)

"श्री गोठेचा जी का जन्म ग्राम मीडा जिला नागौर मे प घनश्यामदत्त जी के यहा सन् १६३० मे हुआ। आपने बनारस की व्याकरण मध्यमा उत्तीर्ण करने के बाद नि भारतवर्षीय विद्यापीठ से आयुर्वेदाचार्य तथा गवर्नमेंट आयुर्वेद कालेज जयपुर से भिषगाचार्य परीक्षायें उत्तीर्ण की पढने के साथ-साथ आपने सजीवन फार्मेसी जयपुर मे सहायक वैद्य के स्थान पर ४ वर्ष तक कार्य करते हुए क्रियात्मक अनुभव भी प्राप्त किया। आप राष्ट्रीय विचार के कर्मठ एव उत्साही नवयुवक हैं। जयपुर जिलाबोर्ड द्वारा सचालित औषधालय में सन् १६५२ से प्रधान वैद्य के पद पर कार्य कर रहे हैं। आपकी विद्वत्ता एवं अनुभव से जनता पूर्ण प्रभावित है। आपने इस विशेपाक मे जिन प्रयोगो के प्रकाशनार्थ भेजा है, वे अत्यन्त सरल और उपयोगी हैं।"

—सम्पादक।

बच्चो के ज्वरावस्था में आक्षेप आने पर—

पीपल	शुद्ध हिंगुल	शु. गंधक
शुद्ध टकरण	शु. वच्छनाग	अभ्रकभस्म
अतीस		कुड़ा की छाल
निर्गुण्डी के बीज		सैंधव

—प्रत्येक सम भाग

—सबको मिला पीसकर त्रिफला क्वाथ और दन्ती मूल के क्वाथ की ४-४ भावना देकर १-१ रत्ती की गोलिया बना लेवे।

मात्रा—१-२ रत्ती लौंग के साथ घिसकर दिन रात में ४-५ बार। जब दौरे कम हो जाय इसकी भी मात्रा तदनुसार तुरन्त कम करते रहे।

मूत्र मे फास्फेट आने पर—

त्रिफला चूर्ण २-३ माशा दिन मे ३ बार शहद मे मिलाकर चटावे, बड़ो को। बच्चो को अवस्थानुसार कम देवे।

मूत्र की प्रतिक्रिया अम्ल होने से (पेशाब में) जलन होती रहती है तब—

शीतल पर्पटी	१ माशा
यवक्षार	१ माशा

—ऐसी दिन मे ३ खुराक शर्बत बजूरी के साथ देवे।

यदि साथ मे 'एल्फा साइट्रोन" ऐलोपैथिक पेय दिन मे ३ समय २-२ ड्राम पानी मिलाकर और दिया जावे तो बजाये २ माह के १ ही माह मे पूर्ण लाभ हो सकता है।

श्वास के दौरे को कम करने के लिए—

कपूर	३ रत्ती
गुड़	१ माशा

—२-२ घटे के अन्तर से यावत् दौरा शात न हो पानी के साथ गोली बना कर निगलवा दे।

बच्चों के डब्बा रोग पर—

उशारेरेवन्द १-२ रत्ती दिन मे २-३ बार देवे। इसमे वमन व दस्त द्वारा कोष्ठ-शुद्धि होने पर तुरन्त लाभ होता है।

नोट—उपर्युक्त प्रयोग बहुतो पर अनुभूत हैं और गुरु परम्परया प्राप्त है, विद्वान वैद्य बन्धु अवश्य लाभ उठावे। केवल साधारण समझकर तिरस्कृत न करे।

वैद्यवर श्री बचानसिंह

ग्राम पो. कुम्हरौर जिला फरुखाबाद।

"आपने अपने जीवनकाल के लगभग ५५ साल चिकित्सा करने मे व्यतीत किए हैं। जीवन के इन अमूल्य दिनो में आपने सदैव निःशुल्क चिकित्सा करके दूर-दूर तक ख्याति पाई है। निकटवर्त्ति जनता मे आपकी महान प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि है। आप एक वयोवृद्ध, अनुभवी एव सफल चिकित्सक हैं। जिन प्रयोगो को आपने धन्वन्तरि में प्रकाशनार्थ भेजा है ये सभी अत्यन्त ही सफल प्रयोग है जिनसे शत-प्रतिशत पीड़ित जन लाभ उठा चुके हैं तथा उठा रहे हैं।" —सम्पादक।
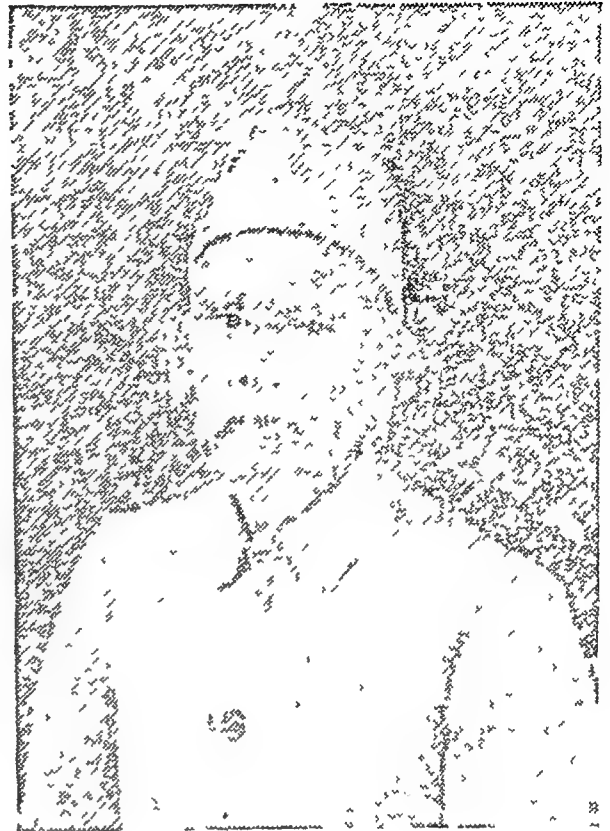
उपदंश नाशक—

इंगुर डेली पारा शु. रस कपूर
कुटकी कपूर —पाचो समभाग

विधि—इन सबको नींबू के अर्क मे खरल करके १ रत्ती प्रमाण गोली बनाकर शहद के साथ सुबह, शाम खाये तो आशातीत लाभ होता है।

पथ्य—गेहूँ की रोटी, अरहर की दाल घी युक्त देना चाहिए।

उदर-शूल पर—

जवाखार	१ तोला
मिर्च काली	६ माशा
सोडाबाईकार्ब	१ तोला
नौसादर	३ माशा
टाटरी निम्बू	३ माशा
पिपरमेंट	१ माशा

विधि—३ माशे की एक खुराक है। इन सबका चूर्ण करके ३ माशे दवा ताजे पानी के साथ लेने से भयानक उदर शूल शान्त होता है।

पक्षावात पर—

१—सन के बीज पिस्ता
बादाम की मिंगी —तीनो १-१ पाव

—तीनो को पानी मे भिगो तथा पीसकर एक पाव घी मे भून ले और बराबर की शक्कर मिलाकर पाक बनाले।

मात्रा—प्रात. सायं १-१ तोला ले।

गुण—पक्षाघात रोगी के लिए आशातीत लाभ होता है।

२—शुद्ध कुचला काले सर्प की भस्म

मल सिंदूर कस्तूरी
—चारों १-१ तोला

—रास्नादि अर्क मे आधी रत्ती प्रमाण गोली बना ले।

मात्रा—प्रात साय १-१ गोली ले। ऊपर से १ तोला रास्नादि अर्क पीने से पुराने से पुराने पक्षाघात का नाश होता है।

पक्षाघात रोगी के मर्दनार्थ तैल—

३—रोगन बाबूना	१ छटांक
तिल्ली का तैल	२ छटाक
काली मिर्च का चूर्ण	½ छटांक

—इस तैल को बनाकर उस अंग मे मालिश करना चाहिए।

नोट—इन तीनो औषधियो से पक्षाघात, लकवा, अर्धांग वात आदि रोगो का शीघ्रातिशीघ्र नाश होता है। मेरे स्वयं पक्षाघात का प्रकोप हुआ और उपर्युक्त तीनो प्रयोग के व्यवहार से मैं रोगमुक्त हो गया।

अर्स के मस्से पर लगाने को—

घोड़े की दुम के बाल बकरी का दूध

—दोनों चीजो को बट के रांध लेना चाहिए, फिर टिक्की बनाकर चढ़ाना चाहिए। इससे मस्सो का शीघ्र नाश होता है।

छर्दि पर—

अर्क बेदमुश्क	१ पाव
अर्क केवड़ा	१ पाव
सन्दल मैसूर का	३ माशे

—मिलाकर शीशी में रखले।

मात्रा—एक-एक तोला दिन-रात मे चार बार पीने से छर्दि में लाभ होता है।

पथ्य—खाने को साठी के चावल का भात और मूंग का काढ़ा की हुई दाल देनी चाहिए।

कासहर वटी—

बहेरे की बकली गौमूत्र मे २४ घंटा भींगी हुई	५ तोला
काली मिर्च कुलञ्जन पीले पान नमक काला	—पांचो १-१ तोला

—पांचो औषधियो को अदरख स्वरस मे घोटकर चने प्रमाण गोली बनावे।

मात्रा व गुण—दिन रात मे चार-पांच गोली खाने से खांसी शीघ्र नष्ट होती है।

अपथ्य—चिकनी, ज्यादा गरम वस्तुऐं नहीं खाना चाहिए।

जख्म का मरहम—

कछुए की सर की भस्म	१ तोला
आदमी की हड्डी की भस्म	१ तोला
सफेदा कासगरी	२ तोला
कपूर देशी	२ तोला
मोम	२ तोला
घी गाय या भैंस का	५ तोला

विधि—कपूर रहित सब वस्तुओ का बारीक कपड़छान चूर्ण कर घी की गर्म की हुई कटोरी मे मोम डालकर पिघलावे, मोम और घी के मिल जाने पर शेष तीनो चीजों को डाल दें तथा बाद मे कपूर भी बारीक कर डाले, कुछ देर गर्म कर मलहम आग से उतार ठंडा कर शीशी मे सुरक्षित रखे। ध्यान रहे अग्नि तीव्र न हो, आग लग कर सब द्रव न जल जावे।

गुण—इस मरहम को फाहे पर लगा कर जख्म (फोड़े) पर लगाने से अत्यन्त लाभ होता है।

कटिशूल पर—

धतूरे के हरे पत्तो का स्वरस	आधा सेर
अफीम	१ तोला
सैंधा नमक	३ माशा

—धतूरे के अर्क में दोनों चीजे डालकर गाढ़ा करले।

फिर इसकी मालिश करने से शीघ्र ही लाभ होता है।

पसली के दर्द पर—

गौदन्ती	१ तोला
मेदा लकड़ी	१ तोला
गाय का घी	३ तोला

—मिलाकर कुछ गर्म करके लगाने से लाभ होता है।

आंख की सुर्खी—

नीम के पके फलो का लुवाव एक पाव एक शीशी में काग लगाकर धूप मे रखदे और उसके ऊपर का पानी निथार ले या कपडे मे छान ले। निथरे हुए पानी मे फिटकरी का फूला ३ माशे डाल शीशी मे रखले। इसमे से एक या दो बूद आंख में डालने से आंख की सुर्खी नष्ट होती है।

नवीन श्वास रोग पर—

कड़ई तुमड़ी (तुम्वी-लौकी) का सर काटकर उसके गूदे के अन्दर आधा पाव सेधा नमक (अगर वडी तुम्वी हो तो एक पाव) भरकर ऊपर से कटा हुआ सर लगाकर रखदे। जब उसके अन्दर लहन और कीड़ा पैदा हो जाये तो छान कर शीशी में रखले।

मात्रा—५ से १० बूद तक पानी मे मिलाकर दे।

गुण—इसके प्रयोग से नवीन श्वास रोग शीघ्र नष्ट होता है।

अहिफेन विषनाशक—

जामुन के अन्दर की छाल का रस पिलाने से विष शान्त होता है। जब तक विष शान्त न हो, तब तक ५-५ तोला थोडी-थोड़ी देर बाद बराबर पिलाते रहे। कम से कम १ पाव तक अर्क मिलादे।

दांतो के दर्द पर—

बादाम के छिलको की राख	२ तोला
माजूफल	२ तोला
नमक सेधा	१ तोला
सत अजवाइन	३ माशा
अफीम	३ माशा

—इसका मञ्जन बनाकर लगाने से मसूड़ो का दर्द तथा दांतो का दर्द वन्द होता है।

:: पृष्ठ २७० का शेषांश ::

तक पिलाया, परिणामस्वरूप मासिक स्राव सम्बन्धी सब शिकायते मिटकर रुग्णा ने गर्भ धारण कर पुत्र प्रसव किया।

हमने इसी प्रकार दो रोगियो पर भी इसका प्रभाव उपरोक्त पाया। मुख्यत वेदनाहीन मासिक स्राव इसका आश्चर्यजनक गुण है गर्भाशय का शोधन कर गर्भ स्थापन योग्य वनाता है।

मैने केवल तीन रोगियो पर इसका अनुभव किया और समान रूप से लाभकार पाया किन्तु मेरा इतना सा अनुभव पर्याप्त नहीं है ऐसी मेरी मान्यता है अत वैद्य वन्धुओं से प्रार्थना है कि वे इस अत्यन्त सुलभ, निर्माण सरल, निमूल्य प्राप्य औषधि का अपनी रुग्णाओ पर अनुभव करके अपना अनुभव धन्वन्तरि में प्रकाशित करावे।

श्री उमाशंकर दाधीच साहित्यायुर्वेदाचार्य विशारद

प्रधान चिकित्सक—श्रीमती मायाचन्द्रहंसा. दि. जैन आयुर्वेद औषधालय
पो. सनावद जि० निमाड (म० प्रदेश)

पिता का नाम— श्री पं. ओंकारदत्त दाधीच
आयु—३५ वर्ष जाति—ब्राह्मण

"श्री दाधीच योग्य एवं उत्साही नवयुवक वैद्य हैं। आप अन्वेषण प्रेमी हैं तथा लोकप्रिय एलोपैथिक औषधियों के समान आयुर्वेदीय औषधियां खोजने में आप प्रयत्नशील रहते हैं किन्तु परिमित साधनों के कारण आपके प्रयत्न अभी पूरे नहीं होसके हैं। आपने इस विशेषांक में प्रकाशनार्थ केवल एक प्रयोग भेजा है जो अत्यन्त सरल और सस्ता प्रयोग होने के साथ-साथ बहुप्रचलित भीषण व्याधि मासिकधर्म विकृति को दूर करने में सफल प्रमाणित हुआ है। पाठक व्यवहार करें तथा अपने अनुभव भेजें।"

—सम्पादक।

पलाशमूल अर्क—

पलाशमूल की गीली मिट्टी आदि वस्त्र से साफ करके भवके में भर देवे फिर बिना जल डाले उसका अर्क निकाल लेवे। यही अर्क बिना जल मिलाये प्रात. सायं १॥ से २॥ तोला की मात्रा में रोगी को पिलावें।

मेरा अनुभव—

एक रोगिणी उम्र २२ साल-शादी हुए ७ वर्ष हुए कोई सन्तान नहीं हुई। प्राय ही श्वेतप्रदर रहा करता था। मासिक-स्राव अनियमित तथा विविध रङ्गों वाला अत्यन्त कष्ट से होता था। प्रदर के अन्य उपद्रव भी उपस्थित थे। निम्न चिकित्सा चल रही थी—

पुष्यानुग चूर्ण	१॥ माशा
मुक्ताभस्म	१ रत्ती
गोदन्ती भस्म	२ रत्ती
प्रवाल भस्म	२ रत्ती
अमृतासत्व	२ रत्ती

—ऐसी १-१ मात्रा प्रातः सायं तण्डुलोदक से।

तथा भोजन के बाद अशोकारिष्ट २॥ तोला की मात्रा में दिया जा रहा था। किन्तु इसी बीच एक व्यक्ति के लिए नेत्रज्योति-वर्धक योग की तलाश करते हुए सस्ता एवं सुलभ यह योग दृष्टिगोचर हुआ। जिसका निर्माण किया गया किन्तु रोगी के अभिभावकों ने, अर्क को नेत्रों में डालने से अन्य अनिष्ट हो जाने की आशङ्का से एक स्थानीय अनुभवी वृद्ध वैद्य महोदय से परामर्श लिया। रुग्णा पहिले उनकी चिकित्सा में थी अत उनको स्मृति हो आई और उन्होंने हंसते हुए रुग्णा को यह अर्क पिलाने की सलाह दी। हमने भी उनका परामर्श मानकर रुग्णा को अशोकारिष्ट के बदले यही पलाशमूलार्क सेवन करवाया। नेत्रों में भी डाला गया अभी भी डाला जा रहा है। नेत्र ज्योति तो बढ़ती नहीं किन्तु अर्क सेवन के आठ दिन बाद ही रुग्णा को जो मासिक हुआ उसे वेदना नाम मात्र को भी नहीं हुई। मासिक स्राव सीमित प्रमाण में हुआ। हमने यह प्रयोग अगले दूसरे एवं तीसरे महीने मासिकस्राव की तिथि के ४ दिन पूर्व से ४ दिन बाद

—शेषांश पृष्ठ २६६ पर।

श्री पं. महावीरप्रसाद शर्मा आयुर्वेद शास्त्री

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेदिक फर्मास्युटिकल वर्क्स, सहल सदन, चूरू (राजस्थान)

पिता का नाम—श्री प० वैद्यनाथ जी सहल ज्योतिपाचार्य
आयु—३६ वर्प जाति–ब्राह्मण

"आप चूरू के प्रधान वैद्यो मे से है। आप उक्त फार्मास्युटिकल वर्क्स के सञ्चालक है तथा वैद्यनाथ आयुर्वेदिक औपधालय के प्रधान वैद्य हैं। आप सग्रहणी एव प्रमेह रोग के अनुभवी चिकित्सक है। धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगाक प्रथम भाग में भी आपके प्रयोग प्रकाशित किए जाचुके है तथा यहा आपके तीन सफल सरल प्रयोग प्रकाशित कर रहे है।"

—सम्पादक।
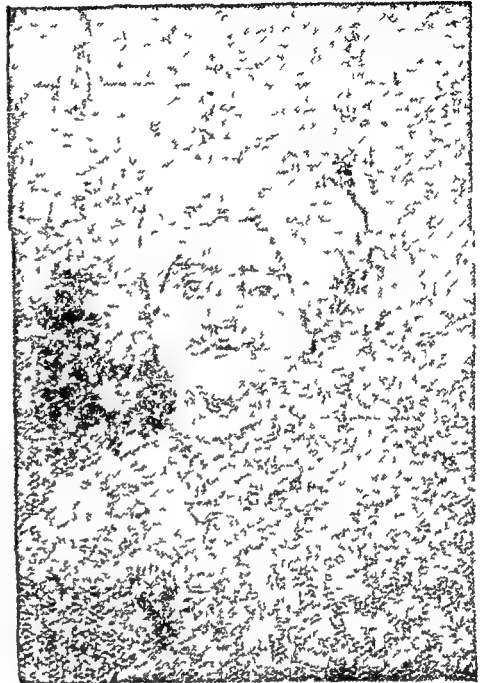
खूनी बवासीर—

सुरमा काला एक तोला और गुड ६ तोला इन दोनों को मिलाकर जगली वेर प्रमाण गोली बनावे। एक गोली सुबह और एक गोली शाम को जल के साथ सेवन करें। खटाई, तैल आदि का सेवन नहीं करे। रात्रि को सोते समय एक तोला ईशबगोल की भुसी जल से सेवन करे। यह औषधि खूनी बवासीर के लिए अत्युत्तम है।

श्वास रोग पर—

अकरकरा	कालीमिर्च	अनार की छाल
अजमोद	अड़ूसा	छोटी कटेली
बबूर की छाल		सफेद सज्जी
सैंधानमक	सांभरनमक	शु पारद
शु. गधक		ताम्रभस्म

—प्रत्येक १-१ माशा

शुद्ध अफीम २ माशे

—इन सबको कूट-पीस कर अदरक, नागरपान के रस की एक-एक भावना देकर १ रत्ती प्रमाण गोली बनावे। एक गोली सुबह और एक गोली शाम को अदरक शहद से मिलाकर लेवे। नया एव पुराने श्वास रोग के लिए सर्वोत्तम परीक्षित औपधि है।

संग्रहणी पर—

दाडिम (अनार) का छिलका कुडे की छाल
—दोनो ५-५ तोला

मोचरस २॥ तोला

—कपडछान कर शहद से जगली वेर प्रमाण गोली बनावें। नित्यप्रति एक गोली मट्ठ के साथ २१ दिन तक सेवन करे। सग्रहणी के लिए अनुभूत है।

आयुर्वेद भास्कर प्रयागदत्त आयुर्वेद शास्त्री

आयुर्वेदाचार्य

अध्यक्ष—वैदिक फार्मेसी, मनकामेश्वर, आगरा ।

"आचार्य प्रयागदत्त जी का जन्म पुरोहित परिवार मे होने के कारण आपकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल सिकन्दराबाद मे साहित्य, व्याकरण आदि की हुई खुर्जा तथा भिवानी मे आपने आयुर्वेद का अध्ययन कर जयपुर आयुर्वेद कालेज से आयुर्वेद शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से आयुर्वेद भास्कर तथा अखिल भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ से आयुर्वेदाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

जनता की सेवा भावना से आप थोडा समय "क्षेत्र बजाजा धर्मार्थ औषधालय" मे प्रधान वैद्य के रूप मे चिकित्सा कर प्रतिदिन लगभग २०० रोगियो को निदान एव औषधि व्यवस्था करते हैं। आप उत्तर प्रदेशीय वैद्य सम्मेलन के उप-सभापति तथा आगरा जिला वैद्य सभा के प्रधान हैं। आप "परिवार सखा" मासिक पत्रिका के यशस्वी सम्पादक हैं। आपका आयुर्वेदीय ज्ञान अत्यन्त उच्च कोटि का है तथा आपने अनेको कष्ट सहकर ऋष्यर्चन एव आशुकारी चिकित्सा योगो की खोज की है। निम्न प्रकाशित प्रयोगो के विषय मे आपने लिखा है कि इन प्रयोगो के समान एलोपैथी में कोई दवा नही हैं, यदि कोई बतावें तो पुरुष्कार देंगे। अत. इन प्रयोगो से चिकित्सक समाज अवश्य लाभ प्राप्त कर सकेगा, ऐसा विश्वास है।"

—सम्पादक।

योपापस्मार (हिस्टेरिया) पर—

सिद्ध मकरध्वज	३ माशा
अम्बर	३ माशा
ब्राह्मी	१। तोला
कपूर	१। तोला
गाजा	१। तोला
खुरासानी अजवायन	५ तोला
वच	१। तोला
जटामासी	२॥ तोला

—इन सबको ७ दिन तक ब्राह्मी स्वरस मे, ७ दिन अदरख के रस मे घोटकर चना प्रमाण गोलिया बना ले।

मात्रा—निम्न क्वाथ के साथ प्रात सायं दो बार १ गोली से २ गोली तक दे।

गुण—यह औषधि शीघ्र प्रभाव करती है। फिर भी इस रोग मे धैर्यपूर्वक यह औषधि २-३ मास तक निरन्तर देने से दौरे सदा के लिए चले जाते है। हम तो हृदय को बल पहुँचाने के लिए दो बार सितोपलादि १ माशा, मुक्तापिष्टी १ चावल (गरीबों को मुक्ताशुक्तिपिष्टी २ रत्ती) स्वर्ण-माक्षिक भस्म १ रत्ती, अकीकपिष्टी १ रत्ती मिलाकर आवले के १ तोला स्वरस या क्वाथ में देते है, वैसे आवश्यक नहीं है। इस रोग मे गोली और क्वाथ ही पर्याप्त है। क्वाथ—तुलसी

३ मा., जटामांसी ३ माशा, शङ्खाहूली ३ मा., खुरासानी अजवायन १॥ माशा, यह १ मात्रा है।

मस्तिष्क शूल पर—

जिस रोग मे आधे माथे और कनपटी एवं आंख मे असह्य कष्ट होता है, प्राय. आंख फूट जाती है।

गोंद बबूल	१ तोला
कटेरी के फल	६ माशा
अशुद्ध गिंगिया	१ माशा
गूगल	६ माशा
अफीम	१ माशा

—पानी के साथ घोटकर गोली बनाकर सुखा कर रख लें।

प्रयोग विधि—१ गोली या आधी गोली जितने से दर्द की जगह गाढ़ा सा लेप हो सके पानी के साथ पत्थर पर घिसले। दर्द की जगह माथे और कनपटी पर पहिले ऊपर से नीचे को धीरे धीरे खुरसट सी लकीर कर दो जिससे खून झलक आवे। यह ध्यान रहे गहरा न लग जाय, फिर रुई से खून साफ कर लेप कर दो। इस प्रकार ३-५ या ७ दिन लेप करने से चमत्कारी लाभ हो जाता है। आंख मे दर्द होने पर हम तो अपने यहा का रगडा और लगवाते है आप भी कोई अच्छा सुरमा साथ मे लगाये।

खांसी और श्वास पर—

आक की जड़	धतूरा पंचांग
अपामार्ग पचाग	तम्बाकू का डठल
अड़ूसा पंचाग	कटेरी पंचांग
बहेड़ा बक्कल	अमलतास का गूदा

—प्रत्येक ४०-४० तोला

पांचों नमक	२५ तोला
सज्जीखार	५ तोला

हल्दी अजवायन सुहागा चौकिया
कलमीशोरा नौसादर

—प्रत्येक २०-२० तोला

निर्माण विधि—इन सबको जौकुट करके एक हांडी मे भर कर मुंह बन्द करके गजपुट मे फूंक लो और इस काली राख को पीसकर रख लो। सोमलता १० तोला, पोहकरमूल १० तोला का चूर्ण बनाकर रखलो—कौड़ियालोबान का डमरु यन्त्र से सत्व बना लो।

अब पहिली काली राख	१ पाव
सोमलता व पोहकर मूल का चूर्ण	१ पाव
सत लोबान	१ छटाक

—इन तीनों को भली प्रकार मिलाकर रखलो।

मात्रा—छोटे बच्चो को १-१ रत्ती बड़े बच्चो को २-२ रत्ती तथा बड़ो को ४ रत्ती से १ माशा तक दिन मे तीन चार शहद के साथ देने से खासी और श्वास मे आवश्य लाभ होगा।

—मोच, वायु के दर्द, पसली का दर्द, आदि सर्वाङ्ग दर्दों पर अनुपम है।

लाभकारी लेप—

राल हल्था	१३ तोला
घी गाय का	२५ तोला
हींग	१ तोला
आवाहल्दी	२ तोला
सोंठ	२ तोला
फिटकरी	१ तोला
चूना	१ तोला
लोटासज्जी	१ तोला
शहद	१० तोला

विधि—कूटने वाली चीजो को महीन पीस कपड़छान कर चूर्ण बनालो फिर घी और शहद मे मिलाकर रखलो।

प्रयोग—आवश्यकतानुसार थोड़ा लेप कपड़े पर लगा कर दर्द की जगह बाध दो।

नोट—इसके ऊपर सिकाई न करें अन्यथा दाने निकल आयेगे।

पांडु और जलोदर पर—

सांप की हड्डियो को तीन बार दूध मे उबाल कर

शुद्ध करलो, फिर दो सकोरों के बीच सम्पुट कर आरनेकण्डों में तीन बार फूंक लो।

—इस भस्म को ४ रत्ती, १ माशा घी में मिलाकर दिन में २ बार चटावे। १६ दिन में लाभ होगा।

पथरी पर—

पथरी को तोड़कर निकालने तथा रुके हुए मूत्र को खोलकर लाने के लिए अद्भुत योग—

शङ्ख कच्चा सीप कच्ची पत्थर बेर

—तीनों ३-३ तोला

—इनको लेकर अर्क गुलाब में घिसलो। फिर गुलाब जीरा ३ तोला चूर्ण बनाकर, जवाखार एक पाव इन सबको कमल-ककड़ी (भसूड़ा) के निथरे हुए २ बोतल रस में मिलाकर घोंटे। सूखने पर २ से ४ रत्ती तक अर्क कासानी के साथ दिन में २-३ बार दें।

रसायन बिन्दु—

कौड़िया लोबान	१० तोला
जायफल	१ तोला
लौंग	१ तोला
जावित्री	१ तोला

विधि—पाताल यन्त्र से इसका तैल निकाले। यह तैल काले रङ्ग का बदबूदार होगा।

मात्रा—१ सींक पान पर लगाकर खिलावे।

गुण—श्वास, खांसी, वमन, प्रसूतज्वर, सर्दी, पेट का दर्द, बच्चों का शय्या पर सोते में पेशाब निकल जाना, दांत चबाना, नींद कम आना आदि रोग दूर होते हैं और स्वरभंग तो तुरन्त ठीक हो जाता है, आवाज खुल जाती है।

वीर्य स्तम्भक एवं नपुंसकता हर योग—

षड्गुणबलिजारित मकरध्वज	अम्बर
कस्तूरी	केशर
शुद्ध कुचला	काले धतूरे के बीज

—प्रत्येक ४-४ माशा

शुद्ध संखिया सफेद	२ माशा
चरस या शुद्ध अफीम	२ माशा
जावित्री	४ माशा
गोंद बबूल	४ माशा
काली मिर्च	४ माशा

विधि—अफीम या चरस को छोड़कर बाकी सब औषधों का बारीक चूर्ण करना, फिर अफीम या चरस को मिलाकर ५ तोला हरी भाग के रस में या क्वाथ में मिलाकर खरल करें, सूखने पर ५ तोला बड़ के दूध में खरल करें। फिर छोटे चने के बराबर गोलियां बनाकर रख लें।

मात्रा—१ गोली स्त्री-प्रसंग से २ घंटे पूर्व दूध में घी मिला इसके साथ लें। यदि किसी को घी मिलाकर दूध अच्छा न लगे तो १ तोला घी या मक्खन के साथ १ गोली खाकर ऊपर से दूध पी लें।

गुण—यह स्तंभन शक्ति के लिए अनुपम लाभकारी है और उत्तेजक भी है।

यदि किसी को केवल शक्ति के लिए ही देनी है तो १ गोली प्रतिदिन रात को दूध के साथ उपरोक्त विधि से दे। इसके सेवन काल में घी-दूध का सेवन विशेष करे।

नामर्दी के लिए तिला—

संखिया सफेद	१ तोला
बीरबहुट्टी	३ तोला
जायफल	जावित्री
मालकांगनी	इन्द्रायण के बीज
अंडी की मींग	बिनौले की मींग

—प्रत्येक १-१ तोला

मीठा तैल	१ पाव

विधि - सब चीजों को पीसकर तैल में डालकर घोटना चाहिए और फिर उसमें एक कपड़ा

—शेषांश पृष्ठ २७७ पर।
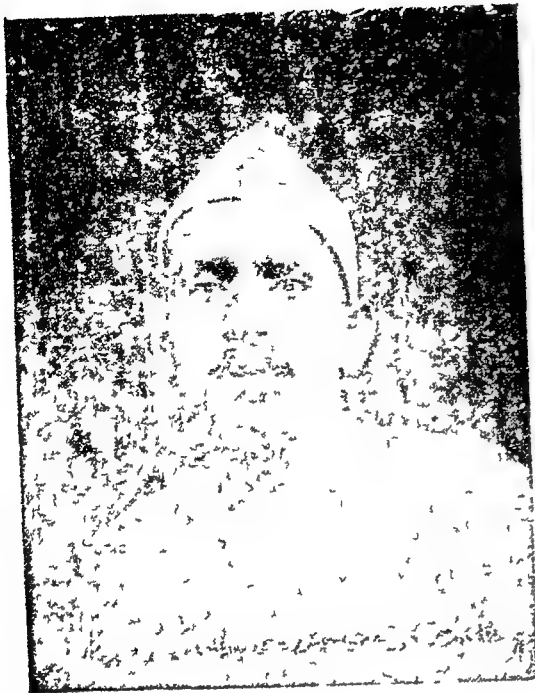
वैद्य श्री नवनीतदास वैष्णव

B. T. M. D.

धरोनिया पो. पिरावा, जिला झालावाड़ ।

"आपका जन्म स्थान टोंक राज्य झालावाड जिलान्तर्गत पिडावा ग्राम है आपके पिता पितामह वल्लभकुल सम्प्रदायी थे । आपके पिता व ताऊ आयुर्वेद के अनुभवी चिकित्सक थे । आप भी अच्छे गण्यमान वैद्य हैं । सामाजिक कार्यकर्ता है अतः राष्ट्रीय आन्दोलन मे जेल भी गये । यह विद्या आपकी पैतृक है । उसी सस्कारवश आप आज तक शुद्ध आयुर्वेद पद्धति से चिकित्सा करते हैं आप वल्लभ फार्मेसी के अध्यक्ष हैं । आपके प्रयोग यहा प्रेषित हैं ।" —सम्पादक ।

रेचन के लिए वत्ती—

मेरे एक मित्र सज्जन सरकारी कर्मचारी हैं । मुझे एक दिन कोटा के वाजार मे सामने से आते हुए मिले । नमस्कार के पश्चात् कहने लगे दो दिन से मुझे दस्त विल्कुल नहीं आरहा है, परेशान हो रहा हूँ । अब मेडीकल स्टोर जारहा हूँ । डाक्टर साहव ने ग्लिसरीन सपोजिटरी लाने को कहा है सो लेने जा रहा हूँ एक-एक के चार-चार आने देने पड़ते हैं । क्या करूं मैं तो तंग आगया हूँ । मैंने कहा यदि देशी चिकित्सा पसन्द करे तो मैं दो पैसे मे काम चला दूं । वे वोले मैं अवश्य करूंगा । मैंने पंसारी की दुकान से एक पैसा का सैंधानमक और एक पैसे का गुड़ लिया और दवा तैयार करदी जिसने उन्हे छः वार काम दिया ।

बनाने की विधि—इच्छानुसार गुड़ और सेंधानमक बरावर लेकर एक ताम्बे के वरतन (कटोरी थाली आदि कुछ भी हो) मे गुड रख कर आग पर रख दे । जव गुड़ पिघल जाय, तब खूब वारीक पिसा हुआ संधा नमक उसमें डालदे और चम्मच आदि से उसे एक करदे । जब दोनों घुल मिल जांय तब उतार कर दूसरे वरतन, या साफ पत्थर या लकडी के पटिये पर डाल कर सुहाते गरम की छोटी अंगुली के समान वत्तिया बनाले । वत्तिया अपनी अंगुली के बराबर लम्बी बनावें । यदि वत्तिया बनाने में देर होगी तो दवा ठंडी होकर सख्त होजायगी । अगर ऐसा होजाय तो फिर आग पर रखने से नर्म होकर वत्तियां बनाने योग्य होजायगी । बच्चों के लिए बनानी हो तो कुछ पतली बनावें । जब पेट फूल रहा हो अफरा हो, अपान वायु बन्द हो, अथवा दस्त हुये अधिक समय होगया हो, मलावरोध से बेचैनी बढ़ रही है, उदावर्त हो, दस्त कराने की आवश्यकता पड़ रही हो तब वत्ती लेकर उस पर घी चुपड़ कर गुदा मे घुसादे और रोगी को सुलादें वस कुछ क्षण मे ही दस्त होजायगा । यह प्रयोग स्वय का सैकड़ो वार का अनुभूत है और सर्वथा निरापद एवं अचूक है । देखने मे दोनो चीजे साधारण है किन्तु हैं बड़े ही काम की । ये वत्तिया

सर्दी लगने पर नरम होजाती हैं, इसलिये बरसात में बनाकर रखी जांय तो पानी एवं ठंडी हवा से बचानी चाहिये या फिर जरूरत के समय तुरन्त तैयार करके काम में लानी चाहिए। जो चार आने की सपोजिटरी से काम लेते हैं वे इस प्रयोग से काम लें इसमें एक बार दस्त कराने में १ पाई से अधिक खर्च न होगा।

डब्बा रोग में—

(वमन-विरेचनार्थ)

जब छोटे बच्चों को डब्बा रोग होजाता है, तब उसके मल, मूत्र बन्द हो जाते हैं और कफ की इतनी वृद्धि होजाती है कि रोगी बालक के कण्ठ में घुघुराहट होने लग जाती है। ऐसे समय में रोग ग्रस्त बालक का जीवन निःसन्देह संकट में रहता है। उस समय ऐसी औषधि की आवश्यकता होती है जो तुरन्त ही काम दे। यह समय वैद्यों के लिये विविध औषधियों के प्रयोग करके बानगी देखने का नहीं है। जब उपरोक्त दशा हो, बालक के पेट को ध्यान से देखें, पेट और पसलियों के बीच में यानी छाती और पसलियों के ठीक नीचे तीन गढ़े दिखाई पड़ेंगे। एक दाहिनी पसली के नीचे, एक ठीक छाती के सामने और एक बांई पसली के नीचे। जब बालक श्वास लेगा तब-तब ये गढ़े पड़ेंगे। ऐसे समय में बालक श्वास, कास, ज्वर आदि से बेचैन होजाता है। इस रोग को शान्त करने के लिये नीचे लिखा प्रयोग सिद्ध है—

—उशारेरेवन लेकर बारीक पीसकर जल की सहायता से १-१ रत्ती की गोलियां बनाकर सुखाकर साफ शीशी में भरलें। आवश्यकता के समय एक गोली को साफ पत्थर पर पानी के साथ घिस कर चम्मच या सीपी से पिलादें। दवा पेट में पहुँचने के थोड़ी देर पश्चात् ही बालक को उल्टी तथा दस्त होने लगेंगे। दोनों तरफ से कफ निकल कर पेट व छाती को साफ कर देगी जिन बालकों के जीवन की आशा छोड़ दी गयी थी वे भी इस दवा से बच गये हैं।

दूसरी विधि—योग्य चिकित्सक उशारेरेवन को अंदाज का पानी लेकर घोल कर छान लेवें, साफ शीशी में भरकर बालक का बलाबल देखकर पिलावें। हमने यह औषध डब्बे के रोगी अनेक बालकों को दी और तत्काल चमत्कार देखा। देते समय इतना ध्यान अवश्य रखें कि मात्रा न अधिक हो न कम। कम देने से औषध गुण न कर सकेगी और बिना विचारे अधिक देने से बालक को कष्ट अधिक होगा।

व्रण पर मलहम—

आक के पत्ते जलाकर खूब बारीक पीस लें और कपड़े में छानकर आवश्यकतानुसार घी मिलाकर रख लें। बस मलहम तैयार हो गया।

यह मलहम सब प्रकार के घावों को ठीक करता है। चार तोला घी में १ तोला राख पर्याप्त होगी। मनुष्यों के लिए ही नहीं यह औषध पशुओं के लिए भी काम आती है। घोड़े घोड़ी की पीठ छिल जाने पर जो घाव हो जाता है, उसे भी यह मलहम ठीक कर देता है। घी को यदि मिलाने से पहले कांसे के बर्तन (थाली या कटोरे) में डालकर सौ बार पानी से धो लिया जाय तो और भी अधिक गुणकारी मलहम बनेगा। घी को धोने के बाद हाथ से दबा-दबा कर पानी बिल्कुल निथार देना चाहिए।

भसम चांदी

यह प्रयोग ग्रामीण है और साथ ही बहुत लाभप्रद है और उसका ग्रामीण नाम 'भसम चांदी' है।

ज्वार का आटा	१ पाव
अजवायन	१ पाव
नमक खाने का पिसा हुआ	१ पाव

—थाली में लेकर मिलालें, बाद में पानी की सहायता से मोटी-मोटी रोटियां बनालें। यदि पानी की जगह ग्वारपाठे का रस लिया जाय तो अधिक गुणकारी औषध बनेगी। आरने कण्डों की बिना धुंए की आग में ऊपर लिखी रोटियों

को रखकर ऊपर से अंगारे दवा दे जब अच्छी तरह जलकर कोयले जैसी हो जावे, रोटियों को निकाल कर ठंडी होने पर पीसकर चूर्ण करके शीशी, डिब्बे या मिट्टी के बर्तन में भरकर रख ले। यह ध्यान रहे रोटियां कच्ची न रहने पावे। यह रोचक चूर्ण तैयार हो गया।

मात्रा—बच्चों को १॥ माशा से ३ माशा तक और बडों को ६ माशे से १ तोला तक गरम अथवा ठंडे जल के साथ।

गुण—इस चूर्ण से कब्ज, मन्दाग्नि और अपचन आदि रोग दूर होते हैं भोजन पर रुचि बढ़ती है। भूख लगती है। खाया पीया पच जाता है। अच्छा नुस्खा है।

बलवर्द्धक बाटी—

गेहूँ का आटा २ छटांक लेकर ग्वारपाठे के रस में ओसन (सान) ले, नमक नहीं डाले। अच्छी तरह गूंद कर दो बाटियां बना ले और आग पर अच्छी तरह सेक ले। जब खूब सिक जावे (जले भी नहीं और कच्ची भी न रहे) उतार ले। बाद में एक कटोरी में शुद्ध घी (जो गाय अथवा भैंस का हो जिसमे छाछ या मिलावट न हो) भर कर बाटी फोड़कर उसमें डुबो दें, जब खूब तर हो जावे तब निकाल ले व दूसरी बाटी घी मे छोड़ दें, जब वह भी तर हो जावे निकालकर रख लें और दोनो बाटियो को खा ले। घी मे डुबो-डुबो कर खावे और अच्छी तरह चबावें, जल्दी न करे। यह काम प्रातःकाल करे। बाटी खाते समय नमक, मिर्च, मसाले, चटनी, अचार आदि का उपयोग न करे। थोडी शक्कर ले सकते है। इच्छानुसार ३ दिन, ७ दिन तथा अधिक दिन तक खावे। बाटिया खाने के दिनो मे भोजन के साथ घी खूब खावें। घी शुद्ध हो, वेंजीटेबल का प्रयोग न करे। जितने दिन तक बाटिया खावे, गुड़, तैल, खटाई, लाल मिर्च तथा स्त्री-संग से बिलकुल बचे। बाटिया रोज ऊपर लिखी विधि से बनाकर खावे। एक दम ज्यादा न पचे तो धीरे-धीरे बढ़ाकर खावे।

गुण—यह बाटियां बल-वीर्यवर्द्धक है, शारीरिक निर्बलता को दूर भगाकर शरीर को बलवान् बनाती है। ज्वर के बाद की निर्बलता एवं पांडु रोग (पीलिये) की हालत मे अच्छा गुण करती है। बादी से अथवा कमजोरी से हाथ-पैर टूटना सिर चकराना, चलने मे थकावट मालूम होना आदि को दूर कर देती हैं। स्त्री-पुरुष और बालक सबको समान लाभ पहुँचाती हैं। सम्भोग शक्ति को बढ़ाती है। कम खर्च का परमोत्तम नुस्खा है।

❖

:: पृष्ठ २७४ का शेषांश ::

भिगोकर लोहे की शलाका के एक छोर पर लपेट कर दीपक की बत्ती की तरह जलावें इसके नीचे एक चीनी या कांच का प्याला रख दें जिससे उस बत्ती मे से जो तैल टपके उसमे गिरता रहे। जब बत्ती मे तैल की कमी देखे तभी दवा वाले तैल मे से डालते जावे। सब तैल इस प्रकार नीचे के बर्तन मे टपक कर आ जावे बस यही तिला बन गया।

गुण—इसके प्रयोग से इन्द्रिय मे तेजी व स्थूलता निश्चय ही आ जाती है और उपाड़ भी नहीं करता।

कविराज श्री वासुदेव कृष्ण जोशी काव्यतीर्थ

आयुर्वेदाचार्य

अध्यक्ष नगरपालिका समिति, श्रीकृष्णविजय शक्ति औषधालय, चूरू।

"आपका विद्याध्ययन एक सीमित समय तक रहा और उसी में साहित्य उपाध्याय, हिन्दी प्रभाकर, विशारद, मेट्रिक, आयुर्वेदाचार्य, काव्यतीर्थ आदि परीक्षायें उत्तीर्ण की। २१ वर्ष तक विद्यार्थी जीवन के पश्चात् ३३ वर्ष की आयु तक अध्यापन कार्य किया। तत्पश्चात् अपना स्वतत्र व्यवसाय किया। आप विद्वान होने के साथ ही मधुर-भाषी जनप्रिय हैं। हिन्दी की कई पुस्तको का लेखन, समाचारपत्रो मे लेख कविताओ का प्रकाशन, सनातन धर्म सभा, महावीर ऋषिकुल वैद्यसभा, सर्व हितकारिणी सभा, राजस्थान वैद्य सम्मेलन आदि संस्थाओ के सदस्य व अधिकारी रहे हैं। चूरू म्युनिसिपिल बोर्ड के सदस्य तथा वर्तमान मे अध्यक्ष पद पर नियुक्त हैं। राज्य के बडे अधिकारियो तथा राजकीय संस्थाओ से सम्मानित हैं। आपके भेजे हुए कुछ प्रयोग हम नीचे प्रेषित कर रहे हैं।"

—सम्पादक।

दशन प्रभाकर मंजन—

तमाखू की राख	भिलावा की राख
माजूफल	रूमी मस्तंगी
शु तूतिया (नीलाथोथा)	छोटी हरड
हीरा कसीस	स्फटिका

—प्रत्येक ३-३ माशा

मजीठ	२ तोला
कत्था	१ तोला

निर्माण—इन सबको कूटकर कपड़छान करले। कपड़ छान करने के पश्चात् इसमे थोड़ा पिपरमेंट व इलायची का तैल मिलाकर शीशी मे भर कर डाट लगा देवें ताकि इसकी सुगन्ध न निकल सके।

उपयोग—इस मंजन के नित्य प्रयोग करने मे हिलते हुए दात फिर लोहे की भांति मजबूत होजाते हैं। यहां तक की सत्तर अस्सी वर्ष के बूढ़े मनुष्य भी दातो से चने चबाने लग जाते है।

नोट—सफेद जीरा १ पाव, पिप्पल १ छटाक व सेंधा नमक १ छटांक को कूटकर व कपड़छान कर उसमे मिलादे और थोडा सा पिपरमेंट का फूल डाल दिया जाय और इसका नित्य प्रयोग किया जाय तो दांत साफ होकर मुख सुगन्ध युक्त एवं चित्त प्रसन्न होजाता है।

दाद की अमोघ दवा—

नीला थोथा	६ माशा
चौकिया सुहागा	६ माशा
गंधक	६ माशा
कलमी शोरा	६ माशा

—सबको कूट छान कर बारीक चूर्ण बनाले। फिर चूर्ण को नीम्बू के रस मे खरल करले। जब यह बारीक होजावे तो बेर समान गोली बनाकर सुखाले।

उपयोग—पानी मे घिसकर इन गोलियो को लगाने से कैसा भी भयङ्कर दाद क्यो न हो नाम भी नहीं रहेगा। इस प्रकार सुबह शाम एक सप्ताह

तक इसका प्रयोग करें। इसका प्रयोग हजारों रोगियों पर सफलतापूर्वक किया गया है।

शिर दर्द (आधा शीशी) पर अनुभूत—

मोथा घास जो खेतो में पाया जाता है। इस मोथा घास की हरी पत्ती लेकर थोड़ा गरम करो। गरम करने से यह नरम हो जावेगा तब निचोड़ कर इसका अर्क निकाल लें। करीब एक माशा शुद्ध घी पांच कालीमिर्च को पीस कर अर्क. घी व पिसी हुई काली इस दवा को ३-३ व ४-४ घंटे से सूंघे ताकि औषधि मिर्च को एक करले। तत्पश्चात् कुछ भाग दिमाग में प्रवेश करे। इस प्रयोग से कितना ही जोर का दर्द क्यों न हो अवश्य नष्ट होता है।

मधुमेहारि वटी—

गुड़मार वटी	२ तोला
जामुन की सूखी गुठली	४ तोला
सूखा हुआ करेला	८ तोला
शिलाजीत विशुद्ध	३ तोला
त्रिवङ्गभस्म	२ तोला
लौहभस्म	१ तोला
शुद्ध अफीम	६ माशा

—सब चीजो को इकट्ठा करके तीनो काष्ठादि औषधियों का चूर्ण करके ग्वार पाठे के रस में घुटाई करावे। बाद में नीचे की चारो औषधियो को मिलाकर घुटाई कराने के बाद गोलियों पर चांदी के वर्क लगावे। गोली ४ ८ रत्ती की होनी चाहिये।

मत्रा—४-४ गोली फीके दूध के साथ या पानी के साथ सुबह शाम लेना चाहिए। मधुमेह पर अक्सीर है।

बवासीर के दर्द की अक्सीर की दवा—

कपूर   रसौत   बिनोले की गिरी

—तीनो १-१ माशा

—सब को पानी में घोटकर मस्सों के दर्द पर लगावे एक या दो बार के प्रयोग से ही चाहे कितना ही जोर का दर्द क्यो न हो लेप करते ही काफूर होजायगा। यह अनुभूत है।

: पृष्ठ २८२ का शेषांश ::

आठ-दश दिन में खाज तथा एक पखवाड़े में दाद समूल नष्ट हो जायगी।

परहेज—नमक, मिर्च, तैल, चात तथा गुड़ की बनी वस्तुएँ। इस दवा के लगाने के समय शुद्ध गन्धक ३ रत्ती की मात्रा में दिन में तीन बार घी तथा शहद असमान मात्रा के साथ लेने से तुरन्त आराम होता है।

नोट—इस दवा को छाजन तथा उकौता पर प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि मैंने प्रयोग करके देखा, रोगी को हानि हुई बाद में दुबारा मैंने प्रयोग नहीं किया।

नेत्र फूला—

पुनर्नवा की जड़ को लेकर उसके ऊपर से मिट्टी तथा छाल के ऊपर के आवरण को चाकू से निकाले परन्तु पूरी छाल को न निकालें। इतनी साफ करे कि अनिष्ट करने वाले जमीन में जो द्रव्य सलग्न हो साफ हो जाय। इस जड़ को आप शहद में घिस कर आंख में अंजन कीजिये, दो माह में बगैर तकलीफ के फूला नष्ट हो जायगा। कई बार अनुभव प्राप्त किया है।

श्री पं० मुरारीलाल त्रिपाठी *B. I. M. S.*

मु. पो. उम्बडीबाजार वाया कारंजा (अकोला)

"श्री त्रिपाठी जी ने बुन्देलखण्ड आयुर्वेदिक कालेज झांसी मे आयुर्वेद का अध्ययन कर सन् १६५२ मे बी आई एम एस की उपाधि प्राप्त की। परीक्षोत्तीर्ण करने के बाद से आप राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय में चिकित्सक पद पर कार्य कर रहे है। इस अल्पकाल मे आपने अच्छा अनुभव प्राप्त किया है तथा उस अनुभव को ही लेकर पाठकों के समक्ष उपस्थित किया है। पाठक आपके अनुभव मे निश्चय ही लाभ प्राप्त कर सकेंगे।"

—सम्पादक।

कृमिरोग पर अनुभव—१

५ से १० वर्ष तक के बच्चे कृमि रोग से ज्यादा आक्रान्त हुआ करते है। परन्तु इस वक्त मैं जिस स्थान पर कार्य कर रहा हूँ उस स्थान पर बच्चों को कृमि रोग ८०% प्रतिशत तथा बड़ी उम्र वालों को भी देखने मे आया है। शास्त्रोक्त ४ प्रकार के कृमि बताये है। परन्तु इस भाग में दोपो से कुपित होकर कृमि रोग होता है जो तीन प्रकार, के तथा मिट्टी खाने से तथा एक प्रकार के पानी की खराबी से होता है। यहां पर ३ इञ्च से लेकर १२ इञ्च तक लम्बे तथा एक रोगी मे १८ से २० तक कृमि मिलते है।

निदान—रोगी को ज्वर १०२ से १०३ तक रहता है। तन्द्रा अवस्था रहती है आंखों पर शोथ रहता है। आंखों के पलक ऊपर नहीं उठते। ऊर्ध्व श्वास रहता है और टट्टी साफ नहीं होती, पेट मे अफरा रहता है।

चिकित्सा—काचकुरी (कपिकच्छु) की फली के ऊपर के रुए ७ ग्रेन से ३ ग्रेन तक लेकर बालक का बलाबल देखते हुए, आधा तोला गुड़ के बीच मे रखकर खिलाएं, कृमि मरेंगे। इसके १२ घण्टे बाद शुद्ध एरण्ड तैल का जुलाब देना चाहिए जिससे कृमि बाहर आ जायगे। इस रोग से पीडित बालक मे दुर्बलता अधिक रहती है।

पौष्टिक योग—

जहरमोहरा खताई पिष्टी प्रवाल
स्वर्ण सूतशेखर —प्रत्येक ३-३ रत्ती

—इस प्रकार की तीन पुड़िया बनाले। दिन मे ३ मात्रा मा के दूध के साथ दे। अगर बच्चा मा का दूध नहीं पीता तो उसको गाय के दूध के साथ देना उचित होगा। बहुत से बच्चो पर अनुभव किया है। ७०-७५% बच्चों मे लाभ पाया।

द्वितीय योग—

अगर बच्चे का पेट फूलता है और बच्चे की उम्र १ वर्ष से २ वर्ष तक है तथा बच्चे को कृमि रोग नहीं है और हाथ पैर दुबले होते जा रहे हो तथा बच्चे को २-३ दिन मे एक बार दस्त होता है तो आपको निम्न प्रयोग का व्यवहार अवश्य करना चाहिए।

अजवायन	३ माशा
हींग हीरा	२ रत्ती
सैंधा नमक	४ रत्ती
वच	१॥ माशा
जायफल	१॥ माशा
तिली तैल शुद्ध	५ तोला

—सभी वस्तुओं को कूट-पीस कर तैल में डाले तथा मन्द-मन्द आंच दे। १०-५ मिनट बाद तैल में से धुआं सा निकलेगा तभी तैल उतार ले। इस तैल को बच्चे के पेट पर गरम-गरम मालिश करने से दस्त साफ तथा पतला होता है। ज्यादा दिन इस तैल की अधिक मालिश करने से बच्चे की टट्टी में रक्त भी आ सकता है अथवा जिस दिन बच्चे को टट्टी लाने की आवश्यकता हो उसी दिन मालिश करे। इस प्रकार के बच्चे को निम्न पौष्टिक योग देना श्रेयष्कर है :—

जायफल   अतीस   मरोड़फली

—इन तीनों औषधियों को मां के दूध में घिसकर पिलावे। इससे बच्चों की पाचन–क्रिया बढ़ती है तथा तैल का प्रयोग भी भूल से ज्यादा हो गया तो हानि नहीं होगी। अगर तैल मालिश के बाद बच्चे को हरे रङ्ग की टट्टी आती है अथवा छिछड़े-छिछड़े आते है तो उक्त योग में केसर घिसकर भी मिलाना चाहिए और पिलाते समय जहरमोहराखताई पिष्टी चौथाई रत्ती की मात्रा में मिलाकर पिलायें।

कर्णपूय पर—

कान से बदबूदार पूय आती हो तथा कान में पूय बहुत दिनों से हो और शोथ भी हो तो आप इस औषध का प्रयोग करें—

नीम के पत्ते	२ तोला
चूने का पानी	२५ तोला

—दोनों को गरम करके कान को पिचकारी द्वारा धो डाले तथा निम्न दवा की १० बूंदें कान में डालें। कान को दो–तीन बार साफ करना चाहिए। दवा डालने से पहिले साफ रुई द्वारा कान के पानी को सुखा लेना चाहिए।

रसकपूर   कपूर   कबीला
—प्रत्येक ३-३ माशा

घी (गाय का)	३ तोला

—चारों औषधियों को खरल में डालकर पीसना चाहिए। जब सभी मिल जाय तो शीशी में रख ले और कान में डालते समय गरम करके १० बूंदों की मात्रा में डाले। गाय का घी अगर दस अथवा ५ वर्ष पुराना है तो अति श्रेष्ठ है। अगर इसी औषध में शुद्ध सिंदूर ३ माशा मिलाया जाय तो औषध अति शीघ्र दो–चार दिन में फायदा दिखाती है।

जीर्णज्वर नाशक—

अगर आपको पूर्ण निश्चित् हो जाय कि रोगी को जीर्णज्वर हो गया है तो आप महासुदर्शन अर्क पिलाये रोगी को आराम होगा, साथ ही मण्डूर योग भी चालू रक्खे। अगर आपने "महासुदर्शन अर्क" दूकान से नहीं खरीदा घर पर बनाया तो पैसे कम खर्च होंगे और फायदा अधिक होगा।

महासुदर्शन घन वटी—

आम के आम और गुठलियों के दाम—

महासुदर्शन अर्क (शाङ्गधरोक्त) निकालते समय भवका में से सभी पानी नहीं जलाना चाहिए अगर जलाया गया तो अर्क में एक प्रकार की जलन की गन्ध आती है। इस कारण जो पानी औषधियों का बचे उसको फेंकना नहीं चाहिए। वह पानी स्वाभाविकतया गाढ़ा होता है क्योंकि औषधियों का सार भाग उसमें मिश्रित रहता है। उस पानी को साफ कपड़े से छान करके एक कड़ाही में डालकर अग्नि पर चढा दे, और मन्द मन्द आंच देना शुरू करे। तब तक आंच देना चाहिए जब तक गोलियां बनाने लायक न हो जाय। इसके बाद हाथों से घी लगाकर ३-३ रत्ती की गोलियां बना ले। अगर हाथों में घी नहीं

लगाया गया तो गोलियां वनांना असम्भव होगा क्योंकि दवा मे चिपकने की शक्ति ज्यादा रहती है। इन गोलियो को छाया मे सुखा ले तथा शीशी मे रख ले। अगर आपको आवश्यकता हो तो महासुदर्शन अर्क दीजिये अथवा इन गोलियो से कार्य निकाल लेना चाहिए। गोलियों से ज्यादा लाभ होते देखा गया है।

सेवन विधि—१ गोली सुवह, १ गोली दोपहर और १ गोली शाम थोडे गरम पानी के साथ निगलवा दे। दो ही दिन मे लाभ दिखाई देगा। कई वार मैंने इसका अनुभव देखा है। इन गोलियो को मैं प्राईवेट दवाखाने मे चलता था तब मुफ्त में देता था और अचूक फायदा होता था। अब मुझे वनाने का अवसर नहीं मिलता है।

नोट—अर्क वनाते समय मैने गिलोय तथा नीम की छाल चिरायते के वरावर डाली थी जिससे अर्क वहुत अच्छा वन कर तैयार हुआ था।

श्वास रोग-नाशक—

काली मिर्च	५ तोला
मिश्री	५ तोला

—दोनो को पीसकर शीशी मे रखले। श्वास, जुकाम, सूखी खांसी मे प्रयोग करे।

सेवन विधि—एक चुटकी मुंह मे डालकर चूसते रहे लाभ होगा।

पथ्य—उड़द तथा तैल कदापि न ले तथा चाय पीना अहितकर होगा।

खांसी—

—छोटी कटेरी का ताजा पचाग लेकर उससे चतुर्गुण पानी डाल कर काढ़ा वनाले। चौथाई शेष रहने पर काढ़ा उतार लेना चाहिए। उसमें रससिंदूर तथा काली मिर्च प्रक्षेप देकर रोगी को पिलाये, आराम होना अनिवार्य है।

नोट—अगर काढ़ा १० तोला तैयार हो तो ३-३ माशा रससिंदूर तथा कालीमिर्च का वारीक चूर्ण उस गरम दवा मे डालदे और शीशी मे भरकर रखले। दवा देते समय शीशी को हिला लेना चाहिये।

मात्रा—प्रातः सायं ६-६ माशा।

खाज तथा दाद का मलहम—

रसकपूर कपूर
कवीला कालीमिर्च मुर्दाशङ्ख
—आठो १-१ तोला
तूतिया वच्छनाग मैनशिल
गाय का घी १६ तोला मोंम देशी १ तोला

—प्रथम आठ औषधियो को कूट-पीस कर वारीक करले तथा उसमे घी डाल कर लोहे की कढ़ाही लेकर उसमे यह दवा डालें तथा उसमे घी डाल कर लोहे की मूसली द्वारा ३६ घंटे घोटते रहे। वाद मे मोम गरम करके डाले और घोटते रहे। अगर दवा गीली रहे और मलहम सदृश न दीखे और दवा वहने लायक है तो १ तोला मोंम दुवारा डालकर घोटे दवा घट्ट वन जायगी। इस दवा को आप खाज तथा दाद मे प्रयोग कीजिये। लाभ अवश्य होगा।

अगर आपको औषधि ज्यादा गुणकारी वनानी है तो इसमे पारद १ तोला और गन्धक २ तोला मिला कर घोटे और वाद मे घी तथा मोंम मिलाकर घोटे दवा उत्तम गुणकारी वनेगी, परन्तु कपडो मे गन्धक की वदबू आवेगी।

लगाने की तरकीव—

खाज अथवा दाद को किसी पत्थर अथवा ईंट या कण्डे के टुकड़े से खुजलाइये, जव तक वह स्थान रक्ताभ न हो, जाय, अव आप दवा लगाइये। काली मिर्च और तूतिया होने के कारण उस स्थान पर जलन पैदा होगी, परन्तु केवल १५ मिनट तक रहेगी। इसके वाद पुन खुजली आयेगी। अव आप खुजलाइये नहीं वरना पुनः जलन पैदा हो सकती है।

—शेषांश पृष्ठ २७६ पर।

आचार्य कमलापति शास्त्री B. A.

साहित्यायुर्वेद रत्न

जहानाबाद (गया)
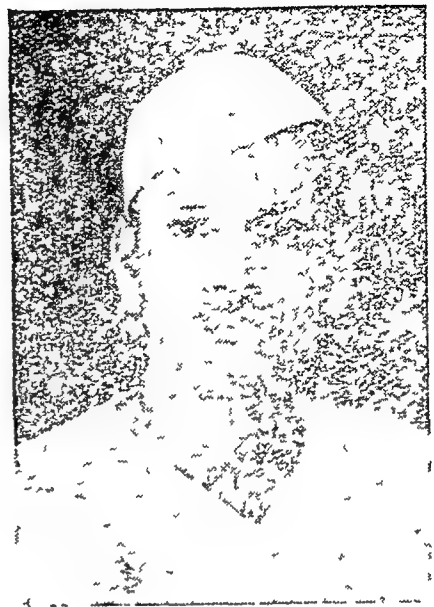
"श्री आचार्य जी ग्राम मुबारिकपुर पो. बेलागंज (गया) के निवासी है। काशी मे आपका विद्याध्ययन पूर्ण हुआ। वहा से आपने हिन्दी अंग्रेजी, सस्कृत का ज्ञान प्राप्त किया। साहित्य एवं आयुर्वेद मे आचार्य, काव्य एवं व्याकरणतीर्थ एवं रत्न की परीक्षायें उत्तीर्ण की। आप गत १४ वर्षो से भूदेव फार्मेसी जहानाबाद में चिकित्सा करते हुए। लक्ष्मी सामवेद विद्यालय मे अध्यापन कार्य करते हैं आपके निम्न ४ प्रयोग अवश्य ही सफल प्रमाणित होगे, एसा विश्वास है।"

—सम्पादक।

गण्डमाला में—

कचनार की छाल	१२॥ तोला
अमलवेत	फिटकिरी (लावा)
सुहागा (लावा)	हल्दी
पीपर	रीठा

—प्रत्येक २॥-२॥ तोला

—सभी दवाओं को कचनार छाल या स्वरस मे खूब महीन पीस कर बनवेर बराबर गोलियां बनालें।

मात्रा—१-१ गोली सुबह शाम पानी या मधु से लेवे।

गुण—दो महीने में भयङ्कर गण्डमाला को भी शान्त करता है।

बादी बवासीर पर—

वन लहसन	२॥ तोला
सफेद धूना	२॥ तोला

—दोनों को खूब घोट लेने के पश्चात् २॥ तोला तिल का तैल मिलाकर मल्हम बनाले, पश्चात बवासीर के मस्से पर कुछ दिनो तक लगाने से बवासीर निर्मूल हो जाता है।

खूनी बवासीर में—

नागकेशर	२॥ तोला
काला तिल	२॥ तोला

—दोनों औषधियों को चूर्ण कर ३ रत्ती की मात्रा से सुबह शाम मट्ठा या पानी या मधु के साथ सेवन करने से रक्तस्राव तो तत्काल ही बन्द होजाता है।

रक्तचाप (ब्लड प्रेसर) में—

त्रिफला	५ तोला
आलुबुखारा	२॥ तोला
बिल्वपत्र स्वरस	१० तोला
सर्पगन्धा चूर्ण	१॥ तोला

—सभी दवाओं को चूर्ण कर बिल्वपत्र-स्वरस मे वन बेर के समान गोलियां बनाले। पश्चात् एक गोली सुबह और एक गोली शाम को दूध या मट्ठा के साथ सेवन करने से रक्तचाप दूर होता है, दो-तीन दिन मे ही पूर्ण लाभ होगा।

— शेषांश पृष्ठ २६३ पर।

श्री चिरंजीलाल वैद्य आयुर्वेद शास्त्री

कल्याण औषधालय, वाह (आगरा)

"आप अपने पिता जी के साथ सम्वत् १९९० मे वाह में आए, यहा तभी से आपका वासस्थान है। यहां आकर आपने कल्याण औषधालय के नाम से अपना चिकित्सालय स्थापित किया। भारत-व्यापी सन् ४२ के राष्ट्रीय आन्दोलन मे आपने भाग लिया और ६ माह का कारावास हुआ। तत्पश्चात सन् ४४ तक आपने अज्ञातवास किया। तभी आपका सब कार्य अस्तव्यस्त हो गया, परन्तु पुन. वाह्सि आकर अपना कार्य पूर्ववत् उन्नत कर लिया जो आज तक उत्तरोत्तर वृद्धि पर है। आप योग्य, अनुभवी, मिलनसार, नम्र हृदय चिकित्सक हैं। आपने अपने कुछ प्रयोग जनता जनार्दन की सेवा हेतु भेजे हैं।"

—सम्पादक।

जले पर उत्तम मलहम—

सिंदूर असली	१ तोला
सफेदा कासगरी	१ तोला
रूमीमस्तङ्गी	१। तोला
गोले का उत्ताम तैल	१० तोला
कपूर	६ माशे
मुर्दाशङ्ख	१। तोला
मोंम देशी	२।। तोला

—अग्नि पर गोले का तैल गरम होने पर मोंम डाल दें और द्रव होकर मिल जाये तब उतार लें। शेष औषधें पहिले पीस रखें और उतारते ही तैल में डालकर फेट दे। थोड़ी देर मे वैसलीन के समान कड़ा बन जायगा।

गुण—इसे जले पर दिन मे २ बार लगावे, अत्युत्तम है।

बच्चों के डब्बा रोग पर—

सत्यानाशी के बीज	१ तोला
रेवन्दचीनी का सत्व	१ तोला

—दोनों को लेकर खूब खरल में पीसें और घुट जाने के बाद मसूर बराबर गोलियां बनाकर रख लो।

मात्रा—बच्चे को १ या २ गोली।

गुण—एक दस्त और वमन होकर रोग आराम होता है।

वातगुल्मनाशक चूर्ण—

अजवायन	सोंठ	मिर्च
पीपल छोटी	लौंग	जायफल
जावित्री	कालानमक	सेंधा नमक
नौसादर		भुना सुहागा

—यह सब १।-१। तोला

—सबको लेकर ४० तोला सिरके मे भिगोवे और लोहे की कढ़ाही में अग्नि पर सुखा ले। पथ्यापथ्य के विचार से २ माशा की मात्रा से सेवन करावे। वायु गोले के शूल मे यह चमत्कार दिखायेगा।

—शेषांश पृष्ठ २९३ पर।

कविराज पं. विष्णुदत्त शर्मा वैद्यशास्त्री

भारद्वाज आयुर्वेद भवन, मदलौडा (करनाल)

"श्री कविराज जी की आयु ६० वर्ष है तथा आप गत ४० वर्षों से आयुर्वेद-चिकित्सक है। आपके पूर्वज भी सफल चिकित्सक थे। आयुर्वेद मण्डल मदलौडा के सन् १९५० से प्रधान हैं तथा सामाजिक कार्यकर्ता है। आपने कविराज वैद्यशास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की हे। निर्धन व्यक्तियों की नि.शुल्क चिकित्सा करते हैं तथा आपने हिन्दी-संस्कृत और आयुर्वेद की पुस्तको का अपने यहां एक विशाल संग्रह किया है। आपके निम्न प्रयोग पूर्ण परीक्षित हैं, पाठक लाभ उठावें।" —सम्पादक।

ज्वरांतक रक्त वटी—

सिंगरफ रूमी १ तोला को खरल मे बारीक पीस ले और उसमे एक काली मिर्च डाल कर पीसे और फिर एक पत्ता तुलसी का डाल कर पीसें। इसी प्रकार वारी-वारी से काली मिर्च और तुलसीपत्र डाल कर खरल करते रहे। यहां तक कि ३०० काली मिर्च और ३०० तुलसी पत्र उसमे पड़ जांय। फिर चणक (चना) परिमाण की गोलियां बनाले और सूखने पर कार्य मे लावे।

सेवन विधि—चाहे कोई सा ज्वर हो ज्वर आने से एक घंटा पहले एक गोली बेरी के दो पत्तो मे लपेट कर खिलादे। परन्तु पहले पेट को जुलाव देकर साफ कर लेवें। पश्चात् वटी देना आवश्यक है। उसी दिन ज्वर नहीं होगा। यदि हो तो दूसरे दिन इसी प्रकार वटी और खिला देवे तो नहीं होगा। रोजाना, एकान्तरा, तिजारी, चौथइया सभी ज्वरो मे समान रूप से गुण करती है। मैंने इस योग को अपने औषधालय मे अनेक रोगियो पर अनुभव करके लाभदायक पाया है।

ज्वर मार्तण्ड—

अतीस कडवी कलमी शोरा कचूर
वंशलोचन कूंजा मिश्री गेरू
छोटी इलाइची फिटकरी भस्म
गेरूविष्णुक्रान्ता (कोयल की जड़)-५-५ तोला

निर्माण विधि—सबको बारीक पीस कर शीशी मे रखे।

मात्रा—चार रत्ती से एक माशा दिन मे ४-५ चार।

अनुपान—शर्बत अनार, शर्बत मिश्री अथवा शर्बत बनफ्सा के साथ।

नोट—पहले पेट को जुलाव देकर साफ करना आवश्यक है। पश्चात् औषधि का सेवन करे। तब ज्वर बिल्कुल चला जायगा।

विशूचिका-विध्वंशनि-गुटिका—

एलवा १८ तोला
करंज की गिरी सुहागा नौसादर
—प्रत्येक २-२ तोला
काली मिर्च ८ तोला

निर्माण विधि—इन सब औषधियों को कूट कपड़-छान कर गर्म जल से १-१ माशा की गोलियां बनावे।

अनुपान—गर्म जल या गंधक के तेजाव की ५ से १५ बूंद १ छटांक गर्म जल में मिलाकर देवे।

मात्रा—एक गोली या दो गोली।

रोग—विशूचिका [हैजा] शूलादि में उपयोगी है।

नयनामृत अंजन—

सुरमा काला शु	१५ तोला
समुद्र फैन	फिटकरी भुनी हुई
शोरा कलमी	जस्ता भस्म
—चारों ६-६ माशा	
लाहौरी नमक	३ माशा
साम्भर नमक	कचिया नमक
छोटी इलायची के दाने	शीतल चीनी
भीमसैनी कपूर	पीपल छोटी
—प्रत्येक ३-३ माशा	
काली मिर्च	१ माशा

—भीमसैनी कपूर के अतिरिक्त वाकी और सब औषधियो को प्रथम किसी पक्के चिकने पत्थर के खरल में हल्के हल्के कूट पीस कर वारीक रेशमी कपडे से छान कर पश्चात् भीमसैनी कपूर मिलाकर फिर उसी खरल में दो तीन दिन वरावर घोटे। जब सुरमा खूब वारीक हो जाय। तब शीशियों में भरकर कार्य में लावे।

सेवन विधि—सुवह शाम व रात को सोते समय या जिस समय जी चाहे इसमें से सलाई से आंखों में लगावे।

गुण—यह सुरमा प्रत्येक पुरुष, स्त्री के प्रतिदिन सेवन करने योग्य है। इसके लगाते ही आंखों का मैला पानी निकल कर सुखदायक ठंडक उत्पन्न होती और वीनाई अर्थात् दृष्टि को वहुत वडी सामर्थ्य व सहायता पहुँचती है। धुन्ध, ढलका, जाला, फूला, रतौन्धी, आंखों की सुर्खी, आंखों में नजला उतरना और ऐनक (चश्मा) तक छूट जाता है और आंखों के हर प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं।

संजीवनी मरहम—

जस्त (यशद) भस्म	५ तोला
नारियल का तैल	३ तोला
कार्वोलिक एसिड	३ बूंद

सेवन विधि—पहले जस्त भस्म को लेकर कपड़ छान कर नारियल का तैल मिलावें। पश्चात् तेजाव कार्वोलिक ३ बूंद भी मिला देवे।

रोग—यह लगाने से किसी भी प्रकार का गन्दा, गला, सड़ा फोडा फुन्सी को वहुत जल्द अच्छा करती है। वहते जख्मो को भरने के लिए सिद्ध योग है और बच्चो के सिर अथवा शरीर में फोड़े फुन्सियो को शीघ्र साफ करता है।

कफ केसरी रस— (र० सि० संग्रह २ भाग)

गोदन्ती भस्म	१० तोला
शुद्ध मन.शिल	२॥ तोला

—मिलाकर ६ घण्टे खरल कर लेवे।

मात्रा—३ रत्ती से ६ रत्ती शक्कर या शहद से दिन में दो या तीन वार।

उपयोग—यह रसायन कास और श्वास में कफ को सरलता से निकाल देती है। जो अधिक उत्तेजक औषधि सहन नहीं कर सकते ऐसे निर्वल प्रकृति के मनुष्यो के लिये और जिनको दाह होती है या कफ के साथ रक्त जाता है ऐसे रोगियो के लिए यह निर्भय और उत्तम औषध है।

श्रीयुत रामगोपाल गुप्त

A B., L A.M.

अध्यक्ष—श्री तिलक औषधालय, कोड़ा-जहानाबाद।

"श्री गुप्त महोदय रोग के निदान में बड़ी गहन दृष्टि से कार्य लेते है, यही कारण है आप की चिकित्सा से रोगी अनुपम लाभान्वित होते है। अभी आपकी आयु केवल ३१ वर्ष है, आप सात वर्ष से चिकित्सा में रत हैं। इस अवधि मे आपका औषधालय निरतर प्रगति कर रहा है। आपको कई बार स्वर्ण पदक भी प्राप्त हुए हैं। आपके प्रयोग सरल एव प्रभावकारी हैं, वैद्य महानुभाव इनसे आवश्य लाभ उठावें।" —सम्पादक।

अर्श (बवासीर) पर—

(i) नीम के बीज की गिरी — ४ तोला
इमली के बीज की गिरी — ४ तोला
अकरकरा — ६ माशा
मिश्री — ४ तोला

—इन सब औषधियो को पीस कर रख लेवे।

मात्रा—३ माशा दोनो समय प्रातःकाल सायंकाल जल से सेवन करे।

पथ्य—सात्विक हल्का भोजन करे। दुग्ध घृत आदि मूली, परवल, पालक, गेहूँ, जो की रोटी अथवा दलिया खाएँ, ब्रह्मचर्य पालन करे।

(ii) अपामार्ग की पत्ती — २ तोला
कालीमिर्च — ३ माशा

—दोनो को पीस कर बेर समान गोली बनाकर दोनो समय पानी से खाये, अर्श रोगी को आशातीत लाभ होगा।

दद्रु नाशक—

वैसलीन सफेद — ३ औंस
एसिड सलीसिलास — १ औंस

—दोनो को मिलाकर रख लीजिये। दाद मे लगाइए इस दवा से दाद शीघ्र नष्ट होते हैं।

दांत दर्द नाशक—

कपूर देशी — अजवायन सत
दालचीनी का तैल — लौंग का तैल

—दोनों को सम भाग मिलाकर रूई की फुरहरी से लगावे। इस औषधि से मसूढ़ों की सूजन, दांतो मे दर्द, पानी लगना, खोखली दाढ़ में लाभप्रद है।

सुजाक (पूयमेह)—

हजरुल यहूदभस्म — २ तोला
इलायची छोटी — १ तोला
कबावचीनी (शीतलचीनी) — १ तोला
शुद्ध यवक्षार — ६ माशा

शोरा कलमी	३ माशा
गोखरु छोटा	२ तोला

—इन दवाओ को पीस कर कपड़ छान कर लेवे। इसके पश्चात् मिश्री सभी दवाओ के बराबर मिलाकर रखें।

मात्रा—४-४ माशा, पानी के साथ दिन मे तीन बार सेवन करे।

अपथ्य – गर्म चीजे खटाई, गुड़, तैल, आदि वस्तुऐं न खाऐ।

पथ्य—दूध, चावल की खीर, लस्सी दूध, शर्बत आदि सात्विक भोजन करे।

वन्ध्यत्व नाशक प्रयोग—

मुनक्का बीज निकाला हुआ	४ तोला
शिवलिंगी के बीज	४ तोला
काली मिर्च	१ तोला

—सबको बारीक पीस कर गोली बना लेवे। गोली मटर के समान बनावे।

मात्रा—१-१ गोली बकरी के दूध के साथ अथवा गौदुग्ध के साथ दोनो समय सेवन करे।

गुण—इस औषधि से स्राव खुलकर होता है। गर्भ स्थिर होजाता है। मृतवत्सा दोष को भी समूल नष्ट करता है। औषधि २१ दिन सेवन करे।

तिक्तक तैल—

कपूर देशी	२ तोला
टर्पेन्टाइन आयल	४ तोला
नीलगिरी का तैल (यूक्लेप्टिस)	१ तोला
लौंग का तैल	१॥ तोला
जैतून का तैल	८ तोला
रोसा का तैल	१ तोला

—इन सभी दवाओं को शीशी में डालकर हिला दीजिये।

गुण—गठिया. वात व्याधि, अस्त्र-शस्त्र के कटने पर, निमोनियां, पसली के दर्द, घाव के रक्तस्राव तथा दर्द को एक दम रोकता है। ऊपरी भाग के दर्दो मे मालिश कीजिये। सूजन, कटे हुए जख्मों पर (गाज) कपड़ो मे भिगा कर लगावे। पीनस के रोगी को नस्य देवे। नस्य से नाक से कीड़े गिरने लगते है, मेरा यह बहु परीक्षित है।

बालशोष (सूखा रोग) पर—

रससिन्दूर	६ माशा
गोदन्तीभस्म	प्रवालपिष्टी
कच्छप पीठ भस्म	वंशलोचन असली
पीपल छोटी	सत्व गिलोय
इलायची छोटी	अतीस

—प्रत्येक १-१ तोला

—इन सम्पूर्ण औषधियो को पीस कर पुनः भस्म तथा रससिंदूर को पीस कर पूरी दवा मे मिला देवे।

मात्रा—चौथाई रत्ती से आधी रत्ती तक दिन मे तीन बार मा के दूध तथा गौ-दुग्ध या अजा-दुग्ध के साथ पिलावे।

गुण—सूखा रोग, अतिसार, कास, ज्वर, दांत निकलना, चिड़चिड़ापन आदि समूल नष्ट होता है। बालक पुनः नवजीवन प्राप्त करता है। यह रोग संक्रामक है। सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिये। बालक के शरीर मे लाक्षादितैल शङ्खपुष्पादि तैल की मालिश करावे।

श्री. देवानन्द शुक्ल साहित्याचार्य

D. I. M. S.

वै. इन्चार्ज-राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, वल्लीपुर-सुलतानपुर।

"श्री शुक्ल जी का निवास स्थान ग्राम बरेवा पो चुनार (मिर्जापुर) है। आपने काशी हिन्दू विद्यालय से साहित्याचार्य और श्री दर्शनानन्द आयुर्वेद कालेज से डी आई एम. एस का डिप्लोमा प्राप्त किया तथा २ वर्ष उक्त कालेज में रस-शास्त्र के अध्यापक रहने के बाद उत्तर प्रदेश राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय में चिकित्सक पद पर नियुक्त हुए। सम्प्रति वल्लीपुर चिकित्सालय मे चिकित्सक हैं। आपके निम्न दो प्रयोगो से पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक।
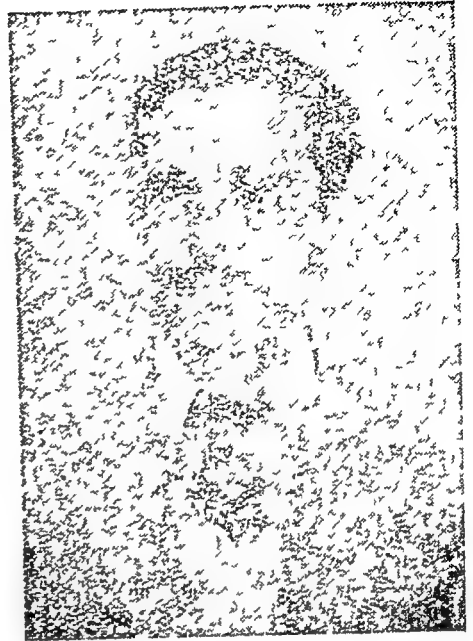
विद्रधि पर पुल्टिस—

सनई का बीज (पटुआ)	४ नग
अलसी बीज	१ तोला
प्याज	१ पुती
सोंठ	३ माशा
बड़ी इलायची	३ माशा
मैदा (गेहूँ)	१ तोला
कालीजीरी	१ तोला
बबूल की पत्ती	१ तोला
अफीम	१॥ माशा

नमक बालू बकरी का दूध —आवश्यकतानुसार।

निर्माण विधि —उपरोक्त औषधियों को कूट पीसकर बकरी के दूध में पुल्टिस की तरह बनाकर गरम गरम विद्रधि पर लेप करे। विद्रधि अगर अपक है तो बैठ जायगा अन्यथा पकाकर विदीर्ण कर देता है। अनुभूत है।

खाज नाशक—

गन्धक	१ तोला
बाकुची	१ तोला
पुनर्नवा (गदहपुर्ना) की जड़ का रस	२ तो.
शुद्ध सरसो का तैल	१० तोला

—गन्धक एव वाकुची पीसकर कड़ू (सरसो) तैल में पुनर्नवा का स्वरस तथा गन्धक वाकुची मिलाकर उबटन की तरह लगावे तथा ३ घंटे तक धूप मे पड़ा रहे। तत्पश्चात् किसी तालाव मे लाइफवाय साबुन से मलकर स्नान करे। एक ही बार के लगाने से बड़े दाने की खाज एवं छोटे दाने की कंडू में अवश्य लाभ करता है। कई बार का अनुभूत है।

क्षयामृत—

अकीक शङ्ख नाभि प्रवाल
कौडी सेलखडी धान्याभ्रक
अभ्रक सफेद यशब (पत्थर हरा)
जहरमोहरा खताई —प्रत्येक २-२ तोला

विधि सब वस्तुओं को कूटकर कपड़छान कर लेवें फिर नीचे लिखी ११ औषधों के स्वरस में बारी बारी मे तीन-तीन दिन घोट कर टिकिया बना सुखाकर शराव सम्पुट कर १० सेर उपलों की आग मे फूंक देवे। मतलब यह कि ११ चीजों के स्वरस में ३-३ दिन घुटाई होगी और फिर ग्यारह वार शराव सम्पुट कर ग्यारह आंचें लगाई जावेगी। ग्यारह आंचें लग जाने पर उत्तम भस्म तैयार हो जावेगी। फिर इस भस्म में १ तोला मोतीपिष्टी शामिल करके ३ दिन अर्क केवड़ा मे घोटकर शीशी में रक्खें।

सेवन विधि—१ रत्ती से २ रत्ती तक वर्धमान रीति से बढ़ाकर सुबह शाम दोनों समय उत्तम शहद और मक्खन मे देना चाहिए या रोगी की दशा देखकर और भी अनुपान निश्चित करना चाहिए। क्षय रोग में प्रथम और द्वितीय अवस्थाओं को अवश्य लाभ होता है। ग्यारह द्रव्य—

अजवायन का स्वरस अड़ूसे का स्वरस
हरी गुर्च का स्वरस, कंजा के पत्तों का स्वरस
घीकुमारी का स्वरस, नीम के पत्तो का स्वरस
हरी कासनी का स्वरस, हरी मकोय का स्वरस
दारु हल्दी काढ़ा दूध गदही
दूध बकरी —प्रत्येक १०-१० तोला

रक्त विकार पर विरेचन—

शुद्ध जमालगोटा सौंफ हल्दी
—प्रत्येक ६-६ माशा

शु. आंवलासार गन्धक	१ तोला
शु. रसकपूर	१ तोला
काली मिर्च	६ माशा

विधि—पहले रसकपूर और आंवलासार गन्धक को घोटकर कज्जली बनाले। बाकी चार चीजो को कूटकर कपडछान करले, फिर सब चीजो को मिलाकर नागरवेल पान के रस मे घुटाई कर छोटे बेर बराबर गोलियां बनाले।

सेवन विधि—१ गोली सवेरे पीसकर गुन-गुने जल से उतार लो और १-१ घण्टे का अन्तर देकर २-३ बार आध आध पाव गुन-गुना जल पी लेना चाहिए, इससे ५-६ विरेचन रोजाना आकर सप्ताह भर मे कैसा ही सडा गला शरीर क्यों न हो सुन्दर और निरोग हो जाता है।

पथ्य—नमक रहित और घृत रहित केवल मूंग की दाल और गेहूँ के फुलके के सिवा और कुछ नहीं खाना चाहिए। लाल मिर्च, खटाई तथा झीने का चढ़ना उतरना भी बन्द है।

सूचना—वैद्य महानुभाव तथा पाठक गण यह स्मरण रखे कि इस विरेचन को अगर पथ्य सहित ७ दिन सेवन कर लिया जावेगा तो कठिन से कठिन रक्तविकार एक हफ्ते में दूर हो जायगा जो ६-६ महीने सालसापरेला पीने से दूर नहीं होता।

नोट—कुष्ठ रोगों मे यदि इसके साथ जी ए. मिश्रा आयुर्वेद फार्मेसी झांसी के कुष्ठोत इन्जैक्शन भी लिये जावे तो वड़ा लाभ होता है। भोजन दोपहर के १२ बजे के बाद करना चाहिए।

शक्तिवर्धक योग—

आध पाव भिलावा टोपी दूर किया हुआ १ सेर कच्चे गाय के दूध मे शाम को भिगो देवें, सुबह को दूध से निकाल कर आध सेर घी मे डाल कर कढ़ाई चूल्हे पर चढ़ावें। धीमी आंच से पकावे, जब भिलावा भुन जावे और भिलावा बढ़कर लम्बे-लम्बे हो जावे, तब कढ़ाई को नीचे उतार कर ठंडा करे। गरम गरम घी मे से भिलावा को निकाल कर अलग रखले, फिर तीन पाव गेहूँ की

मैदा उस घी मे भूने। धीमी आंच से भूनना चाहिए जलने न पावे सुर्ख हो जाय, तब--

मग्ज अखरोट मग्ज चिरौंजी
तिल्ली सफेद धुली हुई बादाम की मिंगी
खोपरा —प्रत्येक २-२ छटांक

—इन सब मेवाओ को शाम को जौ-कुट करके ३ पाव गाय के गरम गरम दूध में भिगो देवे, सुबह को सिल बट्टे से खूब बारीक पीसे जब पिसते पिसते सब मेवा मक्खन के समान हो जाय तब इनको पाव भर घी में कढ़ाही में डाल कर धीमी आंच से भून लेवें अब भुनी हुई मैदा और भुनी हुई मेवा दोनो को हाथ से मिलाकर एक दिल करे तब सवा सेर शक्कर दानेदार लेकर उसकी चाशनी करे, उस चाशनी मे मेवा और मैदा मिली हुई डालकर कलछी से एक दिल करें फिर तीन-तीन तोला के लड्डू बनाकर रख छोड़े। तीन हफ्ता रखने के बाद १-१ लड्डू सुबह को खावे ऊपर से आधा सेर दूध गाय का गुनगुना शक्कर पड़ा हुआ पीना चाहिए। लड्डू खाने से पहिले थोड़ा थोड़ा खोपरा चबा लेना चाहिए उसके बाद लड्डू खाना चाहिए।

गुण—अत्यन्त शक्तिवर्धक है। ध्वजभंगनाशक है, लकवा, फालिज, मानसिक कमजोरी, कफज रोग, दमा, खांसी, जलन्धर गठिया, आतशक प्रमेह। इन सब रोगों को दूर करता है। नजला जुकाम की अक्सीर दवा है।

पथ्य—घी, हलुवा, पूड़ी खूब खाये। मूंग, अरहर की दाल, गेहूँ की रोटी, लौकी, परवल, पालक आदि खाना चाहिए।

परहेज—तैल, गुड़, मिर्च, खटाई और गरम वस्तुओ से त्याग रखना चाहिए। ब्रह्मचर्य का पालन करना अति आवश्यक है।

नोट—यह योग जाड़ा पड़ने पर ही सेवन किया जावेगा।

नामर्दी की दवा—

आक (मदार) की जड़ पारा शुद्ध
गन्धक आंवलासार शुद्ध गुड़ पुराना
भिलावा शुद्ध तिल काले धुले हुए
—प्रत्येक ४-४ तोला

विधि—पहले गन्धक, पारा को घोटकर कज्जली करें फिर आक की जड़ की छाल, भिलावा, तिल और गुड़ पुराना बीस वर्ष का मिलाकर एक में कूटें खूब कुटजाने पर कज्जली को मिलाकर सिल बटने से पीस कर चटनी के तुल्य कर लेवें। दवा को अत्यन्त बारीक कर लेना चाहिए। जब दवा खूब बारीक पिस जावे तब झरबेरी के बेर के बराबर गोली बना लेना चाहिए। इन गोलियों को आतिशी शीशी मे भरकर शीशी के मुंख पर बारीक तारों का गुच्छा सा बनाकर लगा देना चाहिए। एक लोहे की कढ़ाही के पैंदे को इस तरह से गुलाई से काटे कि जिससे बड़ा कागजी नींबू निकल सके यानी पेंदे में चार अंगुल की चौड़ाई का सूराख होना चाहिए। अब उस कढ़ाई को चूल्हे में चढ़ा देवें और वह आतशी शीशी जिसमें गोलियां भरी हैं, उल्टा करके उस कढ़ाही के पेंदे पर रक्खे, जिससे कि शीशी की गर्दन उस सूराख से नीचे निकल जावे और शीशी का पेंदा कढ़ाही के पेंदे के ऊपर रहे, अब राख से या बालू से उस आतिशी शीशी को ढंक देवे फिर कढ़ाही के ऊपर कंडे यानी उपले चुन देवे, जिससे कि शीशी बिल्कुल ढंक जावे, बाद को कंडों के ऊपर आग रख देवे जिससे कि कंडा जलना शुरू हो जावे, आतिशी शीशी मे गर्मी पहुंच कर तैल टपकना शुरू हो जावेगा। शीशी के मुंह के नीचे तामचीनी का गिलाश या कटोरी रख देवे जिससे कि शीशी से निकला हुआ तैल जमा होता रहे, लेकिन कटोरा या गिलाश को एक ऐसे बर्तन मे रखना चाहिए कि जिसमे

पानी भरा रहे और उस पानी के योग से गिलास ठंडा बना रहे जिसमे कि तैल टपक कर जमा होता रहे। जब तैल टपकना बन्द हो जावे तब कढ़ाही पर ही आंच को ठंडा कर देना चाहिए।

नोट नं० १—जिस आतिशी शीशी में गोलियां भरी जावें वह आधी ही शीशी भरनी चाहिए और आधी खाली रखनी चाहिए, पूरी शीशी भर देने से गैस भर कर शीशी टूट जाने का भय रहता है और शीशी टूट जाने से पास में बैठा हुआ बनाने वाला आदमी जख्मी हो सकता है।

नं० २—शीशी के ऊपर जो कंडों से आंच जावेगी, वह थोड़ी देर में ठंडी हो जावेगी तब उसकी राख को हटाकर दुबारा दूसरे कंडे चुन देना चाहिए। ऐसा दो या तीन बार करना पड़ेगा। जब सब तैल गिलास में निकल आवे तब गिलाश से निकाल कर अच्छी ऐसी शीशी में जिसमें काच की डाट (कार्क) लगी हो कर देना चाहिए।

सेवन विधि—४ बूंद तैल ३ तोले शक्कर में डालकर उस तैल पड़ी हुई शक्कर को फांक कर ऊपर से आध सेर गाय का गुनगुना दूध शक्कर पड़ा हुआ पीना चाहिए। एक ही बार के सेवन से नामर्द मर्द हो जाता है। नपुंसकता, ध्वजभङ्ग, जननेन्द्रिय में रक्त प्रवाह की वृद्धि करके उसको सबल दृढ़ तथा पूर्ण विकसित करने के लिए रामबाण है।

पथ्य—दूध, घी और पौष्टिक पदार्थ सेवन करना, मलाई मक्खन खाना भी परमावश्यक है। खटाई मिर्च, तैल, गुड़ और स्त्रीप्रसंग से परहेज करना परमावश्यक है।

नोट नं० ३—ऊपर वाली दवाओं में यदि १० तोले काले धतूरे के बीज दवा बनाते समय शामिल कर लिए जावे तो शीघ्रपतन दूर होकर स्तम्भन शक्ति बढ़ती है।

:: पृष्ठ २८३ का शेषांश ::

रक्तपित्त और अम्लपित्त में—

शुद्ध पारा शुद्ध गन्धक
शु सोनामखी —तीनों १-१ तोला
शिलाजीत चन्दन गुरुचि
दाख (मुनक्का) मधु सौंफ
धनियां कुड़ा की छाल हरड़
नीम पत्र —प्रत्येक २-२ तोला

—इन सभी दवाओं को कूट पीस मधु और मिश्री में तीन-तीन माशे की गोलियां बनावे।

मात्रा—सुबह शाम १-१ गोली खाकर ऊपर से दूध पीवें। रक्तपित्त और अम्लपित्त कुछ दिनों मे निर्मूल हो जाते हैं।

:: पृष्ठ २८४ का शेषांश ::

पुरानी खांसी और श्वास रोग—

पांचों नमक समुद्रफेन सुहागा
लोटा सज्जी सङ्ख सीप कौड़ी
—सब समान भाग

—इन सबको समभाग लेकर एकत्र पीस कर एक दिन आक के दूध मे खरल कर लुगदी को आक के पत्तों मे लपेट सुखा सम्पुट कर आरने उपलों मे फूंक दे। स्वांग शीतल होने पर बारीक चूर्ण कर ले।

मात्रा—१-१ रत्ती दिन मे २-३ बार।

अनुपान—मधु या कत्था चूना लगे पान के साथ। इसका सेवन खासी, श्वास, कफ, पसली का दर्द, उदर पीड़ा आदि रोगो को तत्काल नष्ट करता है।

श्री लक्ष्मीचन्द कुमार R. M. P. D. L .O, अमृतसर।

"आप यद्यपि पेशेवर वैद्य नहीं हैं। फिर भी चिकित्सा मे अनुभवी और योग्य आयुर्वेद सेवक हैं। अपने परिचितों की चिकित्सा सदैव करते रहे हैं। उससे आपको बहुत अनुभव हुआ है। उसी अनुभव के आधार पर ये सफल योग प्रेषित किए हैं। पाठक उनके गुणावगुण का विचार करें। योग सरल सुन्दर एव सुखदायक प्रतीत होते हैं।" —सम्पादक।

अर्शनाशक—

लौहभस्म उत्तम	१ तोला
प्रवाल भस्म अभ्रकभस्म सीपभस्म	
—प्रत्येक ६-६ माशा	

—इन सबको मिला कर रखले।

मात्रा—२ रत्ती दही की मलाई या मक्खन में रख कर निगल ले। बाद में पाव भर दही का मट्ठा थोड़ा जल मिला कर चीनी अथवा नमक और काली मिर्च मिलाकर पीलें। यदि मट्ठा ऋतु अनुसार ठीक न हो तो दोपहर के खाने के साथ मट्ठा लेले। रात को सोते समय २ रत्ती की मात्रा ३ माशा त्रिफला चूर्ण के साथ शहद मे मिलाकर चाट ले और बाद से एक पाव दूध पीले। इसके साथ ही लगाने के लिये नीचे लिखा योग भी बनाले।

लगाने की दवा—

शुद्ध फिटकरी	१ माशा
सुहागा	१ माशा

—इन को एक छटाक तैल सरसों में हल करके रखले प्रात. स्नान के समय थोड़ा सा तैल हथेली पर डाल कर उसमे से एक उगली दाई नासिका मे एक बाईं नासिका मे एक नाभि मे और चार पांच उंगली गुदा के अन्दर लगा ले। कुछ ही दिनों में मस्से भी ठीक हो जांयगे और यदि स्नान के समय सदा तैल का प्रयोग करते रहे तो आयु भर अर्श से कष्ट नहीं उठायेगे।

दन्तमंजन (पायेरिया) के लिए—

फिटकरी शुद्ध	सोडाबाईकार्ब
बोरिक एसिड	नमक
—प्रत्येक १-१ तोला	
नीमपत्र छाया में सुखाये हुए	६ माशा
अजवायन	कालीमिर्च
—दोनो ६-६ माशा	
हल्दी	३ माशा
अकरकरा	२ माशा
कपूर	१ माशा

—इनको बारीक पीस कर रखलें। कृपया धन के लालच मे खड़िया मिट्टी न मिलावे।

प्रयोग विधि—प्रातः और सायं उंगली या दातुन से दांतों पर लगाले। ब्रुश का प्रयोग न करे। आध घंटे के बाद गरम पानी से कुल्ला करले।

— शेषांश पृष्ठ २६६ पर।

कविराज श्री जगदीश शर्मा जौहर

आयुर्वेदाचार्य प्रभाकर

श्री लक्ष्मण औषधालय, लाजपत रोड, पानीपत, (पंजाब)

"श्री कविराज जी हिन्दी तथा उर्दू के कवि हैं। पंजाब की मैट्रिक तथा प्रभाकर परीक्षा पास करके चार वर्ष देहली मे आयुर्वेद का अध्ययन किया। २ वर्ष तक जैन धर्मार्थ औषधालय पानीपत मे चिकित्सा कार्य करने के पश्चात् आपने स्वतंत्र कार्य प्रारम्भ किया है। आपने एलोपैथी तथा होमियोपैथी का भी अध्ययन किया है। आयुर्वेद मंडल के आप प्रधान मंत्री रहे हैं। आप सेवा-सम्पन्न सार्वजनिक-कार्यकर्त्ता हैं। ज्ञान प्राप्त करने मे आपकी एक विद्यार्थी की दृष्टि सदैव रहती है। आपके तीनो योग सरल सुन्दर हैं।"

—सम्पादक।

यकृत दोषान्तक चूर्ण—

कलमीशोरा	३ माशा
नौसादर	६ माशा
रेवन्द खताई	१ तोला

—सबको कूट- छान कर चूर्ण करे।

मात्रा—२ रत्ती से ४ रत्ती तक दिन मे ३ बार।

अनुपान—शर्बत बजूरी मातदिल तथा अर्क कासनी, अर्क मकोय, अर्क सौंफ सब १-१ तोला।

विधि—चूर्ण की पुडिया खाकर ऊपर से शर्बत मिश्रित अर्क पी ले।

विवरण—यह सरल तथा गुणप्रद प्रयोग जीन्द के प्रसिद्ध वयोवृद्ध राजवैद्य पं० कुन्दनलाल जी के आशीर्वाद-स्वरूप प्राप्त हुआ। रेवन्दखताई बहुत उत्तम लेनी चाहिए।

गुण—यकृद् की वृद्धि मे तथा यकृत शोथ मे यह विशेष लाभकारी है। यह यकृत के दोष को दूर करके यकृत को ठीक प्रकार से कार्य करने में सहायता करता है। भूख की कमी को ठीक करता है। यदि इसके साथ १ रत्ती उत्तम मण्डूर अथवा लोहभस्म प्रति मात्रा दी जाये तो रक्त मे रक्तकणो की वृद्धि करता है। पीलिया पांडु-रोग को निवारण करता है, कोष्ठबद्धता को भी धीरे-धीरे दूर करता है।

पथ्य—भारी तथा चिकनी सब वस्तुएं तथा सब दालें बन्द कर दे। आहार मे शाक, हरे पत्तो वाली सब्जी-पालक, बथुआ, सलाद तथा टमाटर, पपीता, फलों में अनार का रस, नीबू का रस, शिकंजवीन, संतरे का रस, माल्टे, मौसमी का रस दे। गाजर, मूली, शलजम की सब्जी, गेहूँ की खुश्क रोटी, ताजा दही, क्रीम निकला दूध आदि दे सकते है। शरीर पर तैलादि की मालिश बन्द रहे तो अच्छा है। वसा (चरबी) वाला आहार पूर्णतः बन्द करने से शीघ्र लाभ होता है। प्राय एक से तीन सप्ताह मे इस प्रकार चिकित्सा करने से आशातीत लाभ नजर आता है। बाल, वृद्ध, युवा सभी बलाबलानुसार यह सेवन कर सकते है।

विशूचिका रिपु—

आक की जड की छाल सूखी	२ तोला
काली मिर्च	६ माशे
कालानमक	६ माशे

विधि—सबको बारीक कपड़छान कर अद्रक के स्वरस में दो तीन घंटा खरल कर चने प्रमाण गोलियां बनाले ।

मात्रा—रोग की अवस्थानुसार २ से ४ गोली अर्क पोदीना अथवा लौंग जल से दे ।

गुण—विशूचिका मे जब सफेद रङ्ग के दस्त तथा वमन हो रहे हों, मूत्र बन्द हो और रोगी के बचने की कोई आशा न रही हो, बांइटे (आक्षेप) जोर-जोर मे आरहे हो ऐसे अवसर पर एक एक घंटे के अन्तर से यह दवा आशातीत लाभ करती है । रोगी प्रायः काल के चक्र से निकल आता है ।

पथ्य—पोदीने से पके जल के अतिरिक्त कुछ भी खाने पीने को न दे । स्वच्छता का विशेष ध्यान रखे । मल और वमन खुला न रहने दें । उन्हे ढंक कर रखें या जलादे ।

प्रसिद्ध काली मरहम—

नीचे प्रसिद्ध काली मरहम का प्रयोग लिख रहा हूँ जिसे भारत के अनेक विज्ञापनदाता औषध विक्रेता संस्थाओ ने विविध नामों से रजिस्टर्ड करवा रखा है। यह [illegible] की चीज है तथा वैद्यों के नित्य प्रयोग आने वाली है । फोड़ा फुंसियों को पकाने-फोड़ने और व्रणों को रोपण करने का काम करती है ।

तिल का तैल		२० तोला
सिंदूर		१० तोला
गन्दाविरोजा		१ तोला
मुरदासंग		मोंम सफेद
संगजराहत	राल सफेद	६-६ माशे
नीलाथोथा		१ माशे

विधि—एक लोहे के बरतन मे तैल डालकर आग पर चढ़ा दें और सिंदूर डालकर लकड़ी से हिलाते रहे। जब सिंदूर का रङ्ग काला हो जाय तो कढ़ाही को नीचे उतार शेष द्रव्य जो पहले से पीस कपडछान कर रखे हो एक साथ मिलादें अल्प उष्ण अवस्था में छोटी-छोटी मरहम की डिबियों मे भर दे । थोडी देर मे ठंडी होकर जम जायगी ढक्कन बन्द लेबल लगाकर रख लें ।

विधि—व्रण अथवा फोडो को नीम के पत्तों मे उबाले जल से धोकर कपडे के फाहे पर मरहम लगा कर गरम चिपका दे, प्रायः ठीक होने पर ही उतरेगा ।

:: पृष्ठ २६४ का शेषांश ::

गुण—कुछ ही दिनो के सेवन से दांतो से रक्त बहना, पीव आना, बदबू आना, दांतो का हिलना, दर्द रहना, पानी का लगना, आदि ठीक होकर दांत मोती जैसे चमक उठेगे ।

दिव्यरसायन—

लौहभस्म	अभ्रकभस्म	प्रवालभस्म
वङ्गभस्म	सीपभस्म	कुक्कुटांडभस्म
शिलाजीत	सतगिलोय	वर्कचांदी

—प्रत्येक समान भाग

—सबको मिलाले और जितना वजन इसका हो उतना ही मिश्री कूंजा भी मिलाकर रखले ।

मात्रा—१ रत्ती से ३ रत्ती तक ।

अनुपान—मलाई (दूध या दही की), मक्खन, शहद अदरक रस । समय—प्रातः व सायं ।

गुण—प्रमेह, कास, श्वास, विषमज्वर, बार-बार जुकाम होना, फेफड़ों की निर्बलता, हृदय की दुर्बलता, श्वेतप्रदर, हिस्टीरिया, दुर्बलता के कारण बांझपन भी ठीक हो जाता है। यह प्रत्येक ऋतु मे ली जा सकती है।

श्वेत प्रदर में—

—केवल कुक्कुटाड भस्म २ रत्ती की ही मात्रा प्रातः दही की मलाई में रख कर ली जाये और ऊपर से पाव भर दही का मट्ठा पी लिया जाय तो कुछ ही दिनो मे प्रदर नाश होजाता है ।

यदि रोगिणी दुर्बल हो तो इसमे लोह और वङ्ग भस्म भी मिलाई जा सकती है ।

वैद्य रामशीष पाण्डेय विशारद आयुर्वेद शास्त्री

अध्यक्ष—श्री मंगल फार्मेसी, मु० पो० बखरी (चम्पारन)

"श्री पाण्डेय जी के परिवार मे बहुत समय से चिकित्सा कार्य हो रहा है। आपके पिता श्री प० बल्देव जी पाण्डेय वैद्य भी योग्य चिकित्सक है तथा आपके पितामह, चाचा तथा भ्राता भी योग्य चिकित्सक हैं। आपने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की है, होमियोपैथिक का भी अध्ययन किया है। आपके निम्न प्रकाशित तीनो प्रयोग अत्यन्त सरल हैं, किन्तु आपका कहना है कि इन प्रयोगो से आपने अनेक रोगियो पर महान् सफलता प्राप्त की है। पाठक भी आपके अनुभव से लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

व्रण पर स्वानुभूत—

मुझे सौभाग्यवश नैपाल की तराई के एक ग्राम मे जाने का अवसर मिला। वहा मैंने देखा कि एक व्यक्ति पैर के घाव से पीडित है। उसके घुटने और एडी के बीच वाला पैर का भाग घाव से अति आक्रान्त था। देखने मे बहुत बुरा संक्रामक ऐसा लग रहा था। उसका दुःख नहीं देखा गया तो मैंने उसे अपने पास बुलाया और उससे चिकित्सा के विषय मे पूंछा। उसने कहा कि सरकार से इसकी चिकित्सा कर रहा हूँ और अशातीत लाभ उठा रहा हूँ। इसके बाद उसने मेरे समक्ष जो चिकित्सा प्रणाली रखी उसे सुनकर मैं दंग रहा। उसने तरतु अपने घर से दही मगाया और उस दही को अपने आक्रान्त स्थान पर चुपड दिया फिर कुत्ते को पुकारा कुत्ता आगया और दही समझ कर उसे चाटने लगा। दही के साथ-साथ उस कुत्ते ने उसके घाव को भी चाटा। उसका कहना था कि इस क्रिया से मेरे घाव अच्छे हो रहे है। मैंने भी वहा दो चार दिन रहने का आयोजन कर लिया और देखने लगा कि इस रोगी को कहां तक सफलता मिलती है। चलते समय फिर मैंने उसके घाव देखे, उक्त क्रिया के द्वारा इतना परिवर्तन देखा कि जिसका हिसाब न था। मै तो चला आया। पुन. [illegible] वहा मुझे जाने का अवसर मिला तो मैंने उससे [illegible] और समाचार पूंछा उसने बतलाया कि वही क्रिया मेरे दुष्टव्रण को जड से भगाने का कारण बनी। उस दिन से मैंने भी उसी क्रिया का सहारा लिया और आज तक अनेकों रोगियो पर अशातीत लाभ प्राप्त किया। धन्वन्तरि के पाठकों से प्रार्थना है कि इस प्रयोग को घाव पर अवश्य परीक्षा करने की कृपा करे। यह आशुफलप्रद है।

बच्चों का रेचन—

जब किसी भी तरह से शिशुओं को दस्त बन्द होजाते हैं, कोष्ठबद्धता होजाती है, पेट से सचित मल के अवरोध के कारण जब बच्चे उदरशूल से अधीर होकर छटपटाने लगते है, उस समय एक मामूली सी वस्तु जिसका मूल्य कुछ भी नहीं है

—शेषांश पृष्ठ ३०१ पर।

आयुर्वेदरत्न वैद्य श्री प्रह्लादराय शर्मा आयुर्वेदाचार्य

चिकित्सक—श्री हनुमान राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय, सालासर (चूरु) राजस्थान

"आप रतनगढ के मूल निवासी हैं, आपका अध्ययन रुइया कालेज मे श्री पुमाप्रसाद जी साहित्यायुर्वेदाचार्य द्वारा तथा ऋषिकुल आयुर्वेद कालेज रतनगढ मे हुआ है। स्नातकोत्तर आयुर्वेदालकार की उपाधि प्राप्त की है। आप शस्त्रचिकित्सा भी सफलतापूर्वक करते हैं जिनमें साधारण आपरेशन आजाते हैं। अपने क्षेत्र के सफल चिकित्सको में आपकी गणना है। आप सार्वजनिक कार्यो मे सक्रिय भाग लेते रहे हैं यही कारण है कि जनता के आप अति प्रिय हैं और वहा आपका समुचित समादर है। आपके कुछ अनुभूत प्रयोग व क्रियायें निम्न हैं जो नि.सकोच कार्य मे लाई जा सकती हैं।"

—सम्पादक।
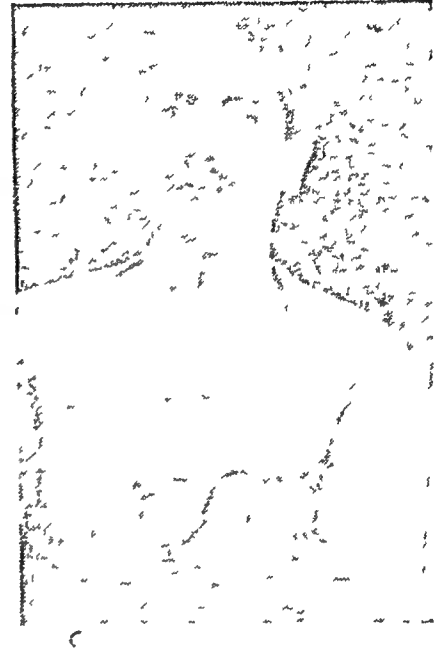
नासा छिद्र मे अटकी वस्तु निकालना—

बालक प्रमादवश नाक के अन्दर बेर की गुट्टी (गुठली) तथा अन्य वस्तु डाल लेते है और उनका निकालना कठिन हो जाता है। इसका सबसे सरल उपाय निम्न है—

जिस नासा छिद्र मे कोई वस्तु डाली हो उसके विपरीत वाली नासा के अन्दर १ फुट लम्बी रबड की नली डालकर उसके इर्द गिर्द रुई से हवा बन्द करके जोर से फूंक लगाने से दूसरी नासा मे अटकी हुई वस्तु उसी समय बाहर आजायगी और रोगी का कष्ट दूर होगा।

नोट—अगर रबड की नली प्राप्त न हो तो उपरोक्त कार्य हुक्के की नली से भी लिया जा सकता है।

उष्णवात मूत्रकृच्छ्र—

रेवदचीनी छोटी इलायची
शुद्ध फिटकरी —तीनो १-१ तोला
जीरा कलमी शोरा यवक्षार
—प्रत्येक २-२ तोला
शीतलचीनी ५ तोला

—उपरोक्त औषधियो को कूटकर सूक्ष्म वस्त्रपूत करके शीशी मे रक्खे।

सेवन विधि—मात्रा ३ माशा से ६ माशा ठंडे जल मे दुग्ध मिश्री डालकर लस्सी बनाकर दिन में ३ बार सेवन करावे।

औषधि १ सप्ताह से २ सप्ताह तक सेवन करावे।

पिचकारी की औषधि—

एक सेर जल में नीम की पत्ती डालकर औटावे फिर १ तोला शुद्ध फिटकरी डालकर पानी को हिला देवे। जल नितरने पर शीशी में भरकर रक्खें। प्रात. सायं शिश्न में पिचकारी लगावे।

उपदंश नाशक—

सर्वप्रथम रोगी की कोष्ठ-शुद्धि अवश्य करे और निम्न योग विधिवत् सेवन करावे।

छोटी इलायची मुर्दाशङ्ख
शुद्ध रस कपूर बंगला पान का रस
—प्रत्येक ६-६ माशा

सफेद मिर्च	३ तोला
गौ घृत	२० तोला

—सब वस्तुओं को कांसे के कटोरे में डालकर नीम के सोटे से लगातार ४८ घंटे तक घोटें और फिर चौड़े मुंह की शीशी में रख लेवे।

सेवन विधि—नित्य प्रात २ रत्ती घृत बंगला पान में रख कर चबा देवे। इसके १ घंटे पश्चात् प्रथम ११ काली मिर्च चबाकर घृत २ तोला शुद्ध गौघृत पिला देवे।

द्वितीय योग—

शु पारद ३ माशा तोल कर एक पात्र में रख लेवे। फिर श्वेत पुनर्नवा की जड़ १ तोला मुंह में चवाकर उसके पीक को हाथ की हथेली में डालकर उस पारद की पीक के अन्दर डालकर हाथ की अगुली से मर्दन करके एक जीव कर लेवे। मिलने से काला रंग हो जावे तब हाथ की अगुलियों से लेकर कोहनी तक ऊपर चढ़ाकर मर्दन करके हाथ में रमा लेवे और आवश्यकतानुसार पुनर्नवा का रस पीक द्वारा डाल लेवे। इस तरह लगातार आध घंटे तक मर्दन करे। यह योग जरा घृणित प्रतीत होगा। किन्तु गले हुए शिश्न के घाव ३ दिन में सूख जायेगे।

उपदंश के घाव सुखाने का मरहम—

उपदंश के घाव को त्रिफला क्वाथ से धोकर, फिर त्रिफला का कोयला बनाकर शहद तथा घृत में मिलाकर खूब मर्दन करके घावों पर लगावे।

सफेद कत्था सिंदूर कपूर
मुर्दाशङ्ख —प्रत्येक सम भाग

—लेकर सूक्ष्म वस्त्रपूत करके शतधौत घृत में मिलाकर घावों पर लगावे।

श्वेत प्रदर नाशक—

१—सिंघाड़ा पठानी लोध नागकेशर
फिटकरी —चारों सम प्रमाण

—सबके बराबर मिश्री मिलाकर वस्त्रपूत चूर्ण करके ६ माशा से १ तोला तक प्रात' सायं शीतल जल से लेवे।

सेवन काल—१५ दिन, गरम वस्तु न खावे।

२—हाथीदांत का बुरादा माजूफल
वंशलोचन —तीनों २-२ तोला

—सूक्ष्म वस्त्रपूत करके सबकी १५ पुड़िया बनावे। प्रात'काल १ पुड़िया बकरी के मिश्री मिले दुग्ध के साथ सेवन करावे।

गुण—१५ दिन के अन्दर ही श्वेत प्रदर नष्ट होगा। कोष्ठबद्ध होने पर मृदु विरेचन लेते रहना चाहिए। शुद्ध फिटकरी ३ रत्ती १ सेर पानी में डालकर योनि प्रक्षालन करते रहना चाहिए। गरिष्ठ भोजन तथा उत्तेजक वस्तु सेवन न करना चाहिये।

रक्त प्रदर नाशक—

१—कबूतर की विष्टा ३ माशा और इतनी ही मिश्री मिलाकर प्रात सायं ठंडे पानी से सेवन करावे। इस प्रकार ३ से ५ मात्रा सेवन करने से ही रक्त प्रदर बन्द हो जाता है।

२—नागकेशर	४ तोला
एला (इलायची) छोटी	२ तोला
मुलहठी	२ तोला
मुलतानी	७ तोला

जीरा — २ तोला
मिश्री — ११ तोला
रसौत — २ तोला

—सूक्ष्म वस्त्रपूत चूर्ण करके ६ माशा की मात्रा से दिन रात मे ७ पुड़िया सेवन करावे।

अनुपान—ठंडा पानी।

२—श्वेताञ्जन ३ माशा से ५ माशा तक मिश्री मिलाकर सेवन कराने से भी पूर्ण लाभ होता है।

शीतपित्त नाशक तैल—

कायफल — ६ तोला
शुद्ध तिल तैल — ३० तोला

निर्माण विधि—कायफल के चूर्ण को जल से घिस कर कल्क बनावे, फिर तैल कढाही मे डालकर गरम करे और औषधि का कल्क डालकर तैल विधि से तैल सिद्ध करे अर्थात् मन्दी मन्दी आंच से तैल सिद्ध करके ठंडा होने पर छान लेवे।

गुण—आवश्यकतानुसार शीतपित्त के रोगी के शरीर पर लगाने से तत्क्षण लाभ होगा।

शीतपित्त मे सेवन करने की औषधि—

सोना गेरू ३ माशा बराबर मिश्री मिलाकर दिन मे ३ बार ठडे पानी से सेवन करावे, तत्काल लाभ होता है।

अगर शीतपित्त पुराना होवे तो उपरोक्त तैल की मालिश करे और निम्न योग सेवन करे—

माली बावची — ७॥ तोला
उशवा — मजीष्ठ (मजीठ) — हरड
अनन्तमूल — बहेडा — आवला
मिश्री — —प्रत्येक २॥-२॥ तोला

—सबको कूट-पीस चूर्ण मिला बना कर १ तोलाकी मात्रा से प्रात. साय ठडे पानी मे लेवे।

अपथ्य—तैल, गुड तथा तिल और ज्यादा चटपटी वस्तु सेवन न करे।

हिक्कानाशक योग—

इन्द्रयव ४ माशा मधु के साथ चटावें और काली मिर्च के चूर्ण की धूप देवें। धुआं सीधा नाक मे जाना चाहिए। दाख, मुनक्का, सुदकी, कूकर घास को शहद मे मिलाकर चटावे। उपरोक्त प्रयोग परीक्षित है, तत्क्षण हिक्का बन्द होगी।

नोट—कूकर घास का सूक्ष्म चूर्ण कर मिलावें।

जलोदर नाशक योग—

१—बिना ब्याही घोड़ी का मूत्र — ४० तोला
कालीमिर्च — ६ माशा

—पीसकर मिलावे और सारा मूत्र एक बार मे ही पिला देवे। फिर दिन भर केवल दूध ही पिलाते रहे। उपरोक्त योग एक दिन बीच मे देकर तीन बार देवे।

२—पत्ते वाली थूहर के दूध मे चने की दाल भिगो कर दूध की तीन भावना देवें और रख लेवें।

जलोदर के रोगी को प्रातः २ दाने निगलवा दिया करे। इससे विरेचन होकर उदर का जल निकलेगा। औषधि १५ दिन सेवन करावे।

विभूतिहर योग—

कूठ — मूली के बीज — सरसो
हल्दी — मसूर की दाल — केशर

—सब समान भाग लेकर सरसो का तैल तथा जल डालकर पकावे और लेप करे। १५ दिन लेप करने से विभूति के चकत्ते (दाग) नष्ट होकर त्वचा सुन्दर हो जायगी।

नोट—लेप दिन मे करना चाहिए।

विभूति रोग—क्षुद्र रोगाधिकार मे वर्णित, छाती या मुंह पर होने वाले कष्ट-रहित हल्के श्वेत-वर्ण के दागो को कहते है।

रक्तार्श पर—

कुड़ा की छाल, — नागकेशर असली
मोचरस — इन्द्रयव — धायफूल

मुलहठी रसौत — प्रत्येक २॥-२॥ तोला
मिश्री १७॥ तोला

—इनका वस्त्रपूत चूर्ण करके एक-एक तोला प्रातः-सायं शीतल जल से सेवन करें।

मात्रा—६ माशा से १ तोला लेवें। इस योग से तीन दिन में लाभ होगा किन्तु २१ दिन तक सेवन करते रहना चाहिए।

शिरो रोग पर अनुभूत—

प्राय स्त्रियों मे शिरो-रोग अधिक पाया जाता है जो कि पथ्यापथ्य का ध्यान न देवें, रजोकाल मे ध्यान न देवें, रजो धर्म होते ही स्नान करना, तथा अधिक परिश्रम का कार्य करना आदि कारण हैं, उपेक्षा करने से स्नायु-दौर्बल्य हो जाता है, जिनके लिए निम्न योग सेवन करावें—

बादाम पिस्ता पोस्त दाना
नोजा (चिलगोजा) —प्रत्येक २०-२० तो.
चिरौंजी दाना ७ तोला
खोपा छुहारा कायफल
सफेद मिर्च ब्राह्मी पत्ती
बड़ी इलायची दाख

—प्रत्येक ५-५ तोला

केशर १ तोला
घिया (कद्दू) का बीज १० तोला
खीरा ककड़ी का बीज १० तोला
पेठा का बीज १० तोला

—उपरोक्त सब वस्तुओं की पिष्टी बनाकर एक सेर घृत में मन्दी आंच से सेक कर २ सेर मिश्री की चासनी करके उसमें प्रवाल २ तोला मुक्ताशुक्ति २ तोला, स्वर्ण माक्षिक २ तोला और पिष्टी मिलाकर एक जीव करके बादाम पाक की कतली की तरह चकले पर वेल कर चक्की काट कर सोने तथा चांदी के वर्क लगाकर रखे, और नित्य प्रातः ५ तोला खिलाकर दूध पिलावे। यह योग मैं सर्दी की ऋतु मे शिर-रोग वालों को सेवन कराता हूँ। शतशोनुभूत है।

:: पृष्ठ २९७ का शेषांश ::

आशातीत लाभ दिखलाती है और बच्चों को दुःख से निर्मूल कर जीवन दान देती है। वह है महुआ वृक्ष का बीज "कोइन"। इस कोइन की ऊपरी त्वचा का छिलका फेंक दे और अन्दर वाली गूदी को बच्चे के गुदा मार्ग में लगादें। फिर दो तीन मिनटों के अन्दर ही आप देखेंगे कि पर्याप्त मात्रा में मल निकल गया है और बच्चा आनन्द की सांस लेता है।

उदरशूल नाशक—

सौंठ सुहागा हींग
सेंधानमक —प्रत्येक सम भाग

निर्माण—प्रत्येक औषधि को कूट-पीस कपड़छान कर खरल मे सहजन वृक्ष की छाल के रस की भावना देकर मटर बराबर गोली बनाले।

प्रयोग—किसी भी तरह का पेट दर्द हो आप इस अमृत तुल्य औषधि से अधिक लाभ उठायेंगे।

अनुपान—गरम जल से १ गोली आवश्यकतानुसार प्रयोग करें, अनुभूत है।
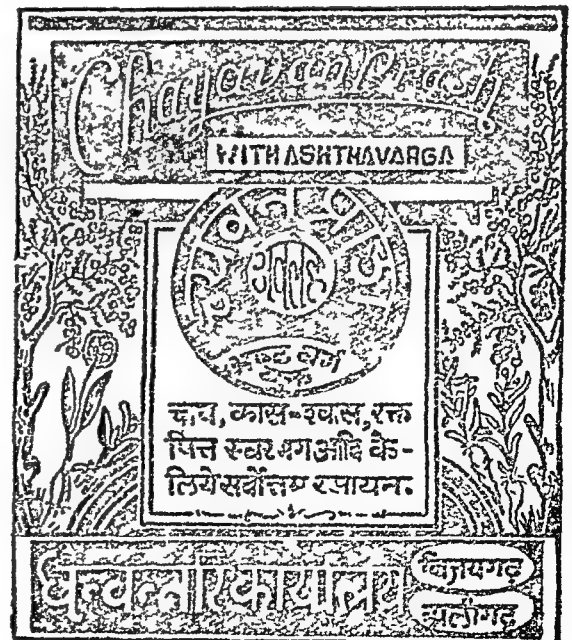
वैद्य फूलादत्त शर्मा शास्त्री

आयुर्वेदाचार्य, टोंक जिला बोर्ड औषधालय,
मु० पो० नासीदा (राजस्थान)

"आपका जन्म दाधीच ब्राह्मण कुल में श्री पं मोडूलाल जी शर्मा के यहा हुआ। आपने प्रथम संस्कृत की मध्यमा उत्तीर्ण की तथा उसके बाद श्री सनातन धर्म आयुर्वेद कालेज बीकानेर मे आयुर्वेद का अध्ययन कर नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की और इसके साथ-साथ श्री मेहता धर्मार्थ औषधालय बीकानेर के अध्यक्ष वैद्य श्री प शंकर-दत्त जी शर्मा आयुर्वेदाचार्य की सरक्षता मे प्रत्यक्ष कार्याभ्यास किया। उसके बाद श्री परमार्थ जैन औषधालय नसीराबाद में प्रधान वैद्य के स्थान पर कार्य किया, ततपश्चात् टोंक जिला बोर्ड के विभिन्न स्थानो के औषधालयो में ५ वर्ष से कार्य कर रहे हैं। आपके निम्न चारो प्रयोग सिद्ध व सफल हैं। धन्वन्तरि के पाठक लाभ उठावें।" —सम्पादक।

व्रणहर मलहम—

जिंक औक्साईड	बोरिक एसिड
सल्फेनिलोमाइड पाउडर	—तीनों ½-½ औंस
राल पिसा हुआ	तुत्थ पिसा हुआ
वेसलीन	—५-५ तोला

निर्माण—उपरोक्त दवाओं को वेसलीन मे मिलाकर एक जी करके शीशी मे मिलाकर रखे।

गुण—इस मलहम के प्रयोग से असाध्य व्रण नाड़ी, व्रण, साधारण फोड़े-फुन्सी अच्छे होजाते हैं। इसका प्रयोग हमारे यहा आठ वर्ष से चलता आरहा है।

सरल विरेचक योग—

शुद्ध ताजा सनायपत्ती		सौंफ
सेंधानमक	मुनक्का	अमलतास

—प्रत्येक ६-६ माशा

निर्माण—उपरोक्त सब दवाओं को लेकर यवकुट करके एक पाव भर पानी मे मिट्टी के बर्तन मे उबाल कर एक छटांक पानी शेष रहने पर उदावर्ती को पिला देवे। पानी को छान कर देवे।

गुण—इस योग से भयङ्कर से भयङ्कर उदावर्त रोगी अच्छे हुये है। जिन रोगियो पर जमाल-गोटा युक्त योग असफल रहे है उन पर भी इस प्रयोग ने अपनी बाजी रखी है। तथा इच्छाभेदी आदि से जी मचलाना आदि उपद्रव होजाते हैं लेकिन इस योग से मल फूल कर दस्त होजाते है और पेट साफ होजाता है।

विषमज्वरान्तक वटी—

श्वेत फिटकरी पुष्प	काली मिर्च
गिलोय सत्व	—तीनो १-१ तोला
निम्ब के ताजा तिनकों का मूल	१ तोला

निर्माण—प्रथम सब चीजो को सिलपर पीस कर बाद में निम्ब के तिनकों का मूल भाग तथा तुलसीपत्र डालकर खरल मे खूब महीन घुटाई

करें तथा चने समान वटी बनालें और छाया मे शुष्क कर रखले।

मात्रा—पूर्ण वयस्कको २-२ गोली दिन मे तीन वार दूध या ठंडे पानी से।

गुण—इस वटी से दिन मे दो वार आने वाला ज्वर तथा १ वार आने वाला तृतीयक चातुर्थिक ज्वर अवश्य ठीक होजाते है। ज्वर निवृत्ति के पश्चात् भी ५ दिन तक सेवन कर लेने से पुनरावृत्ति नहीं होती हैं।

नोट—ज्वरी को प्रथम साधारण विरेचन देकर इस दवा का प्रयोग करे। और वटी निर्माण मे गीलेपन की अगर अवश्यकता पडे तो पानी का प्रयोग नहीं करके तुलसीपत्र स्वरस का ही प्रयोग करे।

हैजा विध्वंसक वटी—

कालीमिर्च   अर्कमूल छाल
—दोनो १-१ तोला
अद्रक स्वरस   —यथेच्छ

निर्माण—प्रथम अर्कमूल छाल और कालीमिर्च को सिल पर पीस कर फिर यथेच्छ अद्रक स्वरस लेकर दोनों वस्तुओं को मिलाकर खरल मे घुटाई करे और बडे बेर के समान वटी बनाले।

मात्रा—१-१ वटी उबले हुये शीतल पानी से देवे।

गुण—इस प्रयोग द्वारा असाध्य से असाध्य विशूचिका के रोगी अच्छे हुये है। दो वटी उदर प्रवेश होते ही दस्त उल्टी मे लाभ होना प्रारम्भ हो जाता है और तीन दिन के प्रयोग से रोगी अवश्य अच्छे होजाते हैं।

:: पृष्ठ ३०६ का शेषांश ::

हरीरा—

गेहूँ	आधी छटाक
बादाम की गिरी	१५ नग
खशखश	१ तोला
चारों मगज	१ तोला
कद्द के बीजों की गिरी	१ तोला
पिस्ते	३ माशे
गाय का घी	३ तोला
दूध गाय या भैंस का	१ पाव
मिश्री, खांड या चीनी	आधी छटांक

विधि—पहले गेहूँ लेकर रात को पानी मे डाल दो प्रात पानी में से निकाल कर सिल-बट्टे से उसका शीरा (सफेद सफेद दूध सा) निकाल ले और छिलके को फेंक दे। खशखश को भी पानी में पीस कर दूध सा निकाल ले और निशास्ते में मिलालें। पश्चात घी को किसी वर्तन मे डालकर आग पर रक्खे और गरम हो जाने पर ऊपर वाली दोनो चीजों का निकाला हुआ अंश घी मे डाले। मदी आंच से पकावे और रङ्ग बदल जाने पर शेष वस्तुओं को बारीक पिसी हुई इसमे छोड़ दें और थोड़ी देर के पश्चात् उसमे दूध गरम किया हुआ छोड दे। दस मिनट मन्दी आंच से पकायें फिर मिश्री, खांड या चीनी डाल दे और गरम-गरम पी ले।

गुण—इसी प्रकार कुछ दिन सेवन करे। दिमागी कमजोरी दूर होती है। सिर का दर्द नहीं होता। बीनाई (नजर) कमजोर नहीं होती। शरीर मे बल पैदा होता है। जिनको अचानक चक्कर आकर बेहोशी हो जाती हो वह अवश्य सेवन करे।

वैद्य पं० बिहारीलाल शर्मा परसाई

आरोग्य जीवन औषधालय (मंदिर नवकोठडी)
गौतमपुरा (इन्दौर)

"श्री परसाई जी वयोवृद्ध, अनुभवी एव प्राचीन पद्धति के चिकित्सक है आपका आरोग्य जीवन औषधालय सन् १६७४ मे स्थापित हुआ और अद्यावधि जनता की सेवा कर रहा है। आपके निम्न प्रयोग बहुत बार के सुपरीक्षित है, पाठक अवश्य लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

वायुगोला एवं अफरा मे—

गुड	२० तोला
जीरा	५ तोला
सैंधा नमक	५ तोला
काली मिर्च	१ तोला
हींग	१ तोला

निर्माण विधि—गुड को छोड अन्य सभी वस्तुओ को बारीक कूट-पीस कपडछान करलें। पुन: गुड मिला लें।

मात्रा—३ माशा।

अनुपान—ताजा या गरम जल।

गुण—ज्वर गुल्म, अफरा, वायुगोला मे सद्य: लाभप्रद है।

अतिसार नाशक—

चूना नवसादर ज्वार के डंठल की भस्म
—तीनों १-१ तोला

—इनमें मूंग बराबर गोली बना लें।

मात्रा—बच्चो को १ गोली, बडो को २ गोली जल के साथ दें।

गुण—मरोड के साथ दस्त होते हो तो वे इसके व्यवहार करने से शीघ्र बन्द होते है।

श्वेतकुष्ठ नाशक सरल उपाय—

काली जीरी को पीसकर ३ माशा की मात्रा में शकर १ तोला मिलाकर सेवन करने से १-१॥ माह मे श्वेतकुष्ठ नष्ट होता है।

कास नाशक—

अर्क (आक) के पके पीले पत्ते लाकर छाया में सुखाकर उनको जलाकर भस्म बना ले। इस भस्म के बराबर काली मिर्च, लवङ्ग (लौंग) मुलहठी मिला चने बराबर गोली बना लें।

मात्रा—बच्चो को १ गोली, बड़ों को २ गोली।

गुण—कुकर खासी तथा अन्य सभी प्रकार की खांसी मे उपयोगी है।

कविराज श्रीराम शर्मा एल.ए.एम.एस.

नाई वाली गली, करौलबाग, देहली ।

"आपके वंश मे चिकित्सा व्यवसाय परम्परागत चला आरहा है। आपके पितामह सुप्रसिद्ध योग्य चिकित्सक थे। रसायन विषय पर उनकी कई उत्तम पुस्तकें लिखी हुई आपके पास हैं। आपके पिता ने भी कई पुस्तकें लिखी थी जिनमे "हरिवंश-संग्रह" प्रमुख है। आपने सना० धर्म प्रेमगिरि आयुर्वेद कालेज मे आयुर्वेद का अध्ययन किया तथा कविराज की उपाधि प्राप्त की है। आप गत २३ वर्षों से चिकित्सा-कार्य कर रहे हैं तथा अनुभवी चिकित्सक हैं।"

—सम्पादक ।
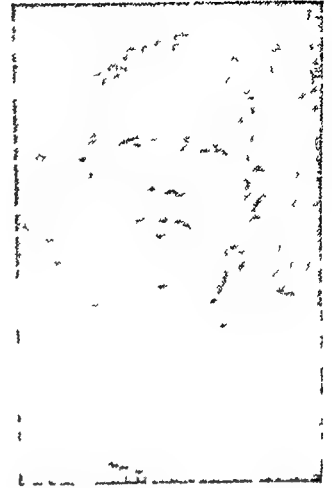
पौष्टिक चूर्ण—

मूसली काली — मूसली सफेद
मस्तङ्गी रूमी — लोध पठानी
ब्रह्मदंडी — मरोड़फली — गोखुरू
मेदा लकड़ी — कटेली के बीज — तज
बीज बन्द — ऊंटगन के बीज
कायफल — सैमल की जड
धनियां सूखा —प्रत्येक १-१ तोला
सोंये के बीज — इन्द्रजौ — सिंघाड़ा
ईसबगोल की भुसी — तालमखाना
रतनजोत — मुंडी — लिसोडे
बिनोले की गिरी — कुरंड (भौंफली)
बेलगिरी — कोच के बीज
इमली के बीज —प्रत्येक ६-६ माशा
माई — गोंद चीनी — गोंद ढाक
गोंद कीकर — संगजराहत
—प्रत्येक ८-८ माशा
कीकर की फली कच्ची — ४ तोला

विधि—सबको कूट-छान कर चूर्ण बनाले और सबके वजन के बराबर कूंजे की मिश्री पीस कर मिला शीशी मे रक्खे।

सेवन विधि—१ माशे औषधि प्रातःकाल और १ माशे सायंकाल दूध के साथ सेवन करें।

गुण—यह पौष्टिक चूर्ण हृदय और दिमाग को बल देता है, वीर्यवर्धक और स्तम्भक भी है। दर्द कमर, सुजाक, पेशाब का अधिक आना, प्रमेह मे गुणदायक है, मुख की जर्दी (पीलापन) को दूर करके सुर्खी लाता है। शरीर मे बल पैदा करता और कमर को मजबूत बनाता है।

अपथ्य—खट्टी वस्तुएं सेवन न करें और दवा का सेवन करते समय स्त्री-सम्भोग न करें।

रक्तशोधक अर्क—

इन्द्रायण की जड़ (गड़ंभे की जड)
कचनाल का छिलका — कटेली का पंचाङ्ग
कीकर की कच्ची फली —प्रत्येक २०-२० तो.
अर्क उशवा — ६ सेर
गुड़ देशी — ४ छटांक

—उशवे के अर्क की विधि—१ सेर उशवा लेकर उसको रात के समय १० सेर पानी मे भिगोदे, प्रात काल भभके द्वारा अर्क निकाल ले। उशवे का अर्क तैयार होने पर पांचों दवाओं को कूट कर रात के समय अर्क से भिगोदे और २४ घंटे या ३६ घंटे हो जाने पर भभके द्वारा अर्क निकाल ले। पहली ३ बोतल काम मे आती है।

सेवन विधि—१० तोला अर्क (पांच तोला प्रात पाच तोला साय) पीवे।

गुण—रक्त को शुद्ध करने के लिये अमूल्य अर्क है। अठारह प्रकार के कुष्ठो मे लाभदायक है। रक्त से सम्बन्ध रखने वाले समस्त रोगों पर उपयोगी है। जिसका शरीर फोड़े, फुन्सियों से या आतशक के कारण खराब हो चुका है। अवश्य लाभ उठावे।

पथ्यापथ्य—परन्तु इस अर्क को सेवन करते समय वेसनी की रोटी और गाय का घी सेवन करे, गुड़, तैल, मिर्च, खटाई बिल्कुल न खाये, जब तक अर्क पीये स्त्री-सम्भोग न करे।

आंखो के लिये मोतियों वाला सुरमा—

जस्ता फुका हुआ (फूला हुआ)	१ माशे
चांदी के वर्क	२ माशे
कस्तूरी असली	१ माशे
लौंग	५ नग
मिश्री	५ माशे
कपूर देशी	६ माशे
सुरमा काला	२॥ तोले
सुरमा सफेद	१ माशे
सङ्ग बसरी	६ माशे
मोती (बिना छेद वाले बसरे के असली)	१ मा
अर्क गुलाब	५ तोला

बनाने की विधि—काले रंग का अच्छा खरल जिसका पत्थर न घिसता हो लेकर उसमे थोड़ा अर्क गुलाब डालकर मोतियों को खरल करे और बाकी वस्तुऐ बारीक पीस कर कपड़े मे से छान ले, पश्चात् मोती वाले खरल मे डाल कर गुलाब का अर्क डाले और खरल करे। समस्त अर्क समाप्त हो जाने पर सुरमे को कपड़े मे से छान ले। कार्क वाली शीशी मे रखे।

सेवन विधि—सोने, चादी, तावे या जस्ते की सलाई से रात को सोते समय आखो से लगावे और प्रात धो डाले।

गुण—धुन्ध, जाला, फोला, परबाल, मोतिया विन्दु (काला-सफेद), आंखों मे पानी बहना और आंखो के समस्त रोगों के लिए लाभदायक है। यहा तक कि गई हुई दृष्टि (बीनाई) भी वापिस आ जाती है।

जुकाम और बेहोशी पर गैस—

नौसादर	१ तोला
कपूर देशी	३ माशे
चूना बिना बुझा	१ तोला

—सबको मिलाकर कार्क वाली शीशी में रक्खें। आवश्यकता पड़ने पर जरा कार्क खोल कर सुंघायें और फिर कार्क को बन्द करदें।

गुण—नजला (प्रतिशाय) जुकाम, सिर दर्द, बेहोशी मे इसका सुंघाना लाभदायक है। बिच्छू, भिड़, मक्खी के दंश स्थान पर इस दवा में से थोडीसी लेकर थूक मे मिलावे और लगावें उसी समय दर्द दूर होगा। दांत का दर्द या गला बैठ जाने पर इसकी गैस को अन्दर खींचें।

बद पर योग—

खाने की औषधि—

५ तोले गुलाबी या सफेद फिटकिरी को लेकर मिट्टी की प्याली मे बन्द करे और पाच सेर उपलो की आच गजपुट की दे। शीतल होने पर उन प्यालियो मे से निकाल कर कपड-छान करले, बस खाने की दवा तैयार है। १ रत्ती या २ रत्ती प्रातःकाल व सायं शीतल जल से खिलावे।

लगाने की दवा (लेप)—

तेजबल का छिलका नया १ तोला, लौंग चार नग, हुक्के के पानी मे मिलाकर लेप करे। दिन मे दो बार लेप करे। रात को लेप न करे।

अपथ्य—खटाई, गर्म मसाला, तैल की वस्तुऐ।

—शेषांश पृष्ठ ३०३ पर।

डा०. श्री गंगाराम बहुखण्डी,

वैद्य चक्रवर्ती,

श्री बहुखण्डी आयुर्वेदिक औषधालय

पोखड़ा (गढ़वाल)

"श्री बहुखण्डी जी के वैद्यक कार्य वंशपरम्परागत होता आरहा है। आप आयुर्वेद विद्यापीठ के स्नातक हैं। सन् १६२५ से आयुर्वेद पद्धति से जनता की सेवा कर रहे है। आपकी गणना सिद्ध वैद्यो में है, केवल मुखाकृति देखकर रोगनिर्णय करना आपकी शैली है। काल-ज्ञान के भी आप माने हुए पण्डित हैं। आपके निम्न तीन प्रयोग प्रकाशित किए जारहे हैं आशा है इन प्रयोगो से जनता का कल्याण होगा।"

—सम्पादक।

प्रसूता के अतिसार पर—

मेथी के परिपक्व ताजे बीज १ पाव

—लेकर चूल्हे में तवे पर चढा अधभुने भून लेवे। बाद को कूट कर वस्त्रपूत कर लेवे। दो छटांक गौघृत को उबाले, उसे उपर्युक्त मेथी के चूर्ण में डाल देवे। किसी चम्मच से मिला लेवे। बस औषधि तैयार होगई।

मात्रा—१ से २ तोला तक।

समय—सायं, प्रातः।

अनुपान—ठण्डा पानी।

पथ्य—सुपाच्य, हल्का भोजन।

परहेज—गरिष्ट व तीक्ष्ण पदार्थ, दिन का सोना। रात्रि जागरण, १-२ सप्ताह में पूर्णारोग्य लाभ होगा।

गठिया तथा साइटिका पर—

—२ सेर असगन्ध नागौरी को कूट-कपड़छान करे, २ सेर गौ घृत मे धीमी आच मे भूने। भुन जाने के बाद आध सेर छोटी कटेली का पंचाग कपड़छन किया चूर्ण २ सेर कच्ची खांड तथा सनाय ६ छटाक भी मिला देवे। परंच ध्यान रहे भूनी हुई असगन्ध ठण्डी न होजाय।

मात्रा—२ से २॥ तोला तक।

अनुपान—गुनागुना दूध।

समय—प्रातः सायं।

पथ्य—हल्का भोजन।

अपथ्य—ठण्डी चीजे तथा जिनका मांड निकलता है ऐसे चावल इत्यादि, स्नान तीन माह तक न करे।

—शेषांश पृष्ठ ३०६ पर।

धर्मविनोद श्री पं. रामप्रसाद शर्मा वैद्य शास्त्री

संचालक—सुखदायक आयुर्वेद भवन, खेतड़ी ।
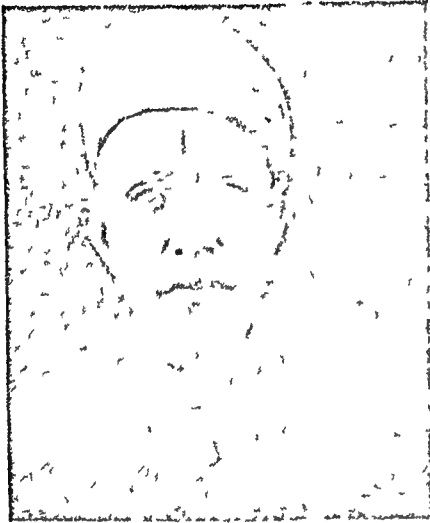
"आपने अपने पिता एवं पितामह राज्य ज्योतिर्विद् श्री महासुख जी धर्माध्यक्ष से संस्कृत का ज्ञान तथा आयुर्वेद ज्ञान नारनौल मे गोस्वामी श्री प्यारेलाल जी आयुर्वेद मार्तण्ड से प्राप्त किया। नि. भा आयुर्वेद विद्यापीठ व काशी विश्वविद्यालय आदि संस्थाओ मे आयुर्वेद की विविध परीक्षायें उत्तीर्ण की, भारतधर्म महामण्डल से धर्म-विनोद की उपाधि मे विभूषित हुए। आपको अपनी प्राचीनता पर अधिक अभिमान है, अधुना स्वसचालित सुखदायक आयु भवन मे अनेक वर्षो से चिकित्सा कार्य करते हैं। अपने क्षेत्र के गण्यमान चिकित्सक होने का आपको गौरव प्राप्तहै।"

—सम्पादक।

सुखदा वटी—

हरड़	वहेड़ा	आंवला
सोंठ	मिरच	पीपल
अकरकरा	जायफल	जावित्री
गोखरू	तालमखाना	कौंच के बीज
शतावरी	सफेद मूसली	भाग (धुली)
शुद्ध मीठा तेलिया		प्रवाल भस्म
लौहभस्म (सिंगरफ योग से नि०)		वङ्गभस्म
शुद्ध सिंगरफ		चांदी के वर्क

विधि—उक्त सभी औषधियों को प्रथक कूट-पीस कर बारीक करले और भस्में मिलाले और मधु के योग से १-१ रत्ती की गोलियां बनाले तथा चादी के वर्क लगाले।

सेवन विधि व पथ्यापथ्य—१ से २ गोली तक प्रातः साय गर्म दूध के अनुपान से सेवन करे। तेल, गुड़, खटाई, लाल मिर्च व स्त्री से परहेज रखे। मधुर पौष्टिक द्रव्यों का सेवन करे।

प्रभाव—ये गोलिया सभी प्रकार के वीर्य-दोषो को निवारण करके शरीर मे नई ताकत व स्फुर्ति उत्पन्न करती हैं। वीर्य को गाढ़ा करके शरीर को पुष्ट बनाती है। केवल जाड़े मे कुछ ही दिनो के सेवन से अच्छा प्रभाव दिखाती हैं।

शिशुकल्याणकार्यवलेह—

नागरमोथा	अतीस मीठा
पीपल छोटी	काकड़ासिंगी

—उपरोक्त चारों औषधियों को कूट-पीस कपड़छान करने के बाद तोल कर बराबर बराबर मिलाले। बच्चो को आयु व बलाबल के अनुसार विशुद्ध मधु के अनुपान से प्रात. साय दिन मे दो बार चटावे। इसके सेवन से बालको के ज्वर, अतिसार, खांसी, श्वास, डब्बा, दूध पलटना, बाल शोष आदि समस्त रोग दूर होकर, शरीर पुष्ट व बलवान होजाता है।

अस्थिक्षय पर—

(श्वेत मूसली का प्रयोग)

अच्छी ताजा सफेद मूसली पावभर लेकर कूट-पीस कर कपड़छान करलें। तदुपरान्त गोघृत में किसी उत्तम वर्त्तन मे डालकर मन्द-मन्द अग्नि पर (भून ले) पकाले। ध्यान रहे कि अग्नि तेज न हो। जब अच्छी तरह सिक जाय तो अग्नि पर से उतार ठण्डी करके तीन छटांक मिश्री मिलाकर रख दें। रोगी के बलाबल अनुसार धारोष्ण अथवा मिश्री मिले हुए गर्म दूध के साथ साय प्रात. सायं सेवन करावे। प्रात. दूध के साथ 'धन्वन्तरि च्यवनप्राश' एवं दोनो समय भोजनोपरान्त 'धन्वन्तरि द्राक्षासव' का सेवन कराया है। अपूर्व गुणकारी सफल एवं अनुभूत प्रयोग है।

रजोवरोध हर क्राथ—

मूली	गाजर	मेथी
चन्द्रशूर (हालों)		मालकागनी

—इन पाचों के बीज ३-३ माशा

सोये के बीज	४ मासा
अमलताश फली की छाल	४ माशा
कलौंजी	४ माशा

—सबको कूटकर १ सेर पानी मे डालकर किसी मिट्टी के पात्र मे पकावे। तीन छटांक शेष रहने पर उतार कर छान लें और तीन तोला पुराना गुड़ मिला कर उष्ण ही रोगी को पिलादे। इसकी प्रात: सायं दो मात्रा ही पीने से कई दिन का रुका हुआ रज पर्याप्त मात्रा मे निकल आता है एवं रोगी को बहुत शांति मिलती है।

बहुमूत्रान्तक—

जायफल	केशर असली
जावित्री	धतूरे के बीज
लौंग	अहिफेन

—प्रत्येक १-१ तोला

शोधित शिलाजीत	६ तोला
उत्तम लौह भस्म	३ तोला

—प्रथम छ. औपधियो को कूट-पीस कर कपड़छान करले, तदुपरान्त उत्तम लौहभस्म एवं शोधित शिलाजीत कथित मात्रा मे डालकर चणक प्रमाण गोली बनाले। प्रातः सायं १-१ गोली गोदुग्ध के साथ सेवन करे। बहुत ही शीघ्र गुण दिखाने वाली गोलिया हैं। कई दिन के पुराने बहुमूत्र के रोगी भी इसके कुछ दिन के सेवन से लाभ प्राप्त करते हैं।

:: पृष्ठ ३०७ का शेषांश ::

गुण—तीन सप्ताह मे अवश्य लाभ होगा।

मलेरिया पर—

अतीस	फिटकरी लाल फुलाई हुई
करज की मींगी	कुटकी
चिरायता	नीम की अन्तर छाल

—प्रत्येक १-१छटांक

—सबको कूटकर वस्त्रपूत कर गिलोय के स्वरस से तीन भावनादे मटर के बराबर गोली बनावे।

मात्रा—१-१ गोली सुबह शाम।

अनुपान—अफसतीन (कुणजो गढ़वाली में) का स्वरस २ तोला या ठंडा पानी।

पथ्य—सुपाच्य भोजन।

चेतावनी—मलेरिया वाले रोगी का पेट कोई मृदु विरेचन देकर साफ कर लेवे।

श्री पं० बद्रीनाथ त्रिवेदी वैद्य भूषण D. I. M. S.

नाथ आयुर्वेदिक औषधालय, रायबरेली।

"श्री त्रिवेदी जी ललितहरि आयुर्वेदिक कालेज के स्नातक हैं और सन् १९५४ ई० से विद्यार्थी जीवन समाप्त करने के बाद तुरन्त ही रायबरेली नगर में नाथ आयुर्वेदिक औषधालय नामक निजी औषधालय खोलकर स्वतंत्र चिकित्सा कर रहे हैं। चिकित्साकार्य क्षेत्र में आते ही रायबरेली जिले के वैद्यो को सगठित कर जिला वैद्य सभा की स्थापना की। राष्ट्रप्रेमी और कांग्रेस विचारधारा के व्यक्ति होने के कारण चिकित्सा क्षेत्र में प्रवेश करने के साथ ही साथ कांग्रेस सगठन मे क्रियात्मक भाग लेकर अन्य सार्वजनिक जन सेवाओ के अतिरिक्त यथाशक्ति आयुर्वेद की भी सेवा कर रहे हैं। राजकीय जिला वैद्य हकीम रजिस्ट्रेशन कमेटी और जि औषधालय परामर्शदात्री समिति के सदस्य रह कर वैद्यो के रजिस्ट्रेशन एवं नवीन औषधालयो के खुलवाने के महत्वपूर्ण कार्य किए। आपको अनेक सरकारी व गैर सरकारी निर्वाचित पदो द्वारा जन सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त है। आशा है आप के निम्न सरल प्रयोगो से पाठको को लाभ प्राप्त होगा।" —सम्पादक।

उदरशूल पर—

नवसादर	१॥ तोला
टाटरी	१ तोला
सोडाबाई कार्ब (खाने का सोडा)	२ तो.

—तीनों को पीस एक मे मिलाकर रख ले।

मात्रा—३ माशे तक।

सेवन विधि—कांच के गिलास या पत्थर के बर्तन में १ या आधी छटांक ताजा पानी लेकर उसमे १ मात्रा दवा छोड़ दें और झाग उठते ही तुरन्त रोगी को पिला दे।

गुण—भयङ्कर से भयङ्कर उदरशूल औषधि पिलाते पिलाते शांत हो जाता है।

नोट—यह औषधें एक साथ मिलने पर विशेष कर वर्षा ऋतु में पिघल जाती है। अत. अच्छा हो कि तीनो को पृथक्-पृथक् शीशी मे रखें और आवश्यकता पडने पर अनुपात से मिला ले।

रक्तप्रदर पर—

१—भूसी ईसबगोल — दम्बुल अखवेन
गिल अरमनी — वंशलोचन
कतीरा — गोद बबूल

—प्रत्येक ५-५ तोला

—उपरोक्त औषधो को लेकर कपड़छान कर शीशी मे रख ले।

मात्रा—६ माशे से १॥ तोला तक।

२—बेख अजवार	५ तोला
हब्बुल लास	५ तोला
गुलनार फारसी	२ तोला
तुख्म खुरफा स्याह	५ तोला

—उपरोक्त औषधो को कपड़छान कर शीशी मे रख ले।

मात्रा–६ माशे से १ तोला तक।

इस नम्बर २ की औषध को १ मात्रा और बरगद की कोमल जटा ६ माशा लेकर ५ तोला जल में पीसकर छान लें और पहले नं० १ की औषध फांक ले, ऊपर से अनुपान रूप में नम्बर २ की औषध पी जावे।

समय–प्रात, सायं, मध्यान्ह।

नोट–चिकित्सक रोग व्यवस्थानुसार औषध के समय और मात्रा में न्यूनाधिकता कर सकता है। सहायक औषधि में अशोकारिष्ट व्यवहृत किया जा सकता है।

गुण–इससे धाराप्रवाही रक्तप्रदर, योनि से जाने वाले रक्त को एक दो दो दिन में ही आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देने लगता है।

पथ्य—पूर्ण विश्राम, हल्के सुपाच्य भोजन और ठंडी वस्तुओं का सेवन किया जाय।

अपथ्य—गरम पदार्थ, गुड़, खटाई, मिर्च, परिश्रम आदि का पूर्ण त्याग।

साधारण ३-४ दस्त लाने के लिये

अद्भुत योग

फूल गुलाब सौंफ सनाय
मुनक्का –प्रत्येक २-२ तोला

—उपरोक्त चारों औषधें १ मात्रा है। इन्हे लेकर शाम को किसी कोरी मिट्टी की हांडी या कुल्हड़ में डेढ़ पाव पानी छोड़ कर भिगो दे, प्रात: मसल कर छान ले। पाव भर कच्चे गाय के दूध में शक्कर व उक्त छनी औषध मिलाकर पी जावे।

विशेषता—बिना किसी प्रकार के कष्ट के दस्त आवेंगे। फिर दूसरे दिन उक्त मात्रा में उसी प्रकार उक्त दवा पीने पर ३ दस्त आवेंगे। तीसरे दिन दो दस्त आवेंगे। इस प्रकार जब उदर शुद्ध हो जायगा तो स्वाभाविक रूप से आने वाले १ या २ दस्त होंगे तब दवा बन्द कर दे। इस दवा के प्रयोग करते समय भोजनादि भी बन्द नहीं करना पड़ता, फिर भी हल्का भोजन, खिचड़ी आदि खाई जाय तो विशेष सुन्दर है।

गुण—उदर हल्का तथा उसके भीतर के अन्य साधारण विकार एवं ज्वर ठीक हो जाता है।

योषापस्मार (हिस्टीरिया)—

यह व्याधि बड़ी विचित्र कुछ नहीं और बहुत कुछ है तथा इसके कारण भी अनेक और लक्षण भी भिन्न भिन्न रोगियों के भिन्न-भिन्न होते हैं। जिनका विवेचन न कर केवल रोग की चिकित्सा लिखी जा रही है। इस रोग में चिकित्सक के ऊपर रोगी को विश्वास होना नितान्त आवश्यक है। यह बात बहुत कुछ रोगी के सहायकों, परिचारकों तथा चिकित्सक पर निर्भर है। चिकित्सा प्रारम्भ होने के पूर्व रोगी चिकित्सक से प्रभावित हो जाय और उस पर उसका पूर्ण विश्वास जम जाय कि निश्चित् रूप से इस चिकित्सक से मुझे रोग-मुक्ति मिल जायगी। मेरे पास उक्त रोग के दूसरे जिलों तक के अनेक रोगी आये उनमें रोगियों की मानसिक तथा विचारों आदि के अवस्थानुसार अपनी व्यवहारिक चिकित्सा एवं उपायों के अतिरिक्त जिस अपने योग से अब तक आशाप्रद सफलता मिली उसे दे रहा हूँ। पाठक गण प्रयोग कर देखें।

रससिंदूर लोहभस्म १--१ रत्ती
मल्ल सिंदूर ताल सिंदूर ½–½ रत्ती

—यह १ मात्रा है।

अनुपान—मलाई के साथ।

समय—प्रात: सायं।

नोट—रोगिणी को तुरन्त मूर्छितावस्था से होश में लाने के लिए उसकी नाक में प्याज का रस छोड़ दें या उसकी नाक और मुंह पर कपड़ा रख कर श्वास लेना रोक दे। जब रोगिणी झिटकने लगे और होश आने लगे तो तुरत पानी के छींटे दे, मुंह धुला दे, तुरन्त होश आ जावेगा। यदि सिर में दर्द रहता है तो ब्राह्मी, आंवला आदि कोई शीतल तैल लगाने को दें। सहायक औषध में उशीरासव दिया जा सकता है।

आयुर्वेदाचार्य पं० श्रीपतिप्रसाद पाठक "श्रीश"

भिषगाचार्य
श्री कालिकेश्वर कार्यालय, बक्सर (शाहाबाद)

'श्री पाठक महोदय धन्वन्तरि पाठकों के सुपरिचित श्री पं, गिरिजादत्त जी पाठक आयुर्वेदाचार्य के सुपुत्र एवं आयुर्वेद शास्त्र के विज्ञ पण्डित हैं। आप स्थानीय आयुर्वेद विद्यालय मे १६४५ से द्वितीयाध्यापक पद पर योग्यतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। आपने अपने अनुभूत ४ प्रयोग जो अनेक रोगियो पर सुपरीक्षित हैं प्रकाशनार्थ प्रेषित किये हैं। आशा है पाठक आपके अनुभव से लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।

ग्रहणी-अतिसार हर योग—

पचामृत पर्पटी	६ रत्ती
असली नागकेशर	६ रत्ती
सोंठ चूर्ण	३ रत्ती
जीरा भुना चूर्ण	२ रत्ती
हींग तालाब भुनी	२ रत्ती

—इसकी चार मात्रा बनालें।

—मधु से ३ बार या रोगानुसार ३-३ घंटे पर। भयङ्कर एवं प्रबल ग्रहणी अतिसार मे रामबाण जैसा कार्य करता है। पैत्तिक अतिसार पर सोंठ और हींग न मिलाकर यों ही प्रयोग करे। पंचामृत-पर्पटी सस्कारित पारद द्वारा बनानी चाहिए।

आन्त्रिक सन्निपात (टाइफायड) पर—

लक्ष्मी विलास (नारदीय)	५ गोली
रससिंदूर	४ रत्ती
जहरमोहरा पिष्टी	४ रत्ती

—इसकी ५ मात्रा बना ले

—३-३ घण्टे पर पान के रस और मधु से दें। लवंग खूबकला, ब्राह्मी सिद्ध जल पीने को दे।

श्वास-कासामृत—

सोमलता चूर्ण	६ माशा
अभ्रक भस्म सहस्रपुटी	२ रत्ती
सितोपलादि चूर्ण	३ माशा

—इसकी ३ मात्रा बनाले।

—मधु से ३ बार या अवस्थानुसार ३-३ घंटे पर देने से रामबाण जैसा कार्य करता है।

उदरशूल हर—

अग्निमुख चूर्ण	६ माशा
शङ्खभस्म	६ रत्ती
शूलवज्रिणी	३ वटी

—इसकी ३ मात्रा बनाले

—उष्णजल से ३ बार।

चमत्कार पूर्ण कार्य होता है। उपरोक्त प्रयोग सहस्रो बार रोगियो पर प्रयोग किए हुए हैं।

श्री नारायण लाल वैद्य इंदौरकर

आयुर्वेद प्रभाकर औषधालय, भुसावल।
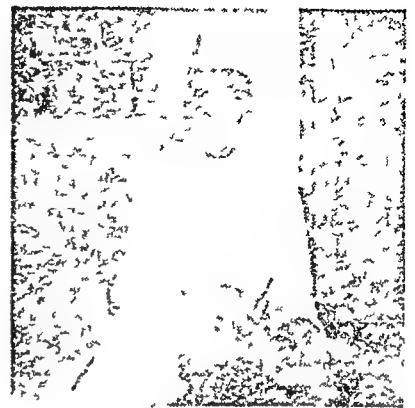
"श्री वैद्य जी वयोवृद्ध एवं अनुभवी सफल चिकित्सक हैं। आपकी आयु ६८ वर्ष की है तथा आपने उन दो सफल प्रयोगो को प्रकाशनार्थ प्रेषित किया है जिनको आप पिछले ३५ वर्षो से सफलतापूर्वक प्रयोग करते आ रहे हैं। आपका लिखना है कि ये प्रयोग ६६ प्रतिशत सफल होते हैं। आपके सुपुत्र श्री महेशचन्द्र जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य भी एक सफल चिकित्सक है।" —सम्पादक।

अर्श बवासीर—

केवडे के भुट्टे के ऊपर के पत्ते निकालने पर अन्दर जो फूल जैसी लम्बी दंडी रहती है वह धूप मे सुखाली जावे, बाद मे कपडछान करलें। एक माशा सुबह, दोपहर को, रात को इस प्रकार ३ माशे रोज गीले कत्थे के पान मे दे जिसमे और सब मसाला डाल सकते हैं सिर्फ लौंग नहीं। दूसरा अनुपान दूध, तीसरा मक्खन, मिश्री इनमे से चाहे जिस में देवे। यह दवा यदि तोले भर भी खा ली जावे तो कोई हानि नहीं होती।

पथ्य—रोगी को जिन वस्तुओं से हानि होती हो वह न खावे, जब खून बन्द हो जावे तब क्रमश सब वस्तुए खाने लगे, जैसे गुड़, बैगन, बाजरी, करेले आदि गरम वस्तु।

गुण—खून गिरना तो ६-७ दिन मे ही बन्द हो जाता है, मस्से भी सिकुड जाते है, इसी दवा से रक्त प्रदर व रक्त की उल्टी (कै) भी इसी अनुपान से बन्द हो जाती है।

सिर दर्द—

सिर दर्द कितना ही पुराना हो आराम होता है।

आवले सफेद चन्दन का बुरादा
ब्राह्मी खस —सब समान भाग

—सबका चूर्ण बनाले। तीन माशे की एक खुराक दिन मे तीन बार दूध से या ठडे पानी से दे। मलावरोध हो तो हल्का रेचन या सोते समय त्रिफला चूर्ण देवे।

पथ्य— तैल, गुड़, बेगन, वातकारक वस्तुऐ आम की खटाई न खावे।

:: पृष्ठ ३२६ का शेषांश ::

—दोनों को मिलाकर खरल करें थोडे जल के छींटे भी लगा सकते है। अवलेह रूप हो जाने पर एक केले के बन्द फूल पर लेप कर दे, फूल न दीखे, गजपुट मे फूंक दे। स्वांग शीतल होने पर निकाल कर पीस लें।

मात्रा—१ रत्ती पान मे खावें ४१ दिन तक। पन्द्रह दिन मे लाभ प्रतीत होने लगेगा।

अर्श रोग पर—

कलमी शोरा रसौत २-२ तोला

—दोनों औषधो को बारीक कर एक मोटी मूली के अन्दर भर देवे। ऊपर से मिट्टी लेप दें। ५ सेर कडो की आच दे। शीतल होने पर मिट्टी दूर कर मूली सहित औषध पीसकर बड़े मटर के बराबर गोली बना, ताजे पानी से १-१ गोली देवे, इसके खाने से खूनी व बादी दोनो प्रकार की बवासीर नष्ट होगी।

वैद्य पं. रामस्वरूप गौड़ वैद्यशास्त्री

अध्यक्ष—आरोग्य सिन्धु औषधालय पुरानी मंडी, फीरोजाबाद (आगरा)

"पंडित जी फीरोजाबाद के योग्य वैद्यो मे से हैं। संग्रहणी, यकृत, न्यूमोनियां, टाइफाइड, (आन्त्रिकज्वर) के प्रसिद्ध विशेष चिकित्सक हैं। आपके पिता जी का पं० राधावल्लभ जी वैद्यराज संस्थापक धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ से घनिष्ट सम्बन्ध रहा तथा उनसे आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया और उनकी प्रेरणा से ही फीरोजाबाद मे उक्त औषधालय स्थापित किया था जो आज तक विद्यमान हैं। आपने निम्न लिखित प्रयोग अपने अनुभव से सिद्ध किये हुए भेजे हैं पाठक बनाकर लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

फोड़ो की दवा—

अशुद्ध पारा	नौनियां गन्धक
मुर्दासन	कुचला जले हुए
इन्द्रजौ	अजवायन खुरासानी
सुपारी जली का निर्धूम कोयला	कबीला

—प्रत्येक ५-५ तोला

तूतिया — १ तोला

विधि—उपरोक्त सब चीजो को कूटकर कपड़े मे छानकर असली सरसों के तैल मे घोटकर न बहुत पतला न बहुत गाढा लेह सा बनाकर रख ले और फोड़ो को कार्बोलिक साबुन या नीम के पानी मे भलीभांति साफ करके तथा पानी खुश्क करके इस दवा को लगावे।

गुण—इस दवा के प्रयोग मे जो फोडे-फुंसियां निकल-निकल कर फूट जाती हैं तथा उनका मवाद दूसरे स्थान पर लग जाने से और फुंसियां निकल आती हैं। वे फोडे सिर में या पीठ मे अथवा शरीर में कहीं भी कैसे ही विषैले हों सभी को आराम होता है।

घाव का मलहम—

मुर्दासन, कबीला, सुहागा
भार का धूमसा (धूआं), मेहदी शुष्क
कत्था पपरिया —प्रत्येक १-१ तोला
नीलाथोथा — ६ माशा
कलई चूना — ३ माशा

—सबको कूट छान कर १० तोला घृत गर्म करके देशी मोम ६ माशा मिला दे, मोम गल जाने पर उसी मे सब दवाऐं मिलाकर घोटकर मलहम जैसा बनाले।

प्रयोग—घाव को साफ करके फाहे पर लगाकर घाव पर दिन मे २ बार लगा दिया करे।

गुण—कैसा ही सड़ा-गला-पुराना बिगड़ा हुआ फोड़ा का घाव हो कुछ ही दिन लगाने से बिल्कुल ठीक हो जाता है।

चोट का लेप—

पुरानी गोला गरी, एलुवा

आमाहल्दी	सगा●
मैदा लकड़ी	माल कांगनी

—समान भाग

—सबको कूट-छान कर पानी में घोलकर आग पर गर्म गरके चोट स्थान पर गाढ़ा-गाढ़ा लेप कर देने से कैसी ही चोट की सूजन या दर्द हो ३-४ बार के लेप करने से ही ठीक हो जाता है।

विषमज्वर नाशक—

कंजा की मिंगी	१० तोला
गौदन्ती हरतालभस्म	१० तोला
गुलाबी फिटकरी का फूला	५ तोला
कुनैन	५ तोला
शुद्ध गन्धक	१० तोला
सोडा खाने का	१० तोला

—सबको कूट छानकर कड़वे चिरायते के क्वाथ में ३ दिन घोटे। पश्चात् गूमा के स्वरस में ३ दिन मर्दन कर झरबेरी के बराबर गोली बनाले और छाया में सुखाकर शीशी में भर कर कार्क लगा कर रख दे।

मात्रा—१-१ गोली पारी से आने वाले ज्वरों में ज्वर आने से पूर्व ३-४ खुराक गर्म जल से दे। भोजन में केवल गाय, या भैंस का दूध व गर्म जल पीने को दे।

गुण—२-३ दिन में ही पारी से आने वाले ज्वर रुक जाते हैं।

उपदंशारि मलहम—

रसकपूर	शीतलचीनी
छोटी इलायची के बीज	कत्था पपरिया

—प्रत्येक १-१ तोले

● सगा नाम की औषधि प्रायः सभी पंसारियो के यहा मिल जाती है। यह गुलाबी रग के बीज जैसे होते हैं। लेखक।

—सबको कूट कपड़छान कर १ छटांक गौ की नौनी ५० बार पानी से धोकर उसी में कुल दवाओ को मिलाकर मलहम बनाकर किसी चौड़े मुंह वाली शीशी मे सुरक्षित रख ले।

प्रयोग—उपदंश (गर्मी) के घावो को कत्थे या त्रिफला के पानी से धोकर पानी को सुखाकर घावो पर मलहम लगाने से बहुत जल्दी घाव सूख जाते है।

सूखानाशक तैल—

कुरिया कांदा (जंगली प्याज) की जड़ ५ तोला को पाव भर तिल के तैल मे कढ़ाई मे चूल्हे पर रख कर मन्दाग्नि से जलाले। फिर कपडे मे छानकर तैल को शीशी मे भर कर रख ले। इस तैल को सूखे वाले बच्चे के शरीर पर मर्दन करने से ऊपर का हिस्सा छोड़कर सूर्यास्त के पश्चात् एवं सूर्योदय से पूर्व प्रतिदिन २ बार मालिश करने से बच्चे इस रोग से मुक्त हो जाते है एव पूर्ण स्वस्थ हो जाते है। इसके अतिरिक्त इस तैल के प्रयोग से गठिया, वात, अंडवृद्धि आदि बादी से होने वाले रोग भी शान्त हो जाते है।

खुश्की एवं मुख के छालो पर—

छोटी इलायची के बीच	कत्था सफेद
बड़ी इलायची के बीज	वशलोचन
शीतल चीनी	मिश्री

—प्रत्येक १-१ तोला

मुलहठी	२ तोला

—सबको कूट-छान कर बबूल के गोंद के पानी से मर्दन कर झरबेरी प्रमाण गोली बनाकर छाया में खुश्क कर ले।

गुण—१-१ या २-२ गोली मुख मे डालकर रस चूसते रहने से आंतों की खुश्की से होने वाले छाले तथा खुश्की को अत्यन्त लाभ होता है।

राजवैद्य श्री जगदीश्वर शर्मा

वैद्यशास्त्री, आयुर्वेदाचार्य, व्याकरणशास्त्री,

श्री वज्राग आयुर्वेद भवन पो गोहाटी (आसाम)

"ग्राम रेनवाल जि जयपुर के आप रहने वाले हैं सम्प्रति आसाम प्रान्त में गोहाटी आपका वासस्थल है। उक्त प्रान्त में ख्यातनामा वैद्य हैं। मन्दाग्नि, सग्रहणी, अम्लपित्त, प्रमेह, गर्मी, उष्णवात के आप विशेष चिकित्सक हैं। सिद्ध योग सचिका आपकी अप्रकाशित रचना है। नि. भा महासम्मेलन के आजीवन सदस्य हैं। असम राजवैद्य महासम्मेलन के आप प्रधान मन्त्री रह चुके हैं। आयुर्वेद के उद्भट विद्वान् लेखक एव वक्ता हैं। आपने २ सफल योग पाठको को सादर भेंट किये है।" —सम्पादक।
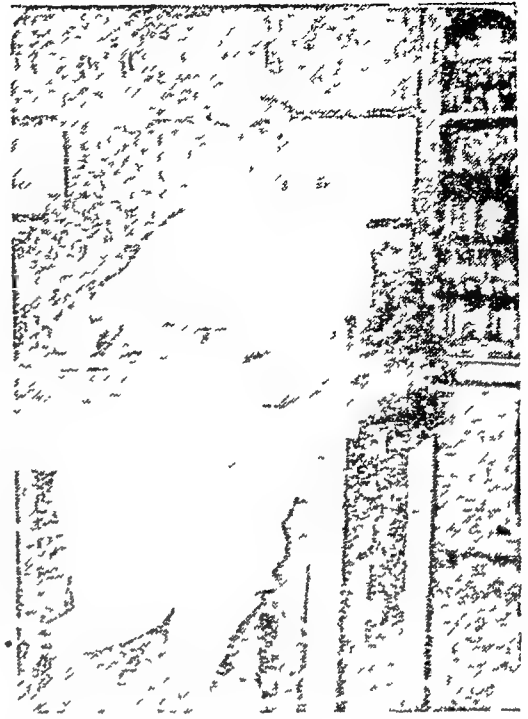
उपदंशारि वटी (अन्तर्व ्णारि)—

पारद भल्लातक
अजवाइन देशी खुरासानी अजवाइन
तिल काला तिल सफेद
—यह सब १-१ तोला
पुरानन गुड ७ तोला

विधि—इन सबको ८४ घण्टा इमाम दस्ता से डाल कर कुटाई करे।

मात्रा—१ रत्ती से ३ रत्ती तक, दिन मे दो वार सुबह शाम गले मे डालकर दही से निगल ले।

पथ्य—मूंग की दाल एव मूंग से वनी कोई भी वस्तु एव दूध न खावे।

गुण—पुराने से पुराना चाहे जैसा भी उपदश हो, शीघ्र लाभ करता है।

सूचना—इस दवा को दात से लगने न दे दात में लगने से मसूड़ो का फूलना तथा दांत में वेदना होने आदि का भय रहता है।

त्र्यम्बक वटी—

भल्लातक गोघृत
तालमिश्री —तीनों ५-५ तोला
खुरासानी अजवाइन ७॥ तोला
पारद १ तोला

विधि—जल में डूबने वाले भल्लातक को पहिले काट कर ईंट के चूर्ण मे रगड़ कर साफ करके, हिमाम दस्ता मे कूटकर खुरासानी का चूर्ण मिलाकर अच्छी तरह कूटे। बाद मे खरल मे डालकर पारद मिलाकर घोटे। एक जीव होजाने पर घृत देकर घोटे। बाद में तालमिश्री मिलाकर ७ दिन तक घुटाई करे और एक जीव करदे।

मात्रा—१ रत्ती से बढ़ाकर ४ रत्ती तक।

अनुपान—सुबह शाम दूध के साथ निगले। औषधि दात से न लगे सीधे गले मे डालकर निवाये दूध से निकल जांय।

पथ्य—मिरच, खटाई, तैल, गुड आदि गरम एवं पित्तवर्द्धक वस्तु न खावे।

गुण—अग्निमान्द्य, वातव्याधि, नैर्बल्य आदि के लिए अमोघ औषधि है।

कुंवर श्री रणधीर सिंह वर्मा

ग्राम पो० खेरला

—०—

पिता का नाम— श्री मुकटसिंह जी
आयु—४६ वर्ष जाति— सेगर क्षत्रिय

"आपका परिचय के धन्वन्तरि के पाठकों के लिए नया नही है। स्थानीय वैद्यों मे उच्च प्रतिष्ठा है तथा अपने जिले के प्रमुख पुरुषों में आपकी गणना है। चिकित्सा मे आपकी कल्पना अनोखी होती है। आपकी सफलता में सज्जनता, सद्व्यवहार एवं हस्त-कौशल ही प्रधान हैं। आप गत २८ वर्षों से चिकित्सा कर रहे हैं। आपके प्रयोग शतशोनुभूत परीक्षित हैं।"

—सम्पादक।
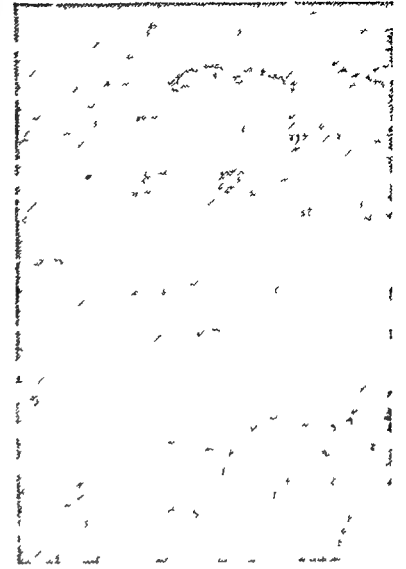
रक्त विकार हर वटी—

हरताल भस्म (वर्की हरताल भस्म) ½ भाग	
नीम का सत्व	उसवा मगरवी सत्व
उन्नाव सत्व	दारुहल्दी
त्रिफला सत्व	लाल चंदन
गुरुच घन सत्व	रेवन्द खताई
काली मिर्च	मजीठ सत्व

—प्रत्येक १-१ भाग

—समस्त औषधियों को खरल करें और भृङ्गराज के स्वरस या क्वाथ में घोटकर ३-३ रत्ती की गोलियां बनाले।

मात्रा—प्रतिदिन १ से ३ वटी प्रात. साय रोग और रोगी के बलानुसार जल के साथ दे।

गुण—हर किस्म के चर्म विकार खाज, खुजली, फोड़ा, फुन्सी, चकत्ते पड़जाना आदि रक्त विकार शान्त होते है। मैंने तो इसके प्रयोग से रक्त विकार के वे रोगी जो महीनों सालसा आदि पीते पीते निराश हो चुके थे आराम किये हैं।

स्वप्नदोष और धातु विकारों पर—

शुक्र संजीवन चूर्ण—

गोंद बबूल घी मे भुना हुआ	२० तोला
शीशम के पत्ते छाया शुष्क	१० तोला
सेंमर की मूसली	१० तोला
मिश्री	२० तोला

—सबको कूट पीसकर चूर्ण करके बोतल मे सुरक्षित रखले।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक, ऊपर से गौ दूध मिश्री युक्त दोनो समय। पेट साफ रखना आवश्यक है।

गुण—स्वप्नदोष तथा अन्य सभी धातु-विकारो के लिए गुणप्रद है।

कायाकल्प वटी—

स्वर्णक्षीरी घनसत्व	५ तोला
काली मिर्च	१ तोला

—दोनों को भली प्रकार घोटे। सूक्ष्म हो जाने पर निशोथ के क्वाथ की भावना देकर झड़बेरी के बराबर वटी बनावे।

मात्रा—१ से २ वटी प्रातःकाल निकलवा दे। ऊपर से स्वर्णक्षीरी पंचाङ्ग स्वरस १ छटांक पिलादे।

—शेषांश पृष्ठ ३२५ पर।

आयुर्वेदाचार्य विद्याभूषण पं० ओमप्रकाश शर्मा B. I. M.S.

प्रकाश चिकित्सालय, गवां (बुलन्दशहर)
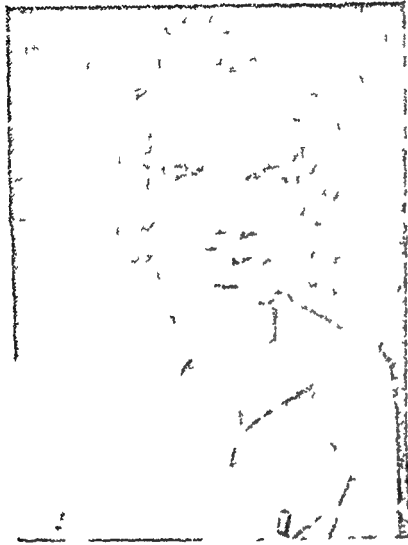
"आपने प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल महा विद्यालय ज्वालापुर मे प्राप्त की और विद्याभूषण की उपाधि प्राप्त करने के बाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से साहित्य विशारद तथा भारतीय चिकित्सा परिषद् उत्तर प्रदेश से बी आई एम एस. आयुर्वेदाचार्य की परीक्षायें उत्तीर्ण की है। राजकीय चिकित्सा विभाग मे एक वर्ष सेवा करने के बाद अपना स्वतत्र व्यवसाय प्रारम्भ किया है। आपके पूर्वज भी चिकित्सा कार्य करते रहे हैं तथा उनसे भी आपने परम्परागत पर्याप्त अनुभव प्राप्त किया है। निम्न प्रयोग भी आपको कुलज परम्परागत प्राप्त तथा स्वय के द्वारा परीक्षित हैं।" —सम्पादक।

आनन्द तैल—

'अर्क सेहुण्ड धस्तुर लागंली करवीरकौ' के शास्त्र पाठ से सामञ्जस्य करता हुआ यह तैल कुलज परम्परा से प्राप्त है—

(1) आक सेंहुड धत्तर (पञ्चाग)
सफेद कन्नेर की जड सिंबल (सैमल) पत्ते
नीम (पचाग) लताकरंज (पञ्चाग)
मेमडी —यह सब १-१ तोला

(ii) वायविडंग मेनसिल हरताल
गन्धक रोहिणी
—प्रत्येक ३-३ माशा
तूतिया १ माशा

—संख्या एक की औषधियों को गोमूत्र ४० तोले मे रात्रि को भिगोदे। प्रात १ सेर पानी डालकर पकाकर शेष ६ छटांक रखकर पावभर तिल का तैल डाल कर पकावें। तेल मात्र शेष रहने पर एवं परीक्षा कर उतार ले। यह सिद्ध तैल दो भागों मे आधा-आधा पाव विभाजित करले, प्रथम आधा पाव मे संख्या २ का खरल मे किया हुआ चूर्ण डालकर ७ दिन धूप में बोतल मे रखले।

चूर्णसह तैल—

रक्तविकार, चर्मविकार के लिए अमोघ है, प्रत्येक प्रकार के नासूर, बशर्ते कि अन्दर तैल की वत्ती पहुँच जाय, पुराने से पुराने सड़े घाव जख्म, फोडा, आतशक के गलाव मे यह रामबाण है। इसी तैल मे कपूर मिला कर लगाने से हर प्रकार के वात दर्दों को लाभ करता है। उदर शूल मे पेट पर चुपड़ कर सेक करने से अथवा पानी मे डालकर सेक करने से शीघ्र बन्द करता है, गठिया मे तैल लगाकर एरण्ड पत्र सेक कर बांध दे। साइटिका को लहसुन के प्रयोग के साथ-साथ यह तैल ३ दिन मे समाप्त करता है।

चूर्ण रहित केवल तैल—

ऊर्ध्वजत्रु रोगों मे प्रयोग किया जाता है यथा। कर्णप्रदाह, कान में खुजली व टीस, पिड़िका, पलक के

ऊपर की सूजन. फुन्सी, दांत दर्द, मसूढ़ों की सूजन में लाभप्रद है।

सावधानी—इस तैल को प्रयोग करने से पहिले चिकित्सक स्वय सावधानी वरतें, जहां जरूरत हो वहीं फुरेरी से लगाऐ अन्यत्र नहीं। प्रयोग के वाद साबुन से हाथ धोले, आख के अन्दर प्रयोग कभी न करें, मुख के अन्दर लगाने को तिलतैल में हल्का घोल वनाले। मुख के छालों मे २ बूंद गरम पानी में डालकर गार्गिल (कुल्ला) करे।

पारद प्रवेश—

—शुद्ध पारद ३ रत्ती एक गेहूँ की नलिका में रखले एक ओर का मुख आटे से बन्द करले, तथा लिंग के बराबर काटकर मुख चिकना कर लिंग मे कैथिटर के समान अन्दर डालकर एक इच भीतर जाने पर बाहर से आग लगादे। लिंग के समीप आग पहुँचने पर नलिका बाहर खींचले। प्रयोग करते समय आटे से बन्द मुख को बाहर रखे।

गुण—किसी भी प्रकार के नपुंसक को यह प्रयोग मैथुन करा देता है। इसके प्रयोग के तुरन्त पश्चात् मैथुन क्षेत्र तैयार हो। यह प्रयोग चिकित्सक को स्वय कराना चाहिये रोगी को नहीं। क्योंकि उपद्रव परिणाम स्वरूप लिंग के क्षत, वेदना, रक्तश्राव भी हो सकता है तथा जल भी सकता है या पारद ही नीचे गिर जाय। नालिका में आग लगाने से पारद ऊपर को जाता है पारद को अन्दर पहुँचाना ही इस नालिका यंत्र का कार्य है।

नोट—इस प्रयोग को व्यवहार करने से पूर्व योग्य चिकित्सक की सम्मति अवश्य लेले तथा उसकी देख-रेख मे ही यह क्रिया करे। यह प्रयोग थोड़ी सी असावधानी से अनिष्टप्रद प्रमाणित हो सकता है। हमारी असहमति है।

—सम्पादक।

अर्शहर—

निशोथ	कलमी शोरा
शुद्ध गेरू	हरड़ वक्कल

—प्रत्येक १-१ तोला

—इन सब वस्तुओं को कपड़छन कर समभाग एकत्र मिश्रित करले तथा जल के मिश्रण के साथ झड़बेर के समान गोली वनाये।

गुण—वातज, पित्तज, कफज एवं रक्तज अर्शो को सामान्यतया दो श्रेणियों मे विभक्त किया है, बादी और रक्तज यह दोनो प्रकार के अर्शों में अनुपम है, रक्त रोककर शौच साफ लाता है एव दर्द, जलन को एक मात्रा मे ही नष्ट करता है।

उपयोग—तीव्र अवस्था मे प्रतिदिन १ गोली की १ मात्रा प्रातः गरम पानी से, पश्चात् एक दिन छोडकर फिर २ दिन छोडकर इसी प्रकार स्वस्थ होने तक एक सप्ताह मे एक वार।

चेतावनी—अधिक मात्रा और दिन मे दो वार प्रयोग न करे अन्यथा हानि होगी।

अर्श हर—

—मुलेहठी के छिलके एवं गन्दगी को साफ कर कपड़छन चूर्ण करले। यह चूर्ण प्रतिदिन रात को ४ माशे की मात्रा मे गरम जल के साथ लेने पर अर्श की वेदना दूर कर रक्त रोकता है शौच ठीक आती है। यदि इसके साथ उपर्युक्त प्रयोग प्रतिदिन १ मात्रा प्रातः १ गोली की लें तथा भोजनोपरान्त अभयारिष्ट, तो लाभ शीघ्र होता है।

श्री पं० द्वारिका प्रसाद शर्मा दधिमथ

आयुर्वेदाचार्य वैद्यशास्त्री

अध्यक्ष—श्री दधिमति आयुर्वेद भवन, मु० पो० राजगांगपुर (सुन्दरगढ़-उड़ीसा)

"आपके वंजो का मूल निवास स्थान राजस्थान में खेतडी राज्यान्तर्गत ग्राम त्योदा है। आपके पूर्वज चिकित्सार्थ उडीसा प्रान्त में बस गए तथा अद्यावधि आपके यहा चिकित्सा कार्य हो रहा है। आपके यहा निर्धन व्यक्तियो की चिकित्सा नि.शुल्क की जाती रही है अब भी आप उस परम्परा को निभाये हुए हैं। आपने बगाल की शास्त्री, जयपुर की उपाध्याय, विहार की शास्त्री आदि परीक्षायें उत्तीर्ण की है। आपको भारत के चोटी के आयुर्वेदज्ञो के सम्पर्क मे रहने का अवसर मिला हे और आपने उनके अनुभव से लाभ उठाया है। आप अनुभवी एव योग्य चिकित्सक हैं तथा आपके निम्न योग भी सरल तथा अनुभव-पूर्ण हैं। पाठक लाभ उठावें।" —सम्पादक।
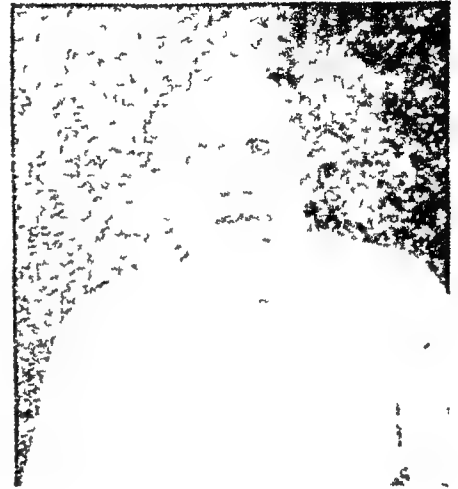
सोम और प्रदर रोग पर—

मुक्ता सीपीभस्म — उत्तम मूंगा भस्म
उत्तम नाग भस्म —तीनों १-१ तोला

—सीपी भस्म और मूंगा भस्म दोनो को प्रथम बढिया गुलाब जल से पांच छः बार घोट लेना चाहिए, उसके बाद नागेश्वर रस को मिलाकर खरल करे।

मात्रा—३-३ रत्ती प्रात. सायं।

—अनुपान केले के रस मे शहद डालकर या पक्के केले की फली के ३ माशे गूदे मे रख कर दवा लेना चाहिए।

पथ्य—गर्म, बादी की चीजे, तैल, खटाई, गुड़, मिर्च और सहवासादि से बच कर रहना चाहिए।

पथरी व मूत्र की रेती पर—

—एरण्ड पपीता (पपई) की ताजी जड़ ६ माशा लेकर नारियल के ताजे पानी मे पीस छान कर प्रात. पिलाने से ३-४ दिन मे पथरी गलकर निकलने लगती है।

यह योग १० दिन पिलाना चाहिए। पथरी निकली हुई जिन्हें देखना हो वह एक सकोरे के ऊपर १ साफ कपड़ा लगाकर पेशाब किया करे, कपड़े पर पथरी के छोटे-छोटे टुकड़े दिखलाई पडेगे।

रक्त प्रदर—

खून खराबा (रक्तबोल)	६ रत्ती
स्फटिक भस्म	६ रत्ती
मिश्री	१॥ माशा

—की मात्रा से ४-४ घटे बाद जल के साथ सेवन करावे। उत्तम लाभ पायेंगे।

रक्तपित्त—

मुनक्का	११ दाना
जेठी मधु	३ माशा

—इन दोनो के बराबर वजन मिश्री तीनो को आधा

पाव दूध और आधा पाव पानी मे शरबत बनाकर छानकर पीने से ऊर्ध्व, मध्य और अधोगामी सभी प्रकार के रक्तपित्त को दूर करता है।

पीलिया, पाण्डु, कामलादि रोग पर—

कुटकी का चूर्ण कर बराबर की मिश्री मिलावे।

मात्रा—३ माशा से ६ माशा।

अनुपान—गौदुग्ध या ताजा जल।

समय—प्रात: सायं एवं भोजनोपरांत।

गुण—१ सप्ताह मे ही आरोग्य लाभ करता है। पाण्डु, कामला, मन्दाग्नि, प्लीहावृद्धि तथा रक्त की कमी दूर करने के लिए दिव्यौषधि है।

ग्रहणी रोग पर—

—मैथी को कपड छान चूर्ण कर लेवें।

मात्रा—३ माशा दिन मे ४ बार ४-४ घण्टे के पश्चात् दे।

अनुपान—तक्र या जल से।

गुण—यह अग्नि को दीपन करता है, मल को बांधता है। वायु कफ एवं आम विकार को दूर करता है।

ऋतुपीड़ा-नाशक चूर्ण—

नागकेशर	सुहागे का फूला
जायफल	इसबंद (हरमल)

—प्रत्येक २॥-२॥ तोला

विधि—सब द्रव्यो को कूट-पीस, छानकर चूर्ण बना लेना चाहिए।

मात्रा—१ माशा से ३ माशा तक।

अनुपान—गरम दूध या गरम जल।

समय—प्रात:-सायं।

गुण—ऋतु (मासिक धर्म) के समय की पीड़ा, कटि-पीड़ा तथा अन्य ऋतु-विकार मे लाभप्रद है।

कुकर खांसी पर—

(शृंग्यादि चूर्ण वैद्यरहस्योक्त)

काकड़ासिंगी (नवीन)	१ तोला
त्रिफला	३ तोला
त्रिकटु	३ तोला
कंटकारी मूल या पंचाङ्ग	१ तोला
भारङ्गी (न मिले तो कुलिंजन लें)	१ तोला
पुष्करमूल (असली न मिले तो कूठ ले)	१ तो
पांचो लवण	५ तोला
यवक्षार	१ तोला

विधि—सबको कूट-पीस छान चूर्ण बनाकर शीशी मे रखे।

मात्रा—२ रत्ती से ३ माशा तक।

अनुपान—सुसुमजल अथवा मधु।

समय—प्रात: सायं, खांसी के अधिक वेग मे दिन मे तीन बार।

इसमे यवक्षार ऊपर से दिया गया है।

गुण—इस चूर्ण को सेवन करने से वायु-जनित बलगमी श्वास, कुकर खांसी मे अत्यन्त लाभ होता है।

रक्तार्श—

शुद्ध रसांजन	१ तोला
मुश्क काफूर	१ माशा

—दोनो को भलीभांति घोटकर ४-४ रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा—प्रात:काल १ गोली से २ गोली तक शीतल जल के साथ सेवन करे।

गुण—खूनी बवासीर का बहता हुआ खून बन्द हो जाता है। अधिक दिन सेवन करने से बवासीर को भी आश्चर्यजनक लाभ होता है। शर्त यह है कि गरम पदार्थों का सेवन न करे।

बाल-मित्र—

४ रत्ती कुटकी के चूर्ण को शहद के साथ चटाने से बालकों का ज्वर दूर होता है।

वैद्यशास्त्री विश्रामानन्द जी वैद्य

विश्राम रसशाला, माडवी रोड, बड़ौदा।

"आपका जन्म सन् १६१४ मे कच्छ प्रदेश के माधापुर ग्राम में हुआ था किन्तु आपके माता-पिता अफ्रीका में कार्य करते थे अतः वचपन अफ्रीका में व्यतीत हुआ। भारत आने पर आपने हिमालय, आबू तथा गिरनार स्थानो का पर्यटन किया तथा १६४० मे लाहौर कालेज से आयुर्वेद की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपको कूपीपक्व रसायन निर्माण करने का विशेष अनुभव है तथा सम्मेलनों मे प्रत्यक्ष प्रदर्शन भी कर चुके हैं।" —सम्पादक।

मधुमेहादि रस—

लोहभस्म	२ तोला
शिलाजीत	२ तोला
मकरध्वज असली	१ तोला
मुलेठी सत्व	१ तोला
अफीम (अहिफेन)	३ माशा
सुवर्ण वग	६ माशा
त्रिवङ्ग भस्म	१ तोला
वसतकुसुमाकर	१ तोला

—उपर्युक्त सबको पीसकर विल्व के रस मे गोली वना ले,और ऊपर से विल्व का रस पीने को दे।

मात्रा—३-३ रत्ती प्रात' और सायंकाल को देवे।

माणिक पंचामृत गुटिका—

माणिक्य	पन्ना	मोती अनविधे
प्रवाल		केहरवा असली

—प्रत्येक १-१ तोला

—उपर्युक्त पांचो चीजो को लेकर वारीक कूटकर कपडछान करके १५ दिन गुलावजल मे खरल करें और १५ दिन मे ७½ सेर गुलाव जल पचावे। वाद मे निम्न लिखित वस्तुए डालकर दो दिन तक खरल करें—

चांदी के वर्क	सोने के वर्क
वरास (भीमसेनी कपूर)	केशर
चन्द्रोदय	कस्तूरी

—प्रत्येक १-१ तोला

—सवको डालकर खरल करने के वाद—

जायफल	जावित्री	लौंग
कालीमिर्च	अकलकरा	तज
वच्छनाग		पीपर

—प्रत्येक १-१ तोला

—वस्त्रपूत चूर्ण करके थोड़ा-थोड़ा डालते जांय और खरल करता जावे। वाद मे पक्के पान २००० का रस निकाल कर उपर्युक्त औषधि को खरल करता रहे। पश्चात् मूंग जैसी गोलिया वना ले और शीशी मे भरले।

मात्रा—प्रकृति के अनुसार १ या २ गोली मक्खन या शहद और घृत के साथ देवे।

गुण—क्षय, खांसी, श्वास, वायु रोग, क्षीणता, मन्दाग्नि, धातुक्षय, वीर्य स्राव, कमर का दर्द, मस्तिष्क शूल, हृदय रोग, रोग के वाद की निर्वलता इत्यादि के लिए यह गोली रामबाण है।

यह कीमती औषधि होने से धनिक व्यक्तियों पर इसका उपयोग ज्यादा करते हैं किन्तु जब दूसरी दवाइयां निष्फल होती है वहां यह सफलतापूर्वक काम करती है। वृद्धावस्था के विकार को दूर कर तेजस्वी और बलवान बनाकर क्षय जैसे भयङ्कर रोगों को दूर करने वाली और श्रीमन्तों के लिए यह हमेशा सेवन करने योग्य महौषधि है।

यदि इस प्रयोग में हीरा की भस्म १ रत्ती डाल दी जाय तो विद्युत् की तरह प्रभावकारी होती है।

अष्टमूर्ति रस—

शुद्ध पारद	१ तोला
शु. गन्धक	६ तोला
शु. हिंगुल	१ तोला
,, मैनसील	१ तोला
,, सोमल	१ तोला
,, हड़ताल	६ माशा
,, रसकपूर	६ तोला
,, बोदार सींग (मुरदासंग)	६ माशा
फुलाई हुई फिटकरी	१ तोला
सोने के वर्क	६ माशा
चांदी के वर्क	६ माशा

—प्रथम पारद को सुवर्ण और चांदी के वर्क के साथ मिलाकर गन्धक डाल कर कज्जली बनाले। बाद में बाकी की सब चीजें मिलाकर आतिशी शीशी में भरकर बालुका यन्त्र से ३० घंटे आंच दे। १२ घंटे के बाद गन्धक जारण होने के बाद डाट लगा दे और २० घण्टे तीव्र अग्नि दे। यन्त्र ठंडा होने के पश्चात् रस निकाल ले।

उपयोग—पुराना उपदंश, परिवर्तित ज्वर, विषमज्वर, सन्निपात, क्षय, मूर्छा, अपस्मार, वातव्याधि इत्यादि रोगों को दूर करके शक्ति देता है। हृदयोत्तेजक और पित्तदोष, रक्त, मांस, अस्थि, मज्जा के दोष को हरता है।

महावाजीकरण हिंगुल भस्म—

५ तोला हिंगुल की डली को प्रथम २०० तोला प्याज के रस में डुबा दें या ७० तोला लहसुन के रस में डुबा दे। बाद में धतूरे के रस १० तोला में डुबा दे। फिर निम्न लिखित मसाले में रखकर आग दे—

तिल	भिलावा	घृत
मालकांकनी	शहद	एरंड तैल

—प्रत्येक १-१ सेर

—उपर्युक्त वस्तुओं को कूट कर एक रस करें। उसमें से आधा लोहे की कढ़ाई में नीचे रखे और हिंगुल की डली रख कर बाकी का आधा ऊपर रखें और अग्नि पर चढ़ावे और अग्नि दे। जब मसाला जलने की तैयारी तक गरम हो जाय तब उसे ऊपर से आग लगाके जलावे और नीचे की अग्नि बन्द करे। मसाला जल जायगा। १२ घंटे में तैयार हो जायगा। हिंगुल की डली निकाल कर उसमें केसर १ तोला, कस्तूरी ½ तो. जुंदबेदस्तर २ तोला डाल के अंडा की जर्दी में खरल करे। ३ रत्ती वजन की गोली बनाले।

मात्रा—प्रात. सायं १-१ गोली ½ सेर दूध के साथ लेवें।

गुण—रक्त बढ़ाती है, खाना हजम करती और शक्ति प्रदान करती है। वातव्याधि, पुरानी सरदी, धातुक्षीणता दूर करके पुरुषत्व की प्राप्ति होती है।
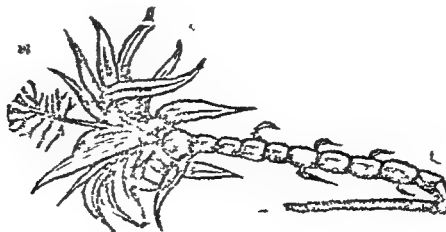
सूर्य चिकित्सा विशारद पं. नन्दकिशोर शर्मा

मन्त्री—पंचायत, मु० पो० सुसनेर (शाजापुर)
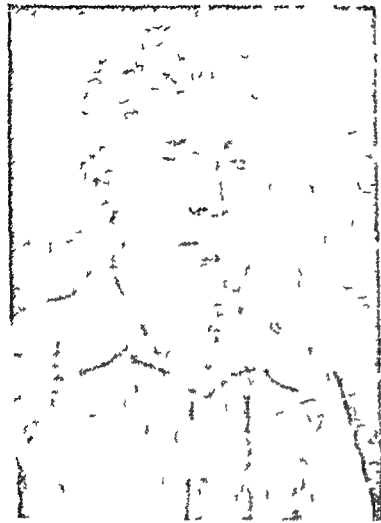
"श्री शर्मा जी का जन्म पिपलोन कलां (आगर) के गौड़ ब्राह्मण परिवार में श्री पं. भवरलाल जी शर्मा के यहां हुआ। आपने अपने नाना जी से आयुर्वेद का प्रारम्भिक अभ्यास किया, तत्पश्चात आयुर्वेद सूरि पं कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी आयुर्वेदाचार्य से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की। आप गत १० वर्षों से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। न्याय पचायत सुसनेर के मत्री तथा अ भा. गायत्री तपोभूमि मथुरा के अवैतनिक मन्त्री भी है। आपके सरल एवं सुपरीक्षित प्रयोगों से आशा है पाठक लाभ उठावेंगे।" —सम्पादक।

० पाचक चूर्ण—

कालानमक	३ तोला
सेंधानमक	३ तोला
सोंठ	२ तोला
हींग	२ माशा
पुदीना का सत्व	१ माशा
नौसादर	२ तोला
कालीमिर्च	२ तोला
अजवायन	४ तोला
टाटरी (इमली का सत्व)	४ तोला
छोटी हरड	४ तोला
अनारदाना	४ तोला
पीपल	४ तोला

—इन सब औषधियों को कूट-पीस कर मिश्री १५ तोला मिला कर चूर्ण तैयार करे।

मात्रा—१ माशा से २ माशा तक।

अनुपान—स्वच्छ जल।

उपयोग—पेट के रोगों मे लाभदायक है। बच्चे से बूढ़े तक प्रेम पूर्वक ग्रहण कर लेते हैं। अजीर्ण अफरा, अन्न का न पचना, मुंह से लार गिरना खट्टी डकारें, भूख न लगना आदि में शीघ्र लाभ पहुँचाता है।

बालजीवनामृत—

गोरोचन	३ माशा
एलुआ	६ माशा
कटेरी का जीरा	जवाखार
सत्यानाशी बीज	केशर
रूसारेरेवन्द	—१-१ तोला

—चूर्ण कर अदरक रस मे घोटकर मूंग जैसी गोलिया बनाले।

मात्रा—१ गोली मातृ दुग्ध या मधु से।

गुण—डव्वा, पसली चलना, मूत्रावरोध, अफरा, कास आदि रोग नाशक है।

ओरिएण्टल बाम—

पिपरमेंट	१ तोला
कपूर	३ माशा

दालचीनी का तैल ३ माशा
इलायची का तैल १॥ माशा

निर्माण विधि—पहले कपूर व पिपरमेंट को खरल में डालकर खूब घोटें फिर १५ तोले वैसलीन या गोले का तैल मिलाकर बाकी दवायें मिलावे और घोटकर पेचदार शीशी में रखे।

गुण—यह हर प्रकार के दर्दों की अचूक दवा है। सिर में लगाने से सिर दर्द, छाती में लगाने से छाती का दर्द तथा दात-दाढ़ का दर्द दूर होता है। बिच्छू आदि के काटने पर लगाने से जलन शीघ्र बन्द होती है।

धातुस्राव पर—

भिंडी की जड़ शतावर
बड़ा गोखरू तालमखाना
सफेद मूसली कमरकस
मुलहठी बीजबन्द
—प्रत्येक २॥-२॥ तोला
मिश्री २० तोला

निर्माण विधि—उपरोक्त समस्त औषधियों को कूट पीस कर बराबर तोल लें, तत्पश्चात् मिश्री पीस कर मिलावे।

मात्रा—१-१ तोला। समय—प्रात. सायं।
अनुपान—गाय के धारोष्ण दुग्ध के साथ।
गुण—वीर्य के बहाव को रोकता है एवं वीर्य को गाढ़ा करता है। यह सस्ता परन्तु परीक्षित है।

एकतरा पर तंत्र—

रविवार पुष्य नक्षत्र में स्नान आदि से निवृत होकर सत्यानाशी (स्वर्णक्षीरी) को उखाड़े। तदनन्तर उसकी जड़ का छिलका निकाल कर सुरक्षित रखले।

जिस व्यक्ति को इकतरा आता हो उसके १ दिन पूर्व कच्चा सूत १। हाथ मंगाकर उक्त छिलके का १ टुकड़ा उसमें सुरक्षित बाध या लपेट दें। अग्नि पर मीठा तैल डालकर उसके धूएं में सूत को २१ बार घुमा दें। तत्पश्चात् रोगी के बांये पैर की ऐड़ी के पास उसे बांध देवे। या तो दूसरे दिन इकतरा खूब आकर सदैव के लिए विदा होजायगा या उसी दिन से नहीं आएगा।

इसके पश्चात् मंगलवार के दिन १ नारियल श्री हनुमान जी के मंदिर में चोला चढ़ाकर बांटे।

यह योग मेरे पूज्य नाना जी स्वर्गीय श्री मुन्नालाल जी कामदार सा० (आगर) पिपलोन कलॉ निवासी का सैकड़ों रोगियों पर परीक्षित है।

:: पृष्ठ ३१७ का शेषांश ::

गुण—कैसी भी भयङ्कर गर्मी आतशक (उपदंश) के सड़े गले घाव हो, १ सप्ताह में ही देखने को नहीं रहेंगे, अधिक से अधिक दो सप्ताह सेवन करना पड़ता है। जुलाब देने की भी आवश्यकता नहीं। अपने आप ही पेट साफ करती रहती है।

अग्निदग्ध व्रण हर मरहम—

वकरे की चर्वी २० तोला
तिल का तैल ४० तोला
कपूर मुर्दासन १—१ तोला

—चर्वी को तैल मे डाल कर मन्द अग्नि पर रख कर गरम करे। चर्वी पिघल जाने पर कपड़े से छान ले और कपूर व मुर्दासन का अतिसूक्ष्म चूर्ण जो पहिले ही से तैयार कर लिया गया हो मिलाकर घोटे, भली प्रकार एक दिल हो जाने पर रखले।

गुण—अग्नि से जले हुए स्थान पर लगाते ही ठंडक आकर जलन शान्त हो जाती है। व्रण अति शीघ्र भर जाते हैं।

घाव का मरहम—

कुचला जले हुए (कोयला) ५ तोला
काली मिर्च अधजली, सिंदूर असली ६-६ माशा
मुर्दासन १ तोला
तूतिया भुना हुआ कपूर ३—३ माशा

—सबका बारीक चूर्ण करके आवश्यकतानुसार घृत में घोटकर मरहम बनाले।

गुण—हर प्रकार के व्रण, विषैले घाव आदि भरते है।

वैद्यराज पं० अश्विनी कुमार शर्मा आयुर्वेदालंकार

आयुर्वेद विशारद, चिकित्सक चूड़ामणि,

स्टेशन रोड, नसीराबाद ।

"श्री शर्मा जी का जन्म श्री पं हनुमान प्रसाद शर्मा के यहा ५८ वर्ष पूर्व हुआ । आप अनुभवी एवं योग्य चिकित्सक हैं। आपने 'भैषज्य मुक्तावली' नामक पुस्तक भी लिखी है जो अभी अप्रकाशित है। आपके यहां कई पीढियो से चिकित्सा व्यवसाय होता आया है। आपने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर मेरठ कालेज से स्टेनोग्राफी भी उत्तीर्ण की है ।" —सम्पादक ।
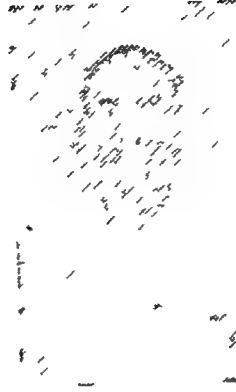
विशूचिका (हैजे) के लिए पंचकोलादि अर्क—

पीपल छोटी		पीपलामूल
चव्य	चित्रक	सूंठ
हरड़	कालाजीरा	कालीमिर्च

—सब समान भाग

—औषधियों से दस गुना नीबू का रस लेकर ८ गुना जल डालकर खींचा हुआ अर्क हैजे को शर्तिया आराम करता है, और गुल्म, प्लीहा, आनाह, अफरा, उदर रोगादि पर भी लाभप्रद है ।

मात्रा—पूर्ण वयस्क को २।। तोला ।

कफरोग पर—

धतूर बीज   त्रिकुटा   अजवायन

—इनके अर्क मे सौ बार भिगोया सुखाया नमक अर्थात् हर समय भिगोकर सुखा लें। यह सेंधव अति कठोर से कठोर कफ को नाश करता है।

मात्रा—१-१ रत्ती जल के साथ ले ।

वर्षाऋतु में अजीर्ण न करने वाला वीर्यवर्द्धक चूर्ण

छोटी पीपल जो दानो से भरी हो, २० तोला

१ सेर दूध मे रात्रि को भिगो दे, सुबह आग पर चढ़ा अच्छी तरह उबाल कर उतार अच्छे जल से धो साफ करले फिर सूखने रख दे। जब कुछ खुश्क हो जाय तब थोड़ा खरल मे कूट लें थाली में डाल बीज निकाल ले । बीजों से दूनी शुद्ध कोंचगिरि, (केंवाच बीज) सबसे दूनी मिश्री मिला कपडछन कर बोतल मे रक्खे ।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक औटाये हुए शीतल गौदुग्ध मे मिला प्रात. सायं ले। खट्टा तीखा छोड़कर खावे और स्त्री-प्रसंग से परहेज रखे तो २ सप्ताह मे ही अपना पूर्ण प्रभाव दिखाता है।

श्वासरोग पर—

मुलहठी	२० तोला
अपामार्ग क्षार	२० तोला

—शेषांश पृष्ठ ३१३ पर ।

कवि. डा. मनमोहनलाल *H M.D.*

आयुर्वेद विशारद, वैद्यरत्न
श्री माधव धर्मार्थ औषधालय, कर्वी (बांदा)

"आप योग्य चिकित्सक और लेखक हैं। आपको अ० भा० वैद्यक एण्ड यूनानी तिब्बी कान्फ्रेंस से प्रथम श्रेणी का प्रमाणपत्र मिला है। आप आयुर्वेद धर्मार्थ औषधालय माघमेला प्रयाग के जन्मदाता तथा मंत्री भी रहे हैं। आपको एलोपैथी, होमियोपैथी तथा क्रोमोपैथी का भी ज्ञान है तथा इनसे सहायता भी लेते हैं। चित्रकूट आयुर्वेद प्रचारिणी सभा के प्रधान मंत्री भी हैं। आप गत ५० वर्षों से चिकित्सा व्यवसाय कर रहे हैं अतः आपके प्रयोग ५० वर्ष के अनुभव का प्रतिफल है, पाठक लाभ उठावें।" —सम्पादक।

गठिया रोग पर—

तिल तैल	१ सेर
भिलावा	१ पाव
कुचला	५ तोला
तैल एरण्ड	½ सेर
कबूतर (कपोत) की बीट	५ तोला

—दोनों तैल मिलाकर कढाही में गरम करें, जब अच्छी तरह गरम हो जाय, तब उसमें भिलावा कुचल कर डाल दे, मगर डालते समय उसके धूआं से दूर रहे। जब भिलावा जल जावे तो कबूतर जङ्गली की बीट तथा कुचला डाल कर जलावे। जलने के बाद उतार ले और ठंडा होने पर छान लें। उसमें तैल मिट्टी तथा पैट्रौल १०-१० तोला अथवा केवल मिट्टी का तैल १ पाव मिलावें। अब बोतल में काग लगाकर रखदे। आवश्यकता के समय थोड़ा तैल गरम करके मालिश करें।

गठिया रोग पर गोलियां—

शुद्ध कुचला	५ तोला
सौंठ	२ तोला
मिर्च स्याह	२ तोला

—उपरोक्त औषधियों को गरम पानी के साथ ४ पहर घोटा जाय फिर मूंग के बराबर गोलियां बनावे। सुबह व शाम १-१ गोली गरम पानी से खावे। तैल, गुड़, खटाई का परहेज करे।

काजल (अंतरा-तिजारी-चौथइया ज्वर नाशक)—

—मकड़ी के सफेद जाला जो १ रुपये के बराबर दीवारों पर लगा होता है २० अदद सफेद रुई में लपेट कर कड़ए तैल में तर करके जला कर काजल पार ले, इस काजल को अंतरा, तिजारी, चौथइया आदि आने के ४ घंटे पूर्व दिन में आंखों में लगावे। अंतरा उसी दिन से न आवेगा। तिजारी में दोपारी और चौथइया में तीन पारी लगाना पड़ेगा।

अण्डवृद्धि पर मरहम—

अजवायन	१। तोला

—शेषांश पृष्ठ ३३२ पर।

कवि० हकीम वैजनाथ अग्रवाल

वैद्यशास्त्री
गली लालावाली, अमृतसर।

"श्री कविराज जी का जन्म सवत् १६७२ मे श्री लाला शकरदास जी अग्रवाल के यहा हुआ। आपने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वैद्यक एण्ड यूनानी तिब्बिया कालेज अमृतसर से वैद्यशास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात शकर आयुर्वेदिक फार्मेसी के नाम से अपना स्वतन्त्र कार्य प्रारम्भ किया जो अद्यावधि चालू है। आपने अपने अनुभवपूर्ण चार प्रयोग प्रकाशनार्थ प्रेषित किए हैं। आशा है पाठक लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।
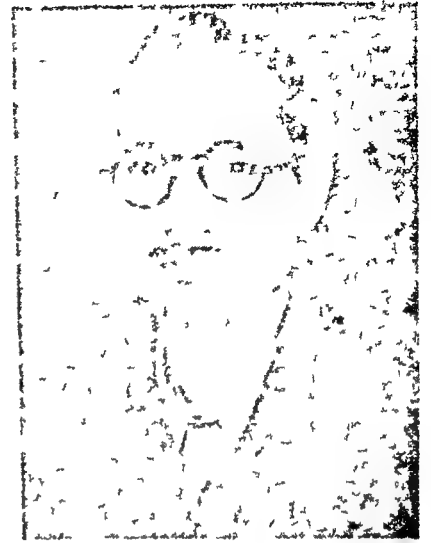
वृक्कशूलान्तक—

हरड	गुलाब पुष्प
रेवन्द खताई	बादाम की गिरी
कद्दु की गिरी	सकमोनिया

—प्रत्येक ६-६ माशा

इन्द्रायण का गूदा	२ तोला
मुनक्का गगल	—दोनो १-१ तोला

—सबको मिलाकर ४-५ रत्ती की गोलियां बनाले।

मात्रा व प्रयोग विधि—२-२ गोली दूध से ले। शूल शान्त होने के बाद १०-१५ दिन तक रात को दूध से लेते रहे।

गुण—वृक्कशूल के लिये अपूर्व गुणकारी है। शूल तो केवल २-३ मात्रा के प्रयोग से ही शान्त हो जाता है।

तन्तु वटी—

मकडी का जाला (जो श्वेत रग का दीवारो के साथ लगा होता है) थोडा सा गुड मिलाकर ज्वर आने से २ घण्टा पूर्व जल से दे। यह गोलिया पारी के बुखारो को एक ही दिन से रोक देती हैं। चौथिया बुखार के लिए विशेष गुण कारक है।

वातव्याधि-ग्रस्त के लिये उत्तम रेचन—

निशोथ को छीलकर इसकी लकडी को कूट लें और ३ दिन थूहड के दूध मे खरल करके चना जैसी गोलिया बनाये।

मात्रा—१-२ गोली उष्ण जल से ले।

गुण—सस्ती और उत्तम विरेचन है। वातज व्याधियो मे अपूर्व गुण करता है।

उदरामृत चूर्ण—

काली मिर्च	नौसादर
हुरमची (हिरमिची)	—प्रत्येक १-१ तोला
शु० धतूर बीज	६ माशा
मण्डूर भस्म	३ माशा

—मिलाकर चूर्ण बनाले।

मात्रा—४ चावल से एक रत्ती तक अर्क सोफ से दे।

गुण—उदरशूल, उल्टी, पेट के अफरा मे गुणदायक है।

नोट—हुरमची (हिरमिची) मिट्टी जो दीवारो व किवाडो के रंगने के काम आती है।

श्रीमती वैद्या मनोरमा सी.

आचार्य

१६७, जहांगीरपुरा, अहमदाबाद–११

"श्री वैद्या मनोरमा चतुर्भुज आचार्य का जन्म-स्थान कच्छ प्रदेश में है। सौराष्ट्र सरकार से आप रजिस्टर्ड मेडीकल प्रेक्टिशनर हैं। आपका अनुभव पुराना है। वैद्यक व्यवसाय इनका घरेलू धन्धा चला आ रहा है। आपके पति एक अच्छे वैद्य हैं। उनकी कच्छ मे 'कच्छ मेडीकल इन्डस्ट्रीज' नामक एक रिसर्च सस्था है, जिसमे अनेक वनस्पतियो का घन सत्व निर्माण करते हैं। आपने अपना एक अत्यन्त अनुभवपूर्ण योग रक्त-प्रदर पर भेजा है। योग निम्न रीत्यानुसार है।"

—सम्पादक।
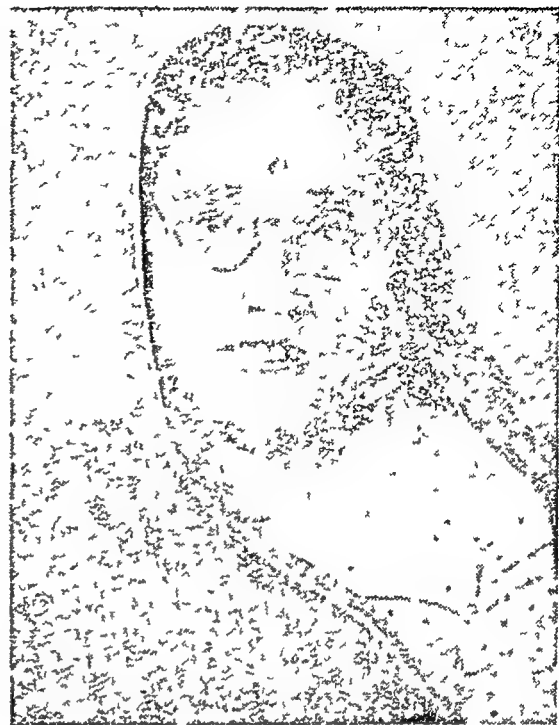
१ रक्तप्रदर नाशक योग—

चर्म भस्म—पुराना चमड़ा स्वच्छ करके जला ले। जल जाने पर पीस कर शहद मिला कर चना प्रमाण गोली बनालें।

चूर्ण—सितावर १ तोला
मधुयष्ठी (मुलहठी) ६ माशा
शक्कर १॥ तोला

—तीनों का चूर्ण बनाकर शीशी में रखलें।

प्रयोग विधि—जिस बहिन को रक्तप्रदर हो, अर्थात् योनि से खून जैसा प्रवाह आता हो उसको प्रातः सायं चर्मभस्म ३-३ रत्ती की मात्रा में शहद के साथ चटावें। इसके १-१ घटा बाद सतावर वाला चूर्ण ३ माशा की मात्रा मे दूध के साथ खिलाएं।

—रात्रि को सोते समय तथा प्रात.काल १-१ गोली चर्म भस्म वाली योनि के अन्दर गर्भाशय मुख में रखावा दें।

गुण—इस प्रकार चिकित्सा करने पर तथा तैल-मिर्च आदि तीक्ष्ण मसाला परित्याग करने से ४-५ दिन मे रोगिणी को शर्तिया लाभ होता है। अनेक बार का परीक्षित प्रयोग है।

जले पर अकसीर—

अभी २-४ दिन पूर्व ही गरम तैल सहसा पैर पर गिर गया और बड़ी जलन होने लगी। अनुमान हुआ कि शीघ्र ही छाले पड़ जायंगे। घर मे ओले का पानी एक बोतल मे रखा था। एक कपड़े की गद्दी बनाकर उसमे भिगोकर जहां जलन थी वहा रख दिया। यह अनुभव कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि जलन तुरन्त बन्द हो गई। २ घंटा वह गद्दी रखने के उपरात हटा दी गई किन्तु किसी प्रकार के छाले या किसी प्रकार का कष्ट शेष नहीं रहा। —ज्वा० प्र०।

वैद्य कविराज पं. ब्रह्मदत्त शर्मा शास्त्री

कल्याण औषधालय, दातारपुर (होशियारपुर)।

आप गत २२ वर्षो से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। सन् १६३७ मे लाहौर छावनी मे कल्याण औषधालय की स्थापना की। भारत विभाजन के समय दातापुर मे इसी नाम से औषधालय खोला। सन् १६४६ में स. ध. प्रेमगिरि आयुर्वेद कालेज भिवानी में प्रविष्ट होकर वैद्य कविराज की परीक्षा उत्तीर्ण की। नि. भा. आयुर्वेद विद्यापीठ की आयुर्वेद भिषक् परीक्षा उत्तीर्ण की। सम्प्रति अम्बाला छावनी मे शिक्षक का कार्य करते है। आप छात्रवाणी त्रैमासिक के सम्पादक भी हैं। कविता करने में भी आपकी अभिरुचि है। दीर्घ रोगो की चिकित्सा करने में इन्हे विशेष सफलता प्राप्त है। अवकाश के समय अपनी सफल चिकित्सा से जनता की सेवा करते हैं।"
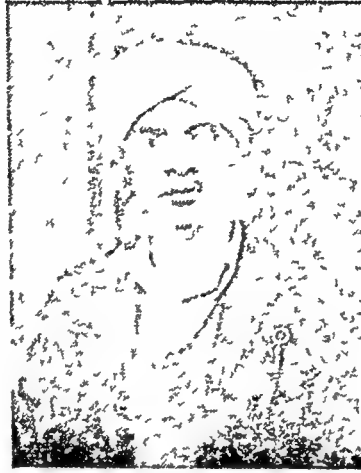
—सम्पादक।

विसर्प रोग—

यह रोग प्राय: बच्चो को माता के गर्भाशय दोष से हुआ करता है और बहुधा त्रिदोष से होता है। यह कनपटी से उत्पन्न होकर हृदय पर्यन्त पहुँच जाता है। सर्वाङ्ग मे श्वेत, लाल, नीले वर्ण के फफोले से हो जाते हैं और ज्यों-ज्यो फूटते जाते है यह आगे बढ़ता है। गुप्ताङ्गों मे पहुँचने पर बच्चे की मृत्यु हो जाती है। ऐसे समय मे निम्न प्रयोग सद्य. प्राण-रक्षक प्रमाणित हुआ है।

प्रयोग—दारुहल्दी को स्वच्छ पत्थर पर जल मे घिस कर १ रत्ती से ४-५ रत्ती तक सिप्पी अथवा चम्मच मे डाल तीन गुना मधु मिश्रित कर दें और रोगी बच्चे को पिला दे। तत्काल लाभ पहुचा कर प्राण रक्षा करता है।

मात्रा—बालक की आयु बलानुसार घटा-बढ़ा ले। दिन मे ३ बार। यथा अवसर दो सप्ताह तक सेवन करावे।

प्रवाहिका हर—

आम की पुरानी गुठली	४ तोले
जायफल	६ माशा
दालचीनी	६ माशा
अफीम	६ माशा

विधि—उपर्युक्त तीनों वस्तुओं को कूट-पीस कर कपडछान कर ले। फिर अदरक स्वरस मे अफीम को घोल ले और मिश्रण कर खरल मे मर्दन कर लघु बेर के समान वटी बना ले। इन गोलियो को साम और निराम अवस्था मे प्रयोग कर सकते है। इसकी दो मात्रा देकर बन्द कर दे, फिर पचसकार चूर्ण का प्रयोग करे, फिर इसकी तीन मात्रा दे। कठिन से कठिन प्रवाहिका शीघ्र सुखसाध्य हो जाती है।

रक्तप्रदर पर अमोघ—

सुपारी के फूल	१ छटाक

—कूटपीस शीशी मे सुरक्षित करे।

मात्रा—६ माशा, असृग्दर मे ६ माशा तक।

गुण—कैसा ही रक्तप्रदर हो शीघ्र लाभ करता है।

अनुपान—जल।

श्री डा. मदनमोहन अग्निहोत्री

आयुर्वेदशास्त्री

मु. उमरी पो पडरीलालपुर (कानपुर)

"श्री अग्निहोत्री जी का निवास स्थान ग्राम हरीपुर, कानपुर जिलान्तर्गत तहसील घाटमपुर मे है, वही आपका जन्म श्री प लक्ष्मी-नारायण जी अग्निहोत्री के यहा हुआ। आप गत ८ वर्षो से अपने ग्राम से १ मील दूर कस्वा उमरी में चिकित्सा व्यवसाय कर रहे हैं। आपने निम्न चार अनुभवपूर्ण प्रयोग प्रेषित किए हैं, पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक।
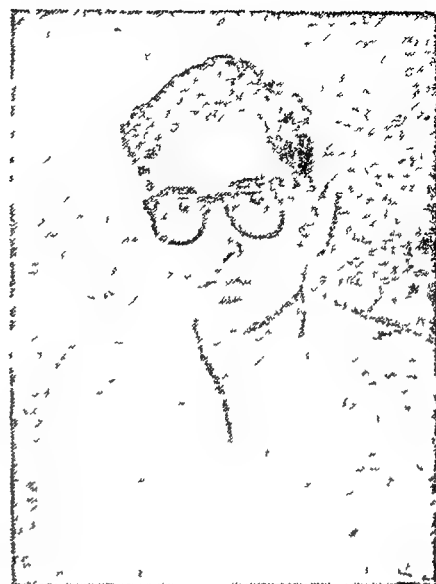
पित्तज्वर पर शास्त्रीय योग—

ज्वर की तीव्र अवस्था हो और रोगी को प्रचण्ड ताप से प्राणों का भय हो तब १ गोली आनन्दभैरव रस, १ रत्ती प्रवालभस्म तथा १ माशा गिलोय सत्व को १ तोला अदरक का रस और शहद से देने से १ या २ डिग्री ताप कम हो जाता है और रोगी काल के गाल से वच जाता है तथा और कम करना हो तो ३-४ घण्टे के अन्तर से पुनः इसी प्रकार दे सकते हैं। यदि ज्वर कम करने की आवश्यकता न हो तो केवल शहद से ४-४ घंटे पर देने से २-३ दिन मे ज्वर पचकर उतर जाता है।

नेत्ररोग नाशक अर्क—

फिटकरी	काला सुरमा
कलमीशोरा	—प्रत्येक १-१ तोला
गुलाव जल	२० तोला
केशर	३ माशा

विधि—प्रथम गुलावजल मे सम्पूर्ण द्रव्य महीन पीसकर मिला ४० घण्टे लगातार (वन्द न होने पावे) एक शीशी मे हिलाते रहे, तत्पश्चात् एक घंटा रख छानकर प्रयोग मे लावे।

गुण—यह नेत्र रोगो पर बेजोड़ वस्तु है। कभी निष्फल न होगी। कीचड़, लालिमा, रतौंधी एवं अन्य नेत्र-व्याधियो के लिए उपयोगी है।

चर्मरोग पर—

बिना बुझा चूना	५ तोला
चौकिया सुहागा	५ तोला

—दोनों महीन पीसकर कड़ुवे तैल मे घोटकर मलहम बनालें।

प्रयोग—खाज, खुजली एवं अन्य चर्म रोग पर प्रथम गर्म जल (नीम के पत्ते डाल कर किया हुआ) से धो, शुष्क कर ले। तत्पश्चात् मल हम को ठीक से रगड़कर लगा दे।

गुण—सम्पूर्ण चर्मरोग नष्ट होंगे। खाज, खुजली को २ दिन मे ही नष्ट कर डालता है, चाहे गीली हो या सूखी, लाभ होगा।

नोट—जब स्नान करना हो तब गर्म जल से करे और तेल प्रयोग के १ घंटा पश्चात् ही करे।

आंव, संग्रहणी अतिसार पर—

हरड़ छोटी बहेड़ा सोंठ

सौंफ धनियां काला नमक

—समान भाग

विधि—काला नमक छोड़कर सभी वस्तुओं को पीस आधी कच्ची आधी पक्की भून ले, तत्पश्चात् कालानमक डालकर कपड़छान चूर्ण कर ले।

मात्रा—१ तोला से १॥ तोला तक नीबू डाले हुए जल से दिन में ३ बार दे।

गुण—कैसी भी आंव हो चाहे जितनी दिन की हो, सग्रहणी हो, अतिसार हो २-३ दिन में नष्ट करता है।

नोट—प्रथम १ औंस कास्ट्रयल (एरण्ड स्नेह) से कोष्ठ शुद्ध कर लिया जाय तो शीघ्र ही लाभ होता है। यह औषध रक्त अतिसार में लाभ नहीं करती है।

शिरदर्द पर—

अरने कण्डे की शुद्ध भस्म	५ तोला
कपूर	१ तोला
केशर	३ माशा

—सबको महीन चूर्ण कर आक के दूध की भावना देकर छाया में सुखा ले। तत्पश्चात एक शीशी में मजबूत कार्क लगाकर रख ले।

मात्रा—१ रत्ती की नस्य ले, छींक आवेगी।

गुण—कैसा ही शिर दर्द हो, शीघ्र लाभ होता है। मैंने इन नस्य से डाक्टरों से त्यागे हुए रोगी भी ठीक किये है।

नोट—छींक आने के समय सिर पर बादाम के तैल की मालिश करनी चाहिए।

:: पृष्ठ ३२७ का शेषांश ::

सौंठ	१। तोला
मोम	२॥ तोला
एरण्ड का तैल	१० तोला

—अजवायन और सोंठ पीस कर कपड़छान कर रखले। एरण्ड का तैल गरम करे उसमें मोम डालकर गलावे। इसके बाद पिसी दवा डालकर खूब घोटे।

प्रयोग—जरासा मरहम लेकर अण्डकोप में मल दे। इसके बाद पान गरम करके बांध दे।

दाद के लिये—

चौकिया सुहागा भुना हुआ गंधक
फिटकिरी भुनी हुई —तीनों १-१ तोला
रसकपूर ३ माशा

—इन चारो को पीस कर चीनी २ तोला मिलाकर घोटले।

प्रयोग—दाद को पैसे से खुजलावे। जब उसमें पानी आजावे तब थोड़ा सफूफ लेकर उस पर लगादे और उसे ५ मिनट तक रगडे। एक बार के लगाने से दाद गायब हो जाता है।

❖

श्री विभूतिराम त्रिपाठी 'कोविद'

वैद्य विशारद, आयुर्वेदिक चिकित्सालय, हरिहरपुर-बस्ती।

"आप हिन्दी साहित्य सम्मेलन से वैद्य विशारद, अंगरेजी से इन्टर, तथा कोविद पास हैं। आप ग्राम भरोदिया जि. गोरखपुर के निवासी हैं। इस समय हरिहर पुर में चिकित्सा व्यवसाय करते हैं। जनता मे आपके प्रति बडी श्रद्धा एव विश्वास है। परिश्रम ही इसमे मूल कारण है। निम्न लिखित आपके ३ योग हैं।"

—सम्पादक।

मस्त मोदक बनाम जवानी की बहार—

उर्द की पीठी	१ सेर
कोंच की पीठी	४० तोला
विदारीकन्द	४० तोला
असगन्ध	१० तोला
मुलहठी	५ तोला
गोद बबूल	२० तोला
मुनक्का	२० तोला
इलायची लौंग	जावित्री
सत्व गुडूची	प्रवाल भस्म
—ये २॥-२॥ तोला	
सोंठ	२० तोला
घी	४० तोला
चीनी	३ सेर

निर्माण विधि—उर्द की दाल और कोच बीज शाम को दूध मे भिगो दे, प्रात मसल कर छिलका अलग कर बारीक पीस लें। इस पीठी को बरा (वड़े) की भांति घी मे सेंक लें, कच्चा न रहने पावे। फिर उसे खूब ठण्डा होजाने पर कूट कर चलनी से छान लेवे। इस छने चूर्ण को सावधानी से अलग रख दे। अब विदारीकन्द असगन्ध, मुलहठी, गोंद का लावा, लौंग, सोठ और जावित्री को बारीक कपड़छान चूर्ण कर ले। इस चूर्ण मे सत्व गुडूची और प्रवालभस्म मिला कर अलग रखदे। मुनक्का भी पीस ले। इसके बाद चीनी की चासनी गोली बंधने लायक तैयार करलें, उस चासनी मे इलायची का दाना बिना कुटा हुआ डाल दे। इसके बाद दवाओ का चूर्ण और पीठी का चूर्ण एव मुनक्का की पीठी, शेष द्रव्य मिला कर अच्छी तरह मसले। कढ़ाई मे का बचा हुआ घी भी मिला ले। अब आधी-आधी छटांक के लड्डू बांध कर मिट्टी की हांडी मे रखले।

नोट—सभी द्रव्य देख कर लेवे, कोई सड़ा घुना न हो। प्रमेह का रोगी चीनी की जगह मिश्री का प्रयोग करे।

गुण—इस स्वादिष्ट तृप्तिकारक लड्डू को प्रातः-सायं जलपान के रूप मे सेवन करे। आप एक सप्ताह मे ही अपने अन्दर अपूर्व शक्ति और मस्ती पायेगे। आलस्य, उदासी और घबडाहट आपसे कोसो दूर भाग जायगी। दिल, दिमाग शक्तिशाली होजायेगे। इस प्रकार थोड़े ही दिनो मे बल वीर्य सम्यक् होकर आपकी नसों मे दौड़ने लगेगी। जिससे कठिन से कठिन कार्य में भी करने मे हिचकिचाहट नहीं मालूम होगा।

आप क्यो न स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता, शीघ्र-पतन, रतिकर्म हीनता एवं तद्जनित भयङ्कर से भयङ्कर व्याधियो के चंगुल मे फस गए हो, इस मोदक

को सेवन कर मस्ती का आनन्द लेवें। यदि कब्ज अधिक हो तो पहिले पेट साफ करले। या कुछ दिन भोजनान्तर अभयारिष्ट २ से २॥ तोला तक समान भाग जल में मिला कर सेवन करे। स्त्री-पुरुष दोनो सेवन कर सकते है।

शङ्खद्राव चूर्ण—

यवक्षार	कलमीशोरा	नवसादर
फिटकरी		कालानमक

—२०-२० तोला

निर्माण विधि—सभी द्रव्यो को लेकर बारीक चूर्ण कर एक हांडी मे रख मुख बन्द कर आंच पर चढ़ा दे। अच्छी तरह जलांश समाप्त होजाने पर बिलकुल जम जायगा। इस द्रव्य को सावधानी से निकाल कर बोतलो मे भरकर डाट लगादें। खुला रहने से खराब हो जायगा। यही सफेद पाउडर शङ्खद्राव चूर्ण है।

मात्रा—प्रायः १ माशा।

गुण—घोर उदरशूल तुरन्त बन्द करता है। जहां शङ्खद्राव देर करता है वहां यह शीघ्र लाभ करता है यह उदर शूल की अचूक दवा है। चाहे जैसा दर्द हो। मार्फिया का इन्जेक्शन लगाना आप भूल जांयगे, यदि इसकी परीक्षा करेंगे।

—घोर कुक्कर खांसी जिसमें बच्चे प्रायः कै कर देते हैं। उसमे यदि ३-४ रत्ती बहेड़े त्वक् के चूर्ण के साथ ३-४ रत्ती यह चूर्ण मिला कर गर्म जल या अड़ूसा पत्र स्वरस मधु से दे तो अविलम्ब और आश्चर्य जनक लाभ करता है। गुल्म और यकृत प्लीहा वृद्धि मे भी लाभ दिखाता है।

घाव पकाने की दवा—

गंधियारी की जड़	१ भाग
पक्की रेह	½ भाग
नमक	½ भाग
सेमल की छाल	१ भाग
बरना की छाल	१ भाग

निर्माण विधि—सबको जल के साथ पीस कर लुगदी बना गर्म कर बांध दें।

गुण—घाव कितना ही भयङ्कर हो पकने की आशा हो या न हो इसे उसी समय लगावें जब पकाना हो। २-३ दिन मे घाव पक जाता है। मुख का पता न हो तो बीच में हल्दी की राख और चूना की टिकिया बना कर रखदें। उसके ऊपर पुल्टिस रख बांध दें। टिकिया के बीच छेद होकर मवाद बह होजायगा।

:: पृष्ठ ३३५ का शेषांश ::

समय—प्रात, मध्याह्न तथा सायंकाल।

मात्रा—२ गोली से ४ गोली तक। यदि जीर्ण-ज्वर है तो गिलोयसत्व ४ रत्ती के साथ गोली को शहद में देवे।

गुण—जीर्णज्वर तथा राजयक्ष्मा का ज्वर दूर होगा। यह प्रयोग ४१ दिन तक करना चाहिए। सर्व प्रकार के ज्वर एव विषम ज्वर के लिए अचूक योग है।

सोम रोग पर (श्वेत प्रदर नाशक)—

नागकेशर	मिश्री	वंशलोचन
छोटी इलायची		—प्रत्येक १-१ तोला

—इनको महीन पीस कर चूर्ण बनावे।

अनुपान—धारोष्ण दूध (अथवा मिश्री युक्त उष्ण दूध)।

समय—अहोरात्रि मे ४ समय।

मात्रा—३ माशा से ६ माशा तक।

गुण—जीर्ण सोम रोग पर अचूक है।

राजवैद्य श्री मांगीलाल जी त्रिपाठी

आयुर्वेदाचार्य एवं आयुर्वेद रत्न
प्रतापगढ़, (राजस्थान)
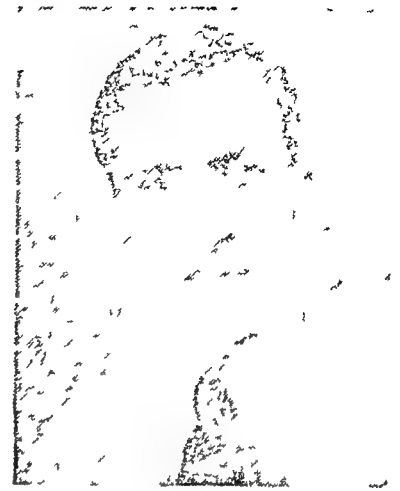
"आपके पिता राजस्थान के प्रसिद्ध वैद्य थे। उनके आप ज्येष्ठ पुत्र हैं। आप वंश-परम्परागत, यह व्यवसाय सात पीढियो से कर रहे हैं। वर्त्तमान में राजस्थान राज्य के आयुर्वेद विभाग द्वारा सचालित चिकित्सालय विजयपुर मे आप प्रधान वैद्य के पद पर हैं। हाल ही मे यहां श्री धन्वन्तरि भवन का निर्माण कराया है। विशेषतः बाल तथा स्त्रियो की चिकित्सा के आप सफल चिकित्सक है। आपके केवल ४ प्रयोग जनता जनार्दन को भेंट किये जारहे हैं।" —सम्पादक।

प्रदरान्तक चूर्ण—

तप्पड़ (टाट) की भस्म १० तोला
शुद्ध स्फटिका २ तोला
आम की गुठली, लोध पठानी
जामुन की गुठली, इन्द्रजव
मोचरस —प्रत्येक ४-४ तोला
सोनागेरू २ तोला
मिश्री १० तोला

निर्माण विधि—सर्व प्रथम तप्पड़ (टाट) की भस्म कर कपडे से छान लें, तत्पश्चात अन्य औषधियों को कूटछान कर तप्पड़ के चूर्ण के साथ खरल करे। एक जीव होने पर उसमें सोनागेरू तथा मिश्री मिलावे।

अनुपान—गौदुग्ध, जल, चीदाने का पानी।

समय—प्रात' साय।

मात्रा—३ माशा से ६ माशा तक।

गुण—रक्तप्रदर, श्वेत प्रदर, अर्श, रक्तातिसार इत्यादि स्त्री-रोगो के लिए उपयोगी है।

अपथ्य—तैल, बेंगन, लाल मिर्च, गुड़।

कास, श्वास नाशक—

[कृष्णामृत अवलेह]

काकड़ासिंगी ४ तोला
छोटी पीपल २ तोला
वंशलोचन २ तोला
काली मिर्च, लौंग, यवक्षार
मुलहठी, शुद्ध सौभाग्य
—प्रत्येक १-१ तोला

—उपरोक्त औषधियो का चूर्ण कर मिश्री की चाशनी कर अवलेह बनावे।

मात्रा—प्रातः सायं १ तोला से १॥ तोला तक सेवन करे।

गुण—पाचों प्रकार के श्वास, पांच प्रकार के कास, स्वरभेद, फुफ्फुस की अशक्ति आदि के लिए परम उपयोगी है। तैल, खटाई वर्ज्य है।

ज्वरहर गुटिका—

सुदर्शन चूर्ण शास्त्रोक्त निर्मित १० तोला
शुद्ध स्फटिका १ तोला
शुद्ध वच्छनाग १ तोला

—कपड़छान करके सुदर्शन चूर्ण के साथ निम्बू के रस मे मिलाकर पीस कर ४-४ रत्ती की गोली बनाले।

अनुपान—पानी अथवा तुलसी क्वाथ से देवे।

—शेषांश पृष्ठ ३३४ पर।

रसवैद्य श्री अम्बादास पन्ढरीसा बन्हाणपुरे

अशोक औषधालय, दाऊदपुरा, बुरहानपुर (म० प्र०)

"श्री वैद्य जी उत्साही, कर्मठ एवं योग्य नवयुवक है। आपने अपनी २५ वर्ष की आयु मे ही चिकित्सा कार्य मे अच्छी सफलता प्राप्त करली है। आपने 'मानवसुख सरिता' नामक पुस्तक लिखी है जिसका एक प्रकरण "इच्छित सन्तान" धन्वन्तरि अक्टूबर १६५७ के अङ्क में पाठक पढ चुके हैं। आपके उद्देश्य महान् हैं तथा आपसे महान् आशायें हैं। पाठक, आशा है आपके निम्न प्रयोगो को, सफल ही पायेंगे।" —सम्पादक।

सिद्ध नेत्राञ्जन—

आवश्यक वस्तुए—

फिटकरी		नवसादर पक्का
कलमी शोरा	गन्धकाम्ल	जस्ता
पारद	श्वेत चीनी का प्याला	
मिट्टी का सिकोरा	नत्राम्ल जल एवं अग्नि	

निर्माण विधि—एक तोला पारद को चीनी के प्याले मे डालकर नत्राम्ल (Nitric acid) ६ माशा डालिये और उस प्याले को हिलाइए। दो-तीन मिनट बाद स्वच्छ जल से उसे धो डालिये। इस प्रकार तीन बार प्रक्रिया करने से पारद सप्तकंचुक दोष-रहित हो जावेगा।

मिट्टी के सिकोरे को अग्नि पर रखकर ६ माशा जस्त और ६ माशा शीशा डालो। वह द्रवित होने पर उसमे नवसादर की चुटकिया मारो और उस सिकोरे को अग्नि से बाहर निकाल कर रखो। उसका तापमान कम होने पर उस उभय धातु मिश्रण मे उपरोक्त पारद एक तोला मिला दो पारद का मस्का तैयार होगा। उसे खरल मे डालकर निम्बू के रस में घोटकर पानी से धो डालो, वह मस्का विशुद्ध होगा।

अब उस विशुद्ध त्रिधातु को श्वेत चीनी के प्याले मे डालकर उसी मे दो तोला कलमी शोरा एवं दो तोला विशुद्ध जल डालिए। अब उस प्याले को मिट्टी के सिकोरे मे रखकर उसे अग्नि पर चढ़ाओ तथा थोड़ा-थोड़ा गन्धकाम्ल डालते जाओ। इस प्रकार १० तोला गन्धकाम्ल समाप्त करो। पश्चात् शुष्क होने पर प्याले से के श्वेत त्रिधातु भस्म को जल डाल-डालकर धो लीजिए और अग्नि पर सुखा लीजिए पश्चात् फिटकरी की लाही (फूला) २ तोला मिलाकर उसे स्वच्छ कांच की शीशी मे सुरक्षित रखिए। यह सिद्ध नेत्रांजन तैयार हुआ।

सेवन विधि—२ रत्ती सिद्ध नेत्रांजन को दूध मे मिलाकर नेत्र मे अंजन करे। समस्त नेत्राभिष्यन्द रोग नष्ट होगे।

उपदंश मुक्ता—

एक भाग सिद्ध नेत्राजन, एक भाग शुद्ध गन्धक एक भाग गूगल एव एक भाग सुहागा मिलाकर

१-१ रत्ती की गोलियां बना लेवे। एक गोली दूध के साथ सेवन करने से (प्रतिदिन सुबह-शाम) उपदंश की व्याधि जड़ से नष्ट हो जाती है।

सूचना—औषधि सेवनकाल में केवल दुग्धाहार पर रहें।

लोह कल्प—

आवश्यक वस्तुएं—

स्वच्छ लोह पात्र (बिना कुंडे की कढ़ाही)
कपड़छान किया हुआ त्रिफला चूर्ण, सुहागा
वाष्प जल खुरासानी अजवायन
गुलाब के फूल ग्वारपाठा लकड़ी की मथानी

निर्माण विधि—स्वच्छ लोह पात्र में गुलाब के फूलों की पखड़िया ५ तोला डालकर खरल की मुसली से उसका कल्क बना लीजिए। पश्चात् उसमें त्रिफला चूर्ण ५ तोला, खुरासानी अजवाइन २॥ तोला, ग्वारपाठे का गूदा ५ तोला और सुहागा २॥ तोला एवं वाष्पजल ४० तोला डाल कर हिला दो तथा उस पर एक थाली ढक दो। प्रत्येक प्रातः सायं लकड़ी की छोटी मथानी से उस द्रव्य को मथना चाहिए। चालीसवे दिन उस द्रव्य को कपड़े से छानकर शीशी मे भर कर रखे। इसमें लोहे पर रासायनिक प्रक्रिया होकर वह जल में घुलनशील होकर द्रव का रङ्ग जामुनी हो जाता है। यह लोह कल्प अद्भुत रसायन है।

सेवन विधि—(१) ड्रॉपर से २-२ बूंद आंखो मे डालने से आखो की समस्त व्याधियां दूर होती है तथा पुतली चौड़ी होकर नेत्र-ज्योति बढ़ती है।

(२) निम्बू के शर्बत मे एक तोला कल्प मिलाकर सुबह शाम भोजन के दो घंटा पूर्व सेवन करे तो रक्तक्षय, पाडु, कामला, अजीर्ण, मलावरोध एवं बच्चो का सूखा रोग दूर होता है।

चक्षु दोषान्तक लेप—

आवश्यक वस्तुएं—

लोहपात्र कागजी निम्बू अफीम
फिटकरी आंवा हल्दी निम्बपत्र का स्वरस

निर्माण विधि—लोह पात्र मे आंवाहल्दी चूर्ण ६ मा. अफीम १ माशा, फिटकरी ६ माशा, निम्ब पत्र स्वरस दो तोला एवं निंबू रस दो तोला डालकर पत्थर की मूसली से घोटे। जब शहद जैसा गाढ़ा हो जावे तब उसे काच की डिबिया मे भरकर रक्खे।

सेवन विधि—आंखें आने पर आंखो के बाहरी भाग पर उपरोक्त लेप रात को सोते समय लगा देवे और सवेरे गर्म जल से आंखे धो लेवे। इस प्रकार ५-६ बार प्रयोग करने से आखे अच्छी हो जाती है।

मृत्तिका कल्प—

आवश्यक वस्तुए—

खारी मिट्टी एरड के हरे पत्ते
शक्कर कलई का बर्तन

निर्माण विधि—१० तोला खारी मिट्टी को १० तोला पानी मे रात्रि को मिलाकर रखे। दूसरे दिन सुबह उसमे २० तोला एरंड के हरे पत्तो का कल्क बनाकर मिलावे और द्वितीयांश काढ़ा करके उसे कपड़े से छान लेवे। पश्चात् उसे स्थिर होने के लिए ८ घंटे रख छोड़े। गाद पैदे मे जम जाने पर ऊपर का स्वच्छ काढ़ा निकाल लें। फिर उसमे २० तोला शक्कर मिलाकर पाक बनालें। यह मृत्तिका कल्प सिद्ध हुआ।

सेवन विधि—प्रतिदिन प्रातः सायं भोजन के दो घंटा पूर्व १ तोला पाक सेवन करने से एक माह मे असाध्य पाडुरोग और कामला नष्ट होता है।

अर्शमुक्ता—

आवश्यक वस्तुएं—

अर्कमूल की छाल शुद्ध श्वेत गुञ्जा
त्रिफला सुहागा

निर्माण विधि—अर्कमूल की छाल ५ तोला, शुद्ध

—शेषांश पृष्ठ ३३६ पर।

वैद्य श्री विक्रमाजीत नन्दा

१२५ पीली कोठी, थापर नगर, मेरठ ।

"श्री नन्दा जी स्वर्गीय श्री शिवराम जी नन्दा के पुत्र हैं तथा आपकी आयु ६० वर्ष है। आपके चिकित्सा विषयक लेख भारत एवं पाकिस्तान के अनेक पत्रों मे प्रकाशित होते रहते हैं। आप एक सफल चिकित्सक हैं तथा आपको सरल और उपयोगी प्रयोगों के भण्डार ही समझिये। आपके द्वारा प्रेषित अनेक प्रयोगों में से कतिपय नीचे प्रकाशित कर रहे हैं, पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक।
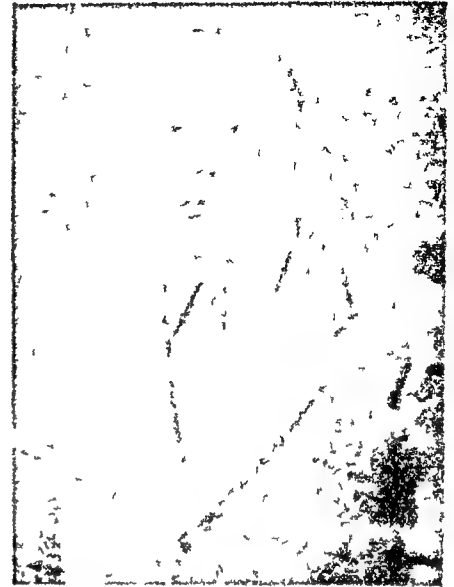
मस्तिष्क दौर्बल्य नाशक—

बादाम गिरी	७ दाने
छोटी इलायची	४ दाने
छोहारा	१ दाना
गाय का मक्खन मिश्री	५–५ तोला

विधि—बादाम की मिंगी और छुहारा को किसी मिट्टी के वर्तन में रात को भिगोदें। सवेरे बादामों की गिरी के छिलके को उतार लें और छुहारों की गुठली निकालदें और इलायची के दाने निकाल कर खूब बारीक पीस ले। इसके बाद मिश्री भी पीस कर इन सबको मक्खन में मिलाकर खावें। यह एक मात्रा है।

गुण—२१ से ४० दिन तक खाने में दिमाग की कमजोरी को दूर करता है। चित्त प्रसन्न रहता है। शरीर मे स्फूर्ति आजाती है।

अद्भुत योग—

कीकर (बबूल) की फली	४० सेर
पानी*	२० सेर
लोहे का बुरादा	½ सेर

निर्माण विधि—इन सबको मिट्टी के घड़े में डाल कर २० (बीस) दिन धूप मे रखदे, हर दो दिन के पश्चात् कीकर की लकड़ी से हिलादे। २१ वें दिन पानी निथार लें और सुरक्षित रखे।

सेवन विधि—सवेरे १½ छटांक से २ छटांक तक पी ले।

लाभ—बालो को सफेद होने से रोकता है। यकृत की कमजोरी को दूर करता है। रङ्ग को निखारेगा तथा प्रमेह रोग दूर करेगा।

नोट—कीकर की फली उस समय लें, जब उसमे रस पड गया हो, परन्तु बीज न पड़ा हो।

बच्चो का आबेहयात—

सौंफ	५ तोला
पानी	आधा सेर
सुहागा भुना हुआ	१ माशे
देशी खांड	१ पाव

विधि—सौंफ को पानी मे पकाओ और जब पानी आधा रह जाय तब इसको छान कर इसमें

*हमारी सम्मति से पानी उबालकर डालना चाहिये। —सम्पादक।

सुहागा, खाड़ मिलाकर पाक करके शर्बत बनालो।

सेवन विधि—१ माशा से ३ माशा तक दिन में एक बार बच्चों को देवे।

लाभ—यह बच्चों का आवेहयात् है। बच्चों के सब रोगों को दूर करता है।

ज्वर पर अनोखा सुरमा—

कुश्ता हरताल   शु. गन्धक   आवलासार
शुद्ध पारद   —तीनों १-१ तोला

विधि—गन्धक व पारा को तीन घण्टा खरल करे। अब इसमें हरताल का कुश्ता मिलादें और एक रेशमी कपड़े में इसकी पोटली बाध लें। एक विषैले काले साप को सिर की तरफ से ३ अंगुल काटलें और इसके मुंह में पिसा नमक बिछा देवे और उस पर पोटली रखदें और साप के मुंह को सीं कर कपरोटी करे एक मिट्टी के बर्तन को आधी रेत से भरो। इस पर वह सांप वाली पोटली रख कर बर्तन को रेत से भर दो। फिर इस बर्त्तन की कपरोटी करके एक दिन नरम आग दें। ठण्डा होने पर पोटली से दवा निकाल कर पीस लेवे।

सेवन विधि—ज्वर में एक सलाई आंख में डाले। ज्वर उतर जायेगा। सलाई का दोनों आंखो में ही प्रयाग करें अन्यथा जिस आंख में डालेंगे उसी तरफ का ज्वर उतरेगा।

सूचना—यह दवा किसी अनुभवी वैद्य की देख-रेख में ही बनवाये। हरताल की भस्म बनाने की विधि इस प्रकार है—

हरताल वरकी   २ तोला
घीग्वार का पानी   आवश्यकतानुसार

विधि—हरताल को सारा दिन थोड़ा-थोड़ा घीग्वार का पानी डालकर रगड़े और एक टिकिया बना कर साया में सुखाले। फिर एक मिट्टी के बर्त्तन में पीपल वृक्ष की छाल की राख डाल कर उस पर हरताल रखदे अब हांडी को पीपल की राख से भर दे। हांडी को कपरोटी करके साया में सुखा लेवें। अब चूल्हे पर हाडी को आठ पहर धीमी २ आग दें। ठण्डा होने पर हरताल निकाल ले, यह श्वेत रङ्ग का हरताल का कुश्ता होगा।

संग्रहणी पर—

शुद्धपारा   १ तोला
शुद्ध गन्धक   २ तोला
सोंठ   कालीमिर्च   पीपल
—तीनों ३-३ तोला
हींग   १ तोला
धुली भांग   १३ तोला

—इन सब चीजों को अलग-अलग कूट-छान कर सफूफ करके मिला लें। दिन में ३ बार गाय की ताजा छाछ के साथ १ से २ माशा तक दें। पीने के लिये केवल छाछ (तक्र) दें, शेष सब अन्न जल फल आदि बन्द कर दें।

:: पृष्ठ ३३७ का शेषांश। ::

श्वेत गुंजा चूर्ण ५ तोला, सुहागा ५ तोला और त्रिफला ५ तोला इन सबका एकत्र कपड़छान चूर्ण बनाकर ४-४ रत्ती की गोलियां शहद के योग से बनावे। यह अर्शमुक्ता सिद्ध हुई।

सेवन विधि—भोजन के दो घंटे पश्चात् सवेरे सायंकाल दूध के साथ १-१ गोली सेवन करने से थोड़े ही दिन में छः ही प्रकार का अर्श नष्ट हो जाता है और साथ में ज्वर भी शांत होता है।

राजवैद्य श्री पं. नित्यानन्द शंखधार

वनस्पति रसायनशाला, बीसलपुर (पीलीभीत)

पिता का नाम— पं० अंगनलाल जी शंखधार
आयु—४० वर्ष जाति–सनाढ्य ब्राह्मण

"आप ललितहरि आयुर्वेदिक कालेज पीलीभीत के स्नातक हैं। सन् १९३५ से चिकित्सा कार्य प्रारम्भ किया। आपने स्वातन्त्र्य संग्राम मे भी भाग लिया। आप समाज सेवक एवं उत्साही कार्यकर्ता हैं। प्रांतीय वैद्य सम्मेलन के प्रचारक मंत्री रहे हैं। इस समय भी आप भूदान सम्बन्धी कार्य करते है। आपके भेजे यहा दो प्रयोग प्रेषित हैं।" —सम्पादक।

संग्रहणी भंजन—

शुद्ध पारद	शुद्ध आमलासार गन्धक
अतीस गुजराती	नागरमोथा
कुटजत्वक	धाय के फूल
वेलगूदा	आम की गुठली की मींग
जामुन की मींग	लोध पठानी
छुआरा	केशरमोगरा

—प्रत्येक १-१ तोला

निर्माण विधि—प्रत्येक द्रव्य को कूट कपड़-छान करें पश्चात् पारद गन्धक की कज्जली को मिला देवे। अफीम को अर्क सोफ में घोल कर द्रव्यों मे मिलाकर ३ दिन खरल करे फिर चन्दनार्क मे घोट कर उपरोक्त खरल की हुई औषधि को २ रत्ती से ४ रत्ती तक की गोलियां बनाकर धूप मे सुखा लेवे।

सेवन विधि—अर्क सौंफ या दही के साथ सेवन करना चाहिए।

गुण—यह संग्रहणी, आमातिसार, अतिसार को अति शीघ्र दूर करने मे रामबाण का काम करती है।

शक्तिप्रद वटी—

सिद्ध मकरध्वज षट्गुणबल जारित	३ माशा
स्वर्णवङ्ग	६ माशा
मुक्ता पिष्टी	१॥ माशा
मुश्क (कस्तूरी)	१॥ माशा
केशर मोगरा	२ माशा
प्रवाल चन्द्रपुटी	३ माशा
अभ्रकशतपुटी	३ माशा
शुद्ध कपूर	३ माशा
अकरकरा	१ तोला
असगन्ध नागौरी	१ तोला
शिलाजीत सूर्यतापी	१ तोला

निर्माण विधि—अर्क आमला मे शिलाजीत को घोट कर उपरोक्त औषधियों को १ दिन खरल करे। अर्क वेदमुश्क मे १ दिवस, शतावरी रस मे १ दिवस, गुड़मार बूटी के रस मे १ दिवस और ब्राह्मी बूटी के रस मे १ दिवस खरल कर १२० वटिकाये बना छाया मे सुखाले।

सेवन विधि—१ गोली प्रातः मीठा रहित ताजे गाय के दुग्ध से, १ गोली भोजन के पश्चात् दो घण्टे बाद ताजे जल से, १ गोली सायंकाल साधारण दुग्ध के साथ सेवन करे।

पथ्यापथ्य—साधारण भोजन करे। फलो का सेवन करे। हर समय प्रसन्न चित्त रहे, उत्तम भोजन करे, ब्रह्मचर्य से रहे। खटाई, तैल, गुड़, लाल मिर्च सेवन न करे। ४० दिवस तक औषध अवश्य सेवन करे।
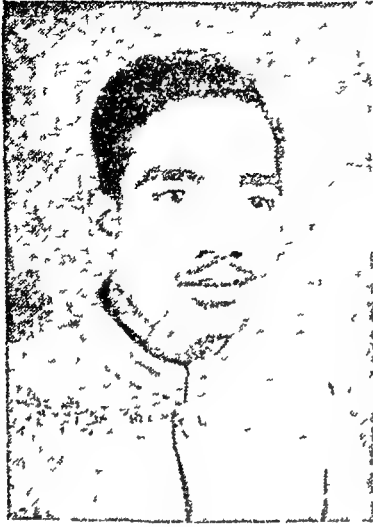
कविराज लालबहादुर सिंह चौहान

D. I. M. S. (अन्तिमवर्ष) साहित्य रत्न, देहली।

"श्री चौहान जी अपने अध्ययन-काल मे एक प्रगतिशील विद्यार्थी रहे हैं। 'आयुर्वेदिक यूनानी तिब्बिया कालेज' मे छात्र संघ के कार्यकर्त्ता, हैं वे कालेज की त्रैमासिक पत्रिका के सम्पादक रहे है। लिखने में आपकी विशेष रुचि है, आप अपने अध्ययन काल के साथ-साथ चिकित्सा कार्य में भी अभिरुचि ले रहे हैं। आपके लेख व कवितायें अनेक पत्र-पत्रिकाओ मे छपते रहते है। दिल्ली में फैले पीलियारोग से पीडित जनो की सेवा मे आपने यथेष्ट भाग लिया था। आपने अत्यन्त सरल लाभकर निम्न योग धन्वन्तरि के पाठको की सेवा मे उपस्थित किए हैं।" —सम्पादक

अतिसार—

१—बबूल की छाल का रस	६ माशा
शहद बढ़िया	६ माशा

—इन दोनो को आपस मे मिलाकर दिन मे ३ बार देने से प्रत्येक प्रकार का अतिसार दूर हो जाता है।

२—मुनक्का	४ नग
पौदीना हरा	६ माशा
जीरा	४ माशा
काला नमक	३ माशा

—चारों औषधियो को पीसकर कल्क बनाले। यह कल्क (चटनी) दिन भर मे ४-५ बार चाटने से दस्तो को बहुत लाभ करती है, परन्तु कल्क ताजा ही प्रयुक्त करना चाहिए।

उदर-कृमि—

नीम की हरी पत्ती का स्वरस	½ तोला
मधु शुद्ध	½ तोला

—दोनो को मिलाकर रोगी को दिन मे ३ बार तक पिलाये तो लगभग ८–१० दिन मे उदर-कृमि नष्ट हो जाते है और रोगी पूर्णतः आरोग्य लाभ करता है।

जुकाम—

काली मिर्च	२५ नग
मिश्री बढ़िया	¾ छटांक

—काली मिर्च खरल में तोड़ कर दरदरी बनाले और उन्हे १½ पाव पानी मे मन्दी-मन्दी आंच से औटावे। जब ६ तोला के लगभग शेष रह जावे तब उतार कर छान ले और इस क्वाथ मे ¾ छटांक मिश्री पीसकर मिलादे और गुनगुना ही रोगी को पिलादे तो २-३ दिवस के सेवन मात्र से ही जुकाम दूर हो जाता है।

हल्दी	६ माशा
पुराना गुड़	२ तोले

—हल्दी और पुराना गुड़ लेकर १ पाव पानी मे औटावे और अष्टमाश शेष रहने पर उतार कर छान ले और उष्ण ही रोगी को पिलाकर कम्बल उढ़ाकर शैया पर लिटादे तो जोर का पसीना आयेगा और विष (Toxins) बाहर

—शेषाश पृष्ट ३४४ पर।

वैद्य श्री जयकुमार जैन 'वत्सल'

सिरोंज (मध्य प्रदेश)

"श्री वत्सल जी अपने पिता श्री हुक्मचन्द जी जैन वैद्य की भांति किराने का व्यापार करने के साथ ही आयुर्वेदिक चिकित्सा द्वारा निःशुल्क पीड़ित जनता की सेवा करते हैं। आपके पिता द्वारा सस्थापित हुक्मचन्द जैन धर्मार्थ औषधालय रोगियो की सेवार्थ अद्यावधि सचालित है। आप सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं तथा जनता मे जाग्रति उत्पन्न करने के हेतु सभी कार्यों मे सक्रिय भाग लिया है। आपके निम्न प्रकाशित प्रयोग सफल गुणप्रद प्रतीत होते हैं अतः पाठक लाभ उठावें।" —सम्पादक।

शुष्क कास—

(बच्चो की कुकर खांसी, काली खांसी)

यह एक ऐसा रोग है जिसमे रोगी खांसते-खांसते वेचैन होजाता है और वमन तक होजाती है। ज्यों-ज्यों इलाज होता है रोग वढ़ता जाता है किन्तु निम्न योग से शीघ्र लाभ होता है—

संजीवनी (कज्जली मिश्रित योग)	१ वटी
प्रवाल पिष्टी	१ रत्ती

—उक्त दोनो औषधियों की एक मात्रा बनाकर मधु या मिश्री की चाशनी से चटायें। इस प्रकार प्रतिदिन ३ मात्रा देवे।

कफ पित्तजन्य शुष्क कास पर—

प्रायः खांसी में कफ (वलगम) निकलने पर मनुष्य ठंड समझ कर गर्म औषधियां और वस्तुओं का सेवन करने लगते हैं जिससे किसी-किसी रोगी का कफ शुष्क होकर चिपट जाता है। खांसी अधिक वढ़कर लम्बे तरारे देकर चलने लगती है। रोगी खांसते-खांसते परेशान होजाता है। ऐसी अवस्था मे निम्न योग शीघ्र लाभप्रद है।

अनारदाना सूखा	१ तोला
पीपल छोटी	३ माशा
सेंधव नमक	६ माशा
यवक्षार	३ माशा

—सबको चूर्ण बना रखे।

मात्रा—१ माशा से ३ माशा तक।

अनुपान—पुराने गुड़ की चाशनी के साथ दे।

सर्वानन्द रसायन—

शु० हिंगुल	शु० बच्छनाग
सुहागाफूला	काली मिर्च
चांदी के वर्क	मोती असली

—सब समान भाग लेकर नींबू स्वरस व अद्रक स्वरस में तीन-तीन दिन घोट कर टिकिया बनाकर सुखा ले।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक।

अनुपान—मधु, वंसलोचन, सितोपलादि चूर्ण शकर की चाशनी-मलाई मक्खन इनमे से किसी के साथ।

गुण—वल वृद्धिकारी, जीर्णज्वर नाशक यकृत व

—शेपांश पृष्ठ ३४४ पर।

चिकित्सक श्री पं. सुरेशदत्त शर्मा वैद्यरत्न

आयुर्वेदालंकार, साहित्यभूषण, आयुर्वेद विशारद
शर्मा फार्मेसी, जलालाबाद (मु० नगर)

"श्री शर्मा जी राष्ट्रीय विचार के नवयुवक चिकित्सक हैं। कांग्रेस के स्वातन्त्र्य-युद्ध मे जेल यात्रा कर चुके हैं, किन्तु कांग्रेस की दुरावस्था से क्षुब्ध होकर जनसघ के समर्थक बन गए है। आप परिश्रमी एवं उत्साही व्यक्ति हैं अतएव जीविका उपार्जित करते हुए आपने मध्यमा, वैद्यरत्न तथा व्याकरण की अन्य परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। आपने अधिक प्रयोग प्रकाशनार्थ प्रेषित किए, किंतु उनमे से हमको जो प्रभावशाली जान पड़े उन्ही को प्रकाशित कर रहे हैं।"

—सम्पादक।
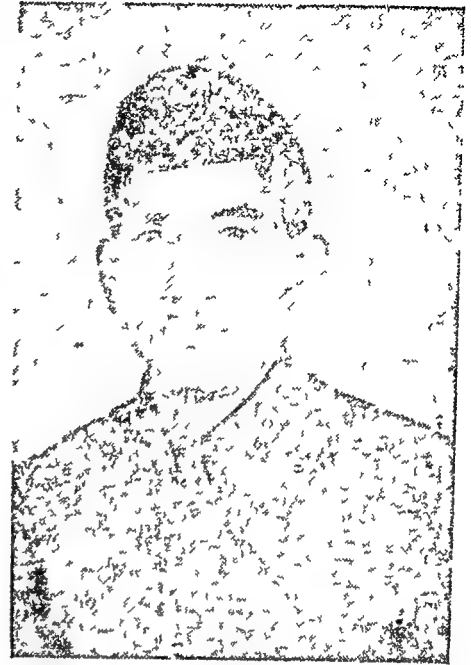
वातज एवं कफज शिरःशूल पर—

सफेद मिर्च	६ माशा
नारियल की गिरी	२० तोला
आनन्दभैरव रस	१ माशा
विनौला गिरी	३ माशा
पोस्त	१ तोला
गुड	२० तोला

—सबको कूटकर ८ मोदक (लड्डू) बना ले। एक एक मोदक प्रातःकाल प्रति दिन बकरी के दूध से ले।

गुण—वातज एवं कफज शिरःशूल मे लाभदायक है।

पित्तज शिरःशूल पर—

गोदन्ती हरताल भस्म	४ रत्ती
वराटिका भस्म	४ रत्ती
सूतशेखर रस	२ रत्ती

—यह दो मात्रा है। मावा के पेड़ा मे मिलाकर दीजिये। अवश्य लाभ होगा। प्रातः सायकाल १-१ मात्रा देनी चाहिए।

वमन नाशक—

अर्क सौंफ	अर्क पोदीना
अर्क बड़ी इलायची	अर्क गुलाब
सिरका	सिकंजबीन

—प्रत्येक ५-५ तोला

—सबको एक बोतल में मिलाकर रखे। थोड़ा-थोड़ा बार-बार पिलाये। वमन शीघ्र बन्द होगी।

बाल रोगों पर—

शु. टंकण (सुहागा भुना)	२ भाग
उसारेरेवन्द	१ भाग

—दोनो को खूब बारीक पीसकर शीशी मे रखे।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक, माता के दूध मे या जल मे मिलाकर दिन मे एक बार दे।

गुण - बच्चो के डब्बा, पसली, न्यूमोनिया एव कफ वृद्धि पर उपयोगी है। इसके व्यवहार से उल्टी होकर अथवा दस्त होकर कफ निकल जाता है और उपर्युक्त रोग शात होते हैं।

पसली पर मर्दनार्थ—

अजवायन देशी	१ माशा
केशर असली	४ रत्ती
अफीम (अहिफेन)	४ रत्ती
मोम देशी	१ तोला
जैतून तैल	१ तोला
तैल बावूना	१ तोला

—प्रथम तीन औषधियों को दोनों तैलों में पीसकर अग्नि पर जला ले और कपड़े में छान कर तैल में मोम मिलाकर मलहम बनाले।

गुण—इस तैल को छाती पर मलने से बालकों के डब्बा, पसली चलना, कफ-खांसी का विकार सभी नष्ट होते हैं।

मुखपाक पर—

१—कत्था	२ माशा
कपूर	१ माशा
ग्लिसरीन	५ तोला

—तीनों को मिलाकर छालों पर लगावे। शीघ्र लाभ होगा।

२—पीपल वृक्ष की नरम छाल व नरम कोपल पीस कर रस निकाल कर शहद मिलाकर छालों पर लगावे।

३—गेरू तथा टङ्कण, समान भाग पीसकर बुरके या खदिरादि वटी मुख में रख कर चूसे।

:: पृष्ठ ३४१ का शेषांश। ::

निकल जाने के कारण जुकाम में लाभ पहुँचेगा। ३-४ दिन तक सुबह शाम इस क्वाथ के प्रयोग से जुकाम नष्ट हो जाता है और तबियत साफ हो जाती है।

मन्दाग्नि—

हर्र का वक्कुल काला नमक पीपल
—प्रत्येक १-१ भाग

हींग का फूला	¼ भाग
सुहागा का फूला	¼ भाग

—सब द्रव्यों को लेकर बारीक चूर्ण बनाले और नित्य गर्म जल से ६-६ माशा दो बार प्रयुक्त करे तो अजीर्ण, भूख न लगना (क्षुधा-नाश) और भोजन में अरुचि को अपूर्व लाभ होता है।

:: पृष्ठ ३४२ का शेषांश। ::

वृक्क की कमजोरी, मसाने की खराबी, मूत्राविक्य, प्रसूतज्वरादि नाशक है। स्वर्ण-वसत मालती के समान लाभप्रद होते हुये भी मूल्य में सस्ता पड़ता है। उक्त योग पिता जी ने किसी ग्रन्थ से प्राप्त किया था किन्तु मेरे देखने में नहीं आया है।

कुटकी के कतिपय सफल योग—

पाडु रोग—कुटकी शक्कर के साथ खिलावे।

गठिया पर—कुटकी चूर्ण शहद या गुड़ की चाशनी से खिलावे।

वात कफ ज्वर में—कुटकी चूर्ण मधु शक्कर के साथ गोली बना कर खिलावे।

पित्त ज्वर तथा विषमज्वर में—कुटकी शक्कर के साथ खिलावे।

बाल मुखपाक पर—पीपल के वृक्ष की छाल का स्वरस मधु मिश्रित कर लगावे।

श्री अज्ञानी उदासीन बाबा

पांजरौली पो० कोसम्बा ।

"श्री अज्ञानी जी की आयु इस समय ५१ वर्ष की है। आप पंजाब की बहावलपुर रियासत के मूल निवासी हैं, किन्तु गत २०-२२ वर्षों से पांजरौली मे चिकित्सा व्यवसाय कर रहे हैं। आपके यहा यह कार्य कई पुस्तों से होता रहा है। आप एक सफल अनुभवी चिकित्सक है तथा निर्धन व्यक्तियो की सेवा नि शुल्क करते हैं, इसीलिए आपके प्रयोग भी सरल-सस्ते और अनुभवपूर्ण हैं।"

—सम्पादक ।

विशूचिका (हैजा) नाशक—

—गोदन्तीहरतालभस्म ग्वारपाठा (घीकुवार) मे भस्म की हुई तथा सुहागा (टकण) फुलाया हुआ, समान भाग ले ।

मात्रा—१ माशा से २ माशा तक १-१ घण्टे के अन्तर से गौदुग्ध (गरम किया व शक्कर मिला) ५-७ तोले मे मिलाकर दीजिये ।

गुण—इसके व्यवहार करने से भयंकर से भयंकर उल्टी (वमन) और अतिसार दोनो वद होते है ।

मलेरिया (मौसमी) बुखार पर—

कुटकी — चिरायता
नागरमोथा — पित्तपापड़ा
गिलोय —प्रत्येक समान भाग

—कूटकर चूर्ण बनाले ।

व्यवहार विधि—गरम प्रदेश मे हिम बनाकर, समशीतोष्ण प्रदेश मे चूर्ण की फंकी पानी के साथ तथा शीत प्रदेश मे क्वाथ बना कर दे ।

मात्रा—हिम व क्वाथ के लिये २-२ तोला तथा फकी के लिए ३ माशा। दिन मे दो बार ।

गुण—इस औषधि से मलेरिया बुखार ३-४ दिन मे अवश्य नष्ट होजाता है ।

अर्धावभेदक (आधाशीशी) पर—

गिलोयसत्व १ माशा से २ माशा तक गरम दूध के साथ ४-५ दिन लेने से यह रोग सदैव के लिये नष्ट हो जाता है ।

आयु० श्री काशीनाथ जी गुप्त

आयुर्वेदरत्न सारजमडीह जि० राची (विहार)

पिता का नाम— व्यासराम जी कविराज

आयु—३० वर्ष जाति—रौनियार वैश्य

'आपने १९५१ मे विहार सस्कृत ऐसोसियेशन से आयुर्वेदाचार्य की परीक्षा प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण की तथा स्वर्णपदक प्राप्त किया। सम्प्रति आप डिस्ट्रिक्ट बोर्ड औषधालय इटखोरी (हजारीबाग) मे चिकित्सक हैं। आपके निम्न प्रयोग परीक्षित हैं। पाठक लाभ उठायें।"

— सम्पादक।
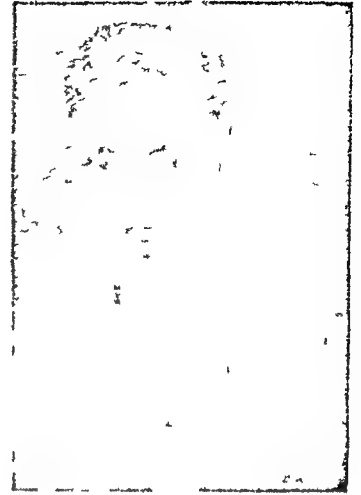
मुखव्रण या मुंहासे पर अनुभूत—

युवावस्था मे युवक युवतियों के चेहरे, कपाल और नाक आदि स्थानों मे छोटी छोटी फुन्सिया निकलती है। उनके पकने पर नाखूनों से दवाने पर भात जैसा एक कील पदार्थ निकलता है। इन फुन्सियों को सस्कृत मे युवानपिडिका, हिन्दी मे मुंहासा तथा इग्लिश मे Puberty Boils कहते हैं। मुंहासे के कारण अनेकों की मुखाकृति भद्दी होजाती है।

चिकित्सा—

यद्यपि अन्य पैथियो मे इसकी औषधियां बहुत मिलतीं है पर रोग से पूर्णतः मुक्त करा देने की क्षमता नगण्यसी है। दूसरी पैथियों की चिकित्सा से निराश होकर आयुर्वेद की शरण मे आकर कई एक व्यक्तियों ने निम्न प्रयोग से पूर्णत लाभ प्राप्त किया है।

विधि—सेमर जिसे सस्कृत मे शालमली कहते है। यह एक वड़ा वृक्ष है। इस वृक्ष के तने मे काटे निकलते है। वस उन्हीं कांटो को छील कर लायें और १ तोला की मात्रा मे उन्हे लेकर ५ तोले गौ के दूध मे १ घटा भीगने के लिए रख देवे। वाद स्वच्छ शिलाखण्ड पर पीस कर चेहरे पर ½ इच मोटा लेप करदे। फिर १ घण्टे के बाद मुख को जल से धो डाले। यह कार्य प्रात ही करना चाहिए। लेप लगा कर अपनी कोठरी मे ही रहना चाहिए अथवा एकान्त स्थान मे टहल भी सकते है। अन्य लोगों के देखने से उपहास की सम्भावना हो जाती है। इस प्रयोग को नित्य सवेरे एक वार लगावे। इस प्रकार से १४ दिन तक करे। वस दो सप्ताह के लेप से ही यह रोग विलीन होजायगा और आपका मुख मण्डल कमल सदृश शोभित होने लगेगा।

रात्र्यन्ध (रतौंधी) पर—

रात मे न दिखायी देने को रात्रि-अन्धता या रतौंधी कहते है। शारीरिक कमजोरी के कारण ही यह रोग होता है। इस रोग के लिए एक सुगम अनुभूत योग लिख रहा हूँ।

योग—परवर (परवल) नाम की एक तरकारी होती है। इसकी लता चलती है एव फूल और पत्ते झींगी से वडे होते हैं। इसे संस्कृत मे महाकोशातकी कहते है। देहाती भाषा मे परोर कहते है। आप इसके मीठे फल वाली लता की कुछ पत्तियो के स्वरस मे १० तोला यव के आटे को सानकर दो रोटी तैयार करले (आग मे सेककर) फिर उन रोटियों को रात्रि मे छप्पर या छत पर

छोड़ दें। सुबह मुंह हाथ धोकर दोनों रोटियों को भक्षण करे। फिर मध्याह्न में भोजन करे। यह रोटी रात में ही बनावे। बस यह प्रयोग दो सप्ताह तक करे। अवश्य ही आराम होजायगा।

आवश्यकीय नियम—आंवले के कल्क को शिर में लेप कर स्नान करना चाहिए तथा गौ का घी एव दुग्धादि पुष्टिकर वस्तुएं भोजन में लेना आवश्यक है।

वर्जित—धूप में चलना, रात्रि जागरण, क्रोध, लाल मिरच, मैथुन, शोक आदि वर्जित हैं।

इन्द्रलुप्त पर—

इसे टाल पड़ना या बाल्डनेस (Baldness) कहते हैं।

अधिक पढ़ना, मानसिक परिश्रम, शिर दर्द, शोक, चिन्ता आदि कारणों से यह रोग होता है।

—इससे शिर तथा दाढ़ी के बाल झड़ कर मनुष्य कुरूप बन जाता है।

अन्य पैथियों में अभी तक इस बीमारी के लिए लाभप्रद औषधि नहीं मिली है। बहुत से लोग डाक्टरों से दवा लिखाते-लिखाते खिन्न हो अन्त में आयुर्वेद की शरण में आये और निम्न प्रयोग से लाभ प्राप्त किया।

करंज के पत्ते	चित्रक के पत्ते
चमेली के पत्ते	रक्त कन्नेर के पत्ते

—प्रत्येक १-१ पाव

—लेकर जल से पीस कर कल्क जैसा बनावे। फिर ४ सेर तिल के तैल में उपरोक्त मिश्रित कल्क को डालकर ऊपर से १६ सेर पानी डालकर पकावे। तैल सिद्ध होने पर दाढ़ी तथा सिर पर मालिश करे। इस तैल की मालिश करने से जो शिर तथा दाढ़ी के बाल झड़ गए हों शीघ्र ही उग आते हैं। कुछ ही दिनों तक रुई के फाहे में तैल लगा कर मालिश करना चाहिए।

नोट—तैल मालिश करने के बाद साबुन से हाथ धो डाले।

:: पृष्ठ ३४८ का शेषांश ::

टपक कर एक ही दिन में निकल जावेगा और रोग निश्चय पूर्वक दूर हो जावेगा।

मूत्ररोग सुखावह—

जवाखार	खैर सार	कलमी शोरा
विजयसार	शीतलचीनी	इलायची

—प्रत्येक समान भाग

—लेकर कपड़ छान करके ६ माशे की मात्रा में दूध की लस्सी के साथ लेने से मूत्रप्रदाह, मूत्रावरोध, मूत्र में रक्त आना आदि रोगों में अवश्य लाभ करता है।

क्षुधा वर्धक—

आलू बुखारा	४ नग
मुनक्का	४ नग

—को गीले साफ कपडे में छान कर आग में भुरता करके गुठली और बीज निकाल कर भुनी छोटी हरड़ एक नग सेंधा नमक १॥ माशा काली मिर्च नग ५ को बारीक पीस कर उपरोक्त आलू बुखारा और मुनक्का के गूदे में मिलाकर थोड़ा पानी डाल कर घोट चटनी बना खाने से अरुचि, तृषा, दाह, अग्निमांद्य दूर होकर भूख बढ़ने लगती है।

आयुर्वेदाचार्य पं. खूबचन्द मिश्र वैद्य शास्त्री

श्री खूबा आयुर्वेदभवन, भुण्डपुरा (म० प्र०)
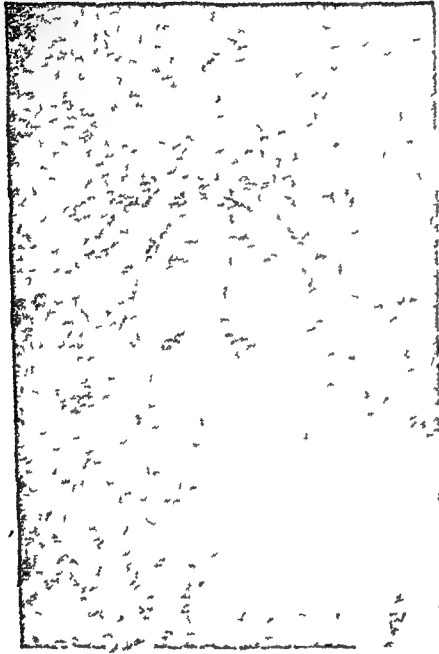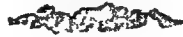
"आपके पिता जी एक उच्च चिकित्सक थे उन्ही के संस्कारवश आपकी बचपन से ही आयुर्वेद में अभिरुचि रही। एतद कारण से आप भी एक सुयोग्य चिकित्सक है। आपका आयुवद अध्ययन ग्वालियर एव झांसी में हुआ है। आपने वैद्य वाचस्पति की उपाधि प्राप्ति की है। आप लोक निर्माण कार्य में सदैव ही भाग लेते रहते हैं। आपका स्वतंत्र औषधालय है जिसमें प्रति वर्ष बहुत बडी संख्या में रोगियो की चिकित्सा करते हैं। अपने क्षेत्र के एक सच्चे ग्राम्य कार्यकर्त्ता एव कुशल चिकित्सक हैं। अपनी ग्राम पंचायत के सरपंच है। वैद्यजन हिताय आपने ५ प्रयोग भेजे है।"

—सम्पादक।

विषमज्वरांतक वटी—

गौदन्ती भस्म स्फटिका भस्म
गुडूची (गिलोय) सत्व करंज बीज की मिंगी
सफेद मिर्च धुली पिप्पली
सोंठ —प्रत्येक समान भाग

—लेकर नाय के रस में एक प्रहर मर्दन करके एक-एक रत्ती के बराबर गोली बनाकर बुखार आने से पूर्व १-१ घंटे के अन्तर से गोली खाने से मलेरिया अति शीघ्र हट जाता है।

पथ्य—केवल दूध या दलिया ही दें।

ज्वरार्क—

द्रोणपुष्पी स्वरस सहदेवी स्वरस
देव मजरी स्वरस नाय बूटी स्वरस
—प्रत्येक १-१ पाव

—सबको कांच के पात्र में मिलाकर फिटकरी का लावा २॥ तोला मिलाकर दो दिन पश्चात् ऊपर का साफ निथरा अर्क शीशियो मे भर कर रख लिया जाय और बुखार आने से पहले १ तोला अर्क २ तोला ताजा पानी मे मिलाकर पीने को दिया जाय तो शर्तिया मलेरिया दूर होता है।

पीलिया नाशक—

कड़वी तूंबी स्वरस साफ छान कर शीशी मे रख लिया जावे। इसमे से सुबह चार चार बूंद नाक के दोनो छिद्रों मे डालकर खूब जोर से सूंघ कर चढ़ा लिया जावे तथा १ तोला पी लिया जावे इससे नाक द्वारा पीलिया रोग का कुल पानी टपक

—शेषांश पृष्ठ ३४७ पर।

राजवैद्य श्री कल्याणसिंह वैद्य वि०

रणजीत आयुर्वेदिक औषधालय पो० सरीला (हमीरपुर)

"आप हिन्दी साहित्य सम्मेलन की वैद्य विशारद परीक्षा उत्तीर्ण हैं। आपका वैद्यक व्यवसाय वंश-परम्परागत है। चिकित्सा का कार्य आपके यहां आठ पीढ़ी से लगातार होरहा है। आपके पास आपके पूर्वजो के अनेक हस्त-लिखित ग्रन्थ तथा स्वय निर्मित रस भस्म आदि दो तीन सौ वर्ष पुराने रखे हैं जिनका प्रयोग आप अपने रोगियो पर रामवाणवत करते हैं और लाभ उठाते हैं। आप सरीला वैद्य सभा के सयोजक है। नीचे हैं आपके भेजे प्रयोग"— —सम्पादक।
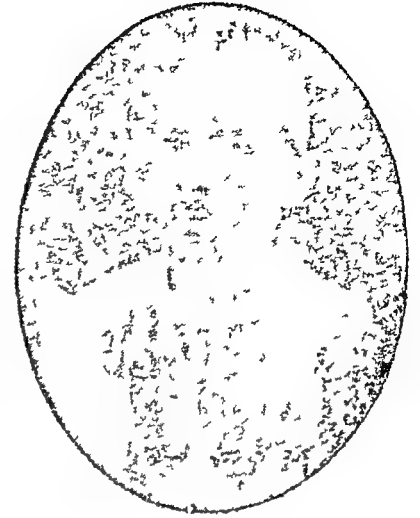
सुजाक पर तथा पेशाब की जलन पर—

भटकटाई की जड़	१ तोला
इलायची छोटी	१॥ माशा
कबाबचीनी	१॥ माशा
कलमी शोरा	१॥ माशा
काली मिर्च	६ रत्ती
शक्कर	१ तोला

विधि—यह एक मात्रा है। सब दवाओं को पीसकर पाव भर जल मे घोल छानकर पी लें। दिन में एक, दो व तीन मात्रा तक आवश्यकतानुसार दी जा सकती हैं।

गुण—यह प्रयोग मूत्रावरोध, सुजाक की तीव्र पीड़ा, पेशाब में जलन, पैत्तिक शोथ निवारक है।

बवासीर पर—

हुरहुरा की पत्ती (हुलहुल) छोटी दुधी
कुकरौंधा (गिंधला) चिरचिरा की पत्ती
बंगकटाई की पत्ती (पीतदुग्धा)
तुलसी की पत्ती चौलाई की पत्ती
वनगोभी की पत्ती —सब समान भाग
कालीमिर्च —एक द्रव्य से आधी

विधि—सब चीजें ताजी व हरी बराबर-बराबर लेकर खूब महीन पीस ली जावे और झरबेरी के बेर बराबर गोली बनाकर सुखा ली जावे।

गुण—प्रातः सायं पानी के साथ १-१ गोली खा ली जावे तो इसके कुछ दिन के प्रयोग से खूनी व बादी बवासीर अवश्य ठीक हो जाती है।

अपथ्य—तैल, मिर्च, गुड़ व बादी चीजो का सदैव परहेज बना रहे तो जीवन मे फिर बवासीर का कष्ट न होगा।

पाण्डुशोथ पर—

चिरायता		२ तोला
कुटकी		२ तोला
सतगुरच (गिलोय)	सौंठ	पिप्पली
हरड़	निशोथ	—प्रत्येक १-१ तोला
शक्कर		१० तोला

विधि—सबको कूट-कपड़छन कर चूर्ण बनाले। बाद में शक्कर मिलाकर ३ माशा की एक मात्रा सुबह शाम फाकें। बल तथा वय के अनुसार खुराक कम ज्यादा भी की जा सकती है।

गुण—इसके सेवन से पांडु व शोथ-पांडु अवश्य नष्ट हो जाता है।

अग्निमांद्य पर—

सोंठ यवक्षार

[—शेषांश पृष्ठ ३५१ पर।

वैद्यभूषण शशिकान्त मूलाभाई पण्ड्या

श्री नारायण आयुर्वेद चिकित्सालय, पांजारापोल, अहमदाबाद

"आपका जन्म संवत् १९६६ में हुआ, आपको सुप्रसिद्ध स्वर्गीय पं० नारायणशंकर देवशंकर जी का सहयोग प्राप्त हुआ और सन् १९३६ से पूर्व आयुर्वेद विद्यापीठ और बड़ौदा राज की आयुर्वेद परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। आप अहमदाबाद वैद्य सभा के मंत्री, अहमदाबाद आयुर्वेद सेवासंघ के प्रमुख, नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ के अहमदाबाद केन्द्राध्यक्ष तथा विद्यापीठ कार्यकारिणी के सदस्य रह चुके हैं। सम्प्रति महा गुजरात वैद्य मण्डल के प्रधान मंत्री हैं। आपके तीन सफल सिद्ध प्रयोग यहां प्रकाशित हैं।"

—सम्पादक।

कर्पूरवटी-

रस सिंदूर	१ तोला
नागरमोथा	२ तोला
काली मिर्च	३ तोला
पिप्पली (६४ पहरा)	४ तोला
लवङ्ग	१ तोला
बराराकपूर (भीमसैनी कपूर)	३ माशा

—सबको अच्छी तरह एक दिन खरल करके पान के रस की भावना दें और मटर के समान गोली बनावें।

कार्य—अतिसार, स्वप्नदोष और मंदाग्नि में अति लाभदायक है। खाने के बाद अफारा हो तो दो घण्टे बाद तीन गोली पानी के साथ लें। एक वर्ष तक सेवन करने से शरीर का वर्ण सुन्दर होता है।

चन्द्रोदय वटी—

पूर्ण चन्द्रोदय, वङ्ग भस्म, प्रवाल पिष्टी, मुक्ता पिष्टी, जायफल, जावित्री, लवंग, इलायची, तज

—प्रत्येक १-१ तोला

अम्बर	६ माशा
सुवर्ण वङ्गभस्म	३ माशा
सुण्ठि (सोंठ)	२ तोला

मरिच	४ तोला
पिप्पली	८ तोला

—सर्व औषधों को तीन दिन तक खरल करके पान के रस से तीन भावना दे और मटर के समान गोली बनाकर अच्छी तरह सुखालें।

गुण—बहुत दिन से गिरता हुआ कफ वाला रोगी इस औषधि को तब तक लें जब तक कि यह कुल औषधि समाप्त न हो जावे, तो सुन्दर कार्य करती है। दिन में ४ बार (प्रात: ८ बजे, दोपहर को भोजन के बाद, शाम को ४ बजे, तथा रात्रि को भोजन के बाद), गरम घी के साथ लें। रात को मीठा पदार्थ और दूध बन्द करना चाहिए। तदुपरान्त उपरोक्त रोग को तुरन्त ही लाभ पहुँचाती है। जिसका वीर्य शीघ्रपतन होता है, वह पान के साथ लें।

इन्फ्लूएञ्जा योग—

सारे भारत में इस वर्ष "इन्फ्लूएञ्जा" फैला। इस समय अपने औषधालय में मैंने जो योग रोगियों को दिया और जिससे ३६ घण्टे बाद सम्पूर्ण ज्वर नष्ट होगया वह अनुभूत प्रयोग यह है—

चन्द्रकला रस	६ रत्ती
शुद्ध स्फटिका	१॥ माशा
महासुदर्शनचूर्ण	३ माशा
शक्कर (चीनी)	६ माशा

—इन सर्व औषधों की चार पुड़िया बना के ठंडे जल से चार-चार घण्टे से दिया जावे। पीने के लिये केवल सादी चाय (Tea) ताप उतरने तक देनी चाहिये।

:: पृष्ठ ३५२ का शेषांश ::

फिटकरी अफीम १–१ माशा

—ग्वारपाठे के रस में उपरोक्त (हल्दी आदि का) काढ़ा मिलाकर फिटकरी अफीम मिलादे। दिन में ३-४ बार २-२ बूंद डाले। आंखें कितनी ही जोर से दु:खने क्यों न आई हों शीघ्र ही ठीक होती है। दर्द नहीं रहता है।

:: पृष्ठ ४४६ का शेषांश ::

विधि—बराबर-बराबर लेकर पीसकर कपड़छन करे और गौ के शुद्ध घी में दो आना भर की गोली बनाकर निगल जावें, भोजन के बाद। तो अग्निमांद्य, वायुशूल, आध्मान, गुल्म तथा पेट के वायु विकारों के लिए बहुत हितकर सिद्ध होता है।

पार्श्व पीडा—

विधि—*छोटी दुधी को जड़, पत्ता सहित उखाड़ कर स्थान पर फेरने से या बटकर (पीस) लगाने से पसली, कमर पीडा, वातपीड़ा तथा सिरपीड़ा के लिए महान् उपयोगी है। तत्काल बिजली के समान काम करती है।

*परिचय—छोटी दुधी देहातो में दीवालो की जडो के पास छिछली हुई, मैथी सरीखे पत्तो के समान गहरे हरे रङ्ग की होती है।

श्री राजेन्द्रकुमार 'कुमरेश' वैद्य

आयुर्वेदाचार्य
प्रधान वैद्य-श्री महावीर औषधालय, चन्देरी (म. प्र.)

"श्री कुमरेश जी योग्य चिकित्सक के साथ एक उच्चकोटि के साहित्यक एवं कवि हैं। आपकी कवितायें जब-तब धन्वतरि में भी छपती रहती हैं। आप वैद्य विशारद तथा आयुर्वेदाचार्य उपाधियो से अलंकृत हैं। न्यूमोनिया, मौक्तिक ज्वर, शीतपित्त, प्रदर आदि रोगो मे आपको विशेष अनुभव है। आपकी पुस्तकें दैनिक चर्या (आयुर्वेद) एव कायागीत, विवाह, जीवन साथी, विदा की वेला (कविता में) प्रकाशित हो चुकी हैं। खण्डकाव्य अंजना, सम्राट चन्द्रगुप्त अप्रकाशित ग्रन्थ हैं। आपका माधौगढ, करेरा और चन्देरी मे १४ वर्ष का कार्य काल है जहां आपने समुचित समादर प्राप्त किया है। आपके प्रेषित निम्न योग वडे सरल व अनुभूत हैं। पाठक इनसे लाभान्वित होगे ऐसी आशा है।" —सम्पादक।

बालको का डब्बा रोग—

वगनथू*	२ रत्ती
एलुआ	१ रत्ती

—दोनों को पानी मे घोट कर और गरम करके प्रात बालक को पिलाइए, उक्त रोग मे लाभप्रद है।

आमातिसार मे—

—सफेद राल को कूट-पीस-छान कर रख लीजिए। वालकों से लेकर बड़ो तक को अवस्थानुसार ४ रत्ती से ६ माशा तक बरावर मिश्री मिलाकर ताजे पानी या छाछ के साथ दीजए।

पथ्य में—खिचड़ी, छाछ, चावल व दही दीजिए। योग सुवह दोपहर शाम दिन मे ३ बार दें।

उदरशूल मे—

अजवायन सेधानमक
सोडावाई कार्व —यह तीनों समान भाग

—इन तीनो को कूट पीस छान कर रख लीजिए। प्रात दोपहर और सायंकाल १ माशा से लेकर ६ माशा तक अवस्थानुसार गरम जल से दीजिए अत्यन्त लाभप्रद है।

अजीर्ण पर—

सेंधानमक	६ माशा
नौसादर	१ तोला
सोंठ	३ माशा
कालीमिर्च	१ माशा
हींग	४ रत्ती

—उपरोक्त औषधियो को कूट छान कर रखले। आवश्यकतानुसार १ माशा से २ माशा तक गरमजल से प्रयोग करे, अच्छा लाभप्रद है।

नेत्राभिष्यन्द पर—

ग्वारपाठे का रस १ छटांक
हल्दी पठानीलोध नीम की पत्ती —यह ३-३ माशा

—१ पाव पानी में काढ़ा करे, शेष ५ तोला रहने पर छान ले।

—शेषांश पृष्ठ ३५१ पर।

---

*मध्यभारत मे इसी नाम से मिलने वाली एक औषधि है।

श्री शिवनरेश पाठक 'भिषक्' धर्मरत्न

शाहाबाद जिला बोर्ड एडेड डिस्पेंसरी, आथर (शाहाबाद)
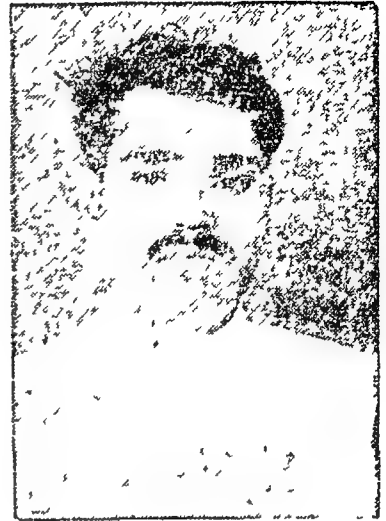
"आप गत १५ वर्षों से सफलतापूर्वक चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आपके अमर औषधालय को बिहार राज्य तथा शाहाबाद जिला बोर्ड से आर्थिक सहायता प्राप्त है। जिला वैद्य सम्मेलन के सदस्य हैं। अपने क्षेत्र के गण्यमान चिकित्सक हैं। आपकी चिकित्साशैली से सभी लोग सन्तुष्ट और प्रभावित हैं। आपको आयुर्वेद पर अत्यन्त श्रद्धा है, इसका कारण आप धन्वन्तरि की कृपा ही मानते हैं। यहा आपके तीन योग देरहे हैं, तीनो ही सरल, सफल और सुखद हैं।" —सम्पादक।

नेत्राभिष्यन्द पर—

खट्टे अनार की हरी पत्ती (अभाव मे मीठे अनार की भी ली जा सकती है)	१ भाग
बबूल की कोमल हरी पत्ती	१ भाग
लोध	¼ भाग
फिटकिरी	½ भाग

—लेकर सिल पर खूब बारीक पीसले। पिस जाने पर एक कटोरी मे रखकर आग पर गरम करले, इसके बाद साफ कपड़ा मे रखकर आंख पर रात मे भोजनोपरात शयन के समय गरम-गरम सुहाता-सुहाता रखकर पट्टी बाधे। लगातार तीन रात बांधने पर आंख की लाली, दर्द, सूजन, खुजली आदि सबको आराम हो जाता है।

मलेरिया पर—

इन्द्रजौ (तीता होना चाहिए)	१ तोला
फिटकिरी फूला (लावा)	१ तोला

—दोनों को खरल मे डालकर पान के पत्ते का रस, आक के पत्ते का रस समान भाग मे लेकर घोटे। खूब घुट जाने पर दो मटर बराबर की गोली बनाले। ज्वर आने के ३ घण्टे पूर्व आध-आध घण्टे पर १-१ गोली खिलाकर मिश्री का शर्बत, नीबू का रस मिलाया हुआ। आध-आध पाव की मात्रा मे गोली खाने के बाद पिलादे। ज्वर आने के समय तक देते रहे। पहले ही दिन ज्वर छूट जायगा। यदि ज्वर थोड़ा आभी जाय तो दवा बन्द करदी जाय। पुन दूसरे दिन दी जावे। ज्वर अवश्य छूट जायगा।

पथ्य—साबूदाना, गाय का दूध, मिश्री के साथ दिया जाय। ज्वर छूटने पर भी दवा देते रहना चाहिए ताकि ज्वर पुनः न आवे। यह औषधि अनेको रोगियो पर परीक्षित है।

आक की पत्ती का रस निकालने की विधि—आक के कोमल पत्ते को आग पर सेक ले, हाथ पर मसल कर कपड़े मे लेकर रस निचोड़ ले।

बच्चों की कुक्कुर खांसी (हुपिङ्गकफ) पर—

यह रोग बड़ा भयङ्कर तथा सक्रामक है, जिस ग्राम या मुहल्ला में होता है वहां के तमाम बच्चे जो १०-१२ वर्ष से कम के हैं इस रोग के शिकार बन जाते हैं। जिसको पकड़ता है १-१॥ मास तक परेशान करता है। जब खांसी आती है, जो कुछ बच्चा भोजन करता है, वमन कर देता है, तब ही

—शेषांश पृष्ठ ३५५ पर।
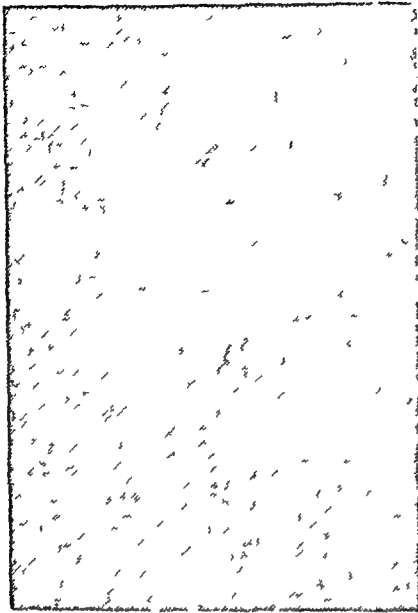
वैद्य दामोदरलाल शर्मा द्विवेदी

श्री बाठिया आयुर्वेदिक औषधालय भीनासर (बीकानेर)

"श्री द्विवेदी जी ने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आयुर्वेद की भिषक् परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके बाद आपने सिन्ध पाकिस्तान में चिकित्सा कार्य प्रारम्भ किया। भारत विभाजन के समय वहां का कार्य छोडकर सेठ सोहनलाल जी बाठिया धर्मार्थ औषधालय मे प्रधान चिकित्सक का पद सम्भाला। इसी पद पर गत १० वर्षो से सफलतापूर्वक जनता की सेवा कर रहे है। आपके चार सफल व प्रमाणित प्रयोग प्रकाशित कर रहे हैं।"

—सम्पादक।

देशी टिंचर—।

सौंठ	१ तोला
हीराबोल	२ तोला
आवा हल्दी	५ तोला
मैदा लकड़ी	५ तोला
उशारे रेवन	२॥ तोला
सज्जीक्षार	२॥ तोला
लोधपठानी	२॥ तोला
कपूर	२॥ तोला
फिटकरी	२ तोला
मैथेलेढेड स्प्रिट	१ बोतल

निर्माण विधि—कूटने की सब वस्तुओ को कूट-पीस कर मैथेलेडेस्प्रिट मे डाल कर ८ दिन धूप मे रखे और नित्य प्रति हिलाते रहे। बाद मे छान कर आघात (चोट) पर लगाने के काम मे लावे। यह प्रयोग मैने अपने औषधालय मे बनाया है और उपयोग मे अच्छा सिद्ध हुआ है।

सिंगरफ भस्म (पौष्टिक)

अशुद्ध सिंगरफ रूमी	१ तोला
भिलावा अशुद्ध	५ तोला
कुचला अशुद्ध	५ तोला

—प्रथम भिलावा और कुचला दोनो को आक के दूध ५ तोला मे पीस कर बीच मे सिंगरफ की डली रख कर गोला बनाले। फिर एक मिट्टी की हाडी लेवे उसमे १ सेर सैन्धव नमक बिछा कर उसके ऊपर उस गोले को रखदे और हांडी की संधि बन्द करके ७२ घंटे अग्नि दे। जिसमे पहिले दिन मध्यम अग्नि दे और दो दिन तीव्र अग्नि देवे। स्वाङ्ग शीतल होने पर उस सिंगरफ को चालीस दिन अनाज की बोरी मे बन्द करके रखे। बाद मे सर्दी की बीमारी तथा निर्बलता मे प्रयोग करे। परन्तु यह ध्यान रहे कि ४० वर्ष से कम आयु वाले को न दे।

मात्रा—एक चावल की मात्रा मे, घी के साथ और ऊपर से घी-दूध खूब खावे। यह प्रयोग खुली हवा मे न बनाकर बन्द मकान मे बनावे।

मौक्तिक रस—

मुक्ता सच्चे	२ तोला

सोना वर्क	१ तोला
शुद्ध सिंगरफ	३ तोला
शुद्ध शृंगी विष	४ तोला
छोटी पीपल	५ तोला

निर्माण विधि—सबको जम्बीरी नीम्बू के रस मे चार दिन खरल करके रखें।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक देवे।

अनुपान—सर्व प्रकार के ज्वर में शहद के साथ, प्रमेह में आंवले के मुरब्बे के साथ, तथा प्रदर मे केले की पकी फली के साथ ४० दिन लेवे तो पूर्ण लाभ होजायगा।

मन्थर ज्वर वटी—

मुक्ता वढ़िया	प्रवाल	३–३ माशा
याकूत		१॥ माशा
चांदी के वर्क		१॥ माशा

निर्माण विधि—गुलावजल में घोटकर हल्के सात पुट देवें। फिर वंशलोचन २ तोला, छोटी इलायची दाना १॥ तोला, मिश्री १ तोला मिला कर रखें।

मात्रा—३ रत्ती वड़े को और १ रत्ती छोटे को देवे।

गुण—मन्थर ज्वर में शीघ्र लाभदायक है।

:: पृष्ठ ६५३ का शेषांश ::

कुछ देर के लिए शान्ति मिलती है। आंखे सूज जाती हैं, वच्चे एक दम दुवले हो जाते हैं।

औषधि—

कतीरे की छाल (विना कांटे के वबूल की) आधा सेर लेकर ४ सेर पानी मे क्वाथ करे, चतुर्थांश शेप रहने पर पुराना गुड़ (जो कम से कम दो साल का हो) १ पाव कड़ाही में रख कर चूल्हे पर मन्द-मन्द आंच से पकावे, जव पकते-पकते सीरप की अवस्था मे आजावे (जो वाजार मे अंग्रेजी दुकानों पर सीरप के नाम से दवा विकती है वैसी जव हो जाय) तो उतार कर शीशी मे वन्द करदे। ६-६ माशे की मात्रा सुवह शाम पिलावे। दस पन्द्रह दिन में कुकर खांसी छूट जायेगी। यह दवा हमारे "अमर औषधालय" मे "अमर सीरप" के नाम से विकती है।

[पृष्ठ ३५७ का शेषांश]

काली मिर्च	¼ तोला

—यह एक मात्रा है। इसी प्रकार की मात्रा प्रातः सायं ७ दिन दूध की लस्सी के साथ सेवन करने से नवीन सुजाक (उष्णवात) मे शीघ्र लाभ होता है।

श्वास नाशक—

यव का वस्त्रपूत किया हुआ आटा

—दो छटांक आटा लेकर आक के दुग्ध से सानकर ४-६ टिकिया वनाले। सूख जाने पर १ पाव गोघृत मे टिकियों को अग्नि पर कढ़ाई में डाल कर सेके। जव टिकिया अन्दर व वाहर से काजलवत-कोयलो के समान हो जायें तव चूल्हे से कढ़ाई को उतार कर टिकियों को निकालकर खरल कर महीन चूर्ण करले और शीशी मे रख लेवे। वचे हुए घृत को भी एक शीशी मे सुरक्षित रख ले।

मात्रा—जो टिकियों की काली भस्म है उसमें से श्वास रोगी को २-२ रत्ती भस्म शहद या मक्खन में मिलाकर प्रातः सायं चटाने से, तथा जो घृत दूसरी शीशी मे रखा है उसमें से छाती पर मालिश करने से श्वास रोग मे आराम होता है। नियम से ४० दिन पथ्य के साथ सेवन करना चाहिए।

प्रवाहिका नाशक—

वीदाना		१ माशे
रेशाखतमी	गांजवा	२–२ माशे
शर्वत अनार		१ तोला
अर्क सौंफ	अर्क मकोय	५–५ तोला

—गाजवां तक की औषधियों को यवकुट करके दोनों अर्कों मे भिगो दें। १ घंटे पश्चात् मल-छान कर शर्वत अनार मिलाकर प्रवाहिका रोगी को पिलादे। यह १ मात्रा है, इस प्रकार से ३-४ मात्राये दिन भर मे पिलाने से लाल आंव के दस्तों को वन्द करने मे अपूर्व लाभकारी सिद्ध हुआ है।
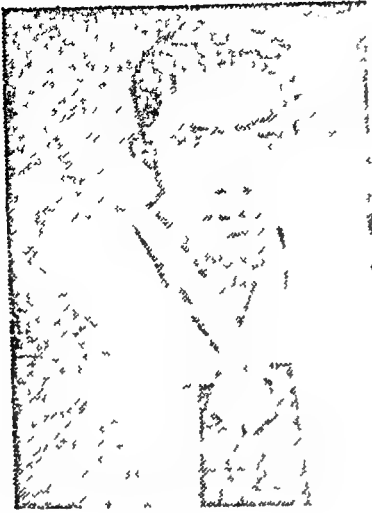
कविराज श्रीकृष्ण त्रिवेदी

आयुर्वेदाचार्य

संजीवन औषधालय, मानकपुरा, देहली।

"श्री कविराज महोदय उत्साही एवं योग्य नवयुवक है। आपका जन्म सन् १६०६ में राजवैद्य कविराज धनराम जी त्रिवेदी के यहां हुआ। आप सनातनधर्म प्रेमगिरि आयुर्वेद कालेज (लाहौर) देहली के वाइस प्रिंसीपल रह चुके हैं। भारतीय जनस्वास्थ्य रक्षक-संघ के अध्यक्ष हैं। आपके निम्न तीन प्रयोग सरल और उत्तम प्रतीत होते हैं, पाठक परीक्षा करें और लाभ उठावें।" —सम्पादक।

नेत्र रोग नाशक—।

प्रयोग—एक छटांक छोटी हरड़ को लेकर कूट-पीस कर कपड़छन कर लें तथा फिर उसमे सत्यानाशी के रस को डाल-डाल कर खरल करते रहे। यहा तक कि सत्यानाशी का तीन पाव रस उसमें शोषित हो जावे, तैयार होने पर मटर के समान गोली बनाकर, धूप मे सुखा ले।

यह गोली नेत्र रोगों के लिए रामवाण है। तथा हमारे यहा का खानदानी योग है। जिसे मै भी दस वर्ष से प्रयोग मे ला रहा हूँ।

प्रयोग विधि–किसी साफ पत्थर पर एक बूंद पानी डालकर थोड़ी सी गोली घिसे तथा सलाई पर लगा नेत्रों मे आंज दे। इसके प्रयोग से अनेक नेत्र रोग अल्प काल मे ही दूर हो जाते हैं। जैसे रोहे, परवाल, नाखूना, जाला, फूला तथा मोतियाविन्द, दृष्टि का मन्द होना, नेत्रो मे लालिमा रहना, शिर व नेत्रो मे दर्द होना, कड़क खाज, जख्म, जलन, पानी ढरना इत्यादि रोगों को कुछ ही दिनो मे दूर कर देती है।

वातविलास तैल—

कटेली का रस	१ सेर
तिल तैल	१ सेर

—दोनो को लोहे की कढाही मे डाल मन्द-मन्द आग पर पकावें, जब तैल मात्र रह जावे तो छानकर रखे, इस तैल के मलने से वातजनित शूल दूर होते हैं। तथा शोथ भी दूर होती है।

रक्तप्रदर—

—पुराने जूतो के चमडे का तला पानी से अच्छी तरह धोकर सुखा ले फिर आग पर रख जला ले और इसको बारीक पीसले।

मात्रा–३ माशे से ६ माशे तक ताजे जल से।

गुण–कैसा भी रक्तप्रदर हो तीन चार दिन के प्रयोग से दूर हो जाता है। दिन मे तीन मात्रा देनी चाहिए, पथ्य निर्देशानुसार दे।

वैद्यराज चन्द्रभानसिंह वैद्य शास्त्री

श्री पुनीत आयुर्वेदिक भवन ग्राम पो० सुजर्मा, मुरैना (म. प्र)

"आपके यहां पीढी दर पीढी से आयुर्वेद का कार्य चला आ रहा है। आपके स्वर्गीय पिता जी आयुर्वेदिक तथा नाडी ज्ञान के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध थे। आपने पं प्रयाग नारायण जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य मण्ठल मुरैना से, जो आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली के अनुभवी व विद्वान ज्ञाता एव ख्यातिप्राप्त वद्य हैं, क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त कर विद्यापीठ से परीक्षा उत्तीर्ण की। १५ वर्ष से स्वतन्त्र वैद्यक व्यवसाय कर रहे हैं। जनता की सेवा भावना, उदारता एव सफल चिकित्सा के कारण दूर तक ख्याति है। चिकित्सा कौशल पर मुग्द होकर मण्डल के प्रतिष्ठित पदाधिकारियो तथा अन्य महानुभावो ने कई प्रशसा-पत्र प्रदान कर आपको सम्मानित किया है।" —सम्पादक।

अद्भुत सिंदूर—

हिंगुल की डली १ तोला

—लेकर उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर ले और एक कटोरे मे रखकर ऊपर से बकरे का पित्ता डाल कर कोयलो की तीव्र अग्नि पर रख दें और अग्नि को काफी तेज करे। जब जलते-जलते हिंगुल की डली शेष रह जाय तब ठंडा होने पर हाथ से दवा देने से चावल के सदृश्य काले काले दाने खिल पड़ेंगे, बस यही अद्भुत सिंदूर है।

गुण—शीतवेग, पसीना आना, दिल (Heart) की तथा नाड़ी की गति शिथिल होने पर १-२ चावल ६ माशे अदरख रस के साथ ३-३ घण्टे से देने से शीतवेग पर अच्छा कार्य करता है।

गर्भस्राव नाशक—

मिश्री नागकेशर
पद्माख सफेद चन्दन का बुरादा

—समान भाग

—सब ६ माशे ताजे पानी से पीसकर दूध के साथ केवल प्रात काल पिलाना चाहिए।

गुण—इसके सेवन से निःसन्देह गर्भस्राव रुक जाता है। प्रयोग को ३ महीने से आरम्भ करना चाहिए और प्रति मास ८ दिन पिलाना चाहिए।

सुजाक नाशक—

हरड़ बहेड़ा आंवला
सोंठ काली मिर्च

—प्रत्येक १-१ तोला

—सबको कूटपीस वस्त्रपूत चूर्ण कर २० पुड़ियां बनाले। शाम को १ पुड़िया दवा कोरी हांडी में ३ छटांक पानी डालकर रख दे। सुबह मल छान कर पिला दे।

गुण—इसके २० दिन सेवन करने से जीर्ण सुजाक (उष्णवात) की कड़क, जलन, घाव, पीव आदि उपद्रवों मे अच्छा कार्य करता है। रोग के लौट आने की शङ्का बहुत कम रहती है।

नवीन सुजाक के लिए—

चमेली के पत्ते २ तोला
मिश्री ५ तोला

—शेषांश पृष्ठ ३५५ पर।
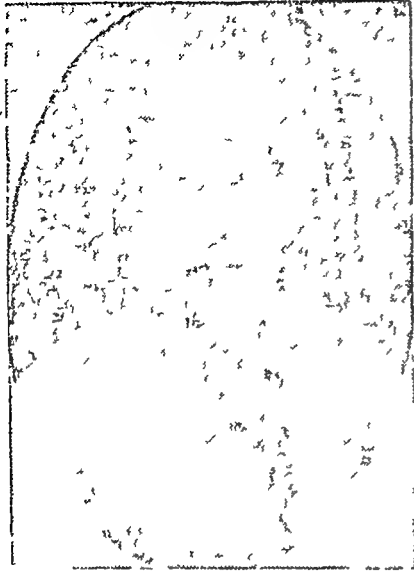
भिषग्भूषण पं० रामस्वरूप शर्मा

वैद्यशास्त्री

सलेमपुर स्वरूप आयुर्वेदिक फार्मेसी, अछल्दा (इटावा)

"श्री शास्त्री जी के पिता श्री वैद्य पं कन्हैयालाल जी त्रिपाठी एक योग्य एव प्रसिद्ध आयुर्वेद चिकित्सक थे। आपने उनसे ही आयुर्वेद का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त किया तथा उनके अनुभवो को प्राप्त कर अपने चिकित्सा कार्य मे सफलता प्राप्त कर रहे हैं। आपकी आयु ३६ वर्ष है। आपके तीन सफलसिद्ध प्रयोग यहा प्रकाशित किये जारहे हैं।"

—सम्पादक।

श्वेत कुष्ठ पर—

वाकुची (बावची)	१६ तोला
मैनसिल	२ तोला
चीते की जड़ की छाल	४ तोला
हरताल तवकी	४ तोला
सफेद घुंघची	४ तोला
घमिरा	२ तोला

विधि—सबको बारीक करके गोमूत्र में ४८ घण्टे घोटना चाहिए। इसे सफेद दागो पर लगाना। लगाने से पहिले दागो को कंडे से रगड़ लेना चाहिए।

आर्तव प्रवर्त्तक—

मुसव्वर	१ तोला
हीरा कसीस	१ तोला
अफीम	१ तोला
दालचीनी	१ तोला

विधि—सब औषधियो को लेकर हुलहुल के पत्तो के रस मे घोट कर २-२ रत्ती की गोली बनाले।

मात्रा—एक से २ गोली तक।

समय—प्रातः सायं एव रात्रि को सोते समय।

अनुपान—गरम जल या चाय।

गुण—इसके सेवन से रुका हुआ कष्टप्रद रज जारी होकर नियमानुसार होने लगता है।

कुकुंमादि वटी—

केशर		६ माशा
अतीस	लौंग	काकड़ासिंगी
जायफल	जावित्री	मोचरस

—यह सब ३-३ माशा

नागरमोथा	६ माशा

विधि—सब चीजे बारीक पीसकर पान के रस मे घोट कर मूंग के समान गोलियां बनाले।

मात्रा—एक गोली से दो गोली तक अवस्थानुसार।

समय—प्रात', सायं एवं आवश्यकतानुसार।

अनुपान—शहद या मां के दूध मे।

गुण—बच्चो को सर्दी विकार, खांसी, कफ, श्वास, पसली चलना, दूध डालना, पक्वातिसार, दस्त आदि मे लाभ करती है।

राजवैद्य लाला नन्दकिशोर प्रसाद

मुहल्ला चुनाखारि, बाढ़ (पटना)

"श्री राजवैद्य जी ने आयुर्वेद की शिक्षा स्वर्गीय आनन्द राम जी परमहंस से सन् १६२४ मे प्राप्त की। आपकी आयु ५६ वर्ष है तथा आप अनुभवी सफल चिकित्सक हैं। आपके पूर्वजो की एक हस्तलिखित प्राचीन पुस्तक है जिसमें सरल प्रयोगो का उत्तम संग्रह है जिससे आपको चिकित्सा मे वडी सहायता एव सफलता मिलती है। उसी पुस्तक से स्वपरीक्षित कुछ प्रयोग यहा प्रकाशित हैं। आप राष्ट्रीय विचारधारा के सक्रिय कार्यकर्ता रहे हैं। इस समय भी आप नगर कांग्रेस कमेटी के प्रधान तथा जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य हैं। उपदंश-रोग निबंध पर आपको प्रांतीय वैद्य सम्मेलन से प्रसंशापत्र प्राप्त हुआ है। आशा है आपके अनुभव से पाठक लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।
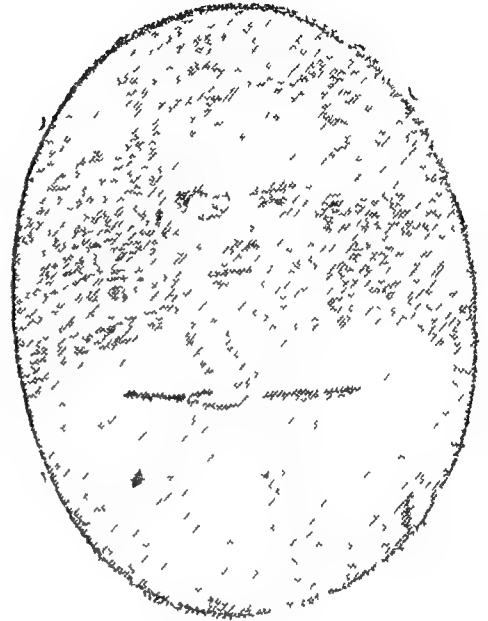
उपदंश—

इस रोग में प्रथम मूत्र साफ करलें, योग निम्न प्रकार है—

रेवनचीनी, कलमी शोरा, वड़ी इलायची गाय के दूध के साथ पीने से मूत्रस्राव होकर इन्द्री साफ हो जाती है। तत्पश्चात् नीचे लिखी औषधि लगावें।

प्रयोग —

१—तूतिया	४ माशा
हरताल	४ माशा
फिटकिरी	३ माशा
वेर की लकड़ी का कोयला	१॥ माशा

—सबको खूब खरल करके किसी शीशी मे रखे। उपदंश व्रण को नीम क्वाथ से धोकर पोछकर यह दवा लगावे।

२—बकायन पत्ती	१ तोला
बकरी का यकृत (छाग कलेजा)	१ तोला

—दोनो को खरल मे पीस कर एक रस करके झरवेरी के बराबर गोली बनावे। १-१ गोली नित्य प्रातः सायं सेवन करें।

३—त्रिफला के काढ़े से नित्य धोना चाहिये।

४—सुपारी पानी से घिसकर उपदंश पर लगावे।

पथ्य—गाय का गरम दूध, मुनक्का डालकर औटाया हुआ रात को सोते समय मिश्री युक्त सेवन करे। मल साफ होने मे दिक्कत हो तो कुटकी, अमलतास का गूदा, सनाय भी दूध मे डाल दे।

अपथ्य—लाल मिर्च, खटाई, कड़ुआ तैल तथा उष्ण पदार्थ का सेवन न करे।

आमातिसार—

प्रथम रोगी को पाचक औषधि लवण भास्कर

आदि द्वारा शुद्ध करले, तत्पश्चात् नीचे लिखी औषधि सेवन करावे।

१—जामुन की छाल सुखाकर कपड़छान करले ३ माशा की मात्रा में फंका कर शीघ्र गाय का दूध पीने को ले, विलम्ब कदापि न करे। तीन दिन के सेवन से लाभ होगा।

२—भंगरा का रस — १ तोला
गोल मिर्च — १ तोला
केला के भीतर की पत्ती — २ तोला

—तीनो को खरल करके सात गोली बनावे। प्रात. नित्य १ गोली सेवन करे। गोली झरबेरी के बराबर बनावे।

३—स्याह मूसली ६ माशा नारङ्गी के रस से पीस कर प्रातः सेवन करे।

४—धनिया, सोंठ, बेलगिरि, नागरमोथा, नेत्र-वाला बराबर लेकर काढ़ा बनाकर ७ दिन पीये।

५—छोटी हरड़, अतीस, हींग शोधित, सेधा नमक बराबर महीन पीसकर ८ माशा की मात्रा मे गरम जल से लें, तो आमातिसार जायेगा।

अपरस—

हाथ की हथेली के रक्त में उष्णता आ जाने से रूखाई आकर हथेली का फटासा रहना, हथेली मे खाज होना, यह क्षुद्र कुष्ठ का ही एक रूप है। जिसको हमारे यहां जन समाज मे अपरस कहा करते हैं। उसमें—

१—भेड़ी का दूध, बड़ी हरड़ ६ माशा, कपूर ८॥ तोला ले। दूध मे पीस कर हल करें और अपरस में लगावें।

२—तीसी (अलसी) का तैल १ पाव, कुचला ३ माशा, तूतिया ६ माशा—दोनों को लेकर पीस कर तैल में पकावें, प्रातः सायं अपरस में लगावे।

३—बाकुची चूर्ण, अदरख रस में मिलाकर हथेली पर मले।

४—अमचूर, सेधा नमक, तांबे के पात्र मे घोटकर लेप करने से लाभ होता है।

ओरिएण्टल बाम

आज हमारे देश मे अनेक नामो के बाम बिकते हैं और उनसे तत्काल कुछ न कुछ तो लाभ होता ही है। भारत मे सर्व प्रथम मि. लिटिल का लिटिल्स ओरिएण्टल बाम चला, इसके पश्चात् उसी का अनुकरण अमृताञ्जन डीपो इत्यादि कम्पनियो किया, फिर तो न जाने कितने बाम इस समय चल रहे हैं। इसमे प्राय. निम्नलिखित वस्तुओ का मिश्रण है—

पिपरमेंट	१ तोला
कपूर	३ माशा
दालचीनी का तैल	३ माशा
इलायची का तैल	१॥ माशा
लौंग का तैल	१॥ माशा

विधि—पहले दोनो सूखी औषधियों को खरल में डालकर खूब घोटे, बाद मे उसमे १५ तोला वैसलीन मिलाकर खरल करे और उसके बाद तैल तीनो ही मिलाकर मर्दन कर एक जीव होने पर शीशीयो में भर रखें।

यह पेन बाम अचूक गुणकारी होगा। शिर मे लगाने से शिर दर्द, छाती मे लगाने से पार्श्वशूल, कफ आदि को लाभ करता है। विषैले जन्तु, बिच्छु, बर्र आदि के काटने मे लाभ देता है।

दाढ़ के दर्द में रूई से लगाकर मुख मे रखना चाहिए। शरीर के प्रत्येक भाग का दर्द इससे ठीक होता है।

श्री पं० बुद्धिनारायण झा आयुर्वेदाचार्य

श्री नारायण आयुर्वेदिक फार्मेसी चम्पापुर पो० बखरी, जि० चम्पारन।

"आप सौम्य प्रकृति के कर्मशील चिकित्सक हैं, शुद्धायुर्वेद के परम भक्त व सेवी हैं। आपके पिता भी उच्चकोटि के एक मेधावी वैद्य थे। आपने संस्कृत अध्ययन के साथ आयुर्वेद का अध्ययन किया, बाद मे आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की अपने पिता जी का जो उस समय छोटा औषधालय था बढा कर बडा रूप दिया। सम्प्रति आपने एक विद्यालय एवं उसके साथ धर्नार्थ चिकित्सालय भी खोल रखा है। आपके परिवार में कई योग्य और सफल आयुर्वेदिक चिकित्सक हो गए है। आपने ४ प्रयोग धन्वन्तरि मे प्रकाशनार्थ भेजे हैं जो सफल प्रतीत होते हैं।" —सम्पादक।

प्लीहा संहार लेप—

तीसी (अलसी)	१ पाव
मेथी	१ पाव
ईसबगोल	आधा पाव
काले तिल का तैल	डेढ़ पाव
मोम	एक पाव
मुर्दाशङ्ख	२ तोला

निर्माण विधि—रात को मेथी, तीसी और ईसबगोल को चौगुने पानी में भिगोदें। सवेरे पानी छान कर लुआब निकाल ले। एक कढ़ाही मे तिल का तैल डालकर उसमें मुर्दाशङ्ख डालकर चूल्हे पर चढ़ा कर नीचे से आग लगावे। जब मुर्दाशङ्ख जल जाय तो उसी मे थोड़ा-थोड़ा उपयुक्त लुआब डालते जाय और नीम के डंडे से चलाते रहे। जब सब लुआब मिलकर गोली-सा सिमटने लगे तब उसमें मोम डालदे। जब मोम पिघल कर अच्छी तरह मिल जाय तो उतार कर किसी मिट्टी के वर्तन में रख ले।

प्रयोग—चार अंगुल सफेद कपड़े को दो तह करके उसी पर लेप लगाकर प्लीहा की जगह पर पट्टी लगाकर बांध दे। तीन दिन मे पट्टी बदल कर दूसरी पट्टी बांध दे। दो चार पट्टी के प्रयोग से ही प्लीहा गल जाती है।

वातसंहार तैल—

कडुआ (सरसो का) तैल	२ सेर
कुचला	१ पाव
छोटी तम्बाखू	२ छटाक
सोठ	१ छटाक
दालचीनी	२ छटाक
लहशुन	१ छटाक
सेन्धानमक	१ छटांक
हींग	१ छटांक
गेरू	१ छटाक
कपूर	२ तोला

निर्माण विधि—उपर्युक्त दवाओं को यवकुट कर कडआ तैल मे डाल कर आग पर चढाकर तैल सिद्ध करले और छान कर बोतल मे रख ले।

प्रयोग—सभी प्रकार के दर्दों में तैल को गरम कर पीड़ा स्थान पर अच्छी तरह से मालिश करें।

शुक्रमेह पर—

सिद्ध पूर्ण चन्द्रोदय रस मकरध्वज
स्वर्ण भस्म —प्रत्येक १-१ माशा
स्वर्णवङ्ग वङ्गभस्म नं० १
फौलाद भस्म कृष्ण अभ्रक भस्म शतपुटी
नागभस्म शगरफ भस्म
कस्तूरी केशर रससिंदूर
—प्रत्येक २-२ माशा
भीमसेनी कपूर १॥ माशा

निर्माण विधि—प्रथम सिद्ध पूर्णचन्द्रोदय रस, मकरध्वज, कस्तूरी, केशर, रससिंदूर और भीमसेनी कपूर को खरल मे अच्छी तरह घोट कर अन्य भस्मों के साथ मिलाकर खरल करें तत्पश्चात् १-१ दिन क्रमश. भाग और मुलेठी के रस या क्वाथ की भावना देकर एक रत्ती प्रमाण गोली बनालें।

अनुपान—प्रात' सायं १-१ गोली गौ के धारोष्ण दूध के साथ।

गुण—शुक्रमेह के साथ-साथ शारीरिक सभी तरह की दुर्बलता एवं सप्तधातु के विकारों को दूर कर वीर्य को गाढ़ा करता, स्तम्भन शक्ति की वृद्धि एवं सन्तानोत्पत्ति करता है।

ऋतुशूल में—

शुद्ध एलुआ शुद्ध कासीस
भूनी हींग शुद्ध सुहागा
रेवतचीनी जवाखार
ब्रह्मदंडी दन्तीमूल कटकारी
—ये नौ चीजे समान भाग

निर्माण विधि—उपर्युक्त दवाओं को कूट कपड़छान कर पानी के साथ खरल कर ३-४ रत्ती की गोली बनालें।

अनुपान—सायं प्रात. १ १ गोली गाजर बीज के क्वाथ के साथ।

गुण—ऋतु सम्बन्धी सारी शिकायतें दूर होती हैं जैसे कष्ट के साथ आर्तव का आना, अनियमित आर्तव स्राव, आर्तव के रङ्गों का बदलना इत्यादि आर्तव सम्बन्धी सभी रोग दूर होते है।

विचारिये

शान्त हृदय से विचारिए कि धन्वन्तरि मासिक पत्र कितने अल्प मूल्य मे कितना विशाल साहित्य, भारत के प्रतिष्ठित चिकित्सको के अनुभव आदि ग्राहकों को देता है? इसके प्रकाशन मे कितना अधिक व्यय किया जाता है? इसके प्रति आपका क्या कर्त्तव्य है? यदि आप अपने हृदय मे इन प्रश्नो पर विचार करेंगे तो निश्चय ही आपके मन मे यह भावना उत्पन्न होगी कि आपको इस पत्र के २-४ नवीन ग्राहक बनाने चाहिए। अपने मन की इस पुकार को कार्य रूप दीजिये।

वैद्य श्री प्रदीप नारायण यादव आयुर्वेद रत्न, विशारद

विहार आयुर्वेदिक फार्मेसी,-कुजापी (गया)

"श्री यादव जी के योग जब–तब धन्वन्तरि मे प्रकाशित होते रहे हैं। आपने स्वर्गीय पं. सोमेश्वर जी मिश्र वैद्यराज से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की हे। आप एक योग चिकित्सक हैं और योगों पर अपने क्रियात्मक अनुभव करते रहते हैं। निम्न योग आपके इस प्रकार के अनुभव की देन है। आप एक उत्साही और सफल चिकित्सक तथा आयुर्वेद के सच्चे सेवक हैं। विशूचिका (हैजा) पर आपकी लवणजल चिकित्सा सफल हुई है जिसे आप खूब बरतते है। आपके निम्नलिखित योग गुणदायक प्रतीत होते हैं, आशा है पाठक लाभ उठायेंगे।"

—सम्पादक।

गन्धकाम्लीय योग नं० १—

गन्धकाम्ल	१२० बूंद
सोडावाई कार्ब	१ ड्राम

गन्धकाम्लीय योग नं० २—

गन्धकाम्ल	६० बूंद
सोडावाइकार्ब	½ ड्राम
ग्लूकोज	१ ड्राम

विधि—गन्धकाम्ल (सल्फ्यूरिक एसिड) जो बाजार मे मिलता है, उसे एक औंस १ पौंड की शीशी मे डाल दीजिए। इसमे परिश्रुत जल ६ औंस धीरे-धीरे मिलाइये। बोतल गरम हो जायगी। फिर कार्क लगाकर रख दीजिये। अब गन्ध-काम्लीय योग बनाने के लिये औषधि तैयार है।

इसी जल को मिश्रित गन्धकाम्ल मे से १२० बूंद मिनीमम ग्लास से नाप कर मेजर ग्लास मे डालिये। १ औंस पानी मिला दीजिये और सोडा-वाईकार्ब डालिये। झाग उठेगा और शान्त हो जायगा। उसे दो औंस की शीशी में डालकर यथेष्ठ पानी मिलाइये। ८ मात्रा कागज काटकर लगा दीजिये तथा अपना लेबिल लगा दीजिये।

यह योग अत्यन्त सस्ता है, लेकिन झाग बहुत देता है। पेट की पीड़ा मे यदि वह अपचन से हुआ हो, बहुत बेचैनी हो तो १-१ घण्टे पर १-१ मात्रा पिलाइये, थोड़ा पानी के साथ। ज्वर की प्रथमा-वस्था मे पाचन के लिए ३-३ घण्टे पर दीजिये। अतिसार मे भी लाभदायक है। यकृत वृद्धि, प्लीहा-वृद्धि या आंत्र मे कहीं शोथ हो तो भी लाभ करता है।

गन्धकाम्लीय योग नं० २

बच्चों के लिए लाभदायक है तथा गर्भावस्था की वमन मे इसे अवश्य प्रयोग मे लाना चाहिए।

इसका प्रयोग प्रत्येक आयुर्वेदिक दवाखाने मे होना चाहिए। कारण औषधि अत्यन्त सस्ती तथा काम बहुत देती है।

गर्मी के दिनों मे इसे ग्लूकोज के साथ बनाकर ज्वर अतिसार रोगी को सर्वदा देनी चाहिए। इससे

आमाशय की उष्णता शांत होकर पाचन हो जाता है तथा बहुत स्वादिष्ट पेय है।

लू लगने पर इसे पर्याप्त ग्लूकोज में बनाकर १-१ घण्टे पर पिलाइये। शीघ्र ही शांति लाता है।

दुग्धवारि आसव—

हलवाई लोग दूध को फाड़कर छेना बनाने के लिए पानी को फेंक देते हैं। इस दुग्धवारि को १० सेर लीजिए। इसे खूब मथें जिससे घृत की मात्रा निकल जावे। यदि घृत की मात्रा रह गई हो तो सन्धान नहीं होगा। इसे शीशे के बर्तन में डालिए। इसमें चीनी ढाई सेर डालकर मिला दीजिए। फिर निम्नलिखित दवाइयां उसमें प्रक्षेप के रूप में डालें।

तेजपात	२ तोला
जीरा	२ तोला
स्याह जीरा	२ तोला
नागकेशर	२ तोला
इलायची छोटी	धनियां
पीपल कालीमिर्च	—प्रत्येक ५-५ तोला

—सन्धान करे। फिर छान ले और उसमें २ तोले बढ़िया काश्मीरी केशर महीन खरल कर कपड़छानकर मिला दे। बड़ा स्वादिष्ट सुन्दर पेय तैयार होगा। यह औषधि अतिसार के लिए तो उत्तम है ही साथ ही ज्वरादि रोगों की दुर्बलावस्था में पोषण का काम करती है। हम इसे म्यादि ज्वरों में सर्वदा पेय के रूप में देते हैं इससे रोगी दुर्बल नहीं होता। निरोगी को भी इसे भोजन के बाद अरिष्ट के समान थोड़ा नमक मिलाकर देना चाहिए। वैद्यसमाज को दुग्धवारि आसव से लाभ उठाना चाहिए। मैं प्रयोग कर रहा हूँ और अन्यों को सर्वदा इसके प्रयोग के लिए परामर्श देता हूँ।

'दुग्धवारि आसव' मृदु आसव है। चीनी डालने के बाद सन्धान आरम्भ हो जाता है। गर्मी के दिनों में तो शीघ्र बन जाता है। परन्तु वर्षा काल में कभी-कभी गड़बड़ हो जाती है। खमीर उठने के बाद जब साफ हो जाता है तब इसे छान कर बोतलों में रख लिया जाता है। बेस्वाद नहीं होता। बड़ा स्वादिष्ट लगता है। भात के साथ खाने पर रुचि पैदा कर देता है। नमक मिलाकर पीने में बड़ा स्वादिष्ट लगता है। भास्कर लवण देने पर तो कहना ही क्या है।

कासाशनि—

(१)	कटकारी का पचांग	१ सेर
	पियावांसा	१ सेर
	पानी	८ सेर
	अवशेष	२ सेर
	चीनी	२ सेर
(२)	गुलबनफशा	गुलेगांवजुवा
	मुलेठी	दाख
		—प्रत्येक २०-२० तोला

—इसे ४ सेर पानी में रात भर भिगो दे, और क्वाथ करे। शेष १ सेर रहे।

—अब नं० १ के दो सेर क्वाथ और नं० २ के १ सेर क्वाथ को एक कढ़ाही में मिलाकर लेह बनावे। मधु के समान गाढ़ा होने पर उतार लो, इसमें सौभाग्य भस्म ५ तोला और सोडाबाईकार्ब ५ तोला मिलालें गरम रहने पर झाग उठेगा। फिर इसे शांत होने पर हाथ से मिला दे। तब पौंड या बोतल में भर ले। कपूर, अजवायन, और सत्व पिपरमेंट का मिश्रित घोल में से २०-२० बूंद एक पौंड की बोतल में डाल दे जिसमें मधु के समान बना हुआ लेह तैयार है। कार्क लगा दीजिए। यह बहुत सुन्दर लेह ऐलोपैथी के कफसीरप के समान है। इसे एक एक या दो-दो चम्मच पानी के साथ कफ के रोगों में प्रयोग कीजिये।

डा० श्री पुष्पेन्द्र जाला 'पथिक' वैद्य विशारद

प्रभाकर, साहित्य विशारद, साहित्यालंकार मु० पो० देवली (जोधपुर) राजस्थान।

"श्री जाला जी ने अशिक्षित परिवार मे जन्म लेकर अपने अध्यवसाय से हिन्दी साहित्य, वैदिक, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक आदि की बहुत सी उपाधिया प्राप्त की हैं। आप राष्ट्रभाषा वर्धा परीक्षाओ के प्रामाणिक प्रचारक व परीक्षक हैं। राजस्थानी लोक गीतो के सग्रहकार रूप मे कई पुस्तकें आपने प्रकाशित कराई हैं जिनका अच्छा प्रचार है। आप मारवाड के ही नही राजस्थान के अच्छे पत्रकार, कवि व पुराने जन-सेवी कार्यकर्त्ता हैं। यहा आपके पांच अनुभूत प्रयोग प्रेषित कर रहे है।"

— सम्पादक।

गठिया रोग पर—

इस रोग मे शरीर के प्रत्येक जोड मे भारी दर्द होने लगता है। यही नहीं इससे हाथ-पैर आदि जुड़ भी जाया करते है जिससे इधर-उधर हिलने डुलने में भी असह्य वेदना बढ़ जाती है। यहा तक कि हाथ पैर को तिल भर भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर उठा कर रखना असम्भव होजाता है। तव लोग असली रोग को भूल कर डांकनी-शांकनी व वायासा आदि के थान पर सिर पटकते फिरते हैं। मगर वहां रोग बढ़ने के सिवाय और कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता है। ऐसे रोग की परीक्षित दवा नीचे लिखी जाती है—

—असगन्ध दो तोले लेकर, उसको कूट कपड़छान करके उसकी बराबर २ तीन पुड़ियां बनाले। फिर गुड़ के नर्म हलवे मे एक पुड़िया मिला कर सेवन करे।

पथ्य—केवल दाल रोटी ही सेवन करे। तीसरे ही दिन रोगी खेलता हुआ नजर आता है।

नोट—रोगी की आयु व रुचि के अनुसार असगन्ध की तीन से सात पुडिया तक भी की जा सकती हैं।

वीर्यपुष्टि के लिए—

—चामकस (वाफली) को लाकर सुखालो, फिर उसको कूट-छान कर ६-६ माशे की १४ पुड़िया बनालो। फिर एक-एक पुड़िया प्रात. सायं गाय के दूध के साथ सेवन करावे। केवल सात ही दिन में रोगी के शरीर मे बिजली सा प्रकाश अनुभव होगा। दवा परीक्षित है। यहा तक कि संतान हीनो के भी मुरझाए मुंह खिलने हुए देखे गए है।

पथ्य—दवा के सेवन समय तक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करे व तैल गुड़, खटाई का पूर्ण परहेज रक्खे।

नोट—चामकस का चूर्ण दूध मे घोलते ही पी लेना चाहिए, अन्यथा उसके ताते वधने की सी

हालत हो जाती है और फिर उसका पीना असम्भव हो जाता है।

कफ का गलना—

यदि सर्दी लगकर छाती में कफ ठस गया हो तो 'फिटकरी' का बारीक चूर्ण बनालो। फिर देशी शक्कर के साथ तीन-तीन माशा सेवन करने से छाती में कैसा ही जमा हुआ कफ क्यों न हो खखार के साथ आना आरंभ होगा और तीन ही दिन में रोगी की तबियत तर हो जायगी।

पथ्य—तैल, खटाई का पूर्ण परहेज रखे।

नोट—फिटकरी सफेद की जगह लाल हो तो अति उत्तम।

मलहम—

चकत्ते हुए फोड़े, गंज के घाव या अन्य प्रकार के घावों के लिए निम्न प्रकार का मलहम उपयोगी है।

नीम की निबौली (कुली)	२ तोला
अजवाइन	१ तोला
नीलाथोथा	३ माशा

—इन तीनों को तेज आग से तवे या कढ़ाही पर अच्छी तरह से जला लो। फिर २ तोला गाय का घी लेकर कांसे की थाली में १०८ बार धो डालो। घी में से भली प्रकार पानी निकाल कर उसमें उपरोक्त तीनों चीजें (जली हुई) भली प्रकार मिलाकर काम में लो। आशातीत लाभ दृष्टिगत होगा। यहां तक कि कण्ठमाला के रोगियों को भी लाभप्रद प्रतीत हुआ है।

नहरू (वाला)—

यदि वाला निकलता-निकलता रुक गया हो, या टूट गया हो तो रोहिडे (रोहितक) के पत्ते की लुगदी बनाकर उस पर बाध दो। चौबीस घण्टे के पश्चात् तमाम विष व टूटा हुआ 'वाला' रस्सी के रूप में निकला हुआ होगा। यह परीक्षित है। छटपटाते रोगी खर्राटे लेते देखे गए हैं।

डा० श्री नरहर देसाई एम० डी० का

'नागदमनी' नामक जड़ी के विषय में उद्गार

"कामला के लिए एलोपैथी में कोई भी उत्तम औषधि नहीं है। इस विषय में मेरा निज अनुभव है और उस अनुभव का इतिवृत्त यह है कि बादरा में एक युरोपियन गृहस्थ कामला से ग्रसित हुआ। चिकित्सा के लिए वह मेरे पास आया। मैंने एलोपैथिक मिक्श्चरों द्वारा १॥ माह तक चिकित्सा की। दस रुपया प्रति परामर्श शुल्क के हिसाब से १५०) के करीब मैं ने उससे परामर्श शुल्क के रूप में प्राप्त किए। परन्तु उसे लाभ न हुआ, परिणाम स्वरूप वह निराश होकर किसी सूरत के वैद्य के पास पहुँच गया। वैद्यवर ने उसे सूंघने के लिए किसी बनस्पति का चूर्ण दिया। आश्चर्यजनक बात यह कि केवल दो दिन उसने चूर्ण का प्रयोग किया। फलस्वरूप उसकी नाक में से पीत वर्ण का स्राव का परिस्रवण हुआ और वह रोग विमुक्त होगया। तदनन्तर उसने मेरे पास पहुंच कर यह शब्द कहे "मैंने जो १५०) रुपया तुम्हें दिया है वह व्यर्थ ही गया।" चूंकि मेरे पास उसके शब्दों का कोई उत्तर नहीं था, इसलिए मैंने मौनव्रत द्वारा ही उसके शब्दों को सहन किया।"

(उपर्युक्त स्पष्टवाद उन्होंने पूना में एक बसन्तोत्सव सम्बन्धी एक समारोह में अपने व्याख्यान के के अन्तर्गत दिया)।

—जङ्गली जड़ी बूटी गुजराती से।

वैद्य गुरुचरण लाल कुशवाहा

शिफाउलहिन्द माहिरेतिब्ब,
कुशवाहा औषधालय, सफीपुर (उन्नाव)

"आप उर्दू हिन्दी मिडिल, मामूली संस्कृत के ज्ञाता हैं। पहिले आपने दारुल इलाज गुजरात पंजाब से यूनानी परीक्षा देकर माहिरेतिब एवं शिफाउल हिन्द की डिगरी हासिल की। बाद में नि० भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ से आयुर्वेद भिषग् परीक्षा उत्तीर्ण की। आपके प्रयोग व चिकित्सा सूझ अनोखी व अनुभव पूर्ण होती है। आपके योग बड़े कार्यकर होते है निम्न लिखित १३ प्रयोग आपने धन्वन्तरि के लिये भेजें हैं जिनमे से कुछ हम यहा प्रकाशित कर रहे हैं पाठक उनसे लाभ उठायगे ऐसी आशा है।" —सम्पादक।
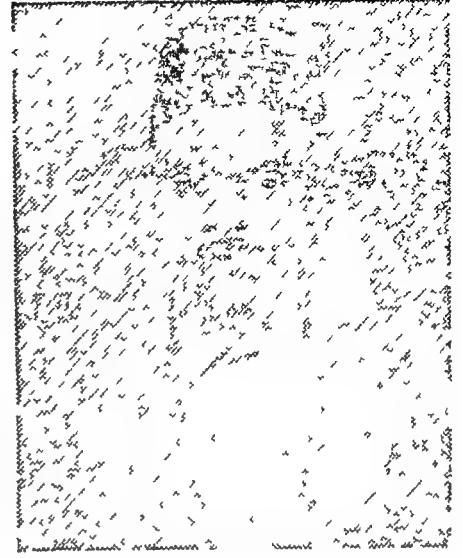
वीर्यवज्र चूर्ण—

बहिमन लाल	बहिमन सफेद
ऊदसलीब	—प्रत्येक २-२ तोला
सालममिश्री पंजा	१ तोला
सुपारी चिकनी	१½ तोला
पलास का गोंद	१½ तोला
कमरकस	६ माशा
कौंवाच के बीज	तालमखाना दरियाई
बिहीदाना	तुखमबालंगा
मोचरस	—प्रत्येक १-१ तोला
इमली के बीज की गूदी	१० तोला

—सब औषधियो को कूटकर बारीक छान ले। बरगद के दूध मे गूंध कर छोटी-छोटी टिकियां बना ले और छाया में सुखाकर चूर्ण कर ले अब इस चूर्ण मे स्वर्णवङ्ग भस्म १ तोला उत्तम लोह भस्म (घृतकुमारी योगेन) १ तोला, अकीकभस्म १ तोला मिलाकर रख ले।

सेवन विधि—१० माशे प्रातःकाल आधा सेर गौ दूध से।

परहेज—तैल, खटाई व लाल मिर्च न ले।

गुण—इससे हर प्रकार का नया पुराना प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, वीर्य का पतलापन, दिल व दिमाग, मेदा व जिगर की कमजोरी, नींद न आना, कब्ज, कमर का दर्द, पेशाब का अधिक आना आदि दूर होकर वीर्य गाढ़ा हो जाता है। अनुभूत प्रयोग है।

मलेरिया व मौसमी बुखार की दवा—

यह दवा न कुनैन की तरह कड़वी है और न गर्मी करती है और उससे सस्ती भी है। ज्वर आने से १ घंटा पूर्व देने से ज्वर रुक जाता है चढ़े ज्वर में देने से ज्वर उतर जाता है। ज्वर में घबराहट, बेचैनी, प्यास को तुरन्त रोकती है।

प्रयोग—गौदन्ती हरताल भस्म	४ तोला
शङ्खभस्म	२½ तोला
फिटकरी	१० तोला
नौसादर	५ तोला
सोरा कलमी	५ तोला
कुटकी	२ तोला
रूमबूटी का क्षार	चिरायता क्षार
अर्कक्षार	धतूराक्षार
	—प्रत्येक १-१ तोला

—सबको एक में खरल करके शीशी मे रख लें।

मात्रा—२ रत्ती ताजे जल से तीन, चार बार।

नोट—रूमबूटी बरसात मे बकायन की तरह होती है। सब जगह बागो आदि मे मिलती है इसका क्षुप १½ फुट से ३ फुट तक ऊंचा होता है। बकायन की पत्ती की तरह की पत्तियां होती हैं और सफेद रोएं होते हैं उसको सुखाकर जलाकर क्षार बनाले।

पारद गुटिका—

शुद्ध हिंगुलोत्थ पारद	२ तोला

—को एक छोटी सी कढाही में डालकर नरम अग्नि पर चढा दें। उसमे ८ साल से कम आयु के बच्चे का मूत्र थोडा-थोडा चोया देते जायें। एक सेर मूत्र समाप्त हो जाये तब फिर पारे को कुछ उष्ण जल से धो डाले जिससे कि उसकी अशुद्धता दूर हो जाये। अब सदा सोहागिन बूटी लाल फूल वाली पत्ती का एक पाव अर्क निकाल लें और पारे को खरल मे डालकर थोड़ा-थोड़ा स्वरस डालते जाये और खरल करते जायें। एक पाव स्वरस खरल हो जाने पर पारे की गोली बना कर दो एक दिन छाया में सुखा लें। ये गोली पत्थर जैसी कड़ी हो जायेगी। यह गोली दूध मे उबाल कर पीने से नपुंसकता, शीघ्र पतन आदि दूर होकर शरीर मे बल बढेगा और गोली वैसी ही बनी रहेगी। प्रत्येक दिन दूध में उबालते समय पारद गुटिका डाल दें, बाद में गुटिका निकाल कर रखे।

० कासान्तक वटी—

यह गोलियां हर प्रकार की खांसी, सूखी, तर व श्वास मे अच्छा काम करती है। कफ को ढीला करके निकाल देती है।

योग—पीपल छोटी — काली मिर्च
रुब्बेसूस — जवाक्षार
अपामार्ग क्षार — बासाक्षार
—प्रत्येक १-१ तोला

मीठे अनार का बक्कला	४ तोला
गुड़	८ तोला

—सबको कूटकर चने के बराबर गोलियां बनालें। दिन रात में ५-७ गोली चूसने से हर प्रकार की खांसी व श्वास मे लाभ होता है।

बालरक्षक शरबत—

यह शरबत एक यूनानी पुस्तक लुकमानी गाइड का नुस्खा है। इसको मैं १०-१२ साल से बराबर बनाकर बच्चों को सेवन कराता हूँ। बच्चों का बहुत अच्छा टानिक है इसके सेवन से दांत आसानी से निकल आते हैं, हरे पीले फटे दस्त बन्द हो जाते हैं। सूखा-मसान की अकसीर दवा है। खांसी व ज्वर में अच्छा काम करती है और रक्तवर्धक है।

बांसा की पत्ती	१ सेर
गाजुवां	१ पाव
नीलोफर	१ पाव
खाकसीर	१० तोला
मौरेठी (मुलहठी)	१० तोला
केकड़ा	३ तोला

—सब औषधियों को साफ करके चार गुना पानी मे १५ घण्टा भिगोकर भबके के द्वारा अर्क खींचे। अर्क खींचने समय बोतल के मुख पर कपूर ३ माशा, केशर १½ माशा की पोटली बांध दे ४ बोतल अर्क खींच लें। कोरी हांडी मे अर्क करके उसमे ४ तोला अनबुझा चूना डालकर ६-७ घंटे बाद अर्क को नितारकर छान ले जिससे चूना न आने पाये (यह लाइम वाटर हो जायेगा) अब इस अर्क मे एक सेर शक्कर की शर्बत वाली चासनी बना ले। इसमें दो माशे शुद्ध सुहागा और एक माशे टाटरी बारीक पीसकर मिला दे। इससे शर्बत अधिक दिनों तक खराब नहीं होगा और न जमेगा। अब इसमे कोई सुर्ख रङ्ग (शरबत वाला) देकर शीशी मे रख ले।

मात्रा—१ माशा से ४ माशा तक आयु के अनुसार (माता के दूध या पानी मे) पिलावे यह बहुत पेटेन्ट नुस्खा है।

कविराज पं. विश्वनाथ त्रिपाठी

आयुर्वेदाचार्य

मु पो. सिधावे (रामकोला) जि. देवरिया।

"श्री त्रिपाठी जी का जन्म सन् १६१२ में श्री प. भृगुरासन जी त्रिपाठी के यहा हुआ। आपने व्याकरण मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण कर आयुर्वेदाचार्य एवं कविराज की परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। आप अपनी जनता में प्रिय सफल चिकित्सक है, ग्रामसभा के सभापति भी रह चुके हैं। गत १८ वर्षों से ब्राच पोस्ट आफिम से पोस्ट मास्टर भी है। गरीबो की चिकित्सा नि शुल्क करते हैं। आपके तीन सरल सस्ते किन्तु सुपरीक्षित प्रयोग प्रकाशित किए जा रहे हैं।"

—सम्पादक।

उन्माद नाशक—

चागेरी (तीन पतिया) की पत्ती कम से कम ½ पाव लावें और ज्यादा करने के लिए वथुआ या, पालक अथवा चौलाई का शाक मिला कर बनावे और घी से छोक कर सिर्फ नमक डाले। गेहूँ की रोटी के साथ खाने को दें, जितना पागल रोगी खा सके उतना खिलावे और रोगी को १ कोठरी मे वन्द रखे। २१ दिन मे रोगी स्वस्थ हो जायेगा। इसके साथ अन्य कोई भी दवा नहीं देना चाहिए, शिर पर तैल लगा सकते हैं, कपड़ा आदि से रोगी को साफ सुथरा रखें। परीक्षित है, अवश्य लाभ होगा।

कर्णश्राव हर—

नीम का गोंद (लासा) आग पर जलाकर पीस ले। कान मे मधु डालकर, कान में भरदे। इससे कान का बहना बन्द हो जायेगा। परीक्षित है। पिचकारी से कान साफ करते रहे और रूई से सुखा कर फिर पूर्ववत् क्रिया करे।

उदरशूल नाशक—

नीम की छाल २ तोला, १ पाव पानी मे औटावे, १ छटांक शेष रहने पर ½ रत्ती हींग और शुद्ध देशी शराब १ तोला डालकर पिलाये। इससे कैसा भी उदर शूल हो रहा हो शीघ्र दूर हो जायेगा। परीक्षित है।

वैद्यराज रतन जी रामकृष्ण रास्ते कविराज

भुजपुर-कच्छ।

"श्री. कविराज जी का जन्म सन् १८६१ मे श्री रामकृष्ण जी रास्ते के यहा भुजपुर मे हुआ। आपके यहा वशपरम्परा से चिकित्सा व्यवसाय होता आरहा है। आप गुजराती, अंग्रेजी, हिन्दी एव सस्कृत भाषायें जानते हैं तथा कच्छ भाषा के उच्च विद्वान एवं कवि हैं। आपने अपने चाचा स्वर्गीय वैद्यराज त्रिकम जी हरीराम रास्ते से आयुर्वेद का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त किया है। आपने चिकित्सा मे अपनी सफलता के कारण कई स्वर्ण एव रौप्य पदक तथा प्रमाणपत्र प्राप्त किए हैं। आपको होमियोपैथी तथा एलोपैथी का भी समुचित ज्ञान है। आपके कतिपय सफल प्रयोग यहा प्रकाशित कर रहे हैं।"

—सम्पादक।

रक्त प्रदर नाशक—

अफीम (अहिफेन)	१ भाग
बोल (कालाबोल)	२ भाग
गोपी चन्दन (पीले रङ्ग की भारी)	४ भाग

—सब वस्तुओ को कूट कर कपड़ छान करके शीशी भर कर रखले।

मात्रा—१० रत्ती।

समय—चार-चार घण्टे पश्चात् १-१ मात्रा देना।

अनुपान—मिश्री के साथ मिला कर देना।

पथ्य—गरम पदार्थ नहीं लेना।

गुण—रक्त प्रदर, रक्तातिसार और पतला दस्त तुरन्त बन्द कर देता है।

गुटिका—

अफीम काली मिर्च

शु. कुचला —तीनो समभाग

विधि—सबको एकत्र कर खरल मे बारीक पीस कर ठंडा जल डाल कर खरल करें तत्पश्चात् सरसों के सदृश गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली से तीन गोली तक।

समय—दिन में ४-४ घण्टे बाद।

अनुपान—ठंडे जल के साथ।

पथ्य—तैल, मिरच, खटाई बन्द करें।

गुण—शरीर मे वायु का रोग, बच्चों के मृगि रोग नष्ट होते हैं।

अतिसार नाशक—

राई मैथी गौंद इलायची

जायफल जावित्री खशखश

—यह सब समान भाग

मिश्री —इन सभी द्रव्यो के समान

विधि—राई, मैथी और गोंद को गौ के घृत में भून लेना, पीछे सब औषधि के साथ में पीस कर चूर्ण बनालें।

मात्रा—१।।-१।। माशा ठंडे जल से।

समय—दिन में चार वार।

अनुपान—ठंडा जल और मिश्री ३ माशा के साथ देना चाहिए।

गुण—अतिसार, मरोड़, अजीर्ण, पेट में पीड़ा और अध्मान आराम होता है।

शूलनाशक चूर्ण—

सुंठि (सौंठ) चूर्ण स्वर्णमाक्षिक हरड़ छोटी
वहेड़ा छाल आमला सौंफ सेंधानमक
संचल (सोंचर नमक) काली मिरच
गुलाब फूल हींग —प्रत्येक सम भाग

विधि—सब औषधियों को लेकर कूटकर कपड़ छान कर लेना।

मात्रा—१।। माशे ३ माशा तक।

समय—दिन भर में तीन वार भोजन के पश्चात्।

अनुपान—ठण्डा जल।

गुण—पेट दुःखना, पेट चढ़ आना, फूलना, अजीर्ण, भूख न लगना, खट्टी डकार आना, यह सब शीघ्र ठीक होते हैं।

वाजीकरण गुटिका—

अफीम कपूर काली मिरच
हींग शुद्ध कुचला —प्रत्येक समान भाग

विधि—पहिले कुचले को कूट कर कपड़छान कर लेना और फिर सब औषधियो को खरल मे जल के साथ घोंटना। गुंजा प्रमाण गोली बनाना।

मात्रा—१-१ गोली।

समय—दिन में चार वार।

अनुपान—सौंफ के अर्क के साथ देवें।

गुण—अतिसार, मरोड़, संग्रहणी को आराम करती है और वाजीकरण के लिए शाम को दो गोली गौदुग्ध में खाने से वाजीकरण पौष्टिक है।

:: शेषांश पृष्ठ ३७६ का ::

निर्माण विधि—प्रथम रससिंदूर को खरल करे, पश्चात काष्ठादि औषधियों का चूर्ण मिलाकर १-१ भावना (पुट) धतूरे व भांगरे स्वरस के की दें। फिर पीछे अद्रक के स्वरस की दें। पुनः ३ पुट पान के स्वरस की देकर १-१ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में सुखाकर रखले।

सेवन विधि—१ गोली से २ गोली तक, प्रातः सायं शहद के साथ लेवे।

गुण—अशक्ति, नपुंसकता, क्षीणता, ज्वर, मस्तिष्क की कमजोरी, नसों का ढीलापन, वायु, सर्दी, खासी, दमा, क्षय, मूर्च्छा, धनुर्वात, हिस्टीरिया, पक्षाघात, सन्धिवायु, फेफड़े के रोग शीघ्र दूर कर शरीर को दृढ़ बनाती है। वृद्ध पुरुष भी यौवनावस्था की शक्ति को प्राप्त कर सकता है।

कोष्ठबद्धता नाशक—

अंडी का तैल	२।। तोला
सनलाइट साबुन	१। तोला
महुये की मिंगी	२।। तोला

—इन तीनो वस्तुओं को एक साथ मिश्रित कर पीस लेवे। फिर रोगी को साबुन से साफ कर लेवे, उंगली मे रूई लपट लेवें फिर मरहम को उंगली द्वारा गुदा के अन्दर गुदाचक्र में लगावें। तो मल की गाठ (शुद्धे) और जो मल का मुसरा जैसा बन जाता है, सरलता के साथ निकल आता है।

नोट—रोगी को ईंटों पर उँचे बिठाना चाहिए और एक दिन मे एक वार लगाना चाहिए। जिससे कि रोगी अशक्त न होने पावें।
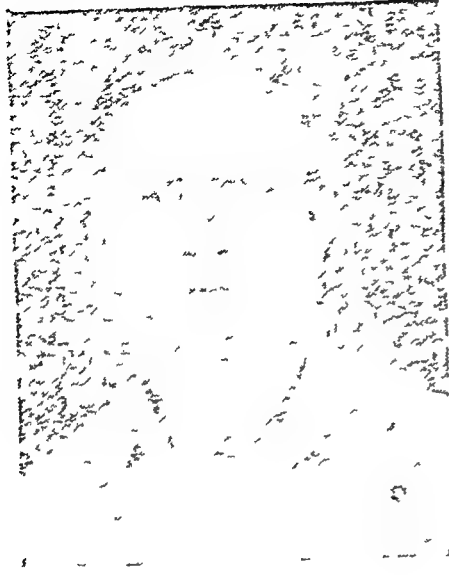
राजवैद्य कवि० ईश्वरीदत्त शर्मा
आयुर्वेदाचार्य
प्रधान चिकित्सक राजकीय चिकित्सालय, पद्माड़ा (अलवर)

"श्री शर्मा जी योग्य एवं अनुभवी चिकित्सक है तथा राजकीय चिकित्सालय के प्रधान चिकित्सक पद से जनता की सेवा करते हुये आयुर्वेद प्रसार मे संलग्न है। आपने इस विशेषाक में प्रकाशनार्थ केवल एक सफल एवं अनेक रोगियो पर सुपरीक्षित प्रयोग प्रेषित किया है। आशा है पाठक इस प्रयोग की परीक्षा करेंगें और लाभ उठावेंगे।"

—सम्पादक।

आज रोगियों की रक्षार्थ और आयुर्वेद के गौरव वृद्धयार्थ वैद्य समाज की सेवा मे अपने परीक्षित प्रयोगों मे से १ प्रयोग प्रेषित कर रहा हूँ।

व्रण नाशक मरहम—

प्रयोग यह है—

सेव (सेइया) के शूलों की भस्म और शत धौत घृत। केवल दो ही वस्तुये हैं। पहिले सेव के शूलों को जला कर उनकी भस्म करलें और जितनी यह भस्म हो उससे दुगुना गौ या भैंस का घी लेकर कासे की थाली मे पानी के साथ खूब मथे फिर पानी को निकाल कर और ताजा पानी डालकर मथे। इस प्रकार केवल घृत को पानी के साथ १०१ बार धो डाले।

इस १०१ बार धोये हुए घी में उक्त सेव के शूलों की भस्म मिलाकर रखले। बस यही वह प्रयोग है जिससे असाध्य व्रण रोगी लाभ उठा कर आयुर्वेद का गुणगान करते हैं।

गुण—ग्रन्थि व्रण, अन्तर्व्रण, गम्भीरव्रण, विद्रधि, अपची, गण्डमाला (कण्ठमाला), अदीठ और नाडीव्रण आदि भयङ्कर से भयङ्कर व्रण को जड़ से नष्ट कर आराम करता है।

प्रयोग विधि—व्रण पर इस मलहम का मोरपङ्ख से लेप कर दे। लेकिन यह ध्यान रहे कि यह मलहम व्रण की लाली पर्यन्त लगाये और स्वस्थ जगह पर न लगावें। इसके लगाने से व्रण आसानी से फूट जायेगा। जिस व्रण का मुख अन्दर की तरफ होगा, वह भी बाहर की तरफ होकर फूट जावेगा अन्तर्व्रण या गम्भीर व्रण ऊपर आजावेगा और अधिक से अधिक १ सप्ताह के प्रयोग करने पर आप से आप व्रण फूट कर छूट जायेगा और खुरण्ट लेकर जड़ से नष्ट हो जायेगा।

अब इसके द्वारा चिकित्सित कुछ रोगियो का वर्णन करता हूँ। जोकि इसके गुणो पर कुछ प्रकाश डालता है।

मेरी बहिन को लगभग ३० वर्ष की आयु मे कण्ठमाला हुई, सारा गला शोथ से व्याप्त हो गया। पानी तक पीना कठिन हो गया। उन्हे इस मलहम के प्रयोग से ५ दिन मे ही लाभ हो गया। फूटकर सारा मवाद निचुड गया और शोथ आदि वेदना २ दिन में ही जाती रही। पाचवे दिन तो खुरण्ट की पपड़ी हट कर व्रण को पूर्ण आराम हो चुका था।

इसके बाद उन्हीं की तीन लड़की और चार लड़कों को यह रोग हुआ और उन्हें भी इस भयङ्कर रोग से मुक्ति इसी प्रयोग ने दिलाई।

एक स्त्री की पीठ पर व्रण शोथ के लक्षण दिखाई दिये। रुग्णा ने कहा कि मेरे इस स्थान में मवाद प्रतीत होता है और नींद नहीं आती है, पीड़ा से बेचैन रहती हूँ। उसके यही प्रयोग लगाया। दूसरे दिन देखा तो व्रण के लक्षण बन गये हैं और तीसरे दिन लगातार ४ छटाक मवाद निकला और रुग्णा को शान्ति मिली। फिर ४-५ दिन के प्रयोग करने पर पूर्ण रूप से आरोग्य लाभ कर रुग्णा अन्तःकरण से आशीर्वाद देती हुई गई।

एक व्यक्ति के जाघ (उरु) में विद्रधि उठी। पीड़ा से व्याकुल था, उसे भी इसी मलहम ने एक सप्ताह में स्वस्थ कर दिया।

इसी प्रकार कितने ही रोगियों को जो ऐलोपैथिक चिकित्सा से महीनों में आरोग्य लाभ करते हैं, इसके द्वारा बहुत जल्दी ही स्वस्थ हो जाते हैं। विद्वान वैद्यों से और अनुसन्धानशालाओं के अध्यक्ष महोदयों से इसकी परीक्षा करने की प्रार्थना है।

नोट—सेव या सेइया नामका एक शशक के बराबर का जङ्गली जानवर होता है, उसके पीछे के भाग (पूंछ के भाग) पर पङ्खों के समान बहुत से, चर्खे के ताकू के आकार के, १ बालिस्त से १ हाथ तक लम्बे सूबे या सूले होते हैं। यह जानवर खेतों के आसपास जमीन खोदकर गुफासी बना लेता है जोकि १० से लेकर २५ हाथ तक गहरी होती है। यह खेतो में बड़ा नुकसान करता है। अतः किसान जब इसे मारने दौड़ते हैं तो वह इस बिल में घुस जाता है। प्रायः इस बिल के पास ही इसके सूले पड़े हुए मिल जाते हैं। इन्हीं सूलों का इस प्रयोग में उपयोग होता है।

:: पृष्ठ ३७४ का शेषांश ::

हरड़	६ तोला
लशुन	४० तोला
गोदुग्ध	४० तोला
गौघृत	४० तोला
मधु	४० तोला

निर्माण विधि—लशुन को घृत में भून लें फिर दूध डाल कर उबाले, फिर मधु डाल कर अवलेह बनालें। शेष चूर्ण द्रव्यों का वस्त्रपूत चूर्ण कर मिलाले। अवलेह तैयार है।

मात्रा—१ तोला प्रातः व १ तोला सायं।

अनुपान—मिश्री युक्त गौदुग्ध।

गुण—यह अवलेह बलदाता, स्तम्भक, धातु, वीर्य को बढ़ाने वाला है। उत्साहप्रद, देह की पुष्टि अग्नि को बढ़ाने वाला है।

आयुर्वेद भूषण श्री मोहरसिंह आर्य हितैषी

स्थान मिसरी पो. चरखीदादरी (महेन्द्रगढ़)
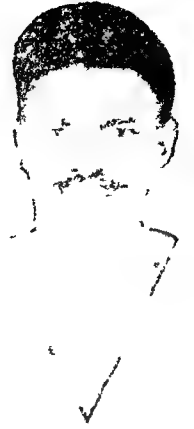
"श्री हितैषी जी का जन्म २ जौलाई १६२७ को श्री राजाराम जी यादव के यहां हुआ। आपके प्रयोग एवं लेख धन्वन्तरि में प्राय. प्रकाशित होते रहते हैं। आप कवि भी हैं तथा अनुभवी चिकित्सक। आपने अपने गुप्त प्रयोगो को पीड़ित जन एवं आयुर्वेद चिकित्सको के हित के लिए उदारता से प्रकट किए है। आशा है आपके दोनो प्रयोग प्रत्युपयोगी प्रमाणित होगे।"

—सम्पादक।

बलदामृत—

मुनक्का	१ सेर
बबूल की छाल	आधा सेर
आमले	आधा पाव
मुण्डी	१० तोला
जटामासी अजवायन खस	
तज तेजपात नागरमोथा	
कचूर श्वेत चन्दन मेंहदी बीज	
—यह सब ६-६ माशा	
एला बड़ी	१। तोला
दोनो तोदरी	२॥-२॥ तोला
सफेद मूसली	१। तोला
स्याह मूसली बहमन	२॥-२॥ तोला
किशमिश	२० तोला
बादाम गिरी	२० तोला
छुहारे	२० तोला
मुनक्का	२० तोला
असगन्ध गोखरु	२-२ तोले
जल	१ मन
चीनी	१० सेर
कौंच बीज	२ तोला
बेर की छाल	२० तोला

(प्रक्षेप द्रव्य)

गौदुग्ध	२॥ सेर
सन्तरे का रस	आधा सेर
सोंठ मेथी सुपारी	
कटेली धतूरा सौंफ अजवायन	

—प्रत्येक ४-४ तोला

निर्माण विधि—यवकुट चूर्ण करले। पानी मे चीनी घोलकर फिर चूर्ण डालदे। मुंह पर ढक्कन लगा कपड़ मिट्टी कर ३० दिन सन्धान करे। तत्पश्चात् प्रक्षेप द्रव्य डालकर भवके से अर्क खींचले।

मात्रा—प्रातः सायं ६ माशा से १ तोला तक। यदि तेजी अधिक प्रतीत हो तो बराबर जल मिलाले। सन्निपात विशूचिका मे आवश्यकता के समय दीजिए।

गुण—घोर सन्निपात ज्वर, शीताङ्ग सन्निपात, विशूचिका मे लाभदायक अर्क है। देह की पुष्टि बल, वर्ण, अग्नि को बढ़ाता है।

बलदा अवलेह—

अभ्रक भस्म श्वेत	२ तोला
माण्डूर भस्म	४ तोला
काली मिर्च	३ तोला
मस्तंगी	२ तोला
कलौंजी	६ तोला
अजवायन	६ तोला

—शेषांश पृष्ठ ३७३ पर।

आयुर्वेद मनीषी

श्री बाबूराम बाजपेयी

वैद्यशास्त्री आयुर्वेद रत्न, आयुर्वेदाचार्य
श्री गोपाल औषधालय, उत्तरीपुरा, (कानपुर)

"आपने अपने भ्राता श्री आयुर्वेद मनीषी पं० देव करण जी बाजपेयी की छत्रछाया मे रहकर आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया। उन्होने ही आपको उज्जैन ग्वालियर आदि स्थानो में भेजकर आयुर्वेद मे पूर्ण ज्ञान कराया। आपके भाई द्वारा स्थापित श्री गोपाल दातव्य आयुर्वेदिक औषधालय का आप संचालन करते हैं जिसका भार आपके भ्राता के अभाव में आपके कन्धों पर आ गिरा। आप योग्य चिकित्सक तथा रसायनज्ञ हैं।" —सम्पादक।
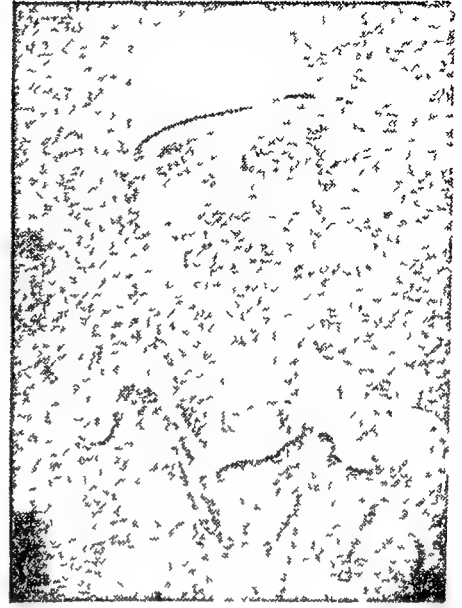
सर्व नेत्ररोग हर—

काली मिर्च १ भाग, स्त्री के दूध मे। सेधा नमक ½ भाग, घोड़े की लार में। शुद्ध मैनशिल २ भाग, गाय के दूध मे। शङ्ख भस्म ४ भाग, बकरी के दूध मे। प्रत्येक औषधि को २-२ घण्टे अलग-अलग खरल करे, तत्पश्चात् चारों औषधियो को १ साथ मिलाकर २४ घण्टे बकरी के दूध मे खरल करके गोलियां बना छाया मे सुखा ले।

सेवन विधि—प्रात सायं बकरी के दूध में घिस कर नेत्रो मे लगावे।

गुण—जाला, फूला, माड़ा, धुन्ध, मोतिया विन्दु, आदि नेत्र के समस्त रोगों पर अद्वितीय लाभकर है।

नपुंसकता नाशक—

बड़ा गौखुरू सितावर
गगेरन के बीज —तीनो ५-५ तोला
केवाच के बीज विदारी कन्द
असगन्ध —तीनों १०-१० तोला
अड़ूसा मूसली सफेद गिलोय
लाल चन्दन दालचीनी तेजपात
इलायची सफेद पीपल आवला
लौंग नागकेशर
—प्रत्येक १-१ तोला
खरेटी मूसली स्याह
—दोनो २१-२१ तोले
कुशा की जड़ कांस की जड
—प्रत्येक ७-७ तोला

—इन सब औषधियो को कूट छान कर चूर्ण बनालें। फिर इन सबके बराबर मिश्री मिलावें।

सेवन विधि—१-१ तोला प्रातः सायं गाय के दूध के साथ सेवन करे।

गुण—वीर्य स्राव, नपुंसकता, नसों की कमजोरी तथा शिश्नेन्द्रिय का टेढ़ापन मे लाभ करता है।

नामर्दी का तिला—

सफेद संखिया की २ तोला की डली ७ दिन मदार (अकौड़ा) के दूध मे रक्खे, फिर डली को निकाल कर ५ तोला गाय के मक्खन में ३ दिन तक बराबर खरल करे। बाद मे चीनी की रकाबी

(प्याली) में रखकर धूप में रखदें। रकावी को कुछ टेढ़ा करके रक्खे ताकि उत्तम घी सब बह आवे और सखिया के छिछड़ों को न आने दे। जिस परिणाम घी में निकल आवे उसके हिसाब से प्रति तोला २ रत्ती केशर, २ रत्ती मुश्क (कस्तूरी), १ रत्ती जावित्री, १ माशा लौंग, १ माशा अकरकरा, १ माशा जायफल, १ माशा वीरवहूटी मिलाकर एक दिन खरल करे। मासूली तौर पर लिंग के ऊपरी भाग तथा नीचे के भाग को छोड़कर बीच में चारों ओर २-३ बूंद तिला चुपड़ना चाहिए, फिर एक भोजपत्र लपेट ले। उसके ऊपर कपड़ा लपेट देना चाहिए। २४ घण्टे बाद यह विधान फिर पानी से करना चाहिए, धोना नहीं। फिर १ सप्ताह के बाद लाल रङ्ग के जरा-जरा से छाले पड़ जावेंगे परन्तु पीड़ा न होगी। उस दिन एक ही बार इस दवा को लगावे। जब तक छाले अच्छे न हो जावे घी बराबर लगाना चाहिए। मगर इस बात का ध्यान रहे कि तिला अंडकोष पर लगने पावे और जब तक इस तिला का प्रयोग करे तब तक स्त्री प्रसंग न करे।

पेचिस की दवा—

कपूर बढ़िया	माजूफल बिना छेद का
हर्र पीली का छिलका	आंवला गुठली रहित

—प्रत्येक १-१ तोला

असली केशर	६ माशा

—शुद्ध गुलाब जल में खरल कर चने प्रमाण गोली बना लेवें।

सेवन विधि—प्रातः सायं १-१ गोली ताजे जल से खावें।

नोट—अगर पेट में पीड़ा अधिक हो तो अपामार्ग (लटजीरा) की ५-७ हरी पत्ती चबा लेना चाहिए।

प्रमेह तथा प्रदर नाशक—

वायविडङ्ग	सोंठ	मिर्च	हर्र
पीपल	बहेड़ा	आंवला	चव्य

तीनों नमक (सेंधा, लाल, सांभर)		दंती
अतीस	जवाखार	चित्रक
पीपल	पीपरा मूल	मोथा
कचूर	दालचीनी	इलाइची सफेद
गज पीपल	देवदारु	चिरायता
हल्दी		पत्रज

—प्रत्येक १-१ तोला

वंशलोचन	४ तोला
लौह भस्म	८ तोला
शुद्ध गुग्गुल	१० तोला
शुद्ध शिलाजीत	३२ तोला
सफेद चीनी	२० तोला

—इन सबको कूट पीस चने के बराबर गोली बना सुखा कर रख लेवे।

सेवन विधि—१-१ गोली प्रातः सायं शहद के साथ खावे और गरम दूध मिश्री युक्त पीवे।

गुण—प्रमेह, ज्वर, विषमज्वर नासूर, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, मन्दाग्नि, उदर रोग, पाण्डु रोग, कामला, वन्ध्यारोग, भगन्दर, प्रमेह की फुंसियां अरुचि, तथा अनेक प्रकार के दोष तथा घोर कफ, पित्त व बादी की पीड़ा आदि दूर होते है तथा स्त्रियों का प्रदर भी जाता रहता है।

कामेश्वरादि वटिका—

रस सिंदूर			४ तोला
कपूर	कूट	लौंग	पीपल
अकरकरा		केशर	अगर
गिलोय सत्व			स्वर्णवर्क
वत्सनाभविष	शुद्ध शिलाजीत		श्वेत मूसली
तज	शुद्ध अफीम		जावत्री
केवाच के बीज का गूदा			जायफल

—प्रत्येक १-१ तोला

कस्तूरी	६ माशा
अम्बर	६ माशा

—शेषांश पृष्ठ ३७१ पर।

श्रीयुत प्रो० कालूराम शुक्ल आयुर्वेद शास्त्राचार्य

शुक्ल चिकित्सालय, ऋषिकेश (देहरादून)

श्री शुक्ल जी चिकित्सक समाज के एक चमकते वैद्यरत्न हैं तथा धन्वन्तरि लेखक परिवार के अभिन्न अंग हैं। आप लेखन कला, चिकित्सा विधि, अध्यापन कार्य में विशेष दक्ष हैं। मधुमेह, राजयक्ष्मा संग्रणी, रक्त प्रपीडन आदि रोगों के सिद्धहस्त चिकित्सक हैं। अनेक पुस्तकों के लेखक तथा संकलनकर्त्ता हैं। संक्रामक रोग विज्ञान, प्राच्य-पाश्चात्य तुलनात्मक शल्यतंत्र, मलेरिया विज्ञान, उपदंश विज्ञान, गनोरिया विज्ञान आपकी प्रकाशित रचनायें हैं तथा अप्रकाशित रचनाओं में मानसरोग विज्ञान, कौमार तन्त्र, चरक संहिता चरक चन्द्रिकाख्य संस्कृत टीका मुख्य ग्रन्थ हैं। आप सर्व सार्वजनिक कार्यों में सलग्नता से भाग लेते रहे हैं, ऋषिकेश नगर पालिका के भू पू अध्यक्ष, अखिल भारत वर्षीय आयु विद्यापीठ के परीक्षक व भू० पू० सहायक मन्त्री रहे हैं। हिन्दू विश्वविद्यालय काशी के आयुर्वेद विभाग परीक्षा के भू पू परीक्षक रह चुके हैं। अपने अनुभव ज्ञान परक कुछ प्रयोग वैद्य जगत को अपनी अनूठी देन के रूप में प्रस्तुत किए हैं, पाठक स्वीकार करें।"

—सम्पादक।

प्रसूतज्वर चिकित्सा—

प्रतापलंकेश्वर रस	½ रत्ती
वसन्तमालती	½ रत्ती
प्रवालभस्म	१ रत्ती
शङ्खभस्म	१ रत्ती
गिलोयसत्व	१ माशा
सितोपलादि चूर्ण	१ माशा

विधि—इन सबको एक में मिला कर १ मात्रा बना लेवे। इसको मधु से प्रातःकाल और ऐसी ही मात्रा सायंकाल को देवें। इसके आध घण्टे बाद निम्न क्वाथ देवे।

देवदार्वादि क्वाथ—

देवदारु	मीठावच	कूठ
पीपल	सोंठ	कायफल
नागरमोथा	चिरायता	कुटकी
धनिया	छोटीहरड़	गजपीपल
धमासा	गोखुरु	जवासा
कटेरी	अतीस	गिलोय
काकड़ासिंघी		कालाजीरा

—प्रत्येक समान भाग

विधि—इन सब औषधियों को कूटकर एकत्र रख लेवे। उसमें से २ तोला की मात्रा में औषधि लेकर आधा सेर जल में क्वाथ पकावें। ७॥ तोला जल शेष रहने पर उतारकर छान लेवे। इसको प्रातःकाल २१ दिन तक पिलावे।

गुण—इससे प्रसूतज्वर, कास, श्वास, शिरःशूल दूर हो जाता है।

भोजन के बाद—दशमूलारिष्ट १ तोला, अर्क सौंफ १ तो. मिलाकर देवे।

अभ्यङ्ग—महालाक्षादि तैल की मालिश करे।

पथ्य—दूध, साबूदाना, फल-सेब, अंगूर, अनार, मुनक्का, किशमिस, मूंग की दाल, परवल, लौकी, तोरई, टमाटर आदि का शाक हितकर है।

मधुमेहघ्न वटी नं० १—

नीम के पत्ते	२½ तोला

बेल के पत्ते	२३ तोला
गुड़मार बूटी	५ तोला
शुद्ध शिलाजीत	१ तोला
मुक्तापिष्टी	स्वर्णवर्क
अभ्रक भस्म	लोहभस्म
प्रवाल भस्म	रजत भस्म
शुद्ध अफीम	—प्रत्येक ३-३ माशा
त्रिवङ्ग भस्म	६ माशा
कस्तूरी	१॥ माशा

विधि—पहले पत्तियो को सुखाकर कूट छान रख लेवे। फिर सब औषधियो को मिलाकर, बेल के पत्तों के रस मे घोटकर २-२ रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा-१ रत्ती। समय—प्रात. रात्रि।

अनुपान—आमला चूर्ण २ माशा, मधु ६ माशा के साथ लेवे और भोजन के बाद मध्वासव १-१ तोला (चरकोक्त) पिलाया जावे।

गुण—३ मास तक लगातार प्रयोग करके निश्चित् लाभ होता है।

अपथ्य—गरिष्ट पदार्थ, चीनी, आलू, अरवी, आदि न खावे।

पथ्य—लघु भोजन, दूध, फल, आदि दे।

मधुमेहनाशक, अश्वत्थबीजादि योग—

अश्वत्थ (पीपल) वृक्ष बीज का चूर्ण	२ रत्ती
शृङ्गभस्म	१ रत्ती

विधि-इन दोनो को एक मे मिलाकर, मधु १ तोला, गौनक्र २॥ तोला के साथ प्रात' सायकाल लेवे। इसके प्रयोग से मधुमेह मे अति लाभ होता है।

बहुमूत्रनाशक योग—

हरताल की भस्म	६ माशा
शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक की कज्जली	१ तोला
लोहभस्म	६ माशा
अभ्रक भस्म	६ माशा
वङ्गभस्म	६ माशा
शुद्ध अफीम	३ माशा

विधि—मधु से घोटकर १ रत्ती की गोली बनावें।

मात्रा—१ रत्ती। समय-प्रात. सायं।

अनुपान—मधु के साथ लेवें।

गुण—इससे बहुमूत्र रोग दूर होता है।

भोजन के बाद—अश्वगन्धारिष्ट १-१ तोला लेवे।

विषमुष्टिकादि वटी—

शुद्ध कुचिला	५ तोला
लोहभस्म	रससिंदूर
छोटी इलायची	लवङ्ग
जायफल	

—प्रत्येक २॥-२॥ तोला

विधि—दशमूल के क्वाथ मे घोटकर मूंग के बराबर गोली बनावे।

मात्रा-१ गोली। अनुपान-गौदुग्ध १ पाव।
समय—प्रातः सायं।
गुण-बहुमूत्र, स्वप्नदोष दूर होता है।

स्वप्नदोष नाशक वटी—

त्रिफला चूर्ण	२० तोला
कपूर	२ तोला
पुराना गुड़	५ तोला

विधि—पलाश के पुष्प के स्वरस से घोटकर १-१ माशा की गोली बनावें।

मात्रा—१ गोली।

समय-रात्रि मे सोने के पूर्व १ गोली ताजे जल से लेवें और प्रात'काल गोक्षुरादि वटी (शार्ङ्गधरोक्त) १ गोली, दूध से लेवे। सावधान! विबन्ध न रहे और मानसिक विचार शुद्ध रहने चाहिए।

गुण—इससे स्वप्नदोष मे निश्चित लाभ होता है। प्रातः काल भ्रमण करना आवश्यक है।

कविराज श्री विष्णुदत्त पुरोहित

एम. वी. (आयुर्वेद) शास्त्री वंगाल
श्री वदरी ज्योतिषायुर्वेद भवन, जोधपुर।

"श्री पुरोहित जी का जन्म सम्वत् १६७२ में हुआ। प्रारम्भिक सस्कृत की शिक्षा अपने पिता जी से प्राप्त की तथा मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् कलकत्ते के महाराजा वाजार गोविन्दसुन्दरी आयुर्वेद कालेज मे आयुर्वेद का अध्ययन किया तथा सन् १६३७ मे उक्त डिग्री प्राप्त की। गत २० वर्षो से आप स्वतत्र चिकित्सा कार्य कर रहे हैं तथा जोधपुर के योग्य चिकित्सको मे अपकी गणना है। आपकी अभिलाषा हे कि आपको मृत्यु के पश्चात् जनता नाडी-विशेषज्ञ के रूप मे सदैव याद करे, तदनुसार आप इसी विषय में सलग्न रहते हैं। आपके उपयोगी प्रयोगो से पाठक अवश्य लाभ उठावें।" —सम्पादक।

फिरङ्ग—

जिसमे कि शिश्नमुंड के टुकड़े-टुकड़े से दिखाई देते हों, मवाद अत्यधिक दुर्गन्ध युक्त हो एवं उसका प्रवाह धारावाही हो वहा निम्न लिखित औषधियों का मिश्रण दिया जाना चाहिए।

निशोथ	२ तोला
हरड़	१ तोला
वहेड़ा	१ तोला
आवला	२ तोला
रक्त चन्दन	४ तोला
नागकेशर	१ तोला
गैरिक	११ तोला

—इन्हें कूट कपड़छान चूर्ण कर शीशी में भरलें।

मात्रा—६ माशा।

सेवन विधि—५-७ मुनक्का निर्बीज कर रात को धोकर पानी में भिगोदे। प्रातः सिल पर चूर्ण को इसी पानी से घोटें एवं साथ मे मुनक्काओं को भी घोटलें। १ प्याला पानी बनालें एव १ या १॥ तोला मिश्री मिलाकर पीजावे। इसी तरह प्रात भिगोकर संध्या समय पीजावें। ११ दिन मे, यदि पथ्य नियमित रखा गया तो, पूर्णत. आराम हो जायगा।

पथ्य—रोटी, घी, शक्कर, संयम, धूप का सीमित सेवन, मनोमालिन्य से विरक्ति।

विषमज्वर पर—

अतीस (कटु) नागरमोथा
काकड़ाशृंगी रोयेदार करंज (घी मे भूनकर)
कुटकी पर्पट (पित्त पापड़ा) वत्सनाभ (शुद्ध)
सोना मुखी (सनाय) —प्रत्येक सम भाग

—इन सवों को कूट कपड़छान कर कुड़ा छाल के काथ से चना प्रमाण गोली वांधले।

मात्रा—३ गोली प्रात., ३ गोली दोपहर एवं ३ गोली रात्रि मे गरम पानी से सेवन करे।

भ्रम—

गरम पानी	१ प्याला
शहद	२ चम्मच
नीवू	आधा

—दिन मे ऐसे ३ प्याले दीजिए और चक्कर से रोगी को मुक्त कीजिए।

पथ्य—रूखी रोटी (गरम) रूखी दाल।

अपस्मार—

घोड़ावच गैरिक-सूक्ष्म

—शेषांश पृष्ठ ३८४ पर।

डा. कुरुप्रसाद बलदेव सिन्डोल

अमर मैडीकल स्टोर्स,

रिसोड (अकोला)

"श्री सिन्डोले जी आयुर्वेद के ज्ञाता तो हैं ही, आपने होमियोपैथी एव एलोपैथी का अध्ययन भी किया है। श्री शिवगुलाम जी पाण्डेय से आपने आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया तथा उसके बाद १९४० में अपना उक्त मैडीकल स्टोर्स स्थापित किया। भारतवर्ष मे अनेक स्थानो पर पूर्णिमा के दिन खीर मे मिलाकर एक औषधि खिलाई जाती है, उसी औषधि को आपने विधि-विधान पूर्वक यहा प्रत्यक्ष किया है, आशा है पाठक इस प्रयोग से श्वास पीडित जनता को लाभ पहुंचावेंगे।"

—सम्पादक।

श्वासरोग नाशक—

आश्विन शुक्ला प्रतिपदा को पिप्पल (पीपल) वृक्ष की अन्तर्छाल ताजा लावे और उसे छाया मे सुखा लें। इसका वारीक चूर्ण करले। लगभग १॥ माशा यह चूर्ण ले तथा इसी छाल को जलाकर राख कर लें और उस राख के चूर्ण को १॥ माशा की मात्रा मे उक्त चूर्ण मे मिला दे। यह एक मात्रा दवा है।

औषधि सेवन की विधि—शरद पूर्णिमा (आश्विन सुदी १५) को सूर्योदय से लेकर रात्रि के १२ बजे (औषधि सेवन का समय) तक उपवास अर्थात् जल वगैरे कुछ भी न लेना एवं पूर्णिमा को दिन भर और रात्रि भर और कार्तिक कृष्णा १ को दिन भर (कुल ३६ घंटे तक नींद बिलकुल न ले) पूर्णिमा को सायंकाल के समय नीचे लिखी विधि से क्षीर बनाकर चांदी, लोहा या मिट्टी के पात्र मे डालकर (इन तीनों के अतिरिक्त और किसी धातु का वर्तन न हो) खुले स्थान में चन्द्रमा मे रख दे। रात्रि को १२ बजे क्षीर मे एक मात्रा औपधि डालकर खाले परन्तु क्षीर उतनी ही ले जितनी खा सकें।

औषधि सेवन के बाद दो घण्टे तक जल बिलकुल न पीवे। हां, आचमन कर सकते है। परन्तु जल पेट मे न जाने पावे। औषधि सेवन करते ही घूमने को निकल जाऐ। भ्रमण जितना हो उतना अच्छा है परन्तु शरीर की शक्ति से बाहर परिश्रम न हो। कार्तिक कृष्णा १ को अच्छी भूख लगने पर हल्का भोजन कर सकते हैं।

क्षीर बनाने की विधि—शरद पूर्णिमा (आश्विन सुदी १५) को सायंकाल को ५ बजे गौ का ताजा और शुद्ध १ सेर (८० तोला), मिश्री (बढ़िया देशी चीनी से बनी हुई) २॥ तोला और चावल बढ़िया २॥ तोला डालकर यथाविधि मन्दाग्नि से लोहा-चांदी या मिट्टी के पात्र मे क्षीर बनावे। क्षीर (तस्मई) तैयार होने पर चन्द्र उदय होते ही लोहा-चादी या मिट्टी के पात्र मे डालकर चांद की चांदनी मे रख दे और अर्द्ध रात्री (१२ बजे) को इस क्षीर मे एक पात्र मे औषधि डालकर पहिले २-४ ग्रासो मे औषधि लेकर ऊपर से इच्छानुसार क्षीर खा ले।

औषधि में पूर्ण विश्वास रखते हुए और अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए औषधि सेवन करे। अवश्य २ लाभ होगा। परन्तु ध्यान रहे "किसी प्रकार का कुपथ्य करने पर औषधि से लाभ की आशा करना व्यर्थ है।" अतः पथ्य मे गडबड़ी करके अपनी शारीरिक हानि और औषधि के चमत्कार में बट्टा लगाने की चेष्टा न करे।

२ मास का पथ्यापथ्य—

औषधि सेवन के दिन से २ मास तक लालमिर्च, तैल, खटाई, मद्य, गुड़, कढाही में तली चीजें और देर से पचने वाले गरिष्ट पदार्थ, दही, छाछ, कढी, चाय इन सब चीजों का सेवन औषधि सेवन करने वाले को दो मास तक नहीं करना चाहिए, तथा पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालना करना चाहिए और ऐसा किसी प्रकार का आहार-विहार सेवन न करे जिससे जुखाम हो जाये। शरीर से अत्यन्त ज्यादा परिश्रम न करे, जिससे थककर ज्वर आ जावे।

मदिरा, ताडी, बीड़ी, सिगरेट, हुक्का, चिलम, तम्बाखू खाना व पीना, भाग, गांजा, चरस, अफीम आदि मादक पदार्थ और किसी भी जानवर का मांस ये चीजे औषधि सेवन करने वाले को सारी जिन्दगी भर कभी सेवन न करना चाहिए, उपरोक्त अपथ्य चीजों को छोड़कर सब पदार्थ सेवन कर सकते है, परन्तु घी दूध यथाशक्ति विशेप सेवन करना चाहिए।

कार्तिक कृष्णा १ के दिन हल्का भोजन खिचड़ी, चावल, दाल, दूध वगैरह भोजन करना चाहिए, रात मे औषधि सेवन करने के बाद कुल्ला करे, जल बिलकुल न पीवे, आश्विन सुदी १५ के दिन और रात और कार्तिक कृष्णा १ का दिन याने ३६ घण्टे बिलकुल सोना न चाहिए।

नारूरोग नाशक—

जिस स्थान पर नारू रोग हो उसे निम्ब पत्र डालकर उबाले हुए जल से स्वच्छ कर ले। अनन्तर मिट्टी के एक पात्र मे गौमूत्र डाल उसमें कान्दा (प्याज) के छोटे-छोटे टुकड़े डाले। उसी में थोड़ी हल्दी पिसी हुई डाल दे। इस पात्र को अग्नि पर रख उबाले। २-३ उबाल आ जाने पर पात्र में से प्याज के टुकड़े निकाल किसी कपडे मे रख पीड़ित स्थान पर सेक करे।

खाने के लिए दवा—शुद्ध कपूर की टिकिया ३ रत्ती प्रमाण मे तिगुनी या चौगुनी शक्कर में महीन पीसकर मिलाकर रख ले।

उक्त औषधि तथा सेक दिन मे तीन बार प्रातः ७ बजे, दोपहर को १२ बजे तथा शाम को ४ बजे दी जानी चाहिए। खाना पीना सभी शाम के ७ बजे तक बिलकुल बन्द रखना चाहिए। १२ घंटे तक पानी की एक बूंद भी पेट मे न जानी चाहिए। रात्रि को आठ बजे केवल चावल पकाकर दे सकते हैं। चावल के साथ केवल घी शक्कर दे सकते है। यह औषधि हम रोगी को प्राय अपने समक्ष रख कर व्यवहार कराते हैं। इसके विधिपूर्वक सेवन करने से दूसरे दिन ही लाभ हो जाता है तथा जीवन भर यह व्याधि फिर नहीं होती है।

अर्धावभेदक (अर्ध शिरः शूल) नाशक—

रात्रि को दो बजे घोडाचोली रस (अश्वकंचुकी) २ गोली खोवा (मावा) मे लपेट कर निगल लेवे। ऊपर से इच्छानुसार केवल ताजा दूध का घोटकर तैयार किया गया खोवा खा लें। रोगी कुल्ला कर कर सकता है किन्तु पानी पीना नहीं चाहिए। उसके बाद रोगी सो जावे, एक नींद लेना आवश्यक है। प्रात काल गरम दूध के साथ खोवा इच्छानुसार पुनः लें। लगाने को यदि चाहे तो अमृतधारा सिर पर लगावे, अन्यथा कोई आवश्यकता नहीं है। प्रथम दिन ही पर्याप्त लाभ प्रतीत होगा।

कविराज श्री नरेन्द्रनाथ सेन वैद्य भिषग्रत्न

ग्राम बनबीरा पो० पुरुषोत्तमपुर (हलई) जिला दरभगा (बिहार)

"आपका जन्म एक वृहत् वैद्य परिवार मे हुआ। अत स्वभाव से ही आप जन्म जात वैद्य हैं। आपके पिता आयुर्वेद काव्यतीर्थ तथा दरभगा नरेश के राजवैद्य थे। आपके भ्राता, मामा, नाना, श्वसुर, पिता आदि भी सब वैद्य थे। आपके चाचा कविराज शारदा चरण सेन, दरभगा महाराज रामेश्वर कालेज मे आयुर्वेद के एक मात्र अध्यापक थे। आप उन्ही के शिष्य भी है। कलकत्ते के यामिनी भूषण अष्टाग आयुर्वेद कालेज के प्रधान तथा प्रथम अध्यक्ष कविराज श्री शिवनाथ सेन M B प्राणाचार्य भी आपके एक चाचा थे। तथा यामिनी भूषण जी भी आपके सम्बन्धी थे। आपको अपने वशानुगत इस आयुर्वेद पर वडा गौरव एव अभिमान है। उसकी रक्षा हेतु ही आपने इस उपवेद का अध्ययन किया। आपके इस विषय मे अति सूक्ष्म अध्ययन एवं अनुभव अन्वेषण हैं। दो प्रयोगो का अनुभव हम यहां दे रहे हैं। आपका शेष कुछ योगो का तथा कुछ द्रव्यो का अनुभवात्मक विश्लेषण आगे के अंकों मे देने का प्रयास करेंगे।"

—सम्पादक।

वृहत्शंख वटी—

रसेन्द्रसार संग्रह के अजीर्ण अधिकार की वृहशंखवटी यथा विधान तथा यथा योग्य मै बनाता हूं। परन्तु अम्ल वर्ग मे अम्लीकरण मे मैंने साइट्रीक एसिड (जमीरी नीम्बू का सत) से अम्लित करता हूँ। भावना इत्यादि द्वारा प्रस्तुत हो जाने के बाद मैं उसमे उक्त एसिड उतनी देता हूँ कि समग्र औपधि पूर्ण अम्ल स्वाद की हो जावे। बाद मे उसको शुद्ध जल द्वारा आर्द्रित करते हुए दो बार प्रचण्ड धूप मे सुखा लेता हू। तीसरी बार फिर जल के सहारे ग्राही मात्रा मे गोलिया बनाता हूँ। गोलियां ऐसे अवसर पर बनाता हूँ ताकि एक ही दिन की धूप मे शुष्क हो जांय। गीली गोली १०-१२ घंटा रह जाने से गल जाती हैं। सुन्दर और सौष्ठव आकार नहीं रहता।

व्यवहार—रोगी का आहार परिपाक न होकर यदि आम अवस्था मे रह जाय तो उसके लिए आयु के अनुसार अद्रक के रस मे वृहत्शखवटी की एक मात्रा ही अन्न को परिपाक परिणाम तक पहुँचाने के लिए पर्याप्त होगी। रोगी किसी भी अवस्था मे रहे और भोजन व पथ्य विगड़ गया हो तब निर्विवाद से इसका प्रयोग किया जा सकता है। बुखार मे रोगी अगर खाले और खाने के बाद ज्वर बढ़ जाय तो एक मात्रा उस विगड़े हुए पथ्य को पचाकर तथा विगड़े हुए पथ्य पर का वर्धित ज्वर को और उसके साथ-साथ कोई भी उपद्रव रोगी को होता हो तो उल्लिखित एक मात्रा औपधि आध घटे के अन्दर रोगी को सम्भाल लेने के लिए पर्याप्त है। और दूसरी मात्रा आन्तरिक ज्वर तथा श्वसनकज्वर

एवक्षयजन्य ज्वर भिन्न-भिन्न सब प्रकार के ज्वरों को नष्ट करने के लिए सहायक होगी। यह ध्यान रखा जाय कि अद्रक के रस में दवा खिलाने के बाद आधा घंटा तक पानी नहीं दिया जाय। एक मात्रा औषधि आधा से एक तोला तक अद्रक ताजा के रस में घोल कर पिलानी होगी। विगडे हुए पथ्य की उन्माद अवस्था प्रभृति प्रकुपित वायु को पांच मिनट में शान्त कर देगी। फिर भी यथोचित एक-दो मात्रा और भी प्रयोग करना उचित होगा।

व्यवहार का लक्षस्थल—नूतन ज्वर अथवा उल्लिखित अवस्था की नवीन अवस्था में ही इसका प्रयोग सफल होगा। पथ्य सेवन के ३ घंटा के अन्दर इसका प्रयोग जादू के समान असर दिखाई देता है।

अगर अद्रक न मिले तो गर्म पानी के साथ भी शीघ्रता के विचार से एक मात्रा दी जा सकती है। नूतन ज्वर में जो तीसरा दिन बीत चुका हो उसमें भी दो-तीन मात्रा तीन घंटा के अन्तर से प्रयोग करने से रोग भोग काल कम कर देगी। अथवा ज्वर निरामय (रेमीसन) भी कर देगी। किसी ज्वरी को 'वृहशखवटी' प्रयोग करने से अगर औषधि न पचे, उल्टी होजाय तो समझ लेना होगा कि इस रोगी का आन्तरिक ज्वर प्रकाशित होना अवश्यम्भावी है। फिर भी सन्देह मिटाने के लिए एक दो मात्रा और देकर भी परीक्षा करली जाय।

भुवनेश्वरी वटी—

यह हमारी वशानुगत अति साधारण औषधि है। इसको पाचक भी कहते हैं। साधारणत कहने से अन्न को परिपाक करने में सहायक को 'पाचक' कहा जाता है। मगर पाचक का अर्थ हम उस सीमा तक लगाना चाहते हैं कि एक भोजन दूषित होकर रस, रक्त इत्यादि सप्त धातु में जहा तक पहुँच चुका है वहा तक पहुँच कर दूषित वस्तु को परिपाक करदे अथवा कोई उपाय से दूषित वस्तु से शरीर को मुक्त करदे उसी को पाचक अर्थात् रोग को पचाने वाला कहना चाहते हैं। हमारी भुवनेश्वरी वटी कुछ हद तक आगे बढ़ कर दोष को शुद्ध करने की शक्ति रखती है। इसका निर्माण अति अल्प व्यय में होता है।

बड़ी हरड़े आमला सूखा हुआ
बहेड़ा —यह सब निर्बीज
सौफ अजवायन सेंधानमक
—समान भाग

—सब लेकर धोकर के चार घटा थोडे पानी में फूलने के लिए छोड दे। फूलने के बाद बारीक पीस डाले, जङ्गली वेर के आकार की गोली बना दे। पीसते समय अगर गीला होजाय और गोली बनाने में बाधा पहुँचे तो धूप में सुखा करके गोली बनाई जा सकती है। बनी हुई गोली को तब तक धूप में रखे जब तक बर्तन हिलाने से गोली एक ओर से दूसरी ओर नहीं भागे। जब गोलिया सूख जाय और दबाने से दब जाय और फूटे भी नही तब उन्हे शीशी में रखले। ये गोलिया प्रात ही बनाना अच्छा होता है जिससे दिन की धूप में सुखा कर सायं काल तक तय्यार हो जावे। नहीं तो बाहर रात को रह जाने से नमक की मात्रा कम होजाने की सम्भावना रहती है।

व्यवहार—एलकालिन मिक्श्चर की जगह पर एक मात्रा ताजा या गरम जल के साथ, दो या तीन घटा के अन्तर पर अथवा रोगी की अवस्था के अनुसार दूसरी औषधि के अन्तर भेद में बराबर व्यवहार कर सकते हैं।

पित्त प्रधान रोगी में ताजा जल के साथ, वायु प्रकुपित रोगी को गर्म जल के साथ दिया जाय, एव कफ प्रधान रोगी को इसका व्यवहार नहीं कराना चाहिए।

किसी भी तरह की पेट की गड़बड़ी, गर्मी, अनपच, प्यास, कै, कोष्ठकाठिन्य, अजीर्ण, नवीन अतिसार, पेट का दर्द इत्यादि शारीरिक साधारण

उपद्रव तथा विशूचिका रोग मे वमन और पिपासा मे इसका व्यवहार करने से इसका चमत्कारिक प्रभाव शीघ्र ही प्रतीत हो जायगा। विशूचिका (कौलरा) मे जब-जब प्यास लगे तब-तब और जब-जब कै हो तब-तब कै होने के बाद एक गोली चबा कर खिलाना और गरम जल ठडा किया हुआ जितना मन चाहे पिलाना चाहिए। यानी उल्टी होजाने की परवाह न करे। दवा कुछ पानी को अवश्य पचा देगी। अन्त मे पानी पचकर ही रहेगा और कै बन्द हो जायगी। विशूचिका मे इस गोली के खाने वाले को सैलाइन अपरेटस से भेट होने की आवश्यकता न होगी। ये गोलियां उतना पानी अवश्य पचा देंगी जितना पानी अपरेटस द्वारा शरीर में प्रवेश कराना आवश्यक होता है। मैं विशूचिका रोगी को एक या दो बार ग्लूकोज साल्यूसन ५०% ५० सी. सी. शिरा मध्ये तथा कोरामीन, पसीना चलने पर एट्रोपीन पेशी मध्ये देता हूँ। मुख द्वारा सल्फगोआनीडिन तथा भुवनेश्वरी वटी, दस्त अधिक होने से कोलोरोडीन हरा पुदीना यथा योग प्रयोग करता हूँ। उल्लिखित भुवनश्वेरी वटी की सहायता से वमन और तृष्णा को शीघ्र दमन करा देता हूँ। इस बात को अवश्य स्मरण रखा जाय कि कफाधिक्य अवस्था में इसका व्यवहार सफल नहीं होगा। चूंकि रोगी को गोली खाना पसन्द नहीं पडेगा। बल्कि यह गोली चबायेगा ही नहीं। तब उसको मैं सल्फागोआनिडिन के बदले सल्फा-डायजोजिन की गोली खिलाकर आशातीत फल पाता हूँ। हमने इस गोली के सहारे एक भी रोगी को लाभ करने में धोका नहीं पाया है। सल्फाड्ग प्रचलित नहीं हुआ था तब तक हम और-और अवस्थानुसार आयुर्वेद औषध एवं कौलराडाइन (ग्रग्राही) और इसी गोली द्वारा कौलरा रोगी की चिकित्सा करके सफल होते थे। परन्तु पहले इंजैक्शन व्यवहार नहीं करने के कारण रोगी को भरोसा कम हो पाता था।

एक साल से कम आयु वाले बच्चे को ये बटी न दे। कफजन्य अवस्था मे इसका व्यवहार बेकार होगा। पेट के कीड़ा व कृमि और किसी भी तरह की बैकटेरिया पर इसका पूरा प्रभाव होता है। यदि चाहे तो कोई सूक्ष्म प्रदर्शक यन्त्रधारी इसकी परीक्षा कर सकते है। ये वटी खाने मे भी रोचक हैं। ख्याल रखे कि यकृत-विकृतियुक्त रोगी को इसका व्यवहार न करावे।

:: पृष्ठ ३७६ का शेषांश ::

—इन्हे कूट कपडछान कर शीशी में भरले। जब भी जी मे भारापन अनुभव हो सूंघले।

इस प्रयोग द्वारा मैंने २०-२० वर्ष का हिस्टीरिया रोग दूर किया है। रोगी को पहिले इस साधारण औषधि का परिचय न दिया जाय बाद मे चाहे दे दिया जाय।

देशी सेरीडोन—

अर्क मूलत्वक (छाया मे सुखाई हुई)

बदरी वृक्षत्वक् (छाया में सुखाई हुई)

—इन दोनो को समान भाग लेकर कूट कपड़छान कर शीशी मे भरले।

मात्रा—१ माशा।

अनुपान—सम शीतोष्ण जल।

किसी भी प्रकार की अकस्मात् उत्पन्न हुई पीड़ाऐ इससे तत्काल शांत हो जाती है और सेरीडोन से होने वाला जैसा हृदयावसाद नहीं होता।

वैद्य शिव सहाय द्विवेदी, व्या. शास्त्री, साहित्य भूषण,

'कोविद' साहित्यायुर्वेदाचार्य B I. M. S.

अध्यक्ष—जिलाबोर्ड चिकित्सालय, सेहगो (रायबरेली)
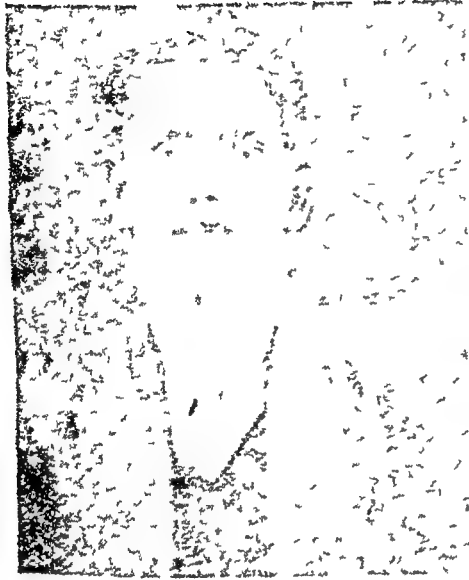
"आपने गवर्नमेन्ट सस्कृत कालेज बनारस से व्याकरण शास्त्री उत्तीर्ण करके आयुर्वेदाध्ययन प्रारम्भ किया, साहित्याचार्य 'आदि उपाधिया भी इसी बीच प्राप्त की। आयुर्वेदाचार्य श्री प ज्ञानेन्द्रदत्त जी त्रिपाठी वैद्य के संरक्षकत्व में क्रियात्मक अभ्यास करते हुए बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन यू पी. से बी आई एम एस की उपाधि चरक मे विशेष योग्यता सहित प्राप्त की। सस्कृत भाषा मर्मज्ञ विद्वा न एव कवि हैं। आयुर्वेद विषयक कवितायें समय समय धन्वन्तरि आदि पत्र-पत्रिकाओ में प्रकाशित होती रहती है। सन् १९४७ से अब तक जिलाबोर्ड सचालित चिकित्सालय मे चिकित्सक हैं।"

—सम्पादक।

मन्थर ज्वर—

संजीवनी वटी	१ नग
गोदन्तीहरतालभस्म	३ रत्ती
प्रवालपिष्टी	२ रत्ती
जहरमोहराखताई पिष्टी	२ रत्ती
अमृतासत्व	२ रत्ती

—इसकी ३ मात्रा बनावे और प्रातः, मध्याह्न, सायं मधु से दे।

पथ्य—७-८ लौंग २ सेर पानी मे खूब उबालकर पीने को थोड़ा-थोड़ा देते रहे।

अन्न का परित्याग करके—मुसम्बी का रस, बीदाना अनार, सेव, अगूर, मुनक्का, किशमिश, साबूदाना, दूध (आधा पानी मिला) का सेवन करावे।

गुण—आबाल वृद्ध, गर्भवती आदि प्रत्येक के लिए सामान्यरूप से निश्चित् लाभदायक है।

बालशोष पर—

गोदन्ती भस्म	३ रत्ती
जहरमोहरा खताई पिष्टी	२ रत्ती
प्रवालभस्म	१ रत्ती

—इसकी ३ मात्रा बनावे। १-१ मात्रा ३ बार में मा के दूध या शहद से देवे। प्रात' सायं २-२ चम्मच गदही का दूध पिला दिया करे, आशातीत सफलता मिलती है।

कुकुर कास—

मकाई की भुट्टी की राख	३ रत्ती
स्फटिका भस्म	१ रत्ती

—शेषांश पृष्ठ ३८७ पर।

धर्मरत्न श्री पं० भृगुनाथ जी पाठक आयुर्वेदाचार्य

चिकित्सिक-जिलाबोर्ड सब्सिडाइज्ड आयुर्वेदिक औषधालय, नवानगर (शाहाबाद)
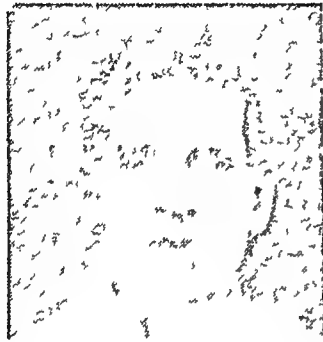
"श्री पाठक जी की पितृ भूमि आयर जिला शाहाबाद मे है। चिकित्सा कार्य परपितामह से लेकर अब तक चार पीढियो से तो निश्चित ही चला आ रहा है, उससे पूर्व आपको ज्ञात नही है। आप भी पितृव्य कार्य को बडे गौरव के साथ अपनाए हैं। यह परम्परा से अनुभव की धारा अबाध गति से चली आ रही है। इस समय जिला बोर्ड के चिकित्सालय में प्रधान वैद्य के पद पर कार्य करते हैं। आपके कहे अनुसार निम्न योग शत-प्रतिशत अनुभूत हैं और निर्भय होकर वर्ते जा सकते हैं।" —सम्पादक।

उदरान्तक सुधा—

१. गन्धकाम्ल ½ औंस
२. पिपरमेंट अजमायन सत कपूर
—प्रत्येक ½ औंस
—(तीनो समभाग मे गलाया हुआ)
३. पुदीना सत ½ औंस

निर्माण विधि—पहले इन तीनों को १ काली शीशी मे भर कर १५ मिनट तक हिलाये, एक दिल हो जाने पर २२ औंस की बोतल मे भर कर शेष भाग को परिश्रुत जल से भरदे और ५-७ बार हिलाकर मजबूत डाट लगादे।

गुण—कैसा ही उदरशूल हो, पांच मिनट मे अच्छा हो जायगा।।

मलेरिया पर—

भाग ½ तोला
शुद्ध नौसादर आवश्यकतानुसार

निर्माण विधि—पहले भांग को साफ करले, पश्चात् खरल में डालकर पानी के योग से अच्छी तरह घोट कर बराबर की तीन गोलिया बनाले, नौसादर को तीन गुना जल मे घोलकर वस्त्र-पूत करले पश्चात् पीतल की कलईदार कड़ाही मे रखकर तीव्र अग्नि से वारि-शोषण करले, नौसादर शुद्ध रूप मे पात्र तल मे लगा हुआ मिलेगा। उसे चाकू से खुरच कर निकाल ले, इसी मे उक्त गोलियों को लिटाकर बुखार आने से ३ घण्टा पहले से १-१ घण्टा पर ठंडा जल के साथ देना प्रारम्भ करे, इससे मलेरिया बुखार हमेशा के लिए चला जाता है। परीक्षित है।

नोट—दवा देने से पहले किसी रेचक औषधि से पेट साफ करले।

विशूचिका नाशक—

शुद्ध नवसादर सफेद जीरा
काली मिर्च सैधानमक

जवाखार काला नमक

—प्रत्येक ३-३ माशा

आक के फूल २ तोला

निर्माण विधि—उपरोक्त सभी औषधियों को खरल में अच्छी तरह से कूटकर जल के योग से चने बराबर गोली बनाले।

अनुपान—गुलाब जल के साथ दें।

गुण—इससे हैजे के रोगी शर्त लगाकर अच्छे किये जा सकते हैं। पेट दर्द में भी गरम पानी के साथ देने से आश्चर्यजनक लाभ करती है। परीक्षित है।

बाल कास पर—

तुलसी के पत्तों का रस	२॥ तोला
शहद	५ तोला
अद्रक का रस	१। तोला
अजवायन का चूर्ण	१। तोला

निर्माण विधि—इन सभी दवाओ को एकत्र कर बोतल में भरकर मजबूत डाट लगाकर १५ दिन तक रखदे, बाद मे छानकर अवस्था तथा बलाबल के अनुसार १० बूंद से ३० बूंद की मात्रा में प्रयोग करे।

गुण—इससे बच्चो की खांसी अविलम्ब दूर हो जाती है। परीक्षित है।

श्वेत कुष्ठ पर सफल प्रयोग—

कुटकी कसीस तुलसीपत्र

—तीनों को जल के योग से महीन पीस कर प्रति दिन रुग्ण स्थान पर लेप करना तथा रात्रि मे गैरिक को जल से पीस कर लगाना चाहिए। परीक्षित है।

गुण—इसका कुछ दिन लगातार व्यवहार करने से अवश्यमेव श्वेतकुष्ठ रोग से मुक्ति मिल जाती है, परन्तु संतोष और धैर्य के साथ इसे कुछ अधिक दिन सेवन करना पड़ता है, क्यों कि यह बहुत असाध्य तथा भयानक रोग है।

:: पृष्ठ ३८५ का शेषांश ::

टंकण भस्म १ रत्ती

—ऐसी ३ मात्रा दिन में तीन बार शहद से देने से निश्चित लाभ होता है।

बाल यकृत् वृद्धि—

कालमेघ चूर्ण	३ रत्ती
शुद्ध नृसार	२ रत्ती
शङ्ख भस्म	२ रत्ती

—इसकी ३ मात्रा बनावे। १-१ मात्रा दिन मे तीन बार घृतकुमारी स्वरस के साथ देवें। दिन मे दो बार एक-एक चम्मच गोमूत्र भी पिलावे। अन्न बिलकुल न देवें, दूध एवं फलों का सेवन करावें।

कभी-कभी बच्चों का मूत्र सफेद वर्ण का चूना मिला पानी जैसा गदला होकर भूमि में जम जाता है। "अजीर्ण प्रभवे रोगे मूत्रं तण्डुल तोयवत्" इस अवस्था मे भी उपरोक्त योग केवल शहद या मां के दूध मे देने से तुरन्त ही लाभ करता है।

खुजली—

कच्ची फिटकिरी	१ तोला
गन्धक आमलासार	१ तोला

—दोनो को खूब महीन पीसकर १० तोला नारियल के तैल मे लगाने से खुजली, फुंसी, गंज आदि मे लाभ होता है।

आयुर्वेद विद्वान् डा. के. पी. वर्धन भिषग्

व्यवस्थापक—श्री रामकृष्ण आयुर्वेदाश्रम, गद्वाल (आन्ध्र)

"आपका जन्म आन्ध्र प्रदेश में महबूब नगर जिला गद्वाल मे हुआ। उस्मानिया यूनीवर्सिटी से बी ए की डिग्री प्राप्त की। हिन्दी में आप हेदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा की 'भूषण' की उपाधि रखते हैं। श्री पं. तिरुवेंकटाचार्य आयुर्वेदाचार्य वाइस प्रिंसपल प्रभुत्व आयुर्वेद कालेज हैदराबाद आपके वैद्य गुरु हैं। नि. भा विद्यापीठ से भिषग् परीक्षा उत्तीर्ण की। आंध्र आयुर्वेद विद्यापीठ विजयवाडा से 'विद्वान्' परीक्षा पास की। आयुर्वेद के ठोस विद्वान् एव सेवक है। १९४८ मे आपने श्री रामकृष्ण आयुर्वेद आश्रम की स्थापना की जिसके व्यवस्थापक हैं। आप अनेक सस्थाओ के सदस्य एव संचालक हैं, औषधि निर्माण में आप कुशल हैं। आपके सभी योग सिद्ध एव अनुभूत है, वैद्य वन्धु उनकी भेंट स्वीकार करें।" —सम्पादक।

योनिशूल—

एक दिन मेरे परिचित एक व्यक्ति पाठशाला मे भाग कर आये और बडे उद्वेग से कहने लगे कि मास्टर जी ! मेरी पत्नी कुछ घण्टो से पेट के शूल से बिल्कुल तड़प रही है। कुछ मामूली घरेलू इलाज करने पर भी शूल शमन नहीं हुआ। आप शीघ्र पधारने की कृपा करियेगा। मैंने उनसे कहा अच्छा आप जाइए मैं अभी आया, उनके जाने के कुछ ही मिनटो मे थोडी बहुत शूल की औषधियो की डिब्बियां जेब मे डालकर मैं उनके यहा पहुचा। उनके घर मे प्रवेश करने वाला ही था कि घर मे झुण्ड के झुण्ड नर नारी खडे थे और कुछ श्वास चल रहा था। मैं झट से लौट कर पाठशाला पहुंचा दस पन्द्रह मिनटो के अन्दर ही फिर वे ही महाशय उसी लिए पधारे और मुझे ले जाने के लिए हठ करने लगे, मैंने बहुत कुछ कहा फिर भी उन्होने एक नहीं सुनी। आखिर मुझे हार कर जाना पड़ा।

एक ३०, ३२ साल की युवती बिल्कुल बैचेन सी तड़प-तड़प कर रो रही है। और पूछने पर पेट का शूल बोली। मुझे विश्वास न होने पर उनको अन्दर ले जाकर पूछा "माता जी आपको शूल का वेग पेट के ऊपरी भाग से नीचे की ओर आता है अथवा नीचे से ऊपर जाता है। "नीचे से ऊपर" आतुर ने कहा। मूत्र मार्ग से तो नहीं माता जी ? कुछ शर्माती हुई "बिल्कुल जोर से मेख लगाए जैसे" महिला ने जवाब दिया। विचार करने पर मालूम हुआ वह तीन माह की गर्भवती है। मेरे सशय का निदान खरा निकला, वह 'योनि शूल' था।

मै कुछ शूलघ्न चूर्ण देही रहा था बाजू मे बैठे गाव के छोटे मोटे वैद्य और दाई Midwife कहने लगे 'यह दवा का इलाज मालिस से शमन होने का नहीं है वैद्यराज ! उनके उत्तर मे मेरे मुख से झट कड़े शब्द निकले 'कुछ भी हो अगर यह साध्य ही है तो अवश्य ही पांच मिनट के अन्दर शूलशमन होना चाहिए अगर नहीं तो खैर नहीं।'

अतः मैंने झट लेपन पूरा करके बर्ति एक दाई के हाथ मे देकर योनि मे रखने की सलाह दी। उसने कमाल कर दिया !

शीघ्र ही वांछित सिद्धि प्राप्त हुई। भगवान् की कृपा से तीन चार मिनट में शूल का वेग रुक गया और रोगी चैन की सांस भरने लगी। फिर क्या कहना, सब के मुख पर उंगलिया चढ़ गईं और जादू समझने लग गये।

एक मेरे मित्र रास्ते में मुझसे मिले और अपने घर जाने का आग्रह किया। मैं जाकर देखता हूँ तो २८ साल की युवती योनिशूल से तड़प-तड़प कर रो रही थी। तीन दिन से दिन-रात रोगी और उसके सारे कुटम्ब को चैन नहीं, नींद हराम थी। पाच दस मिनट में एक बार तीव्रता से वेग आता था जैसा कि कोई शूल लेकर योनि में भोंक रहा है, दर्द के मारे बेसुध होती थी। एलोपैथिक डाक्टर ने पैनसिलीन की कई सूची दी थीं और शराब की वत्तिया योनि मे लगातार चढ़ाते ही थे। बाधा में कोई अन्तर नहीं।

मैंने देखते ही कह दिया कोई हानि नहीं, कुछ चिंता नहीं, भगवान् चाहेंगे अभी कुछ मिनटों में बाधा शमन होजायगी। यह कहकर मैंने अपने आतुरालय से वर्ति तैयार करवा कर भेज दीं।

मैं जब दूसरे सुबह विजिट पर गया तो कुटम्ब के सब विह्वल होकर कहने लगे, वैद्यराज वर्ति प्रयोग करने के कुछ ही मिनटों में रोगी लेट कर खर्राटे लगाने लगी और हमने भी कई दिन की थकान दूर कर डाली। रोगी के चहरे पर चैन और शांति की लहर दौड़ रही थी। एक ही वर्ति से वह रोगी से निरोगी होगई। फिर से प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं हुई।

मैंने उदाहरणार्थ दो केसो का उल्लेख किया है योनि के कई प्रकार के दुष्ट रोगो मे अर्थात् कंडू, शूल, क्रिमि, कमलावरण आदि में यह योग उपयोग होता है और अशातीत लाभ प्रतीत होता है।

आओ पाठक हम इस अद्भुत "योनी बम" का गुर खोल दें।

यह कोई नया योग नहीं है परन्तु अनुभव में नया अवश्य होगा।

अरंड बीज (छिले, अर्थात् छिलका रहित) ५ नग

नीम की गुठलिया ५ नग

नीम की कोपलियां (कोमल पत्ते) १ तोला

—दोनो बीजों को पहले खूब पीसे, नीम की कोपलियों को बारीक पीसकर दोनो को मिलाकर थोड़ा गरम पानी डालकर खूब पीसकर वय. के अनुसार अंगूठे जैसी मोटी ६ अंगुल की वर्त्ति कपड़े से बनाकर स्प्रिट मे भिगोकर ऊपर औषधि लेप दो, वर्त्ति को योनी भाग में प्रयोग करें।

नोट—योनी विकृति मे इस वर्त्ति के साथ क्षीरकल्याण घृत सेवन कराना विशेष लाभकारी है।

कुकुन्दर—

यह हमारे बन्धुओं का कौटुम्बिक योग है, बच्चे के कुकुन्दर मे अद्भुत गुणकारी है हमारे यहां कई लोग इस दवा के लिए आया करते हैं। योग सरल है।

पीतल के थाल मे आधा माशा नौसादर का टुकड़ा रखकर थोड़ा पानी डालकर हथेली से घिसते जायें नीले वर्ण का कफ निकलता जायगा। नौसादर पूरा गल जाने पर पूरी दवा को एक चौड़े मुंह की शीशी या सीप मे जतन कर रखले। टिन की डिब्बी मे न रखें, काट देगा और दवा खराब हो जायगी। शिशुओ को दोपहर मे स्नान कराने के बाद आधी रत्तीभर प्रत्येक आंख मे स्वच्छ अगुली से रखे। दवा सूख जाने पर माता के स्तन्य दुग्ध से गीला करले। दो-तीन बार लगाने पर आख के नीचे आया हुआ दुर्मास नष्ट होजाता है। रोज एक बार से अधिक सेवन न करे। यह किसी तरह हानिकारक नहीं। लाली, कण्डु, दुर्मास, श्लेष्म के पर्दो आदि मे हितकर है।

—शेषांश पृ ३६१ पर।

वैद्य श्री दीनदयाल मिश्र 'दिनेश'

गोंदिया (म. प्र.)

'मिश्र जी आयुर्वेद के प्रकाण्ड विद्वान हैं। पूज्य श्री छागाणी जी, एलिचपुर के श्री गोपाल कृष्ण जी व अकोला निवासी श्री शिव-गुलाम जी पाण्डेय आपके प्रत्यक्ष आयुर्वेद-ज्ञान के गुरु है। आयुर्वेदिक कालेज झासी से आपने आधुनिक दन्त-नेत्र-शल्य-सूचीवेधादि का ज्ञान लिया। आप कवि, सगीतज्ञ, चित्रकार एव फोटो ग्राफरी मे भी सिद्ध हस्त हैं। आपके पिता जी अनेक विद्याओ के आचार्य, तपोनिष्ठ एव आत्मवान् पुरुष थे, उन्ही के तप एव आशीर्वाद से चिकित्सक बनने का अवसर प्राप्त हुआ है। सफल चिकित्सक को जिन गुणो की आवश्यकता होती है आपमे दे सब गुण विद्यमान है। आपके तीन सिद्ध अनुभूत प्रयोग यहा प्रेषित कर रहे हैं।"

—सम्पादक।
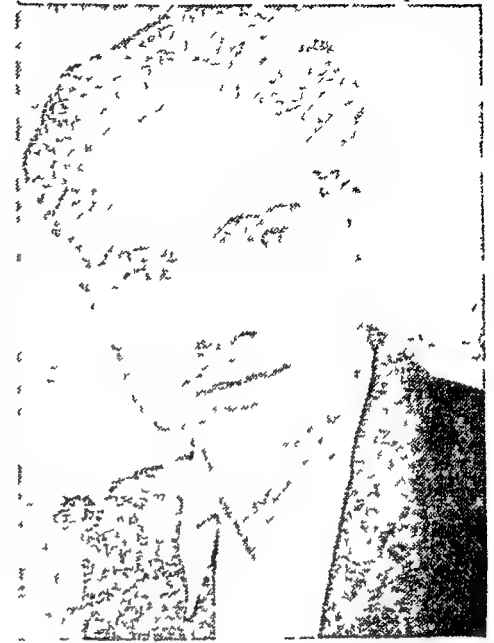
धीसारथी—

कुलिंजन जटामांसी तगर की जड़
—प्रत्येक २॥-२॥ तोला

—तीनो को कूट कर कपड़ छान करे। पश्चात्—

यशद् भस्म	३ माशा
स्वर्णमाक्षिक भस्म	३ माशा

—मिलाकर ब्रह्मी स्वरस पांच तोला, अथवा बीस तोला सूखी ब्राह्मी को १६० तोला जल में क्वथित कर अष्टमांश क्वाथ बनाले। इस क्वाथ से उपरोक्त मिश्रण को पत्थर के खरल मे घोटकर सूखा चूर्ण बना शीशी मे रखले।

मात्रा—३ माशे से ६ माशे तक। पूर्ण वयस्को के लिए है।

गुण—स्मृतिवर्धक, वातनाशक, उन्माद, अपस्मार कम्प, मनोदौर्बल्य निद्रानाश, भ्रम, मानसिक आघात, हाथ-पैरो मे ऐठन, सान्निपातिक प्रलाप, हाईब्लडप्रेशर आदि पर उपयुक्त है। दिन मे तीन बार शहद से देना चाहिए।

ओजस्कर—

वंशलोचन	१ तोला
शिलाजीत	६ माशा

लौह भस्म नाग भस्म वङ्गभस्म
यशद् भस्म स्वर्णमाक्षिक भस्म
कपर्दिक भस्म रस सिंदूर
—प्रत्येक १-१ माशा

—इन सबका मिश्रण बनाले।

अश्वगधा शतावरी गोखुरु बड़ा
—प्रत्येक २-२ तोला

—इन तीनो को मोटा कूटकर ४० तोला जल मे क्वाथ करे। अष्टमांश क्वाथ उतार ले। इस क्वाथ से उपरोक्त मिश्रण को पत्थर के खरल मे घोटकर सूखा चूर्ण बनाले।

मात्रा—१ माशे से १॥ माशे तक एक बार। इस प्रमाण से दिन मे दो या तीन बार भी दे सकते हैं। बलाबल देख कर दें।

अनुपान—मक्खन १ तोला, मिश्री आधा तोला, शहद पाव तोला तीनों को एकत्रित करके एक खुराक में, वयस्कों को इसी प्रमाण से देवे।

गुण—किसी भी रोग के बाद की निर्बलता पर अप्रतिभ शक्तिवर्धक है। शरीर के सभी अवयवों को पुष्ट करता है। बल, ओज, स्वर, कृशता, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र आदि सभी को पुष्टिकर होने से शीघ्र ही स्वास्थ्य सुधरने लगता है।

स्तम्भनी—

लौंग जावित्री जायफल
अकरकरा सुवर्ण माक्षिक
गिलोय सत लोबान कौड़ी
—प्रत्येक २-२ माशा

केशर	४ माशा
कस्तूरी	४॥ रत्ती
कपूर	४॥ रत्ती

—इन सबको महीन करके एकत्रित करले पश्चात् कौंच की जड़ के रस में घोटकर २-२ रत्ती की गोली बनालें।

मात्रा—१ गोली से २ गोली तक, दिन में दो बार दूध के साथ।

गुण—यह योग मादक द्रव्यों से रहित है। फिर भी कामोत्तेजक, स्तम्भक, शक्तिवर्धक है।

:: पृष्ठ ३८६ का शेषांश ::

प्रदर नाशक—

प्रवाल भस्म	४ रत्ती
स्वर्णमौक्तिक	२ रत्ती
स्वर्ण गेरू	४ रत्ती
यष्टिमधु	१२ रत्ती

मात्रा—दो पुड़िया मधु के साथ।

पथ्य—पुराने चावल, मूंग की दाल, पालक, तक्र आहार दे।

:: पृष्ठ ३६२ का शेषांश। ::

पागल कुत्ते के काटने पर—

नागार्जुन बूटी (छोटी दुद्धी) का पचांग दो तोला, ६ काली मिर्च के साथ पीसकर पिलाने से कुत्ते का विष दूर होता है। काटे स्थान पर भी इस दवा को मिर्च के साथ पीसकर लेप कर देना चाहिए। एक हफ्ते तक दवा का सेवन करना चाहिए। कुत्ते के विष के अलावा यह दवा सियार, बन्दर के काटे पर भी अच्छा लाभ करती है।

वैद्यरत्न श्री भगवान सिंह गौतम

अध्यापक-जूनियर हाई स्कूल, अहिरगांव (सतना)

"आप स्कूल में अध्ययन कार्य करते हुए आयुर्वेद की सेवा में तत्पर रहते हैं। यही कारण है कि आपने अध्यापकी करते हुए आयुर्वेद रत्न किया। आपका निवास स्थान रामनाथपुर जिला गाजीपुर है। आपने स्व परमहंस योगिराज स्वामी विष्णु भगवान जी से आयुर्वेद का सक्रिय ज्ञान भी प्राप्त किया तथा जड़ी-बूटियों का अन्वेषण भी। आपके पुत्र श्री अम्बिका सिंह जी ने अमेरिका से अभी हाल में पी एच. डी की उपाधि प्राप्त की है। चार अनुभूत योग आपके यहा पर प्रेषित कर रहे हैं।"

—सम्पादक।

सर्पविष पर—

(१) २ तोला पथरचटा की जड़ और ६ काली मिर्च पीसकर पिलाने से भयङ्कर से भयङ्कर सर्प विष नष्ट होता है। यदि रोगी बेहोश हो गया हो तो यही दवा कान मे छोड़दे या इसकी जड़ कान मे डालकर पकड़े रहे। ५ मिनट के अन्दर रोगी चिल्लाने लगेगा, जब चिल्लाने लगे तो यह वायदा करवा ले कि मैंने छोड़ दिया। फिर जड़ को कान से निकाल ले, रोगी होश मे आ जायगा और विष बिलकुल दूर हो जायगा।

(२) गूमा (द्रोणपुष्पी) के पत्ते २ तोला, ६ काली मिर्च के साथ बटकर पिलाने से सर्प विष नष्ट होता है। यदि रोगी बेहोश हो तो कान में दवा छोड़ दे, होश मे आ जायगा।

(३) केला के तना का स्वरस १ पाव ६ काली मिर्च के साथ पिलाने से सर्पविष नष्ट होता है।

(४) सहदेवी बूटी का पचाग २ तोला, ६ काली मिर्च के साथ बटकर पिलाने से सर्पविष नष्ट होता है।

शीघ्र-प्रसवकर अव्यर्थ योग—

ऊट कटारे की जड़ उखाड़कर स्त्री के सिर पर (तालू पर) बांध दे, शीघ्र प्रसव हो जायगा। इतना स्मरण रखना चाहिये कि प्रसव हो जाने के बाद शीघ्र ही जड़ी खोलकर किसी जलाशय मे फेक देनी चाहिए, नहीं तो गर्भाशय भी बाहर आ जायगा।

बिच्छू विष पर अकसीर जड़ी—

सत्यानाशी की जड़ पुष्यनक्षत्र में उखाड़ कर रख ले और जिस व्यक्ति को बिच्छू ने काटा हो उसे देकर देखने को कहे और जहा तक विष चढ़ा हो, वहा तक कई बार जड़ी शरीर पर फेर दे। विष शीघ्र उतर जायगा।

(२) खाने का नमक बारीक पीसकर जल में घोलकर कई बार दोनो कानो मे डाले, चिल्लाता हुआ व्यक्ति भी शीघ्र हंसने लगेगा, काटे हुए स्थान पर घी शहद और चूना समभाग मिलाकर गाढ़ा लेप कर देना चाहिए।

—शेषांश पृष्ठ ३६१ पर।

वैद्य श्री रामधन शर्मा शास्त्री आयु. विशारद

आयुर्वेद काया कल्प चिकित्सा सदन, मदलौढ़ा मंडी (करनाल)

"आपकी संस्कृत शास्त्री की परीक्षा ब्रह्मचर्याश्रम भिवानी में पूर्ण हुई। कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्त्ता रहे हैं। समालखा आयुर्वेद मंडल के उपमंत्री हैं। आपका १५ वर्ष का चिकित्सानुभव है। निम्न लिखित प्रयोग आपने प्रकाशनार्थ प्रस्तुत किये हैं, पाठक लाभ उठावें।" —सम्पादक।
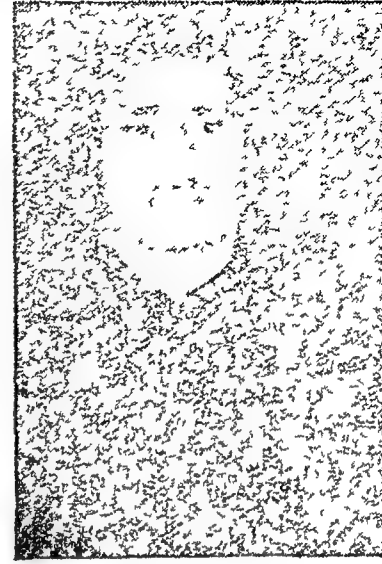
अर्श (बवासीर) नाशक—

सफेद संखिया — सेलखड़ी
रसकपूर —प्रत्येक ६-६ माशा
अकरकरा — १॥ माशा
नील — १॥ माशा
श्वेत फिटकरी की खील — ६ माशा

—सबको बारीक पीस कर शीशी में सुरक्षित रखे। आवश्यकता पड़ने पर एक लोहे की सलाई लेकर उसको पानी में भिगोकर दवा लगाकर मस्से की जड़ में चारों ओर लगावें, तीसरे दिन फिर लगावे सात दिन में मस्से कट जाते हैं।

पुल्टिस—

—यदि प्रथम योग के लगाने पर दर्द अधिक हो तो गेहूँ की मेदा और अलसी को कूटकर घी में पका कर मस्सों पर बांध दें, मस्से शीघ्र गल कर गिर जावेंगे।

मलहम—

जब मस्से कट जाते हैं तो जख्म होजाते हैं। तब इस मलहम को लगावे—

सफेदा काशगरी — १ तोला
कत्था — १ तोला
मुर्दासङ्ग — ६ माशा
कपूर — ३ माशा
सिंदूर — ६ माशा
कमेला (कबीला) — १ तोला
शुद्ध मक्खन — २॥ तोला

—सब दवाओं को बारीक पीस मक्खन मिलाकर घाव पर लगावे।

प्रयोग खाने का—

—एक मोटी मूली लेकर उसको नीचे से काट कर उसको खोखली कर लेवे और उसमें भैंसिया गुगल भर लेवे। उसको भूमि में गाढ़ दे फिर पानी डालते रहें। जब उसमें दोबारा पत्ते जम जाये तो उसको निकाल ले। बाद में ऊपर से साफ करके गुग्गुल समेत बारीक रगड़ कर चने प्रमाण गोली बनावे।

मात्रा—१-१ गोली प्रात. सायं पानी के साथ देवे। इससे कब्ज नष्ट होता है। खून बन्द होता है। परीक्षित है।

दमे का योग—

मेरे रिश्तेदार को १८ वर्ष से दमा था, मैंने

कई वैद्यों, हकीमों, डाक्टरों से इलाज कराया, परन्तु ठीक नहीं हुआ। पानीपत शहर के पास एक महात्मा ठहरा हुआ था। मैं उस को लेकर महात्मा के पास गया। उसने यह योग बतलाया जिसके प्रयोग से इस महावातक रोग से छुटकारा हो गया। उसी योग को मैं आप लोगों की सेवा में प्रेषित कर रहा हूँ। योग बना करके लाभ उठावें।

चिकित्सा—

अड़ूसे के पत्ते	निम्ब का कस (बुरादा)
झाड़ की जड़	तीन साल पुराना गुड़

—चारों आधा-आधा सेर

बड़ी हरड़	नग ८०

—इनको एक मटके मे डाल कर ४ सेर पानी भर देवें और मुंह बन्द करके चूल्हे पर चढावे। बेरी की लकड़ी पांच सेर की मन्दाग्नि से जलाते रहे और यह ध्यान रखे कि कभी मुंह न खुल जावे। फिर उतार कर ८० हरड़ निकाल लेवे बाकी सबको फेंक देवे। आधा सेर शहद मे हरड़ डाल देवे।

मात्रा—१-१ हरड़ प्रातः सायं काल शहद के साथ खावे।

पथ्य-४० दिन तक। बेसनी रोटी घी के साथ खावे।

प्लीहांतक पेय—

यह योग भी अनुभूत है जिसको मैं अपने औषधालय मे हर समय तैयार रखता हूँ। इससे कई हजार रोगी ठीक हो चुके हैं और इसकी मांग बहुत अधिक रहती है। कफ, खासी, श्वास, यकृनप्लीहा की अति उत्तम औषधि है। कानपुर, कलकत्ता, डिब्रूगढ़, गोहाटी बड़े-बड़े शहरों मे अधिक रोगी अच्छे हो गये हैं। मेरे गुरु जी ने इस योग को बतलाया था।

घी ग्वार का गूदा	१० सेर
सोडाबाई कार्ब	नौसादर
पांचो नमक	जवाखार

—प्रत्येक १-१ सेर

समुद्र झाग	आधा सेर

—इनको एक मटके मे डाल बन्द करके दो दिन रख देवे, फिर भभके के द्वारा अर्क खेंच लेवें।

पेट साफ करने लिए आधी छटाक अर्क ६ माशा साल्ट मिला कर देवे। प्लीहा के लिए आधी छटाक दवाई बराबर पानी मिलाकर देवे।

अपथ्य—गुड़, खटाई, तैल, मिर्च, चावल, गरिष्ठ पदार्थ खाने को न देवें। अति उत्तम योग है।

श्री पं. डा. टिकाराम सोना

महाजन, वैद्य विद्या विशारद

आर्याग्ल चिकित्सालय, वरणगांव पू० खा०

"आपने अग्रेजी पढ़ने के वाद श्री धूतपापेश्वर आयुर्वेद महाविद्यालय पनवेल में चार वर्ष आयुर्वेद का अध्ययन करके वैद्य विद्या विशारद की उपाधी प्राप्त की है। तत्पश्चात् आर्या ग्ल विद्यालय सातारा मे रहकर आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया है। आप उत्साही एवं यशस्वी अनुभविक चिकित्सक हैं।"

—सम्पादक।
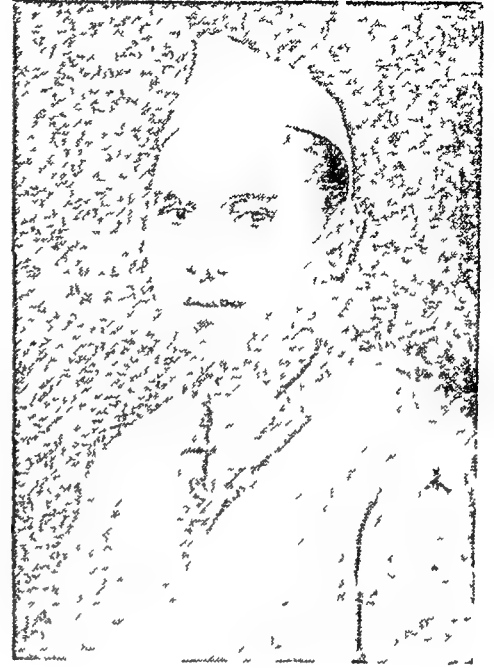
व्रणापहारि वटी—

शुद्ध पारद	१ तोला
शुद्ध गन्धक	२ तोला
शुद्ध मन.शिल	२ तोले
रसमाणिक्य	२ तोले
त्रिफला घन सत्व	२ तोले
शुद्ध गुग्गुल	६ तोले

—पहले पारद गन्धक की कज्जली करें। तथा गुग्गुल को निम्ब बीज का तैल डालकर खूब कूटे। फिर कज्जली में शुद्ध मनःशिला रस माणिक्य को मिलाकर खरल करे और गुग्गुल के साथ कूटकर मिलावे। पश्चात् त्रिफला काथ से ३ दिन खरल कर १-१ रत्ती की गोलियां वना लेवे।

मात्रा—१ से २ गोली मजिष्ठादि क्वाथ से दिन मे दो बार देवें।

गुण—व्रणों में पूय आना वन्द होकर शीघ्र रोपण होता है। यह वटी सेप्टिनिलम से भी अधिक गुणकारी है।

पथ्य—चावल, मूंग, गेहूँ और घी देवे। नमक न देवे।

केन्सर-हर मिश्रण—

सर्वेश्वर पर्पटी	६ माशा
शुद्ध हरताल	३ माशा
सुवर्ण भस्म	६ माशा
अभ्रकभस्म १००० पुटी	६ माशा
मुक्तापिष्टी	६ माशा
हीरा की भस्म	२ रत्ती
पन्नापिष्टी	३ माशा
अमृतासत्व	५ तोले

—सहिंजने की छाल के रस की ७ भावना देकर खरल कर २-२ रत्ती की गोलियां वना लेवे। दिन मे दो वार प्रातः सायं १-१ गोली शहद के साथ देकर फिर सहिंजने की छाल का स्वरस २-२ तोले पिलाते रहने मे शरीर के भीतर किसी भी स्थान मे उत्पन्न विद्रधि, व्रण, कैंसर आदि का निवारण हो जाता है।

पथ्य—सहिंजन की छाल मिलाकर उबाला हुआ जल पीने को देना चाहिए। एवं रोगी को केवल दूध पर रखना चाहिए। दूध को भी सहिंजन की छाल का चूर्ण और चौगुना जल मिला क्षीर पाक विधि से पका (दुग्धावशेष काथ कर) कर पिलाते रहना विशेष हितावह है।

त्वक् रोग हर मलहम—

नीम की पत्ती का रस	४ तोला
एरंड के पत्तो का रस	४ तोला
चमेली के पत्तो का रस	२ तोला
गाय का घी	१० तोला

—तीनो चीजों को मिलाकर आग पर पकावें, केवल घी शेष रह जाने पर उसमे २ तोले मोम डाल कर आग पर से उतार ले। बाद मे—

कज्जली	६ माशा
कत्था	६ माशा
सिंदूर	३ माशा
कपूर	३ माशा
शुद्ध तूतिया	१॥ माशा

—सबको पीसकर मिला दें।

गुण—इस मलहम के लगाने से नासूर, जले के घाव फोडे, फुन्सी, खाज, खुजली, दाद आदि चर्म रोग अच्छे हो जाते हैं।

उदररोगहर चूर्ण—

सौंठ सौंफ छोटी हरड़
सैंधा नमक सचल नमक
—प्रत्येक ५-५ तोला

चित्रक की छाल जवाखार सतनिम्बू
—प्रत्येक १।-१। तोला

—हरड को घी में भून लीजिये और सब चीजों को कूट पीसकर छानकर चूर्ण बनालें।

मात्रा—३ से ४ माशा तक पानी के साथ लें।

गुण—इससे मन्दाग्नि, आंव, अजीर्ण, आमातिसार तिल्ली, कब्जियत आदि दूर हो जाते हैं।

पायेरियाहर दन्तमञ्जन—

छाया मे सुखाई हुई नीम की और बबूल की कोमल पत्तियां
सैंधानमक माजूफल
सन्तरे के सूखे छिलके गेरु
—प्रत्येक ५-५ तोला

कालीमिर्च	२॥ तोला
शुद्ध फिटकरी	२॥ तोला
कपूर	१ तोला

—इन सब चीजों को कूट पीस छान कर रख लें।

गुण—इसका सुबह शाम मंजन करने से और रात को सोते समय इरिमेदादि तैल दांतों पर लगाने से दांतो का हिलना, खून, पीप जाना, दांतों मे दर्द आदि दूर होते हैं।

अर्शनाशक मलहम—

सफेद कत्था नीलाथोथा
अहिफेन बड़ी सुपारी कुचला
—प्रत्येक १-१ तोला

—सुपारी और नीलाथोथा पीसकर तवे पर डालकर आग में भून ले। इन सब चीजो को पीस छान कर १ छटांक ताजे मक्खन में मिलाकर तांबे के बर्तन में रखकर खूब घोटकर मलहम बना कर रख लें।

गुण—इसे सुबह शाम लगाने से मस्से में आराम हो जाता है। पथ्य से रहें।
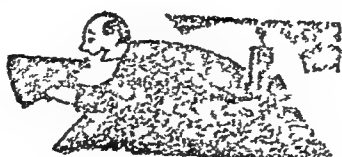
वैद्यराज पं. शिवदत्त शर्मा आयुर्वेद शास्त्री A. S V.

चिरंजीव सेवा सदन,

मु० छौंक पो० हाथरस जंक० (अलीगढ़)

"श्री वैद्य जी ने आयुर्वेद का प्रारम्भिक ज्ञान धन्वन्तरि के प्रधान सम्पादक वैद्य देवीशरण गर्ग द्वारा प्राप्त किया तत्पश्चात् आपने खुर्जा के लक्ष्मण दास आयुर्वेद विद्यालय में आयुर्वेद का विधिवत् अध्ययन किया। आप सार्वजनिक कार्यों मे भी सक्रिय एवं पूर्ण मनोयोग से भाग लेते हैं अतः निकटवर्ति जनता मे आप सुपरिचित नवयुवक हैं। आप गत १२-१४ वर्षों से चिकित्सा कार्य अपने ग्राम मे ही कर रहे हैं तथा एक योग्य चिकित्सक है। आशा है आपके प्रयोग भी अवश्य ही सफल प्रमाणित होगे।"

—सम्पादक।

उष्णवात—

उष्णवात (सुजाक) इतना कष्टप्रद रोग है कि इसका पूर्ण रूपेण जब कोप होजाता है तो अनेक औषधियों के सेवन से भी लाभ नहीं होता। मुझे इस रोग की चिकित्सा करने में अब तक के चिकित्सा काल में अनेकों बार असफलता देखने को मिली है। पश्चात् निम्नलिखित चिकित्सा क्रम जब से अपनाया तभी से इस रोग की चिकित्सा में मुझे असफलता का भास नहीं हुआ।

शुद्ध फिटकरी	१ तोला
सोना गेरू	१ तोला
सत बैरोजा	६ माशा
मिश्री	२॥ तोला

—वारीक कपड़छान करके सुरक्षित रखले।

सेवन विधि—आवश्यकता के समय ३ माशा दवा प्रातः सायं गौदुग्ध के साथ सेवन करावें। बढ़े हुए रोग में दिन में ३ बार दे सकते है।

पथ्य—दूध, चावल, एवं अलौनी रोटी दे।

अपथ्य—मिरच, गुड़, तैल, खटाई का निषेध रखे।

आवश्यक कर्म—मेरी सम्मति मे विना पिचकारी दिए उष्णवात रोगी को अनेक औषधियां देने पर भी कोई लाभ नहीं होता अतः सर्वोत्तम दवा पिचकारी देने के लिए नीचे लिख रहा हूँ—

—गरम जल आध सेर लेकर उसमे फिटकरी सफेद १ माशा वारीक पीस कर डाले तथा रोगी को सावधानी से बिठाल कर पिचकारी मे दवा भर लिंग छिद्र मे धीरे से प्रवेश करे। जिससे कि रोगी को अधिक कष्ट न हो तथा दवा भी धीरे धीरे (पिचकारी) प्रयोग करने से विशेष शुद्धि करने मे समर्थ होती है। इस क्रिया को कम से कम दिन मे २ बार अवश्य करना चाहिए। ध्यान रहे कि पिचकारी प्रयोग से पूर्व रोगी को मूत्र त्याग अवश्य करादे। इस तरह चिकित्सा करने से निश्चत् रूप से तीन दिन मे आशातीत लाभ होगा। यदि इन्जेशन चिकित्सा के पक्ष मे वैद्य एवं रोगी दोनों हो तो सोडियम पैनसलीन ४ लाख यू० की मात्रा नित्य ही एक इन्जेक्शन १ बार प्रयोग कर सकते हैं।

उदर शूल—

उदरशूल एक ऐसी व्याधि है जिसके रोगी अधिकाशत. प्रत्येक चिकित्सक के पास आते रहते है। कभी कभी साधारण उपचार से लाभ होते देखा गया है किन्तु किसी-किसी समय अनेको अव्यर्थ प्रयोग भी

निष्फल होते देखे गए हैं। ऐसी अवस्था में निम्न प्रयोग से चिकित्सक को विशेष सहायता मिलती है।

सत्व नींबू ३ माशा
कल्मी शोरा ६ माशा

—पृथक्-पृथक् बारीक पीसकर २॥ तोला मिश्री के शर्बत में मिलाकर कोरे शकोरे में डाल रोगी को पिलावे तो मेरा विश्वास है कि आप चकित रह जावेंगे कि दवा है या जादू। यदि लिखे अनुसार प्रयोग में कोई त्रुटि रहेगी तो प्रयोग सिद्धकर नहीं रहेगा। मक्कल शूल के अतिरिक्त प्रायः सभी उदरशूलों के लिये इसे उपयोगी समझें।

सर्व प्रदर हर योग—

अशोक छाल खैरसार ५ तोला
नागकेशर २॥ तोला
दम्बुलअखवान ७ तोला

—सबको मिलाकर वस्त्रपूत चूर्ण करें। आवश्यकता के समय ३ माशा दवा प्रातः सायं शीतकाल में शहद से तथा ग्रीष्म काल में शर्बत अंजवार में मिलाकर दें, ऊपर से निम्नांकित क्वाथ पिलावें।

देवदारु रसौत नागरमोथा
भिलावा शुद्ध बेलगिरी अड़ूसा के पत्ते
चिरायता लालचन्दन

—सब द्रव्य बराबर लेकर जौकुट करलें। २ तोला औषधि १२ छटांक जल में डालकर पकावें जब तीन छटांक शेष रहे तब छान कर थोड़ा शहद मिलाकर पिलावे।

गुण—इस प्रकार प्रयोग करने से रक्त-प्रदर नीला, पीला, शूल सहित सम्पूर्ण प्रदर दूर होते हैं। रोगी की अवस्थानुसार पथ्य पालन का आदेश करे। जीर्ण रोग में कुछ काल प्रतीक्षा करना आवश्यकीय है।

उपदंश हर योग—

यह योग मेरे क्षेत्र के एक वयोवृद्ध पंडित जी महोदय से प्राप्त हुआ है जिसे कि वे अनेकों वर्षों से निःशुल्क वितरण करते चले आरहे हैं। उन्हें भी यह किसी महात्मा द्वारा प्राप्त हुआ था साथ ही पैसा न लेने का आदेश भी था। किसी तरह यह प्रयोग मुझे प्राप्त होगया। यह मूल्यवान न होते हुए भी प्रशंसनीय है।

शीतलचीनी हरीजङ्गाल
पपरिया कत्था इलायची बड़ी

—सब सम भाग लेकर कपड़ छान कर पान के रस में घोट कर मटर समान गोली बनावे। प्रथम रोगी को विरेचन कराकर एक-एक गोली जल के साथ देने से १ सप्ताह में निश्चित् लाभ होते देखा गया है।

: पृष्ठ ४०० का शेषांश ::

में अधिक उत्तेजना पहुँचने से निद्रा न आती हो, तब निद्रा लाने के लिए इस वटी का प्रयोग किया जाता है। इसके सेवन से शांत निद्रा आ जाती है, तथा मस्तिष्क में रक्त का दबाव कम हो जाता है।

मधुमेहहर योग—

गुड़मार बूटी सोंठ जामुन की गिरी
—प्रत्येक ३-३ तोला
शुद्ध शिलाजीत १ तोला
फौलाद भस्म ६ माशा
स्वर्णवर्क या भस्म ६ माशा
मुलहठी सत्व ६ माशा
अनार के फूल अरबीगोंद २–२ माशा
कपूर ४ रत्ती

—खट्टे अनार के रस से मटर बराबर गोली बनाले।

मात्रा—१ से २ गोली बलाबल देख कर जल या खट्टे अनार के रस से देवे।

उपयोग—इस वटी के सेवन से मधुमेह में प्यास अधिक लगना और पेशाब में शक्कर आना, दोनों उपद्रव दूर होते हैं। पथ्य मधुमेहवत् देवे।

कविराज डा. वेदव्यासदत्त शास्त्री

एम. बी. एण्ड. एस. धन्वन्तरि
चिरंजीतपुरा, जालन्धर (पंजाब)

"शास्त्री जी प्रिंस यशवन्त राव हॉस्पीटल के भू० पू० प्रधान व कौंसलर हैं। नि भा आयु. महामण्डल से स्वर्णपदक प्राप्त योग्य चिकित्सक, लेखक एवं वक्ता हैं। क्षय संग्रहणी और कंठमाला के विशेषज्ञ हैं। आपने ऑल इण्डिया सब असिस्टेण्ट सर्जन कान्फ्रेन्स इन्दौर से प्रथम श्रेणी का प्रशंसापत्र प्राप्त किया है। धन्वन्तरि के पाठक आपसे सुपरचित ही हैं, क्योंकि आपके सारपूर्ण लेख एक लम्बे समय से धन्वन्तरि में यदा-कदा प्रकाशित होते रहे हैं। आपके ६ प्रयोग यहां प्रेषित हैं।" —सम्पादक।

अचिन्त्यशक्ति रस—

शुद्ध सोमल शुद्ध हरताल
शुद्ध हिंगुल —तीनों १-१ तोला

—सब मिलाकर १॥ सेर करेले के रस में खरल करने के पश्चात् १ माशा स्वर्णभस्म, १ माशा मौक्तिक भस्म या पिष्टी ३ माशा फौलाद मिलाकर फिर करेले के रस में घोट सरसों के दाने के बराबर गोली बनाले।

मात्रा—१ से २ गोली तक दिन में दो बार बलाबल देखकर सेवन करायें।

अनुपान एवं उपयोग—इस रसायन को श्वसनक सन्निपात, फुफ्फुस शोथ, श्वास, कास, कफज्वर और सन्निपात आदि में शक्कर के साथ देने से तुरन्त चमत्कारिक लाभ होता है। भोजन में केवल गौ दूध ही दें। अन्य भोजन नहीं देना चाहिए। रोग का वेग शान्त होने पर थोड़े दिनों तक प्रात सायं शृंग भस्म और अभ्रक भस्म १-१ रत्ती मिला मधु, घृत विषम या केवल घृत के साथ चटाना चाहिए। इसको शीतकाल में लगातार १ मास सेवन करने से मनुष्य का शरीर बल वर्ण अति उत्तम हो जाता है। इसके साथ दूध, घृत, रबड़ी आदि पौष्टिक पदार्थ खाने चाहिए।

क्षुधावर्धक रस—

शुद्ध पारद	गन्धक शुद्ध	टंकण फूला
सोंठ	काली मिर्च	पीपल
सज्जीखार	हरड	बहेड़ा
आंवला	चित्रक मूल	चव्य
पांचों नमक	डांसरिया (अभावे खट्टे बेर)	
अनारदाना		लौहभस्म
कपूर भीमसैनी	—सब समान भाग	

—पहले पारा, गन्धक की कज्जली बनालें, फिर लौहभस्म मिलावें, बाद में अन्य औषधियों का चूर्ण मिला, अम्लवेत के कषाय, अदरख स्वरस, निम्बू स्वरस, अजवायन क्वाथ की क्रमश. ३-३ भावना देकर चने के बराबर गोलियां बनालें, निम्बू स्वरस बिजौरा निम्बू का लें तो बहुत ही अच्छा है।

मात्रा—१ से २ गोली दिन २ से ३ बार जल के साथ दें।

उपयोग—इस रसायन का प्रयोग किसी भी रोग जनित अग्निमांद्य पर होता है। भूख शीघ्र लग जाती है। वातज, कफज, अग्निमांद्य, कोष्टबद्धता, अरुचि, उदर शूल, अपचन और आध्मान आदि विकार इस रसायन के सेवन से दूर हो जाता है एवं मुख मण्डल पर लाली

और स्फूर्ति आजाती है ।

मलेरिया वटी—

शुद्ध वर्किया हरताल	गौदन्ती भस्म
गिलोय सत्व	वंशलोचन
शीतलचीनी	छोटी इलायची

—प्रत्येक १-१ तोला

लाल फिटकिरी के फूला	३ तोला
सफेद फिटकिरी	२ तोला
करंज की गिरी	२ तोला
क्विनाइन बाई हाईड्रोक्लोराइड	८ माशा
गेरु	६ माशे

—इन्हे कूट पीस कर मिला लें, पश्चात् सहदेवी, नीम, तुलसी, करंज की हरी पत्तियो का स्वरस निकाल कर उसमे १२ घण्टे खरल करके चने के दाने के बराबर गोलिया बनाले ।

सेवन विधि—पाली के ज्वर मे १ गोली ज्वर आने के ४ घण्टे पहले और १ गोली २ घण्टे पहले शक्कर के साथ दे, अन्य ज्वरो मे दिन मे २ बार दूध के साथ दें। जिनको क्विनाइन सहन न होता हो, उनको दूध पिला कर देवे और ऐसे रोगियो को जीर्ण ज्वर एव मन्द ज्वर मे भोजन के पश्चात् देवे ।

उपयोग—यह बटी सर्व प्रकार के विषमज्वर, जिसमें दाह और ठण्ड रहती हो, ऐकाहिक द्वयाहिक, तृतीयक, चातुर्थिक आदि सब ज्वरों को नाश करती है, प्लीहा-वृद्धि को न्यून करती है और शरीर में शान्ति लाती है ।

वीर्यशोधक वटी—

सिंघाड़ा गिरी	वंशलोचन
अश्वगन्धसार (घनसत्व)	उदुम्बर घनसत्व

—प्रत्येक २-२ तोला

सफेद कत्था	८ तोला
चांदी के वर्क	त्रिवङ्गभस्म
प्रवालपिष्टी	शुद्ध शिलाजीत
गिलोयसत्व	—प्रत्येक १-१ तोला
कपूर देशी	३ माशा

—सबको यथविधि मिला वट-दुग्ध में रगड़ कर चने प्रमाण गोली बना लें ।

मात्रा—१ से २ गोली दिन मे २ बार दूध के साथ दे ।

उपयोग—यह वटी शुक्र में रहे हुए दूषित घटकों का शोधन करती है। उष्णता का शमन कर स्तम्भन शक्ति को बढाती है, तथा शुक्राशय और शुक्रवाहिनी के वातप्रकोप और शिथिलता को दूर करती है एवं इस वटी से सब प्रकार के प्रमेह, धातुदोष, मूत्ररोग, निर्बलता, आदि विकार दूर होकर शक्ति की वृद्धि होती है ।

सर्पगन्धादि वटी—

निर्माण विधि—५ सेर सर्पगन्धा के चूर्ण को ८ गुने जल मे क्वाथ करे। अष्टमांश जल शेष रहने पर वस्त्र से छान लेवे। पुनः उसमें चतुर्गुण जल डालकर दूसरी बार क्वाथ करें। चतुर्थांश शेष रहने पर छानकर दोनों को एकत्र करें। फिर उसे मन्दाग्नि पर पकाकर घनसत्व बनाले। घन लगभग ४० तोले होगा। इस घन के अनुसार खुरासानी अजवायन के पत्र का घन बना ले। फिर—

सर्पगन्धा घन	४० तोले
खुरासानी अजवायन घन	५ तोले
पिपलामूल का चूर्ण	५ तोले
चरस	२॥ तोले

—सब मिलाकर २-२ रत्ती की गोली बना लेवे। जल या दूध के साथ दे ।

मात्रा—१ से २ गोली बलाबल के अनुसार सोते समय जल या दूध के साथ दे ।

उपयोग—इस औषधि मे निद्राप्रद और रक्त दबाव शामक गुण हैं। जब किसी रोग विशेष से वेदना हो रही हो या शराब, उन्माद या मस्तिष्क

—शेषांश पृष्ठ ३६८ पर ।
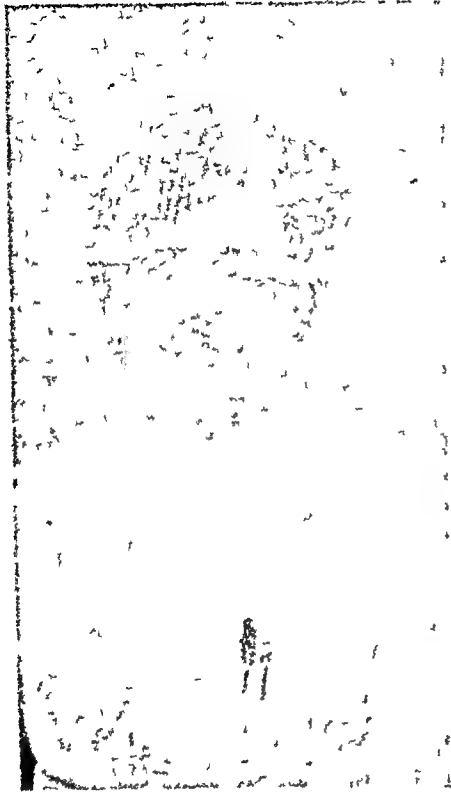
आचार्य

पं. शोभालाल हीरालाल शास्त्री

A. M. S.

प्रधान–चिकित्सक–श्री मोहोता औषधालय, हिंगनघाट (बंबई प्रांत)

"श्री आचार्य जी ने सस्कृत की मध्यमा कर बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के आयुर्वेद कालेज से ए. एन एस की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप प्रतिभाशाली विद्यार्थी रहे हैं तथा परीक्षाओं मे सर्वदा प्रथम श्रेणी प्राप्त की है। सफल व सर्वप्रिय चिकित्सक होने के साथ-साथ आप प्रतिभावान् लेखक भी हैं। आपको "जनपदोध्वस" शीर्षक निबंध पर अ भा आयुर्वेद महा सम्मेलन से प्रथम पुरस्कार तथा पदक प्राप्त हैं। आप म्यूनिसिपल औषधालय हिंगनघाट तथा पोद्दार औषधालय त्रिसाऊ के प्रधान चिकित्सक रह चुके हैं। आपके निम्न प्रयोग बहु-परीक्षित हैं, पाठक लाभ उठावें।" —सम्पादक।

मलावरोध—

रोगाः सर्वेऽपि मन्देऽग्नौ, सुतरामुदराणि च।
अजीर्णान्मलिनैश्चान्नैर्जायन्ते मलसंचयात्॥

अर्थात् प्रायः सभी रोग और विशेषकर उदर रोग अजीर्ण से और दूषित सडे बासी अन्न के सेवन से मलसंचय होकर उत्पन्न होते हैं। इसमें कोई संशय नहीं कि मनुष्य को रोग का सामना करने का अवसर पाय. तभी होता है जब उसका पेट खराब रहता है और विबन्ध रहता है अतएव माधवकार ने सर्व प्रथम सब रोगों की उत्पत्ति का कारण विविध प्रकार का अहित आहार विहार ही कहा है जैसे "सर्वेषामेव रोगाणा, निदान कुपिता मला। तत्प्रकोपस्यतु प्रोक्तं विविधाहित सेवनम्॥ अतः यदि मनुष्य को कब्ज न रहे शौच सदा होता रहे तो वह रोगाक्रान्त सहसा नहीं होगा। मैं संक्षेप मे इतना ही वर्णन कर अब मलावरोध दूर करने का अचूक अनुभूत प्रयोग लिख रहा हूँ। इस प्रयोग की सामान्यता पर दृष्टिपात न कर गुणों की ओर ध्यान देकर यदि प्रयोग मे लायेंगे तो अचूक रामबाण सिद्ध होगा।

गुलकन्द	२॥ तोला
सोनामुखी (सनाय पत्ती)	२॥ तोला
मुनक्का	२॥ तोला

विधि—प्रथम मुनक्का के बीज निकाल खरल मे डाल गुलकन्द के साथ घोट लेवे। जब दोनो मिल जाय उसमे सोनामुखी का कपडछान चूर्ण डालते जावे। प्रायः इतने अश मे २॥ या ३ तोला तक चूर्ण मिल जाता है और खरल का द्रव्य गोली बाधने लायक होजाता है। फिर बड़े बेर के समान गोली बना लेवे और एक काच की बरणी मे भर कर रख देवे।

सेवन विधि – रात को सोते समय १ से २ गोली कवोष्ण दूध के साथ देवे।

मात्रा व गुण—इससे प्रात शौच खुलकर साफ होता है प्रमाण अपने कोष्ठ की क्रूरता, मार्दवता के अनुपान से देवे। अधिक दस्त होने पर मात्रा कम करे, नहीं होवे तो मात्रा बढ़ा देवे। मेरा अनुभव है जिन व्यक्तियों को १ छटांक भर ऐरण्ड तैल देकर वेरेचन करवाते हैं उन्हे यह २ गोली देने से शौच साफ होता है पर थोड़ा समय याने ८, १० दिन सतत लेने से उन्हे लाभ प्रतीत होगा। सद्य उसी दिन क्रूर कोष्ठ वालो को लाभ नहीं होगा।

नोट—प्राय. जितने विरेचक प्रयोग हैं अधिकाश मे ऊष्ण हैं और मल को बलात् भेदन करते है उस दिन ही शौच साफ होगा जब विरेचन चूर्ण लेगें। यदि प्रतिदिन वे लेते है तो फिर विरेचन आत्मसातसा होकर कार्य नहीं करता है फिर अधिक तीक्ष्ण विरेचक की आवश्यकता होती है और कोष्ठ विगड़ जाता है। इस प्रयोग के सेवन से कोष्ठ मृदु रहता है और धीरे-धीरे आदत छोड़ते रहने से स्वतः शौच होता है, मृदु सारक है।

प्रवाहिका हर चूर्ण—

शतपुष्पा (सौंफ)	४ तोला
हरड़ छोटी एरण्ड तैल मे भुनी	२ तोला
शुण्ठी चूर्ण	२ तोला
शर्करा	८ तोला

विधि—प्रथम हरड़ भुनी का चूर्ण कर शेप सब चूर्ण व शर्करा मिला लेवे।

मात्रा—४ माशा से ६ माशा तक।

अनुपान—जल। पेट में शूल व मरोड़ हो तो ऊष्ण जल लेवे। दिन मे दो बार।

नोट—इसमे मेरा अनुभव है कि जिन्हे बार-बार शौच जाना पड़ता है उन्हे २ बार ही क्रमश शौच होगा। जिन्हे विबन्ध है उन्हे शौच साफ होता है।

आमातिसार नाशक—

सौंफ भुनी		१ तोला
सौंफ कच्ची	हरड़ (छिलका)	सोंठ
कालानमक	--प्रत्येक १-१ तोला	

—सब द्रव्यो को कूट पीस कपड़छान कर रखले।

मात्रा—२ माशा से ४ माशा तक।

अनुपान—गरम कवोष्ण जल।

गुण—इससे आमातिसार मे अचूक लाभ होता है।

विश्वाची तथा वात रोग में—

अश्वगन्धा चूर्ण	५ तोला
शर्करा	२॥ तोला
विषतिंदुक (कुचला) चूर्ण	२॥ तोला

विधि—सबको मिश्रित कर लेवे।

मात्रा—२ माशा से ४ माशा तक।

अनुपान—दूध।

समय—प्रातः सायं।

गुण—इसके प्रयोग से मैंने उन रोगियो को ठीक किया है जो Benerva *100* mg. के कई इन्जेकशन तथा इर्गापाइरीन ले चुके है। लाभ धीरे-धीरे होता है किंतु स्थायी। पर Arthrities आदि से विश्वाची रहे तो कठिन है व पूरा लाभ न भी हो।
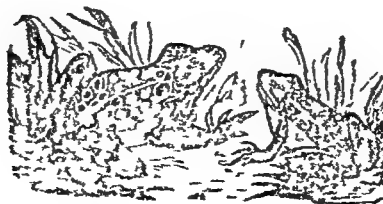
श्री वैद्य गोपाल प्रसाद शास्त्री भिषग्वर आयुर्वेदाचार्य

राजकीय चिकित्सालय, मु. पहाड़ी पो० बहरोड (अलवर)

"अपने क्षेत्र [श्रीमाधोपुर तहसील] के प्रसिद्ध ज्योतिषी व उद्भट विद्वान स्वर्गीय परम पिता पं० देवी सहाय जो शास्त्री की सेवा सत्कार्य की प्रेरणा से "रुग्ण सेवा" सर्वोपरि जान कर आयुर्वेद विषय मे आपकी अभिरुचि हुयी जिससे स्कूली पढ़ाई मिडिल तक की करके आयुर्वेद वाङ्मय-को समझने के लिये योग्य सस्कृत का ज्ञान अर्थात् बनारस मध्यमा उत्तीर्ण की। तदुपरांत उक्त काकेज में राजस्थान की "भिषग्वर" तथा विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य परीक्षायें उत्तम श्रेणी से पास की। आयुर्वेद का परम प्रयोजन चिकित्सा होने के हेतु व सारा वाङ्मय चिकित्साक्षेत्र के लिए ही है ऐसा समझ कर मध्य मे ही आपको चिकित्सा क्षेत्र में उतरना पडा। ६ साल के चिकित्सानुभव मे जो प्रयोग आपने उत्तम पाये हैं वैद्य जगत को सेवार्पित किए हैं।" —सम्पादक।

बालशोष—

निम्न लिखित तीनो प्रयोग एक साथ उपयोग में लाने पर उत्तम लाभ पाया गया है—

नं० १—ताजी नीम गिलोय एक पाव लेकर इमामदस्ते में कूट एक सेर जल में भिगोदें। मसल कर रात भर शीतल चांदनी में पड़ा रहने दे। दूसरे दिन उसमे बच्चे का नया मोटा खादी का कुरता बनाकर भिगो दें। एक दिवस तक भीगते रहने के बाद छाया में सुखा ले। यह बच्चे को पहिना दे।

नं० २—एक कुक्कुटाण्ड की पीतता को ग्लेसरीन यथा योग्य मे घोलकर दिन में एक बार गुदा मार्ग द्वारा बस्ति दे देवें।

नं० ३—यादव जी निर्मित सिद्ध योग संग्रह के बाल रोगाविकार मे ग्रथित "मुक्तादि वटी" की चार चार रत्ती की मात्रा दिन में दो बार माता के दूध के साथ देने व ग्लूकोज मिल्क के बने उत्तम बिस्कुट खिलाने और मत्स्य (Cod liver oil) तैल की मालिश करने से कुछ ही दिनो में लाभ देखा गया है।

कान्तिकारक लेप—

एक वैद्यराज की कुरुप बालिका रुपवती बन गई।

लोद	नीम की छाल व पत्ते
दाडम (अनार) का बक्कुल	आम का बक्कुल

—इन चारों को समभाग लेकर गुलरोगन मे खूब घोट ले। इसका सारे शरीर पर लेप करने से शरीर की कांति बढ़ती है।

शूल नाशक—

कूष्मांड क्षार	शुण्ठी चूर्ण
आमलकी चूर्ण	—प्रत्येक ४-४ रत्ती

—सबकी १ पुड़िया मद्य से देने पर सब प्रकार के शूल शांत होते हैं। यदि मद्य मे नीम का अर्क समभाग मिला दिया जाय तो विशेष लाभप्रद है।

प्लीहानाशक—

—आम रस मे शहद मिलाकर पीने से प्लीहारोग नष्ट होता है। प्रात: अर्क क्षार (सिर्फ पत्तो का बनाया हुआ) पुनर्नवा क्षार समभाग ४ रत्ती शहद से चाटने से व मद्य मे अजवायन, चित्रक, यवक्षार, पीपलामूल व पीपल का चूर्ण डालकर रोज शाम को पीने से प्लीहारोग नष्ट होता है।

श्री श्यामराम कविराज आयुर्वेद शास्त्री

श्री दिव्यदर्शक फार्मेसी, सारजमडीह (रांची-विहार)

"श्री कविराज जी ने अपने मामा श्री जगमोहनराम वैद्यराज के यहा ३० वर्ष रह कर आयुर्वेद का क्रियात्मक अनुभव प्राप्त किया। आपको अन्य अनेक वैद्यो एवं महात्माओ का सम्पर्क भी प्राप्त होते रहने से जडी-बूटियो का अच्छा ज्ञान है। दीन-दुखियो की निःशुल्क चिकित्सा सहायता करते है आप जिज्ञासु को आयुर्वेद ज्ञान देने के लिए भी सदैव प्रस्तुत रहते हैं। इसी लिए अभी तक आपके लगभग ३० शिष्य वैद्य हैं। आप वयोवृद्ध, अनुभवी, जन सेवक सरल प्रकृति के सफल चिकित्सक हैं।"
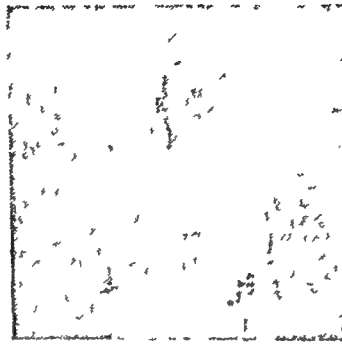
—सम्पादक।

बच्चों के सर्व प्रकार के ज्वर पर—

कटकरज गिरी	१ तोला
पीपर	६ माशा
जेठी मधु (मुलेठी)	६ माशा
सुहागा का लावा	६ माशा

विधि—सुहागे के अतिरिक्त उपरोक्त तीनो वस्तुओ का कपड़छान चूर्ण कर अलग-अलग उपरोक्त मात्रा मे लेवे और बाद मे सुहागे का लावा बना कर आधा तोला मात्रा मे मिला देवे। बाद मे पानी मे पीस कर आधी रत्ती की गोली बनावे।

गुण—बच्चो को मात्रा के अनुसार यथा योग्य अनुपान से देवे। सर्व प्रकार का ज्वर बन्द होगा। अनुभूत है।

नोट -इसकी मात्रा १-२ रत्ती पर्याप्त है।

अनुपान—शहद या माता के दूध देना। —सम्पादक।

अर्श रोग पर—

लाल सेमल (शाल्मली) के फूल का चूर्ण	५ तो.
मिश्री	५ तोला

—मिलाकर आधा तोला की मात्रा से प्रात., दोपहर और सायं तीनो समय दूध से व्यवहार करावे। यह योग श्वेत प्रदर पर भी अच्छा काम करता है।

श्वेत प्रदर पर—

महानिम्ब के फल के चूर्ण मे आधी मिश्री मिलाकर ठंडे पानी से आधा तोला चूर्ण देवे। यह चूर्ण खूनी और वादी दोनो अर्श मे लाभकर है।

वृश्चिक दंशोपचार—

यों तो गत वर्ष के कई एक अङ्को मे वृश्चिक दंश के बारे में उल्लेख आ गया है। फिर भी मैं मुख्य मुख्य प्रयोग जो सद्यः फलप्रद हैं, उन्हें यहां प्रगट कर रहा हूँ।

१—इमली के बीज को फाड़कर दंश स्थान पर चिपका देने से बीज चुपक जाता है और विष चूस कर गिर पड़ता है।

२—निर्मली के बीज को थोड़ा पानी मे घिस कर डंक के स्थान पर लगा दीजिए।

३—स्प्रिट से आधी भरी हुई चोड़े मुंह वाली बोतल मे जिन्दे बिच्छू डालते जाइयेगा, बिच्छू

—शेषांश पृष्ठ ४०६ पर।

कविराज रामानन्द सिंह A. M. S.

साहित्यायुर्वेदाचार्य
तेलमर (पटना)

"आपका जन्म अवधवंशीय क्षत्रिय कुल मे सम्वत् १६८१ मे श्री राम भगवानसिंह के यहां हुआ। प्रथमा, मध्यमा एवं साहित्य शास्त्री परीक्षा देने के बाद, गवर्नमेंट आयुर्वेद कालेज पटना मे पांच वर्ष आयुर्वेद का अध्ययन कर जी० ए० एम० एस० तथा आयुर्वेदाचार्य के प्रमाणपत्र प्राप्त किए हैं। आपने १६४६ मे दीन हितैषी औषधालय की स्थापना की है जिसमे प्रात. ८ बजे से १० बजे तक दीन रोगियो को नि.शुल्क औषधि वितरण करते हैं, अतएव आपका यश दिनो दिन बढ़ रहा है। आप उत्साही, समाज सेवी एव सफल चिकित्सक हैं।" —सम्पादक।
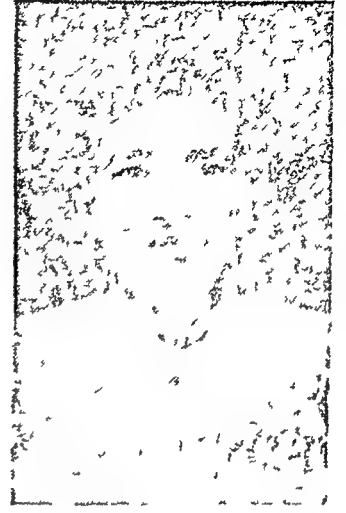
श्वसनकान्तक रस—

टंकण भस्म	५ तोला
मृगशृङ्ग भस्म	२ तोला
अभ्रकभस्म सहस्रपुटी, रससिंदूर	१-१ तोला
पीपल का कपड़छन चूर्ण	१ तोला

निर्माण विधि—सब दवाओं को ३ घंटा खरल करके शीशी में रख लें।

मात्रा—४ रत्ती, अद्रक के रस एवं मधु के साथ ४-४ घंटा बाद।

उपयोग—यह न्युमोनियां की प्रत्येक अवस्था में लाभदायक है। किन्तु इस प्रयोग के साथ निम्नांकित दो प्रयोगों को भी मैं व्यवहार मे लाता हूँ।

प्रयोग— (क) मुलहठी, लिहसोड़ा सूखा, अड़ूसापत्र, छोटी कटेली की जड़, मुनक्का —प्रत्येक १-१ तोला

—सबको एक पाव जल मे फांट बनाकर शीशी मे छानकर रखें और ½ भाग विशुद्ध मधु मिला दे।

मात्रा—५ तोला २-२ घंटा पर। यह फाण्ट सूखा कफ पिघलाकर शीघ्रातिशीघ्र बाहर निकाल देता है और खासते ही कफ बाहर निकल जाता है।

(ख) छाती में मालिश करने के लिए शूलान्तक मलहम

गोघृत पुराना	१ तोला
बारहसिंघा का घासा	६ माशा
रूमीमस्तङ्गी (घिसा हुआ)	५ तोला

—तीनों मिलाकर मलहम बनाले।

अनुपान—आक्रान्त स्थान पर २-३ बार मालिश करके हल्की रूई रख कर पट्टी बाध दें।

यह तीनों प्रयोग निमोनिया मे अत्यन्त लाभदायक है।

उदर शूल पर—

काला दाना (घृत मे भुना हुआ)	½ सेर
सनाय पत्र विडनमक	२०–२० तोला
हर्रे बड़ी हर्रे छोटी	१०–१० तोला

—सबको कपड़छान कर [चूर्ण] करके खरल में अच्छी तरह मिलाकर शीशी मे रखले।

मात्रा—३ माशा गरम पानी के साथ, प्रातः सायं।

गुण—इस औषधि के सेवन से उदर का किसी भी प्रकार का शूल नष्ट होता है। विशेष बद्ध-कोष्ठ, अफरा इत्यादि मे इससे लाभ होता है। इससे उदर की वात का अनुलोमन होता है और उदर शुद्ध हो जाता है तथा शूल को नष्ट कर देता है।

पायरिया संहार मंजन—

निर्माण विधि—धान का भूसा (छिलका) को लोहे की कड़ाही में जलाकर भस्म बनालें। इस तरह बनाया हुआ धान के भूसा की भस्म ४० तोला और कपूर १ तोला। दोनों को पत्थर के खरल में मिलाकर खूब घोटे। इसके बाद गेरू ५ तोला, कार्बोलिक एसिड १ तोला आयलजिरेनियम ½ ड्राम देकर पुनरपि खूब घोटकर मजबूत डाट वाली शीशी में रखलें।

उपयोग—इस मंजन के प्रतिदिन उपयोग करने से पायरिया को आराम हो जाता है। यह पायरिया का अनुभूत प्रयोग है। यह मंजन दांत के और दाढ़ के हर प्रकार के दर्द, पीप आना, रक्त गिरना, चीस चलना, दांत हिलना, मसूड़े फूलना, मैल लगना, दुर्गन्ध आना इत्यादि सब विकारों को दूर कर दांतो को सफेद एवं मजबूत बनाता है। साथ में जीभ पर लगे हुए कफ और मुख के बेस्वादुपन को भी दूर करता है।

महा पौष्टिक बल वर्धक योग—

एक पोथिया लहसुन	२० तोला
ताल मिश्री	२० तोला

—दोनों को कूट कर पत्थर के खरल में खरल करके शीशे के बर्त्तन में रख ले।

मात्रा—१ तोला से २ तोला तक बराबर गौघृत मिलाकर खाये और ऊपर से आधा सेर गाय का धारोष्ण दूध पीवे। प्रातः सायं दोनों समय।

प्रयोग—इसके सेवन से स्वप्नदोष, प्रमेह, शीघ्र पतन, वीर्य का पतलापन इत्यादि दोष दूर हो कर शरीर का बल बढ़ता है तथा हर प्रकार की दुर्बलता को दूर कर शरीर में नई शक्ति का संचार करके शरीर में बल लाता है। हर प्रकार की निर्बलता को दूर करने में लाभदायक है।

:: पृष्ठ ४०४ का शेषांश ::

मर जायेंगे। उसी स्प्रिट को लगाने से फौरन आराम मालूम होता है। कई एक बार लगावें।

४—कौंच के बीज पानी में घिस कर चिपका दे।

५—दो बूंद साईकिल का सैल्यूशन डंक स्थान पर लगादे। फौरन आराम हो जायगा।

६—अपामार्ग की जड़ दंश स्थान पर लगाने से उत्तम लाभ करती है।

७—जामुन के पत्तो को पीस कर लेप करे।

८—प्रासारिणी के पत्तों का लेप आराम प्रद है।

९—मौलश्री के बीज पीस कर लेप करने से आराम होता है।

१—पोटाश परमंगनेट का सफूफ (चूर्ण) स्प्रिट में डालकर उसे दंश स्थान पर लगाने से आराम हो जाता है। ४ औंस स्प्रेट में १ तोला पोटाश डालना चाहिए।

वैद्य भूषण पं. बिहारीलाल शर्मा

साहित्यरत्न एवं आयुर्वेद रत्न

प्रधानाध्यापक—राजकीय माध्यमिक विद्यालय, लक्ष्मणगढ़ (अलवर)

"आपके पितामह एव पिता जी आयुर्वेद चिकित्सक थे अतएव आपकी भी इस ओर विशेष रुचि रही है। गत २४ वर्षो से अध्यापन कार्य कर रहे हैं। आपका कहना है कि धन्वन्तरि पत्र से मैंने बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त किया है और उसी ज्ञान के बल पर मैंने आयुर्वेद रत्न की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आपके प्रयोग अनेक रोगियो पर सुपरीक्षित हैं पाठक लाभ उठावें।" —सम्पादक।

वेदना हर तैल—

महा विषगर्भ तैल	५ तोला
तारपीन का तैल	५ तोला
कपूर	१ तोला
अफीम	१ माशा

निर्माण—सब चीजों को मिलाकर १ शीशी में भर कर डाट लगा कर ४-६ घण्टे धूप में रखले फिर उपयोग में ले।

उपयोग—वात व्याधि, गठिया का दर्द, नस का दर्द पसली का दर्द, शरीर मे किसी भी जगह दर्द क्यो न हो अवश्य जाता रहेगा। थोड़ा सा तैल गर्म कर दर्द स्थान पर मल कर सेक करें।

नोट—तैल लगा कर हाथ साबुन से धोलें, तैल मे विषगर्भ तैल पड़ता है।

फोड़े की दवा—

१० तोला राल को महीन पीस कपड़छान कर आधा तोला पारा को २॥ तोला तूतिया के साथ खूब घोटकर राल मे मिलाले, फिर घी डाल कर पत्थर की सिल पर ६ घण्टे घोटे। घी इतना डाले कि मरहम गीली रहे।

मरहम तैयार है। इसे गोल कपड़े के फाए पर लगाकर फोड़े पर चिपका दे। अगर फोड़ा पका है तो फूट जायगा। कच्चा होगा तो बैठ जायगा।

समस्त व्रण नाशक मरहम—

सफेद कत्था	६ माशा
आमलासार गन्धक	६ माशा
गन्दा बिरोजा	१ तोला
फिटकिरी	६ माशा
रस कपूर	३ माशा
गेरू	६ माशा
शीतलचीनी	६ माशा
सिन्दूर	६ माशा
घृत	१ छटाक

निर्माण विधि—पिसने वाली औषधियो को महीन पीस कपड़छान कर घी १ छटांक मे मोम गला कर उक्त पिसी वस्तुऐ डाल दें। बस मरहम तैयार है।

उपयोग—इससे फोड़े, फुन्सी, घाव, चकत्ते, उपदंश या गरमी के घाव, फफोले, चेचक के घाव तथा विसर्प भी ठीक होते हैं।

श्री वैद्य पं. ओंकारनाथ शर्मा आयुर्वेद विशारद

चिकित्सक जिला बोर्ड औषधालय जेगारा, जि. आगरा।
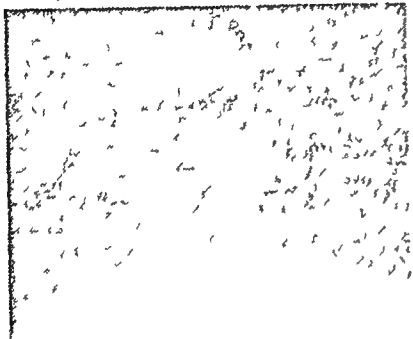
"श्री शर्मा जी का जन्म स्थान अर्भदोपुरा (किरावली जि० आगरा) है। पहिले आप सिंचाई विभाग मे सबओवरसियर के पद पर नियुक्त थे। राष्ट्रीय असहयोग आन्दोलन मे आपने उक्त पद से त्यागपत्र दे दिया। बाद में सक्रिय भाग लेने के कारण जेल जाना पडा। इस सेवा कार्य काल में आपने नि. भारतवर्षीय विद्यापीठ से आयुर्वेद भिषक् परीक्षा उत्तीर्ण की। आप आयुर्वेद के एक सफल चिकित्सक एव समाज सेवी व्यक्ति हैं गत तीस वर्ष से आप चिकित्सा कार्य मे रत हैं। कई वर्ष से आप जिला बोर्ड जैंगरा औषधालय मे प्रधान वैद्य हैं। आपके निम्न लिखित प्रयोग अनुभूत हैं।"

—सम्पादक।

1. शीत पित्तपर—

सांठ (पुनर्नवामूल) बड़ी हरड़ का बक्कल
नीम की गिदी देवदारु
कुटकी नीम गिलोय हरी
परवल (पटोलपत्र) के पत्ते सोंठ

—प्रत्येक २-२ तोला

—अलग-अलग जौकुट कर समभाग की आठ पुड़िया २-२ तोले की बनाले। एक पुड़िया का क्वाथ-विधि से क्वाथ कर ठंडा होने पर प्रात सायं पिलावे।

अनुपान—पाण्डु रोग मे क्वाथ मे पैसा भर गौमूत्र डाल कर पिलावे। शीतपित्त में केवल काढ़ा दे।

गुण—शीतपित्त, उदर्द, शोथ कैसा ही भयंकर क्यों न हो तीन चार दिन के सेवन से लाभ होता है। आवश्यकता पर और अधिक दिन सेवन करें।

मन्थर ज्वर पर—

(1) अभ्रकभस्म शतपुटी १ रत्ती
शृंगभस्म (विषाण) १ रत्ती
मुक्तापिष्टी (अभाव में मु. शु पि.) २ रत्ती
प्रवाल भस्म १ रत्ती

—यह एक मात्रा है, रोग के आरम्भ मे तीन मात्राये प्रातः दोपहर, सायं अद्रक स्वरस ३ माशे कुछ गर्म कर पश्चात् ३ माशा शहद मिलाकर दे। यदि साथ में अतिसार भी हो तो अद्रक स्वरस के बजाय पान स्वरस गर्मकर शहद मिला कर दे।

अतिसार के लिए—

(11) आनन्दभैरव (अतिसार) १ रत्ती
भुना जीरा सफेद चूर्ण १ माशे

—शहद ३ माशे मे मिलाकर (1) योग के ३ घण्टे बाद प्रात. सायं दे।

यदि प्रवाहिका साथ में हो तो—

सिद्ध प्राणेश्वररस	१-२ रत्ती
पान का अर्क	३ माशा
शहद	३ माशा

—के साथ प्रथम योग के ३ घण्टे बाद प्रातः सायं दें।

पथ्य—अन्न बन्द करदें। अगर रोगी खाने का विशेष आग्रह करे तो बाजरे का भुना दलिया पनला मिश्री या ग्लूकोज डालकर २-३ तोला की मात्रा में दें। यदि अतिसारावस्था में खाने को आग्रह करे तो गौदुग्ध का छैना जल (दूध फाड़ कर, छानकर) थोड़ी मिश्री या ग्लूकोज मिला कर दें।

जल—एक सेर का तीन पाव औटाकर मृत्तिका पात्र में तथा प्रात. का सायं तक तथा सायंकाल का औटाया हुआ रात्रि में दें।

अफारा में—सौभाग्यवटी, अद्रक स्वरस शहद से।

तीव्रताप पर—लक्ष्मीविलास रस गर्म जल या अद्रक स्वरस शहद से।

कास में—चन्द्रामृतरस, शहद से या मुख में डाल कर चूसना।

बाल शोष पर—

प्रातः सायं—कुमारकल्याण रस, गर्म किया हुआ गौदुग्ध या अजा दुग्ध १ तोला के अनुपान से।

भोजनोपरान्त—अरविन्दासव।

मालिश—शङ्खपुष्पी तैल दिन में १ बार। नहलाने के बाद शरीर में मालिश करें।

कुमारकल्याण रस की मात्रा—२ मास के बालक को १ चावल, ६ मास को २ चावल भर। १ वर्ष की आयुवाले को ३ चावल भर, इससे अधिक आयु वाले को आधी रत्ती।

पथ्य—केवल गौदुग्ध या अजा दुग्ध, गर्म कर ठंडा किया हुआ थोड़ी मिश्री या ग्लूकोज डालकर दें। एक मास के प्रयोग से बालशोष, ज्वर, कास, अतिसार आदि नष्ट होकर बालक हृष्ट-पुष्ट होगा। दांत आसानी से निकल आयेंगे। बालकों के समस्त रोगों पर रामबाण है।

अतिसार रहित जलोदर पर—

प्रातः सायं—नवायस लौह	२ रत्ती
ताजा पुनर्नवा स्वरस	१ तोला

—शहद ३ माशा के साथ दें।

तीन घण्टे पश्चात्—

पुनर्नवादि माण्डूर	२ रत्ती
शहद	३ माशा के साथ,
ऊपर से गौमूत्र	२।। तोला

उदर में जल अधिक होने पर—

पुनर्नवादिमाण्डूर के स्थान में—

जलोदरारिरस	१ गोली
शहद	३ माशे के साथ,
ऊपर से गौमूत्र	२।। तोला

हर चौथे दिन विरेचन के लिए—

इच्छाभेदी रस	२ गोली

—गर्म किए हुए ठंडे जल दूध से ३-४ तोले के साथ या—

नाराचरस	२ गोली

—गर्म दूध से आवश्यकतानुसार २-३ सप्ताह।

पथ्य—अन्न, नमक और जल बिल्कुल न दें। केवल गौदुग्ध १ सेर में जल दो सेर तथा पुनर्नवादि मूल १ तोला काली मिर्च २१ नग, पीपल छोटी १ नग समस्त को कुचल कर दूध में डाले और लोहे की कढ़ाही में औटावे। पानी जल जाने पर, दूध मात्र शेष रहने पर पिलावे। दिन भर में इस प्रकार से बना हुआ दुग्ध १।। सेर तक दिया जासकता है। दोपहर को पपीता १ छटाक १।। छटांक दे सकते हैं। इस प्रकार १ मास की चिकित्सा से रोगी को यथेष्ट लाभ होगा पूर्ण लाभ न हो तो इस क्रम को और कुछ समय तक जारी रखा जाय।

रोग निवृत पर—मूंग, मोठ का पानी या साठी के चावलों का माड शनैः शनैः दें। "धन्वन्तरि" में जलोदर की चिकित्सा के सम्बन्ध में अनेक उपयोगी लेख प्रकाशित हुए हैं। उन्हीं के अनुसार लाभ उठा कर लिखा गया है।

—शेषांश पृष्ठ ४११ पर।

श्री नेमिचन्द्र अग्रवाल वैद्य

अध्यक्ष—बाबूलाल एण्ड को. शार्ङ्गंग भोगीपुरा सिन्दूरा रोड, आगरा।

"श्री अग्रवाल जी एक योग्य चिकित्सक के साथ-साथ एक फार्मेसी के अध्यक्ष हैं। औषधि निर्माण में आपको सुरुचि है। आप अपनी चिकित्सा में ६५ प्रतिशत आयुर्वेदिक ५ प्रतिशत इन्जेक्शन का प्रयोग करते हैं। साथ ही आप योग्य कवि व लेखक हैं। आपने निदान विषय पर कुछ कविता की है।"

—सम्पादक।
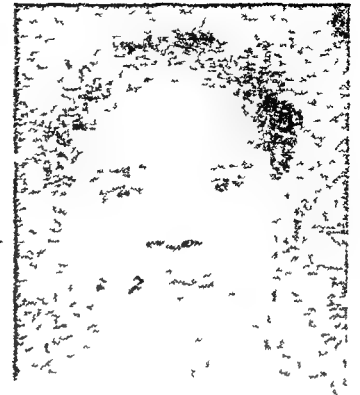
विशूचिका दमन—

शु. गन्धक आवलासार पीपल
सुहागा शुद्ध काली मिर्च सोंठ
हींग अकरकरा नमक काला
सिंगरफ रूमी (दूध द्वारा शोधित)
मीठा तैलिया (दूध द्वारा शोधित)
—प्रत्येक १-१ तोला

विधि—पहले मीठा तैलिया, सुहागा, सिंगरफ को अलग अलग खूब मर्दन करें। पश्चात् शेष औषधियों को मिलाकर छान कर पानी से चणक प्रमाण गोली बना लें। छाया में सुखा शीशी में सुरक्षित रख लेवे।

मात्रा—समय पड़ने पर एक गोली लौंग के पानी के साथ दे। प्राय: एक ही गोली से आराम हो जाता है।

नोट १—विशूचिका के रोगी को तृषा शान्त करने के लिए जायफल का टुकड़ा सुपारी की तरह मुंह में डालकर खाने का आदेश दें। प्यास शान्त होगी।

२—मूत्रावरोध के लिए चूहे की मैंगनी, कलमी शोरा बराबर लेकर महीन पीसलें और पानी के सहारे पेडू पर लेप करें। मूत्रावरोध नष्ट होगा। या टेसू (ढाक) के फूल १ तोला लेकर १ सेर पानी में औटावे। खूब ओट जाने पर गर्म-गर्म किसी पात्र में भर बूंद-बूंद पतली धार से पेडू पर डालें, मूत्रावरोध अवश्य नष्ट होगा।

अर्क खूनसफा—

नीम का पंचाङ्ग (पत्ती, छाल, फूल, जड़, निबौली) —सब ५-५ तोला
नीम गिलोय नवीन हरी छत्ता (पीली पीली बरों का)
चन्दन चूरा सफेद
करंजुआ मींग चिरायता नवीन
उसवा गोरखमुण्डी नवीन
—प्रत्येक ५-५ तोला
सौंफ बराबर यानी ६० तोला

विधि—सबको २० सेर पानी में रात्रि को भिगोकर प्रात: १२ बोतल अर्क निकाले। अर्क के ऊपर जो चिकनाई आवे इसे उतार कर अलग रखले।

मात्रा—यह अर्क प्रात: सायं ज्यादा से ज्यादा ५ तोला पिलावे।

पथ्य—चने की रोटी घृत से चुपड़ कर खावे। घृत कम से कम ३ तोला प्रति दिन खायें। ज्यादा

इच्छानुसार खाये। चने का आटा बिना छना और मोटा होना चाहिए।

गुण—यह अर्क छोटी सी खराबी से लेकर बड़ी से बड़ी खून की खराबी को ठीक करता है। जैसे आतशक (गर्मी) फोड़ा, फुन्सी, चकत्ते यहां तक कि श्वेतकुष्ठ और आरम्भ के कुष्ठ में भी लाभ करता है।

प्रमेह नाशक टिकिया—

अश्वगन्धा नागोरी ईशबगोल का बुरादा
तालमखाना बुराद किया-प्रत्येक ४-५ तोला
माजूफल पिसा बारीक २॥ तोला
रांगा (बङ्ग) भस्म २॥ तोला
दूध बरगद ५ तोला
दूध भेड़ २५ तोला

विधि—माजूफल बारीक पिसे हुए को दूध बरगद की भावना देकर छाया में सुखाने के पश्चात सब वस्तुओं को भेड़ के दूध में खरल कर १॥-१॥ माशे की टिकिया बना ले।

मात्रा—एक टिकिया प्रात. सायं दूध के साथ प्रयोग करें

लाभ—प्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नपात, पेशाब का बार-बार जाना आदि प्रमेह सम्बन्धी प्रत्येक विकार को दूर करता है।

अपथ्य—खटाई, स्त्री-प्रसंग, मिर्च लाल, गर्म, तेज वस्तुयें।

:: पृष्ठ ४०६ का शेषांश ::

मलेरिया (विषम ज्वर) पर—

(i) मृत्युञ्जय रस २ गोली
जीरा श्वेत कच्चा चूर्ण १-१॥ माशा
गुड़ तीन साल पुराना १॥ माशा

—जिस रोगी को ३-४ पारी ज्वर आ चुका हो साथ में मलबद्धता भी हो तो ज्वर न रहने पर सोते समय कोई हलका रेचक चूर्ण जैसे पंचसकार आदि दें। पारी के दिन की पूर्व सन्ध्या को उपरोक्त प्रयोग देना प्रारम्भ करें। दिन भर भोजन कुछ न दिया जाय। संध्या को दूध मिश्री या ग्लूकोज मिलाकर दिया जाय।

शीतपूर्व ज्वर को तुरन्त रोक देता है। कुनैन से बढ़कर कार्य करता है। गुड़ तीन साल पुराना आवश्यक है। ज्वर रुक जाने पर यह प्रयोग एक दो दिन प्रातः सायं और दे दिया जाय तो उत्तम है।

(ii) कालारि रस २ गोली

अनुपान—गर्म जल या अद्रक स्वरस ३ माशा।

गुण—इकतरा, तिजारी, चौथइया आदि विषमज्वर को रोकने में उत्तम कार्य करता है। प्रातः सायं दें। "धन्वन्तरि परीक्षित प्रयोगाङ्क के अनुसार कालारिरस तैयार करें।

कविराज श्री दुर्गानन्द शर्मा

वैद्य शास्त्री

अध्यक्ष—आनन्द आरोग्य भवन पो. घट्टी (सोलन)

"कविराज जी ने आयुर्वेदरत्न, वैद्यशास्त्री, कविराज व सूचीवेध आदि परीक्षायें उत्तीर्ण की है। गत चार वर्ष से जिला वैद्य मंडल का कार्य भार संभाले हुए हैं। आपके आरोग्य भवन को राज्य ने सहायता देने की इच्छा व्यक्त की, पर आपने उसे अस्वीकृत कर दिया। आप आन्त्रिक ज्वर, प्रसूति ज्वर, बाल रोगो के विशेष अनुभवी चिकित्सक हैं।"

—सम्पादक।

हिक्का प्रशमन—

हिक्का बड़ा भयङ्कर रोग है। कई बार अन्य रोगो मे उपद्रव रूप से प्रगट होता है और घोर कष्टकारक रूप धारण कर लेता है।

शराब	१ तोला
सेंधानमक	२ माशा

—मिलाकर २ मात्रा बनालें। रोगी को एक मात्रा पिलादे। पश्चात् पांच दाने काली मिर्च के आग के अङ्गार पर रख कर उसका धूंवा मुख द्वारा गले से नीचे उतार ले बस तत्काल हिक्का रुक जावेगी। इस प्रकार दूसरी मात्रा दो घंटे बाद पहली मात्रा के अनुसार देवे। हिक्का शमन होजायगी। यह योग हमारा शतशोऽनुभूत है।

(11) शास्त्रीय स्वर्णयुक्त सूतशेखर रस नारियल जटा की भस्म समभाग लेकर खरल करके रख लेवे। दो रत्ती की मात्रा मधु से देवे। यह योग भी ऊपर वाले योग जैसा ही हिक्का शमन करने से अचूक पाया है।

कर्णपाक में—

हरताल वर्की शुद्ध	१ तोला
गोमूत्र	१० तोला

—इन दोनो को खूब घोटकर मोटे कपड़े मे छानकर रखलें।

प्रयोग—कान साफ करके दो बूंद डालें तो एक दो सप्ताह में घोर असाध्य कर्णपाक, पूतिकर्ण नष्ट होता है।

वृक्काश्मरी—

मीठा सोडा	हजरल यहूद
नवसादर	यवक्षार
गोखरू	कुलथी

—इन सबको बारीक पीसकर चूर्ण बनाकर रख ले। ३ माशे की मात्रा से दोनो समय भोजन से पहिले सेवन करके ऊपर से मक्की के बाल का काढ़ा बनाकर १ छटांक पिलादे तो हर

—शेषांश पृष्ठ ४१४ पर।

श्री पं. हरिशंकर पाण्डेय वैद्य

हेमपुरवा (सीतापुर)

"आपके स्वर्गीय पिता श्री लक्ष्मीशंकर पाण्डेय भी वैद्य थे तथा आपकी माता जी तो राजकीय मातृ शिशु चिकित्सा केन्द्र की १७ वर्ष अध्यक्षा रही हैं। उन्ही के सम्पर्क मे रह कर आपने क्रियात्मक अनुभव प्राप्त किया है तथा आप नगरपालिका प्रारम्भिक विद्यालय के सहायक अध्यापक होते हुए भी जनता की चिकित्सा सेवा मे रत रहते हैं। आपके कतिपय सरल अनुभूत प्रयोग यहां प्रकाशित है, पाठक लाभ उठावें।" —सम्पादक।

कृमियुक्त दन्त-पीड़ा—

लाल मिर्च	२ नग
काली मिर्च	१० दाने
अजवायन	३ माशे
लौंग	१० नग
हींग उत्तम	१ माशे
इलायची बड़ी	२ नग
कपूर	२ माशे
गुड़ पुराना	२॥ तोला
घी गाय का	५ तोला

बनाने की विधि—प्रथम चार वस्तुयें कूट ली जाय और घी में डाल दी जाय। कपूर के अतिरिक्त अन्य वस्तुएँ भी घी मे डाल दें। मन्द मन्द आंच पर पकावें। जब सभी वस्तुऐं जल जायं उतार कर उसमें कपूर डाल दे। यह गल जायगा। औषधि तैयार है।

प्रयोग विधि—दांत के खोखले में रुई की फुरहरी बनाकर रखदे। कठिनतम पीड़ा क्षणभर मे दूर होगी।

पेचिश—

इमली की कोमल पत्ती	१ तोला
बेल की कोमल पत्ती	६ माशा
लहसोड़े ,, ,,	१॥ नग
दूबिया ,, ,,	६ माशे
आम ,, ,,	६ माशा
जामुन ,, ,,	६ माशा
सोंठ	१ तोला
सोंफ	६ माशे
विजया	३ माशा
काला नमक	१ तोला

बनाने की विधि—उपर्युक्त औषधियों को पानी में पीस कर १ पाव पानी मिलाकर पिलाना चाहिए। यह दो खुराके हैं। जो प्रातः सायं पिलाई जायंगी। दो दिन के प्रयोग से रोग दूर होगा।

पाचक जल—

भुने आम	५ नग
सोंफ	१ तोला
अदरक	२॥ तोला
काली मिर्च	३ माशा
जीरा भुना	६ माशे
हींग (लावा)	२ चना भर
छोटी हर्र	२ नग

पुदीना हरा	२॥ तोला
पुदीना सूखा	३ माशा
नींबू कागजी	१ नग
गुड़	५ तोला
विजया (भंग)	६ माशे

बनाने की विधि—आम और गुड़ को छोड़ शेष पीस डाले। आम और गुड़ का पना बनाले। यह योग ५ वयस्कों के लिए है। इसमे १॥ सेर पानी लगेगा। (आम की फसल न होने पर ५ नीबुओं से काम चल जायगा किंतु गुड़ नहीं पड़ेगा।)

वीर्य विकार पर—

वट वौं (वट की जटा) वट फल
गूलर फल जामुन की गुठली
बबूल की सैंगरी बबूल का गोंद
—प्रत्येक ५-५ तोला

तुख्म रेहां (तुलसी के बीज)	१। तोला
तुलसी की जड़	१ नग

बनाने की विधि—सबका चूर्ण बनाले।
मात्रा—३ माशा से ६ माशा तक।
अनुपान—१ पाव दूध मे १ तोला शहद मिलाकर।
परहेज—तेल, खटाई, मिर्च, मिठाई।
प्रयोग—हलका भोजन, ब्रह्मचर्य पालन।

सरता दन्त मन्जन—

बादाम के छिलके का कोयला सड़ी सुपारी का कोयला मोलसिरी का कोयला बबूल का कोयला तुलसी का कोयला
—प्रत्येक २॥-२॥ तोला

चूल्हे की जली हुई लाल मिट्टी	१ पाव
सेधा नमक	२॥ तोला
काली मिर्च	१ तोला
पपीता का दूध	१ तोला
इलायची का तैल	६ माशे
कपूर	१॥ माशा

बनाने की विधि—प्रथम ८ द्रव्य कूटकर कपड़छान किया जाय। पपीते का दूध डाल कर खूब मिलाया जाय। कपूर और इलायची का तैल मिलाकर मजन मे मिला दिया जाय। मञ्जन तैयार है।
प्रयोग—दांतों को चमकाता है। मुख को शुद्ध रखता है। मसूड़े के बादी रक्त को निकालकर उन्हे पुष्ट करता है। मेरे पिता जी इसको दांत के प्राय. प्रत्येक रोग मे नि:शुल्क वितरित किया करते थे।

:: पृष्ठ ४१२ का शेषांश। :

प्रकार की अश्मरी तथा वृक्कशूल शमन होकर पत्थरी कटकर निकल जाती है। यह मैंने स्वय अनुभव किया है। क्योंकि वृक्काश्मरी का रोगी मैं स्वय रह चुका हूँ। वृक्काश्मरी कटकर मूत्र के साथ निकलती है।

अतिसार संग्रहणी में—

शुद्ध अफीम कलमीशोरा
लौंग जायफल
हींग शुद्ध सुरमा

—इन सबको बारीक पीसकर कुटज के क्वाथ की भावना देकर १-१ रत्ती की गोली बनावे। एक गोली प्रात, एक मध्याह्न, एक सायं तीन समय दिन मे देने से घोर अतिसार संग्रहणी प्रवाहिका इससे नष्ट होती है।
अनुपान—शीतल जल से ही सेवन करे। तत्काल फल प्रदर्शक योग है।

बालापस्मार में—

भांग की जड़ पुनर्नवा की जड़
अपामार्ग की जड़ —समान भाग

—यह तीनों की जड़े रविवार को प्रात: लाकर सूत के तागे मे बच्चे के गले मे बाधने से अपस्मार के दौरे बन्द होते हैं। स्वानुभूत प्रयोग है।

श्री वैद्य कल्याणकुमार जैन 'शशि'

वैद्यभूषण

बाजार नसरुल्लागंज, रामपुर।

श्री 'शशि' महोदय उत्साही, नवयुवक कवि एव पत्रकार हैं। जन्म मार्च १६१२ ई मे हुआ तथा सन् १६४० से वैद्यक करते हैं। आपकी साहित्य मे विशेष रुचि है तथा पत्रो मे आपकी रचनायें प्रकाशित होती रहती है। अनेक सस्थाओ के सचालक, सभापति, मत्री आदि रह चुके है। कई पत्रों का आपने सम्पादन भी किया है तथा अपनी निजी फार्मेसी 'जैन फार्मेसी' भी है। आपके अति सरल चार प्रयोग नीचे प्रकाशित कर रहे हैं।" —सम्पादक।

कटिशूल—

पत्थर शिलाजीत ४ तोला

प्रयोग विधि—इसे पीसकर कपड़छन करे और तीन माशे की मात्रा मे नित्य प्रातः तथा रात्रि को धारोष्ण दूध में एक सप्ताह सेवन करें।

कम्पवात—

चोवचीनी असगन्ध

सोंठ गुलाब के फूल

प्रयोग विधि—चारों दवाएं २-२ तोला कूट-पीस कर ६-६ माशा की १६ पुड़ियां बनाकर प्रातः साय सनाय क्वाथ से लाभ न होने तक सेवन करें। यह योग सन्निवात मे भी उपयोगी है।

पक्षाघात—

शुद्ध गूगल हीरा हींग

प्रयोग विधि—दोनों दवाएं समभाग लेकर १-१ माशा की आवश्यकतानुसार गोलिया बनाले और प्रात. तथा रात्रि को गर्म जल से सेवन करे।

अश्मरी (पथरी)—

गोक्षुरादि गुग्गुल गोखरू सरफोका

प्रयोग विधि—सरफोका १ तोला, गोखरू छोटा ६ माशे कूटकर रात्रि को पाव भर जल मे भिगो दे प्रातः इन्हे अग्नि पर पकाकर आधा जल जला दे और छानकर तथा २ तोले मधु मिलाकर पहिले १ गोली गोक्षुरादि गुग्गुल निगलकर ऊपर से यह क्वाथ पिये।

गुण—यह योग कुछ समय तक सेवन करते रहने से पथरी घुलकर निश्चयपूर्वक निकल जाती है।
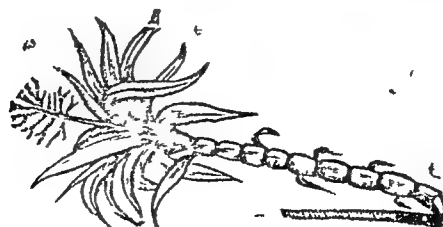
वैद्याचार्य श्रीकृष्ण शर्मा M. Sc. A.

अध्यक्ष—अमर कृष्ण फार्मेसी, सब्जी मंडी, पटियाला।

"श्री शर्मा जी का जन्मस्थान पटियाला के समीप समाना शहर है। आपने सर्व प्रथम संस्कृत प्राज्ञ विशारद आदि का अध्ययन कर नि. भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ से आयुर्वेद विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की और गवर्नमेंट आयुर्वेद कालेज पटियाला से वैद्य विशारद किया। अन्तिम आपने विद्यापीठ से वैद्याचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप पटियाला की अमर-कृष्ण फार्मेसी तथा औषधालय के अध्यक्ष हैं। आपने निम्न लिखित ५ प्रयोग प्रेषित किये हैं।" —सम्पादक।

निद्राप्रद योग—

सर्पगन्धा चूर्ण	५ तोला
जहरमोहरा पिष्टी	६ माशा
प्रवालपिष्टी	६ माशा
अमृतासत्व	६ माशा

—इन सबको खरल कर लेवें।

मात्रा—१॥ माशा प्रातः १॥ माशा सायं गुलाब अर्क या गुलकन्द के साथ सेवन करवायें।

उपयोग—अनिद्राजनक मस्तिष्क की निर्बलता और रक्तभाराधिक्य आदि पर विशेष लाभकारी है।

सूचना—सर्पगन्धा के सेवन काल में नमक रहित भोजन करना चाहिए, ऐसा करने पर विशेष और सत्वर गुणकारी है।

नोट—यह योग यादव जी, त्रिकम जी का अनुभूत है। इस योग को मैं ६ वर्ष से प्रयोग में ला रहा हूँ।

आमातिसार हर—

सौंफ	१ पाव
छोटी हरड़	१ पाव
सौंठ	१ पाव
मिश्री	१ पाव

—इन सबको अधकुटा कर कुछ पर मन्दाग्नि दें। जब कुछ भुन जावे तब मिश्री मिला कूटकर चूर्ण तैयार करलें।

मात्रा—३ माशा से ६ माशा तक, ३-३ घण्टे बाद ताजा जल से। यदि पेचिश हो तो गरम दुग्ध से लें।

उपयोग—आमातिसार, रक्तातिसार, प्रवाहिका आदि पर सत्वर प्रभाव दिखाता है।

पार्श्वशूलान्तक लेप—

कुचिला सोंठ बारहसींगा सींग

—को जल के साथ घिसकर उसमें २ से ४ रत्ती अफीम मिलाले। फिर थोड़ा गरम कर पसलियों पर लेप कर दें।

नोट—पहले कुचिला घिसावें फिर सोंठ बारहसींगा पश्चात् अफीम मिलाले।

उपयोग—वातव्याधि जन्य पार्श्वशूल, न्यूमोनियां, पसली दर्द और छाती पर लेप करने से फुप्फुस दोष में सत्वर लाभ होता है।

—शेषांश पृष्ठ ४१९ पर।

श्री पं० रामशरण शुक्ल वैद्य

मु. गेगूमऊ पो० चौबेपुर (कानपुर)

"श्री शुक्ल जी के बाबा आयुर्वेद चिकित्सक थे तथा जनता की निःशुल्क चिकित्सा सहायता करते थे। आपने उन्ही से आयुर्वेद ज्ञान तथा क्रियात्मक अनुभव प्राप्त किया है तथा आप भी निर्धन व्यक्तियो की सेवा करने में प्रयत्नशील रहते हैं। लगभग २० वर्ष का आपको चिकित्सानुभव है तथा आप रजिस्टर्ड व अनुभवी वैद्य हैं। आशा है, आपके प्रयोग सफल प्रमाणित होगे।"

—सम्पादक।

दन्तशूल नाशक—

काले धतूरे के बीज	६ माशा
काली मिर्च	३ नग
अपामार्ग की जड़	६ माशा

—इन सब औषधियों को बारीक पीसकर शीशी में सुरक्षित रख लेना चाहिए।

मात्रा—२ रत्ती दवा जिस दांत में दर्द हो उसके विपरीत कान में पानी में घोल कर डालना चाहिये। इस प्रयोग के करने से दांत का दर्द तुरन्त जादू के सदृश्य बन्द होजायगा और रोगी तुरन्त हँसता हुआ दृष्टि मे आयेगा। यह हमारा अनुभूत चमत्कारी प्रयोग है।

विशूचिका नाशक—

लौंग फूलदार	१ तोला
सुर्ख (लाल) मिरच के बीज	६ माशा
मोम देशी	१ तोला

विधि—सर्व प्रथम मिरच के बीज खूब बारीक पीस कर रख लेना चाहिए और इसी भाति लौंग को भी पीस कर मिरच के बारीक चूर्ण मे मिला देना चाहिये। तत्पश्चात् मोम को गरम कर द्रव करके उक्त चूर्ण उसी मे मिलाकर तीनो को एकाङ्ग करके चने के प्रमाण वटी बनाले, उनको साया में सुखाकर शीशी मे रखले।

मात्रा—१-१ वटी।

अनुपान—चतुर्थांश क्वथित जल के साथ।

नोट—प्रथम बार मे ही वमन विरेचन थम जायगा व पित्त का संचार शरीर मे होकर वातोद्दिष्ट पीड़ा आदि शात हो जायगी। फिर दूसरी वटी देने की आवश्यकता नहीं है। १ या २ वटी से ही रोग समूल नष्ट होजाता है।

वद्ध गांठ या फोड़े पर—

कुचिला पिसा हुआ (अशुद्ध)	१ तोला
अलसी पिसी हुई	३ माशा
राई पिसी हुई तीन माशा	३ माशा

विधि—इन तीनों को शराब (मद्य) मे सूक्ष्म पीस कर वद्ध गांठ पर लेप करदे, ऊपर से थोड़ा-थोड़ा सेंक भी करवाते रहे। १५ मिनट के पश्चात् ही रोगी को पीड़ा से आराम होगा। इस प्रकार तीन बार के लेप से चाहे कितनी ही उभरी हुई गाठ क्यों न हो गायब होजायगी

—शेषांश पृष्ठ ४१६ पर।

श्री वैद्य हाकिम सिंह जी

रेलवे रोड, जैतो मण्डी (पंजाब)

"वैद्य जी अत्यन्त सरल स्वभाव के होने के कारण अपना परिचय देने मे संकोच करते हैं, हमारे पुनः लिखने पर भी परिचय नहीं दिया। आपने हमारे पास ४ योग भेजे है। जिसमे से तीन योग दे रहे हैं। आप यूनानी वैद्यक के विशेष ज्ञाता हैं। द्रव्यों को हिंदी मे लिखने का आपको कम अभ्यास है, फिर भी हिन्दी में लिख भेजने का प्रयास किया है।"

—सम्पादक।

चमत्कारी सुरमा नं० १—

पारा शुद्ध	५ तोला
सिक्का शुद्ध (चांदी)	५ तोला
जस्ता शुद्ध	५ तोला

निर्माण विधि—पारा सिंगरफ से लिया गया है तो वह शुद्ध है और यदि वैसे ही किसी पंसारी से लिया है तो उसे आयुर्वेद की किसी रीति से शुद्ध करले। सिक्का और जस्ता ठठाली (घरिया) मे पिघला कर सात बार गौदुग्ध मे बुझावें। सात बार अर्क गुलाब मे गलाकर डाले। फिर मिश्रित सिक्का और जस्ता को पिघला कर खरल में डाले। ध्यान रहे कि खरल मे डालने से पहले खरल का ढकना तैयार रहे। यह द्रव्य धातुए खरल के एक तरफ से या ढक्कन के सुराख मे से ऊपर से पारा डाले। जस्ता, सिक्का बाहर न गिरने पावे फिर ढकना अलग करके मुसली से रगड़े। रगड़ाई करते-करते सुरमा बन जायेगा, फिर इसमे निम्न लिखित औषधिया डाले—

जंगार तांबा	समुद्रफेन
कलमीशोरा	नीला थोथा
भराक काफूर	पिटकिरी
सुहागा सफेद	नौसादर ठीकरी
मिर्च सफेद	छोटी इलायची के बीज
शीतलचीनी	ममीरा

—प्रत्येक १-१ तोला

मोती सच्चे	३ माशा
अर्क गुलाब	१ बोतल
त्रिफला का पानी	१ बोतल

—इन औषधों के साथ खूब रगड़ें जब रगड़ते-रगड़ते अर्क और त्रिफला पानी समाप्त हो जाय सुखा कर शीशी मे रखलें। आखों के रोगों पर अत्यन्त लाभकर सुरमा है।

चमत्कारी सुरमा नं० २—

शीशा नमक (काच नमक)	१० तोला
जौ का आटा	२० तोला
भेड़ का दूध	६० तोला

विधि—दोनो वस्तुओं को भेड़ के दूध मे खूब रगड़े, जब तीन पाव दूध मिल जाए तो किसी सरावे

में बन्द करके १५ सेर उपलों की अग्नि देवें, स्वांग शीतल होने पर निकाल कर खूब रगड़े, फिर तीन माशा पिपरमेंट मिलाकर रखले। बनाने में अति सरल एवं लाभ करने मे अद्वितीय है।

सर्वताप तोड़ने वाला—

शङ्ख पीली कौड़ी गोदन्ती
अभ्रक श्वेत अभ्रक कृष्ण
सीप जहरमोहरा सादा
फिटकरी सुहागा नौसादर

—उपरोक्त सारी वस्तुओं को एक वजन कर लें। घीग्वार के गूदे के रस में रगड़ लें। टिकिया बनाकर सुखा लें। बीस सेर उपलो की अग्नि मे उन्हें सम्पुट मे फूंक दें। इस प्रकार तीन पुट पूरे होने पर पुन तीन पुट जामुन की छाल के काढ़े की भावना लगाकर दे। तीन पुट गिलोय के काढ़े की भावना लगाकर दे। पश्चात् एक पुट बांसा के काढ़े से भावना देकर लगावे। पीसकर रख ले, दवा तैयार हो गई।

मात्रा—१॥ रत्ती की मात्रा मे प्रात: सायं पानी चाय, दूध के साथ दे। हर प्रकार के ज्वरों में अद्वितीय है।

:: पृष्ठ ४१६ का शेषांश ::

लाक्षार्क (आयुर्वेदिक टिंचर)-

लाख १० तोला

—को २० औंस मेथीलेटेडस्प्रिट मे मिलावें। २ घटे में सम्यक्तया अर्क तैयार हो जाता है। फिर निथार कर अर्क को ग्रहण करे।

उपयोग—शस्त्र लगने अथवा चोट से रक्तस्राव होने पर उसी स्थान पर इस अर्क को लगाने से तुरन्त रक्तस्राव बन्द होजाता है।

हिक्कान्तक रस

ताम्र भस्म लौह भस्म
सुवर्ण भस्म मुक्ता पिष्टी

—इन सबको सम भाग मिलाकर बिजौरा निम्बू के रस की ३ भावना देकर १-१ रत्ती की गोलियां बनाले।

मात्रा—१ से ३ रत्ती बिजौरा रस, शहद और काले नमक के साथ दें।

—समय दिन मे २ बार देवे। या आवश्यकता पर २-२ घण्टे बाद देना चाहिये।

उपयोग—यह रसायन सब प्रकार की हिचकी को शीघ्र ही शमन करता है। वैद्यो को यह रस सत्वर ही यश प्राप्त कराता है।

:: पृष्ठ ४१७ का शेषांश ::

और रोगी स्वस्थ होजागगा। चाहे बद्धगांठ किसी स्थान पर हो निश्चित ही आराम होगा।

आध्मान नाशक—

दारुहल्दी वच कूट
सौंफ हींगतलाव सेधानमक —सम भाग

विधि—सब को सिरके मे पीस कर गरम कर पेट पर लेप करे। लाभ होगा।

गुण—किसी भी प्रकार से पेट फूला हो इसके लेप करने से लाभ होजायगा।

श्री पं. जगदीशप्रसाद पाठक

डी. आई. एम. एस.

राजकीय आयुर्वेदीय औषधालये, जमुनहा हीरासिंह (बहराइच)
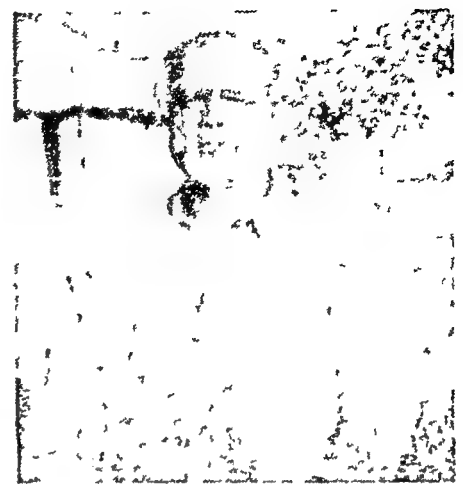
"आपका मूल निवास ग्राम सरैया (जि गोंडा) का है। संस्कृत मे मध्यमा परीक्षा क्वीन्स कालेज बनारस की उत्तीर्ण हैं। डी आई एम एस उपाधि विभूषित, श्री ललित हरि आयुर्वेदिक कालेज पीलीभीत के स्नातक हैं। ४ वर्ष जिला बोर्ड के औषधालय मे कार्य करके राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सा क्षेत्र मे आये, जहा अद्यावधि आप स्थित हैं। आप अपने नम्र स्वभाव एव विनोदपूर्ण वाक् चातुर्य से जनता को प्रभावित करते रहते हैं। पीलीभीत मे क्षात्र जीवन में आपने क्षात्र-आन्दोलन मे बडी दृढ़ता से सहयोग और संगठन को बनाए रखने मे सहयोग दिया। चिकित्सा मे आपकी परिकल्पना बड़ी अनौखी होती है। आपके भेजे चार योग यहा उपस्थित कर रहे हैं जो अनुभूत और सुलभ सुखकर हैं।"

—सम्पादक।

नक्तान्ध्य हर अंजन—

अशुद्ध स्फटिका अशुद्ध नरसार

—समभाग लेकर खरल मे डाल कर अंजन बनाले। दिन में २-३ बार सलाई से आख मे लगाले। इससे रतौंधी दूर होती है।

बरसाती पीड़िकाओं पर लेप—

जहरमोथा (हाथी पांव या भादा)

—मोथा खेतों तथा ऊसर में दो प्रकार के उगते हैं। ऊसर में उगने वाले को ही 'जहरमोथा' कहते हैं। इसका क्षुप ऊंचाई में लगभग २-३ इन्च तथा गोलाई लिए हुए हाथी के पांव के समान ही होता है, अस्तु इसे हाथी-पांव कहते हैं। फूल पत्ते तथा जड़े खेत में होने वाले के सदृश होते हैं। इसकी जड़े लाकर स्वच्छ करले। थोड़ा सा कत्था डालकर सिल पर बारीक पीस लिया जाय। सिर तथा मुख पर होने वाले बरसात के फोड़े पर लेप करने से अशातीत लाभदायक सिद्ध हुआ है।

विद्रधि पर—

कौड़िया लोबान एसेंसियल आयल

—खरल (चीनी के) मे डालकर खरल करे और गाढ़ा हो जाने पर विद्रधि पर लेप करले। दो-तीन बार के लेप से विद्रधि पक कर फूट जाती है।

मुखपाक—

शीतलचीनी वंशलोचन
रूमीमस्तगी सत्वगिलोय
छोटी इलाइची दाना मिश्री

—प्रत्येक समभाग

—इन सब औषधियो को कूट कर कपड़छान कर ६ रत्ती की मात्रा मे गाय के मक्खन मे मिला कर दिन मे ३ बार सेवन करे। मुखपाक मे लाभदायक है।

राजवैद्य पं. प्रयागदत्त प्राणाचार्य, सतना (मध्य प्रदेश)

"श्री प्राणाचार्य का जन्म राजवैद्य वल्देवप्रसाद जी खरे के घर हुआ। आपकी आयु इस समय ७७ वर्ष की है। संस्कृत अध्यायन के पश्चात् आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया तथा अपने पिता

से क्रियात्मक अनुभव प्राप्त कर चिकित्सा कार्य प्रारम्भ किया। आप वयोवृद्ध एवं अनुभवी चिकित्सक हैं, अतएव विश्वास है कि आपके निम्न प्रयोग भी सफल प्रमाणित होंगे।" —सम्पादक।

ज्वरहरी वटी—

चिरायता का फूल पित्तपापड़ा
कटुकी गौदन्ती भस्म अतीस
—सब समान भाग

—उपरोक्त औषधियों को समभाग लेकर चूर्ण बनाकर द्रोणपुष्पी (गूमा) करंजपत्र एवं तुलसी पत्र, इन तीनों पत्रो के रस से एक-एक बार भावना देकर चना प्रमाण वटी बनाकर छाया मे सुखालें।

सेवन विधि—२ गोलियां ज्वर आने से पहले दो-दो घण्टे मे शहद के साथ सेवन करायें।

गुण—विपमज्वर में अति लाभदायक सिद्ध है।

सूखी खांसी पर—

भटकटैई की जड़ सूखा आंवला
जीरा सफेद मुलहठी

—इन चारो वस्तुओं को लेकर के कूटकर कपड़छान करके रख लीजिए।

मात्रा—दो आने भर दवा शहद में दीजिये।

गुण—इस दवा के सेवन से सूखी व तर खांसी यानी जिसमें कफ निकलता है, दोनों प्रकार की खांसी में अति लाभदायक है, दिन रात मे तीन-चार बार खिलाना चाहिये।

धातुक्षीणता एवं स्वप्नप्रमेह—

सफेद मूसली स्याह मूसली
कामराज बीजबन्द गौखुरु बड़ा
सितावर ईसबगोल की भुसी
असगन्ध सत्व गिलोय
वङ्ग भस्म नाग भस्म लौह भस्म
—प्रत्येक १-१ तोला
पिस्ता बादामगिरी —३-३ तोला
केशर ६ माशा
मिश्री ५ तोला

—उपरोक्त काष्ठ औपधियों को कूटकर कपड़छान करके वङ्गभस्म, नागभस्म, लौहभस्म, मिश्री, पिस्ता, बादाम, केशर को बाद में मिला दिया जावे।

मात्रा—१॥ माशा से ३ माशा तक। धारोष्ण गौ-दूध के साथ प्रातः सायं लिया जावे।

गुण—इस दवा को ४१ दिन लिया जावे। सम्पूर्ण प्रमेह रोग, धातु का पतलापन आदि

—शेपांश पृष्ठ ४३१ पर।

श्री शिवकुमार पाण्डेय आयुर्वेदशास्त्री

विमल किशोर फार्मेसी, मु पो. धनौती (गया)

"आप गया जिलान्तर्गत धनौती ग्राम के प्रतिष्ठित श्री प गयादत्त पाण्डेय जी के सुपुत्र हैं। अ० भा० महासम्मेलन विद्यापीठ की शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण है। आप एक अध्यवसायी, परिश्रमी एव कुशल नवयुवक चिकित्सक है। आयुर्वेद, आपको वश परम्परागत थाति के रूप मे मिला है। सम्प्रति पलामू जिला हैदरनगर में श्री पृथ्वीनाथ साहीदेव जी के दरवार में लगभग तीन वर्षो से चिकित्साकार्य कर रहे हैं। आपकी सफल चिकित्सा से जनता सन्तुष्ट हे। पाठक आपके सफल प्रयोगो से लाभ उठावें।" —सम्पादक।

सन्निपात भूषण—

मृतसंजीवनी सुरा		१ बोतल
मधु		१२।। तोला
लवंग	जायफल	मरिच
दालचीनी	पीपल	पीपरामूल

—प्रत्येक १-१ तोला

कपूर डेला	६ माशा
कस्तूरी	३ माशा

निर्माण—सभी कूटने योग्य दवाओं को कूट कर चूर्ण वनालें और एक वड़ी बोतल में भर उसमे मृतसंजीवनी सुरा और शहद करदे। दृढ कार्क लगाकर बोतल को धूप में रखदे। प्रतिदिन बोतल हिला दिया करे। एक सप्ताह बाद छान कर दूसरी बोतल मे भरले।

मात्रा—१।। माशा से ३ माशा तक।

गुण—सन्निपात, शीताङ्ग सन्निपात, प्रलापक सन्निपात आदि भीषण अवस्था प्राप्त रोगियो को हर तीन-तीन घटे बाद १-१ मात्रा देने से यह चमत्कारिक गुण करती है।

वनिता विनोद (कष्टार्तव पर)—

पीपल	पीपरामूल	चित्रक
सोंठ	मिरच	रीठा

—प्रत्येक १०-१० तोला

शीशम के पत्ते	२० तोला
काले तिल	२ सेर
गुड़	२ सेर

—निर्माण विधि—शीशम के पत्ते व काले तिलो को २० सेर जल मे औटावे, चौथाई शेष रहने पर छान कर अन्य औषधियां एवं गुड़ मिला कर अरिष्ट विधानानुसार अरिष्ट निर्माण करे।

मात्रा—२ तोला तक बराबर जल के साथ।

समय—भोजन के पश्चात् दोनो समय।

गुण—कष्टार्तव, अशुद्ध आर्तव, जलन के साथ होने वाला आर्तव आदि आर्तव सम्बन्धी सभी शिकायतो को नष्ट कर शुद्ध आर्तव समय पर और शुद्ध लाता है। गर्भाशय को शुद्ध कर गर्भ धारण करने की शक्ति देता है।

श्री वैद्य गोवर्धन हंस. चागलानी

अध्यक्ष—घनश्याम आयुर्वेद भवन, पटियाली दरवाजा, एटा ।

"आप आयुर्वेद के परम भक्त चिकित्सक हैं। आपका जन्म शाहपुर चाकर जिला नवावशाह (सिन्ध) पाकिस्तान में हुआ। आपका शिक्षाकाल भी वही व्यतीत हुआ हैं। इस समय आप एटा नगर उत्तर प्रदेश मे घनश्याम भवन नाम से अपना निजी औषधालय चलाते हैं। आपके चिकित्सानुभव के सार रूप ४ प्रयोग यहा प्रकाशित कर रहे हैं। परीक्षित प्रयोग-रत्नो का पाठक विश्लेषण करके देखें और प्रयोग करें।" —सम्पादक।

तीव्र उदर शूल पर—

महावात विध्वंसन रस	संजीवनी वटी
प्रवाल पिष्टी	—प्रत्येक १-१ रत्ती
शङ्खभस्म	२ रत्ती

—यह एक मात्रा है।

अनुपान—गर्म जल, अमृतधारा मे गर्मजल मिलाकर उसके साथ या कुमारीआसव के साथ देवे।

गुण—यह मिश्रण वातप्रकोप-जन्य रोगो, जैसे वायुगोला तथा अजीर्ण के तीव्र शूल में जादू जैसा काम करता है। २-३ मात्रा देने पर शूल का निवारण होकर रोगी को निद्रा आ जाती है। जहा मॉर्फिया का इन्जेक्शन फेल हो जाता है, वहा यह मिश्रण चमत्कार दिखाता है। दो तीन मात्रा में शूल दूर होने पर—

सुखविरेचन चूर्ण—

—सनाय पत्ती और मिश्री समभाग ६ माशा मे २ रत्ती शङ्खभस्म मिलाकर गर्म जल से देने पर २-३ दस्त हो जाते है।

मैं इस मिश्रण को निम्नांकित प्रकार से सेवन कराता हूँ।

वायु गोला मे—कुमारी आसव १ तोला, गर्म जल २ तोला अमृत धारा (जीवन रसायन अर्क, रस तंत्रसार व सिद्धप्रयोग सग्रह प्रथम खण्ड) ४-५ बूंद मिलाकर उसके साथ, अजीर्ण मे शर्बत अदरक के साथ।

प्रसूता स्त्रियो के मक्कल शूल मे—इस मिश्रण मे दो एक रत्ती प्रतापलंकेश्वर रस मिलाकर दशमूलारिष्ट के साथ गर्म जल मिला कर।

विसूचिका (हैजा) मे—इस मिश्रण मे १ रत्ती सूतशेखर रस (स्वर्ण युक्त) और ½ रत्ती कर्पूर रस (अहिफेन युक्त) मिला कर देता हूँ। इसके प्रभाव से रोगी का शूल ऐंठन, प्यास, दस्त, कै आदि शीघ्र ही दूर हो जाते हैं और रोगी को निद्रा आजाती है। कुछ ऐसे रोगियो की चिकित्सा करनी पड़ी, जो तीव्र शूल से मूर्छित (बहोश) हो गये थे। उन रोगियो को पहिले "श्वास कुठार रस की नस्य दी, जिससे मूर्च्छा दूर हुई फिर यही उपरोक्त मिश्रण दिया जिससे ठीक होगये। यह प्रयोग मैने बच्चो तथा गर्भवती स्त्रियो को भी दिया है।

मुख पाक (मुख के छालो) पर—

खदिरादि वटी	प्रवाल पिष्टी

—सम भाग

—दोनों को मिलाकर मुख के छालों पर बुरक दें दिन में तीन-चार बार या छोटे बच्चों को इस मिश्रण की १ या आधी रत्ती मात्रा मुख में डाल दें, अपने आप बच्चा धीरे-धीरे चाटकर गले से नीचे उतार देगा, यदि गले (कंठ) मे भी छाले होंगे तो वे भी ठीक होजावेंगे। अधिक आयु के बच्चो, पुरुषों तथा स्त्रियो को गोली बनाकर दें। वे मुख मे डालकर धीरे-धीरे चूसते रहे। दोनों प्रकार के सफेद तथा लाल छाले अवश्य ही दो-चार दिन मे ठीक हो जावेंगे। यदि मलावरोध हो तो कास्टर ऑयल या अन्य विरेचन देवें। यदि मुखपाक रोगी मे कफाधिक्यादि लक्षण हो तो इस मिश्रण मे मृगशृंग-भस्म भी मिलाकर देवे।

आधाशीशी के दर्द पर—

नौसादर	१ माशा
गुलाब जल	१ तोला

विधि—नौसादर पीस कर शीशी मे डाले और गुलाब जल (अभाव मे सादा जल भी ले सकते हैं) भी शीशी में डालकर शीशी को हिलाकर ड्रापर से ५-७ बून्द निकाल कर, रोगी को खटिया पर ऐसे लिटावे जिससे रोगी का सिर खटिया के सिरहाने कुछ नीचे लटके और नाक के नथुनो मे दवा सरलता से पड़ सके, अब रोगी को कह दे कि दवा डालते ही ऊपर को सूंघलें। ड्रापर (पिचकारी) से डाले और रोगी उठ कर बैठ जावे, उसके नथुने पर से पानी सा टपकेगा और ५-१० मिनट में रोगी जो आधाशीशी के दर्द से चिल्लाता हुआ आया हँसता हुआ जावेगा। यह प्रयोग मुझे पूज्य गुरु देव श्री पं० विद्याभूषण जी वैद्य आयुर्वेदाचार्य से प्राप्त हुआ। कई वार का परीक्षित प्रयोग है। आवश्यकता पड़ने पर दूसरे तथा तीसरे दिन भी यही प्रयोग (नस्य) डाल सकते है।

प्रवाहिका (पेचिश) पर—

सूतशेखर रस (लघु)	शङ्खभस्म
लघु मालिनी बसंत	मुक्ताशुक्ति पिष्टी

—चारों १-१ रत्ती

कपूर रस	$\frac{1}{2}$ रत्ती

—यह एक पूर्ण मात्रा है, ऐसी दिन में ४-५ मात्रा दें। छोटे बच्चों तथा स्त्रियो को अवस्थानुसार मात्रा घटा-बढ़ा सकते हैं।

यह मिश्रण कुटजारिष्ट ६ माशा, शर्वत अनार ६ माशा, जल १ तोला के साथ दे। प्रवाहिका के ऐसे रोगी भी आते हैं जिन्हे दिन-रात मे ५०-१०० वार दस्त के लिये जाना पड़ता है, दस्त तो आता नहीं थोड़ा-थोड़ा खून तथा आव पीव सा आता है। ऐसे रोगियों पर यह प्रयोग बहुत सुन्दर है। पहिले ही दिन अपना असर दिखाता है। २-४ दिन निरन्तर लेने पर रोग नष्ट होजाता है। निर्वल रोगियों को लघुसूतशेखर के स्थान पर सूतशेखर रस (स्वर्णयुक्त) देने पर शक्ति भी शीघ्र आजाती है।

नोट—प्रयोग अधिकांश शास्त्रोक्त है अतः उनकी निर्माण विधि नहीं लिखी गयी है।

श्री भगवानदास वैद्य

मुहल्ला-वजरिया, हटा (दमोह)

"आपके पिता श्री वैद्य गंगाप्रसाद जी भी चिकित्सक थे तथा आपने उनके पास रह कर ही चिकित्सा-ज्ञान प्राप्त किया। आप होमियोपैथी तथा प्राकृतिक चिकित्सा के भी ज्ञाता हैं, तथा गत १८ वर्षों से चिकित्सा व्यवसाय मे संलग्न है।"

—सम्पादक।

श्वेत प्रदर पर—

१—केला पका हुआ लें। छिलका उतार कर गूदे में शहद लगा कर खालें, ऊपर से गरम दूध में इलायची छोटी डालकर पीलें। इस प्रकार नित्य दोनों समय २ माह तक केला व्यवहार करने से श्वेत प्रदर अवश्य नष्ट होता है।

२—सितावर असगन्ध रूमीमस्तंगी
सफेद राल —प्रत्येक २-२ माशा
रौप्य (चांदी) भस्म ६ माशा
मिश्री १० तोला

—इनको कूट-पीस कर २१ मात्रा वना ले। प्रातः सायं १-१ मात्रा गौदुग्ध के साथ सेवन करे।

गुण—श्वेत प्रदर मे शीघ्र लाभप्रद औषधि है।

वालको के अतिसार पर—

१—पोस्त की डोडी ३ माशा

—१ पाव पानी मे रात को भिगोदे। प्रातःकाल मसल कर छान ले। इस जल को दिन मे ३-४ बार १-१ तोला की मात्रा मे वालक को पिलावें, दस्त अवश्य वन्द हो जायेगे।

२—आम की गुठली ठण्डे पानी मे घिसकर वालक के नाभि-प्रदेश पर लेप करने से भी दस्त वन्द हो जाते हैं।

ये सरल प्रयोग देखने मे छोटे है किन्तु वालको के लिये उत्तम सौम्य प्रयोग है, अत चिकित्सको को अवश्य व्यवहार कराने चाहिए।
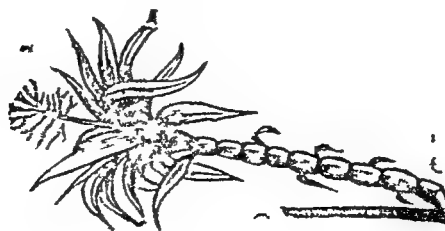
खरल करें फिर मिर्च के बीज मिलाकर बहुत बारीक खरल करलें, तत्पश्चात् आक के लौंग डालकर खरल करे और बाद में हींग, कपूर और अहिफेन डाल कर बारीक घोट लें। तदनन्तर सुरा डाल कर कम से कम एक प्रहर घोट कर आधी रत्ती प्रमाण की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली से ३ गोली तक।

गुण—विशूचिका के लिए यह अमोघ शस्त्र है। प्याज का रस, अर्क सौंफ, पोदीना और अजवायन, अद्रक का रस, लौंग, इलायची अथवा मोथा शृत जल आदि अनुपानों से दें।

पैत्तज शूल को छोड़ कर सब शूलों पर तुरन्त लाभ करता है। पैत्तज शूलों में शिकंजवीन से अर्कगुलाब और कासनी मिलाकर, त्रिफला और अमलतास के क्वाथ, आम्ला या शतावर के रस, नारिकेल जल से देने से भी बहुत लाभ होता है। आमाशय, मलाशय, पक्वाशय, यकृत तथा अन्य उदर शूलों पर जहा मार्फिया (Morphia) के इन्जेक्शन की आवश्यकता पड़ती है वहां यह इन्जेक्शन से कम लाभ नहीं करता। वृक्क शूल (Renal colic) मे इस योग में संगयहूद (पत्थर बेर) भस्म या पिष्टी मिलाकर उपयुक्त अनुपान से देवे। अच्छा लाभ करता है। अनेक रोगों पर वैद्यजन इसके घटकों को ध्यान मे रखते हुए प्रयोग में लावे और सफलता प्राप्त करें।

संकेत (१)– शूलों पर प्रयोग करने के लिये हम इस योग मे एक भाग खुरासानी अजवायन सत्व (अभावे-बीज) भी मिला लेते हैं। इस प्रकार इसका गुण अधिक हो जाता है। कब्ज के लिए ऐरण्ड तैल (Castor oil) या पंचसकार चूर्ण का प्रयोग करें। मक्कल शूल मे यवक्षार मिलाकर या दशमूल क्वाथ व अर्क से दे।

संकेत (२)—अधिक बार और अधिक मात्रा मे न दे। इससे प्यास अधिक लगती है उसका यथोचित उपचार करे।

वमन, छर्दि पर वृ. एलादि चूर्ण—

एला	लवङ्ग	आमला की मज्जा
बेर मज्जा (बेर की गिरी)		पिप्पली
मुस्तक (मोथा)		श्वेत चन्दन
धनिया		वंशलोचन
अश्वत्थ (पीपल छाल)		प्रियङ्गु पुष्प
नागकेशर		सांठी के चावल

—प्रत्येक १-१ तोला

अनार दाना ४ तोला

अनुपान—रोग, दोष और अवस्थानुसार दुगुनी खांड मिला अथवा वैसे ही शहद, शर्बत अनार, शर्बत नीम्बू, चन्दनादि अर्क (चन्दन, मौलसिरी गुलाब, केवड़ा, बेदमुश्क और कमल पुष्प) गुडूच्यादि अर्क (गिलोय, धनिया पद्माख रक्त चन्दन) पीपल क्षार डाल कर निथारा हुआ जल, गेरू बुझा हुआ जल, गिलोय, पित्तपापड़ा (पर्पट) अथवा पटोलपत्र का रस या क्वाथ, जरिश्क और समाक दाना का शीत कषाय, अर्क सौंफ पोदीना, इलायची आदि कपूरासव युक्त अथवा रहित इत्यादि अनुपानो से दें।

—इसी प्रकार रोगानुसार इसमें जहर मोहरा (अथवा जहरमोहरा खताई) भस्म या पिष्टी, मयूरपुच्छ भस्म, रसादि चूर्ण (वमनाधिकार यो. र) सर्वतोभद्ररस (ज्वर० भै० र०) हृदयान्तिरस, स्वर्णमाक्षिक भस्म मिला कर प्रयोग करने से सब प्रकार की वमन को अवश्य लाभ होता है। जब दूसरे योग असफल होजाते है तब इसे प्रयोग मे लाया जाता है। अथवा साथ-साथ इसकी चटनी सी बनाकर थोड़ी-थोड़ी देर बाद चटाया जाता है। इस योग का उल्लेख मिफताह उल हिकमत में भी मिलता है। वहां इस मे २ तोला कस्तूरी मिलाने का वर्णन है परन्तु हम विशूचिका के रोगियों के लिये ही इसमे कस्तूरी मिलाते है।

पूयमेह पित्तमेहादि पर—

शतावर	मूसली श्वेत	कौंचबीज
तोदरी	तालमखाना	प्रवाल भस्म
चांदी भस्म		—सातों ७-७ माशा
विदारी	छोटी इलायची	गोखरू

अभ्रकभस्म शीतलचीनी
शाल्मली निर्यास सेंमर गोंद

—यह ६-६ माशा

सत गिलोय बड़ी इलायची मोचरस
श्वेत मिश्री —चारों ३-३ माशा
सतशिलाजीत तवाशीर (वंशलोचन)
सत विरोजा वंगभस्म राल
कहरवा मिश्री सालिब मिश्री

—आठों १-१ तोला

—सब वस्तुओं को पृथक्-पृथक् बारीक कूट-पीस कर और कपड़छान कर उक्त मात्रानुसार लें। और बाद में भस्में मिलाकर चूर्ण बनावें।

मात्रा—१॥ माशा से ३ माशा तक, योग्य अनुपान से देवे।

गुण—पित्त प्रमेह, स्वतन्त्र रूप से अथवा पूयमेह के कारण होने वाले असाध्य धातु विकार, शुक्र-तारल्य, जननेन्द्रिय द्वारा विधि पूययुक्त अथवा पैत्तिक स्राव, स्वप्नदोष, वीर्यविकार और स्त्रियों के पूयमेह के कारण उपद्रव रूप अथवा श्वेत, पूति गन्ध प्रदर, गर्भाशय विकार और बांझपन को विशेष रूप से लाभप्रद है।

जीर्ण अथवा उपद्रव युक्त पूयमेह—

विरोजा १ शिलाजीत सत्व गिलोय
सेलखड़ी (संगजराहत) वंशलोचन
दाना छोटी इलायची गेरू
कत्था नागभस्म (सीसा)२
बङ्गभस्म शोरक गन्धक३
फिटकरी योग४ सीपभस्म
चनामुना कपूर जौहर५
मल्लयोग६ —सभी सम भाग

—मेंहदी पत्र स्वरस की तीन दिन भावना देकर २ रत्ती की गोली बनावे। प्रात: सायं पानी से जलन होने पर दूध की पतली लस्सी से दे। पुराने सुजाक, कुरह, मूत्रेन्द्रिय और जननेन्द्रिय संस्थान तथा समीपवर्ती प्रदेश में प्रदाह, शोथ और रक्तगत सुजाक के कीटाणुओं के कारण शरीर के दूसरे स्थानों में पूय स्राव को लाभ करता है। यदि जलन रहती हो तो गन्धक रसायन का साथ में प्रयोग किया जाता है।

हताश और निराश कुरह के रोगी इससे ठीक हुए हैं। पैन्सलीन आदि से न ठीक होने वाले पूयमेही के कर्णस्राव को इससे ठीक किया है।

यह योग वैद्य भूषण पं० ठाकुरदत्त शर्मा अमृतधारा वाले द्वारा सम्पादित शुभ प्रकाश में प्रकाशित हुआ था।

१—विरोजा शुद्ध—एक घड़े में कच्ची लस्सी डाल मुंह पर खद्दर का कपड़ा बांध दें। ऊपर विरोजा रख कर ढांप दें और नीचे आग जलावें। विरोजा पिघल कर घड़े में आजावेगा। निकाल कर सुखालें। इस प्रकार सात बार शुद्ध करें।

२—नाग भस्म—नाग (सीसा) ४ तोले पिघला कर भंगरा १६ तोला, शोरा १६ तोला पीसकर (रखलें) उनकी चुटकी दे देकर और लोहे की कड़छी से रगड़ते जावें। नाग की भस्म हो जावेगी।

३—शोरक गन्धक योग—सम भाग शोरक और गन्धक को किसी कूजे में डाल कर ढक्कन से बन्द करदें और कपड़ मिट्टी करें। सूखने पर चूल्हे पर रख कर नीचे आग जलाये जब तक कि वह भस्म न होजावे।

४—फिटकरी योग—मुलतानी मिट्टी और फिटकरी सम भाग लें और आग पर रख कर सुखालें।

५—कपूर जौहर—केले के पानी और कपूर को घड़े में डालकर ऊपर से सरवा से ढंक दें और गाजनी से सधि बन्धन करें और भीगे कपड़े से ढक्कन को ठंडा रखते हुए नीचे आग जलाऐ। इस प्रकार जौहर प्राप्त करें।

६—मल्ल योग—संखिया सफेद, नौशादर, सीप, कली चूना सब सम भाग लेकर अर्क दूध में ३ दिन तक खरल करे और बीस सेर उपलों की आग दे।

कविराज श्री पं. रामगोपाल मिश्र राजवैद्य

आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेद मार्तण्ड

गोंदिया ।

"श्री मिश्र महोदय का जन्म सम्वत् १९३९ में प्रतापगढ जिले के रामपुर ग्राम मे हुआ था । आपकी चिकित्सा बड़ी अनुभवपूर्ण होती है । आप आयुर्वेदीय औषधि-निर्माता एव प्रतिभाशाली लेखक हैं । आप संस्कृत मराठी, गुजराती, मारवाडी तथा हिन्दी भाषा के अच्छे ज्ञाता हैं । भारतीय वैद्य सम्मेलनो से प्रमाणपत्र तथा स्वर्णपदक प्राप्त किए हैं । आपने अपने लेखो द्वारा विविध पत्रो से आयुर्वेद जगत की वडी सेवा की है । इस वार अपने अनुभवपूर्ण दो प्रयोग देकर वैद्य बन्धुओ को कृतार्थ किया है । प्रयोग निम्न हैं ।"

—सम्पादक ।

प्रदर रोग पर—

शिलाजीत २ तोला

लोहभस्म वङ्गभस्म यशदभस्म

अभ्रकभस्म शङ्खभस्म

प्रवालपिष्टी चन्द्रपुटी सफेद राल

मोचरस स्वर्णगैरिक

—प्रत्येक १-१ तोला

—इन सवको खरल मे डालकर आंवला, गुडूची, अडूसा दूब इनके रस की ७-७ भावना देकर घोटना चाहिये । पश्चात् २-२ रत्ती की गोली वना छाया मे सुखाकर सुरक्षित रखे । समय पर काम लेवे ।

प्रधान गुण—श्वेत, रक्त, पीत, नील प्रदर, पुराना या नया कैसा भी हो अवश्य नष्ट होता है ।

दिन मर्यादा—नया तीन सप्ताह मे, पुराना ३ माह में अवश्य नष्ट होता है ।

अनुपान—औषधि की १ गोली प्रात. सायं ३ माशे सादा च्यवनप्राश और मधु मिलाकर चटावें, ऊपर से निम्न प्रदरान्तक फाट पिलावे—

फान्ट की औषध—

आंवला छोटा गोखुरु गुडूची

—प्रत्येक ५-५ तोला

लोध मुलहठी

हल्दी अशोक छाल

—प्रत्येक २॥-२॥ तोला

—सबको दरदरा कूटकर १-१ तोला की पुडिया बांध ले । संध्या को १ पुडिया ६ तोला जल मे भिगो दे और प्रात. आग पर रख गरम करले और छानकर ठंडा कर ले । वाद को ३-४ माशे मधु मिलाकर दवा चाटने के वाद ऊपर से पिलावे । संध्या के लिए चीनी, पत्थर या काच पात्र मे भिगो दे ।

पथ्यापथ्य—तैल, मिर्च, नीबू, आम इमली की खटाई, सिरका, चने के वेसन के भजिये आदि कढ़ाही तली चीजे, खोवे या मैदे की चीजे मना है । विस्तर का परहेज रखे । नियमित भोजन करे, तुवरदाल, रोटी, चावल, साग, दही, कढ़ी, गाय का दूध, खीर, हलुआ, मक्खन मलाई, मीठा दही, फल रस सेवन करे ।

मध्य गुण—कुक्षिशूल, कटिशूल, योनिशूल नाशक ।

सामान्य गुण—मूत्रकृच्छ्र, योनिकण्डु, पांडुनाशक ।

विशिष्ट गुण—असाध्य प्रदर जिसे डाक्टरों ने छोड़ दिया हो, सगर्भा दशा में पानी जाता हो, पेशाव मे सफेद गुच्छा सा जाता हो, चिकने सफेद स्राव से वस्त्र गीला होता हो अवश्य

और अचूक लाभ होता है।

अनुभव में आये हुए गुण—रजविकृति और तज्जन्य उपसर्गों तथा स्थूलत्व (मोटापे) को दूर करता है।

सामान्यतः गुण प्रगट की मर्यादा—नूतन विकृति में प्रथम से द्वितीय सप्ताह के अन्त तक, पुराने मे तीसरे चौथे सप्ताह तक। कष्ट साध्य मे पाचवें सप्ताह तक।

गुल्मरोग पर—

अग्निकुमार रस	१ रत्ती
माडूर भस्म	१ रत्ती
शिलालोह	१ गोली

—प्रदर रोग मे कहा हुआ हिंग्वादि चूर्ण ३ माशा, जिसके द्रव्य आगे लिखेंगे, सबको १ से दो औंस टमाटर के रस से देवें, औषध देते समय ½ रत्ती या १ रत्ती बज्रक्षार (भैषज्यरत्नावली के पाठ के अनुसार बनाया) अवश्य मिलाकर रोगिणी या रोगी को औषधि पिलावे।

—१ घंटे के पश्चात् लोनिया शाक (घोल भाजी चागेरी) बड़ी पत्ती और मोटे डठल वाली को शुद्ध करके दराती (हंसिया) से बारीक कतरना और उसके १ पाव वजन मे २॥ तो. खड़ा मूंग २॥ तोला मोटा लाल चावल डालना और सबको एक सेर पानी मे पकाना, जब आधा पाव पानी रहे उतार कर ठंडा करे और खूब मलकर छान लें। फिर अन्दाज का सैंधव नमक मिला दो आने भर शुद्ध घी मे दस-बीस दाने जीरे का छौंक देकर उस मुग्द यूप को छौंक देना। उतार कर स्वच्छ शीशी में डाट लगाकर रखना, ३-३ घण्टे के अन्तर से छोटे कप (हाफ कप) के अन्दाज से ३ या चार बार देना। रोगी को कब्ज न रहे इसका पूरा ध्यान रखना आवश्यक है। इस यूप से दस्त साफ आ जाता है। क्वचित ऐसा न हुआ तो उसी को बनाते समय आध पाव टमाटर डालकर यूप तैयार करे। फिर भी कब्ज प्रतीत हो तो १ तोला किरमाले की फली का गूदा (राजवृक्ष की फली-वाह की फली) डालकर यूप निर्माण करना। सबेरे और शाम दोनों समय इसी प्रकार सेवन करावे।

भोजन—फुलको का छिलका, टमाटर का रस दो औंस, तुवर दाल का नितारा पानी दो औंस, अद्रक रस १० बूंद प्रमाण का सैंधव मिलाकर इसके साथ देवे। पाचन क्रिया ठीक हो, अग्नि प्रदीप्त हो ऐसे रोगी को फुलका दे सकते हैं। पका टमाटर १ छटांक, थोडा सा अद्रक और सैंधवयुक्त बनाई चटनी नियमित रूप से देते रहे।

मध्य से—अनार का रस या टमाटर का रस रोगी लेता रहे। चाय पीता हो तो बन्द करके कॉफी देवे।

हिंग्वादि चूर्ण के द्रव्य—

सोंठ	मिर्च	पीपल
जीरा	स्याह जीरा	अजमोदा
अजवाइन	वायविडङ्ग	सैंधव
सोंचर बिडनमक		समुद्र नमक

—प्रत्येक २॥-२॥ तोला

छोटी हरड़	१ पाव
भुनी हींग उत्तम	१। तोला

—सबको कूट-कपड़छान कर शीशी मे रखे।

मध्यम गुण—उदर गुहा मे धीरे-धीरे बढ़ने वाला अस्थिर या स्थिर वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज और रक्तज गुल्म जिनका सम्बन्ध अग्न्याशय, उदरगत महाधमनी, वृक्क, उपवृक्क, गर्भाशय, उदरस्याकला, उदर्य्याकला से क्यो न हो। आमाशयिक, त्रिदोषज गुल्म (कर्क स्फोट-केन्सर आफ दी स्टमक) यह अग्न्याशयिक त्रिदोषज गुल्म जो आमाशय के दूसर भाग की अपेक्षा मुद्रिका द्वार पर हुआ हो एवं जिसके भीतर इतर गौण अर्बुद उत्पन्न होने से सौत्रिक

तन्तुओं से या श्लैष्मिक कला के कोषाणुओं से व्याप्त हो, कठिन अथवा मृदु प्रकार का भासता हो जिस पर केकड़े की पीठ सदृश ऊपर का भाग और चारों ओर केकड़े के पावों का सा घेरा हो अर्थात् यह कर्क स्फोट (कार्सिनोमा) हो अथवा मध्य पटलीय या अन्त पटलीय घातक मांसार्बुद के भेदों वाला कर्कस्फोट हो या आन्त्रिक कर्क स्फोट (इन्टेसटाइनल केन्सर) हो अवश्य नष्ट होता है।

प्रधान गुण—उदरगुहा में होने वाले गुल्म, स्त्रियों को होने वाले रक्तगुल्म, ग्रंथी, अर्बुद एवं इनसे उत्पन्न होने वाला नया नामधारी सकर रोग कर्क स्फोट (केन्सर) अवश्य नष्ट होते है।

सामान्य गुण—अग्निमांद्य, यकृतवृद्धि, यकृत शोथ, यकृत् की शिथिलता, कब्जी, कामला, पाण्डु, प्लीहावृद्धि आदि रोग नष्ट होते हैं।

विशिष्ट गुण—उदरगुहा में उत्पन्न होने वाले वात पित्त कफ की शुद्धि को और तजन्य उपसर्गों वाले ग्रन्थी अर्बुद का नाशक। पित्ताशय में होने वाली अश्मरी, वृक्काश्मरी पर अपना प्रभाव डालता है। वज्रक्षार के अभाव में असली यवक्षार, अग्निकुमार के बदले में सङ्गसरेमाही की पिष्टी मिलाकर हिंग्वादि रहित यही औषधि कथित अनुपान से दी जाय तो मूत्र शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राशय की नवीन पथरी नष्ट होती है।

:: पृष्ठ ४२१ का शेषांश ::

विकार नष्ट होते हैं।

परहेज—तैल, मिर्च, खटाई, कब्ज की वस्तुओं का रखना चाहिये।

उदरशूल पर—

सौंठ	सुहागे का फूला हुआ
सोंचर नमक	—सब २-२ तोला
भुनी हुई हींग	३ माशा

—उपरोक्त औषधियों का चूर्ण बनाकर कपड़छान करके उसमे भुनी हुई हींग मिलाकर पुनः सहंजने के रस मे १ पहर घोटिये। इस प्रकार घोटने के बाद बदरीफल (बेर) के समान वटिका बना लेना चाहिए।

सेवन विधि—१ गोली उष्ण जल के साथ सेवन करावे।

गुण—यह औषधि उदर शूल पर अति लाभदायक सिद्ध है। दिन मे तीन-चार बार खाना चाहिए।

वैद्य श्री गणपति लक्ष्मण पंडित

आयु. शास्त्री सी. टी. एस., डी. डो. एस-सी. साहि. भूषण
मंगल मूर्ति प्रासादिक औषधालय, खरगोन।

"आपके वंश मे कई पीढियो से औषधि एव ज्योतिष का कार्य चला आ रहा है। उस अनुभव के आधार पर प्राय आपकी औषधिया प्रासादिक एव विलक्षण गुण प्रकट करने वाली होती है। आपका आयु ५६ वर्ष है तथा आप गत ३० वर्षो से सफलतापूर्वक चिकित्सा कार्य मे सलग्न है। आपका कहना है कि आयुर्वेदिक औषधि निर्माण में अति सावधानी, पवित्रता एव शुद्धता बरती जानी चाहिए तभी औषधियो का समुचित गुण प्रकट होता है। आपने उदारता वश अपने कुछ प्रयोग प्रकाशनार्थ भेजे है। हम उन्हे यहा साभार उद्धृत कर रहे हैं।"

—सम्पादक।

नवनीत वटी—

जहरी कुचला शुद्ध	१॥ तोला
काली मिर्च	१ तोला
अफीम शुद्ध	१ तोला
नागरवेली पान का रस	१२ तोला

—डालकर एकान्त मे ६ घंटे तक घोटे। गोलियां बाजरे के बराबर प्रमाण की २५०० बनेगी।

गुण एवं सेवन विधि—साधारण ज्वर को भी शमन करती है। आम (लाल, व श्वेत आंव) के लिए २ गोली मक्खन मे देवे। यदि ५०-५० दस्त भी होते हो तो २ गोली खाकर ऊपर से पाव भर मट्ठा पिये। सग्रहणी मे भी इसी विधि से ली जाती है। अतिशीघ्र लाभ होता है।

सर्व बालरोग हर—

काले कबूतर की विष्ठा कपड़छान की हुई	१ तो.
मुर्गी की विष्ठा कपड़छान की हुई	१ तो.
सोना सुहागा फूला हुआ	१ तो.

—सबको खूब खरल करके रक्खें।

मात्रा—१ से २ रत्ती तक। माता के दूध से।

गुण—बालकों के सब प्रकार के रोगो पर दिया जाता है। इससे कफ भी पतला हो जाता है।

ज्योति स्मृति—

बिना छिलके के अरण्डी के बीज ५ तोलां
(गाय के आधा सेर दूध मे उबाल लेना)
इलायची के दाने बादाम बीज
—दोनो २॥-२॥ तोला

मिश्री	१० तोला
वशलोचन	१ तोला

—सबको बारीक चूर्ण कर घृत मिलाकर कासे की थाली मे रखें। प्रतिपदा से शरद पूर्णिमा तक रोज रात भर चन्द्र प्रकाश मे रखना और एक मलमल का कपड़ा ढंक देना। औषधि मिलाते समय घृत मिलाने के बाद हाथ नहीं लगने पावें। १५ दिन ही केवल चन्द्र प्रकाश मे रखने पर वह सिद्ध हो जाती है। वर्ष मे केवल एक बार ही बन सकती है।

मात्रा—२॥ तोला खाकर ऊपर से पाव भर या आध पाव मिश्री मिलाकर गुन-गुना गौदूध पीवें। स्मरणशक्ति बढ़ती है। दृष्टि भी बढ़ती है। यदि कोई ३ माह तक पथ्य से इसका सेवन करें तो चश्मे की आदत छूट जाती है। (नेत्र ज्योति बढ़ जाती है।)

सर्व रोग समूह कुलान्तक वटी—

कृष्ण वत्सनाभि शुद्ध	१ तोला
छोटी लेंडी पीपर	१ तोला
शिंगरफ शुद्ध	२ तोला

—सबको नींबू के रस में अच्छी तरह खरल करके उड़द प्रमाण गोलियां बनावे।

पथ्य—तैल, अम्ल, वातुल वस्तुएं वर्जित हैं।

मात्रा—बड़ों को १ या २ गोली, बालकों को आधी गोली से १ गोली तक।

उपयोग—कास, ज्वर, श्वास, सन्निपात, अग्निमांद्य सर्वांग शैत्य, आलस्य और निश्चेष्टता होने पर भी इस अनुपान से देना। अद्रक रस ६ माशा तुलसीपत्र रस ६ माशा, शहद १॥ तोला सबको एकत्रित कर गुटिका घिसना और देना। अत्यन्त लाभप्रद है।

महाज्वरांकुश वटी—

शुद्ध पारद	शुद्ध आंवलासार गंधक
शुद्ध कृष्णवत्सनाभि	—तीनों १-१ तो
कृष्ण धतूर बीज	सौंठ
काली मिर्च	छोटी लेंडी पीपर

—प्रत्येक ३-३ तोला

—सबका चूर्ण कर जंबीर रस से खरल करके गुंजा प्रमाण गुटिका बनावे।

अपथ्य—तैल, खट्टा, वातुल पदार्थ वर्जित है।

मात्रा—१ या २ गोली शक्ति के अनुसार, मधु से लेवे।

गुण—नित्य ज्वर, तृयीयक ज्वर, चातुर्थिक ज्वर नष्ट होते हैं।

पथ्य—जूने चावल, छिलके वाली मूंग की दाल की खिचड़ी, घृत थोड़ा, फुलका रोटी और पतली दाल।

विभिन्न रोगों पर अनुपान—पित्त ज्वर एवं चातुर्थिक ज्वर पर निम्न काढ़े में गोली देना—

कषाय—गुड़वेल (गिलोय), रक्त चन्दन, खस, चिरायता, नागरमोथा, पित्तपापड़ा का अष्टमाश कषाय करे, हरेक वस्तु ३-३ मोशा लेना। कषाय में १ या २ गोली घिसकर ३ या ४ दिन दोनों समय देना।

अजीर्ण ज्वर पर—सौंठ नागरमोथा १॥-१॥ तोला —अष्टमांश कषाय करके आधे काढ़े में १ या २ गोली घिस कर देना। शेष आधे कषाय को गुन-गुना कर सायंकाल को १ या २ गोली के साथ लेना ३ दिन तक।

कफज्वरे—हरड़, पीपल, बालवच, मरिच, मुलहठी पूर्ववत् कषाय करके गोलियां देना।

वात ज्वरे—सौंठ, वेत्रमूल (वेत की जड़), चित्रक मूलत्वक के कषाय के साथ पूर्ववत् वटिका लेवें।

विषम ज्वरे—निलीमूल (नील की जड़), भू-आवली मूल, श्वेत द्रोण (द्रोणपुष्पी) मूल के पूर्ववत् कषायमें, तुलसी मूल, अपामार्ग मूल और सुर्जणा मूल (सेहजना) के पूर्ववत् कषाय में औषधि लेवे।

कफ पित्ते—अद्रक रस में।

शीत ज्वरे—त्रिकुटस्य (सौंठ, मिर्च, पीपल) कषाये।

ज्वर में दाह घबराहट पर—सोंठ, द्राक्षा, साल की धाणी के कषाय में औषधि लेवे।

हरिद्रावटक—

सर्व रोग पर

जावली हल्दी	निम्बू पत्र छाया शुष्क	
छोटी लेंड़ी पीपर		दारु हल्दी
काली मिर्च	वायविडङ्ग	सोठ
नागरमोथा	—सब समान भाग	

—अजामूत्र से खरल करें। गुंजा प्रमाण की गोलिया बनावे।

मात्रा—१ या २ गोलियां।

अजीर्ण में—गरम पानी मे घिसकर दे।

अतिसार-सग्रहणी में—गाय के मट्ठे मे।

सर्पदंश पर—गुटिका तक्र मे घिसकर दंश स्थल पर लेप करे।

वृश्चिक दंश—एक गुटिका अर्कदुग्ध में घिसकर दंश स्थल पर लेप करे। १ गुटिका अर्क दुग्धे भक्षण करें।

नेत्रे-उष्णता से निरन्तर जल प्रवाह हो—इसी रोग से बाल तक झड़ जाते है या उनके रंग में परिवर्तन हो जाता है। नेत्र रोग मे गौमूत्र में या जल में गोली घिसकर अजन करे। सर्व-नेत्र रोग नाशक है। सतत १ माह या पन्द्रह दिन तक प्रात सायं अंजन करना आवश्यक है।

त्रिदोष ज्वर—शक्कर मे या गुड़ मे गोली देवे।

रक्तातिसार में—इलायची, लवङ्ग, तेजपत्र १-१ माशा तीनो को लेकर सेक कर फक्की के साथ १-२ गोली लेवे।

पाण्डु रोग मे—गौमूत्र मे औषधि देवे।

नोट—७, ११, २१, ४१ दिन तक पथ्य रोगानुसार।

बब्बूलादि वटी—

(सर्व ज्वर, जीर्ण ज्वर उष्णवात पर गुटी)

काले बबूल की फलिया	११ सेर
पानी	११ सेर

—उबालना, आधा पानी जलने पर फलियां छान कर निकालना। शेष पानी का मावा (घन) बनाना। चीनी बेर बराबर छोटी-छोटी गोलिया बनाना। गोलिया बनाने के पहले घन मे ६ माशा मौक्तिक शुक्तिभस्म डाले, तो अपूर्व वटी बन जायगी। प्रात. सायं १-१ गोली लेना।

पथ्य—रोगानुसार।

: पृष्ठ ४३९ काशे पांश :

पीपल की दाढी शुष्क	सांठी चावल
अपामार्ग की गीली जड़	छोटी इलायची
वंशलोचन असली	—प्रत्येक १-१ तोला
केशर काश्मीरी	१ माशा

विधि—सबको घोट-छान गधी का दूध मिला खूब खरल कर ज्वार दाना प्रमाण गोली बना छाया मे सुखाकर रखें।

मात्रा—१ गोली से २ गोली रोग, बल, आयु का विचार कर माता या बकरी के दूध या पानी मे मिलाकर देवें तो सूखा रोग (मसाण) नष्ट हो।

स्वादिष्ट चूर्ण—

सोंठ	पीपल	पोदीना
काली मिर्च	सनाय	हरड़ छाल
श्वेत जीरा	—प्रत्येक ५-५ तोला	
नमक सैंधव		२० तोला
देशी खांड		१५ तोला
असली नीबू सत्व		३ तोला
हीरा हींग भुनी		१ तोला
पिपरमेंट		३ माशा

—कूट छान शीशी मे रखें।

मात्रा—१ से ३ माशा तक।

गुण—अजीर्ण, मन्दाग्नि, कब्ज, शूल, अफारा आदि उदर की व्याधियां दूर होती हैं।

आयुर्वेद विशारद *B. M. B. S, H. M D. S.*

अर्बुदांचल औषधालय, चम्पा गुफा, आबु।
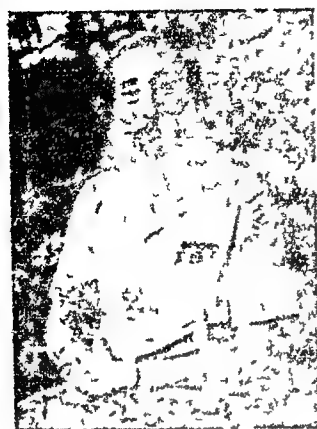
"आप एक विरक्त वैष्णव साधु और अनुभवी वैद्य हैं। आबु पर्वत पर १८ वर्ष से चिकित्सा व्यवसाय करते हैं। आपने आयुर्वेद ज्ञान और उपाधिया झांसी वि विद्यालय, लखनऊ एवं लहरिया सराय दरभगा विहार आदि से प्राप्त की हैं। यद्यपि आप त्यागी और विरक्त हैं फिर भी लोक कल्याण के निमित्त रोगी दीन जगत की सेवा में सलग्न हैं। आपके प्रयोग स्वानुभवपूर्ण तथा उपयोगी है।" —सम्पादक।

नाड़ीव्रण (नासूर) रोग—

नाड्यः पंच समाख्याता वात पित्त कफैस्त्रिधा ।।
त्रिदोषैरपि शल्येन · · · · · · ।
—शार्ङ्गधर संहिता।

नाड़ीव्रण (नासूर) पाच प्रकार के हैं—१. वातज २. पित्तज ३. कफज ४. त्रिदोषज ५ शल्य नाड़ी व्रण।

विशेष विवरण—जो मनुष्य पके हुए फोड़े को कच्चा समझ कर उपेक्षा करे अथवा बहुत राध (पीप) बहते फोड़े की उपेक्षा करें तब वह बढ़ी हुई राध पूर्वोक्त त्वङ्मासादिक स्थानों में जाकर उनको भेदन कर बहुत भीतर पहुँच जाती है और तब मार्ग कर उसमें वह राध नाड़ी के समान बहती है। इसी को नाड़ी व्रण कहते हैं।

अनुभव सिद्ध प्रयोग—

नौसादर तैल—

जस्ता (यशद) ७ तोला

—को लोहे की कढ़ाही में अग्नि पर चढ़ाकर पिघलाओ। जब वह पिघल जाय तो उस पर नौसादर की चुटकी डालते जाय और एक लोहे की छड़ या डंडा से हिलाते जाय। ५ तोला नौसादर समाप्त होने पर कढ़ाही को नीचे उतार ले। यह तैलवत् हो जायगा, उसे शीशी में भरले।

व्यवहार विधि—इस तैल में से एक रुई की बत्ती व्रण के आकार के अनुसार (मोटी या पतली) बनाकर भिगोकर नाड़ीव्रण में शनैः शनैः भर दे। यदि छिद्र छोटा हो तो विन्दु रूप में और बृहद्रूप में हो तो मलहम रूप में डाले या लगावे।

प्रभाव—इस तैल से रोगी को अति जलन होती है परन्तु जलन की चिन्ता न करे। इस क्रम से प्रतिदिन लगाते रहने पर धीरे-धीरे जलन कम होती जायगी और व्रण भरता जायगा।

खाने के लिए—

मोरपङ्ख का बीच वाला चांद एक को कैंची से कतर ले और उसे खरल में डालकर खूब महीन पीस ले। उसमें थोड़ा गुड़ मिला रोगी को प्रातः खिला दिया करे। इसी क्रम से ७ से १४ दिन तक प्रयोग करने से और उपरोक्त तैल को लगाने से नाड़ीव्रण (नासूर) चाहे किसी तरह का किसी भी जगह का हो नष्ट हो जायगा। यह मेरा कई बार का अनुभूत प्रयोग है, जो आपकी सेवा में प्रस्तुत किया है।

एक और नाड़ी व्रण तेल—

कपूर	५ तोला
कार्बोलिक एसिड	१ तोला

—को मिलाले। जब तैलवत् हो जाय तब उसमें २ तोला तिली का तैल मिलाकर शीशी में रखले। इस तैल को भी उपरोक्त रीति से लगावे तो यह भी लाभ करता है।

नेत्र फूला पर ताम्र भस्म—

विधि—शुद्ध ताम्रपत्र लेकर बर्कीहरताल १ तोला को चार तोला अर्क दुग्ध में घोट पत्र पर लेप लगा कर सुखाले। बाद में एक पाव आक पत्ते की लुगदी में रखे। ऊपर से आधा सेर पुराना कपड़ा लपेटकर गजपुट में फूंक दें। शीतल होने पर निकाल उपरोक्त विधि से फिर दो बार करके फूंक देवे तो बेंगनी रङ्ग की भस्म बन जायगी। उसे खूब बारीक घोट लेना चाहिए। इसमें से एक सलाई रात को सोने समय आंखों में डालें तो हर प्रकार की फूली यानि माता की फूली भी १६ दिन में चली जायगी। यह भी हमारा स्वानुभव सिद्ध प्रयोग है।

उपदंश गर्मी फिरङ्ग आदि पर—

नीला थोथा (श्वेत भस्म)	५ तोला

विधि—नीला थोथा ५ तोला को ३ दिन नीबू के रस में घोटे फिर गोला बनाकर सुखाले। जब सूख जाए तो सत्यानाशी (स्वर्णक्षीरी) का रस ऊपर से चुपड़ ले और सुखाले। फिर उसी सत्यानाशी की लुगदी को धरकर सर्वांग सम्पुट कर ५ सेर छाना-उपलों की अग्नि देवे। सर्वाङ्ग शीतल होने पर धीरे से निकाल शीशी में भर लें।

मात्रा—१ रत्ती, मक्खन में निकलवा दे।

गुण—७ से १४ दिन में कैसा ही उपदंश, गर्मी हो या फिरङ्ग हो समस्त रोग नष्ट होंगे।

विषमज्वर मलेरिया पर—

निर्विसी जद्वार	१ तोला
कालीमिर्च	१ तोला
पीपल छोटी	१ तोला
करंज (कांकच) का मगज सेका हुआ	३ तो.

विधि—सबको यथा योग पृथक्-पृथक् पीस ले, और तुलसी रस, अद्रक रस, त्रिफला रस की १-१ भावना देकर ४-४ रत्ती की गोलियां बनाले।

मात्रा—बड़े को १ से २ गोली और बच्चों को ½ से १ गोली अवस्थानुसार देवे।

गुण—पुराने से पुराने जीर्णज्वर तथा मलेरिया चाहे वह कैसा ही हो उसे यह शीघ्र ही खो देता है। ६-६ या १२-१२ महीने पीड़ित रोगी को केवल सात दिन के सेवन से सदा के लिए रोग से छुटकारा मिल जाता है। यह प्रयोग कई वर्षों से हमारे अनुभव से आ रहा है।

कविराज उद्धवदास जे. लालवाणी

आयुर्वेद रत्न

लालवाली दवाखाना, हीरागज-कटनी।

"आपका मूल निवास सिन्धु प्रान्त मे शहदाद कोट मे था। आपके वश में यह व्यवसाय यूनानी पद्धति के रूप में तीन शताब्दियो से चला आ रहा है। आपकी शिक्षा हैदराबाद के सिन्धु मार्तण्ड आयुर्वेद विद्यालय मे सन् १९३८ से ४१ तक चलती रही, यहा आकर आपने हिन्दी सा. सम्मेलन की वैद्य-विशारद नि भा स विद्यापीठ से कविराज की उपाधि प्राप्त की। आजकल कटनी मे अपना आयुर्वेद औषधालय सुचारु रूप से चला रहे हैं। आप स्वय अग्निकर्म, शिरावेध, जलोदर का जल निष्कासन तथा छोटे-मोटे शल्य कर्म करते हैं। लीजिए आपके सुन्दर अत्यन्त गुणप्रद और आशुफलप्रद ४ प्रयोग प्रकाशित हैं।" ——सम्पादक।
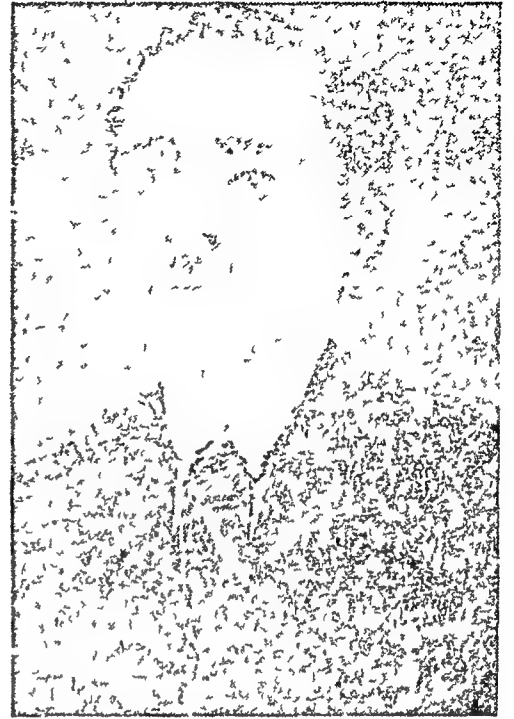
धातु क्षीणता (नामर्दी) का रोग आजकल कई कारणों से अधिक दिखाई दे रहा है। मैंने जिन प्रयोगों से इस रोग पर विजय पायी है, उन्हे चिकित्सक समाज के समाने रख रहा हूँ, आशा है कि चिकित्सक महोदय इनसे अवश्य ही लाभ उठाकर यश के भागी बनेगे। मैं चार प्रयोग इस रोग मे काम मे लाता हूँ। यथा १. माजून ताकत २, पुष्टि-कर गोलियां ३. वङ्गभस्म ४. तिलाये अक्सीर (लेप)

माजून ताकत—

लौंग जायफल उटंगण के बीज
शुद्ध भांग मूसली स्याह शकाकुल
वहमन सफेद वहमन लाल तोदरी सफेद
तोदरी लाल छोटी इलायची का दाना
केवाच बड़ी इलायची का दाना

—यह १३ वस्तुऐं १-१ तोला

सूखा सिंघाड़ा घी मे भुना	२ तोला
गौंद बबूल घी में भुना	२ तोला
छोहारा	१० तोला
दूध का खोआ	१० तोला
देशी घी	५ तोला
बादाम की गिरी पिस्ता चिरौंजी नेजा (गोला)	—चारो २-२ तोला
सूखा नारियल	२ तोला
केशर	६ माशा
शुद्ध शिलाजीत	१ तोला
चादी के वर्क	१०० नग
शक्कर	आधा सेर
शहद	१ पाव

निर्माण विधि—गौंद तक की औषधियो को बारीक पीस कर छान ले। अन्य औषधियो को धीरे-धीरे करके कूट कर अलग रखे, खोवा और घी मिला कर भून लें। बाद मे शक्कर और शहद की चाशनी बनावे, यह ध्यान रहे कि चाशनी पकाते समय इसमें केशर को पीस कर मिलाना होगा। जब चाशनी तैयार हो जावे तब

सब पिसी हुई औषधियां मिलाकर शिलाजीत और वर्क मिलाकर माजून तैयार करले।

पुष्टिकर गोलियां—

रौप्यभस्म	६ माशा
स्वर्ण भस्म	३ माशा
लौहभस्म	६ माशा
वङ्गभस्म	६ माशा
मकरध्वज	३ माशा
शुद्ध कुचला	३ माशा
कस्तूरी	३ माशा
केशर	३ माशा
शुद्ध भांग	३ माशा
शुद्ध अफीम	१॥ माशा
मोतीपिष्टी	३ माशा

—इन सब द्रव्यों को खरल मे डाल कर बारीक पीस कर बरगद के दूध में सात दिन घोटकर चने प्रमाण गोलियां बनावे, सुखा कर सुरक्षित रखें।

वङ्गभस्म—

शुद्धवङ्ग	२ तोला
शुद्ध पारद	१ तोला

—वङ्ग को पिघला कर उसमे पारद मिलाकर एक स्वच्छ पत्थर पर डालदे। शीतल होने पर उसके टुकड़े-टुकडे करके १ पाव भाग के अन्दर वङ्ग को रखकर कपरौटी करके १ बोरा कण्डो की अग्नि से फूंक दे, प्रातः होते ही सुरिक्षत रखें।

तिलाए अक्सीर—

उत्तम कस्तूरी अम्बर केशर

सफेद गुंजा कनेर की जड़

—प्रत्येक ३-३ माशा

शेर की चर्बी सूअर की चर्बी

बकरे के गुर्दे की चर्बी मुर्गे के अण्डे की चर्बी

—प्रत्येक १-१ तोला

—सब औपधिगो को पीस कर मिला कर आतशी कांच की बोतल मे डालकर कण्डो की आग से पाताल यंत्र द्वारा तैल निकाल लेवे।

औषधियां सेवन करने की विधि—रोगी को पहिले विरेचन देकर कोष्ठ साफ करले। बाद मे प्रातः काल दो तोला माजून निकाल कर उसमे एक या दो गोली रखकर खिलाकर दूध पिलावे।

सायंकाल—वङ्गभस्म १ रत्ती निकाल कर माजून १ तोला मे रखकर खिलाकर ऊपर से दूध पिलावे।

रात मे—सोते समय उपरोक्त तैल की इन्द्री पर सीवन और सुपारी छोड़ कर मालिश कराके ऊपर से पान का पत्ता सेक कर बांध देवे। इस पूरी मात्रा को यथा विधि खाने लगाने से और पथ्य पूर्वक रहने से रोगी शेर के बराबर मस्त होजाता है।

यह ध्यान रहे कि इस लेप के लगाते समय स्नान नहीं करना चाहिए। खटाई, दही, शराब, चाय और स्त्री-प्रसंग से दूर रहना चाहिए। यह दवाई शीत ऋतु में सेवन करानी चाहिए। मांसाहारी मांस का प्रयोग कर सकता है।
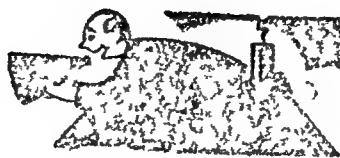
वैद्य श्री दिलीप सिंह आर्य

आयुर्वेद भास्कर

कालवा (संगरूर)

"आपने स्वर्गीय श्री प दुलीचद जी से २ वर्ष आयुर्वेद शास्त्र का अध्ययन किया। सन् ४६५७ मे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) से आयुर्वेद भास्कर परीक्षा पास की। आपको ६० वर्ष का अनुभव है। उसी का अनुभूत सार ये निम्न लिखित ५ प्रयोग पाठको को सेवा मे प्रस्तुत कर रहे हैं।"

— सम्पादक।

सर्प विष—

बांझ ककोड़ा की जड़ छाया शुष्क	१ तोला
श्वेत पुनर्नवा (साठी) की आर्द्र (ताजा) जड़	१ तोला
काली मिर्च	५ नग

—पाव भर जल मे घोट छान कर पिलावे। इससे वमन विरेचन होकर सर्पविष नष्ट हो जाता है। यदि आवश्यकता पड़े तो दूसरी मात्रा भी दी जा सकती है, वमन विरेचन हो चुकने पर गाय का शुद्ध घृत १ छटाक पिलाना चाहिए।

लेप—कसौंदी के पत्र, भृङ्ग राज, मरेली की जड़ की छाल, काकजघा बूटी। इन चारो को गौमूत्र में महीन पीस दंश स्थान पर लेप करे।

पथ्य—गेहूँ का दलिया, देशी खांड, गऊ का शुद्ध घृत।

विषमज्वर—

पीपल छोटी	१ तोला
नीम की हरी पत्ती	२ तोला
श्वेत जीरा	१ तोला
करज की गिरी	२ तोला
कीकर की हरी पत्ती	२ तोला

विधि—नीम और कीकर की पत्तियों को सिल पर खूब घोटकर शेष औषधियो को वस्त्रपूत चूर्ण कर मिला खूब सिल पर घोटे, चना प्रमाण गोली बना छाया में सुखावे।

मात्रा—२ गोली प्रातः, २ गोली मध्याह्न और २ गोली सायं। गर्म जल से निगल जांय।

गुण—इकतरा, तिजारी, ज्वर आदि नष्ट होते हैं।

वीर्यवर्द्धक—

श्वेत मूसली		मूसली स्याह
शकाकुल मिश्री		तालमखाना
बीजबंद	कोच के बीज	गोखुरू
सितावर	—प्रत्येक २-२ तोला	
वङ्ग भस्म		३ माशा
प्रवाल भस्म		४ माशा
मिश्री		१७ तोला

—कूट-छान कर शीशी मे रखें।

मात्रा—१ तोला प्रातः और १ तोला सायं गाय या बकरी के गर्म करके शीतल किये पाव भर दूध में १ तोला मिश्री मिलाकर ले।

गुण—वीर्यवर्द्धक तथा पौष्टिक है।

बच्चों का सूखा रोग—

तुलसी के हरे पत्ते सितावर गीली

—शेषांश पृष्ठ ४३४ पर।

श्री महन्त बालमुकुन्द दास वैद्य निर्मोही

श्री हनुमान आयुर्वेदिक औषधालय ठाकुर द्वारा, सालार गंज, बहराइच।

"श्री महन्त जी के ठाकुरद्वारा मे यह औषधालय स्थापित है जहां रोगियों के कल्याणार्थ औषधि वितरण होती है। आपके गुरु जी ने भी आयुर्वेद की सेवा की एवं आप भी आयुर्वेद के प्रेमी एव ज्ञाता हैं। आपकी चिकित्सा से जनता अत्यन्त प्रभावित है।" —सम्पादक।

अर्शरोगान्तक अञ्जन—

निर्माण विधि—अपामार्ग के नवीन बीजों को तुपरहित करके गोघृत में मन्दाग्नि से भून ले। तदुपरान्त गौघृत मे ही खरल करें, इतनी घुटाई करे कि अञ्जन के सदृश बन जाय। शीशी मे सुरक्षित रखले।

व्यवहार विधि—प्रातः सायं सलाई से नेत्रो मे लगावें।

पथ्य—तले हुये पदार्थों का त्याग, शेप अर्शरोग में वर्णित पथ्य लें।

अर्श नाशक सेवनीय—

निर्माण विधि—चांडाल दुग्धिका (बड़ीदुधी) के ताजे पत्र १ पाव लेकर एक सेर गौघृत में मन्द आंच से पकावें, पत्रों के जल जाने पर उतार कर ठंडा होने पर पत्रों सहित घोटकर किसी काच के पात्र मे सुरक्षित रखें।

व्यवहार विधि—प्रात. सायं २-२ तोला जल के साथ रोगी को खिलावे। भूख लगने पर हल्का सुपाच्य भोजन दें।

गुण—अर्शरोग बहुत जल्द निर्मूल हो जायगा।

गृध्रसी नाशक—

अर्कमूल ताजी	अद्रक
काली मिर्च	—समान भाग

—इन तीनों वस्तुओं को समान भाग ग्रहण करे। गुलाबजल, केवड़ा जल दोनों को समान भाग मिश्रण के साथ पीसकर मटर बराबर गोलियां बनालें।

व्यवहार विधि—प्रात सायं १-१ गोली उपरोक्त केवड़ा जल व गुलाबजल के मिश्रण के साथ खिलावे। आप देखेंगे कि जो रोगी उठने बैठने से लाचार होरहा था वह ८ दिन के सेवन से ही भगवान की कृपा से चलने फिरने लगेगा। हमारा अनेक बार का अनुभूत है।

मर्दनार्थ तैल—

कनक (धतूरा) पत्र ताजा	२ सेर
तमाखू खाना	१ पाव

निर्माण विधि—कनकपत्र को कूट कर दो सेर स्वरस निकाल ले तथा तमाखू खानी जो बहुत तेज हो कूटकर दो सेर पानी मे भिगो देवें। रात भर भोजन के बाद मसलकर छान ले। तदनन्तर तैल तिल्ली का एक सेर डालकर मन्द आंच से विधिवत पाक करे। तैल मात्र शेप रहने पर छान कर रख ले। इसी तैल का मर्दन करावें। रोग शीघ्र शांत होगा।

श्री रामस्नेही सम्प्रदाचार्य

श्री सम्बदास महाराज आयुर्वेदाचार्य

श्री वड़ारामद्वारा, बीकानेर।
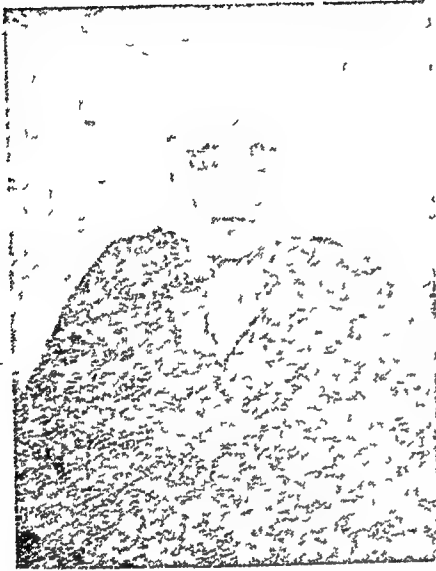
"श्री सिंहस्थल रामस्नेही सम्प्रदाय के प्रधान पीठाधीश्वर वैद्यकलानिधि श्री चौकसराम जी महाराज के उत्तराधिकारी राजवैद्य श्री रामनारायण जी महाराज की सम्मति से सं. २००५ के भाद्रपद की पूर्णिमा को जब कि आप व्याकरण शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य, विशारद और प्रभाकर आदि कर चुके थे २७ वर्ष की अवस्था मे सिंहस्थल गद्दी पर श्री रामस्नेही सम्प्रदाय के मुख्य आचार्य के पद पर स्थानापन्न किए गए।

अध्ययन की आगे इच्छा होने पर भी आपको स्वर्गीय श्री चौकसराम जी महाराज के औषधालय, श्री बड़ा रामद्वारा, बीकानेर जिसमे रुग्णो की पर्याप्त सख्या रहती है कार्य करना पड़ा। अतः चिकित्सा क्षेत्र में शीघ्र ही ख्याति प्राप्त करली, जिससे सारा वैद्य समाज भी आपसे स्नेह करने लगा। फलस्वरूप आपको प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन एवं जिला सभा के संरक्षक एवं सभापति के पद पर सुशोभित किया। आपके निम्न प्रयोग निर्दिष्ट रोगो पर रामबाण सम अपूर्व चमत्कार दिखाते हैं।"

—सम्पादक।

प्रलाप एवं संज्ञानाश पर—

बीजाबोल   सुलफा
अफीम   फिटकरी का फूला

—प्रत्येक ४-४ माशा

रेवन्दचीनी   ८ माशा

—सबको पीस कर कपड़छान कर शीशी में रखे।

मात्रा—२ रत्ती सोंठ के जल से।

पथ्य—उष्णोदक। बच्चे के लिए माता का दूध या बकरी का दूध।

गुण—सन्निपातज प्रलाप शीघ्र शान्त होता है, संज्ञा नष्ट हो जाय, शोप का अभाव हो, शरीर मे कम्प हो, ज्ञान शून्य हो ऐसी अवस्था में भी यह औषधि उपयोगी है।

उपान्त्रशोथ एवं जलोदर पर—

रेवन्द चीनी की लकड़ी आध सेर पीस कर कपड़छान करले।

उपयोग—उपांत्रशोथ एव जलोदर के रोगी का अन्न जल बिल्कुल बन्द करके, उक्त दवा की १-१ तोले की मात्रा हर समय ऊंटनी के गर्म दूध के साथ देवे। भूख प्यास पर केवल ऊंटनी का गर्म दूध ही दिया जाय। रोगानुसार ७ दिन या १ मास तक प्रयोग करें। बाद से १ तोला चावल से पथ्य आरम्भ करे और चावलो की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ाते रहे।

चतुर्भुज दर्दहर योग—

—अशुद्ध भिलावा १ पाव लेकर कूट लेवे और उसमे से आधा कढ़ाही मे रखकर उस पर अशुद्ध हिंगुल डली १ छटांक की रखे। इस पर बाकी

—शेषांश पृष्ठ ४४४ पर।

वैद्य श्री बाबूलाल जैन शास्त्री न्यायतीर्थ

आयुर्वेदाचार्य

छपारा (सिवनी) म० प्र०

"आपका मुख्य वासस्थल रहली जि सागर है। छपारा में १६ वर्ष से चिकित्सा कार्य करते हैं। श्री चन्द्रप्रभु दि जैन औषधालय में प्रधान चिकित्सक पद पर आसीन है। इस औषधालय की स्थापना, आपकी ही प्रेरणा से श्री सिंघई मिट्ठनलाल जी ने बीस सहस्र मुद्रा का स्थाई फंड जमा कर इसकी नींव डाली। छपारा ही मे आप दि जैन विद्यालय में आयुर्वेद का अध्यापन कार्य करते हैं। बनारस के आप व्याकरणशास्त्री, कलकत्ता से जैन न्यायतीर्थ तथा नि. भा विद्यापीठ से आयुर्वेदाचार्य हैं। आपके अनुभव-त्रय पाठको के सम्मुख रखने में हमें हार्दिक प्रसन्नता है।"

—सम्पादक।

ज्वरभास्कर चूर्ण—

सत् अमृता (गिलोय)	सोंठ
कालीमिर्च	छोटी पीपर
हर्र का छिलका	बहेड़ा का छिलका
नागरमोथा	सफेद चन्दन
नीम की अन्तर छाल	फुलाई हुई फिटकरी

—प्रत्येक १-१ तोला

चिरायता — ५ तोला

निर्माण विधि—सब चीजे कूट पीसकर कपड़े से छान ले।

मात्रा—१ माशे से ३ माशे तक, प्रात. सायं ठंडे जल के साथ लेवें।

गुण—कुनैन से भी न जाने वाला, जाड़ा देकर आने वाला विषमज्वर और पुराना ज्वर इससे शीघ्र चला जाता है।

मलेरिया पिल्स—

लाल फिटकरी फुलाई हुई,	चिरायता के फूल
कालीमिर्च	करंज गिदी
गोदन्ती भस्म	गिलोय सत्व

—प्रत्येक १-१ तोला

खाने का सोड़ा — ६ माशा

कुनेन सल्फ — ६ माशा

विधि—सब चीजे पीसकर गुर्च के स्वरस मे घोट कर २-२ रत्ती की गोलिया बना ले।

मात्रा—एक से तीन गोली तक। दिन भर में तीन बार दूध या पानी से निगलवा दें।

नोट—चढ़े ज्वर मे दे। ज्वर रोकने के लिए तीन घण्टा पहिले से हर घंटे पर १-१ या १-२ गोली दूध से निगलवा दे।

गुण—फसली बुखार, इकतरा, तिजारी, आदि प रामबाण है।

पथ्य -दूध, साबूदाना, पुराने चावल, गेहूँ का दलिया।

नोट—गर्भिणी स्त्री को यह गोलियां न देवे।

— शेषांश पृष्ठ ४४४ पर।

श्री बाबू रामनाथ जयसवाल

वैद्य भूषण

सराय आकिल, इलाहाबाद।
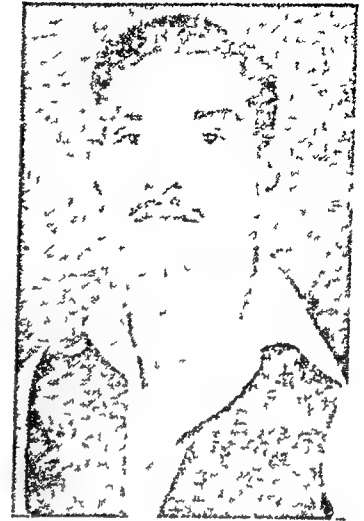
"श्री जयसवाल जी एक होनहार परिश्रमी योग्य नवयुवक वैद्य हैं। यूनानी तथा एलोपैथी के योग भी बरतते हैं। अन्वेषण की आपको लगन है, जो अनुभूत प्रयोग आपको सफल जचे हैं वही धन्वन्तरि के लिए प्रेषित किए हैं। योग निम्नांकित हैं।" —सम्पादक।

नाल परिवर्तन का योग—

शिवलिंगी के बीज	४ दाने
भांग के साबित बीज	१ माशा

—भांग के साबित बीजो को प्रात काल ताजा पानी से निगलवा दें और शिवलिंगी बीजो को भी साबित सायंकाल निगलवाये, भोजन के दो घंटे पूर्व। इसी प्रकार दोनो औषधियों को पूरे १ माह सेवन करावें। गर्भवती स्त्री को निश्चय ही पुत्र ही पैदा होगा। जिन औरतो के लड़की ही पैदा होती हो उनके लड़का ही पैदा होगा। इस प्रयोग के हमने चार औरतो पर अनुभव किया, चारो स्त्रियों के पुत्र ही पैदा हुआ है। पहले उनके लड़की ही होती थीं। इस प्रयोग को 'रसायन' पत्र से लेकर अनुभव किया है।

नोट—जब स्त्री को गर्भाधान हुए दो मास व्यतीत हो गये हों तभी से १ माह तक सेवन करावे।

दांत के दर्द पर—

नौसादर और कपूर को मिलाकर दाढ़ के छेदों में भरदें। बहुत जल्द आराम मिलता है। इसे नाक से भी थोड़ा सूंघ ले।

अर्शपीड़ाहर लेप—

पीली वैसलीन	२॥ तोला
पोदीना सत (पिपरमेंट)	१॥ माशा
अजवायय का सत	१॥ माशा
कपूर	३ माशा

—उक्त औषधियो को मिलाकर रखलें और बवासीर वाले रोगी के पीडा-स्थान पर उंगली से लगावें, इस मलहम के लगाने से सभी प्रकार की अर्श-पीड़ा पर जादू सा लाभ होता है। जिस समय बवासीर के मस्सो मे पीड़ा होती है रोगी ही जानता है। उसे किसी तरह चैन नहीं पड़ता है। इस मलहम के लगाने से तुरन्त आराम मिलता है। आप यह न समझें कि बवासीर केवल इस मलहम के लगाने से अच्छी हो जायगी. यह बात नही है। इससे तो केवल दर्द ठीक होगा।

अर्धावभेदक नाशक—

अर्धावभेदक, शिर का यह बहुत बुरा रोग है। जिसको यह शिर की पीड़ा पकड़ती है। उसको अन्धा और बहरा तक कर देती है, नहीं तो जाला,

माड़ा, फूली छोड़ जाना तो इसका साधारण काम है। पाठकों के सामने अपना योग जिसे हम तेरह रोगियों पर अनुभव कर चुके हैं, प्रस्तुत करते है। रोगियो को देकर उनका कल्याण करें। योग यह है—

उस्तरखद्दूस	६ माशा
धनिया	३ माशा
काली मिर्च	४ दाने
प्रवालपिष्टी गिलोयसत्व	२-२ रत्ती
अभ्रकभस्म शतपुटी	१ रत्ती

—इन सबको लेकर पहिले उस्तरखद्दूस और धनिया काली मिर्च को जल मे ठडाई की भांति पीस ले। फिर भस्म आदि को फांक कर ऊपर से पी ले। ऐसा तीनो समय करे। आशा है पहिले ही दिन से लाभ मालूम देने लगेगा। यह योग रसतन्त्रसार का है और मेरा अनुभूत है।

नोट—अगर उष्णकाल है तो ठडे पानी से दें और सर्दी का समय है तो गरम पानी से दें।

रक्तरोधक—

राल गेरू लाल संगजराहत
—प्रत्येक समान भाग

—लेकर महीन पीस कर रखलें। औषधि तैयार है।

मात्रा—१ माशा।

अनुपान—ताजा जल से तीनों समय।

गुण—गर्भस्राव, प्रसव के बाद अधिक खून जाना, रक्तप्रदर, नाक, मुंह से और बवासीर से खून जाना आदि पर तुरन्त लाभ करना है। कई वार का अनुभूत है।

:: पृष्ठ ४४१ का शेषांश ::

का भिलावा रखदें। इन पर घृत और शहद १-१ पाव डालकर कढ़ाही के नीचे अग्नि जलावे, जब भिलावा, घृत और शहद जल जावे तब उतार लेवे। राख के शीतल होने पर हिंगुल की डली निकाल कर पीसले और इसमें—

जावित्री	जायफल
दालचीनी	—तीनो ३-३ तोला
केशर	बीरबहूटी
लौंग	—तीनो १-१ तोला

—इन सबको पीस कर चार पहर तक घोट कर, मिला देवें।

उपयोग—शीताङ्ग सन्निपात में—१ से २ रत्ती अदरख के रस से ३-३ घन्टे से देवे।

संग्रहणी में—३-४ रत्ती मधु से मिलाकर ऊपर से दूध पिलाया जाय। अन्न न दिया जाय।

शक्त्यर्थ—१ माशा प्रातः हलुए में खिलाया जाय। खटाई किसी भी प्रकार न दी जाय।

प्रमेह पर—१-१ रत्ती दूध की मलाई के साथ प्रातः सायं। गुड़, तैल, मिर्च, खटाई न दिया जाय।

:: पृष्ठ ४४२ का शेषांश ::

बालघुटी—

सोंठ	कालीमिर्च	पीपर छोटी
अजवायन		बच मीठी
अतीस		भुनासुहागा चौकिया
सैंधा नमक		सोंचर नमक
भटकटैया का जीरा		नागकेशर

—सब समान भाग

निर्माण विधि—प्रत्येक वस्तु समान भाग लेकर, पीस ले और पान के रस में तीन घटे घोटकर चना बराबर गोली बनाले।

समय—दिन में तीन बार १-१ गोली शहद या मा के दूध से देवे।

गुण—बालको का ज्वर, अतिसार, पेचिश, खांसी पेट फूलना, दूध नहीं पचना, बालको को यह घुटी जल से ही देने से बालको को कोई रोग न होगा। बालक स्वस्थ तथा सुन्दर बनते है।

वैद्यराज श्री हरनारायण राव गुलकरी

आयुर्वेदाचार्य
हिंगनघाट जि० वर्धा।
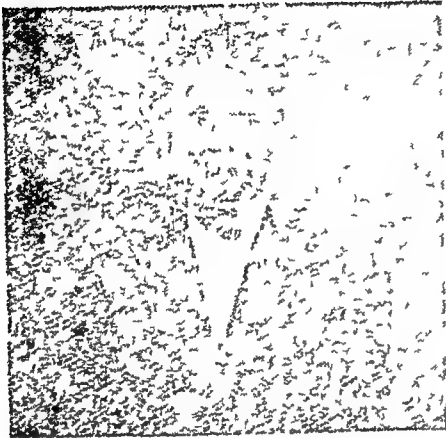
"श्री वैद्यराज गुलकरी महोदय वृद्ध वैद्य हैं। इस अवस्था मे भी आप उत्साही कार्यकर्त्ता हैं। हिंगनघाट वैद्य सभा के वर्तमान प्रधान मन्त्री हैं। सन् १६१० मे आप आयुर्वेद पद्धति से चिकित्सा कर रहे है। आपने सन् १६२८ मे आयुर्वेदाचार्य की उपाधि ग्रहण की। आपका निजी श्री हरि आयुर्वेदिक औषधालय है जहा जनता की सर्व प्रकार से सेवा करते हैं। धन्वन्तरि के महान भक्त हैं वृद्धता के नाते वैद्य समुदाय आपसे यथेष्ट स्नेह करता है। आपके महान अनुभूत तीन प्रयोग उद्धृत कर रहे हैं जिनके गुणावगुण से पाठक प्रयोग करने पर परिचित होगे तथा लाभ उठावेंगे।" —सम्पादक।

क्षयहारक चूर्ण—

द्रव्य—	
वशलोचन असली	५ तोला
सेमर का मूसला सूखा	१० तोला
मिश्री	१५ तोला
इलायची	२॥ तोला
हजरतबेर	२॥ तोला
अभ्रक भस्म १०० पुटी	२ तोला

निर्माण विधि—इन सब द्रव्यों को कूट-पीस कर कपड़छान कर चूर्ण करे। यही क्षयहारक चूर्ण बनेगा।

व्यवहार विधि—इसे च्यवनप्राशावलेह अष्टवर्गयुक्त या गौ-दुग्ध या गौ-घृत व शहद विषम प्रमाण के अनुपान से रोगानुसार प्रात सायकाल ६ माशा प्रमाण मे रोगी को दिया करे।

गुण-धर्म—इससे धातुक्षीणता मे हुआ क्षय, उर क्षत, ज्वराशोषी क्षय, मूत्राघात, मूत्राश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, कोष्ठ की बद्धता तथा कोष्ठ मे रक्त विकार, वृकशूल आदि रोगो मे लाभ पहुँचता है। इससे पुराना ज्वर तथा किसी भी तरह की खासी दूर हो जाती हैं। श्वेत तथा रक्त प्रदर भी ठीक होता है। धातुपौष्टिक हैं, इस दृष्टी से हर स्वस्थ पुरुष तथा महिला सेवन कर सकती है।

पथ्य—गेहू की रोटी, मूंग की दाल, घी, मांस रस सेवन करना अधिक हितावह है।

अपथ्य—तेज नमक मसालेदार पदार्थ, तथा तली गली चीजे, दिवानिद्रा, सिगरेट, चाय पीना, रात्रि-जागरण मना है।

देशी बेलाडोना—

निर्माण विधि—लाल गुजा के छिलके निकाली हुई मिंगी २॥ तोला लेकर उसमे करीब ५ तोला पानी डालकर खरल में अच्छी तरह घोटे ताकि गुंजा का एक बीज न रहने पावे। घोटते समय इस बात का ध्यान रहे कि वह उड़ कर आँखो मे न चला जाय। उस मलहम मे निम्न लिखी वस्तुये मिलाई जाय।

वच्छनाग अलसी की भूसी ३-३ माशा
सहजने के पत्तों का रस १ तोला
त्रिधारी निर्वंडग (थोहर) २ माशा
गुग्गुल ६ माशा

—उपरोक्त द्रव्य मिलालें और अच्छी तरह मलहम बनाले। यह मलहम किसी कटोरी में निकाल ले।

लगाने की विधि—कपड़े की पट्टी पर लगा कर विद्रधि पर लगाये। सूखने तक रोगी को आराम करने दे। सूखने के उपरान्त यह पट्टी जम कर चिपक जावेगी।

उपयुक्तता—इस मलहम से किसी भी तरह की विद्रधि तथा गलगड, गंडमाला, बद, स्तन विद्रधि आदि ठीक हो जाती है। एक तो गिल्टी फूट जावेगी या दब जावेगी। यह भी एक महान सिद्ध प्रयोग है।

घरेलू कफहारी अवलेह—

द्रव्य—वासा की पत्ती १० तोला
रिंगनी (छोटी कटेरी) पंचाग ५ तोला
मुलहठी (मीठी लकड़ी) ५ तोला
त्रिफला ५ तोला
सफेद कत्था काकड़ासिंगी
छोटी वालहरड़ १-१ तोला

निर्माण विधि—सब द्रव्यों को अच्छी तरह कूट कर २½ पायली (करीब ३ सेर) पानी रखकर ¼ पानी शेष रखे। यह एक क्वाथ होगा। इसे छानले। बाद में इसमें शक्कर या मधु १ पाव डालकर अवलेह के समान बना ले।

मात्रा—सायं प्रात. ३-३ माशा प्रतिदिन लिया करे। छोटे बालकों को ५ बूंद से लेकर आधा चम्मच तक दूध या पानी मिलाकर प्रात.सांय दिया करें।

उपयोगिता—इससे हर तरह की खांसी, कफ, दमा श्वास, काली खांसी, बदली से आने वाली खांसी (यमला कास) दूर हो जाती है।

अपथ्य—चिकने पदार्थ, खट्टे तथा श्वास को बढ़ाने वाले पदार्थ, ठंड में रहना, ठंडे पानी से स्नान वर्जित है। तेल, घी, आदि खाना बंद रखे।

पथ्य—दाल, चावल, रोटी, आलू का साग चौलाई साग आदि सादा भोजन करना हितावह है।

पृष्ठ ४४७ का शेषांश

छर्दि रोग पर—

गिलोय सत्व निकालते समय जो पानी सत्व के ऊपर रहता हे उसमें से नितरे हुए जल को बाहर फेंक दे और बचे हुए गाढ़े जल को जिसमें कुछ सत्व का भी अंश रहता हैं निकाल कर लोहे की कढ़ाही में डालदे और आग पर चढ़ाकर धीरे-धीरे कलछी से चलाते रहे। जब गोलिया बंधने योग्य हो जांय नीचे उतार ले और छोटी-छोटी टिकिया बनाकर धूप में सुखाले। सूख जाने पर कूट कर वस्त्रपूत करें और शीशी में रखले। तत्पश्चात्—

गिलोय घन सत्व ५ तोला
प्रवालपिष्टी १ तोला
आवला चूर्ण ६ माशा

—तीनों वस्तुओं को मिलाकर आवला और गुडीच (गिलोय) के स्वरस या क्वाथ के साथ क्रमशः भावित करे और अच्छी तरह खरल होजाने पर ४-४ रत्ती की गोली बनाकर सुखा ले।

मात्रा—१ से २ गोली तक।

समय—दिन रात में चार बार।

अनुपान—अमरूद का रस और मधु।

गुण—यह घोर छर्दि को आराम करता है। इस एक ही औषधि से पित्तज्वर के अनेक उपद्रव शान्त हो जाते हैं। एक मरणासन्न रोगी के प्राण बच गए। जब उस पर अनेको होम्योपैथिक और ऐलोपैथिक औषधिया बेकार सिद्ध हो चुकी थीं। उग्र प्यास, घोर दाह और असाध्य छर्दि को रोकने के लिए सचमुच में यह रामबाण है।

कविराज हरिनन्दन मिश्र

श्री शान्ति आयुर्वेदिक औषधालय

मुडिया, पो० सन्हौला, भागलपुर।

"प्रवेशिकोत्तीर्ण होने के बाद आपने २ वर्ष तक आयुर्वेद का अध्ययन किया। आज १५ वर्ष से यहां पर सतोषजनक चिकित्साकार्य कर रहे हैं। आपने ३ गुण परख पूर्ण प्रयोग भेजे हैं। हमारा विश्वास है कि इन प्रयोगो से वैद्य बन्धुओ को अवश्य ही आशानुकूल लाभ होगा।" —सम्पादक।

प्रदर रोग पर—

लोध संगजराहत धाय के फूल
आवला वंशलोचन गिलोयसत्व
इन्द्रयव —प्रत्येक ४-४ तोला
कपूर १ तोला
श्वेत जीरा सौंफ
चन्दन श्वेत अनारफूल
—प्रत्येक २-२ तोला

—उपरोक्त सभी वस्तुओं को मात्रानुसार अलग-अलग महीन चूर्ण करे और मिलावे। तैयार होने पर सुदृढ़ काग वाली शीशी मे रख छोड़े।

मात्रा—३ माशा तक।

समय—दिन रात मे तीन वार।

अनुपान—केवल ठंडा जल।

गुण—यह मेरा स्वनिर्मित नुस्खा है। इसे आज मैं ३ वर्षो से लगातार प्रयोग कर रहा हूँ और आशुफलप्रद पाता आ रहा हूँ। यह औषधि हर तरह के प्रदर रोग लाल, सफेद, पीला, चाहे यह वर्षो का पुराना क्यो न हो, अवश्य लाभ होता है।

ऋतु शूल—

अश्वगन्ध राल (सफेद)
पुराना गुड़ —तीनो ७-७ तोला

—अश्वगन्ध और राल को अलग-अलग महीन चूर्ण कर गुड़ मे मिलादे और ऊपर से भांगरा रस देकर ओस मे रख छोड़े। प्रात. खरल मे डाल कर खूब घोटे। जब गोलिया बधने योग्य हो जाय तो १-१ तोले की एक-एक गोली बनाले और प्रयोग मे लावे।

—रुग्णा को चाहिए कि ऋतुदर्शन के १४ दिन पूर्व से ही इस औषधि का प्रयोग करे। प्रतिदिन प्रातः स्नानादि कर्म से निवृत होकर पवित्र वस्त्र धारण करे और गोबर का चौका लगाकर पूर्वाभिमुख खड़ी हो जाय। सूर्यदेव को नमस्कार कर एक गोली आध पाव कच्चा गोदुग्ध के साथ खाई जाय। अगर प्रथम माह में पूर्ण लाभ न हो तो दूसरे या अधिक से अधिक तीसरे माह में भी सेवन करे। इससे अवश्य लाभ होगा। ठीक समय पर वेदना-विहीन ऋतुस्राव होगा।

यह मेरे वृद्ध पिताजी का प्रयोग है जिसे वे लगभग ४० वर्षो से प्रयोग करते आ रहे हैं। अब भी पिताजी के समीप दूर-दूर की स्त्रिया आकर इससे लाभ उठाती है।

—शेषांश पृष्ठ ४८६ पर।

आयुर्वेदाचार्य श्री जानकीप्रसाद

साहित्य एवं व्याकरणाचार्य
मुंगेली (विलासपुर)

"आपने अपनी ही प्रतिभा से उच्च शिक्षा प्राप्त की है। राजकीय संस्कृत कालेज बनारस से साहित्य एवं व्याकरण की आचार्य तथा निखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन विद्यापीठ दिल्ली से आयुर्वेदाचार्य की परीक्षायें पास की हैं। हिन्दी, उर्दू, बंगला के विशेष ज्ञाता है। संस्कृत अध्यापन कार्य करते हुए ३ वर्ष विद्यापीठ देहली के स्थानीय केन्द्र व्यवस्थापक रहे। आप आयुर्वेद रसक्रिया मे अनुसधान करते रहे हैं, अब इस समय आयुर्वेद की चिकित्सा पद्धति पर विशेष अनुसंधान कर रहे हैं। संस्कृत विश्व परिषद् के स्थायी समिति एवं आयुर्वेद महासम्मेलन के सदस्य हैं। आप आजकल छात्रो के हितार्थ आयुर्वेदीय शब्दकोष लिख रहे हैं। कुछ अनुभूत योग जो आपने जन-हिताय भेजे हैं यहा प्रस्तुत हैं।" —सम्पादक।
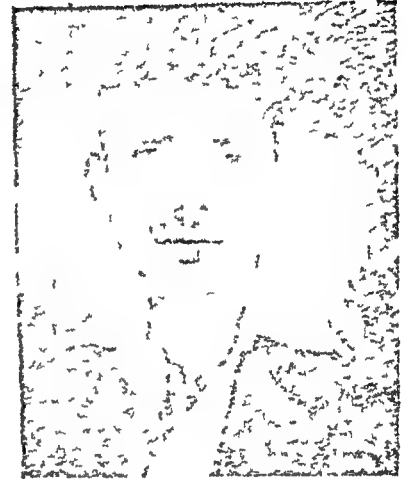
गर्भस्राव पर—

अहिफेन शुद्ध	१ तोला
मकरध्वज स्वर्णयुक्त, शुद्धकुचला	६-६ माशा
काली मिर्च	३ तोला

—इन वस्तुओं को मिलाकर जायफल के क्वाथ से भावना देवे और तीन दिन तक खरल करके मूंग के समान वटी बनाले।

सेवन विधि—जब वस्ति स्थान में गर्भिणी के पीड़ा हो उस समय प्रति घण्टे १-१ गोली शहद से दे।

गुण—इससे तत्काल पीड़ा शात हो जावेगी तथा आठ रोज तक प्रतिदिन १-१ गोली देने पर वह शिकायत बिल्कुल दूर हो जावेगी।

पथ्य—हल्का भोजन साबूदाना या खिचड़ी (पुराने चावल की)।

नेत्र प्रकोप में—

मनुष्य यदि प्रतिदिन भोजन के बाद हाथ धोकर उन हाथों से अपनी आखों का स्पर्श करले तब उसके नेत्र मे बाधा नहीं आ सकेगी, याने आख आना उसके लिए हमेशा को रुक जावेगा।

प्रमेह (मधुमेह)—

शिलाजीत एक ऐसी औषधि है, यदि इसे प्रमेह रोगी प्रतिदिन १ माशा की मात्रा से सेवन करता रहे तो ४० दिन में उसका प्रमेह रोग नष्ट हो जाता है। मधुमेह के लिए १ सेर सूर्यतापी शिलाजीत सेवन करना चाहिए, इससे वह पूर्ण स्वस्थ हो सकता है। मधुमेह वालो को तीन या चार मास तक शिलाजीत प्रतिदिन खाना चाहिए।

वातरोग—

चाहे किसी भी प्रकार का वात रोग लोगो को सता रहा हो लहसुन का कल्क प्रतिदिन ६ माशा से ८ तोला तक क्रमश. बढाते हुए सेवन करने से वात के रोग समूल नष्ट हो जाते हैं। लहसुन सेवन करने वालो को दूध और घी अधिक खाना चाहिए। ध्यान रहे कि इसे कफ रोगी भी सेवनकर सकता है। पर पित्त रोगी के लिए लहसुन अपथ्य है। उसे भूलकर भी सेवन नहीं कराना चाहिए।
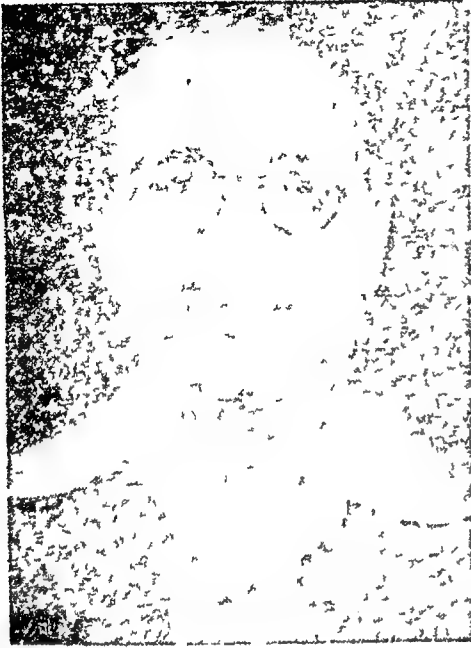
वैद्य पं. जगदीशप्रसाद पासोरिया

आयुर्वेदाचार्य

पासोरिया आयुर्वेद सेवा मंदिर, बडनेरा।

"आपके पूज्य पितामह आयुर्वेद के विद्वान् थे, आपके पिता जी भी आयुर्वेद शास्त्री हैं, चान्दूर में चिकित्सा करते हैं। इस प्रकार आयुर्वेद का कार्य इनके कुल मे तीन पीढ़ी से चला आरहा है। आपने दाढ़ी में ६ वर्ष चिकित्सा-कार्य किया। अब आप बडनेरा ग्राम मे ८ साल से निजि चिकित्सा द्वारा आयुर्वेद की सेवा कर रहे है, आपके ३ प्रयोग प्रकाशनार्थ प्राप्त हुए हैं। उन्हे यहा देखिये।" —सम्पादक।

नष्टपुष्पांतक क्वाथ—

काले तिल	½ तोला
सोंठ	१ माशा
भारङ्गी	½ तोला
गुड़	१ तोला
मिर्च	१ माशा
पीपर	१ माशा
हीरा बोल	½ माशा
शुद्ध सुहागा	½ माशा
गाजर बीज	१ माशा
जल	८ तोला

—क्वाथ बना रोज प्रात.काल १५-२० दिन पिलाने से रुका हुआ आर्तव शुरु हो जाता है। इस योग से हीराबोल से थोड़ा जी मचलाया करता है पर थोड़ी देर मे स्वयं ठीक हो जाया करता है।

विशेष ज्ञातव्य—जिन स्त्रियो को रक्तालपता हो उन्हे यह योग नहीं देना चाहिए। प्रयोग के समय मे खाने के लिए चावल नहीं देना चाहिए। साथ में पेड्डू प्रदेश पर खेत में से एक हाथ नीचे से खोदकर लाई हुई काली मिट्टी को पानी में सान कर कपड़े की पट्टी भी रोज १ घण्टा भर रखने से अधिक लाभ होता है। मैंने इस प्रयोग को कई बार उपयोग मे लिया है।

असृग्दर पर—

स्वर्ण गेरु (सोना गेरू) को दूध के साथ ११ दिन खरल कर छाया में सुखा लेना। बाद मे ५ तोला स्वर्ण गेरू, ५ तोला अमृतसत्व (नीम गिलोय सत्व) दोनो को मिलाकर आंवला के रस की ११ दिन तक भावना देकर सुखाकर रख लेना चाहिए।

मात्रा—४-४ रत्ती दिन मे ३-४ बार अशोकारिष्ट के साथ देने से शीघ्र लाभ होता है।

गुण—कई दिन तक सेवन कराने से गर्भाशय को बल प्राप्त होता है और बार-बार होने वाला गर्भस्राव और गर्भपात होना भी बन्द हो जाता है।

—शेषांश पृष्ठ ४५२ पर।

आयुर्वेदाचार्य

श्री पं० रामसूर्ति मिश्र

श्रीकृष्ण यो द्रामृत चिकित्सालय

मु० पो० सकलडीहा बाजार जि० बनारस।

"श्री मिश्रा जी एक होनहार वैद्य हैं। आप सग्रहणी से स्वय रोग ग्रस्त होने से बडे निराश हो गए फिर भी अपने कठिन नियम पालन और भगवत् प्रेरणा से आपने आरोग्य लाभ किया। टायफायड, प्रदर, सन्निपात ज्वर ग्रहणी, पाण्डु, जीर्ण ज्वर, यक्ष्मा, अर्श आदि रोगो के विशेष चिकित्सक हैं. आपके स्वय अनुभूत योग व चिकित्सा क्रम जो आपने भेजा है, उनमे से कुछ यहा दे रहे हैं। आशा है आपके अनुभव से पाठक लाभ उठा सकेंगे।" —सम्पादक।

ग्रहणी चिकित्सा—

"पूर्व जन्म कृत पाप रोग रूपेण बाध्यते" इस सत्य सकेतानुसार मैं दुर्भाग्यवश ग्रहणी रोग से ग्रसित हो गया, चिकित्सा करते-करते मन खिन्न हो गया। करीब १५००) की औषधि व चिकित्सा कराई, लाभ नहीं हुआ। जब कि मैं एक शिक्षित वैद्य हूं तब इतना खर्च हुआ। वैद्यों ने ग्रहणी बताया ग्रहणी कपाट, महाराज नृपतिवल्लभ रस, पीयूषवल्ली रस, गङ्गाधर रस, शङ्खभस्म, चन्द्रोदय, मकरध्वज, स्वर्णपर्पटी, कुटज आदि के अरिष्ट और आसव दिये। ६ माह केवल तक्र के सहारे रहा, लाभ न हुआ। डाक्टरों से ऐलोपैथी चिकित्सा कराई, उन्होंने अनेक इन्जेक्शन, टेबलेट, विटामिन आदि दिये कोई लाभ न हुआ। मैंने दुखी मन से प्रभु से विनय की, नाथ! अब तो शरीर मे केवल प्राण वायु और अस्थिपञ्जर ही शेष है, वह आपको अर्पण है आप ही मार्ग दर्शन करें। इस पर समय पूर्ण होने पर सोते-सोते स्वप्न मे एक योग का भान हुआ मैंने उसी का सेवन किया, शीघ्रातिशीघ्र मैं अच्छा हो गया, वही प्रयोग का क्रम मैं आपके समक्ष रख रहा हूँ।

योग न० १—भुनी हुई शुद्ध असली तालाबी हींग दो चना बराबर प्रात., १० बजे भोजन के बाद तथा शाम को भोजन के पश्चात् इस प्रकार दिन में तीन बार खानी प्रारम्भ की।

योग नं० २—मृतसजीवनी सुरा भोजन के पश्चात् आध घण्टे पर २ तोला मात्रा मे समान जल मिलाकर दो बार ली गई।

योग न० ३—वड़वानल चूर्ण १ या २ रत्ती, ६ माशा घृत मे मिलाकर सबेरे तथा सायंकाल लिया। बड़वानल चूर्ण आयुर्वेद का प्रसिद्ध योग है। फिर भी लिखे देता हूँ—

शुद्ध हरताल	१ भाग
शुद्ध पारद	१ भाग
शुद्ध गन्धक	२ भाग
शुद्ध शीशा की भस्म	१ भाग
कालीमिर्च	१६ भाग

—पारा गन्धक की कज्जली करके चूर्ण तथा भस्मो को मिला खरल कर लेवे।

तालादेको रसादेकश्चैकः सीसक भस्म,
द्वौभागौ गन्धकाजुद्धाम्मरिचात्षोऽशांशका. ।
चूर्णंकृत्वा रक्तिकैके घृतेनसह भक्षितम्,
विसूचि सर्व शूलानि प्लीहान् मुदर तथा ।
गुल्मं संग्रहणी रोगं कास श्वास कफानिलान्,
अग्निमाधादि कान्रोगान् हत्यग्नौ बडवानलः ।

उपर्युक्त चिकित्सा-क्रम से कुछ समय मे मेरा रोग समूल नष्ट हो गया तथा इसी चिकित्सा क्रम से मैने ग्रहणी के करीब २१ रोगियों की चिकित्सा की है और परीक्षित अनुभूत किया है।

धातुक्षय तथा मूत्र-शुक्र रोग पर
मूत्राघात निदान के चौदहवें श्लोक मे लिखा है—

मूत्रितस्य स्त्रियं जातो वायुना शुक्रमुद्धतम् ।
स्थानाच्च्युत मूत्रयत' प्राक् पश्चाद्वा प्रवर्तते ॥
भस्मोदक प्रतीकाशं मूत्र शुक्र तदुच्यते ।

स्त्री-प्रसग के बाद मूत्र-त्याग करने वाले का वायु के द्वारा ऊपर उठाया हुआ एवं स्थानच्युत शुक्र मूत्र के पहिले या पश्चात् भस्म मिश्रित जल के समान निकलता है, इसे 'मूत्र शुक्र' कहते है।

इसी रोग पर निम्न योग देता हूं—

(१) काबुली बादाम — ५-७ नग
छोटी इलायची — ४-५ नग
दाना कालीमिर्च — ३ नग
ब्राह्मी बूटी ताजी — ८-१० पत्ती
सौंफ — १५ दाना
गुलाबफूल — ४ रत्ती

—सबको महीन पीस कर पाव या डेढ़ पाव ताजा जल मे चीनी मिश्री या पुरानी खाड का मीठा हल्का शर्बत बनाकर उपरोक्त सबको मिला छान कर पीयें।

समय—दिन में दो बार, प्रात. ६ बजे, साय ४ बजे।

(२) प्रवाल पिष्टी — १ रत्ती
मुक्ताभस्म — आधी रत्ती

—दोनों मिलाकर पैसा भर मधु से प्रात सायं।

(३) भोजन के आध घंटा पश्चात् अंगूरासव १-२ तोला तक सम भाग जल के साथ। दोनों समय देवें।

पथ्य—पुराना चावल, यव-गेहूँ की रोटी, अरहर मूग की दाल, गोदुग्ध, संतरा, अनार आदि मीठे फल तथा अमरूद मौसम्बी ऋतु अनुकूल। हरे साग सब्जी आदि तथा नवनीत देवे।

अपथ्य—तैल, खटाई, मिर्च, स्त्री-सहवास न करे।

गुण—इस प्रकार उपरोक्त विधान से पखाने के समय जो धातु क्षय होती है, मल त्याग शुद्ध नहीं होता वह दूर होजाता है। चक्कर, हृदय की धड़कन, मूर्च्छा, स्मरण शक्ति की कमी आदि दूर होकर हृदय की गति को शुद्ध कर देता है।

व्रण के लिए—

'एक देशोत्थित शोथो व्रणाना पूर्व लक्षणम्,

अर्थात्—जो शोथ शरीर के किसी एक भाग मे प्रकट होता है वह व्रणों का पूर्व रूप होता है। उस पर बहु-परीक्षित योग मैं अर्पित कर रहा हू।

(१) रक्त गदहपूरना (लाल बिसखपरा, लाल पुनर्नवा) की जड़ बकरी के दूध से धोकर स्वच्छ कर फिर बकरी के दूध से ही पीसे। इसमें ३-४ दाना काली मिर्च के भी डालकर उसको खूब रगड़े। उसके पश्चात् किंचित गर्म कर सुहाता-सुहाता लेप करे। ऐसा करने से तत्काल के व्रण की अपक्व शोथ एक दो दिवस मे अवश्य शान्त होजाती है। कम-कम से दिन मे तो लेप जब सूखे तभी पुनः दूसरा लेप करदे। इसको बार-बार करें, अवश्य लाभ होगा।

(२) यव गोधूम मुद्गैश्च स्विन्नै पिष्टै प्रलेपयेत्।
विलियते क्षणे नैवमपक्वैश्चैव विद्रधि ।

अर्थात्—यव गेहूँ मूंग सम भाग, इन्हे जल मे पीस कर गर्म लेप करने से अपक विद्रधि भी नष्ट होती है।

योग संख्या ३—उपरोक्त संख्या २ के योग के समान यव और अलसी सम भाग लेकर जल या बकरी के दूध में पीस कर घृत से तर कर गर्म कर लेप करें। ऊपर से बगलापन अभाव में कोई सा पान घी में तर कर गर्म करके बांधें। इस प्रकार बार-बार करने से अपक व्रण शान्त होते हैं और पक्क व्रण फूट भी जाते हैं।

रक्त प्रदर पर—

प्रवाल पिष्टी	१ रत्ती
मुक्तेश्वरभस्म	१ रत्ती
लौहभस्म	½ रत्ती
शुद्ध स्वर्ण गैरिक	½ रत्ती
चन्द्रोदय	किंचित मात्रा

—उपरोक्त सब १ मात्रा में मिलाकर ३ माशा श्वेत-दूर्वा का स्वरस, ३ माशा श्वेत चन्दन जल से घिसा हुआ, ३-४ छोटी इलायची के बीजों का चूर्ण जो भुनी हुई हों, पैसा भर शुद्ध मधु में फेंट कर चाटें।

दूसरा योग—एक तोला कुशमूल स्वच्छ जल से धोकर १ छटांक या आधा पाव पुराना चावल के धोवन में पीस छान कर पान करने से तीन दिन में प्रदर रोग दूर होता है।

तीसरा योग—भुंई आंवला के मूल को चावल के धोवन के साथ पीस-छान कर पीने से २-३ दिन में प्रदर रोग ऐसे चला जाता है जैसे धन-हीन मनुष्यों को नौकर छोड़कर भाग जाता है।

पथ्य—पुराना चावल का भात, मूंग की धोई दाल, गाय बकरी का दूध, रोटी जौ-गेहूं की, लौकी या तोरई का हरा साग सेवनीय है।

विशेष प्रार्थना—नं. १ की औषधि से वैद्य लोग धनोपार्जन कर सकते हैं। नं. २ व ३ के योग के साथ कोई सौम्य औषधि देकर धर्मार्थ ही चिकित्सा करें, नहीं तो लाभ न होगा और आपको धन का भी लाभ नहीं होगा।

:: पृष्ठ ४४६ का शेषांश ::

जीवनसखा चूर्ण—

अश्वगंधा	शतावरी	सोंठ
श्वेत मूसली		सफेद चन्दन
ईसबगोल	छोटी हरड़ (बालहिरडा)	

—प्रत्येक १-१ तोला

मिश्री	७ तोला

—इनका कपड़छान चूर्ण बना ३-३ माशा गौदुग्ध में मिश्री डाल प्रातः और रात को सोते समय लीजिये।

गुण—इसके प्रयोग से आते साफ होती हैं। बल-वीर्य बढ़ता है। प्रमेह स्वप्नदोष आदि में तो अव्यर्थ है। कम से कम ४० दिन तक अवश्य सेवन करना चाहिए।

स्वप्नदोष वाले रोगी को ४ बजे प्रातः उठकर घूमने के लिए एवं स्नान के समय नाभी तक पानी में बैठने के लिए अवश्य कह देना चाहिये।

श्री वैद्य श्यामबिहारी वैद्य विशारद

कैलाश आयुर्वेदिक फार्मेसी, कालिञ्जर (दुर्ग)

—०—

"आप एक सुयोग्य एवं अनुभवी सफल चिकित्सक हैं तथा एक सुन्दर लेखक हैं। आपने कालिंजर का इतिहास लिखा है। आपके बाबा ने शार्ङ्गधर संहिता की पद्यात्मक टीका लिखी है। आप जडी बूटियों के अन्वेषण मे सक्रिय भाग लेते रहे है। बूटियो का यह व्यवसाय बहुत पहिले से ही आपका गृह कार्य के रूप मे चला आ रहा है। यहा आपके कुछ सफल प्रयोग प्रेषित कर रहे हैं।" —सम्पादक।
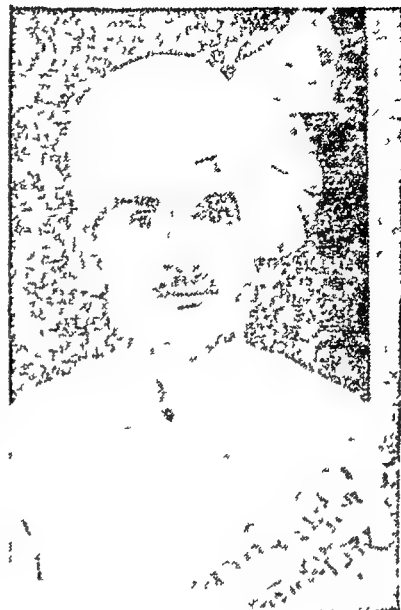
दाई का अञ्जन—

फिटकरी भुनी	१ तोला
गाय का घी	२ तोला
अफीम	½ तोला

—उपरोक्त योग हमे वयोवृद्ध बुढ़िया से मिला जिसके दरवाजे पर नेत्र रोग पीड़ितों का मेला सा लगा रहता था। उसने हमें यह योग अत्यन्त सेवा सुश्रुषा करने पर बतलाया, जिसे हम आज पाठकों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं। पाठक इस योग का प्रयोग करें।

निर्माण विधि—फिटकरी और अफीम को लेकर खरल मे डालकर थोड़ा-थोड़ा घी डालकर घोटें। जब कि फिटकरी के अणु टूटकर अंजनवत् हो जावे तब कांच अथवा चीनी के वर्तन में सुरक्षित रखले।

गुण—यह अंजन बच्चों की आंख सम्बन्धी सभी रोगों में लाभप्रद है। आंख सूजने के कारण बन्द हो जाती है तथा उनमे रोंहे हो जाते है, उस समय इस अजन से विशेष लाभ होता है, बालक और वृद्ध सभी निर्भयतापूर्वक प्रयोग कर सकते है।

प्रयोग विधि—इसे अंगुली से आंख के अन्दर (आंजना) लगाना चाहिए।

नेत्र दुखहरण (लेप)—

हल्दी	१ तोला
फिटकरी भुनी	१ तोला
अफीम	३ माशा

निर्माण विधि—उपरोक्त वस्तुओ को अच्छी प्रकार जल डालकर खरल करे। फिर आग मे पकाकर लेप बनाले।

गुण एवं प्रयोग विधि—जब कि छोटे बच्चो की आखे आजाती है और वे नेत्र रोग से पीड़ित हो जाते है। उस समय आंखे बन्द हो जाती हैं और आंखो मे सूजन एव खुजली उत्पन्न हो जाती है, आंखो से कीचड़ एवं आंसू बहने लगते हैं। उस समय इसके प्रयोग से एक ही दिन मे लाली एवं दर्द आदि व्यथायें दूर हो जाती है। यह योग कई बार का परीक्षित है। इसलिए निर्भयतापूर्वक नेत्र रोगो में इसका प्रयोग करे।

महन्त श्री साधुशरण दास

कबीर मठ खैरा पो० हवेली खरगपुर, (मुंगेर)।

"आप एक योग्य अनुभवी चिकित्सक हैं, कबीर पंथी साधु हैं। आप अपने मठ मे ही दीन रोगियो की चिकित्सा करते हैं। आपके प्रयोग हमे श्री एम पी सिंह, शहीद श्री लाल मोहन पुस्तकालय नजरी द्वारा प्राप्त हुए हैं। प्रयोग अच्छे प्रतीत होते हैं, सधन्यवाद प्रकाशित करते हैं"

—सम्पादक।

सम्पूर्ण कुष्ट नाशक—

चालमूंगरा	१ पाव
नीमपत्ती बीज	२ तोला
धुध कोरैया	आधा पाव
कूठ	१ तोला
कुटकी	१ तोला
जावित्री	१ तोला
केशर	६ माशा

—सभी को चूर्ण बनाकर ३-३ माशा की मात्रा में प्रातः सायं मधु के साथ ले।

नोट—पहिले जुलाब लेकर पेट साफ करलें, उसके पश्चात् दवा प्रारम्भ करे। एक माह मे १ बार पेट साफ किया करे।

जुलाब—

सनायपत्ती	५ तोला
हरड़ छोटी	२ तोला
जेठी मधु	१ तोला
मिश्री	२ तोला

—सभी का चूर्ण बना उचित मात्रा मे सुबह खाकर गरम पानी पीये, दस्त साफ हो जायेगा।

—शरीर में तैल लगाने के लिए निम्नलिखित तैल प्रयोग मे लावे।

पीली सरसो का तैल	१ सेर
सफेद कनेल (कन्नेर-करवीर) का पंचाग	आधा पाव

—दोनो वस्तुओ को लेकर अग्नि पर तैल पाक विधि से पकाले और नित्य वही तैल लगावे।

घावों के लिए मलहम—

सफेद सरसो का तैल	१ पाव
नीम की पत्ती	५ तोला
स्वर्गधारी (स्वर्णक्षीरी)	१ तोला

—तैल मे डालकर पकाले और कुछ गरम रहने पर छानले और २॥ तोला मोम उसमे डाल दे। सवेरे बासी पानी से १०० बार उसे थाली मे लेकर धो डाले। धोने के बाद उस मलहम को डिब्बे मे रख ले। घाव को गरम पानी से धोकर सूखने दे। उसके बाद नित्य घाव मे मलहम लगावे।

पथ्य—चने की रोटी, गौदूध, कच्चा चना।

तरकारी करेला, पपीता, परवल, कद्दू, यही पथ्य है।

कष्टार्तव नाशक—

स्त्रियो को मासिक के समय मे जो दर्द होता है इसका कारण, वे शास्त्रोक्त नियमों का पालन नहीं करती है। मासिक श्राव के समय ठण्डे जल से स्नान और दूषित आहार-विहार के कारण उनका मासिक श्राव शुरू होते ही दर्द होता है। उस

—शेषाश पृष्ठ ४५७ पर।

श्री पं० सूर्यदत्त शास्त्री

साहित्यायुर्वेदाचार्य

सूर्य चिकित्सा भवन, मोरना (मुजफ्फरनगर)

"संस्कृत कालेज बनारस की शास्त्री परीक्षा के अनन्तर निभा विद्यापीठ से आयुर्वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है। ऋषिकेश में पं० बालकराम जी शास्त्री से अध्ययन एवं क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त किया। वहीं से आपको वैद्य-वाचस्पति की उपाधि प्राप्त हुई। आप सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। अनेक संस्थाओं में अध्यापन कार्य किया है। मोरना में आपका सूर्य चिकित्सा भवन कार्यरत है। आपका चिकित्सा काल १४ वर्ष है। आपके अनुभव में परखे हुए कुछ प्रयोग निम्नलिखित हैं।"

—सम्पादक।

विशूचिकान्तक वटी—

शुद्ध अफीम	६ माशे
जायफल का बारीक किया हुआ चूर्ण	२ तो
हीरा हींग	८ माशे
लाल मिर्च का बारीक किया हुआ चूर्ण	२ तोला
पिपरमेंट	१० माशे

निर्माण विधि—इन पांचों औषधियों को खरल में डालकर सफेद प्याज के अर्क से अच्छी प्रकार खरल करें। कम से कम ? छटांक सफेद प्याज का अर्क समाप्त हो जाये, तब तक घुटाई करते रहना चाहिए। जब गोली बनाने योग्य हो जाये, तब २-२ रत्ती प्रमाण गोली बनाकर छाया में सुखायें। किसी स्वच्छ शीशी में सुरक्षित रक्खें, ध्यान रहे कि कार्क ढीला न रहे, नहीं तो बनाई हुई औषधि का गुण कम हो जायेगा।

मात्रा एवं अनुपान—१ गोली अर्क सौंफ अथवा अर्क पोदीना के साथ दें। आध-आध घण्टे बाद या १५-१५ मिनट बाद १-१ गोली दें। ३ गोली ही देना पर्याप्त है। बच्चों को बलाबल देखकर दें। गोली को चबाना नहीं चाहिए, बल्कि निगलवाना चाहिए।

विशेष विवरण—एक गोली के देने पर ही रोगी को शांति मिलती है, वमन और अतिसार बन्द होने लगते हैं। पेशाब खुलकर आने लगता है। रोगी का शरीर चाहे शीतल हो गया हो, अथवा हाथ-पैर पटकता हो। आंखें अपना काम छोड़ कर अन्दर की ओर धस गई हों, इन्जेक्शन आदि लगाकर एलोपैथिक डाक्टर भी परेशान हो गये हों। ऐसी असाध्यावस्था में हमारे आयुर्वेद के विशुद्ध द्रव्यों से निर्माण करके विशूचिका वटी का प्रयोग करायें और अपने यश की कीर्तिपताका फहरायें। मेरी इस दवा से अनेक रोगी ठीक हुये, मेरे औषधालय का पेटेण्ट एवं अनुभूत प्रयोग है।

दाद चम्बल पर पामान्तक मलहम—

पारा	जीरा सफेद	जीरा स्याह
गन्धक	हल्दी	दारु हल्दी

कालीमिर्च मैनसिल सिंदूर
—प्रत्येक १-१ तोला

निर्माण विधि—प्रथम पारा गन्धक की यथाविधि कज्जली करके पृथक् रक्खे, सिंदूर को छोड़ कर अन्य सब औषधियों को कूट-पीसकर विशुद्ध वस्त्र से छान ले, तदनन्तर सिंदूर को मिला दें और उपर्युक्त निर्मित पारा गधक की कज्जली को भी सम्मिलित कर दे। इस प्रकार मिलाकर खरल मे डालकर ३ दिन तक निरन्तर घुटाई करें और फिर दवा का पूरा वजन तोलकर उससे तीन गुणा शतधौत गोघृत मिलाकर मलहम तैयार करे।

गुण—कैसा ही दाद हो, चम्बल हो, इस मलहम के लगाने से फौरन ही शर्तिया आराम प्रतीत होने लगता है।

नेत्र रोगों पर सूरज कृष्ण नेत्र वर्टी—

फिटकरी भुनी हुई	१ तोला
नीम के पत्ते	४ अदद
शुद्ध रसौत	२ तोला
अफीम	७ माशा
केशर	२।। रत्ती

निर्माण विधि—इन सब दवाओं को गुलाब के अर्क मे तीन दिन तक खरल करे और लम्बी-लम्बी गोली बनाले।

सेवन विधि—एक गोली को लेकर गुलाबजल में घिसकर आख मे डाले और यदि आंख के ऊपरिभाग मे शोथ हो तो लेप ही करे।

गुण—आख की लालिमा एवं शोथ को तुरन्त ही दूर करने लगती है। आंख की कड़क, पीड़ा धुन्ध, रोहे और नजले की आंखों के लिए अमृत समान है। आंख की रोशनी को बढ़ाती है। गन्दे पानी को निकाल कर नेत्रों को स्वच्छ एव निर्मल बनाती है।

विशेष विवरण—यदि किसी बालक की आंख मे रोहे हो गये हों और नेत्र शोथयुक्त हो गए हो। बालक रात दिन चिल्लाता रहता हो, ऐसे समय में उपर्युक्त वर्तिका बनाकर व्यवहार मे लायें और आयुर्वेद के चमत्कार को देखे।

छोटे-छोटे बच्चो की आंखो मे रोहे होने के कारण वे शोथयुक्त हो जाती हैं। उनके उपरिभाग मे लेप कर दें और पलकों को पलट कर अन्दर भी डाले।

:. पृष्ठ ४५५ का शेषांश .:

समय इतनी जोर से दर्द होता है कि वह दर्द सेहिचैन हो जाती है। ऐसी स्त्रियों के लाभार्थ निम्न प्रयोग लिख रहा हूं।

पुनर्नवाश्वेत की जड़	१ नग
अफीम	१ चावल भर

—जिस दिन मासिक स्राव शुरू हो उसी दिन नई जड़ निकाल कर और गौबर का चौका लगाकर दूसरे आदमी से पानी के साथ पिसवा कर पूरब मुह होकर बैठ जाय और अपने इष्ट का नाम लेकर पी जांय। इस तरह तीन दिन तक करें फिर बन्द करें फिर जब मासिक स्राव का समय आवे उसी प्रकार सेवन करें। तीन चार महीना मे अवश्य ही कष्ट दूर हो जायगा।

उदरशूल हर—

अपामार्ग के पचाग का क्षार	५ तोला
शङ्खभस्म	सेंधानमक
नारकेल क्षार	२-२ तोला

—सभी को चूर्ण बनाकर नित्य प्रति ३-३ माशा गरम पानी के साथ दोनों समय सेवन करें तो हर प्रकार के उदरशूल आराम होते हैं।

—शुद्ध सुहागा २ माशा मधु के साथ दोनो समय जीभ पर लगा दे आराम हो जायगा। बड़े आदमी पहले साधारण जुलाब लेकर पेट साफ करले।
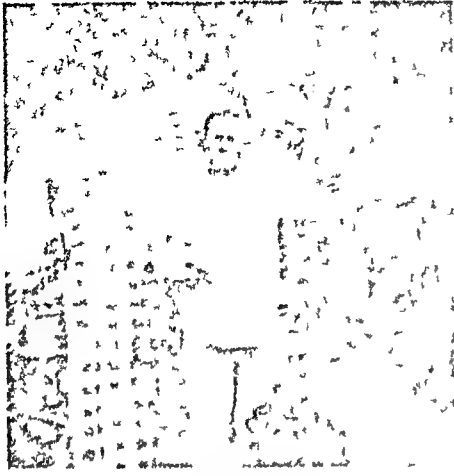
श्री रामकृष्ण कडोला वैद्य

असगांव पट्टी वल्ला उदयपुर पो० ढांगर (गढ़वाल)

"आप १६ वर्ष की अवस्था से चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। परम्परा से आपके वंश में यह कार्य चला आ रहा है। आपने यह ज्ञान अपने वयोवृद्ध नाना की कृपा से ही प्राप्त किया है। किसी परीक्षा के बाद ही आपकी इधर सुरुचि जागृत हुई। आप बोर्ड से रजिस्टर्ड वैद्य हैं तथा इन्जेक्शनों का प्रयोग भी करते हैं।" —सम्पादक।

रक्तप्रदर नाशक रसायन—

जामुन की छाल का वस्त्रपूत चूर्ण

विधि—उपरोक्त चूर्ण को लोह की कढ़ाही में रखकर २१ भावना जामुन की छाल के रस की तथा दस भावना गूलर छाल के रस की देने के बाद काम में लावे।

मात्रा— १-१ माशा दोनों समय।

अनुपान—आधी पकी फली केले की, फली में मिला कर चटावें।

गुण—रक्तप्रदर की अचूक दवा है। जहां ऐलोपैथिक बड़ी-बड़ी दवाओं से लाभ नहीं हुआ, वहां इस प्रयोग से लाभ हुआ है।

पथ्य—दूध, दलिया, मूंग का हलुआ, पुराने चावलों की खीर आदि नमकीन चीज, मिर्च आदि तीक्ष्ण वस्तुओं का त्याग जरूरी है।

व्रणनाशकतैल—

थूहर का दूध	१ पाव
तिली का तैल	½ सेर
पानी	१ सेर

विधि—तैल पकाने की विधि से तैल पका कर छान कर सुरक्षित रखें।

उपयोग—तैल का फोया घाव साफ करके बांधने से तथा कर्णस्राव में दो बूंद टपकाने से शीघ्र आराम होता है। इस मामूली से प्रयोग से असाध्य व्रण, कर्णस्राव खुजली आदि पूययुक्त घाव शीघ्र आराम होते हैं।

प्लीहा नाशक—

इन्द्रायण छोटी	१ सेर
एलुआ	१ पाव
पीपल	१ पाव
पानी	८ सेर
गुड़	२॥ सेर

विधि—इन्द्रायण मूल को कषाय विधि से पाक करे, जब ४ सेर पानी रहे तब घड़े में भर कर पीपल और एलुआ का यवकुट चूर्ण और गुड़ डाल कर आसव विधि से आसव तय्यार करे। एक माह बाद छानकर बोतलों में रख देवें।

मात्रा—१ से २ तोला आधा जल मिलाकर बलाबल के अनुसार। दवा पीने से दस्त होते हैं अतएव बलाबल देखकर दवा सेवन करावे। दवा प्रातः खाली पेट १ ही समय दे।

गुण इस अर्क के सेवन से १५ दिन में भयङ्कर

प्लीहा को आराम हो जाता है। इसके अलावा पुराना विषमज्वर, कमल वायु, रक्त-विकार तथा उदरशूल पर अक्सीर काम करता है।

पथ्य—हलका, रोगानुसार वैद्य बन्धु निश्चित करे।

कामान्तक—

मुलेठी	१ पाव
बनफ्सा	१ पाव
पीपल	२ छटांक
काला वांसा	१ पाव
पानी	४ सेर
चीनी	२॥ सेर
कच्ची हल्दी	१ पाव

विधि—कूटने वाली चीजों को यवकुट करके कषाय करे, जब जल २ सेर रह जाय तब छान कर चीनी मिलाकर शर्बत विधि से शर्बत तैयार करे। बाद में ठंडा होने पर १ प्रतिशत कार्बोलिक एसिड मिलाले। फिर सुरक्षित बोतलों में रख देवे।

मात्रा—६० बूंद जवान के लिए, बच्चों को पानी मिलाकर ८-१० बूंद पिलादे।

गुण—इस शर्बत के चाटने या पानी मिलाकर पिलाने से कुकरकास, न्यूमोनिया की खांसी, जीर्ण सूखी खांसी को आराम हो जाता है। गले के घाव, टौंसिल की खराबी दूर होती है।

:: पृष्ठ ४५४ का शेषांश ::

मुनक्का या कैपशूल में भरकर या हलवा आदि के भीतर करके निगल जाना चाहिए। दवा को मुंह में नहीं लगने देना चाहिए। यदि मुंह में लग जाय तो मुंह आ जाता है।

पथ्य—बिना नमक के घी, खांड युक्त बेसनी रोटी खानी चाहिए। इसके सेवन करने से पूर्व रेचन ले लेना चाहिए।

गुण—उपदंश फिरङ्ग के लिए उपयोगी रस है। इससे भिन्न उपदंशजनित रक्त विकार, कण्ठमाला, अपची, भगन्दर, वातरक्त, आमवात में उपयोगी है।

नोट—रसकपूर दोलायन्त्र विधि से दूध में पोटली बांधकर पकाकर शुद्ध करले। ४-६ घण्टे पकाने से पूर्ण शुद्ध हो जाता है।

:: पृष्ठ ४६२ का शेषांश ::

मीठे बादाम का तैल	प्रत्येक १५-१५ तोला
चांदी का वर्क	१ दफ्तरी
शहद असली	६० तोला

—त्रिफला और धनियां के चावल का कपड़छान चूर्ण बनाले और बादाम का तैल चूर्ण में खूब मिलाकर शहद व वर्क भी मिलाकर एक जात कर लें। बस दवा तैयार है। उपरोक्त रोगों में अतीव गुणकारी है।

मात्रा—६ माशा से एक तोला तक गाय के दूध के साथ या जल के साथ प्रातः सायं दें।

वैद्य शंकरलाल शर्मा वैद्यविशारद

प्रायव्हेट आयुर्वेदिक औषधालय मु पो हरनगांव [म प्र.]
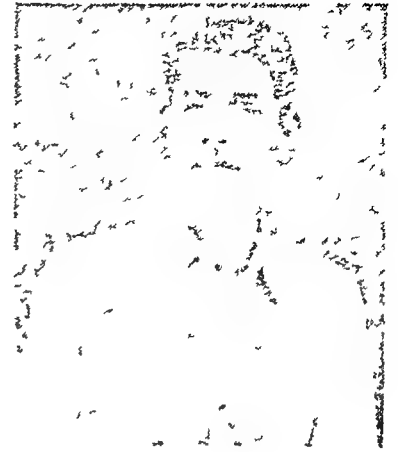
"श्री वर्मा जी हरनगाव के ही मूल निवासी हैं। इस क्षेत्र मे १० वर्ष से जनता जनार्दन की सेवा कर रहे हैं। यही पर आपका आयुर्वेद औषधालय है। आपने मध्य भारत हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से वैद्यरत्न प्र खड उत्तीर्ण कर गत वर्ष द्वितीय खड की परीक्षा दे चुके हैं। मध्य भारत भारतीय चिकित्सा परिषद् से रजिस्टर्ड वैद्य हैं।"

—सम्पादक।

वेवची (एक्जीमा) मलहम—

पुराना घृत	२ तोला
आंवलासार गन्धक	१ तोला

निर्माण विधि—आंवलासार गन्धक को महीन खरल कर ठंडे ही घृत में अच्छी तरह मिला लिया जावे। इसके बाद उस गन्धक मिले हुए घी को कागज पर लगा कर फोगनी बनाकर उसमें आग लगा देना चाहिये। उससे तरल घृत जलकर बूंद-बूंद टपकेगा। उस घृत को कटोरी में इकट्ठा करना चाहिए। इस प्रकार यह घृत जितना अधिक जलेगा उतना ही अधिक गुणदायक होगा।

व्यवहार विधि—एक्जिमा जखम को नीम के पानी के काथ से धोकर इस मलहम को प्रातः सायं लगाना चाहिए।

गुण—इस प्रकार ५-६ दिन में वावची (एक्जिमा) बिलकुल अच्छा हो जायगा। यह योग अनुभूत है। कितने ही पुराने रोगी अच्छे हो गये है।

पसली वेदना नाशक प्लास्टर—

सफेद घुंघची की मिंगी	ढाढन बीज
—दोनों १-१ तोला	
शहद	२ तोला

निर्माण विधि—उक्त दोनो औषधियो को महीन काजल के समान खरल कर शहद मे मिला कर घोटना चाहिए। इसके बाद उसको कपडे पर लपेट कर जहां पसली आदि का दर्द हो उस पर चिपका देना चाहिए। उसे अग्नि से सेक करे।

गुण—यह एण्टी फ्लाजिस्टीन प्लास्टर का काम करेगा, यह पसली का दर्द, निमोनिया का दर्द, मोच आना आदि दर्दों मे उपयुक्त है।
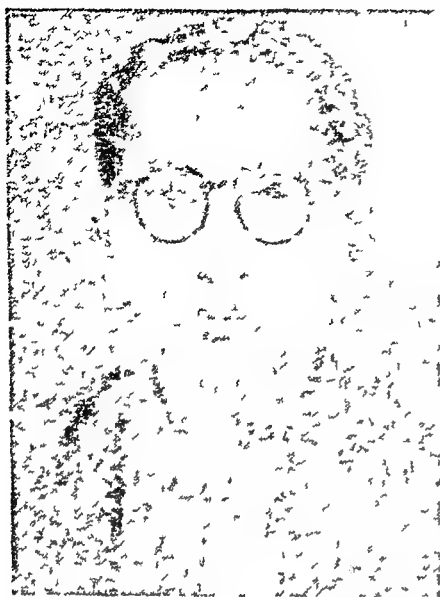
श्री ठाकुर सत्यदेव सिंह वैद्य

श्री सत्य औषधालय पो कम्हरियाघाट (फैजाबाद)

"ठाकुर साहब की आयु इस समय ६० वर्ष है आप एक सम्पन्न भूतपूर्व जमीदार परिवार के सदस्य है। उर्दू, हिन्दी और मैट्रिक अगरेजी के पश्चात् गोरखपुर निवासी श्री पं मुनेश्वरदत्त वैद्यराज से ५ वर्ष आयुर्वेद और २ वर्ष यूनानी तिब्ब पढकर ३५-वर्ष की आयु मे चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आपने अनुभवयुक्त ८ प्रयोग भेजे है जो सभी गुणावगुण की कसौटी पर कसे हुए हैं।" —सम्पादक।

घाव नासूर पर मलहम--

सफेद कत्था राल सफेद मीठा तैल
साफ मीठा जल १—१ तोला
नीलाथोथा फिटकरी ३—३ माशा

वनाने की विधि—सब दवाओ का कपड़छान चूर्ण करलें, बाद मे तैल और पानी कासे की कटोरी में डालकर हाथ से खूब मथे। जब घी की तरह हो जावे तो दवाओं का चूर्ण उसी मे डाल दें और खूब मिलाकर चौड़े मुंह की शीशी में रक्खे।

सेवन विधि—घाव को नीम के पानी से धोकर साफ कर ले। पतले कपडे पर मलहम लगाकर घाव पर रख दे। फाये के बीच से जरा सा सूराख भी कर दे जिससे मवाद भी निकलता रहे। फाहा स्वयं उतर जाय तो दूसरा फाहा रख दे। फाहा बदलने की आवश्यकता नहीं है, घाव अच्छा करके ही उतरेगा।

गुण—किसी भी प्रकार का सड़ा-गला नासूर इत्यादि भयङ्कर से भयङ्कर जख्म (घाव) इससे अवश्य आराम होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

गले के अन्दर शोथ फोड़ा घुंडी इत्यादि पर

जादू असर बूटी

जमीन से फैलने वाली एक बूटी जो तर जमीन में होती है उसे गिड़नी[1] कहते हैं। उपरोक्त रोगो में इसकी जड़ी को पानी में पीस कर थोड़ा-थोड़ा बार बार पिलाये ताकि गले मे असर हो, भगवान की कृपा मे पहली ही खुराक मे, नहीं तो तीन चार खुराक मे पूरा लाभ होगा। बूटी खूब बारीक पीसी जावे और पानी इतना रहे कि दवा अधिक प्रवाही न बन जाय।

एक फकीरी प्रयोग—

कुछ समय पूर्व एक काश्मीर के रहने वाले साधु मेरे देहात मे आ गये। वह सिर्फ एक ही दवा से सभी रोगो की चिकित्सा करते थे। सबको लाभ होता था और जनता की भीड़ जमा रहती थी। यहा के कई वैद्यो ने उनसे योग पूछा, परन्तु उन्होने न बताया। एक दिन नुस्खा लेने मेरे यहा आये,

---

[1] गिडनी बूटी नाले आदि नीची और तर भूमि मे सदैव मिलती है। जमीन पर फैलने वाली बूटी है, हर एक गाठ से पत्ते तथा फूल निकलते है। पत्ते छोटे बडे एक इञ्च तक लम्बे और बीच मे करीब एक जौ के बराबर चौडे होते है। गाठ से गुच्छेदार सफेद जरा सुर्खी मायल रङ्ग के फूल आते है।

नुस्खा तो मुझे मालूम हो ही गया, बाद में बनाने की विधि और सेवन विधि भी बतला दी। मैंने बना कर सेवन किया और भी लोगों को सेवन कराया, वीर्य विकार दूर करने, शरीर में तुरन्त ताकत देने और विषयभोग में रुकावट करने में लाजवाब सिद्ध हुआ परन्तु और रोगों में मैंने अभी तक अनुभव नहीं किया वैद्य बन्धु अनुभव करके मुझे भी लिखने की कृपा करें।

योग यह है—

रूमानी मुसब्बर (एलुवा)	१ तोला
स्याह जीरा	१ तोला
असली काश्मीरी केशर	३ माशा
जावित्री	३ माशा
जायफल	१ अदद
असली कस्तूरी	१ रत्ती
गाय का घी	१ तोला

निर्माण विधि—सब दवाओं का चूर्ण बनालें, दवा का चूर्ण और घी किसी बर्तन (तवा) में डाल कर आग पर पकायें परन्तु दवा जरा भी न जलने पावे। बाद में खूब खरल करें, जब गोली बनाने योग्य हो जावे तो मटर बराबर गोलियां बनालें।

गुण—यह गोलियां वीर्य विकार, दमा, खांसी, वातविकारादि अनेक रोगों को अनुपान भेद से दूर करती हैं। साधु जी प्रायः चाय के साथ खिलाते थे, मैंने भी चाय के ही साथ सेवन कराया था।

अर्श रोग नाशक—

जिन अर्श रोग में अनेक दवाएं खाने पर भी छुटकारा नहीं मिलता उनमें इस छोटी सी दवा का चमत्कार देखें—

योग—रीठे के फल का छिलका लेकर मटर के बराबर गोलियां बनावें और एक-एक गोली मठा के साथ खिलावें। भगवान की कृपा से एक दो मात्रा में लाभ होगा और ११ दिन में बवासीर नष्ट हो जायगा। मैंने कई रोगियों को पानी के साथ खिलाया, उन्हें भी पूर्ण लाभ हो गया।

उदरशूल नाशक बूटी—

पेट में कैसा ही कठिन शूल हो रहा हो ४ माशा अपामार्ग की पत्ती २ रत्ती शङ्ख भस्म मिलाकर हाथ पर खूब मलकर खिला दें, बस दर्द फौरन दूर हो जावेगा।

गलित कुष्ठ की दवा—

कोरया (कुटज) की छाल	१ सेर
चालमोगरा की गूदी	१ सेर
बावची	छोटी इलायची के दाने
काली जीरी	खैरसार

—प्रत्येक ५-५ तोला

—इन सब दवाओं का बारीक चूर्ण बनालें।

मात्रा—३ माशा से ६ माशा तक गाय के दूध के साथ दोनो समय खिलावे।

गुण—यह चूर्ण सब प्रकार के कुष्ठ रोग की सर्वश्रेष्ठ दवा है। पथ्य अवश्य किया जावे।

पथ्य—नमक का खाना बिलकुल बन्द कर दे। चने की रोटी घी के साथ खावे।

उकवत (Eczema) और अपरस की दवा—

कतीरा		कबावचीनी
छोटी इलायची का दाना		सफेदा
कबीला	रसकपूर	मुर्दासंग

—सब समान भाग

—सभी दवाओं का बारीक चूर्ण बनालें, बाद में भेड़ का घी इतना मिला दें कि मलहम की तरह हो जावे। उपरोक्त रोगों में यह दवा आज तक फेल नहीं हुई, पूर्णतः लाभकारी है।

प्रमेह नाशक और दिल दिमाग को मजबूत करने वाली दवा

त्रिफला	धनियां का चावल

—शेषांश पृष्ठ ४५६ पर।

श्री डा. नारायन शिवनाथ पण्डित वैद्य शास्त्री

श्री महावीर औषधालय कोठी बाजार
अकोला (म. प्र.)

"आपकी जन्मभूमि अकोला ही है। प्रथम अगरेजी मैट्रिक पास की, पश्चात् संस्कृत एव आयुर्वेद का अध्ययन किया आयुर्वेद के आप विशारद तथा आयुर्वेद शास्त्री हैं। यवतमाल हौस्पीटल मे आपने सूचीवेध का सक्रिय ज्ञान प्राप्त किया। दो धार्मिक सस्थाओ के दातव्य औषधालयो में आप अवैतनिक रूप से १-१ घटे रोगियो की चिकित्सा कार्य करते है। जातीय तथा सार्वजनिक सेवाओ मे उचित भाग लेकर जनता की सेवा करते हैं। आयुर्वेद के अतिरिक्त आपको एलोपैथी, होमियोपैथी, बायोकैमिक चिकित्सा का भी पूर्ण ज्ञान प्राप्त है। प्रति शनिवार और मगलवार को आप अपने महावीर औषधालय में गरीबो को मुफ्त दवा वितरण करते है। वे ही प्रयोग आपने यहा प्रकाशनार्थ भेजे हैं जो पचासो रोगियो पर अनुभूत हैं। पाठक भी लाभ उठायें, यही हमारी भावना है।" —सम्पादक।

मलेरिया नाशक—

—केवल खारमेका अत बीज (खजूर की गुठली की मींग) का चूर्ण कर ३ पान के बीड़े मे तीन ही लौंग देवें।

गुण—सभी मलेरिया ज्वर अच्छे होते है यथा एकाहिक, तृतीयक, चातुर्थक ज्वर जाते रहते हैं।

—केवल असगन्ध की जड़ तीन पान के बीड़े में तीन लौंग लगाकर देने से मलेरिया नष्ट होता है।

पथ्य—गरम किया हुआ दूध मिश्री मिलाकर पीवे। चाय, काफी, साबूदाना, फल आदि ही सेवन करें। ३ दिन तक अन्न सेवन नहीं करना चाहिये। पानी गरम पीवे। रोगी को दस्त साफ न होवे तो पंचसकार चूर्ण या सोनामुखी (सनाय) सेवन करावे। जो दुग्धपान पर न रह सके उसे हल्के पदार्थ ही देने चाहिए।

पीलिया नाशक—

—एरड के पत्र का रस (अडी के पत्तो का रस) अथवा चिकनी तुरई के पत्र का रस (तोरई जो शाक भाजी मे प्रयोग करते है) १ से २ तोला तक मात्रा में।

अनुपान—गाय के या बकरी के कच्चे दूध मे मिला कर देवे।

समय—प्रात. साय।

गुण—३ से ७ दिन में एक दम पीलिया नष्ट हो जाता है। इसके सेवन से किसी-किसी को दस्त भी हो जाते है। पर उसकी चिंता न करे, दस्त वाले रोगी को दही चावल खिलाना चाहिए। दस्त साफ न होने वाले को दूध अधिक मात्रा मे सेवन करावे। दूध केवल गाय का अथवा बकरी

—शेषाश पृष्ठ ४६४ पर।

श्री पं॰ रामलोचन मिश्र वैद्य शास्त्री

श्री संकट मोचन औषधालय, रूरा (कानपुर)

"उक्त नाम का आपका औषधालय प्रथम गौरियापुर में था वहा २२ वर्ष चिकित्सा करने के अनन्तर आप रूरा मे यहा की जनता की इच्छा से आगये हैं। सार्वजनिक कार्य करने की आपकी भावना रही है। स्थानीय श्रीराम जानकी संस्कृत पाठशाला के प्र प्रबन्धक तथा सार्वजनिक पुस्तकालय के प्रधान है। सरल और गुणकारी आपके २ प्रयोग यहा प्रकाशित कर रहे हैं।"

—सम्पादक।
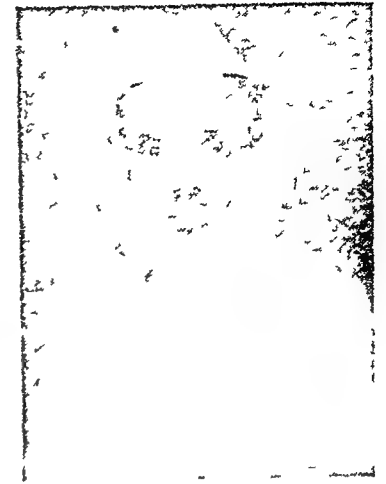
वमन (सूखी डोकी) पर—

इमली की सूखी चैली (छाल) १ तोला जलाकर गर्म ही चूर्ण को खूब बारीक पीसकर ३-३ माशे की ४ मात्रा ६ माशे अर्क प्याज व ३ माशे शहद मिलाकर रोगी को पिलादे। यदि औषधि देते ही शीघ्र वमन हो जाये तो दुबारा फिर से मात्रा पान करावें। यही क्रम जारी रखे। वमन निश्चय बन्द हो जायेगा।

अरुचि पर—

आलू बुखारा बीज रहित द्राक्षा पोदीना
सैंधव लवण काली मिर्च

—समान भाग

—सबको घोट पीस कर मटर समान वटी बनाकर पान करावे। (मुख मे डाल कर रस चूसने दे) अरुचि व मुख की विरसता दूर होती है।

नेत्र रोग पर—

रसौत	५ तोला
गुलाबी फिटकरी	अफीम
यशद भस्म	६—६ माशा
गुलावजल उत्तम	१० तोला

—सबको एक दिल करके लोशन तैयार करले।

गुण—आई आख की ललामी कड़क, जलन, ढरका, रतौंध, धुन्ध आदि व्याधिया दूर होती है।

:: पृष्ठ ४६३ का शेषांश ::

का ही होना चाहिये। कारण गोदुग्ध में पित्त-शामक गुण है। केवल गौमूत्र तथा बकरी के मूत्र को २॥ तोला प्रमाण मे फिल्टर कर दोनो समय पिलाने से भी पीलिया नष्ट हो जाता है। तीन दिन के सेवन से ही सैकड़ों रोगी अच्छे हुए है। खाना एक दम बन्द कर देना चाहिए।

नपुंसकता नाशक—

ब्रह्मदंडी (ऊटकटारी) की जड़ को छाया मे सुखा लेवे। जितनी प्रमाण मे जड़ हो उतनी ही इसकी (ब्रह्मदंडी की) छाल तथा समप्रमाण शक्कर मिला कर चूर्ण करके प्रात सायं १ से १॥ माशा तक दूध मे मिश्री तथा केशर मिलाकर सेवन करे।

गुण—यह वीर्यपुष्टि के लिये रामबाण है। नपुंसकता नष्ट करता है।

वीर्य पुष्टिकर—

पलाश की जड़ पलाश की अन्तछाल
मिश्री —तीनो सम भाग

विधि—चूर्ण करके रखे।

समय—प्रातःकाल तथा सोते समय।

अनुपान—दूध, मिश्री, केशर मिलाकर सेवन करें।

गुण—क्लीवत्व तथा धातुविकार मे अत्यन्त लाभ होते देखा गया है।

वैद्य श्री उमाशंकर पाण्डेय आयुर्वेदाचार्य

अमर आयुर्वेदीय औषधालय, दरौली वाया भभुआ जि० शाहाबाद।
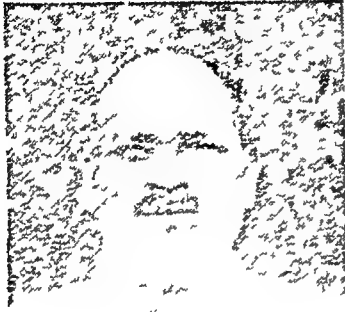
"आप अनुभवी चिकित्सक हैं। आपके औषधालय को राजकीय सहायता प्राप्त है। १५ वर्ष से चिकित्सा कार्य मे सलग्न हैं। इस समय आपकी आयु ४० वर्ष है। संस्कृत एसोसिएशन बांकीपुर पटना (बिहार) से आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त हैं। आपके प्रयोग अत्यन्त विलक्षण कल्पनाओ से निर्मित हैं। सभी प्रयोग चिकित्सको को अन्वेषणीय हैं तथा अति कार्यकारी हैं। आप इन प्रयोगो को सैकडो रोगियो पर प्रयोग कर चुके हैं।"

— सम्पादक।

फोड़े के लिए—

सिंगरफ — कौड़ी भस्म
मुर्दाशङ्ख — सफेदा

—चारों सम भाग

—इन चारों वस्तुओं को पानी में घोटकर लगाने से ८ घण्टे के अन्दर फोड़ा फूट कर बहने लगता है।

बाल अतिसार पर—

सिरफल (विल्व) — मदार
सीसो का टूसा[1] — —४-४ रत्ती
कालानमक — किंचित मात्र

—इन सबको खूब महीन घोटकर चटनी बनाले। इस चटनी को प्रतिदिन बनाकर ४ वार चटाने से छोटे-छोटे बच्चो के भयङ्कर आंव व पतले दस्त आराम हो जाते हैं।

[1]टूसा—वल के पत्तां तथा शीशम अमरूद मदार के पत्तों का कोमल अग्रभाग ही टूसा है, वही भाग प्रयोग मे लिया जावे। जो नवीन-नवीन पत्ते निकलते हैं उन्हीं से तात्पर्य है।

निद्राकारक—

भांग को बकरी के दूध में पीस कर पलकों पर लेप करने से बहुत दिनो की गई हुई नींद पुनः आने लगती है।

श्वास वेग में—

सोंठ को तवे पर अधभुनी कर खूब बारीक पीस ले। इस चूर्ण को भयङ्कर बढ़े हुये श्वास वेग मे छाती पर मलने से श्वास का वेग बहुत कम हो जाता है।

ज्वरयुक्त शूलातिसार पर—

हरड़ — मिमोरा — पीपर

—प्रत्येक समभाग

—इन सबको लेकर चूर्ण बनाले। इस चूर्ण को प्रति दिन ४ बार ३-३ माशा शहद से चाटने पर ज्वर सहित शूलातिसार निश्चित् चला जाता है। यह प्रयोग रोगमुक्त पर्यन्त यानी ४-५ दिन तक व्यवहार करना होता है।

विच्छू दंश पर—

विच्छू के डङ्क स्थान पर जरा लाल पोटाश को बुरक कर फिर उसके ऊपर से नीबू का सत्व २ चुटकी रखकर २-३ बून्द पानी टपका दें। पानी टपकते ही उस डंक के स्थान से धुवा निकल कर फदकने लगता है और विच्छू का दर्द तत्क्षण गायब हो जाता है। रोगी हँसी-खुशी अपने घर लौट जाता है।

सरसाम में—

सफेद घुंघची	१६ नग
शाही[2] की लदरी[3]	१ माशा
मुर्गा की पथरी[4]	१ माशा

(यह मुर्गा के पेट में होती है इससे मुर्गी खाना हजम करती हैं)

दरियाई नारियल	१ माशा

—इन चारों को वासी पानी में पीस कर ४-४ घण्टे के अन्तर से पिलादें। यह उस हालत में दी जाय जब कि सरसाम के रोगी बकझक करने लगते हैं तथा उठ कर भागने लगते हैं। इसकी उपर्युक्त मात्रा ४ खुराक की है ३ या ४ बार देते ही रोग शान्त होजाता है। इस प्रयोग को हमने सैकड़ों से अधिक रोगियों पर अनुभूत किया है।

माता के दुग्ध वृद्धि के लिए—

इसरौल[5]—इसरौल १ तोला गाय का ताजा दूध १ पाव को पीस-छान कर प्रातः सायं पीने से माता का टूटा हुआ दूध भी उतर आता है।

गठिया के दर्द के लिये—

धतूरे के बीजों का डेढ़आ[6] चुवाकर इसे गठिया पर मालिश करने से गठिया का दर्द चला जाता है जिन-जिन लोगों ने इसकी मालिश की है ५-७ वर्षों से वह दर्द नहीं उभड़ा और सुखपूर्वक चल फिर रहे हैं।

२-३—शाही लदरी—इसको सेही या सेहिया भी कहते हैं इसके सारे शरीर पर बड़े-बड़े कांटे होते हैं। इसका मुख सुअर के मुंह के आकार का होता है। जङ्गली हिंसक लोग इसके मांस को बड़े चाव से खाते हैं।

इसके पेट को चीरने पर जो आंते निकलती हैं उसी को लदरी कहते हैं। इन लम्बी आंतो के छोटे-छोटे टुकडे करके खूब गर्म पानी में धोकर धूप में सुखादें और रखदे। समय पर प्रयोग करें। यह लदरी शब्द ठेठ देहाती भाषा में लोग बोलते हैं और लीद, गोबर, मल के रहने की जगह को ही लदरी है।

४—मुर्गा की पथरी—इसको प्रत्येक मुर्गा मारने वाला जानता है वे लोग इसको खूब जानते हैं। यह कलेजे पर गोलाकार लटकी रहती है उसी में चारा इकट्ठा होता है। उस चारा के ऊपर मास रहता है मास और चारा के बीच में एक झिल्ली होती है उसी पर यह पथरी वाला भाग पतले चमडे के समान रहता है। लोग इसे छुड़ा कर रख लेते हैं। यह मुर्गा, मुर्गी दोनो में होता है।

५—इसरौल—दुग्धवृद्धिकर प्रयोग में इसको यूनानी वाले उसवा भी कहते हैं। इस नाम से सभी पंसारियो के यहा से प्राप्त हो जाता है। जङ्गली लोग इसे इसरौल ही कहते हैं। ईश्वरमूल, संजीवनी, नागपुष्पी, विषहरी, वकुल प्रिया, कटुपची अमृतबूटी आदि भी इसके नाम हैं शङ्कर निघण्टु में। हम केवल इसका प्रयोग दुग्ध-वर्द्धन हेतु ही करते है। किन्तु पहाड़ी लोग इसको विषमज्वर और सर्पविष पर भी काली मिर्च के साथ प्रयोग मे लाते है और प्रायः बहुत कुछ सफलता प्राप्त करते है। यह गुण बहुत कुछ इसके संस्कृत नामो से भी प्रकट होता है।

६—डेढ़ुवा—अन्तिम प्रयोग मे डेढ़ुआ से तात्पर्य धतूरे के बीजों का तैल निकालने से है। एक घड़ा मे धतूरे का बीज और उससे थोड़ा सा तेल निकलने वाला पदार्थ जैसे सरसो महुवा के बीज इसमे कोई एक वस्तु इन बीजो के साथ मिलादे ताकि इन पदार्थो के साथ बीज रहने से तैल आसानी

—शेषांश पृष्ठ ४७२ पर।

वैद्य रतीलाल गिरजाशंकर भट्ट *H. L. M. S*

श्री मालेश्वर आयुर्वेदिक औषधालय पो० लाडी (सौराष्ट्र)।

"भंडारिया सौराष्ट्र आपकी जन्मभूमि है। आपके प्रयोग पहिले भी धन्वन्तरि में प्रकाशित हुए हैं योग्य चिकित्सक एव जन-सेवक हैं। अपने प्रान्त मे ख्यातनामा वैद्य हैं। हमारे आग्रह पर आपने कुछ प्रयोग भेजे हैं जो अनुभूत हैं, लीजिए प्रयोग ये हैं।"

—सम्पादक।

नेत्र की लाली पर—

—जो लोग गरमी एवं भट्टी पर काम करने वाले हैं। जिनकी आखें लाल बनी ही रहती है। उनके लिए लाभकर सिद्ध प्रयोग है—

निम्ब पुष्प सूखे बारीक	२ तोला
बोरिक एसिड	१ तोले
जिंक ओक्साइड	१ तोला
लाल फिटकरी का फूला	½ तोला
नीलाथोथा	१॥ माशा
काला सुरमा बारीक पिसा	२ तोला
मुलहठी (यष्टी मधु) बारीक कपड़छन	१ तो.
केलेमीना पेपरेटा B. P	६ माशा
स्वर्ण गैरिक गाय के घी में शुद्ध	६ माशा
भीमसैनी कपूर	६ माशा
असली कपूर (जापानी)	१ तोला

—विशुद्ध मद्य १ पौंड के अन्दर सब वस्तुओ को खरल में डालकर कम से कम तीन घण्टे तक बराबर घोटकर सुखाकर साफ सूखी बोतल में भरकर रखलें और सुरमा की तरह सलाई से नेत्रों मे प्रयोग करे। नेत्रा के लिए अच्छा लाभकर है।

विशूचिका (हैजा) पर सफल सरता प्रयोग—

असली जापानी कपूर	१ तोला
काली मिर्च	४ तोला
असली हींग भुनी	२ तोला
लहसुन	८ तोला

—सब वस्तुओ को नीबू के रस मे घोटकर चना प्रमाण गोली बनावे। सुखाकर रख लेवें। पेट मे दर्द के अनुसार, उस रोगी की प्रकृति के अनुसार आधा-आधा घण्टा पर २ से ४ गोली तक दे। मैं इसको १० वर्षों से प्रयोग मे लारहा हूँ। वात और कफ के सभी दर्द दूर होते हैं। विशूचिका, अजीर्ण, दात की पीड़ा, सर्दी, जुकाम घाव या चोट से फटना, रक्त बहना, बिच्छू के काटने पर इसका प्रयोग करें।

दन्त पीड़ा तथा अन्य दर्दों पर—

टिंचर केम्फर (कपूर, अफीम, अल्कोहल)
लिक्विड एक्सट्रेक्ट तुलसी (तुलसी का अर्क)

—दोनो २-२ तोला

टिंचर केपसीसी (मिरच का अर्क)
,, बारवर्ग (अकरकरा का अर्क)
,, मिहर (हीरा बोल का अर्क)
,, केटच्यू (कत्था का अर्क)

—प्रत्येक १-१ तोला

,, जिंजर (सोंठ का तेज अर्क)	½ रतल
थाईमोल क्रिस्टल (अजमायन का फूल)	
मेंन्थल क्रिस्टल (पिपरमेंट फूल)	१।-१। तोला
टिंचर मस्क (कस्तूरी का अर्क)	५ तोला
असली केशर	५ तोला

विधि—केवल केशर को अलग पानी मे घोटलें, बाकी सब दवाऐ मिलाकर बडे कांच के जार में भरदे। बाद मे केशर डाल खूब हिलाकर

३ दिन मुख बन्द कर रखदें, बाद में फिल्टर करके बोतल में कार्क लगा कर रखलें।

मात्रा—बड़ों को ३० से ६० बूंद तक। बच्चों की आयु के अनुसार १० से ३० बूंद तक।

उपयोग—दांत के दर्द मे रुई की फुरेरी बनाकर रखे। सर्दी में इसकी मालिश करते हैं। औरतों को बच्चा होने के बाद दिया जाता है।

अर्श रोग पर अनुभव—

लाडी मे ६-१-५६ से आगे तीन माह मेरे पास सिपाही दादनमियां, जमालमियां आए और उन्होंने अपनी घर वाली को घर चल कर देखने को कहा। मैं उनके घर गया देखा, स्त्री की आयु करीब तीस वर्ष की होगी। हाल पूंछने से पता लगा कि एक वर्ष से चारपाई पर ही है। बवासीर से खूब रक्त गिरता है, सख्त कब्जियत है। ३ साल का पुराना दर्द है। शोध करने से पता लगा पेट मे वायु की गांठ है। रोगिणी की वात-पित्त की प्रकृति है। दवा चालू करने का निश्चय हुआ। योग—

जीरा	२० तोला
नमक (चालू सामर)	४० तोला
सागर मोटा (कंजा—करञ्ज) तवे पर भुना छिलका छोड़ उसकी मिंगी	४ तोला
स्वर्ण गैरिक शुद्ध	४ तोला
इन्द्रजौ भुना	२ तोला

—सबको कूट-पीस कपड़छन कर १४ दिन के लिए १४ पुड़िया बनाकर रोज एक पुड़िया गाय की ताजी छाछ के साथ लेने को कहा। रात को पलास पुष्प (केसु) १ तोला मे १ तोला खाड़ मिला कर ठडे पानी से लेने को बताया। पथ्य के लिए सख्त आदेश दिया--गाय का ताजा दही, छाछ, चावल, खिचड़ी के अलावा कुछ भी न लेना।

यह क्रम नौ दिन तक चला। नवे दिन अत्यन्त कब्जी हुई, मैंने एरण्ड स्नेह लेना बताया। रोगी ने परियाप्त मात्रा मे लिया पर कुछ नहीं हुआ। कई रतल तक पिया, मैंने एनीमा के लिए कहा वह तैयार नहीं हुई। तब दर्द बहुत बढ गया, अस्तु उसको अस्पताल मे ले गये, वहां एनीमा दिया काफी दस्त हुआ। उठने की शक्ति नहीं थीं। चारपाई पर बवासीर मे तीव्र जलन होने लगी सारी रात चैन नहीं मुश्किल से रात व्यतीत हुई, प्रातः ही उसका पति देखने गया। वह बोली मै यहा मर जाऊंगी, मुझे घर ले चलो। उसको घर ले आये और फिर मेरे पास आए और कहा कि आप बवासीर के जलन की चिकित्सा करें। मैंने उसके लिए एक मलहम बनाई जिसके लगाने से अत्यन्त शीतलता का अनुभव हुआ और जलन मिट गई। मलहम निम्नलिखित है।

सोना गेरु शुद्ध	१ तोला
माजूफल का चूर्ण	१ तोला
कटु निम्ब पत्र की भस्म	१ तोला
नीला थोथा	१॥ माशा
कपूर असली	३ माशा
लाल फिटकरी का फूला	२ माशा

—सबको बारीक पीसकर मिलाकर टिंचर ओपीआई (अफीम का अर्क) तीस बूंद डाल दिया। इस मलहम को लगाया- जलन बन्द हुई। ५-६ दिन मे मलहम लगाने से दो मस्से गिर पड़े एक बिल्कुल मृत दशा मे रहा। मलहम देना बन्द किया, पेट की गांठ भी मिट गई, रक्त गिरना बन्द हो गया। इसके बाद नीचे लिखा काढ़ा दो मास दिया तथा पथ्य से रखा।

चिरायता		५ तोला
धनियां		खरेटी (बरियाली)
मुनक्का	लाल चन्दन	नागरमोथा
निम्ब गिलोय	—प्रत्येक ३-३ तोला	
गुलाब के फूल		सुगन्धवाला
सौंठ		इन्द्रजौ

—शेषांश पृष्ठ ४७४ पर।

श्री रामेश्वर दयाल शर्मा वैद्य

साहित्य भूषण।
योगेश्वर औषधालय, रोहेली टोला, बरेली।
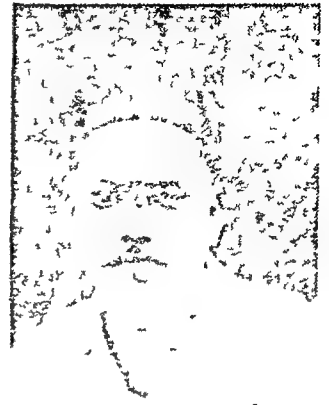
"आपने आयुर्वेद का ज्ञान अपने पिता श्री प० बाबूराम जी शर्मा से ही प्राप्त किया है। वे एक अनुभवी चिकित्सक हैं। आपकी चिकित्सा में जो योग अनुभव सिद्ध हैं उन्हीं मे से कुछ आपने धन्वन्तरि के लिये प्रेषित किए हैं।"

—सम्पादक।

पामा (खुजली खाज)—

पारा, गन्धक आमलासार
काली मिर्च, सिंदूर, जीरा श्वेत
जीरा काला —सब समान भाग
तूतिया $\frac{1}{3}$ भाग

विधि—पारा, गन्धक की कज्जली करके शेष द्रव्य अलग-अलग कूट कपड़छान करके खरल में डाल कर सबके बराबर गोघृत मिलाकर एक दिन खरल करके मलहम सा बनालें और शरीर पर मर्दन करें। यदि शीतऋतु हो तो २ घंटा धूप में बैठें, ग्रीष्म ऋतु में आवश्यकता नहीं, तीन घण्टा पश्चात् भैंस का गोबर मलकर जाड़ों में गर्म और गर्मियों में ठंडे पानी से स्नान करे। ४-५ दिन मे वर्षों की खुजली दूर हो जावेगी।

उष्णवात (सुजाक)—

चन्दन का तैल, बड़ी इलायची
माजूफल, शीतलचीनी
वंशलोचन —प्रत्येक १-१ तोला

—सबको महीन पीसकर ८ पुड़िया बनालें। रात को एक छटांक मिश्री का शर्बत बनाकर रख दे और प्रात काल एक पुड़िया उसी बासी शर्बत से खिलावे।

गुण—सुजाक, कुर्री को अधिक गुणकारी है। एक दो दिन में ही खून पीव बन्द हो जाता है।

प्रमेह नाशक—

समुद्रफेन, इन्द्रजौ मीठा
समुद्रफल, प्याज के बीज
कौंच के बीज, अकरकरा
रेवन्दचीनी, उटङ्गन के बीज
—प्रत्येक १०-१० माशा

—इन सबको लेकर कूट कपड़छन करके २१ पुड़िया बनाले और एक मुर्गी का अंडा लेकर उसकी सफेदी निकालकर फिर उसमे एक पुड़िया डाल कर उसका मुंह बन्द करके भूभल में दबा दे और १५ मिनट के बाद निकाल कर खिलावे, ऊपर से गौदूध १ पाव पिलावे। इसी प्रकार एक पुड़िया नित्य २१ दिन तक दिया करे। ३ सप्ताह में वीर्य के सारे रोग दूर हो जावेंगे।

ताऊन (प्लेग) नाशक—

जदवार उत्तम ५ माशा
जहरमोहरा खताई ७ माशा

नरकचूमर	७ माशा
कहरवा समई	६ माशा
दरोनज अकरबी	५ माशा
गिलेअरमनी	६ माशा
श्वेत चन्दन	५ माशा
केशर काशमीरी	१ माशा
कागजी नींबू के बीज	६ माशा

—सबको अर्क वेदमुश्क १० तोला में १ दिन खरल करके मटर प्रमाण वटी बनालें।

मात्रा—१ वटी प्रात काल, १ वटी दोपहर, १ वटी सायंकाल।

अनुपान - अर्क गाजवां आधी छटांक, अर्क नीलोफर आधी छटांक के साथ दे।

गुण—इससे ज्वर १ दिन म ही उतर जावेगा। यदि प्यास अधिक हो तो अर्क नीलोफर पिलावे।

ताऊन की गिल्टी के लिए लेप—

बाबूना	१ तोला
घृतकुमारी रस	२ तोला
सुहागा	६ माशा
सोड़ा	६ माशा
सोये के बीज	६ माशा
निरविसी	४ माशा
काफूर	३ माशा

विधि—सब औषधियों को खरल मे डालकर घृत कुमारी रस से खरल करें।

सेवन विधि—गिल्टी पर दिन मे दो बार लेप करें।

गुण—इससे गिल्टी बैठ जावेगी या फूटकर मवाद निकल जावेगा।

दन्त मञ्जन—

नीम की छाल का कोयला	१ पाव
फिटकरी सफेद का फूला	६ माशा
अजवायन का सत्त	३ माशा
सेधानमक	२॥ तोला
तूतिया भुना हुआ	१½ माशा
कुचला जला हुआ	२ तोला
पीपल	६ माशा
मस्तङ्गी	१ तोला
कपूर	३ माशा
इलायची दाना	६ माशा
सेलखरी	१ तोला
ऐसिड कार्बोलिक	६ रत्ती

विधि—कपूर, अजवायन का सत्त, कार्बोलिक ऐसिड एकत्र कर ले। जिससे यह गलकर तैल समान हो जावेगा और शेष सब औषधियां खरल में डालकर महीन करें और महीन होने पर कपूर आदि को मिलाकर शीशी में कार्क लगा कर रख दे।

गुण—इसके सेवन से दांतो में पानी लगना, टीस होना, पीव, खून आना, पायरिया आदि दांतों और मसूड़ो के सब रोग नष्ट होते हैं।

गठिया नाशक तैल—

तिल का तैल	२ पाव
तैल अरण्डी	१ पाव
कपूर	६ माशा
सिंगिया विष	३ माशा
अर्क पत्र	१२ नग
थूहड़ (सेहुड) का डंठल ताजा	१ पाव
भिलावा	१ छटांक

विधि—दोनो तैलो को आग पर गर्म करें और भिलावा और सिंगिया, सेहुड़ (डंडा थूहड़) कुचल कर उसी मे जला ले, तथा अर्क पत्र भी जलाले। फिर तैल छान कर उसमे कपूर मिला दे। कुछ ठंडा हो जाने पर १० तोला तारपीन का तैल उसमें मिला दें और १ कार्क वाली बोतल मे भर कर ४ दिन तक धूप मे रक्खे। ४ दिन बाद रोगी के बदन पर मर्दन करें और पत्ते लहसोड़ा, बरगद (बड़), अरण्डी केपत्ते सेक कर बांधे। सब प्रकार के वायु विकार नष्ट होते है।

वैद्य शास्त्री श्री पं. गणेशदत्त पाण्डेय

आयुर्वेद भास्कर

श्री गणेश आयुर्विज्ञान शाला, ग्वालटोली, कानपुर।

"ग्राम मसनामी जिला उन्नाव आपकी जन्मस्थली है। अपने पिता श्री पं अवध बिहारी जी पाण्डेय द्वारा आपका लालन-पालन हुआ सन् १९३९ से आप निरन्तर चिकित्सा व्यवसाय कर रहे हैं। आयु के ४० वर्ष व्यतीत कर चुके हैं। पाठक आपके इतने ही परिचय से सन्तोष करेंगे।"

—सम्पादक।

खूनी बवासीर की दवा—

चाकसू	१ तोला
वंशलोचन	६ माशा
इलायची	६ माशा
मूली के बीज	६ माशा
तंतड़ीक छाल	५ तोला
कत्था	६ माशा
रसौत	६ माशा

विधि—उपरोक्त सब चीजों को कूट पीस कर कपड़ छान चूर्ण तैयार करले फिर पानी के सहयोग से जङ्गली बेर के बराबर गोलिया बनालें।

अनुपान—जल के साथ १ गोली प्रतिदिन खाने से खूनी बवासीर शीघ्र नष्ट हो जाती है। तंतड़ीक इमली को कहते हैं।

खांसी पर क्वाथ—

लसोडे के पत्ते	७ नग
काली मिर्च	७ नग
काला मुनक्का	७ नग
मिश्री	१ तोला

विधि—उपरोक्त सब वस्तुओं को कुचल कर आधा सेर जल मे पकावे। शेष १ छटाक रहने पर कुछ गरम ही रहने पर छान कर प्रातः साय सेवन करे। यह १ मात्रा है। इसके सेवन से सूखा कफ ढीला होकर निकल जाता है।

सुजाक की दवा—

गुर्च (गिलोय) का सत् शिलाजीत का सत्
बड़ी इलायची के दाने बीजबन्द
कहरवाशमई शीतलचीनी
गेरू —प्रत्येक सम भाग

—सबको लेकर चूर्ण बनालें।

अनुपान—बकरी के दूध के साथ ७ माशा चूर्ण प्रात.काल सेवन करे तो सुजाक शीघ्र ठीक हो जायेगा।

दद्रु हर—

सुपारी का कोयला	५ तोला
नैनियां गधक	२॥ तोला
मिट्टी का तैल	१५ तोले

—तीनो वस्तुओ को मल्हम की तरह घोटकर शीशी में रखले।

विधि—सोते समय दाद को तांबे के पैसे से खुजलाकर मल्हम लगादे। ध्यान रहे दवा कुछ जलन पैदा करती है। परन्तु तीन चार दिन दवा लगाने मे पपड़ियां उखड़ने लगेगी और दाद शीघ्र नष्ट हो जायगा।

तिल्ली की दवा—

नौसादर	भुना सुहागा
कल्मी शोरा	काली मिर्च

—प्रत्येक समानभाग

—इन सबको लेकर पीस छान कर चूर्ण बनालें।

विधि—रोज प्रातःकाल ग्वारपाठे के ३ माशा टुकड़े को चूर्ण में लपेट कर निगल जाय। इसके सेवन से पेट की बहुत पुरानी सूजन और बहुत बड़ी ताप तिल्ली शीघ्र ही गलकर पानी हो जाती है।

अजीर्ण नाशक वटी—

शुद्ध आंवलासार गन्धक	५ तोला
सेधानमक	१। तोला
काली मिर्च	१७ तोला
कागजी नींबू का रस	१ पाव

विधि—तीनों वस्तुओं को नींबू के रस में ४ दिन घोटे। जब गोली बनने योग्य हो जाय तब मटर के बराबर गोली बनाकर काठ या मिट्टी के पात्र में सुखाले।

गुण—यह गोली अरुचि, अजीर्ण, मन्दाग्नि, साधारण उदर शूल को नष्ट करती है। मूत्रदोष (पूयमेह सुजाक) वालों के मूत्रोत्सर्ग के समय के कष्ट को सेवन करते रहने से दूर कर देती है।

वात-वेदना हर मलहम—

गुलरोगन	महुए का तैल
नारियल का तैल	गाय का घी
मोम	बिरोजा

—प्रत्येक १-१ तोला

कपूर	८ आना भर
पिपरमेंट	८ आना भर

विधि—पहले कपूर और पिपरमेंट १ शीशी में डालकर कार्क बन्द करदें। जब दोनों मिलकर द्रव रूप में हो जांय तब दो-चार बार अच्छी तरह शीशी को हिलाकर फिर गुलरोगन से बिरोजे तक की छः वस्तुओं को १ छोटी कड़ाही में रख आग पर गरम करें। जब सभी मिलकर एक दिल हो जांय, कपड़े से छानलें, गरम ही हालत में पिपरमेंट और कपूर का द्रव डालकर अच्छी तरह मिलादें। ढक्कनदार शीशी में भरकर रखदें, मलहम तैयार है।

गुण—इसके व्यवहार से शिर तथा सम्पूर्ण शरीर की वातज वेदना शान्त हो जाती है।

:: पृष्ठ ४६६ का शेषांश ::

से टपक पड़ेगा। घड़ा में बीज भरदे फिर ढक्कन में बीचों-बीच छोटा सूराख करके उस ढकनी से उस घड़ा का मुंह बन्द करके आटा या मिट्टी से मुंह को खूब लहेस दे। ढक्कन में किये गए छिद्र में सींकों के टुकड़ लगादे जिससे वह छिद्र बन्द हो जायेगा और सीकों के सहारे तैल टपक जायगा। अब जमीन में एक छोटा सा लोटा रखने भर गडढा खोदकर उसमें लोटा या गिलास रखदें ऊपर से गगरी औंधादे और गगरी के ऊपर चारों ओर कंडा की आग लगादे। इस आग की गर्मी से घड़े के बीज जलेंगे और तैल चू-चू कर नीचे की ओर जाकर लोटा या गिलास में काला रङ्ग का इकट्ठा होगा, यही डेढ़ू वा है।

श्री हरिदयाल जी पाण्डेय

किरीतपुर पो० रांका जिला द्रुग।

"आपको आयुर्वेदिक सरल योगो पर विश्वास है ताकि गरीब जनता लाभ उठ सके, वैसे आप एलोपैथिक औषधियो को भी वरतते हैं। आप सार्वजनिक कार्यकर्त्ता है। कई सस्थाओ के सदस्य व अध्यक्ष हैं। आपका कांग्रेस से अधिक सम्बन्ध हैं। आप धार्मिक कार्यो मे भी भाग लेते हैं। हम पाठको के कर कमलो में वैद्य जी के ६ योग प्रस्तुत कर रहे हैं।" —सम्पादक।

विलम्ब प्रसव में—

१—एक ही हाथ मे जलस्थान से यानी नदी, कूप, तलाव से जल लावे और १ तोला जल मे ठुमरी को डाल कर निकाल लें और पानी को पिलादे, ठुमरी को मस्तक में रख देवे, बाद प्रसव के ठुमरी को रख लेवें। यह ठुमरी हिंगलाज (पूर्वी-पाकिस्तान) में मिलता है और जल चढ़ाने वाले पण्डा लोग रखे रहते हैं जो जल चढ़ाने वाले अपने यजमानों को देते हैं।

२—६ माशा गाय का गोबर उस पर (खांड चढ़ाकर) गरम पानी से निगलवा दें। तुरन्त प्रसव होगा।

३—कपास का पेड़ जो एक साल का पुराना हो उसको सूर्यग्रहण के समय जब कि ग्रहण क्षय होने लगे उखाड़ कर रखलें, इस की जड़ को घिसकर एक चम्मच पानी में पिलावे और थोड़ा पानी सिर पर डालने से तत्काल बच्चा बाहर आजायगा।

मां के दुग्ध न आने पर—

सौंफ सितावर शक्कर

—तीनों बराबर-बराबर लेकर पीस कपड़छान कर सुबह शाम ६-६ माशा गाय के गरम दूध के साथ लेने से मां के स्तनों मे दूध उतर आयेगा।

काली खांसी में—

१—गावजुवां ६ माशा रात को आध पाव पानी में भिगो दें। सुबह मसल कर छान ले २ तोला मिश्री मिलाकर पीवे।

२—काकड़ासिंगी अतीस
नागरमोथा —प्रत्येक २-२ तोला

—इनको कपड़छान कर चूर्ण कर मधु के साथ ४ रत्ती प्रातः सायं दे।

गुण—ज्वर, कास, वमन नाशक है।

सर्व खांसी पर—

काकड़ा सिंगी	२ माशा
मुलहठी	२ माशा
काली मिर्च	१ माशा
कत्था	६ माशा
बबूल का गोंद भुना	२ माशा
अफीम	१ माशा

—सबको कूट पीस कर बबूल के रस में चना समान गोली बनावे। बच्चों को १-१ गोली दें।

वमन में—

राई	२ तोला
कपूर	६ माशा

—दोनो को जल मे पीस कर कागज पर लेप कर आमाशय के स्थान पर घी चुपड़ कर लगादें। जलन होने पर लेप उतार दें तथा वहां पर घी लगादें।

—नमक, काली मिर्च पीस कर कागजी नीबू पर छिड़क कर उसका (नीम्बू का) अर्क पीवें।

अर्श में—

—४ तोला काले तिल और २ तोला मक्खन प्रात: २१ दिन सेवन करने से सब प्रकार के मस्से नष्ट होते है।

२—गिलोय सत्व १-१ माशा मक्खन के साथ प्रातः सायं सेवन करने से वेदनायुक्त रक्तार्श नष्ट होते हैं।

आंख के रोग में—

घीकुवार का रस	१॥ तोला
नीम के पत्ते का रस	१ तोला
अफीम	२ रत्ती
फिटकिरी	४ रत्ती

—इन सबको मिला कर चार-चार बूंद प्रात. सायं लगातार लाभ होने तक आंख मे डाले।

गुण—आंख दुःखना, आंख आना, फूली, रोहे, पानी गिरना इत्यादि में लाभकर है।

:: पृष्ठ ४६८ का शेषांश ::

सनायपत्ती पीपरामूल गांठ

—प्रत्येक २-२ तोला

—ये काढ़ा कूटकर जौ जैसा कर लें। इसकी तीस मात्राएं बनाकर, एक खुराक प्रतिदिन देवें। काढ़े में पानी की मात्रा पाव या सवा पाव लेकर काढ़ा बनावे। एक छटांक शेष रहने पर उतार छान कर ऋतु अनुसार उष्ण या शीतल पिलावें। वह रोगिणी इसके पीने से दर्द से मुक्त हो गई घर का सब काम करती है आज तक भली, चङ्गी है।

:: पृष्ठ ४७६ का शेषांश ::

वातज प्रकृति की स्त्रयो में जिन्हें मासिक धर्म में कष्ट हो, कटि शूल, कुक्षिशूल आदि में कुछ दिन देने से विशेष लाभ दिखाती है।

मृतवत्सा (अठराह) के लिए—

(ब्रह्मी बूटी)

शिवलिंगी	१ तोला
मुनक्का	१ तोला
काली मिर्च	३ माशे

—इन तीनो को कूटलें और २-२ रत्ती की गोलियां बनाले।

गर्भ स्थिति के पश्चात् नित्य प्रातः सायं २-२ गोलियां गरम दूध में ४-६ माशे फलघृत मिला कर निरन्तर ३ मास तक दें। अवश्य लाभ होता है।

पुंसवन के लिए—

पिप्पल की दाढ़ी (जटा) का चूर्ण	३ माशे
भंगा बीज चूर्ण (मोटी)	२ दाने
मयूर चन्द्रिका काट कर	१ नग

—इनको मिलाले और इसकी तीन मात्रा बनालें बछड़े वाली गाय के दूध से ३ दिन एक मात्रा प्रातः निरन्न कोष्ठ दे।

गुण—भगवान् की कृपा से पुत्र होगा।

स्वामी श्री शिवानन्द जी महाराज

श्री गीता मंदिर धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय

गीता मन्दिर रोड, अहमदाबाद।
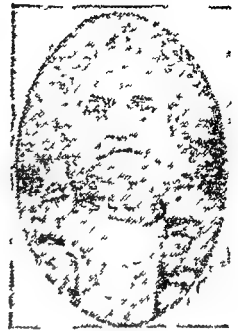
"श्री स्वामी जी का परिचय इतना ही पर्याप्त है कि आप विद्वान, आयुर्वेद के ज्ञाता तथा एक सफल चिकित्सक एवं आयुर्वेद के प्रसारक हैं। आयुर्वेदिक औषधालय के प्रधान हैं जहां सहस्त्रो रोगियो का रोगों से त्राण करते हैं। आपकी इच्छा के विरुद्ध ही यह परिचय दे रहे हैं। दोनो ही योग आपके अनुभूत और विलक्षण हैं। पाठक लाभ उठावें।"

—सम्पादक।

कैंसर नाशक—

द्रोणपुष्पी मुलहठी कत्था
गोंदी की छाल शीतलचीनी
चणो ढीकापन (गुंजा चिरमिटी का पत्र)
खैरसार ब्रह्मीदंडी शङ्खपुष्पी
वरुणा (वरुण) छाल नागरमोथा
कांशमूल पलास पापड़ा
विजयसार बबूल के फूल
जवासा पोस्त के डोडा
बेर का मूल चौक (सत्यानाशी
स्वर्ण क्षीरी) मूल बावची (गौ मूत्र के-द्वारा शुद्ध)
सुवर्ण गैरिका (सोना गेरू) गुरुच
काली जीरी कुशामूल

—प्रत्येक ५-५ तोला

त्रिफला १० तो.

—इनको कूटछान कर ४१ पुड़िया बनाकर १ पुड़िया २॥ सेर जल में २४ घण्टे भिगोकर ओटावे। पाचवां भाग शेष रहे तब उतार कर ठंडा होने के बाद छानकर ५ तोला शहद मिलाकर दिन से ३ बार प्रात दोपहर और सायं को पिलावें।

पथ्य—गेहूँ, चना की रोटी, घी या दूध में दलिया बनाकर देना या साबूदाने की खीर बनाकर खिलाना, मूंग का पानी देना और फलों में केला, चीकू या अनार देना चाहिए और सब अपथ्य है।

चेचक चिकित्सा—

आजतक शीतला चेचक के लिए बहुत प्रयोग चल रहे है, परन्तु इन प्रयोगों से शीतला निकलना बन्द नहीं होता है। आयुर्वेद का मुख्य प्रयोग यह है—

शुद्ध रसौत	५ तोला
पीपल की डाढ़ी (जटा)	२ तोला
पारस पीपल का फल	१ तोला
ऊंटकटेरा का मूल	१ तोला
मुक्ता पिष्टि	३ माशा
सुवर्ण भस्म	१॥ माशा
सुवर्ण क्षीरी	६ माशा
खस	६ माशा

—ऊपर की वस्तुओ को कूट कपड़छान कर गौ-दुग्ध मे घोटकर ४२ गोलियां बनाले, ७ मास की गर्भवती स्त्री को गौदुग्ध के साथ खिलावे। प्रात सायं २१ दिन का विधान है। गौदुग्ध मिश्री, गेहू, चावल, घी ५ वस्तु २१ दिन तक खाने को देने से उसके बच्चे को शीतला नहीं निकलती है।

आयुर्वेदाचार्य निशिकान्त बी० ए

ए० एल० आई० एम० (मद्रास) वैद्य वाचस्पति, बटाला (पंजाब)
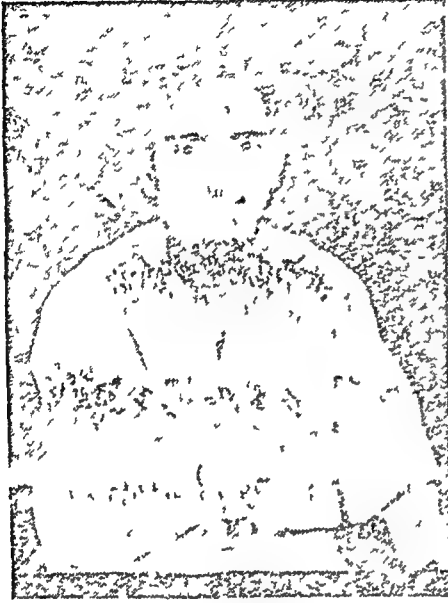
"आपका जन्म १५ फरवरी १६१५ को श्री पूज्य प० गिरिधारी लाल जी शौनक के यहा लाहौर (पाकिस्तान) मे हुआ। योग्यता—बी ए प्रभाकर, आयुर्वेद आचार्य "विद्यापीठ", वैद्य वाचस्पति (दयानन्द आयुर्वेद महाविद्यालय लाहौर) तथा ए एल आई एम (राजकीय भारतीय चिकित्सा महाविद्यालय, मद्रास) से हैं। एक वर्ष तक बावा प्रद्युम्नसिह धर्मार्थ औषधालय में सेवा करने के पश्चात गुरुकुल कागडी आयुर्वेद महाविद्यालय मे १६४६ से १६५१ तक अध्यापन कार्य किया और उसके पाश्चात् बटला मे स्वतंत्र चिकित्सा कार्य आरम्भ कर दिया। बटाला मे आयुर्वेद विद्यापीठ की परीक्षाओ के लिए नि शुल्क विद्यार्थियों को पढाकर उन्हे सफल चिकित्सक बनाया और वैद्य मण्डल के प्रधान पद पर कई वर्ष तक सेवा की हे।" —सम्पादक।

शुष्क कास में—

(नवसादरादि चूर्ण)

नवसादर यवक्षार कालानमक
—तीनो समभाग
गैरिक अर्द्ध भाग

—इनको कूटकर चूर्ण बना कर रखें।

मात्रा—१ से २ माशा चूर्ण गरम जल से दिन में ३-४ वार दे।

गुण—श्लेष्मा को पतला करके बाहर निकालने में सहायता देकर लाभ करता है।

बहते प्रतिश्याय और कफज कास में—

(कनक वटी)

कनकबीज शुण्ठी खुरासानी अजवायन
—तीनों समभाग

—इनको लेकर मधु के योग से २-२ रत्ती की गोलियां बनाले।

मात्रा—१-२ गोलियां दिन मे ३-४ वार गरम जल से देवें।

विषतिन्दुक वटी—

विषमुष्टि चूर्ण एलुआ
हिंगु (घृत भर्जित) कसीस
टंकण शुद्ध गुग्गुल
—सम भाग

—गुग्गुल को ऐरण्ड स्नेह से कूट कर पतला कर शेष सभी वस्तुओ को सूक्ष्म चूर्ण इसमे मिलाते जांय। सब मिल जाने पर ४-४ रत्ती की गोलियां बनाले।

गुण—यह गोलियां कोष्ठ-बद्धता, यकृत-विकार आदि से उत्पन्न हुए पाण्डु, वात रोगो आदि मे विशेष लाभप्रद है।

—शेषांश पृष्ठ ४७४ पर।

डा० कलीरदत्त शास्त्री आयुर्वेदाचार्य B. I. M S.

विद्यारत्न, विशारद

ग्राम प्रहलादपुर पो० गोवर्धनपुर (मुजफ्फर नगर)

'श्री प. दीवानचन्द जी वैद्यराज के पुत्र हैं। सर्व प्रथम आपने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे व्याकरण मध्यमा तथा संस्कृत शिक्षा प्राप्त करके विद्यारत्न की पदवी प्राप्त की है। तत्पश्चात् ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालेज हरिद्वार मे ५ वर्ष का B. I. M. S. का कोर्स १६५७ में पूरा किया है। साथ ही साथ बनारस की 'साहित्य शास्त्री' व साहित्य सम्मेलन का आयुर्वेद विषय लेकर 'विशारद' परीक्षा उत्तीर्ण की है और सन् ५२ से अपने घर पर ही चिकित्सा कार्य प्रारम्भ कर रक्खा है और इस बीच अच्छा अनुभव भी प्राप्त कर लिया है। निम्नलिखित प्रयोग आपके अनेक वार के अनुभूत हैं तथा आपके पूज्यपाद पिता जी द्वारा प्रयुक्त होते आ रहे हैं।"

—सम्पादक।

उपदंश व उष्णवात -

के उपद्रवजन्य आमवात (संधिशोथ) पर—

शुद्ध हिंगुल (निम्बू स्वरस भावित)	१ तोला
शु. गंधक आमलासार (दुग्ध घृत शोधित)	१ तोला
रस कपूर (आटे के गोले मे रख-कर स्विन्न हुआ)	१ तोला
शीतलचीनी	१ तोला
आमला चूर्ण	आधा सेर

निर्माण विधि—सर्व प्रथम रसकपूर को आटे के एक गोले मे रख कर कुछ देर भूभल मे दाव दे। जब आटा ऊपर से कठोर हो जाय तब उसे निकाल कर रसकपूर की डली जो स्विन्न होगई हो खरल करले। पुन उसमे हिंगुल डाल कर खरल करें और फिर गंधक शीतलचीनी और पुनः आमला चूर्ण जो कपड़छन किया हो मिला कर खूब १ दिन तक खरल करके शीशी मे रखलें।

मात्रा—६-६ माशे प्रातः सायं ताजे जल से सात दिन तक।

पथ्य में—केवल दूध चाहे जितना लें। ५ सेर तक एक दिन मे ले सकते हैं। भोजन के समय उसी मीठे किये दूध के साथ ७ दिन तक केवल चावल या फुलका कोई एक वस्तु ले। एक दिन चावल और एक दिन फुलका ऐसा न करें। औषधि सेवन काल में नमक वर्ज्य है।

गुण—यह औषधि केवल सात दिन तक ही खानी है अर्थात् ७ तोला की केवल १४ पुड़िया सेवन करने से भयङ्कर से भयङ्कर गठिया, आमवात वातव्याधि जो कि उपदंश या उष्णवात से सम्बधित हो नष्ट हो जाती है। इस औषधि से ऐसे अनेक रोगी ठीक किये गये है जो ऐलोपैथिक के अनेक इन्जेक्शन तथा पेटेन्ट दवायें लेने पर भी ठीक नहीं हो पाये थे।

सूचना—यदि सम्यक्तया पथ्य-पालनपूर्वक ७ दिन औषधि सेवन से भी रोग में कुछ कमी रह जावे तो ७ दिन बीच मे खाली छोड़ कर पुनः ७ दिन का एक कोर्स लेना चाहिये।

ग्रहणी व संग्रहणी पर—

कर्पूर रस	१ तोला
मोचरस	१ तोला

—शेषांश पृष्ठ ४७६ पर।

श्री वैद्य बाबा लक्ष्मणदास महन्त कबीरपंथी,

आयुर्वेद विशारद

कबीर संस्थान धर्मार्थ दवाखाना मु० पो० दानापुर (बरार)

"उक्त कबीर संस्थान मे आपसे पूर्व महंत श्री स्वामी १०८ श्री महन्त नारायणदास बावा साहेब आयुर्वेदाचार्य अपनी अनुभवपूर्ण सफल चिकित्सा द्वारा जनता का बड़ा उपकार करते थे। तथा आपकी ख्याति इस क्षेत्र मे पर्याप्त व्याप्त थी सन् ६२६ से आपको महन्त बनाया गया तथा उक्त दवाखाने का कार्य-भार भी आपके कधो पर आया। आपने इस उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य को सुचारु रूपेण निभाया और सफल चिकित्सा हेतु आपको अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियो से प्रमाण पत्र प्राप्त हुए हैं। आशा है आपके निम्न प्रयोग सफल प्रमाणित होगे।"

—सम्पादक।

उपदंश विध्वंस वटी—

उपदंश (सिफिलीस) पर अनुभूत प्रयोग

शुद्ध पारा	लौंग	कालीमिर्च
अकरकरा		वाय विडङ्ग
अजवाईन		रूमा मस्तङ्गी

—प्रत्येक १-१ तोला

पुराना गुड़	४ तोला
भल्लातक (भिलावा)	४० नग

निर्माण विधि—पारा, गुड, भिलावा छोड़कर बाकी सब वस्तुऐ कूट कपड़छान करले। अब भिलावे को ४-४ टुकड़े काटकर कलई के बर्तन (भगवना) में रख दें। उस बर्तन मे आधा सेर जल डाल कर चूल्हे पर चढ़ादे और नीचे अग्नि जलावे। जब उफनने लग जाय भिलावा का सारा तैल जल के ऊपर गाढ़ा सा तैरने लगता है। जब जल के ऊपर जमा हो जाय उस बर्तन को नीचे उतार लें। ठंडा हुये बाद तैरते हुए सार को जल से अलग अर्थात् चम्मच से पत्थर के खरल मे निकाल ले अब पारा और गुड़ दोनो उसी खरल मे डालकर मर्दन करें। उसके पश्चात् कूटी पीसी हुई दवा खरल मे डालकर घोटाई कर ले। जब गोली बनने योग्य हो जाय तब १-१ माशे की गोली बांधकर शीशी में रखले।

मात्रा—१ या २ गोली।

सेवन विधि—गोली फोड़कर फांक लें, ऊपर से ताजा जल ले।

अवधि—७ दिन, तृतियावस्था वाले को अवधि (दिन) विशेष लगेगा।

पथ्य—दूध, भात।

समय—प्रातः, मध्याह्न, सायं।

गुण—उपदंश, प्रथमावस्था, द्वितीयावस्था अगर तृतीयावस्था के क्यो न हों, जड़मूल से नष्ट करने में श्रेष्ठ दवा है। ऐलोपैथी इन्जेक्शन, पेनसिलीन, सलफार्सनेल, निऊसलभर्सन और गोली कैलोमेल कंपोड, हैडार्जिराय आदि सेवन करने से गुण जल्द प्रगट होते हैं किन्तु उपदंश का जहर शरीर में विद्यमान रहता है। इस उपदंश वटी के सेवन से संधि-शोथ, अस्थि-शोथ संधिशूल वगैरः नष्ट होते हैं इसमे सन्देह नहीं है।

मलेरिया पर—

संस्कृत मे—प्राजक, पारिजातक।

मराठी मे—पारिजातक।

निर्माण विधि—पारिजातक झाड के हरे पत्ते तोडकर उस पर कीड़ा, जाला वगैरः साफ करके, छाया मे सुखा लेना। सूख जाने के बाद उन पत्तो

—शेषांश पृष्ठ ४७६ पर।

को महीन (बारीक) चूर्ण कर डाले। रेसा फेंक दे।

उक्त पारिजातक चूर्ण	१० तोला
काली मिर्च	४ तोला
स्वर्ण गेरू	२॥ तोला

—सब वस्तुएं मिलाकर खरल करे और शीशी में रख ले।

गुण—यह चूर्ण ४ से ८ रत्ती देने से मलेरिया ज्वर वाले रोगी को लाभ होता है और अपाय नहीं करता। तीन-चार दिन में मलेरिया ज्वर से रोगी मुक्त हो जाता है।

मात्रा—४ से ८ रत्ती तक। बालकों को आयु के अनुसार कम मात्रा में दे।

अनुपान—जल के साथ।

समय—प्रातः, मध्याह्न, सायं।

अवधि—तीन-चार दिन।

नोट—अगर गोली बनाना हो तो वही मिला हुआ चूर्ण को पत्थर के खरल में डालकर बबूल के गोंद का जल करके खरल मे डालकर घोटाई करना। जब गोली बनने योग्य हो जाय, ४ से ८ रत्ती की गोली बनाना और छाया में सुखा-कर शीशी में भर देना।

:: पृष्ठ ४७७ का शेषांश] ::

लशुनादि वटी	१ तोला
रामबाण रस	१ तोला

—चारों को बारीक पीस कर १-१ माशे की पुड़िया दिन में तीन बार दे गर्म पानी से दे। पहिले ही दिन रोगी का अपने ऊपर विश्वास हो जाता है। २१ दिन सेवन से रोग समूल नष्ट होजाता है।

पथ्य—मट्ठा इच्छानुसार पीवें पर अम्ल नहीं होना चाहिए। भोजन में मूंग की दाल की पतली खिचड़ी ही लें।

सर्वज्वर हर योग—

शुद्ध गोदन्ती हरताल भस्म	१ तोला
विषाण भस्म	१ तोला
एस्पिरीन Acityl salicylic acid	१ तोला

विधि—तीनों को बारीक पीस कर शीशी में रखले।

मात्रा—४-४ रत्ती की तीन पुड़ियां १ दिन में। गर्म पानी या चाय से।

गुण—किसी भी प्रकार का ज्वर हो स्वेद आकर बेचैनी, पीड़ा, सिर दर्द आदि एक दम दूर होते है और इस योग से हृदय पर कोई कुप्रभाव नहीं होता। यदि मोतीझरा में भी इसे दें तो दाने बाहर आकर बेचैनी कम होजाती है।
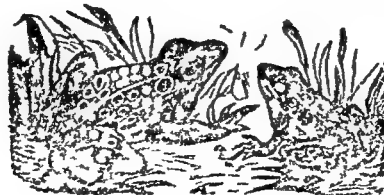
श्री वैद्य ईश्वरीदत्त सनाढ्य D. I M S
ईश्वार्ज-आयुर्वेदिक औषधालय
वसेड़ी (राजस्थान)

"श्री वैद्य जी का जन्म-स्थान ग्राम रूपसपुर तहसील बाड़ी (धौलपुर) है। संस्कृत मध्यमा १६३६ में उत्तीर्ण कर ललितहरि आयुर्वेद कालेज पीलीभीत से वैद्यराज की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा पुनः अध्ययन कर १६४३ में डी आई एम एस की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात् राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय वसेडी मे आपकी नियुक्ति हुई, अन्य कई औषधालयो में चिकित्सक नियुक्त हुए, वर्तमान में आप पुनः वसेड़ी में ही प्रधान वैद्य के पद पर कार्य कर रहे हैं। आप अनुभवी सफल चिकित्सक हैं।"

—सम्पादक।

आन्त्रिक ज्वर पर—

कस्तूरी भैरव रस	१ रत्ती
शृंग भस्म	१ रत्ती

— यह १ मात्रा है। ऐसी २ मात्रा प्रतिदिन दे।

अनुपान—खूबकला १ तोला दाख (मुनक्का) नग १४ को कूटकर दश तोले पानी में क्वाथ करें, २॥ तोले शेष रहने पर छानकर उपरोक्त औषधियो के अनुपान मे पिलावे।

गुण—बिना किसी उपद्रव के निश्चित अवधि से पूर्व ही पिडिका-युक्त आन्त्रिक ज्वर शान्त हो जायगा।

कभी-कभी पिडिकाऐ न निकलने से घोर उपद्रव पैदा हो जाते हैं। उस अवस्था मे उपरोक्त प्रयोग से शीघ्र ही पिडिकागम होकर शीघ्र ज्वर शान्त हो जाता है। कभी-कभी आन्त्रिक ज्वर का मिथ्या भ्रम हो जाता है, ऐसी अवस्था मे उपरोक्त प्रयोग से ज्वरादि शान्त हो जाते है, या पिडिकाए निकल कर रोग को स्पष्ट कर देती है।

इस प्रयोग से उपशयानुपशय परीक्षा भी होती है जैसे-आन्त्रिक ज्वर (Typhoid) के क्रमानुसार ज्वरादि लक्षण तथा पिडिकाओं का क्रम ज्ञात न हुआ हो और आन्त्रिक ज्वर की सम्भावना हो तो उपरोक्त प्रयोग से शीघ्र ही लाभ होता है।

बच्चो के ज्वर कास अतिसार पर भी जब कई दिन से ज्वर आ रहा हो, कास हो, आन्त्रिक ज्वर का मिथ्या भ्रम हो तो २-३ दिन में ही शीघ्र ज्वर शान्त हो जाता है। बालकों की अवस्थानुसार मात्रा कम कर देनी चाहिए।

बालशोष नाशक—

प्रवाल भस्म	आधी रत्ती
प्रवाल पिष्टी	१ रत्ती
शुक्ति भस्म	आधी रत्ती
शङ्ख भस्म	१ रत्ती
कपर्द	१ रत्ती
खूबकला चूर्ण	१ रत्ती

—यह १ मात्रा है। एसी ३ मात्रा प्रतिदिन।

—साफ किया हुआ १ तोला खूबकला को २ सेर बकरी के दूध मे दोलायन्त्र से स्वेदन करे, दूध समाप्त होने पर खूबकला को गरम जल से बार-बार धोकर-साफ कर खरल में डालकर खूब मर्दन करें, शुष्क चूर्ण कर शीशी मे सुरक्षित रक्खे और उपर्युक्त प्रयोग मे व्यवहार करे।

अनुपान—अर्क गाजवां, अर्क शतपुष्पा, अर्क चंदनादि के साथ। हरे पीले अतिसार के साथ-साथ ज्वर हो तो चंदनादि अर्क में दे।

—शरीर पर मछली का तैल (Cod-liver oil) या शुद्ध पीली सरसों के तैल की धूप में मालिश करें और उष्ण जल से स्नान करावें।

गुण—इन प्रयोगों से वालशोषी के सभी उपद्रव शात होकर वालक हृष्ट-पुष्ट हो जाता है। मण्डूर या लौहभस्म का भी अवस्थानुसार प्रयोग होना चाहिये। शीघ्रता के लिए लिवर एक्सट्रेक्ट १ सी. सी. प्रतिदिन पेशीगत सूचीवेध द्वारा देना चाहिए।

गृध्रसी पर—

नाई नामक बूटी को पीसकर टिकिया वनावे, नितम्ब प्रदेश में गृधसी नाड़ी को कर-स्पर्श द्वारा करते करते नीचे एड़ी (पार्ष्णि) तक स्पष्ट करे, पुन: पाष्णि से ६ अंगुल ऊपर उपरोक्त टिकिया को बांध दे। फफोला (स्फोटक) उठेगा, उसमें से दूषित द्रव निकलेगा और पीड़ा शांत हो जायगी।

दन्त पीड़ा पर—

माजूफल तथा लौंग के वारीक कपड़छन चूर्ण को पीड़ा वाले दंत पर मर्दन करे, शीघ्र ही पीड़ा शात होगी। जवतक पीड़ा शात न हो वरावर मर्दन करे, उष्ण जल से कुल्ला करें।

शिरो रोगो पर—

अनन्तवात, अर्धावभेदक आदि कठिन रोगों पर योगराज गुग्गुल १ वटी शृङ्गभस्म २ रत्ती संजीवनी १ रत्ती उष्ण दुग्ध या उष्ण जल से पानकर सिंगिया (वत्सनाभ विष) तथा पीलू की जड़ को खूब वारीक पीस कर गर्म करके पीड़ा वाले स्थान पर प्रलेप करे। शिर की पीड़ा शात हो जायगी। उपरोक्त प्रयोग मे २ रत्ती एस्प्रिन मिलाने से पीड़ा तत्काल शात हो जाती है। षड्बिन्दुतैल के साथ में प्रयोग अतीव लाभकारी है।

:: पृष्ठ ४८२ का शेषांश ..

मात्रा—१ माशा चूर्ण दिन मे दो वार जल के साथ दें।

गुण—तिल्ली, जिगर, उदर रोग, शोथ, मूत्रदोष व ताप को दूर करता है।

पथ्यापथ्य—गुड़, खटाई, चना की वनी वस्तु न खावें। दवा खाकर तुरन्त चूना लगा पान व तम्बाखू न खायें (यदि) खाया जाय तो जीभ पर घाव हो जायगा।

शारीरिक दर्दों पर—

आजकल वाजार में अनेकों औषधिया अनेको नाम से प्रचार पारही हैं जो सभी एस्प्रीन के योग से तैयार होती है हम आपको यह देशी नुस्खा दे रहे हैं जो गुण में किसी तरह कम नहीं है।

—१ पाव रीठे का चूर्ण १ सेर पानी में भिगो दे २४ घण्टे वाद मिट्टी की कढ़ाही में डाल पकावें, जव एक पाव पानी रहे उतार कर छान ले। फिर इस जल में १ तोला फिटिकरी फूला डाल कर आच दें। जव सव पानी जल जाये तव नीचे वचा हुआ क्षार खुरच कर रख लें।

मात्रा—१ रत्ती से ४ रत्ती तक आयु के अनुसार गर्म जल या चाय के साथ दे।

गुण—शरीर के किसी भी भाग में दर्द हो एस्प्रीन के समान ही १५ मिनट मे ही दर्द वन्द कर देती है। इसमे पसीना भी आता है और आने वाले ज्वर को रोकती है तथा चढ़े हुये ज्वर को उतारती है। स्वानुभूत योग है।

वैद्यराज पं० श्रीकृष्ण चन्द्र त्रिपाठी

पुत्रजीवन फार्मेसी, कन्नौज।

"श्री त्रिपाठी जी वयोवृद्ध अनुभवी चिकित्सक है। आपकी आयु इस समय ६३ वर्ष की है। आप पुत्रजीवन फार्मेसी के अध्यक्ष हैं। आपके कई बच्चे अल्पायु में रोग ग्रस्त हो काल-कवलित हुए तब आपको एक औषधि प्राप्त हुई जिसके प्रयोग से आपका एक पुत्र स्वस्थ बना रहा। आप उसी का निर्माण कर 'पुत्रजीवन' के नाम से विक्री करते हैं। निम्न प्रयोग आपके दीर्घकालीन अनुभव के निचोड हैं, आशा है पाठक इन प्रयोगो से लाभ प्राप्त करेंगे।"

—सम्पादक।

जुखाम पर—

धतूरे के बीज	२॥ तोला
सोंठ	१। तोला
रेवत चीनी	२॥ तोला
गोंद बबूल	२॥ तोला

—सभी औषधियो को अलग-अलग बारीक कूट छान ले। फिर सबको एक में मिलाकर पानी के छींटे देते जावे और मलते जावे, जब वह नम हो जाय तब टेबलेट बनाने वाली मशीन के द्वारा टेबलेट बनालें।

मात्रा—प्रातः सायं १-१ टेबलेट ताजे जल के साथ दें।

गुण—एक टेबलेट खाते ही सर्दी के बहते हुए जुखाम को रोक कर फायदा होता है। यदि औषधि अधिक मात्रा में बनानी हो दवा बनाते समय दवा की मात्रा जो तोला मे लिखी है वह सेरों में करके दवा ज्यादा बढ़ा लेनी चाहिए।

दन्तशूल पर—

कपूर   पिपरमेंट   सत अजवायन

—प्रत्येक १-१ तोला

—सबको मिलाकर बड़ी शीशी मे डाल दें। जब द्रव हो जाये तब उसमें (क्लोरलहाइड्रेट) ३ तोला डाल दें। फिर ३० ग्रेन प्रोकेन मिला कर रख ले। २४ घण्टा रखने के बाद दवा प्रयोग में लावें। दवा फुरहरी से दर्द स्थान पर लगावें तो दर्द तुरन्त बन्द हो जायगा। दांत व दाढ़ के दर्द पर गुणकारी है।

कामला (पीलिया) नाशक योग—

अनन्तमूल की जड़ की छाल	२ माशा
कालीमिर्च	११ नग
पानी	२॥ तोला

विधि—छाल व मिर्च को पानी के साथ बारीक भङ्ग की तरह पीस ले फिर २॥ तोला पानी मे मिला पी जावें। सात दिन तक सिर्फ प्रातःकाल एक बार ही पियें।

गुण—इसके सेवन से आंखो तथा समस्त शरीर का पीलापन दूर हो जाता है। अरुचि, बुखार भी नष्ट होते हैं। अनन्तमूल की छाल असली हो, प्रायः लोग नकली दे देते है। महान गुणकारी स्वानुभूत प्रयोग है।

तिल्ली व जिगर पर—

शुद्ध नौसादर	८ तोला
काला नमक	१ तोला
सोना गेरू	१ तोला

—सबको मिलाकर बारीक चूर्ण करे।

—शेषांश पृष्ठ ४८१ पर।

श्री पं. वेदव्रत मिश्र B A

ग्राम - मिठनिया पो० लखीमपुर (खीरी)

"आपकी आयु ५४ वर्ष की है और चिकित्सा कार्य को लगभग २८ वर्ष से कर रहे हैं। अंग्रेजी बी. ए. तक पढ़े है। आपने चिकित्सा आरम्भ मे हिकमत (यूनानी) से की, फिर होम्योपैथी और एलोपैथी का कुछ अनुभव करके अब आप आयुर्वेद द्वारा ही कार्य करते हैं। आपने यह कला किसी स्कूल या कालेज से प्राप्त नहीं की, केवल अपने ही अनुभव और बल पर चिकित्सा कार्य गरीब ग्रामीणों के बीच करते हैं। हा, यू पी सरकार से रजिस्टर्ड अवश्य हैं। सेवा भावना से प्रेरित हो आपने अपने निम्न अनुभव पाठकों के समक्ष प्रेषित किए हैं, पाठक स्वीकार करें।" —सम्पादक।

हरीतकी प्रयोग—

हरीतकी (बड़ी पीली हरड़) जिसे लगभग सभी जानते है और जिसकी प्रशंसा चरक चिकित्साङ्क के प्रारम्भ मे की गई है। अब इसका एक प्रयोग मुझसे लें। यह प्रयोग 'इलाजुलगुरबा' का है। प्रयोग पूरे एक साल का है। यथार्थ मे यह एक कल्प है। बड़ा सुगम और सरल है। मैं तो यही कहूंगा कि यदि सभी मानव सदैव इसका भोजन के रूप मे प्रयोग करते रहें तो उन्हें किसी प्रकार का रोग नहीं होगा। शरीर स्वस्थ और निरोग रह कर भूख खूब लगेगी और अजीर्ण इत्यादि का कहीं पता नहीं रहेगा।

—बड़ी पीली हरड़ ३ सेर लेकर उनकी गुठली निकाल कर छिलके को कूट छान-कर बोतलों में भर कर रखले। अब प्रति दिन प्रातः कुल्ला, दतून कर बिना कोई दूसरी वस्तु खाये ३॥ माशा या ६ आना भर नीचे लिखे अनुपान से केवल १ बार सेवन करें।

चैत्र-वैशाख मे—शुद्ध खालिस शहद ३॥ माशा के साथ।
ज्येष्ठ-आषाढ़ में—४ मुनक्का के साथ पीस कर।
श्रावण-भाद्रपद में—लाहौरी नमक के साथ, स्वेच्छानुसार।

क्वार कार्तिक मे—बराबर मिश्री के साथ।
अगहन-पौष में—बराबर सोंठ के चूर्ण के साथ।
माघ फाल्गुण मे—२ छोटी पिप्पली के चूर्ण के साथ।

जिन्हे कब्ज की अधिक शिकायत हो और टट्टी साफ न होती हो तो वह ३॥ माशा से ७ माशा तक और दूसरे समय सोने से पूर्व भी प्रयोग करे।

कब्ज नाशक—

जिन्हे टट्टी साफ न होती हो और बहुधा कब्ज रहता हो और जिन्हे ज्वर या मलेरिया मे २ या ४ दस्तों की आवश्यकता हो वह नीचे लिखा चूर्ण प्रयोग करे।

सनाय की पत्ती		२॥ तोला
जंगी हरड़	सौंफ	सोंठ
कालादाना	पाचो	१।-१। तोला
सोंचर नमक		१ तोला

—उपरोक्त सब दवाओ को कूट-छान कर रख ले। सोते समय १ तोला ठंडे जल से ले, सुबह एक दो टट्टी साफ हो जावेगी। अधिक दिनो तक प्रयोग न करे नहीं तो आदत पड़ जावेगी। हां जो चूर्ण के रूप मे प्रयोग करे वह दोनों समय भोजन के पश्चात् अपनी रुचि के अनुसार तीन से छ. माशा तक ले सकते है।

पेचिश—

—जो कि रक्त के साथ हो या बिना रक्त के, निम्न प्रयोग बहुत लाभ करता है—

शेषांश पृष्ठ ४८५ पर।

वैद्यशास्त्री रामरतन गंगेले

प्रधान मैनेजर—अ. हि. बाहुबलि औषधालय
ललितपुर (झांसी)

'श्री गंगेले जी ललितपुर की प्रसिद्ध बाहुबलि फार्मेसी के प्रधान व्यवस्थापक हैं। आप रसायनाचार्य पं० गजाधर प्रसाद गंगेले के सुपुत्र है तथा सुयोग्य लेखक हैं। आपने "चिकित्सा-रत्न" नामक एक उपयोगी ग्रन्थ भी लिख कर प्रकाशित किया है। पाठको के समक्ष आपने कतिपय रोगो पर बडे सरल किन्तु पूर्ण परीक्षित योगो को प्रस्तुत किया है जिनको चिकित्सक ही नही सर्व साधारण भी उपयोग मे लाकर लाभ उठा सकेंगे।"

—सम्पादक।

कामला—

एक रोगी मेरे पास आया जिसका यकृत बढ़ा था, नेत्र, नख, जीभ, दांत, त्वचा पीली पड़ गई थी, शोथ थी, रोगी अनेकों स्थानो से चिकित्सा कराके निराश हो गया था। आकृति ही रोग को स्पष्ट बता रही थी फिर भी उसे सन्तोष हो इसलिए नाड़ी आदि देखी, दूसरे दिन मूत्र परीक्षा की गई तो Bile (पित्त) जाता है ऐसा सिद्ध हुआ और मैंने कामला रोग निश्चित करके उसे—

रक्त पुनर्नवा की जड़ की छाल १ तोला भांग की तरह घोटकर पाव भर पानी मे घोल छानकर पीने को कहा। विश्वास के लिए शुद्ध कशीश भस्म ४-४ रत्ती उसी के साथ शहद से खाने को दे दिया।

७ दिन दोनों समय इसी क्रम से औषधि चली, आठवें दिन जब रोगी आया तो आठ आना स्वास्थ्य में अन्तर मिला। १५ दिन फिर इसी औषधि को चालू रक्खा। अब रोगी बहुत अधिक लाभ पा चुका था। १० दिन और यही औषधि दी गई। पाठक बन्धु आश्चर्य करेंगे कि निराश रोगी भी ३२ दिन में मात्र "रक्तपुनर्नवा मूलत्वक्" के प्रयोग से पूर्ण स्वस्थ हो गया। क्षीणता के लिए सिर्फ कशीश भस्म रात्रि को मलाई के साथ ४-४ रत्ती २० दिन तक और खिलादी। रोगी पूर्ण निरोग एवं शक्तिवान हो गया।

कृमिज नेत्र शोथ—

मै इसफिरा ट्रैनिंग क्लास को जा रहा था, मथुरा स्टेशन पर एक व्यक्ति को आंख पर किसी जहरीले कीड़े ने काट लिया। आंख अधिक सूज गई, यहां तक कि पलक उठना कठिन हो गया, मुझे यकायक याद आ गया और मैंने उन्हे "मीठा-बच" पानी में घिसकर लगाने को बताया। क्रिया की गई। पाठको को आश्चर्य होगा कि सवेरे तक शोथ बिल्कुल नष्ट हो गया तथा दर्द तो लगाने के १ घंटे बाद ही नष्ट हो गया।

प्रयोग कर आशातीत सफलता पाइये—

नारु (१)—भुनी हींग १ रत्ती, मिश्री १ तोला २१ दिन खिलाने से नारु सदैव को नष्ट हो जाता है।

(२) कलौजी को दही में पीस कर लेप करें।

वृश्चिक दंश—बिच्छू काटने पर दंश स्थान पर साईकिल के पंक्चर जोड़ने का सोल्यूशन लगावे।

कर्णस्राव—कान बहने पर पठानीलोध को महीन पीस कान मे डाले।

दन्त शूल—दाढ़ के दर्द में क्लोरेड हाइड्रास ६ माशा देशी कपूर ६ माशा दोनों को शीशी मे मिला फुरेरी बना कर लगावें और लार टपका दे।

सर्पदंश पर—नीलाथोथा, नवसादर, ६-६ माशा जङ्गली प्याज और श्वेत संखिया १-१ तोला अर्क दुग्ध ३ दिन खरल कर चना प्रमाण गोली बनालें।

दंश स्थान पर नस्तर लगाकर रक्त निकाल दें। गोली को आक दुग्ध मे घिसकर दंश स्थान पर लगाने से शीघ्र लाभ होता है।

बालतोड़—यदि फूट गया और मवाद तथा पानी निकल गया हो तो एरण्ड के पत्तों का रस निकाल कर उसमें रुई का फाया तरकर बालतोड़ पर रक्खें। फाया फोड़ा को नष्ट करके ही छूटेगा।

खांसी पर अनुभूत—सितोपलादि १। तोला, वासाक्षार ६ माशा, सत गिलोय ६ माशा, सत मुलहठी ४ माशा, कूट कपड़छान कर रखले।

मात्रा—२ माशा। उष्ण प्रकृति वालों को शर्बत वनफ्सा से तथा शीत प्रकृति वालों को शहद के साथ चटावें। निराश रोगियों को आराम पहुचता है।

बालशोष—कुकरोंधा की पत्ती, सहदेई की पत्ती सम भाग लेकर खूब बारीक पीस कर चना प्रमाण गोली बनाकर प्रातः, दोपहर, शाम माता के दूध अथवा शहद के साथ देने से शीघ्र बच्चा स्वस्थ होजाता है।

जीर्णनासूर—पर कदलीपत्र लगाने से लाभ होता है।

:: पृष्ठ ४८३ का शेषांश ::

—जंगी हरड़ को घी में चिकना करके लोहे के बरतन में भूनले जिससे फूल जावें लेकिन जल न जावें। उन्हे कूट पीस कर बराबर वजन शक्कर मिला कर ६-६ माशा तीन या चार बार दिन रात में शीतल जल के साथ देवें।

खूनी पेचिश पर—

संगजराहत रार
—दोनों सम भाग

—पीस कर प्रात सायं ३ से ६ माशा तक थोड़े दही के साथ देवे। भोजन मे केवल दही भात ही खा सकते हैं।

रक्त व कास पर—

मुंह से खून की कै या खांसी या खखार से रक्त आने को रोकता है—

—फिटकिरी १ कौड़ी भर पीस कर गुनगुने दूध के साथ दो तीन बार देवे।

स्त्रियों के मासिक धर्म—

के अवसर पर अधिक रक्त और अधिक दिनों तक बेसमय रक्त निकलने को शीघ्र रोकता है:—

कतीरा निशास्ता गोंदबबूल
खीरा ककड़ी के बीज —१०॥-१०॥ माशा
अकाकिया गुलनार फारसी
कहरवा शमई बीज खुरफा (कुलफा)
—चारों ३॥-३॥ माशा
वारतग १ तोला

—पहिले वारतंग को पानी मे भिगोदें, फिर शेष सब औषधियो को पीस छान कर वारतंग के पानी को कपडे मे छान कर उस चूर्ण को गूंधे फिर जङ्गली बेर के बराबर गोली बनावे। १-१ गोली सवेरे शाम खाकर ऊपर से १ छटांक दूध और १ छटाक पानी में १ तोला अशोक की छाल उबाल कर जब १ छटांक रह जावे तो पिलावें।

श्री वैद्य प्रभुदत्त शर्मा आयुर्वेदाचार्य

एच० डी० एच० (कलकत्ता) पोस्ट—दुधवा खारा (राजस्थान)

"आपका जन्म लालावास ग्राम वास्तव्य पं चतुर्भुज जी शर्मा के घर हुआ। आपकी शिक्षा पं मुरारीलाल जी मिश्र न्याय व्याकरणाचार्य के पास रह कर व्याकरण मध्यमा साहित्य शास्त्री तक सम्पन्न हुई। तदुपरान्त बम्बई नगरी मे आयुर्वेदाचार्य का अध्ययन किया। गत १५ वर्ष से आप श्री नाथाणी भण्डार दातव्य औषधालय मे प्रधान चिकित्सक हैं। आपकी आयु इस समय ४५ वर्ष की है। आपने १ अनुभूत प्रयोग प्रषित किया है।"

—सम्पादक।

नेत्राऽभिष्यन्द—

यह रोग प्रायः अनभिज्ञ निर्धन ग्रामीण लोगों के बालको मे बहुत पाया जाता है। आयुर्वेद में इसके चार भेद माने है। इसमें नेत्रों मे शोथ होता है जिससे वे लाल हो जाते हैं। नेत्रो से गाढ़ा श्वेत मैले रङ्ग का स्राव निकलता रहता है जिससे बालकों के पक्ष्म आपस मे चिपक जाते है और प्रात.काल सोकर उठने पर उनको छुड़ाने से कठिनता होती है। दूसरा रोग जो इन बालकों मे बहुत अधिक होता है पलको के रोहे होते है। पलकों मे भीतर की ओर छोटे-छोटे दाने बन जाते है जिनके कारण नेत्रों से प्रत्येक समय स्राव निकलता रहता है। इन रोगो के अधिक समय तक रहने मे बच्चो के नेत्रो में व्रण बन जाते है जिनके कारण उनकी दृष्टि नष्ट हो जाती है।

यह रोग अस्वच्छता के कारण उत्पन्न होते हैं। बालक धूल और मिट्टी इत्यादि मे ज्यादा तर खेलते रहते हैं जिनके कण उनके नेत्रो मे गिरते रहते हैं। इन रोगो का संक्रमण एक से दूसरे को पारस्परिक संसर्ग से पहुँचता है। रोगी बालक को पृथक् न करने के कारण स्वस्थ बालक भी रोग ग्रस्त हो जाते हैं। खेलते समय अगुलियो या अन्य वस्तुओ के द्वारा संक्रमण पहुँच सकता है। इस दशा के रोग मे निम्न योग अत्यन्त लाभकर है।

नेत्र प्रकाश अञ्जन—

निर्माण विधि—जंगली कपास ६ माशा को साफ कर अरनी रस, निम्बु रस, सम्भालु (निर्गुण्डी) रस अर्क दुग्ध, तथा भागरे के रस इन छः रसों की अलग-अलग भावनाएं देवे एवं छाया में सुखावे, पश्चात् भावना दी हुई कपास को गौ-घृत ५ तोला मे भिगो बत्ती बनाकर राख कर लेवे तथा—

लौंग	८ भाग
शुद्ध खपरिया	२ भाग
फिटकरी सफेद	४ भाग
सैंधा नमक	२ भाग
कस्तूरी	२ भाग, (१ रत्ती)

—सबको डालकर कासे के बर्तन मे महीन पीस लेवे एवं काच के बर्तन मे ढक्कन लगाकर सुरक्षित रख छोडे। आवश्यकता होने पर अजन की तरह आंखो मे आंजे। अवश्य लाभ होगा। शतशोऽनुभूत प्रयोग है।

नोट—योग में २ भाग बराबर १ रत्ती है।

वैद्य मुकुन्दचन्द व्यास

चन्द्र चिकित्सालय, कोलसावाड़ी (भगवानगंज)
हैदराबाद (दक्षिण)

"श्री व्यास जी का जन्म श्रीमाली में ब्राह्मण कर्मकाण्ड विद्वान् श्री प रामचन्द्र व्यास के यहा हुआ। आपकी बाल्यकाल से जनता की सेवार्थ अभिरुचि थी अतः आपने आयुर्वेद का अध्ययन किया तथा जन्मभूमि नागौर (राजस्थान) के श्री महद्यानन्द दातव्य औषधालय में चिकित्सक रहे। बाद मे श्री सीताराम मदिर मे सीताराम औषधालय का सचालन किया। आठ वर्ष बाद आप अपने ननिहाल मे श्री सेठ बशीलाल जायसवाल की सहायता से चन्द्रचिकित्सालय की स्थापना की जिसका सचालन अभी तक कर रहे हैं। आप अनुभवी चिकित्सक हैं तथा आपके प्रयोग भी अनुभव पूर्ण होगे ऐसी आशा है।"

—सम्पादक।

रोगण्यादि गुटिका—

लघुकण्टकारी फल — श्वेत जीरक
शुद्ध गन्धक, कुमारी रस मे फूंका कलमी शोरा
—सब समान भाग

—इन सबका वस्त्रपूत चूर्ण बना गेंदे के पत्तो के रस में ७ बार घोटकर झड़बेर प्रमाण गुटिका बना लेवें।

मात्रा—२-४ गुटिका।

समय—तीनों काल।

अनुपान—जल।

पथ्य—गेहूं की रोटी, दलिया मीठा व नमकीन, थूली खिचड़ी, छिलके वाली मूंग की दाल, मसूर की दाल, पालक, बथुआ, मेथी, चौलाई, कद्दू, करेला, तुरई, परवल का शाक इत्यादि सात्विक एवं सुपाच्य आहार दें।

फलों मे—अनार, मौसम्बी, अनन्नास, नारङ्गी, अगूर, अंजीर ले सकते हैं।

गुण—कृमि, पाडु, यकृत्प्लीहान्त्रविकार, कामला, कुम्भकामला, हलीमक, अश्मरी, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, मूत्रावरोध, मूत्रप्रदाह, लिंगार्श, अर्श पूयमेह, शर्करामेहेत्यादिक अनेकों व्याधिया समूल नष्ट करने में अद्वितीय है।

महासुदर्शन गुटिका—

आमला — कण्टकारी
खूबकला चूर्ण — शुद्ध मैनशिल
प्रवाल — मोतीसीप भस्म
निर्बीज मुनक्का — अंजीर
—सब समान भाग

इन सबके समान "महा सुदर्शन चूर्ण"

—२१ वा ५१ बार आमला के रस मे खरल कर झड़बेर प्रमाण गुटिका बनावे।

पथ्य—उपरोक्तवत् है।

गुण—किसी भी प्रकार का ज्वर नया हो या पुराने दोषों को भली भांति पचा कर रोगो को शमन करती है। कैसी भी कष्टसाध्य यक्ष्मा क्यो न हो जड से नष्ट हो जाती है। इस एक ही प्रयोग से तज्जनित, अग्निमाद्य, निर्बलता, शोथ उरःक्षत, रक्तष्ठीवन, कार्श्य आदि व्याधियां नष्ट होती हैं।

श्वासकासान्तक—

गुलाबी फिटकरी	सफेद फिटकरी
तेलिया सुहागा	चौकिया सुहागा
सावरशृङ्ग तथा	शङ्ख-सीप के टुकड़े
पीली कौड़ी	सैंधव
कलमी शोरा	अजवायन

कटेरी	वासा	निम्ब
हल्दी	अफीम डोडा	बाजरा
हीरा कसीस	गांजा	तम्बाखू
धतूरा		इन्द्रायण का फल

—सब समान भाग

—इनको जौकुट करके मक्खन से चुपड़ कर एक हंडिया में बड़ के पत्ते बिछाकर कुमारी का गूदा रखें, उस पर कूटी हुई दवा और उसके ऊपर कुमारी गदा व आक के पीले पत्ते रखकर दृढ़ कपरौटी करें फिर तेज आंच में फूंक देवे। आग शीतल होने पर हांडी को निकाल कर उसमें भस्म हुई दवा को निकाल खरल में पीस शीशी में भर ले।

मात्रा—१ से ४ रत्ती तक।

समय—प्रातः सायं।

अनुपान—शीत प्रकृति वाले रोगी को अद्रक, पान रस मधु से चटावे या केवल मधु से चटावें। गर्म प्रकृति वाले को अनार रस सहित तथा मक्खन मधु के साथ चटावे।

गुण—कुक्कुर (काली) खांसी, बालकों का डिब्बा रोग, कफ की सड़ांद, कफ व रक्त का जमाव-दुष्ट प्रतिश्याय, जीर्ण एवं नूतन श्वास धैर्य पूर्वक कुछ दिन सेवन करने से उपरोक्त रोग जड़ से चले जाते हैं।

हेमदुग्धादि तैल—

सत्यानाशी के बीज	इन्द्रायण के बीज
खाने की हल्दी	—प्रत्येक २०-२० तोला
आमलासार गन्धक	मैनशिल
वर्की हरताल	सफेद संखिया

—प्रत्येक ४-४ तोला

गीला गन्धा बैरोजा	१॥ सेर

—इन सबको एक जीव कर मिट्टी की चिकनी सुराही में भरें। सुराही के मुंह पर पतले तार का गोला बनाकर डाट लगावे फिर चूल्हे पर पुराने लोहे की कढ़ाही जिसके पेंदे में छेद हो रखें और उसमें उल्टे मुंह सुराही रखे। ध्यान रहे कि सुराही का कंठ भाग नीचे चूल्हे की ओर निकला हुआ रहना चाहिए। अब कढ़ाही में बालू भर देवे, जिससे सुराही का पेंदा ढक जाय और कढ़ाही भी खाली रहे ताकि उसमें अंगार की काफी व्यवस्था हो। उपलों को अथवा कोलसों को भर कर आंच सुलगा दे। चूल्हे में एक प्याला रखे ताकि सुराही वाली दवा तैल रूप में टपकती रहे। जब तैल के साथ में दवा का जला हुआ भाग आने लगे तब प्याला हटा लेवे। उस तैल को साफ छानकर शीशी में भर ले।

मात्रा—१ से ४ बूंद तक।

अनुपान—मक्खन, बताशे में भरकर या कैपसूल में भरकर या पान बीड़े में, अर्थात् किसी भी प्रकार रोगी के पेट में दवा पहुँचा दे।

पथ्य—इस दवा को सेवन कराते समय रोगी को सैंधव काली मिर्चयुक्त छिलके वाली मूंग की दाल, पालक, करेला, भिंडी, तुरई, कद्दू परवल मैथी, चौलाई का शाक, गेहूँ की रोटी, जौ की रोटी, दलिया, थूली खिचड़ी, घी, दूध, मलाई, मक्खन का सेवन करावे। इसके अतिरिक्त कोई भी वस्तु खाने को नहीं देवें। रोगी को गरम जल से सेवन करावे।

गुण—इस प्रकार उपचार करने से मैंने शनैः शनैः अर्द्धाङ्गवात, आमवात तथा अन्य वातज विकार उपदंश, भगन्दर, नाड़ीव्रण, अन्य व्रण, अपची गंडमाला, गलगंड, अर्बुद, विद्रधि, विस्फोट, कतिपय क्षुद्ररोग, कुष्ठ, रक्त-चर्मविकार क्लीबत्व इत्यादि भयङ्कर कष्टसाध्य रोग समूल नष्ट हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त पूयमेह, मधुमेह, वृषण वृद्धि, कर्णस्रावेत्यादि रोग निर्मूल होजाते हैं।

श्री पं. ब्रह्मदत्त त्रिपाठी वैद्यभूषण

श्री गोपाल आयुर्वेद औषधालय
अतर्रा (बांदा)

"श्री त्रिपाठी जी उत्साही नवयुवक वैद्य हैं। आपके पिता जी श्री पं रामगोपाल जी त्रिपाठी भी अनुभवी सफल चिकित्सक थे, इस समय अपने चाचा ख्यालीराम जी के पास ही आप चिकित्सा कार्य करते हुए आयुर्वेदाध्ययन में व्यस्त हैं। विद्यापीठ की आयुर्वेद भिषक् परीक्षा उत्तीर्ण करली है तथा आयुर्वेदाचार्य परीक्षा दे रहे हैं। आपके द्वारा प्रेषित निम्न प्रयोग अनेक रोगियों पर परीक्षित हैं।"

—सम्पादक।

खांसी पर—

—काली मिर्च और कत्था (खैर) समान भाग ले और कपड़छान चूर्ण बना कर बबूल की छाल के क्वाथ से मिर्च बराबर गोली बनाले। मुंह में रख कर चूसने से सभी प्रकार की खासी अच्छी हो जाती है।

वीर्य वर्धक—

बीज तालमखाना ढाक का गोंद
मोचरस चोबचीनी
—प्रत्येक आध-आध पाव
मिश्री १ पाव

—सबको कूट कपड़छान चूर्ण कर रखलें।

मात्रा—आधी छटाक, एक छटांक मलाई मे मिला कर, प्रातः ही सेवन करे। इससे वीर्य की हर तरह की खराबी दूर होती है।

स्त्रियों के पानी जाना—

मुलहठी सफेद जीरा
सफेद राल तालमखाना
बीज सिंघाड़ा रूमी मस्तङ्गी
—प्रत्येक समभाग

—इनको लेकर सबके समान मिश्री मिलाकर रखले।

मात्रा—१ तोला प्रात।

अनुपान—चावल का धोवन।

गुण—४१ दिन तक के सेवन से स्त्रियो का पानी, धातु पड़ना रोग जड़ से दूर होता है।

शक्तिवर्धक चूर्ण—

मुलहठी गोखरू छोटा
बरियारा के बीज लौंग
जायफल आमला
हर्रा बहेड़ा देशी मूसली
विधारा —प्रत्येक १-१ तोला

—सब औषधियों को कूट-पीस कर कपड़छान चूर्ण कर सबके समान मिश्री मिला कर रखदे।

मात्रा—६ माशे से १ तोले तक प्रात सायं।

अनुपान—दूध या ताजा पानी।

गुण—सुस्ती, दुर्बलता, वीर्य का पतलापन, स्वप्नदोष आदि वीर्य रोग दूर होते हैं। इससे कब्ज की भी शिकायत दूर होती है।

वमन पर—

हर्रा का चूर्ण ६ माशा

—शहद के साथ धीरे-धीरे चाटना चाहिए। दिन में

—शेषांश पृष्ठ ४६१ पर।

तीन सफल-सिद्ध प्रयोग

(एक आयुर्वेद सेवक)

"प्रयोग प्रेषक महोदय ने फोटो-परिचय देना तो दूर अपना नाम तक प्रकट करने का निषेध किया है। आप वयोवृद्ध सफल चिकित्सक हैं। गत लगभग ४० वर्षों से हमारे यहा से आप औषधियां मंगाते चले आरहे हैं जिससे स्पष्ट होता है कि आप बहुत समय से चिकित्सा व्यवसाय कर रहे है। आशा है पाठक आपके निम्न तीनो प्रयोगो को उपयोगी पायेंगे।" —सम्पादक।

संग्रहणी पर—

जायफल	५ तोला
अहिफेन	आधा तोला
चांदी वर्क	३ माशा
जहरमोहरा खताई	३ माशा
वत्सनाभ शुद्ध	६ माशा

—उपरोक्त पांचो वस्तुओं को भृङ्गराज के रस में आठ प्रहर खरल कर उड़द (माप) बराबर गोलियां बनाले। प्रातः मध्याह्न सायं तीनों समय दूध (गौदूध) के साथ १-१ गोली लेनी चाहिए।

पथ्य—गौदूध धारोष्ण ही यथा रुचि लेना चाहिए, पूर्ण अनुभूत है।

नोट—इस प्रयोग को उपयोग में लाकर हजारों रुपये एक परिवार कमाता है। महाराष्ट्र में एक प्रसिद्ध गांव के कृषिकार के वंश का यह प्रयोग है। संग्रहणी इलाज से ही यह गांव प्रसिद्ध हुआ है।

शोथहर लेप—

बिना बुझा चूना कली का   भिलावे

विधि—लोहे के इमाम दस्ते में चूना १ इंच बिछावें इसके ऊपर भिलावे बिछावे। इसके ऊपर पुन. चूना बिछावें और इसी हालत में कूटें, कूटते कूटते जब पिष्ट जैसा हो जावे तो छान लेना, छानने से इसका रङ्ग स्लेट जैसा होगा। यदि चूना अधिक हो तो रङ्ग फीका रहेगा तो और भिलावे मिलाकर कूटना चाहिये और यदि भिलावे अधिक हों तो छानना कठिन होगा तब इसमें चूना अधिक डालें और बाद में कूटले। इस प्रकार स्लेट के रङ्ग सदृश हो जावे तब छाने। छानने से यह पिष्टमय पदार्थ को आवश्यकतानुसार गाढ़े लेप के लिए मधु के साथ मिलाकर लेप करें।

उपयोग—शोथ पर इसका उपयोग उत्तम होता है। जहा एन्टीफ्लोजीस्टाइन शोथ के लिए काम नहीं देता वहा यह लेप शोथ के लिए काम देता है। पूय न हुआ हो तो शोथ शमन हो जाता है और पूय हुआ हो तो बहुत शीघ्रता से जलन न करते हुए फोड़ देता है। पूर्ण अनुभूत है।

सूचना-नेत्र मे नहीं जाना चाहिए, कारण भिलावा और चूना हानिकर हैं।

पीड़ाशामक तैल—

सरसों का तैल	१ सेर
प्याज का रस	२ सेर
रसोन (लहसुन) छीला हुआ	२० तोला
वच	५ तोला
खस-खस के बोन्ड (पोस्त के डोंडे)	½ सेर

विधि—वच का चूर्ण बनाना, साथ मे खस-खस के बोन्ड का चूर्ण बना लेना। इन दोनों के चूर्ण में पाच सेर जल डाल कर क्वाथ कर लेना, इस

काथ का जल १ सेर रहना चाहिए इसको छान कर तैल मे डालदे और तैल सिद्ध करले। सिद्ध होने के बाद छीला हुआ रसोन तैल मे डाल कर रसोन को बादामी रङ्ग का होने तक चलाते रहना चाहिये। बादामी रङ्ग बदल के थोड़ा कालासा रङ्ग होवे तब उतार कर ठंडा होने पर छानकर बोतल मे भर ले। यह पीड़ाशामक तैल तैयार है।

उपयोग—शस्त्र से काटे हुए भाग पर पिचु बनाकर लगाना, और सेकना। आंख मे चोट लगी हो तो आख बन्द करके आंख के ऊपर के भाग में पिचु (फोहा) तर करके लगाकर सेकना, मसूड़े फूले हो तो गरम फोहा लगाना, छोटे बच्चो के कान मे या बड़ो के कान मे दर्द हो तो चार पाच बिन्दु डालकर सेकना, तीन-तीन घंटे से उपयोग करे, अनुभूत है।

:: पृष्ठ ४८६ का शेषांश ::

तीन बार। यह योग सैकड़ो बार का अनुभूत है।

आग्निक उदरशूल (कालिक पेन) पर—

—शुद्ध देशी नौसादर की मात्रा आठ रत्ती जिह्वा पर रख कर एक घूट सादा जल पीवें। ४-५ मिनट के बाद पुन तीन बार दे, शूल शान्त हो जायगा। यदि पेशाब न होता हो तो कलमी शोरा और बेर की पत्ती शीतल जल में पीस कर मूत्र कुण्ड (पेड़ू) पर पाच सात बार रखें। अनुभूत है।

बालकों के सूखा रोग पर—

अतीस	काकड़ासिंगी	नागरमोथा
इन्द्रजव	पीपल छोटी	मुलहठी
वंशलोचन	सत गिलोय	जहरमोहराखताई

—प्रत्येक ३-३ माशा

—सबको बराबर खरल मे पानी के साथ घोंट कर मटर बराबर गोली बनाले।

मात्रा—आधी गोली मां के दूध के साथ, बड़े बच्चों को एक गोली शहद के साथ देनी चाहिए। इससे एक ही मास से लाभ होने लगता है। २-३ मास मे पूरा लाभ हो जाता है।

विशुद्ध प्रमाणिक आयुर्वेदिक औषधियां

पूर्व प्रकाशित के प्रयोग जिनकी परीक्षा हो चुकी है

'धन्वन्तरि' के पिछले अङ्को तथा विशेषाको मे कतिपय प्रयोग अत्युपयोगी प्रकाशित हुए हैं, जिनकी पाठको ने परीक्षा की है तथा उन प्रयोगो की भूरि-भूरि प्रसंशा की है। अतएव उन प्रयोगो में से कुछ प्रयोग यहा प्रकाशित कर रहे हैं जिससे धन्वन्तरि के ये पाठक जिनके पास धन्वन्तरि के पुराने अङ्क-विशेषाङ्क नही है इन सफल प्रयोगो मे लाभ उठा सकें। हम धन्वन्तरि के पाठको से विनम्र एव आग्रहपूर्ण निवेदन करेंगे कि वे धन्वन्तरि मे प्रकाशित प्रयोगो को निर्माण कर व्यवहार मे लावें और जिन प्रयोगो को उपयोगी अनुभव करें उनको अपने अनुभव सहित लेखबद्ध करके भेज दिया करें। आपके अनुभव धन्वन्तरि में सहर्ष प्रकाशित करेंगे। जिन प्रयोगो को निरर्थक या हानिप्रद अनुभव करें उनको भी प्रकट करें। इस प्रकार उपयोगी प्रमाणित प्रयोग पाठको की जानकारी मे आते रहेगे तथा उनसे अन्य ग्राहक भी लाभ उठा सकेंगे तथा जो प्रयोग हानिप्रद या निरर्थक हैं वे भी अन्य पाठको की जानकारी मे आ जायगे जिससे कि वे उन प्रयोगो को निर्माण कर अपने रोगियो को व्यवहार करने के व्यर्थ झंझट से बच जायगे। इससे एक लाभ यह भी होगा कि प्रयोग-प्रेषक प्रकाशनार्थ प्रयोग भेजते समय निरर्थक प्रयोग भेजने का साहस नही करेंगे। हमको विश्वास है कि इस निवेदन पर धन्वन्तरि के प्रत्येक पाठक अवश्य ध्यान देंगे।" —सम्पादक।

आयुर्वेद मार्तण्ड स्व० श्री० पं० यादव त्रिकम जी
आचार्य, बम्बई के

कतिपय सफल प्रयोग

विषमज्वर (मलेरिया) पर—

(सप्तपर्ण घन वटी)

सप्तपर्ण (सतौना) की ताजी छाल लाकर उसको कूट कर अष्टगुण जल मे क्वाथ करें। जब चतुर्थांश क्वाथ रहे तब छान कर उसको मन्दाग्नि पर फिर पचाकर लेह जैसा गाढ़ा करलें। यह घन एक पौंड हो तो उसमे अतिविषा का चूर्ण ५ तोला और काली मिर्च का चूर्ण ५ तोला मिला कर चने प्रमाण गोली बनाले।

अनुपान—जल।

मात्रा—१-२ गोली ३-४ घण्टे के अन्तर से। विषम-ज्वर (मलेरिया) वाले रोगी को देवे। अत्यन्त लाभ करता है।

विषमज्वरे तिक्त वटी—

बङ्गाल मे जिसको कालमेघ और मराठी में ओले किराईत कहते है इसको ताजा लाकर कूटकर स्वरस निकाले जो बाकी रहे उसमें चतुर्गुण जल मिलाकर औटावें। चतुर्थांश शेष रहे तब छान ले फिर स्वरस और क्वाथ दोनों को मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावे जब गाढ़ा हो जाय तो उसमे अष्टमांश काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर चने समान गोली बनाले।

अनुपान—जल से दो-दो गोली ३-४ घण्टे मे लेकर देवे; विषमज्वर मे अत्युत्तम है।

बालपञ्चभद्र—

(बालको के सूखा बालशोष पर)

रस सिन्दूर	३ माशा
यशदभस्म	१॥ माशा
मुक्ता की या मुक्ताशुक्ति पिष्टी	६ माशा
गोदन्ती भस्म	१ तोला
गोरोचन	१॥ माशा

विधि—एकत्र कर पीस कर रखें।

मात्रा—१ से २ रत्ती तक।

अनुपान—मधु मे चटा कर ऊपर से दूध देवे।

मधुमेह के लिए—

स्वर्णभस्म	अष्टमाश रत्ती
त्रिवङ्गभस्म	२ रत्ती
निम्बपत्र चूर्ण	१० रत्ती
गुड़मार पत्र चूर्ण	१० रत्ती
शिलाजतु (गोली बने इतना) या	१२ रत्ती

—सब मिला कर १२ गोली बनाना। चार-चार घंटे बाद तीन-तीन गोली जल से देवें।

निद्रा लाने के लिए—

सर्पगन्धा (छोटा चांद, चांदमरवा, धनमरवा धन बरुआ आदि भाषा के नाम है) पाच सेर क मोटा चूर्ण करके उसका अष्टगुण जल मे क्वाथ करे। अष्टमांश क्वाथ शेष रहे तब वस्त्र से छान ले। फिर उसमे चतुर्गुण जल देकर दूसरा क्वाथ करे। चतुर्थाश ही शेष रहे तब छान ले दोनो क्वाथ को एकत्र कर फिर उसको मन्दाग्नि पर पकाकर घन (रसक्रिया) करे। अनुमानतः ४० तोला घन होगा। यदि ५० तोला घन हो तो उसमें—

खुरासानी अजवायन के पत्र का घन	५ तो.
चरस	२॥ तोला
पीपलामूल का चूर्ण	५ तोला

—मिलाकर दो-दो रत्ती की गोली बनावे। सोते समय दो गोली जल से या दूध से दें।

नोट—खुरासानी अजवायन की पत्ती का घन भी सर्पगंधा के घन जैसा बनाले।

माननीय स्व. श्री पं. दोलचंद शर्मा छांगाणी

आयुर्वेदाचार्य

सीताबर्डी, नागपुर के

सफल प्रमाणित प्रयोग

सन्निपातादि पर कालारि रस—

प्रायः सन्निपात प्रलापादि होने पर हमारे वैद्य बन्धु सौम्य क्वाथों और रसों को छोड़ कर समीर-पन्नग, तालसिंदूर, मल्लचन्द्रोदयादि उग्र रसों का बार-बार परियाप्त रूपेण प्रयोग करने पर उतारू हो जाते है, जोकि रोगी को उल्टे भयङ्कर घबराहट की अवस्था मे पटक देते है, मेरी नम्र प्रार्थना है कि वे उक्त अवस्था मे कषायों मे वैद्य जीवन के अर्क-मूलादि कषाय या इससे भी सौम्य तगर तुरग गन्धादिपाठ वाला योगरत्नाकर का प्रलापक सन्निपात पर कहा हुआ कषाय देकर देखें।

उपर्युक्त रसों की अपेक्षा कालारि रस सन्निपात अवस्था मे बहुत अच्छा काम करता है। मेरा शतशोनुभूत है। राजस्थान के अलावा भारत के अन्य भागों में प्राय. इसका प्रचार नहीं दिखाई देता। इसका मूल पाठ योग चिन्तामणि मे है।

शुद्ध पारा	३ भाग
शुद्ध गंधक	५ भाग
शुद्ध वन्छनाग	३ भाग
काली मिर्च	५ भाग
पीपल	१० भाग
लवङ्ग	४ भाग
शुद्ध धतूरे के बीज	१ भाग
शुद्ध सुहागा	५ भाग
जायफल	५ भाग
अकरकरा	३ भाग
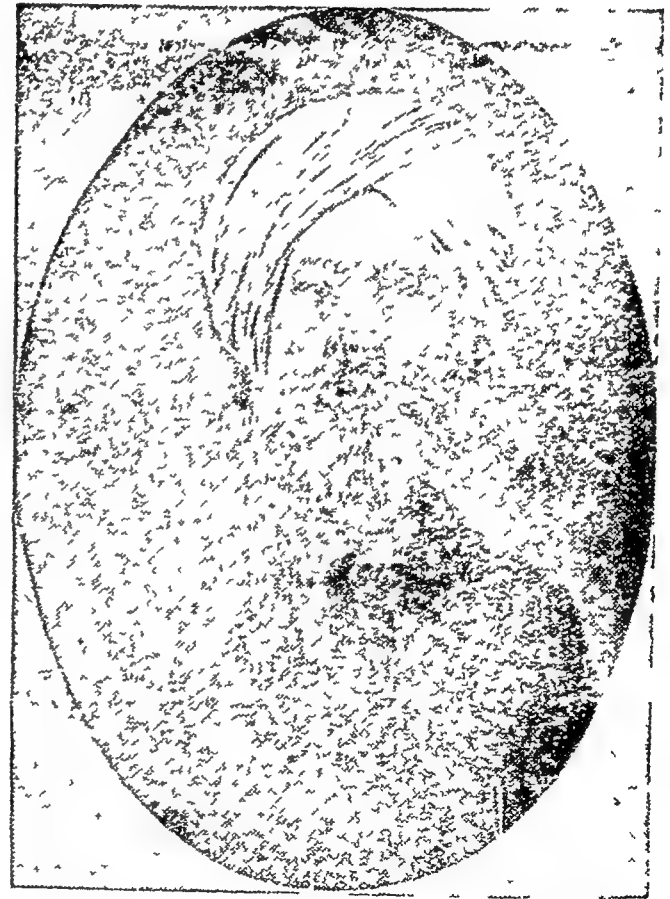
विधि—प्रथम पारे गंधक की कज्जली करे और बाद मे शेष द्रव्यो का बारीक चूर्ण उसमे मिला कर तीन दिन करील (कैर) के रस मे और ३ दिन अदरक के रस मे घोटकर १-१ रत्ती की और कुछ दो-दो रत्ती की गोलियां बनाले।

गुण—इन गोलियों को यथा योग्य अनुपान से दें, तो भयङ्कर वायु विकार, सन्निपात और उग्र शीत प्रधान चातुर्थिकादि ज्वर शांत हो जाता है। जहां अनुपान की विधि न मिले, वहां गरम जल में देने से भी काम चल सकता है। वैद्य बन्धु अवश्य व्यवहार कर देखें।

क्षयाम्लपित्तादि पर सूतशेखर रस—

महाराष्ट्र को छोड़ इस रस का प्रचार भी भारत के अन्य भागों में कम है। रस बड़ा प्रभूत है। मूल-पाठ इसका योगरत्नाकर में है जिसका अनुवाद निम्नलिखित है।

शुद्ध पारा	शुद्ध गंधक	तज
शुद्ध बच्छनाग		शुद्ध धतूरे के बीज
शुद्ध सुहागा	स्वर्णभस्म	सोंठ
मिर्च	पीपल	पत्रज
एलाबीज	ताम्रभस्म	कचूर
नागकेशर	शङ्खभस्म	बेल का गूदा

—प्रत्येक १-१ तोला

विधि—पारा गंधक की कज्जली बनावें और बाद में सब औषधियों का महीन चूर्ण डालें, एक जीव करें। फिर भृंगराज रस दे-देकर २१ दिन तक खरल करे और बाद में कनिष्ठिका अंगुलीवत् वत्तियां बना कर सुखालें। सूखने पर ये वत्तियां बड़ी पक्की हो जाती हैं। दूध या जल में घिसने से जितनी चाहिए उतनी ही घिसती है।

व्यवहार—इसको आधी या एक रत्ती दूध के साथ घिसकर तीन चार-तोला दूध में थोड़ी मिश्री मिलाकर दें।

गुण—रोगी को चाहे जैसी घबराहट, दाह, निद्रा-नाश, अम्लपित्त वमनादि क्यों न हो, सब शान्त होकर सत्वर आराम मिलता है। रोगी आराम से सोता है।

विषम—मधुरज्वर में भी इसी अनुपान से, यह अच्छा काम देता है। हमारे व्यवहार में रात दिन आता है। बड़ा अच्छा रस है।

मूलपाठ में 'मर्द्य भृङ्ग रसैर्दिनम्' और 'मृत स्वर्ण' लिखा है। तथापि हम अपने 'गुरूपदेश से २१ दिन खरल करते हैं और स्वर्ण भस्म की जगह कज्जली हो जाने पर उसमें सोने के वर्क मिलाते हैं महाराष्ट्रीय सम्प्रदाय में भी ऐसा ही है। मूल "द्विगुंजे मधुसर्पिषी" अर्थात् २ रत्ती यह रस शहद और घृत के साथ देने से अम्लपित्त, वमन, शूल, पांचों प्रकार के गुल्म, और कास, ग्रहणी, त्रिदोष का अतिसार, श्वास, मन्दाग्नि, उग्र हिचकी उदावर्त, देहयाप्य व्याधि तक को दूर करना लिखा है। दुग्धानुपान का कहीं नाम नहीं है तथापि हम तो दुग्धानुपान से उपर्युक्त व्याधियों में ही इसे देते हैं और बड़ा लाभ होता है।

मूल में लिखा है कि एक मण्डल अर्थात् ४० दिन तक देने से यह रस क्षय तक को दूर करता है।

हैजे पर रामबाण—

"विडंग नागरं कृष्णा" आदि पाठ के अनुसार वैद्य लोग 'गोमूत्र में घुटी हुई संजीवनी गुटिका' का प्रयोग अदरख के साथ करते हैं क्योंकि मूल में ऐसा ही लिखा है। परन्तु गुरुओं द्वारा इसमें एक विशेषता मालूम हुई है -और वह यह कि उक्त एक गुटी अदरक के साफ किये हुये रस में दूनी मिश्री मिला पाक कर उसके साथ देनी चाहिए। पहिली गोली के इस प्रकार देते ही थोड़ी देर में उल्टी और दस्त बन्द हो जाते हैं।

चार घण्टे के बाद एक गोली उक्त प्रकार से देने से पेशाब खुल कर आता है रोगी खाने को मांगता है। किन्तु ध्यान रहे कि उस दिन कपड़छन किये मूंग की सिजाई दाल के पानी के सिवा और कुछ भी नहीं देना चाहिए। किसी भयङ्कर केस में ४ घण्टे बाद तीसरी गोली की भी आवश्यकता होती है। हमने कई बार देखा है कि इससे अप्रतिभ लाभ होता है।

परन्तु जहा संजीवनी न हो ऐसे स्थान पर क्या किया जाय ? एतदर्थ हम अपना शतशोऽनुभूत और नितान्त सादा प्रयोग जो कि लोलिम्बराज ने अपने वैद्य जीवन ग्रन्थ में लिखा है, देते हैं—

लहशुन साफ सोठ गन्धक शुद्ध
जीरा सफेद मिर्च पीपल
हींग बढ़िया शुद्ध सेंधा नमक
—आठो ५-५ तोला

विधि—इनके चूर्ण को निम्बू रस मे खूब मर्दन कर चने प्रमाण गोली बनालें। सुखा कर शीशी मे रखे।

व्यवहार—एक-एक घंटे बाद ५-५ गोली निम्बू रस के साथ दें। निम्बू का रस न मिले वहां ठंडे (बासी) पानी से भी दे सकते है।

गुण—४-५ मात्रा में ही अप्रतिभ लाभ होता है विशूचिका का रोगी बच जाता है। विशेषता यह है कि यह प्रयोग निरापद है, कोई हानि नहीं करता।

आयुर्वेद महामहोपाध्याय रसायन शास्त्री

स्व॰ श्री भागीरथ स्वामी आयुर्वेदाचार्य

कलकत्ता के

चमत्कारी प्रयोग

विचर्चिका (छाजन-बीची) पर—

चोक के बीजों का महीन चूर्ण इतना करे कि वह घोटते-घोटते मलहम सा हो जाय तब किसी शीशी मे रख ले।

विधि—छाजन के स्थान पर जौंक लगवा कर गन्दा रक्त निकाल कर व्रण आराम हो जाने पर दिन मे ३ बार यह मलहम ५-५ मिनट रगड़ना चाहिए। छाजन के लिए अति उत्तम योग है।

विचर्चिका हर तैल—

नीम के फल (निबौली) ५ तोला
कड़वा तैल (सरसो का) ५ तोला

—जस्त की मूसली से जस्त के खरल मे घोटकर मलहम बनाकर लगावे। ५-७ दिन मे छाजन मिट जायगा।

श्वासहर वटी—

सत्यानाशी का घन सत्व ५ तोला
५ वर्ष का पुराना गुड़ ५ तोला
राल २ तोला

विधि—पीस मिलाकर २ रत्ती की गोली बना कर सुखालें, पीछे डाटदार शीशी में इस प्रकार रखे कि सर्दी न लगने पावे। ऊपर चांदी के वर्क लगादें। दिन मे ३ बार गर्म जल से दें।

गुण—दमा मे शीघ्र लाभ होगा।

रक्तार्श रक्तप्रदर हर चूर्ण—

मुद्ग धान्य (मूंग) को १ हांडी में भरकर कपड़ मिट्टी कर सुखाले पीछे कोयलों की अग्नि में रख कर कोयला कर महीन चूर्ण करले।

अनुपान—शीतल जल से ३ माशा की मात्रा मे नित्य प्रातः मध्याह्न सायकाल ले।

गुण—यह रक्तप्रदर तथा रक्तार्श की उत्तम दवा है।

राजवैद्य रत्न श्री पं॰ मस्तराम जी शास्त्री

वैद्य पंचानन आयुर्वेदाचार्य, रावलपिंडी

के

उपयोगी प्रयोग

समीरपन्नग रस—

शुद्ध पारद शुद्ध गंधक
शुद्ध सफेद मल्ल शुद्ध हरताल वर्की
—प्रत्येक १-१ तोला
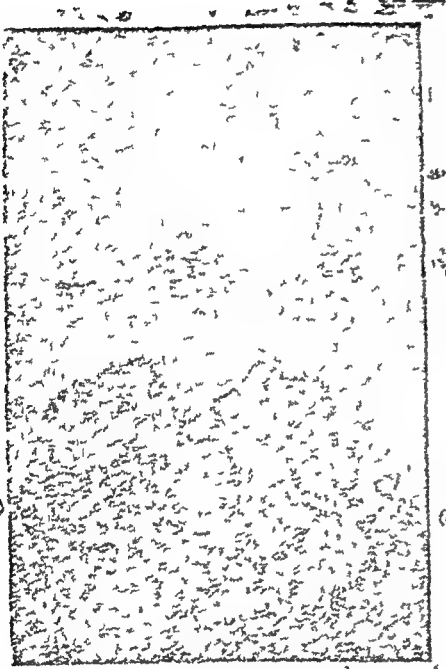
विधि—पारद गंधक की कज्जली बनाकर शेष सब वस्तुओं को मिलाकर खरल करें। जब सबकी कज्जली बन जावे, तो तुलसी के रस मे खरल करके गोला बना कर सफेद अभ्रक पत्रो के मध्य में रख कर सूत्र से बांध दो प्यालों के अन्दर सम्पुट बनाकर बालुका यंत्र मे रखकर मन्दाग्नि से चार पहर अग्नि देवें। शीतल होने पर पीस कर रखले।

प्रयोग—आमवात, उन्माद, सन्निवात अर्थात् जब रोगी अपने हाथ-पांव तक चारपाई से नहीं हिला सकता और शोथ भी अधिक हो ऐसी अवस्था में यह योग प्रत्यक्ष फल दिखाता है।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक।

अनुपान—रास्ना के कषाय से या पान के रस से सेवन करें।

चिंतामणि चतुर्मुख रस—

शुद्ध कुचला शुद्ध गंधक शु. पारा
लौह भस्म अभ्रक भस्म
—पांचों १-१ तोला
सुवर्ण भस्म ३ माशा

विधि—पारद गंधक की कज्जली बनाकर शेष सब वस्तुओं को कूट-छान कर खरल मे डालकर घृतकुमारी, त्रिफला, ब्राह्मी इनके स्वरस से क्रमशः १-१ दिन मर्दन करें, शुद्ध होने पर गोला बनाकर एरण्ड पत्तों से लपेट कर सूत्र से बांध कर ३ दिन धान्य राशि मे रक्खें। चौथे दिन निकाल कर इसके समभाग त्रिफला चूर्ण मिलाकर रखे।

प्रयोग—आमवात, अपस्मार, राजयक्ष्मा, उन्माद और वात-व्याधियो मे कई बार का अनुभूत है।

समीरगज केशरी—

शुद्ध अहिफेन शुद्ध विष मुष्टि

काली मिर्च —तीनों १-१ तोला

विधि—सब वस्तुओं को खरल में डालकर पान के रस से मर्दन करके १-१ रत्ती की गोली बनाले।

प्रयोग—आमवात, अवबाहुक रोग, मूत्र कम्प, शिर कम्प, कुबड़ापन, खञ्जत्व, गृध्रसी स्नायु रोग।

मात्रा—१-१ गोली प्रात सायं।

अनुपान—पान के रस या असगन्ध के क्वाथ से सेवन करना चाहिये।

—प्रत्यक्ष फल देने वाला अनुभूत योग है।

मुरञ्जादि चूर्ण—

मुरंजान मीठी	काली मिर्च
सोंठी, असगन्ध	पीपलामूल
एरण्ड मूलत्वक्	—प्रत्येक १-१ छटाक
विधारात्वक्	२ छटाक
खांड उत्तम	४ छटाक

—सबको कूट-छानकर विधिवत चूर्ण बनावे।

प्रयोग—दुस्तर आमवात, गृध्रसी, सन्धिवात में।

मात्रा—३ माशा से ६ माशा तक।

अनुपान—रास्नादि सप्तक क्वाथ दो तोला या दूध से प्रात सायं दें। अनुभूत है।

आमवात प्रमथनी वटी—

शोरा, अर्कमूलत्वक्, शुद्धगन्धक, लौहभस्म

अभ्रक भस्म —प्रत्येक १-१ तोला

—अर्कत्वक् को कूटकर वस्त्र में छान कर शेष वस्तुओं को मिला अमलतास के गूदे के रस से ७ दिन खरल कर ४-४ रत्ती की गोलियां बनाले।

प्रयोग—आमवात, सन्धिवात, हृद्रुता, कोष्ठबद्धता, सर्वांग पीड़ा, मूत्रकृच्छ्रता में अनुभूत है।

मात्रा—४ रत्ती (१ गोली) प्रात सायं त्रिवृत (निशोथ) के क्वाथ से या सम्भालू के क्वाथ से सेवन करावें।

उपरोक्त कोई सा रस सेवन किया जाय। साथ ही दूसरे भेद का प्रयोग अवश्य करावें। नीचे लिखा शङ्कर स्वेद अत्यन्त लाभ करता है।

शङ्कर स्वेद—

कपास मूलत्वक्		एरण्ड मूलत्वक्
जौ	तिल काले	अलसी
सन के बीज		पुनर्नवा

—सब समान भाग

विधि—उपरोक्त वस्तुओं को लेकर कूटले, यह द्रव्य १ पाव जल १० सेर १ खुले मुख वाले घट में डाल कर आग पर रखें। घट के ऊपर रोगी को चारपाई बिछाकर कम्बलों से लपेट कर स्वेद दें या इसकी पोटली बना करके दर्द वाले स्थान पर टकोर करें। इससे स्वेद आकर रोगी के अंग खुल जाते हैं, अनुभूत है।

इसी पर अचूक अमृत कल्प कई वर्षों से अनुभव में लाया हुआ, यह योग सब सज्जनों की सेवा में दे रहा हूँ। आमवात के रोगी को मृत्यु के मुख से निकालकर सुखमय जीवन को देने वाला, प्रत्यक्ष फल दिखाने वाला वैद्य जनों को यश रूपी अमृतपान कराने वाला है।

शुद्ध संखिया लाल डली	१ छटांक
अशुद्ध भल्लातक	५ सेर
मिट्टी की	एक बड़ी हांडी

विधि—भिलावों को कूटकर रखलें फिर २॥ सेर उक्त हांडी के अन्दर डालकर ऊपर १ छटाक संखिया डली रखकर फिर शेष २॥ सेर भिलावे ऊपर देकर हांडी का मुख बन्द करदे। अंगीठी पर हांडी को रख नीचे १२ घंटे मन्द-मन्द अग्नि जलावे। शीतल होने पर फिर इसी प्रकार से तीन बार पाक करके रखले, इस संखिया की डली को पीस कर रखें।

प्रयोग—आमवात, गृध्रसी, सर्वांगवात, कफरोग, स्नायु की कमजोरी, सर्व शरीर कम्प, शिर:कम्प में विशेष लाभ करता है।

मात्रा—१ चावल से २ चावल तक।

अनुपान—मलाई, मक्खन, या मधु से प्रातःकाल ही दे।

पथ्य—घी दूध रोगी को खूब खाने पीने को देवें।

स्व. वैद्य गोपाल जी कुंवर जी ठक्कुर आयुर्वेदाचार्य

सम्पादक—"आरोग्य सिन्धु" करांची।

के

उपयोगी प्रयोग

बालरोग में—

गोदन्ती हरताल भस्म	१० तोला
गन्धक आमलासार (दूध से शुद्ध किया)	२ तोला

विधि—दोनों को खूब बारीक पीसकर शीशी में भर कर रख ले।

व्यवहार—२ रत्ती से ३ रत्ती तक।

अनुपान—मधु, घृत शर्करा पानी किंवा दूध से दिन में दो से चार बार दे।

गुण—ज्वर, अतिसार, मन्दाग्नि, अरुचि, उलटी, वायु कृशता आदि सर्व रोग दूर होते हैं।

मन्दाग्नि में—

हिंग्वाष्टक चूर्ण	२ तोला
सोडाबाई कार्ब	२ तोला
बड़ी हरड़ का चूर्ण	२ तोला
शङ्ख भस्म	१ तोला
नीबू का क्षार (सत्व)	६ माशा
यवक्षार असली	६ माशा

विधि—इनको बारीक कर सबको मिलाकर कार्क वाली शीशी में सुरक्षित रखे।

व्यवहार—६ माशे की मात्रा में गरम जल से दें।

गुण—मन्दाग्नि, अरुचि, वायु, कब्ज, अफरा, शूल, गुल्म, वायु, अजीर्ण आदि पेट के रोगों मे उत्तम है।

ज्वर में—

लालगुड़ा	६ रत्ती
सत्व गिलोय	६ रत्ती
शृंग्यादि चूर्ण	१२ रत्ती
फुलाई हुई फिटकरी	६ रत्ती

—सबको मिलाकर इसकी चार मात्रा कर लें, ज्वर के दो घण्टे पूर्व १ मात्रा पानी के साथ देने से ज्वर मे आराम होता है। यह दवा ज्वर कम करने या उतारने का ठीक काम करती है।

० शीत पित्ते—

महामंजिष्ठादि काथ का अर्क	६० तोला
सुवर्णक्षीरी का क्षार	१। तोला

विधि—इन दोनो को मिलाकर १ बोतल में भर दे। ये २० मात्रायें है।

व्यवहार—रोज प्रात.-सायंकाल १-१ मात्रा दवा पीनी चाहिए। प्रथम विरेचन लेकर कोष्ठ साफ करले तब औषधि प्रारम्भ करनी चाहिए।

गुण—दो-तीन बोतल दवा से पुराना रोग दूर होकर शरीर स्वच्छ होता है।

—शेषांश पृष्ठ ५०० पर।

आयुर्वेदबृहस्पति श्री पं. शिवशर्मा

आयुर्वेदाचार्य, बम्बई

का

एक उपयोगी प्रयोग

गृध्रसी में वातहर स्नेह–

किसी एक या दोनों ओर की बड़ी स्नायु में शोथ प्रदाहादि होने के कारण तीव्र पीड़ा हो तो उसे गृध्रसी (Sciatica) कहते हैं। क्योंकि आयुर्वेद में सम्पूर्ण स्नायु तन्तु वायु-धातु के ही अन्तर्गत हैं और वेदना विकृति वायु का ही उपद्रव है, इस कारण गृध्रसी स्पष्ट रूप से ही वात रोग है।

वाताशय को स्वच्छ रखना, ऊष्मा और स्निग्धता द्वारा वायु के कोप को शान्त करना यही इस व्याधि की चिकित्सा है।

महारास्नादि क्वाथ में एरण्ड तैल को स्नेह पाक विधि से सिद्ध करलें तो 'वातहरस्नेह' तैयार है।

गुण में यह स्नेह ऊष्ण भी है स्निग्ध भी है, तथा कुछ रेचक भी है। इसमें एरण्ड तैल का रेचक गुण कुछ हीन हो जाता है इससे यह औषधि रोगी को देर तक पिलाई जाती है और दस्त या मरोड़ का भय नहीं रहता।
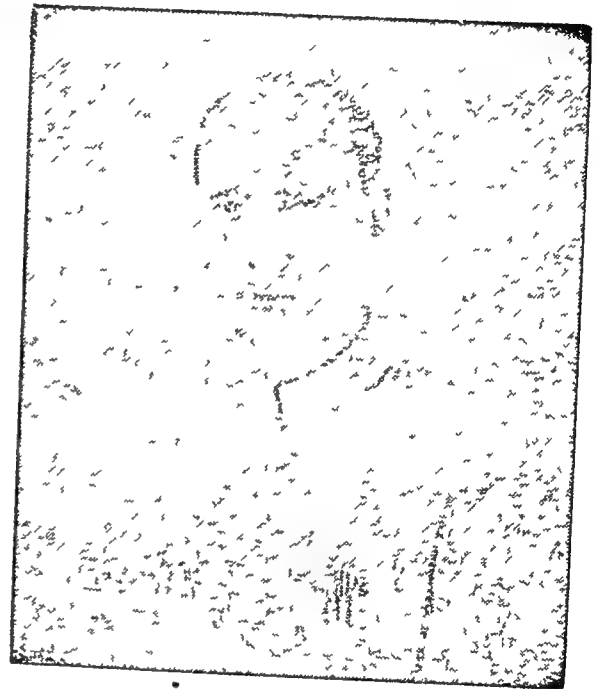
मात्रा—एक छोटे चमचे (Tea Spoon) से एक बड़े (Table Spoon) तक प्रातः और रात्रि को, इसे रोगी को दिन में दो बार देना चाहिए।

:: पृष्ठ ४९९ का शेषांश ::

प्रदर रोग में—

गोदन्ती हरताल भस्म
चन्द्रकला रस
बबूल की पत्ती का चूर्ण
त्रिवङ्ग भस्म
—प्रत्येक ६-६ माशा
बबूल की फली का चूर्ण — १। तोला
पुष्यानुग चूर्ण — १। तोला
गोखुरु (बड़ा) की पत्ती का चूर्ण १॥ तोला।

विधि—इनको बारीक पीसकर कपड़छान कर रख ले।

व्यवहार—६ रत्ती से १२ रत्ती। दिन में तीन बार जासुन्द के शर्बत या केवड़ा के शर्बत या चावल के धोवन (पानी) के साथ दें।

गुण—रक्त या श्वेत प्रदर व दुर्बलता दूर करता है।

कविराज श्री उपेन्द्रनाथ दास भिषगाचार्य

पहाड़ी धीरज, सदर बाजार, दिल्ली ।

के

अत्युपयोगी प्रयोग

नाड़ी व्रण (नासूर)—

आधुनिक डाक्टर नासूर की चिकित्सा करने के लिए पहिले चीरा लगाकर व्रण फैला लेते हैं, तब शोधन औषधि से ड्रेसिङ्ग करते हैं। अथवा *Probe* में शोधन औषधि लगाकर नासूर के अन्दर औषधि भर देते है। किन्तु यह दोनों विधिया अति कष्टदायक, देर मे लाभ करने वाली अधिक व्यय साध्य हैं। मैंने इसके लिए ऐसा प्रयोग अनुभूत किया है जिससे बिना कष्ट के आराम हो जाता है और व्यय भी अल्प होता है। सर्व साधारण के हितार्थ उसे मैं आगे प्रकाशित करता हूँ।

तिल तैल	१ सेर
जंगाल	१ तोला
कपूर	२ तोला

निर्माण विधि—पहले तैल कढ़ाही मे गर्म करना चाहिये, जब झाग मिट जावे तब जगाल का बारीक चूर्ण करके तैल मे डालें। इससे कुछ झाग आवेंगे। झाग मिटते ही कपूर का चूर्ण छोड़े और डालते ही कढ़ाही को उतार कर थोडी देर करछी से घोटे। ठंडा होने के बाद ऊपर-ऊपर जो नील रङ्ग का स्वच्छ तैल मिलेगा उसी को प्रयोग मे लें और नीचे का मैला तैल छोड़ दें।

नासूर बहुत मोटा हो तो इस तैल मे गाज (*Gauze*) भिगोकर शलाका से नासूर के अन्दर भर दे। अन्यथा पिचकारी द्वारा तैल नासूर में प्रवेश करे। यदि घाव से पीव अधिक हो तो तीन चार बार लगावें नहीं तो दो बार (प्रातः सायं) लगाना चाहिये।

उपयोग—दुष्टव्रण, विद्रधि व्रण आदि मे भी इस तैल को लगाने से बहुत लाभ होता है। इस तैल मे रुई भिगोकर घाव पर रख देना चाहिये। इस तैल का प्रयोग करते समय पानी नहीं लगाना चाहिए। व्रण को धोने की आवश्यकता नहीं है। नासूर या जख्म के चारों ओर शोथ

या दर्द हो तो अलसी पीस कर गर्मकर, लेप करना चाहिये, पीठ पर होने वाली प्रमेह पिडिका जल्दी अच्छी हो गई हैं। नासूर मे तैल इस प्रकार भरना चाहिये कि जख्म के सब स्थानो पर तैल भली भांति लग जावे।

निर्गुण्डी तैल

यह तैल नाड़ी व्रण की चिकित्सा के लिए प्रसिद्ध तैल है। जिन-जिन वैद्यो ने इसका एक बार प्रयोग करके देखा है वे सभी इसके गुणो को नहीं भूल सकेंगे। निर्माण विधि से मालूम होता है कि तैल साधारण है लेकिन इसके गुण असाधारण है। एक रोगिणी के कान के अन्दर नासूर हो गया था। नासूर का आदि या अन्त कुछ भी नहीं देखा जाता था। कान के अन्दर से रोज करीब १० तोला पीव आता था सारे शिर और मुख पर शोथ बहुत हो गया था। ऐलोपैथिक अस्पताल मे जवाब दिया जा चुका था, कि आपरेशन के सिवाय कुछ क्रिया इस पर नहीं हो सकती और स्थान भी ऐसा है कि आपरेशन करने से प्राण की रक्षा होगी या नहीं इसमें भी पूरा सन्देह है। इस उत्तर को सुनकर रोगिणी की चिकित्सा के लिए मुझे बुलाया गया। मैंने कान मे निर्गुण्डी तैल की पिचकारी लगाई। १०-१५ दिन प्रयोग करने पर ही रोगिणी अच्छी हो गई। तैल बनाने की विधि यह है।

—निर्गुण्डी (सम्भालू) मूल पत्रादि (अथवा केवल पत्ते) का स्वरस २ सेर निकाल ले। एक सेर तिल तैल को तब तक गर्म करना चाहिए जब तक फेन (झाग) रहित न हो जावे। इस निष्फेन तैल को शीतल कर, निर्गुण्डी स्वरस उसमे डालकर मन्दाग्नि से पकाना चाहिए। पकाते समय खूब घोटना चाहिए कि कढ़ाही से न लग जावे। किसी के मत मे तैल से निर्गुण्डी स्वरस चौगुना डालना लिखा है। "अधिकन्नैव दोषाय" इस न्याय के अनुसार यदि चतुर्गुण निर्गुण्डी स्वरस डाला जाय तो और भी उत्तम है। जब तैल मात्र शेष रह जावे तो छानकर बोतल में भर लें, इस तैल का प्रयोग करते हुए भी पानी जख्म पर नहीं लगाना चाहिए। न घाव को धोना चाहिए।

नाड़ी व्रण को खोलना हो तो चाकू से चीरा न लगाकर क्षार लगाना अच्छा है क्योंकि चाकू का व्रण देर में भरता है साथ ही सेप्टिक होने की आशंका भी रहती है। इसलिए क्षार को सूत्र मे लगा कर नासूर के अन्दर प्रविष्ट कर देना चाहिए, त्वचा उथली नासूर मे केवल चमड़े के ऊपर क्षार लगाने से भी कट सकता है। क्षार प्रयोग करने के लिए रसायनसार मे लिखा हुआ ग्रन्थि भेदन क्षार बहुत अच्छा मालूम पड़ा है। इसको बनाने की विधि निम्न प्रकार है—

ग्रन्थि भेदन क्षार

अनबुझा चूना   सज्जीक्षार

—दोनो १-१ सेर

—इन दोनो को एक खुले मुख वाले मिट्टी के बर्तन मे २० सेर पानी मे छोड़कर ऐसे स्थान पर रखना चाहिए कि सारे दिन धूप लगे और रात्रि मे चन्द्रमा की शीतल किरणे लगती रहे। नित्य प्रति एक लकड़ी के डण्डे से एक बार हिला देना चाहिए। (हाथ डालने से हाथ जल जायगा) ऊपर के नितरे हुए जलको १५-२० दिन बाद एक कढाही में लेकर धीरे-धीरे पकाना चाहिये। जब कुछ गाढ़ा होना प्रारम्भ हो तब रसोन (लहुसन) का रस १ पाव डालकर ऐसा पकावे कि न तो पतला रहे और न अधिक कठोर हो जावे। इसको शीशी मे बन्द करके रखना चाहिए। कभी इससे हाथ नहीं लगाना चाहिए यह क्षार पके हुए फोड़े को २-३ मिनट मे फोड़ देता है। सड़े हुए घाव मे लगाने से शीघ्र ही व्रण की शुद्धि हो जाती है। व्रण के शुद्ध स्थान मे इसे नहीं लगाना चाहिए। शरीर मे कहीं भी मस्सा या विकट दाद हो तो इससे घाव होकर

—शेषांश पृष्ठ ५०६ पर।

स्व० श्री बाबू हरिदास जी वैद्यराज

लेखक—चिकित्सा चन्द्रोदय,

के

सफल अनुभूत प्रयोग

चैत के महीने में दूध पीने वाले बालकों को खून साफ करने वाली औषधि देनी चाहिए। ऐसा करने से चेचक जोर नहीं करती। अगर लगातार चार महीने प्रतिवर्ष रक्तशोधक औषधियां माता, बच्चे अथवा दोनों पीवें तो चेचक निकलेगी ही नहीं। अगर निकलेगी भी तो बिल्कुल साधारण।

शाहतरे का अर्क, सरफोंका का अर्क, खूबकला और माद्दे उन्नावों का शर्बत इस काम के लिए उत्तम है। शाहतरे या पित्तपापड़े अथवा सरफोंका का अर्क भभके से खिंचवा लेना चाहिए। तैल, मिठाई और मांस से परहेज रखना चाहिए।

चैत में नीम की नरम-नरम कोपले पानी में घोट कर और छान कर पीने से खून-फिसाद एवं वात, पित्त और कफ के रोग नाश होते है। केवल नीम से अनेक रोग नाश होने के सम्बन्ध में हमने चिकित्सा चन्द्रोदय दूसरे भाग में विस्तार से लिखा है।

अगर बालक दूध पीता हो और चेचक का मौसम हो तो बालक की माता को प्रत्येक दिन ४ तोले गोला या खोपरा खिलाओ। प्रथम तो माता निकलेगी ही नहीं अगर दैवात निकलेगी तो जोर नहीं करगी।

चेचक के मौसम मे बालकों को घोड़ी का दूध पिलाना, ३-४ सेमर के बीजो को निगलवादे। अथवा छिली हुई मुरैठी ६ माशा और अनारदाना ६ माशा दोनों को औटा, मलछान कर पिला देना तथा ऊपर से शाहतरे का अर्क पिला देना बहुत ही उत्तम है। ऐसा करने से माता का डर नहीं रहता।
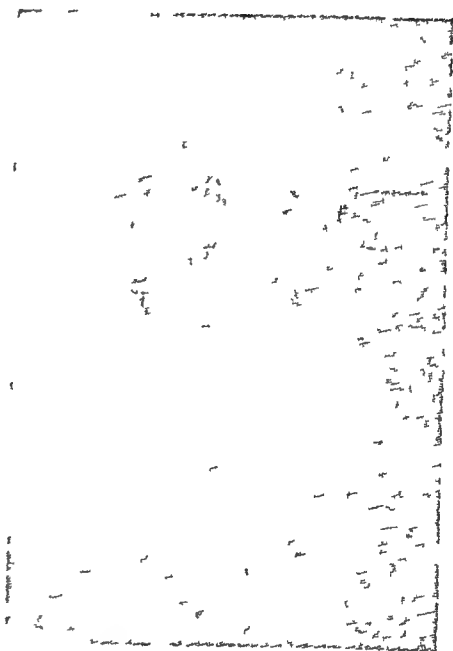
नीम के बीज, बहेड़े के बीज और हल्दी इनको समान भाग लेकर पानी के साथ पीस-छान कर कुछ दिन पीने वाले को माता का भय नहीं रहता। अन्न खाने वाले बालकों को यह प्रयोग हर ऋतु मे महीने दो महीने पिलाना अत्यन्त लाभप्रद है। प्रथम तो चेचक निकलती नही या कम निकलती है, इसमे किंचित भी सशय नहीं।

स्त्री या कन्या के बाये हाथ मे और पुरुष के या लड़के के दाहिने हाथ मे 'हरड़ का बीज' बाध देने से माता का भय नहीं रहता।

माता का जोर कम करने के लिए बनकेले के बीज भैस के दूध मे पीस-छान कर पिलाना परम लाभदायक है।

बम्बई के अस्पतालो के डाक्टरों ने परीक्षा करके लिखा कि केले का बीज चेचक को रोकने के लिए बड़ा उपकारी साबित हुआ है। हमने अर्जुन में यह प्रयोग देखकर दो साल तक इसकी परीक्षा की और इसे ठीक पाया।

/ चेचक से बचने के लिए केले के आठ बीजों का करीब ५ रत्ती चूर्ण शहद या दूध के साथ एक बार भी खा लिया जावे तो १ साल तक माता नहीं निकलती। १ से ५ वर्ष के बालक के लिए १। रत्ती और ५ से १५ साल तक के लिये २॥ रत्ती केले का चूर्ण देना चाहिए। १६ साल या ऊपर वालों को ५ रत्ती देना चाहिए।

चेचक से छुटकारा पाने के लिए, बड़ों को केले के बीजो का चूर्ण ५ रत्ती, शहद के साथ दिन में दो बार दें। अवस्था देखकर तीन से पाच दिन तक दे। रोगी को हल्का भोजन, ठंडी हवा, कोई शर्बत दें। हल्की चादर उढ़ाओ गरम वस्तुएं खाने को मत दो। यह अर्जुन में छपा था।

हमारा अनुभव

हमने केले के बीज मगाकर अपने बालको को खिलाए, उस साल चेचक नहीं निकली, यद्यपि नगर मे इतना जोर था कि जमुना मे नहाने वालों से बालको की लाशें टकराती थीं, जिस साल हमारे पास केले के बीज नहीं रहे, हमने उपेक्षा की कलकत्ते से नहीं मगाए, उस साल हमारे बालको के चेचक निकली। अनेक ऐसे बालकों को माता निकल आने पर बीजों का चूर्ण खिलाया, जिनका शरीर सूज गया था उनके बचने की कोई आशा नहीं थी वे स्वस्थ हो गये। अपने बालको को माता भर जाने पर केले के बीजों का चूर्ण खिलाया तो माता ढल गई और सूख गई। वास्तव में केले के बीजो का चूर्ण माता के रोकने और निकल आने पर आराम करने के लिए अमृत है।

पुत्र राजेन्द्र को माता रूपी मृत्यु से—
बचाने वाला प्रयोग।

पटोलपत्र गिलोय अड़ूसा
नागरमोथा धनियां जवासा
चिरायता नीम की छाल
कुटकी पित्तपापड़ा

—प्रत्येक ३-३ माशा

—लेकर जौकुट करले और डेढ़ पाव जल डालकर मन्दी अग्नि से मिट्टी के बर्तन में पकावें। जब चौथाई जल रहे उतार कर मल-छान लें और रख लेवें। रखने का बर्तन भी मिट्टी का ही हो। इसमें से १-१ चम्मच १४-१५ मिनट में पिलावे। प्रात. का पकाया सायं तक, सायं का पकाया रात भर (जागने की हालत में) पिलावे। इस काढ़े से बिना पकी माता नष्ट हो जाती है और पकी हुई ठीक हो जाती है। इससे अच्छी दवा विस्फोटक ज्वर और शीतला को सब उपद्रवों के शान्त करने में दूसरी नहीं है।

नीम की छाल पित्तपापड़ा
पाढ़ कड़वे परवल कुटकी
सफेद चन्दन लाल चन्दन
खस आमले अड़ूसे के पत्ते
या जड़ की छाल लाल धमासा

—प्रत्येक ३-३ माशा

—लेकर डेड़ पाव जल मे मिट्टी के पात्र मे पकावें और चौथाई जल रहने पर छान कर मिश्री मिलाकर १-१ चम्मच आध-आध घटे से अवस्थानुसार पिलावे। इस काढ़े से सब दोषो से पैदा होने वाली माता, ज्वर और विसर्प सहित नष्ट हो जाती है।

माता पर लेप—

यदि माता के दानो में दाह या जलन हो तो सिरस की छाल, पीपल वृक्ष की छाल, लिसोड़े की छाल और गूलर की छाल। इनको कूट-पीस कर और छान कर गाय के घी से मिलाकर चेचक के दानो पर लगावें। फौरन जलन शांत होगी।

जिस माता में पीप बहता हो, जो चारों ओर फैली हो, उस पर दशांग चूर्ण लेप करो या ऊपर से बुरको।

दशाङ्ग चूर्ण का योग—

बच	हींग	वायविडङ्ग
सेंधा नमक	-	गजपीपल
पाठा	अतीस	सोंठ
कालीमिर्च		छोटी पीपल

—सब समान भाग

—इन सब औषधियों को कूट-पीसकर महीन कपड़े में छान ले। काजल के समान हो जावे तब बहती हुई माता के दानों पर बुरको। अगर माता के दाने फैले हुए हों, पीप बहता हो तो उसी पिसे छने चूर्ण को जल के साथ पीसकर लेप कर दें। यह लेप परमोत्तम है। इसके लेप से चूहे आदि अनेक विषैले जीवों का विष भी दूर हो जाता है।

यदि नेत्रों में माता के कारण पीड़ा हो तो लिसौडे की छाल को पानी के साथ पीसकर आंखों पर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करे। फिर आंखों में किसी तरह की खराबी का भय नहीं रहता।

मुलेठी	बहेड़ा	आमला
मूर्वा	दारुहल्दी	नीलकमल
खास की जड़	लोध	मजीठ

—इनको समान लेकर पीस कूठ और छानकर पानी के साथ पीस लेवे और आंखो पर लेप करे अथवा नेत्रों के अन्दर लगावे। इससे माता नष्ट हो जावेगी और फिर भय न रहेगा।

माता में क्लेद और स्राव हो (बहती हो) तो उस पर पञ्चवल्कल का चूर्ण यानी, बड़, पीपल, गूलर, पाकर, मौलश्री की छालों का चूर्ण घावों पर बुरके, बहुत शीघ्र लाभ होगा।

खैर और विजयसार की लकड़ी, इनको लेकर जौकुट करले, फिर दो ढाई-सेर पानी डाल मिट्टी की हांडी में औटा ले। फिर छानकर एक साफ कोरी हांडी में भरकर रख देवें। रोगी को यही जल पीने को दें। यदि गले में कष्ट होगा तो वह दूर हो जावेगा, प्यास आदि उपद्रव शान्त होंगे।

खैर और लिसौढ़े की छाल को जल में औटा कर छान लो और रख दो। माता-रोगी मल त्याग को जावे तब इसी जल से मल शुद्ध किया करे। अगर किसी समय यह जल तैयार न हो तो ऊपर के पानी से भी मल की शुद्धि की जा सकती है।

यदि पैरो की फुंसियों में बहुत जलन हो तो चावलों के धोवन से बारम्बार फुंसियों को सींचे।

निकली माता रुक जाय तो उसके निकले के उपाय

तुलसी के पत्तों के रस के साथ अजवायन पीस कर लगाने से भी अन्दर घुसी हुई माता निकल आती हैं।

नीम की छाल		पित्तपापड़ा
पटोलपत्र	कुटकी	अडूसा
धमासा	आमले	खस की जड़
सफेद चन्दन		लाल चन्दन

—इनको ३-३ माशे लेकर, डेढ़ पाव जल में, मिट्टी के बर्तन में काढ़ा बना छानकर, मिश्री मिलाकर पीने से माता-रोग, ज्वर और विसर्प आदि आराम हो जाते हैं तथा निकलकर भीतर चली गई हुई माता बाहर निकल आती है।

थोड़ी-थोड़ी जावित्री कई बार प्रतिदिन खिलाने से भी माता निकल आती हैं।

माता को पकाने के उपाय—

बादाम के दो दाने पानी में भिगोकर और छीलकर, पीसकर और जल में घोलकर पिलाने से अथवा योंही एक बादाम खिलाने से माता भर जाती है।

लाल छोटे बेरों का चूर्ण गुड़ के साथ खिलाने से वात, पित्त और कफ सब तरह की माता पक जाती हैं। यह प्रयोग सबसे अच्छा है।

श्री डा. ताराचन्द जी लोढ़ा

मैडीकल–डायरेक्टर, किशनगढ़ (राजस्थान)

के द्वारा

परीक्षित सफल प्रयोग

अजीर्ण कुशार्क—

सक्मोनियां (एलुआ)	१ तोला
सत्त इमली (टारटरिक एसिड)	६ माशा
अभाव में सत्व नीम्बू (साइट्रिक एसिड)	
उत्तम (तेज) अर्क अजवायन	
(वाष्पयंत्र द्वारा खिंचा हुआ)	१० तोला

इसका नाम 'अजीर्ण कुशार्क' है और यह प्रयोग 'धन्वन्तरि' के परीक्षित प्रयोगाङ्क (द्वितीय संस्करण) का है (पृष्ठ १५१ पर प्रयोग नं० ४६५ देखें) इसके प्रेषक श्री श्यामविहारीलाल जी शाहजहांपुर (उत्तर प्रदेश) हैं।

विधि—नं० १ एलुआ व नं० २ सत्त इमली को पृथक्-पृथक् कूटकर न० ३ अर्क अजवायन मे किसी चौड़े मुंह की वरणी या कलईदार वर्तन मे डाल दें। बारह घंटे बाद कपड़े से छान लें। सुन्दर नारङ्गी रङ्ग का अर्क तैयार होगा। मूल प्रयोग में मात्रा २ बून्द पानी से अजीर्ण मे हितकर बताया है।

हमारा अनुभव—हमने इससे अजीर्ण में कोई उल्लेखनीय लाभ नहीं देखा किन्तु वमन में बड़ा अच्छा कार्य करते देखा गया है। हम वयानुसार ६ माशे से २॥ तोला तक अर्क समभाग पानी मिलाकर २-२ घूंट, १०-१० या २०-२० मिनट के अन्तर से सभी प्रकार की वमन पर पिलाते हैं और १२ से २४ घंटे मे यह अपना प्रभाव अवश्य दिखाता है। यह द्वितीय श्रेणी का योग है। और ७५% सफल है। हमारा कम से कम २००० वमन व साधारण उदर विकारों के रोगियो पर परीक्षित है। बहुत सस्ता किंतु विश्वस्नीय व धमार्थ औषधालयों मे रहने योग्य योग है। वमन पर निश्चय से लाभ करता है। यदि साथ में यकृत-विकार (वृद्धि) व घोर अजीर्ण हो तो इसी में १०-२० बूंद तेजाब गंधक डाल देने व उसी विधि से सेवन कराने से (अब) यह गुलाबी रङ्ग का खट्टा अर्क उदर विकारों में मृदु लाभ करता है।

नोट—एलुआ तङ्ग मुंह वाली बोतल में न डालें वर्ना चिपक जावेगा और पुनः न निकलेगा।

(२)

दोनो हाथों के भुजदण्ड या विरुद्ध दिशा का भुजदंड वस्त्र से कसकर (ढीला बांधने से किञ्चित भी लाभ न होगा) बांध दें। मूल प्रयोग परीक्षित प्रयोगाङ्क (द्वितीय संस्करण) मे पृष्ठ १४७ पर है। प्रेषक श्री अंजनीकुमार जी मिश्र है। हमने कई बार परीक्षा की है। कभी-कभी तो नक्सीर को आश्चर्यजनक तेजी (जल्दी) से रोक देता है। ६० प्रतिशत सफल प्रयोग है। रक्त को २-३ मिनट मे बन्द कर देता है यदि इसके साथ खाने की, पिचकारी की, सूंघने व लेप की अन्य कोई औषधि दे दी जाय तो सोने में सुहागा होजाय।

(३)

एरण्ड की जड़ का छिलका	कूठ कड़वा
सौंठ वैतरा	—तीनों सम भाग

—तक्र मे (अभाव में पानी मे) या सिर्के में पीसकर कुछ गुनगुना कर लेप करें तो वातज शिरदर्द निश्चय व अन्य शिरःशूल भी २-३ वार के

प्रयोग से ठीक होंगे। कम से कम २०० बीमारों पर परीक्षित है। मूल प्रयोग परीक्षित प्रयोगाङ्क द्वि० संस्करण में पृष्ठ १४७ पर हैं। प्रेषक वही श्री अंजनीकुमार है।

(४)

सैंधानमक का पतला घोल (१ तोला पानी में ५ रत्ती या अधिक १ माशा तक) कुछ गर्म करके या ठंडी ही विपरीत नासा छिद्र मे टपकावे तो अर्द्धावभेदक (आधाशीशी, अर्द्धशिर-शूल, सूर्यावर्त) मिटेगा। नेत्र के ड्रापर मे भर कर रुग्ण का सिर नीचे लटकवा कर दर्द के विपरीत नासा छिद्र मे जोर से पिचकारी (कम से कम दो बार) लगाकर २-३ मिनट तक सिर को वैसे ही लटका रहने दें व हिलादें। पीछे पानी निकालदें। यह काम सूर्योदय पूर्व करें वर्ना लाभ संदिग्ध है। सौ में से ६० कैसों में पहिले ही दिन दर्द आधा रह जावेगा। ३ से ५ दिन तक प्रातः सूर्योदय पूर्व यही क्रिया करते रहने से यही प्रयोग ८० प्रतिशत सफल रहेगा। मूल प्रयोग परीक्षित प्रयोगाङ्क पृष्ठ १७० पर श्री उपेन्द्रनाथ दास जी का है। उन्होंने प्रयोग विधि संकेत मात्र लिखी है। हमने उसे स्पष्ट कर दिया है। इसी विधि से कुछ उलट-फेर कर हमने भयानक असाध्य घोपा (अनन्त०) के ऐसे बीमार भी ठीक किए हैं जिनकी आंखें ही बाहर लटक आई थी।

(५)

गांजा	१ तोला
लालमिर्च	४ तोला
सरसों का कच्चा तैल	१ सेर

—बिना जल के तैल सिद्ध करलें व गर्म कर मालिश करें। वातज व चोट के दर्द, शीतांग में मालिश करें। इससे चवके बड़ी जल्दी मिटते हैं। यह कम से कम ३०० रोगियों पर परीक्षित है। भारी दर्दों मे सफल नहीं है। साधारण दर्दों में ५० प्रतिशत सफल प्रयोग है। तृतीय श्रेणी का प्रयोग है और परी० प्रयो० पृष्ठ १७० पर है।

(६)

भुना तूतिया कत्था चूल्हे में कोयला किया हुआ —सम भाग

—इन्हे बारीक करलें व मंजन की तरह व्यवहार करायें। दिन में ३-४ बार। ठंडे पानी मे तत्काल कुल्ले न करवायें। सम्भव हो तो गुनगुना पानी प्रयोग करें। ४-५ दिन तक बराबर प्रयोग करावें हल्के हाथ से। दांत दर्द के लिए ५० प्रतिशत सफल प्रयोग है। कम से कम ५०० रोगियों पर परीक्षित है। मूल प्रयोग परी० प्रयो० द्वि० संस्करण पृष्ठ १८३ पर श्री गोपीनाथ जी गुप्त का है। तुरन्त आराम की बात गलत है।

(७)

हींग उत्तम	१ माशा
नौसादर	१ तोला
सैंधानमक	१ तोला
अर्क सौंफ (तेज)	५० तोला

इसका नाम 'अर्क जौहर' है एवं गुप्तसिद्ध प्रयोगाङ्क तृतीय भाग के पृष्ठ ७३६ पर श्री पं० जगदीशचन्द्र शर्मा पानीपत द्वारा प्रेषित है। उन्होंने तो सभी उदर रोगों पर उत्तम बतलाया है किन्तु हमने लगभग दो सहस्र रोगियों पर परीक्षा की है। तृतीय श्रेणी का योग है एवं ४० प्रतिशत सफल प्रयोग है।

निर्माण विधि—हींग को थोड़े से अर्क सौंफ में घोंटले और सारे अर्क मे मिलादे, शेष दोनों भी पीस कर मिलादें व बोतल को खूब हिलालें। श्वेत दूधिया रङ्ग का अर्क होगा जो स्वादिष्ट भी होगा। ५ तोला से १० तोला अर्क पीने से मृदु कोष्ठ वाले वाले को दस्त साफ आवेगा। दिन भर में आध सेर (४० तोला) तक यह अर्क पिलाया जा सकता है, साधारणतया दीपक पाचक है।

(८)

पोटाश परमेंगनेट	१ औंस
टिंक० आयोडीन	१ औंस

वोरिक एसिड	१ औंस
नौसादर	२ तोला
कलमी शोरा	२ तोला
गधंक	२ तोला

—कूटने योग्य दवाओं को कूट कर पानी ६० तोला में मिलादे व हिलादें, एक जीव हो जाने पर चौमासे के फौडे फुन्सियों पर लगावें। बहुत सस्ता अर्क है। ६० प्रतिशत सफल है। थोड़ा बहुत सभी चर्म रोगों में लाभदायक है। मूल प्रयोग गुप्तसिद्ध प्रयोग।ङ्क द्वितीय भाग पृष्ठ ४७० पर पं० पी. एन. झांसी द्वारा प्रेषित है। दद्रु पर कार्य नहीं करता। कम से कम ५० रोगियो पर परीक्षित हैं।

(९)

जम्भीरी का रस	२॥ सेर
भुनी हींग	२ तोला
अजवायन	सोंठ वार की
छोटी पीपल	कालीमिर्च
सेंधानमक वायविडङ्ग	लौंग
शोरा कलमी	हरड़ छोटी

—प्रत्येक ५-५ तोला

राई	१० तोला
शुद्ध गन्धक	२॥ तोला
शङ्खभस्म	१ तोला

—सबको महीन कर रस में डाल एक माह तक बन्द कर रखें। पीछे हिलाकर योंही या समभाग पानी या अर्क अजवायन या अर्क पोदीना मिलाकर ६ माशे से १॥ तोला तक पिलावें। पेट का भारीपन, अफरा, अजीर्ण, क्षुधानाश उदरशूलादि पर उत्तम है।

कम से कम ५०० रोगियो पर परीक्षित है। उदर रोगों के लिए वास्तव में प्रशंसनीय है। ७५% सफल प्रयोग है। मूल प्रयोग—गुप्तसिद्ध प्रयो० पृष्ठ ६ पर जम्भीर द्राव नाम से श्री. ला नारायणदास जी का है, अन्तिम दो द्रव्य हमने बढ़ाये हैं। हम १० तोला रोज तक पिलाते है। हरड़ रहित जम्बीर-द्राव से हमने अन्न बन्द कर और केवल यही पिला कर पुराने सग्रहणी रोगियों को आराम किया है। मन्दाग्नि पर रामबाण है।

(१०)

गन्धा बहरोजा गीला	४० तोला
जङ्गाल	½ तोला
सेंधानमक	२ माशा
तूतिया भुना	४ रत्ती
हल्दी चूर्ण भुना	४ माशा
सफेदा काशगरी	१ तोला
राल मुर्दाशङ्ख	सिंदूर

—प्रत्येक १-१ तोला

—इसका नाम बिरोजे का मलहम है और मूल प्रयोग श्री शङ्करदत्त जी गौड़ जबलपुर वालों का धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग के पृष्ठ १४० पर है। अन्तिम तीन द्रव्य हमने बढाये है।

निर्माण विधि—गन्दे बहरोजे को गर्म कर कपड़े में छान ले एवं अन्य सब द्रव्य महीन मिलाकर पांच मिनट बाद आग से उतार लें। चौथी बना चिपका दें। फोड़े, फुंसी में मवाद न आया होगा तो बैठ जावेगा। मवाद पैदा हो गया होगा तो फूटकर ठीक हो जावेगा। साधारणतया प्रयोग ठीक है। ६०-६५% सफल है। ५०० रोगियों पर परीक्षित।

(११)

चोपचीनी	उशबा असली
अनन्तमूल सनाय	बड़ी हरड़ का बक्कल
मुलहठी	श्वेत मूसली
असगन्ध नागौरी	गोरखमुंडी
गिलोय छालकचनार	छाल नीम
छाल शीशम	सत्यानाशी

—प्रत्येक १-१ तोला

सौंफ मजीठ	लालचन्दन
सफेद चन्दन	उन्नाव (बीज रहित)

लौंग —प्रत्येक ४-४ माशा

गुलाब पुष्प दालचीनी
छोटी इलायची के बीज (दाने) निशोथ
कड़वेचिरायतेकीपत्ती पोटाशआयोडाइड

—प्रत्येक ६-६ माशा

—इन सब औषधियों (आयोडाइड के बगैर) को कूटकर मिट्टी या कलई के बर्तन में २॥ सेर पानी में भिगो दे। २४ घण्टे बाद औटाकर एक सेर पानी रह जाने पर मसल कर छान ले व पोटाश भी मिला दें। ५-५ तोला सुबह शाम पिलावे। प्रत्येक प्रकार के रक्तदोष, मन्दाग्नि कब्ज, पारे के घाव, आतशक का विष, फोड़ा फुन्सी नष्ट होते है। मूल प्रयोग अनुभवांक पृष्ठ १५ पर श्री बाबू हरिदास जी मथुरा का है। ६०% सफल योग है, मध्यम श्रेणी का योग है। अन्तिम ८ द्रव्य हमने बढ़ाये है। प्रमेह पर हमने कभी नहीं प्रयोग किया। कम से कम ५०-६० रोगियों पर परीक्षित है।

(१२)

काली गौ के कपड़छन गौमूत्र मे १/४ हिस्सा उत्तम केशर घोटकर मिलादे और धान्य राशि मे बन्द कर रख दें। आठ दिन बाद निकालकर उत्तम मांडूर भस्म २-२ रत्ती शहद में चटाकर ऊपर से यही गौमूत्र ३० बूंद पिलादे। रक्त की कमी (शोष) यकृत्-विकृति ठीक होगे। कम से कम एक माह तक दें। ५०-६० बच्चो पर परीक्षित है। मूल प्रयोग धन्वन्तरि बालरोगांक पृष्ठ ३३७ पर पं० सूर्यमणि जी पांडे का है। ६०-६५ प्रतिशित सफल है।

(१३)

साफ श्वेत कागज की राख कत्था श्वेत
बड़ी इलायची के बीज फिटकरी भुनी

—चारो समान भाग

—सबको मिलाकर बच्चो व बड़ों के मुखपाक पर बुरके। कोई ५०-६० रोगियों पर परीक्षित है। ५० प्रतिशत सफल है। मूल प्रयोग बाल-रोगाङ्क पृष्ठ ३५१ पर पं० सुन्दरलाल जी शर्मा द्वारा प्रेषित है। दिन मे ५-७ बार बुरके।

(१४)

गौदुग्ध २० तोला
स्वच्छ जल २० तोला
मिर्च लाल सूखी ४ नग

—इन सबको बर्तन में डालकर धीमी आग से पकावे जब पानी जलकर दुग्ध मात्र बाकी रह जावे, खूब निचोड छान कर काफी मात्रा मे (मीठा) चीनी मिलावें व गर्म-गर्म वायुशूल रोगी को पिला देवें। मिर्च वापिस साबूत ही निकाल लें। भयङ्कर वायुशूल, पेट दर्द, अफरा, कब्ज आदि में तुरत कार्यकर है। कभी कभी रोगी को कै या दस्त आकर आराम आता है और कभी-कभी कै-दस्त कुछ नहीं आता। मूल प्रयोग धन्वन्तरि भाग १५ अङ्क १० पृष्ठ ६२१ पर वैद्यराज फूलचन्द गोयल का है। प्रयोग उत्तम है एवं ६० प्रतिशत सफल है। आवश्यकतानुसार मात्रा कमावेश कर दिन में २-३ बार भी देना सम्भव है। कोई ६०-७० बीमारियो पर परीक्षित है।

(१५)

तुख्म कनोचा इसबगोल
बारतङ्ग रिहा के बीज

—प्रत्येक ३-३ माशा

—सबको ५ तोला जल मे भिगो १२ घंटे बाद मसल कपड़े मे से लुआब छानकर उसमें पिसी मिश्री १॥ तोला मिलाकर पिलावे। पहिली पुड़िया भिगोने के ४ घंटे बाद ही दूसरे बर्तन मे दूसरी पुड़िया भी भिगो देनी चाहिये ताकि ४ घंटे बाद ही दूसरी मात्रा ली जा सके। २-३ पुड़ियों मे रक्त, तृषा, दाह, निश्चय दूर होता है। २४ घटे मे ४ मात्रा (पुड़िया) देनी चाहिए। २-३ दिन में बीमार नीरोग होगा। इससे केवल पित्तज प्रवाहिका ठीक होती है। दवा शुरू करने के पूर्व साधारण रेचन से संचित आम निकाल देनी चाहिए। ६० प्रतिशत सफल है। मूल प्रयोग श्री वीरेन्द्रदेव जी बरालोकपुर का धन्वन्तरि भाग १५ अङ्क ८ पृष्ठ ७१२ पर है।

वैद्य गोवर्धनदास चागलानी,

पटियाली दरवाज़ा, एटा

के द्वारा

परीक्षित प्रयोग

श्वेत नेत्र बिन्दु —

सफेद फिटकिरी सेधानमक
मिश्री —तीनों १-१ तोला
उत्तम गुलाब जल १ बोतल (१० छ.)

निर्माण विधि—सबको पीस कर गुलाब जल में भली भांति घुला दे।

गुण—जिनकी आंखें उठ आवें या जिनकी आंखो में रोहे हो गये हो, उनकी आंख मे इस अर्क को डालकर और ऊपर इसी अर्क मे रुई का फाहा भिगोकर बांध देने से शीघ्र लाभ होता है। यह प्रयोग "धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगाङ्क" (प्रथम भाग) मे पृ. सख्या १८४ पर श्री कविराज पं० शोभालाल हीरालाल जी शर्मा A. M S, R. I. P. प्रधान चिकित्सक पोद्दार औषधालय, बिसाऊ (जयपुर) तथा "कल्याण" (गोरखपुर) के वर्ष २५ वें अङ्क १० वें पृष्ठ सख्या १३६१ पर श्रद्धेय कविराज प्रतापसिंह जी, रसायनाचार्य द्वारा प्रकाशित हुए "मानव चक्षु" नामक लेख से लिया है। मैंने इस प्रयोग को अति उपयोगी पाया है। मैं तो केवल २-२ बूंद रोगी के नेत्रो में दिन मे २-३ बार डाल देता हूँ।

नोट—इस नेत्र बिन्दु अर्क में कुछ दिनो में जाला जड़ जाता है अतः फिर छान लेना चाहिए।

श्री रामबाण तैल—

नीम की छाल (छाया शुष्क) आंवला
निर्गुण्डी (सम्भालू) बीज काबुली हरड़
बहेड़ा की छाल —पाचों ५-५ तोला
जल २ सेर

—सर्वप्रथम इन सब द्रव्यों का चतुर्थांश विशेष काढ़ा (क्वाथ) बना उतार कर छान ले। फिर इस क्वाथ मे १ सेर शुद्ध तिल तैल मिला आसन्न पाक करले और निम्न द्रव्य उपरोक्त सिद्ध तैल मे मिलाकर हल करदे।

राल मोम देशी शु. गुग्गुल
—प्रत्येक ५-५ तोला
कार्बोलिक एसिड ½ औंस

—इन सबको उपरोक्त तैल मे मिलाकर, अच्छी तरह से मर्दन करें और शीशियो मे भर कर सुरक्षित रखलें।

गुण—इसके व्यवहार से अग्निदग्ध, दुर्घटनाजन्य चोट-मोच, ८० प्रकार की भयङ्कर वात व्याधिया, कर्णशूल, पार्श्वशूल, कर्णस्राव (कान मे पीव बहना), फोड़ा फुन्सी, शरीर के किसी भी भाग मे शोथ (सूजन) इत्यादि रोगों का यह तैल दूर करता है।

मैंने यह प्रयोग "धन्वन्तरि" भाग २८ अङ्क ३ पृ. सख्या ४०६ से लिया है और कुछ सशोधन कर निम्न प्रकार से बनाकर व्यवहार मे लाया है, जो अति श्रेष्ठ प्रमाणित हुआ है।

चर्म रोग नाशक तैल १ सेर में (तैल पकते समय)

श्वेत राल गुग्गुल शिलारस
गन्धा बिरोजा (गीला) —चारों ५-५ तोला

—डालें, तैल पाक हो जाने पर "अमृतधारा" (रसतन्त्रसार जीवन रसायन अर्क) २ ड्राम और कपूर ५ तोला मिलाकर प्रवाही अर्क बन जाने पर उपरोक्त तैल में डालदें और छानकर शीशियों मे भर कर रख ले।

चर्मरोग नाशक तैल का प्रयोग "रसतन्त्रसार व सिद्ध प्रयोग सग्रह" प्रथम खण्ड का निम्न प्रकार है—

नीम की छाल चिरायता
हल्दी दारुहल्दी त्रिफला
लाल चन्दन अडूसे के पत्ते
—प्रत्येक २-२ तोला

त्रिफला ६ तोला

—सबको पीस थोड़ा जल मिलाकर चटनी की तरह कल्क बनावे, यह कल्क किसी कलईदार कढ़ाई मे रखकर उसमे तिल का तैल १ सेर और नीम के पत्तो का क्वाथ ४ सेर डालकर औटावे, अब उपरोक्त श्वेत राल, गूगल, गन्धा विरोजा, शिलारस आदि वस्तुऐं मिलाकर तैल पाक हो जाने पर अर्थात् तैल मात्र रहने पर छानकर कपूर+अमृतधारा (मूलपाठ मे कार्बोलिक एसिड लेकिन मैने अमृतधारा लिया है) डालकर डाटदार शीशियो मे भर कर रख दे।

वक्तव्य—यह प्रयोग मैंने दुर्घटनाजन्य चोट-मोच और घावो मे अति उपयोगी पाया है, जहां एलोपैथी की "एक्रीफलेवन आदि ८ दिन मे घाव को भरती है वहां यह तैल ३-४ दिन मे घाव को भर देता है। यह तैल फोड़ा-फुन्सी कान के रोगो मे भी मैने प्रयोग किया है और अति उपयोगी पाया है। मूलपाठ मे मोम भी लिखा है। लेकिन तैल मे मोम मिलाने से तैल जम जाता है, अत. मैने मोम नहीं मिलाया इस तैल का नाम मूलपाठ मे 'सप्त गुण तैल' है "रसतन्त्रसार व सिद्ध प्रयोग संग्रह में इस तैल का नाम "घाव का तैल" तथा "पचगुण" तैल रखा है। घाव इत्यादि मे रामबाण सदृश्य कार्य करने के कारण मैंने इसका नाम "श्री रामबाण तैल" रखा है। मेरा तो सर्व वैद्य महान् भावों से निवेदन है कि ऐसे ही प्रयोग रत्नो को दिल खोल कर प्रकाशित करावे, जिससे आयुर्वेद तथा उनके अनुयाइयों का नाम उज्जवल होवे।

प्रवाहिका नाशक वटी—

फिटकिरी का फूला सफेद राल
—दोनो २-२ तोला

सोना गेरु	१ तोला
अनार के फल का छिलका	१ तोला
पोस्त का डोडा	१ तोला
काला नमक	६ माशा
सोंठ	१ तोला

निर्माण—सबको पीस कर जल से घोटकर ४-४ रत्ती की गोलिया बनाकर सुखाकर रखलें।

मात्रा—१ से २ गोली जल से दिन मे ३-४ बार अवस्थानुसार दे।

वक्तव्य—यह प्रयोग मैंने "धन्वन्तरि" गुप्तसिद्ध प्रयोगाङ्क (प्रथम भाग) पृ० संख्या ६६ से लिया, और प्रयोग किया। वात कफ प्रधान प्रवाहिका पर तो अच्छा काम किया, लेकिन रक्तपित्त प्रधान प्रवाहिका पर संतोषजनक लाभ दिखाई न दिया, अत: दुबारा बनाने पर उसमे फिटकिरी का फूला सफेद राल और सोना गेरू मिलाकर गोली बनायी (मूलपाठ मे इन तीनों वस्तुओ को छोड़ कर शेष वस्तुओ का चूर्ण बनाने को लिखा है) यह प्रवाहिका नाशक वटी—आमातिसार तथा रक्त प्रवाहिका पर अति उत्तम साबित हुई है। बहुत शीघ्र फल दिखाती है। गर्भवती स्त्रियो तथा बच्चो को भी दी जा सकती है।

विषमज्वरारि वटी—

गोदन्ती भस्म	१ तोला
करंज की मींग	१ तोला

सोना गेरू	१ तोला
फिटकिरी सफेद का फूला	१ तोला
कलई (चूना) बुझा हुआ	१ तोला

निर्माण विधि—तुलसी पत्र स्वरस तथा गिलोय स्वरस में घोट कर चना प्रमाण (२-२ रत्ती की) गोली बनाकर सुखा कर रखलें।

मात्रा—१ से २ गोली दिन भर में ३-४ वार ज्वर के आने के पहिले १-१ या २-२ घण्टे पर गर्म जल से देवें।

वक्तव्य—मैंने इन गोलियों को कई वार बनाया है और बराबर प्रयोग मे ला रहा हूँ। मैं इन गोलियों को गर्म जल मे 'अमृतधारा' ४-६ बून्द डालकर उसके साथ दिलवाता हू और अब की वार इस प्रयोग मे कपूर मिलाने का विचार है जिससे 'अमृतधारा' अनुपान की आवश्यता नहीं रहेगी। मैं तो लौट-लौट कर आने वाले ज्वर मे भी इसका प्रयोग करता हूँ। वैसे भी साधारण ज्वर में पहिले 'त्रिभुवन कीर्ति रस' 'आनन्द भैरव रस' आदि मिश्रण देने पर ज्वर उतर कर ६७॥ डिग्री या इससे कुछ कम होने पर "विषम ज्वरारि वटी' का प्रयोग कराने पर फिर ज्वर आने का भय नहीं रहता। विषम ज्वर मे उदर को शोधन कर (विरेचन देकर) 'मृत्युंजय रस, गोदन्ती भस्म, फिटकिरी का फूला, प्रवाल पिष्टी का मिश्रण ज्वर की अवस्था मे तथा ज्वर आने जाने वाले पर आने वाले वेग को रोकने के लिये 'विषमज्वरारि वटी' का प्रयोग अमृतधारा जल से करता हूँ जो अच्छी गुणकारी प्रमाणित हुई है। अत इसके लिये इस प्रयोग के मूल लेखक श्री वैद्यराज इन्द्रमणि जी जैन, वैद्यशास्त्री कनवरी गज अलीगढ़ है। यह प्रयोग मैंने 'धन्वन्तरि' गुप्तसिद्ध प्रयोगाङ्क (प्रथम भाग) पृष्ठ सख्या ८६ से लिया है।

शीतपित्त पर—

(पित्ती उछलने पर)

रस सिन्दूर	१ रत्ती
अजवाइन पिसी हुई	२ माशा
गुड़	२ माशा

—जल से दें। आवश्यकतानुसार २ घटे बाद दूसरी मात्रा भी दे सकते हैं। जिसके प्रयोग से वर्षों के शीतपित्त के रोगी स्वस्थ हो चुके हैं। यह प्रयोग मैंने 'धन्वन्तरि' गुप्त सिद्ध प्रयोगाङ्क (प्रथम भाग) तथा धन्वन्तरि भाग २४ अंक ६ पृ० सं० ५४१ से लिया है। मूल पाठ मे मात्रा इससे दूनी लिखी है। लेकिन मैंने आधी मात्रा रोगियों को दी है। उत्तम लाभ होता है।

रक्त प्रदर पर—

रस सिन्दूर	१ रत्ती
श्वेत फिटकरी का फूला	५ रत्ती

—घोट-पीस कर ४ मात्रा बनावे, ३-३ या ४-४ घंटे पर या अवस्थानुसार गाय के दूध के साथ देवें। गाय के दूध को औटा कर शीतल होने पर मिश्री मिलाकर उसके साथ दें। मैंने दूध मे रोगी की अवस्थानुसार 'अशोकारिष्ट' और 'उशीरासव' भी मिलाकर दिया है। बहुत सुन्दर योग है। यह प्रयोग मैंने 'धन्वन्तरि' भाग २४ अंक ४ पृ. सं ४३२ से प्राप्त किया है

वक्तय—यह प्रयोग मैंने अत्यार्तव (मासिक धर्म अधिक आना) रोगिणियों पर भी प्रयोग किया है और बहुत अच्छा कार्य करता है। पहिले दिन ही लाभ करता है।

प्रसवानन्तर रक्तस्राव पर—

मकरध्वज श्वेत फिटकरी का फूला

—उपरोक्त विधि से दशमूलारिष्ट के साथ देवें। यह मेरा अनुभूत है। 'धन्वन्तरि' भाग २४ अक ६ पृ. ५४२ पर मूल पाठ इस प्रकार है—

यह स्राव प्रसव के बाद दो तीन घंटे से लेकर २-३ सप्ताह के भीतर हुआ करता है। यदि यह रोग का रूप धारण करके चिन्ताजनक परस्थिति पैदा करदे तो रस

सिन्दूर (विशेषकर मकरध्वज) १ रत्ती दशमूल के क्वाथ साथ देने से शीघ्र लाभ होता है। पथ्य में दूध के साथ मुनक्का देना चाहिए। इस प्रयोग से डाक्टरों से निराश रोगी भी जीवन दान पा चुके हैं।

बनप्सादि वटी—

पत्ती बनप्सा	२ तोला
मुलहठी	१ तोला
सोठ	६ माशा
कालीमिर्च	६ माशा
पीपल छोटी	६ माशा
काकड़ा शृंगी	६ माशा
सुहागा का फूला	३ माशा
मिश्री	७॥ तोला

—सबको कूट-पीस कर पान के स्वरस या तुलसी के स्वरस मे (अभाव में जल से) घोट कर ४-४ रत्ती की गोली बनाकर सुखा कर रखलें।

मात्रा—दिन मे ५ से १० गोली तक। दिन भर मे १-१ गोली कर चूसने को दें।

गुण—कास, श्वास, प्रतिश्याय तथा वात श्लेष्मक ज्वर (इन्फ्लुएञ्जा) में अति उपयोगी है।

वक्तव्य—इस बनप्सादि वटी का प्रयोग 'धन्वन्तरि' भाग ३१ अंक ८ पृ. स. ६१५ पर मेरे लेख 'इन्फ्लुएञ्जा (वातश्लेष्म ज्वर) की सफल चिकित्सा' नामक में प्रकाशित हो चुका है। उसमें गुण वर्धनार्थ पीपल, काकड़ासिंगी और सुहागे का फूला मिलाकर प्रयोग करवाया है जो अधिक गुणकारी प्रमाणित हुआ है।

वैद्य पं. कृष्णगोपाल त्रिपाठी
व्याकरण शास्त्री
के द्वारा

एक परीक्षित प्रयोग

वेतालेश्वर का प्रलापक सन्निपात पर आश्चर्य जनक प्रभाव

नाम रोगी—चुनकू अहीर ग्राम—पचनेही (वांदा)
आयु—४० वर्ष

इतिहास—रोगी प्रौढ़ एवं वलिष्ठ था। एक दिन दिन भर पानी में रहने के बाद उसने दही शक्कर का पूर्ण भोजन कर लिया। क्योंकि उस दिन कोई व्रत था। उसी दिन रात में वह ज्वर से आक्रान्त हुआ व असम्वद्ध प्रलाप भी करने लगा। एक दूसरे वैद्य उसकी चिकित्सा करने लगे, उन्होंने सामता का ध्यान न देकर नवीन ज्वर मे ही रेचन दे दिया और रोगी की दशा और बिगड़ गई। पहिले तो उसका प्रलाप साधारण था जब कभी होश मे भी आजाता था, किन्तु अब उसका प्रलाप व तीव्र ज्वर अनरवत बढ़ने लगा, साथ ही पतले दस्त भी दो तीन होजाते थे। इतने पर भी नामधारी वैद्य उसे जबरन दूध पिलाते थे। रोगी गांव के एक पुरवे मे ही रहता था। छठे दिन शाम को गाव लाया गया और मेरी चिकित्सा में आया, सायंकल मैंने उसे देखा, ज्वर १०३ डिग्री, प्रलाप, पार्श्व में व सर्वांङ्ग में शूल था नाड़ी की गति अनियमित तथा तीव्र थी। मैंने उसे अद्रक स्वरस व मधु के साथ आनन्दभैरव दिया और दूध बन्द कराकर पूर्ण लङ्घन का आदेश दिया। सातवें दिन पार्श्वशूल की अधिकता थी व कास भी पीड़ित करती थी अत. बालुका स्वेद व पेनिसिलिन व स्ट्रेप्टो माइसीन के मिलित इन्जेक्शन की व्यवस्था के साथ हिङ्गकर्पूरवटिका (सि० यो० सं०) दी गई। इससे कुछ खांसी व पार्श्वशूल में कमी हुई ज्वर भी कुछ कम था किन्तु प्रलाप में कोई कमी नहीं हुई अत. दूसरे दिन तगरादि कषाय (भाव० प्र० नि०) के साथ ब्राह्मी वटी स्वर्णयुक्त दिन रात में ४ वार दी गई साथ ही हिंगुकर्पूर वटी भी चालू रही इससे कोई लाभ न हुआ। दूसरे दिन भी यही चिकित्सा चालू रही केवल ब्राह्मी वटी सायं प्रात. दो ही मात्रा में दी गई, बीच मे दो मात्रा कस्तूरी-भैरव, तगरादिकषाय से दिया गया। अब प्रलाप बहुत बढ़ चुका था और उसे शान्त करने के सभी उपाय (शिर में सिरका मालिश आदि) असफल होरहे थे, इतने में मेरा ध्यान धन्वन्तरि के वेतालेश्वर पर गया, जब यह निकला था तभी मुझे इस पर विश्वास था, किन्तु इसे में अब तक बना न पाया था किन्तु मेरे पास वेताल रस (रसेन्द्र) का था शीघ्र ही मैंने वेताल रस ५ रत्ती स्वर्णभस्म १ रत्ती मुक्तापिष्टी १ रत्ती शुद्ध सुहागा १ रत्ती का मिश्रण तैयार कर ८ पुड़िया बनाई और पुड़ियां रोगी को केवल शहद से सायंकल, ११ बजे रात व ४ बजे प्रात: देने का आदेश देकर घर आया। प्रभात मे मैं शय्या भी न छोड़ पाया था कि हंसते हुए रोगी के परिचारक ने आकर बताया कि वैद्य जी आपकी पुड़ियो ने रोगी की जान बचाली वह रात भर सोया है। मैंने कहा कि इसका श्रेय वैद्यराज श्री दौलतराम जी सोनी व 'धन्वन्तरि' को है

जिनके द्वारा यह योग हमें उपलब्ध हुआ। दूसरे दिन यदा कदा प्रलाप करता था अत' फिर तीन पुड़िया प्रात मध्याह्न सायं व रात्रि में, फिर दो पुड़िया ११ बजे दी गई और इस प्रकार केवल ८ रत्ती दवा के सेवन से रोगी पूर्ण स्वस्थ होगया।

मैं सगर्व कह सकता हूँ कि सोनी जी के इस योग के सामने किसी भी चिकित्सा पद्धति का कोई भी योग ठहर नहीं सकता। यदि ऐसे ही परीक्षित योगों का उद्घाटन होजाय तो विश्व की कोई भी चिकित्सा प्रणाली आयुर्वेद के सामने टिक नहीं सकती।

२. इसके अतिरिक्त जीरकाद्य चूर्ण शङ्खभस्म के साथ भोजन के बाद होने वाले आध्मान युक्त पतले दस्तों पर विशेष उपकारी है, अनुभूत है।

३. खाजनाशक मलहम देखने मे साधारण होते हुए भी साधारण कण्डू में काफी काम करता है। मैं इस समय मुक्ताभस्म विशेष का परीक्षण कर रहा हूँ अवसर पर उसके भी परिणाम प्रकट किए जायेंगे।

उक्त अनुभूत तीनों योग अगस्त १९५५ के १०२२ पृष्ठ से १०२५ पृष्ठ में है, फिर भी वेतालेश्वर का निर्माण लिख रहा हूँ।

वेतालेश्वर रस

हिंगुलोत्थ पारद	शुद्ध गंधक
शु वर्की हरताल कच्ची	स्वर्णभस्म
मुक्तापिष्टी	शुद्ध बच्छनाग
कालीमिर्च	सुहागा चौकिया

—प्रत्येक समभाग

—पारद और गंधक की निश्चन्द्र कज्जली करे। हरताल बच्छनाग और सुहागा अलग खरल मे लेकर सूक्ष्म चूर्ण करे कज्जली में प्रथम स्वर्णभस्म और मुक्तापिष्टी मिलाकर भलीभांति खरल करे, फिर हरताल, बच्छनाग और सुहागा मिश्रित चूर्ण मिलाकर खरल करे। अन्त में काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर २ घंटे अच्छी तरह खरल कर शीशी में भरलें।

मात्रा—१ रत्ती प्रति ३ या ४ घंटे पर शहद के साथ।

उपयोग—तीव्र प्रलाप में। क्षीण व ठंडे पसीने वाले को न दें।

नेत्र रोग की दवा—

सन् १९५४ ई० में 'धन्वन्तरि' में यह औषधि प्रकाशित हुई थी। दवा पूर्णत लाभकर है बोरिक एसिड १ ड्राम, ग्लेसरीन १ औंस दोनों को मिलाकर आंख मे डाले। इससे रोहा आंख का लाल होना दर्द आदि पर पूर्णत' लाभकारी है।

परीक्षक—श्री सत्यदेवसिंह वैद्य श्री सत्य औषधालय
पो० कम्हरिया घाट (फैजाबाद)

× × ×

गर्भस्राव पर—

जिन महिलाओं को गर्भस्राव की शिकायत रहती है उन मां-बहिनों को पलाश (खाखरा) के कोमल पत्ते को प्रतिमास ७ पत्ते एक के क्रम से गौदुग्ध के साथ सेवन करने से (गागर मे सागर युक्त चमत्कारी प्रयोग) पूर्ण रूपेण निश्चित लाभ होता है। शत-प्रतिशत सरल प्रयोग परीक्षित है। यह प्रयोग 'धन्वन्तरि' के प्रधान सम्पादक द्वारा 'धन्वन्तरि गुप्त सिद्ध प्रयोगाङ्क तृतीय भाग मे प्रकाशित किया गया है।

परीक्षक—जती चन्द्रशेखर वैद्यलंकार
बोलिया (म.भ.)

(चतुर्थभाग) मे प्रकाशित

प्रयोगों की रोगानुसार सूची

(अकारादि क्रम से)

(नम्बर पृष्ठ-संख्या सूचक हैं)

गुप्तसिद्ध प्रयोगांक

में प्रकाशित

विशिष्ट प्रयोगों की सूची

नोट—जिन प्रयोगो को किसी विशेष नाम से प्रकाशित किया गया है, उनकी अकारादि क्रम से सूची यहा प्रकाशित कर रहे हैं।

इस विशेषांक

—में—

लेखक-संख्या	२७१
प्रयोग संख्या	१३०८
पृष्ठ संख्या	५२६

[विज्ञापनादि एवं सूची के अतिरिक्त]

चित्र-संख्या	२२७
मूल्य (केवल विशेषांक का)	८॥)

ग्राहकों को वार्षिक मूल्य ५॥) में ही अन्य
१० अंकों के साथ प्राप्य ।

प्रयोग-संग्रह में समय	३ वर्ष

उपर्युक्त आकणों से आप पता लगा सकते हैं कि इस विशेषांक को प्रकाशित करने में हमने कितना परिश्रम तथा धन व्यय किया है। आप जब इस विशेषांक को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे तो आपको ज्ञात होगा कि इसमें भारत के महारथी अनुभवी चिकित्सकों ने निःसंकोच अपने अनुभव दिल खोल कर रखे हैं। इसमें अनेक प्रयोग बड़े ही प्रभावशाली तथा आपके चिकित्सा-व्यवसाय में सदैव सहायता देने वाले आपको मिलेंगे।

धन्वन्तरि के प्रत्येक ग्राहक से—

हमारी कर-बद्ध प्रार्थना है कि वे इसके २-२, ४-४ नवीन ग्राहक बनाने का प्रयत्न अवश्य करें। इस विशेषांक को देखकर शायद ही कोई वैद्य ऐसा होगा जो इसका ग्राहक बनकर इसे प्राप्त न करना चाहे, आपको थोड़ा उत्साहित करने की आवश्यकता है।

केवल रजिस्टर्ड चिकित्सकों के लिए

धन्वन्तरि कार्यालय

विजयगढ़ (अलीगढ़)

का

थोक-भाव

का

सूचीपत्र

केवल

वैद्य, हकीम, औषधि-विक्रेता, धर्मार्थ एवं सरकारी औषधालयों तथा थोक खरीददारों के लिए ये भाव निश्चित् किये हैं। इन भावों पर किसी प्रकार का कमीशन नहीं दिया जाता है। सर्व साधारण के लिए खेरीज भाव का सूचीपत्र पृथक् छपा हुआ है।

संस्थापित १८९८

—आवश्यक नियम—

१—इस सूची से पहिले के सब भाव रद्द समझने चाहिए।

२—इस सूची में थोक भाव दिये हैं। ये केवल वैद्यों धर्मार्थ तथा सरकारी अस्पतालों और थोक-खरीदारो के लिये कम से कम निश्चित किये गये हैं। इन भावो पर कमीशन नहीं दिया जाता है। आम जनता के लिए खेरीज भाव प्रथक् है।

३—थोक भाव पर दवा उसी हालत मे भेजी जाती है जब दवा का मूल्य कम से कम २०) हो, एक बार २०) की दवा मंगा लेने के बाद कम मूल्य की दवा भी थोक भाव से भेजी जा सकती है। लेकिन प्रथम बार २०) की औषधिया मगाना आवश्यक है।

४—हर पत्र में अपना पता स्पष्ट और पूरा लिखें। आर्डर देते समय रेलवे स्टेशन और पोस्ट आफिस का नाम स्पष्ट और अवश्य लिखना चाहिए। ५ सेर से अधिक वजन की पार्सल (दवा व पार्सल आदि सभी मिलाकर) रेल से भेजी जायगी।

५—रेलवे द्वारा औषधियां मंगाते समय आर्डर के साथ मनियार्डर से २५ प्रतिशत एडवास अवश्य भेज दे। बिना एडवास रेलवे द्वारा औषधिया नहीं भेजी जातीं। एडवांस न भेजने पर पत्र-व्यवहार मे व्यर्थ समय लगता है, अतएव एड-वास अवश्य भेजना चाहिए।

६—१) से कम मूल्य की दवा या पुस्तक वी. पी से नहीं भेजी जाती।

७—दवा भेजते समय पैकिंग करने में पूर्ण साव-धानी रखी जाती है और प्रायः टूट-फूट नहीं होती। किन्तु यदि किसी प्रकार कोई टूट-फूट हो जाय तो कार्यालय उत्तरदायी नहीं है। पार्सल से सामान निकालते समय फूंस अच्छी तरह देख लेना चाहिए, क्योंकि छोटे पैक कभी-कभी उसके साथ ही फेंक दिये जाते है। पार्सल खोलते समय ही बिल से मिलान भी कर लेना चाहिए।

८—पार्सल मंगाकर वी. पी. लौटाना उचित नहीं, क्योंकि वी. पी. लौटाने से कार्यालय को व्यर्थ हानि होती है, और एक बार वी. पी वापिस मिलने पर फिर वी. पी. से दवा उस ग्राहक को नहीं भेजी जाती है। यदि कोई भूल हो तो बिल नम्बर व तारीख आदि का हवाला देकर लिखें, भूल अवश्य सुधार दी जायगी।

९—बीजक का रुपया वी. पी. या बैंक द्वारा लिया जाता है। उधार का नियम हमारे यहां नहीं है। अतएव उधार औषधिया भेजने का आग्रह कृपया न करे।

१०—हमारे यहां ८० तोले का १ सेर, ४० सेर का एक मन माना जाता है। द्रव (पतली) औषधि दो औंस की शीशी मे एक छटाक मानी जाती है।

११—ग्राहकों को रेल पार्सल का बारदाना, पैकिंग, स्टेशन पहुचाई और अन्य खर्च भी देने होते हैं।

१२—हमारे बिक्री-केन्द्रो या किसी भी श्रेणी के एजेन्ट से दवा खरीदने वालों को सूची मे लिखे मूल्य के अलावा प्रति रुपया एक आना खर्च का अधिक देना होता है। याने म्यूनिसिपल्टी या शहरो मे लगने वाली चुंगी, स्टेशन से माल ढुलाई, रास्ते की नुकसानी, सवारी गाड़ी (पेसे-जर) का किराया आदि सब खर्च मिलाकर १ आना प्रति रुपया सूची के मूल्य से अधिक लिया जा सकता है। २०) से कम मूल्य की औषधिया खरीदने वाले को हमारे खेरीज भाव की सूची मे लिखे दर से औषधिया एजेंटों या बिक्री केन्द्रो से मिल सकेगी। खेरीज दर पर –) रुपया अधिक लेने का नियम लागू नहीं होगा।

१३—धन्वन्तरि कार्यालय के किसी विभाग विषयक कोई भी झगड़ा अलीगढ़ की अदालत मे तय होगा।

१४—तार का पता 'धन्वन्तरि' सासनी N. Ry. है।

१५—नियमो मे अथवा औषधियो के भावो मे किसी भी समय सूचना दिये बिना परिवर्तन करने का कार्यालय को पूरा अधिकार है।

वैद्य, हकीम, औषधि विक्रेता धर्मार्थ और सरकारी औषधालयो तथा थोक खरीदारो के लिए, ये भाव कमीशन काटकर कम से कम इस उद्देश्य से रखे गये है कि कमीशन का झंझट ही न रहे। एक बार हमारी सस्ती और शास्त्रीय विधि से निर्मित औषधियो की परीक्षा अवश्य कीजिये।

६० वर्ष पुराना विस्तृत व विशाल-कारखाना—

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़

का

★ थोक (व्यापारी) भाव ★
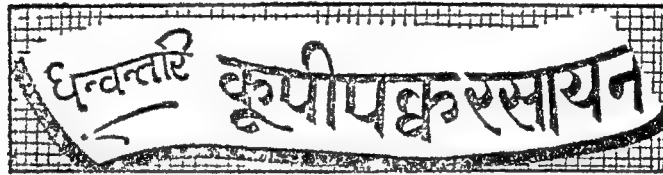
हमने कूपीपक्व रसायन बनाने मे एक लम्बे समय मे जो अनुभव प्राप्त किया है तथा इसकी बारीकियों को जितना हम जानते है वह अन्य अनेकों नवीन फार्मेसी वाले नहीं जान सकते। हम विशेष अनुभव के आधार पर सर्वोत्तम रसायन निर्माण करते हैं और इसी कारण उनकी उत्तमता का दावा भी करते है। अधिक न लिखते हुए आप से परीक्षा करने का आग्रह करते हैं।

सिद्ध मकरध्वज नं० १ (भैषज्य) संस्कारित पारद द्वारा निर्मित, स्वर्णघटित, षट्गुणगन्धक जारित अन्तर्धूम विपाचित सर्वोत्तम मकरध्वज। मूल्य १ तोला ३६) १ माशे ३-)

सिद्ध मकरध्वज नं० २ (भै.) संस्कारित पारद द्वारा निर्मित, स्वर्ण घटित, षट्गुण बलि जारित, बहिर्धूम विपाचित, मू० १ तोला २४) १ माशा २-)

सिद्ध मकरध्वज नं० ३ (भैषज्य) हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित, स्वर्ण घटित, षट्गुणगन्धक जारित अन्तर्धूम विपाचित। मू० १ तोला १८) १ माशे १॥-)

	१ तोला	१ माशा
सिद्ध मकरध्वज नं० ४	२१)	१॥।-)
सिद्ध मकरध्वज नं० ५	१५)	१।-)
सिद्ध मकरध्वज नं० ६	१०)	॥।=)
सिद्ध चन्द्रोदय नं० १	६०)	५-)
अनुपान मकरध्वज	५)	॥)

	१ तोला	३ माशा
मल्ल चन्द्रोदय	३६)	३-)
रस सिंदूर नं० १	६)	२।-)
रस सिंदूर नं० २	६)	१॥-)
रस सिंदूर नं० ३	४)	१-)
मल्लसिंदूर	६)	१॥-)
ताम्र सिंदूर	६)	१॥-)
तालसिंदूर	६)	१॥-)
स्वर्ण वङ्गभस्म	२॥)	॥≡)
मृतसंजीवनी रस	३)	॥।-)
रस कर्पूर (उपदंश रोगे)	७)	१॥।-)
रस माणिक्य	२॥)	॥≡)
समीरपन्नग रस नं० १	२१)	५।-)
समीरपन्नग रस नं० २	६)	१॥-)
पचसूत रस	६)	१॥-)
स्वर्णभूपति रस	२१)	५।-)
व्याधिहरण रस	१०)	२॥-)

भस्में

धातु-उपधातुओं की भस्में वही उत्तम होती हैं जो अच्छी प्रकार शोधन करने के पश्चात् भस्म की गई हों तथा जो निरुत्थ हों। आयुर्वेद में ऐसी भस्में जो पारद, हिंगुल, हरताल, मंसिल द्वारा भस्म की गई हों और जो पुन. जीवित न हों, सर्वोत्तम मानी गई हैं तथा जड़ी-बूटियों से की गई भस्में मध्यम।

भस्में आयुर्वेदीय शास्त्र के अनुसार (शोधन करने के बाद) किन्तु अपनी विशेष प्रक्रिया द्वारा बनाई जाती हैं। इस लिए जिन्हें इस निर्माण कार्य में अधिक समय व्यतीत हो चुका है वही उत्तम भस्म बना सकते हैं। इसी प्रकार भस्मों में जितने अधिक पुट लगाये जाते हैं वह उतनी ही अधिक उपयोगी होती है अन्य नवीन फार्मेसी वाले केवल वनौषधि द्वारा बहुत ही कम पुट देकर साधारण भस्में बना लेते हैं। इस लिये वह हमारी भस्मों के समान लाभप्रद सिद्ध नहीं होती हैं।

	१० तो०	५ तो०	१ तो०	३ मा०
अभ्रकभस्म नं० १	+	१३०)	२७)	६।।।-)
अभ्रकभस्म न० २	२०)	१०)	२-)	।।-)
अभ्रकभस्म नं० ३	१०)	५)	१-)	।-)
अकीकभस्म	२४)	१२।।)	२।।-)	।।≡)
कपर्दभस्म	२)	१)।।	।)	=)
कान्तलोहभस्म	१२।।)	६।।)	१।=)	।=)
गौदन्तीहरतालभस्म	१।।।)	।।।≡)	।)	=)
जहरमोहराभस्म	१७।।)	८।।।)	१।।।-)	।।)
तवकीहरतालभस्म	६+	२८)	६)	१।।-)
ताम्रभस्म नं० १	+	१६)	४)	१-)
ताम्रभस्म नं० २	१६)	१०)	२-)	।।-)
ताम्रभस्म नं० ३	६।।)	५)	१-)	।-)
नागभस्म नं० १	२०)	१०)	२-)	।।-)
नागभस्म नं० २	८)	४)	।।।=)	।)
प्रवालभस्म नं. १	+	२०)	४-)	१-)
प्रवालभस्म नं. २	१५)	७।।)	१।।-)	।≡)
प्रवालभस्म नं. ३	१५)	७।।)	१।।-)	।≡)
प्रवालभस्म नं. ४	१२।।)	६।)	१।-)	।-)।।
प्रवालभस्म चंद्रपुटी	१२)	६)	१।)	।-)।।
वंगभस्म न. १	१५)	७।।)	१।।-)	।≡)
वंगभस्म न. २	६।)	३=)	।।≡)	≡)

	१० तोला	५ तो०	१ तोला	३ मा०
वैक्रान्तभस्म	+	२५)	५।)	१।=)
मल्लभस्म	+	२०)	४।)	१=)
मृगशृङ्गभस्म	३)	१।।-)	।=)	=)
माणिक्यभस्म	+	+	१०)	२।।-)
माण्डूरभस्म नं. १	४)	२-)	।≡)	≡)
माण्डूरभस्म न. २	३)	१।।-)	।-)	=)
मुक्ताभस्म न. १	+	+	७०)	१७।।-)
मुक्ताभस्म नं. २	+	+	६६)	१६।।-)
यशदभस्म	१२)	६)	१।)	।=)
रौप्यभस्म न. १	+		८)	२-)
रौप्यभस्म नं. २	+	+	६)	१।।-)
लौहभस्म नं. १	३०० पुटी	२५)	५-)	१।-)
लौहभस्म नं. २	१०)	५)	१-)	।-)
लौहभस्म न. ३	५)	२।।)	।।-)	≡)
स्वर्णभस्म नं १ कज्जली द्वारा			१३२)	३३-)
स्वर्णमाक्षिकभस्म	१२)	६)	१।)	।=)
शंखभस्म	२)	१)	।)	=)
शुक्तिभस्म	३)	१।।)	।-)।।	=)।।
सगजराहतभस्म	५)	२।।)	।।-)	≡)
त्रिवगभस्म नं. १	+	१५)	३-)	।।।-)
त्रिवगभस्म नं २	६।)	३=)	।।≡)	≡)

पिष्टी

	५ तोला	१ तोला	३ मा०
प्रवालपिष्टी	६)	१।)	।=)
मुक्तापिष्टी	+	६०)	१५-)

	५ तोला	१ तोला	३ माशा
अकीकपिष्टी	७।।)	१।।-)	।≡)
जहरमोहरापिष्टी	७।।)	१।।-)	।≡)

	५ तोला	१ तोला	३ माशा		५ तोला	१ तोला	३ माशा
कहरवापिष्टी	+	६)	१॥–)	माणिक्यपिष्टी	+	४)	१–)
मुक्ताशुक्तिपिष्टी	२॥)	।–)	+	वैक्रान्तपिष्टी		४)	१–)

ये द्रव्य शास्त्रोक्त विधि से शोधित है। अत औषधि निर्माण में नि.सकोच व्यवहार कीजियेगा। इनके द्वारा निर्माण की गई औषधियां पूर्ण प्रभावशाली प्रमाणित होगी।

	१० तोला	१ तोला
कज्जली नं० १	१२॥)	१।–)
शु० गधक	३)	।=)
शु० जयपाल	३)	।=)
शु० हरताल	८)	॥।=)
शु० पारद हिंगुलोत्थ	१२)	१।)
पारद सस्कारित	+	१५)
शु० वत्सनाग	४)	।≡)
विपवीज (वस्त्रपूत)	५)	॥–)
विपवीज (यवकुट शु.)	३)	।–)
शुद्ध मल्ल (सखिया)	१०)	१–)
भल्लातक शुद्ध	३)	।=)

लोहचूर्ण शुद्ध	१ सेर	४॥)	५ तोला	।–)
शिला (मंशिल) शुद्ध	१० तोला	८)	१ तोला	॥।=)
हिंगुल शुद्ध (हंसपदी)	,,	८)	,,	॥।=)
माडूर शुद्ध	१ सेर	१॥)	५ तोला	=)
शुद्ध धतूर बीज	१० तोला	२॥)	१ तोला	।–)
शुद्ध गूगल	१ सेर	८)	५ तोला	॥-)

नोट—इनके भाव बाजार की वर्तमान स्थिति के अनुसार दिये गये है। आर्डर सप्लाई करते समय यदि कोई घटा-बढ़ी हुई हो तो उसी के अनुसार मूल्य लगाया जायगा।

आयुर्वेद औषधियों मे पर्पटी का स्थान बहुत ऊचा है किंतु इनको जितने उत्तम पारद से तैयार किया जायगा, ये उतनी ही अधिक गुणप्रद होगी। हम विशेप रीति से पारद को तैयार करके फिर पर्पटी तैयार करते हैं, इस लिए बहुत गुण करती है।

एक बार नं १ की पर्पटी व्यवहार कर उसके चमत्कारिक प्रभाव को देखे। सभी के सुभीते के लिए दोनो प्रकार की पर्पटी तैयार करते है।

ताम्रपर्पटी नं० १ (वृ० निघण्टु सुन्दर० योग० विशेप शुद्ध पारद द्वारा निर्मित, १ तो ५) १ मा. ।≡)॥

ताम्र पर्पटी नं० २ हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित, १ तोला २॥) १ माशा ।)

पञ्चामृत पर्पटी नं०१ विशेप शुद्ध पारद द्वारा निर्मित १ तोला ५) १ माशा ।≡)॥

पञ्चामृत पर्पटी नं० २ हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित १ तोला २॥) १ माशा ।)

विजय पर्पटी विशेप शुद्ध पारद द्वारा निर्मित व स्वर्ण मुक्ता घटित १ तोला २४) १ माशा २–)

बोल पर्पटी नं० १ विशेप शुद्ध पारद द्वारा निर्मित १ तोला ५) १ माशा ।≡)

बोल पर्पटी न २ हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित १ तोला २॥) १ माशा ।)॥

रस पर्पटी न० १ विशेप शुद्ध पारद निर्मित, १ तोला ४॥) १ माशा ।=)॥

रस पर्पटी न० २ हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित, १ तोला २।) १ माशा ≡)॥

लोह पर्पटी नं० १ विशेष शुद्ध पारद द्वारा निर्मित १ तोला ५) १ माशा ।≡)॥

लोह पर्पटी नं २ हिंगुलोत्थ पारद द्वारा निर्मित १ तोला २॥) १ माशा ।)

श्वेत पर्पटी १० तोला २॥) १ तोला ।–)

स्वर्ण पर्पटी न० १ विशेष शुद्ध पारद और स्वर्णभस्म द्वारा निर्मित १ तोला २४) १ माशा २–)

स्वर्ण पर्पटी नं० २ हिंगुलोत्थ पारद एवं स्वर्णवर्क द्वारा निर्मित १ तोला १५) १ माशा १।–)

बहुमूल्य रस-रसायन-गुटिका

(स्वर्ण, मुक्ता एवं कस्तूरी मिश्रित)

ये औषधियां स्वयं अपनी देख-रेख मे सर्वोत्तम स्वर्णवर्क, कस्तूरी, मुक्ता आदि बहुमूल्य द्रव्य से बनाई जाती है। इनकी प्रमाणिकता मे किसी प्रकार के सदेह की गुंजाइश नहीं।

	१ तोला	१ माशा
आमवातेश्वर रस (भैषज्य)	१२)	१–)
वृ० कस्तूरीभैरवरस (भैष०)	१६)	१।=)
कस्तूरीभैरव रस (भैष०)	१२)	१–)
कस्तूरीभूषण रस (भैष०)	१४)	१≡)
कामदुधारस न० १ (मौक्तिक युक्त) (र० यो० सा०)	८)	॥।=)
वृ० कामचूरामणि रस (भैषज्य)	६)	॥।–)
कामिनी विद्रावणरस	६)	॥–)
कृष्णचतुर्मुख रस	१२)	१–)
कुमारकल्याण रस	३०)	२॥–)
चतुर्मुखचिन्तामणि रस	१६)	१।=)
जयमंगल रस (स्वर्णयुक्त)	२७)	२।–)
प्रवालपंचामृत रस	१०)	॥।=)
पु. प. वि. ज्वरातकलोह	१२)	१–)
वृ. पूर्णचन्द्र रस	१८)	१॥–)
वसंतकुसुमाकर रस	२९)	१॥।=)
वृ. वातचिन्तामणि रस	२४)	२–)
ब्राह्मीवटी (स्वर्ण-मुक्ता युक्त)	२८)	२॥)
मृगाकपोटली रस	७२)	६–)

	१ तोला	१ माशा
मधुमेहांतक रस ५० गोली	८)	
मधुरातक रस	६)	॥–)
मन्मथाभ्र रस	६)	॥।–)
महाराजनृपतिवल्लभ रस	७)	॥=)
महालक्ष्मीविलास रस	७)	॥=)
महाराज वंगभस्म	६)	॥–)
योगेन्द्र रस	३६)	३–)
रसराज रस	२१)	१॥।–)
राजमृगाक रस	२४)	२–)
वृ लोकनाथ रस	३॥)	।–)
श्वासचिंतामणि रस	१४)	१।)
स्वर्णवसत मालती नं० १	२४)	२–)
,, ,, नं० २	१४)	१।)
सर्वांगसुन्दर रस	१५)	१।–)
सग्रहणीकपाट रस नं १	२८)	२।=)
सूतशेखर रस न० १	१२)	१–)
हेमगर्भ रस	२७)	२।–)
हिरण्यगर्भपोटली रस	२४)	२–)

	५ तोला	१ तोला
अग्निकुमार रस	२)	।≡)
अजीर्णकटक रस	२॥)	॥–)

	५ तोला	१ तोला
अर्शांतक वटी	४)	|||–)
अमरसुन्दरी वटी	३)	||=)
अम्लपित्तांतक रस	३|||)	|||–)
अग्नितुण्डी वटी	२||)	||–)
आनन्दभैरव रस लाल	२||)	||–)
आनन्दोदय रस	६|)	१|–)
आदित्य रस	५)	१–)
आरोग्यवर्द्धिनी वटी	२||)	||–)
इच्छाभेदी रस	२||)	||–)
इच्छाभेदी वटी	३)	||=)
उपदंशकुठार रस	२||)	||–)
उष्णवातघ्न वटी	७||)	१||–)
एकागवीर रस	१७||)	३||–)
एलादिवटी	१|)	|–)
एलुआदि वटी	१|)	|–)
कपूररस (अतिसारे)	१५)	३–)
कनकसुन्दर रस	२||)	||–)
कफकुठार रस	४)	|||=)
कफकेतु रस	२||)	||–)
करजादि वटी ५०० गोली	७||) ५० गोली	|||–)
कामाग्निसंदीपन मोदक	१||)	|–)
कामदुधा रस (मौक्तिक रहित)	७||)	१||–)
कामधेनु रस नं० २	८)	१|||)
काकायन गुटिका	१|)	|–)
कीटमर्द रस	१||=)	|=)
क्रव्यादि रस बृ०	१५)	३–)
कृमिकुठार रस	३)	||=)
खैरसार वटी	१|)	|–)
गंगाधर रस	६|)	१|–)
गंधकरसायन	६|)	१|–)
गर्भविनोद रस	२||)	||–)
गर्भपाल रस	६|)	१|–)
गर्भचिन्तामणि रस	१२||)	२||–)
गुल्मकुठार रस	४)	|||–)
गुल्मकालानल रस	४)	|||–)
गुडपिप्पली	१||)	|–)||
गुडमार वटी	१|)	|–)

	५ तोला	१ तोला
ग्रहणीगजेन्द्र रस	१०)	२–)
ग्रहणीकपाट रस नं० २	४)	|||=)
ग्रहणीकपाट रस-लाल	७||)	१||–)
घोडाचोली रस	२)	|≡)
चन्द्रोदय वर्ति	२||)	||–)
चन्द्रकला रस	४||)	|||≡)
चन्द्रामृत रस	३|)	||≡)
चन्द्रांशु रस	३|)	||≡)
चित्रकादि वटी	१|)	|–)
ज्वरांकुश रस (महा)	२||)	||–)
जयवटी	६|)	१|–)
जलोदरारि वटी	३)	||=)
जातीफल रस	३||)	|||)
तक्रवटी	३)	||=)
दुर्जलजेतारस	२||)	||–)
दुग्धवटी न० १	१७||)	३||–)
,, ,, २	२||)	||–)
नवज्वरहर वटी	२||)	||–)
नष्टपुष्पान्तक रस	१२||)	२||–)
नृपतिवल्लभ रस	५)	१–)
नाराच रस	२||)	||–)
नित्यानन्द रस	३||)	|||)
प्रतापलकेश्वर रस	२||)	||–)
प्रदरारि रस	२||)	||–)
प्रदरांतक रस	५||)	१=)
प्लीहारि रस	२||)	||–)
प्राणेश्वर रस	१०)	२–)
प्राणदागुटिका	२)	|≡)
पंचामृत रस न० १	२||)	||–)
,, ,, ,, २	३)	||=)
पाशुपत रस	३|||)	|||–)

रस-रसायन-गुटिका-गुग्गुल—इस पुस्तक में धन्वन्तरि के प्रधान सम्पादक वैद्य देवीशरण गर्ग ने रस-रसायन-गुटिका गूगल (जो हमारे यहां निर्माण होते है) के गुण मात्रा अनुपानादि विस्तार के साथ लिखे है। अपने अनुभव भी दिये है। मूल्य ।) मात्र।

	५ तोला	१ तोला
पीपल ६४ पहरा	१२)	२॥)
वृ० शंखवटी	२॥)	॥-)
वृ० नायकादि रस	१॥)	।-)
वृद्धिवाधिका वटी	७॥)	१॥-)
बहुमूत्रांतक रस	६।)	१।-)
वहुशाल गुड	१।॥)	।=)
ब्राह्मीवटी	७॥)	१॥-)
बालामृत वटी	१५)	३-)
वृ० वातगजाकुशरस	६।)	१।-)
विषमुष्टिका वटी	२॥)	॥-)
वैतालरस	१०)	२-)
व्योषादि वटी	१।)	।-)
महामृत्युञ्जय रस	३)	॥=)
मृत्युञ्जय रस (कृष्ण)	३)	॥=)
मकरध्वज वटी	५०० गोली	२०)
मरिच्यादि वटी	१।)	।-)
महागन्धक रस	३)	॥=)
महाशूलहर रस	४।)	।॥=)
मदनानन्दमोदक	१॥)	।-)
महावातविध्वंस रस	१०)	२-)
मार्कण्डेय रस	२॥)	॥-)
मूत्रकृच्छ्रांतक रस	१०)	२-)
मेहमुद्गर रस	३)	॥=)
रजप्रवर्तक वटी	३।॥)	।॥-)
रक्तपित्तांतक रस	३।॥)	।॥-)
रामबाण रस	२।॥)	॥-)
लशुनादि वटी	१॥)	।-)
लघुमालती वसंत	१०)	२-)
लक्ष्मीविलास रस	६)	१।)
लक्ष्मीनारायण रस	८)	१॥≡)
लाई (रस) चूर्ण	२॥)	॥-)
लीलावतीगुटिका	२)	।≡)
लीलाविलास रस	४॥)	।॥≡)
लोकनाथ रस	५)	१-)
श्वासकुठार रस	२॥)	॥-)
शङ्खवटी	१॥)	।-)
शशमनी वटी	४)	।॥=)
शिरोवज्र रस	३)	॥=)
शिलाजीत वटी	३)	॥=)
शीतभञ्जी रस	६।)	१।-)
शूलवज्रिणी वटी	२॥)	॥-)
शूलगजकेशरी	७)	१।≡)
शृंगाराभ्रक रस	६)	१।)
स्मृतिसागर रस	११।)	२।-)
संजीवनी रस	२)	।≡)
सर्पगंधा वटी	३)	॥=)
समीरगजकेशरी	१५)	३-)
सि. प्राणेश्वर रस	३)	॥=)
सूतशेखर रस नं० २	१०)	२-)
वृ० शूरणमोदक	१)	।)
सौभाग्य वटी	२॥)	॥-)
हिंग्वाष्टक वटी	१।)	।-)
हृदयार्णव रस	७॥)	१॥-)
त्रिपुरभैरव रस	३)	॥=)
त्रिभुवनकीर्ति रस	२॥)	॥-)
त्रिविक्रम रस	१०)	२-)

	५ तोला	१ तोला
अम्लपित्तान्तक लौह	४)	।॥-)
चन्दनादि लौह (ज्वर)	५)	१-)
,, ,, (प्रमेह)	६।)	१।-)
ताप्यादि लौह	१२॥)	२॥-)
धात्रीलौह	४)	।॥-)
नवायस लौह	२॥)	॥-)

	५ तोला	१ तोला
प्रदरारि लौह	५।।)	१=)
प्रदरांतक लौह	६।)	१।-)
पुनर्नवादि मण्डूर	२)	।≡)
विडंगादि लौह	३)	।।=)
विषमज्वरान्तक लौह	५।।)	१=)

	५ तोला	१ तोला
यकृतहर लौह	४)	।।।-)
शोथोदरारि लौह	६।)	१।-)
सर्वज्वरहर लौह	४)	।।।-)
सप्तामृत लौह	४)	।।।-)
त्र्यूषणादि लौह	४)	।।।-)

	२० तोला	५ तोला	१ तोला
अमृतादिगूगल	५)	१।-)	।-)
काचनारगूगल	४)	१-)	।)
किशोरगूगल	४)	१-)	।)
गोक्षुरादिगूगल	४।।)	१≡)	।)।।
पुनर्नवादिगूगल	४)	१-)	।)
वृ० योगराजगूगल	१५)	३।।।-)	।।।-)

	२० तोला	५ तोला	१ तोला
योगराजगूगल	४)	१-)	।)
रसाभ्रगूगल	१६)	४-)	।।।-)।।
रास्नादिगूगल	४)	१-)	।)
सिंहनादगूगल	६)	१।।-)	।-)।।
त्रियोदशांगगूगल	५)	१।-)	।-)
त्रिफलागूगल	४।।)	१≡)	।)।।

अरिष्ट-आसव

	१ बो०	१ पौ०	१ अद्धा	८ औंस
अमृतारिष्ट	१।।।=)	१।।=)	१-)	।।।=)
अर्जुनारिष्ट	१।।=)	१।=)	।।।≡)	।।।)
अरविन्दासव	२=)	१।।≡)।।	१≡)	।।।=)
अशोकारिष्ट	१।।=)	१।=)	।।।=)	।।।)
अभयारिष्ट	१।।=)	१।=)	।।।≡)	।।।)
अश्वगंधारिष्ट	१।।।≡)	१।।=)	१=)	।।।=)
उसीरासव	१।।=)	१।=)	।।।≡)	।।।)
कनकासव	१।।=)	१।=)	।।।≡)	।।।)
कुमारीआसव	१।।=)	१।=)	।।।≡)	।।।)
कुटजारिष्ट	१।।=)	१।=)	।।।≡)	।।।)
खदिरारिष्ट	१।।।=)	१।।=)	१-)	।।।=)
चन्दनासव	१।।=)	१।=)	।।।≡)	।।।)
दशमूलारिष्ट (कस्तूरी युक्त)	४)	३।)	२=)	१।।≡)
दश० रि० न. २	१।।।=)	१।।=)	१-)	।।।=)
द्राक्षासव	१।।=)	१।=)	।।।≡)	।।।)

	१ बो०	१ पौं०	१ अद्धा	८ औंस
द्राक्षारिष्ट	१।।।)	१।≡)	१)	।।।)।।
देवदार्व्यारिष्ट	१।।।=)	१।।=)	१=)	।।।=)
पत्रांगासव	१।।=)	१।=)	।।।≡)	।।।)
पुनर्नवासव	१।।=)	१।=)	।।।≡)	।।।)
पिप्पलासव	१।।=)	१।=)	।।।≡)	।।।)
वल्लभारिष्ट	२।।)	२=)	१।≡)	१=)
बबूलारिष्ट	१।।=)	१।=)	।।।≡)	।।।)
वांसारिष्ट	४।।)	३।।।≡)	२।=)	२)
बालरोगांतकारिष्ट	२)	१।।≡)	१=)	।।।≡)
रक्तशोधकारिष्ट	१।।।)	१।≡)	१)	।।।)।।
रोहितकारिष्ट	१।।।)	१।≡)	१)	।।।)।।
लोहासव	१।।=)	१।=)	।।।≡)	।।।)
सारस्वतारिष्ट नं० १	×	×	×	५)
,, ,, ,, २	२)	१।।≡)	१=)	।।।≡)
सारिवाद्यासव	२=)	१।।।)	१≡)	।।।≡)

अर्क

	१ बोतल	१ पौंड	८ औंस
अर्क उसवा	१।।।)	१।≡)	।।।)।।
अर्क दशमूल	१।।।)	१।≡)	।।।)।।
द्राक्षादि अर्क	१।।।)	१।≡)	।।।)।।
महामंजिष्ठादि अर्क	१।।।)	१।≡)	।।।)।।
महारास्नादि अर्क	१।।।)	१।≡)	।।।)।।

	१ बोतल	१ पौंड	८ औंस
सुदर्शन अर्क	१।।।)	१।≡)	।।।)।।
अर्क सौंफ	१।)	१)	।।-)
अर्क अजवायन	१।।)	१।-)	।।≡)।।
अर्क पोदीना	२)	१।।=)	।।।=)

क्वाथ

दशमूल क्वाथ	१ मन ४०)	१ सेर १=)
	२-२ तोले की १०० पुड़िया ४)	
दार्व्यादि क्वाथ		१ सेर २)
	१०-१० तोले की ८ पुड़िया २=)	
द्राक्षादि क्वाथ	१ सेर १।।)	,, १।।=)
देवदार्व्यादि क्वाथ		१ सेर १)

		१०-१० तोले की ८ पुड़िया १।)
बलादि क्वाथ	१ सेर १।।)	,, १।।=)
महामंजिष्ठादि क्वाथ	१ सेर २)	,, २=)
महारास्नादि क्वाथ	१ सेर २)	,, २=)
त्रिफलादि क्वाथ	१ सेर १।।)	,, १।।=)

चूर्ण

	१ सेर डिब्बा में	५ तोला डिब्बा में	५ तोला शीशी में
अग्निमुख चूर्ण	८)	।।-)	।।=)
अविपत्तिकर चूर्ण	८)	।।-)	।।=)
अजीर्णपानक चूर्ण	१०)	।।≡)	।।≡)।।
अग्निवल्लभ क्षार	१०)	।।≡)	।।।)
उदरभास्कर चूर्ण	८)	।।)।।	।।-)
एलादि चूर्ण	८)	।।)।।	।।-)
कपित्थाष्टक चूर्ण	६।।)	।≡)।।	।।)
कामदेव चूर्ण	६।।)	।≡)।।	।।)
कुमकुमादि चूर्ण		१ तोला	।।।=)
गंगाधर चूर्ण (वृ०)	६)	।≡)	।≡)।।
चन्दनादि चूर्ण	६)	।≡)	।≡)।।
ज्वरभैरव चूर्ण	६)	।≡)	।≡)।।
जातीफलादि चूर्ण	१२)	।।।)।।	।।।-)
तालीसादि चूर्ण	८)	।।)।।	।।-)
दशनसंस्कार चूर्ण	८)	।।)।।	।।-)
धातुस्रावहर चूर्ण	१२)	।।।)।।	।।।-)
नारायण चूर्ण	६)	।≡)	।≡)।।

	१ सेर डिब्बा में	५ तोला डिब्बा में	५ तोला शीशी में
निम्बादि चूर्ण	६)	।≡)	।≡)।।
प्रदरांतक चूर्ण	६)	।≡)	।≡)।।
पंचसकार चूर्ण	६)	।≡)	।≡)।।
प्रदरारि चूर्ण	६)	।≡)	।≡)।।
पुष्यानुग चूर्ण	६।।)	।≡)।।	।।)
यवानीखांडव चूर्ण	६।।)	।≡)।।	।।)
लवंगादि चूर्ण	१०)	।।≡)	।।≡)।।
लवणभास्कर चूर्ण	६)	।≡)	।≡)।।
स्वप्नप्रमेहहर चूर्ण	१२)	।।।)।।	।।।-)
सामुद्रादि चूर्ण	७।।)	।।)।।	।।-)
सारस्वत चूर्ण	६)	।≡)	।≡)।।
शृंग्यादि चूर्ण	८)	।।)।।	।।-)
सितोपलादि चूर्ण	१६)	१)।। २।। तो.	।।-)
सुदर्शन चूर्ण	६)	।≡)	।।)
हिंग्वाष्टक चूर्ण	८)	।।-)	।।-)।।
त्रिफलादि चूर्ण	४।।)	।-)।।	।=)

	१ पौंड	४ औंस	२ औंस
आंवला तैल	४॥)	१=)	॥=)
इरमेदादि तैल	६)	१॥-)	॥।-)
कर्पूरादितैल	८)	२)	१-)
कट्फलादि तैल	४॥)	१=)	॥=)
कदर्पसुन्दर तैल	७)	१॥।-)	॥।≡)
काशीसादि तैल	५)	१।-)	॥≡)
किरातादि तैल	४)	१-)	॥-)
कुमारी तैल	४॥)	१=)	॥=)
ग्रहणीमिहिर तैल	५)	१।-)	॥≡)
गुडूच्यादि तैल	५)	१।-)	॥≡)
चन्दनादितैल	५॥)	१।≡)	॥।)
चन्दनबलालाक्षादि तैल	५॥)	१।≡)	॥।)
जात्यादि तैल	५)	१।-)	॥≡)
दशमूल तैल	५)	१।-)	॥≡)
दार्व्यादि तैल	४॥)	१=)	॥=)
महानारायण तैल	५)	१।-)	॥≡)
पानीनाशक तिला	+	६)	३)
पिपल्यादि तैल	४॥)	१=)	॥=)
पिण्ड तैल	५)	१।-)	॥≡)
पुनर्नवादि तैल	५)	१।-)	॥≡)

	१ पौंड	४ औंस	२ औंस
ब्राह्मी तैल	६)	१॥-)	॥।-)
बिल्व तैल	६)	१॥-)	॥।-)
विषगर्भ तैल	४)	१-)	॥-)
वैरोजा तैल	६)	१॥-)	॥।-)
भृंगराज तैल	५)	१।-)	॥≡)
महा विषगर्भ तैल	५)	१।-)	॥≡)
महामरिच्यादि तैल	४॥)	१=)	॥=)
महा माषतैल	४॥)	१=)	॥=)
मोम का तैल	८)	२-)	१-)
राल का तैल	६)	१॥-)	॥।-)
लाक्षादि तैल	५)	१।-)	॥≡)
शुष्कमूलादि तैल	५)	१।-)	॥≡)
षट्बिन्दु तैल	५)	१।-)	॥≡)
हिमसागर तैल	५)	१।-)	॥≡)
क्षार तैल	७)	१॥।-)	॥।≡)

नोट—तैल की शीशियों को कार्ड बक्स में पैकिंग कराकर लेने वालों को ४ औंस के पैक के -)॥ प्रति पैक तथा २ औंस के पैक के -) प्रति पैक पृथक देना होगा।

	१ सेर	४ औंस
अर्जुनघृत	१२)	१॥-)
अशोक घृत	१२)	१॥-)
अग्नि घृत	११)	१।≡)
कदलीघृत	१४)	१॥।-)
कामदेवघृत	१६)	२-)
दूर्वादिघृत	११)	१।≡)
धात्रीघृत	११)	१।≡)

	१ सेर	४ औंस
पञ्चतिक्तघृत	११)	१।≡)
फलघृत	१२)	१॥-)
ब्राह्मीघृत	१२)	१॥-)
बिन्दुघृत	१५)	॥।≡)
महात्रिफलादिघृत	१३)	१॥≡)
शृंगीगुडघृत	१०)	१।-)
सारस्वतघृत	११)	१।≡)

मलहम

जात्यादि मलहम	२० तोला	२।।)	दशांगलेप	२० तोला	२)
पारदादि मलहम	,,	३)			
निम्बादि मलहम	,,	३)	अग्निदग्धव्रणहर मलहम	,,	२)

धन्वन्तरि क्षार - सत्व - द्राव
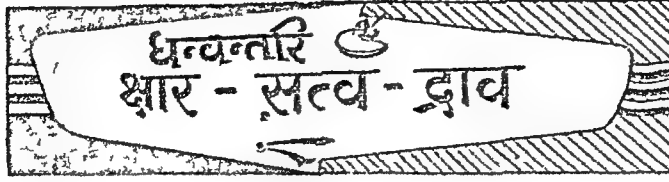
	१० तोला	२।। तोला			१० तोला		२।। तोला
यवक्षारचूर्ण	२)	।।)।।	तम्बाकूक्षार		३)		।।।)।।
अपामार्ग क्षार	२)	।।)।।	केतकीक्षार		२)		।।)।।
वासाक्षार	३)	।।।)।।	चना (चणक)		३)		।।।)।।
कटेरीक्षार	३)	।।।)।।	नाडी (नेत्रवाला) क्षार		३)		।।।)।।
कदलीक्षार	२।।)	।।=)।।	शंखद्राव	४ औंस	६)	१ औंस	१।।–)
इमलीक्षार	२)	।।)।।	नेत्रबिंदु	८ औंस	८)	¼ औंस	।–)
तिलक्षार	३)	।।।)।।	गिलोयसत्व	१ सेर	२०)	१ तोला	।–)
मूलीक्षार	३)	।।।)।।	शहद	१ सेर	३।।)	१ औंस	।=)
ढाकक्षार	२)	।।)।।	भीमसैनीकपूर			१ तोला	३)
आकक्षार	२)	।।)।।	यवक्षार			१ सेर	१०)

अवलेह
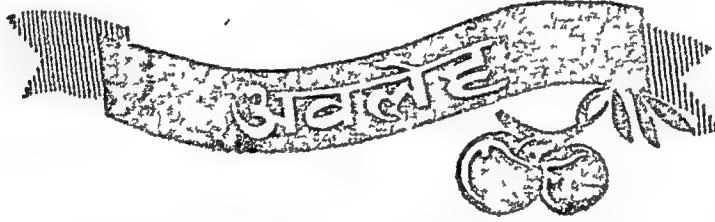
च्यवनप्राश्यावलेह [च० भै० वङ्ग वृन्द] अष्टवर्ग-युक्त, असली वसलोचन व सर्वोत्तम मिश्री से बनाया हुआ २० सेर कनस्तर में ७५) १ सेर डिब्बा में ४) आधा सेर शीशी में २।) १ पाव शीशी में १=)

कुटजावलेह	१ सेर ६)	१ पाव शीशी में	१।।=)
कूष्मावलेह	,, ६)	,,	१।।=)
वासावलेह	,, ६)	,,	१।।=)
ब्राह्मरसायन	,, ८)	,,	७=)
आर्द्रकखण्ड	,, ६)	,,	१।।=)

विषमुष्टिकावलेह			५ तोला	५)
मधुकाद्यवलेह			१५ तोला	२।=)
कनकसुन्दर पाक	१ सेर	८)	१० तोला शी में	१=)
बादामपाक	,,	१०)		१।=)
मूसलीपाक	,,	१०)		१।=)
सुपारीपाक	,,	८)		१=)
सौभाग्यसुण्ठीपाक	,,	८)		१=)
एरण्डपाक	,,	८)		१=)
वल्लभपाक	१ पाव	५)	पांच तोला	१।=)

कतिपय मुख्य वस्तुयें

शिलाजीत सूर्यतापी नं. १ सेर ५०) ५ तोला ३।) १ तोला ।।≡)

शिलाजीत अग्नितापी नं २ १ सेर २५) ५ तोला १।।≡) १ तोला ।=)

अष्टवर्ग १ सेर १०)	गिलोय सत्व १ सेर २०)	यवक्षार १ सेर १०)	मुलहठीसत्व १ सेर १४)
ब्राह्मी १ सेर २)	तालीसपत्र १ सेर २)	दशमूल १ मन ४०)	प्रवाल शाखा १ सेर ३०)
सोमकल्प १ सेर ३)	रोहतकछाल १ सेर १)	सर्पगंधा १ सेर १२)	उंलट कम्बल १ सेर ६)
हिंगुलरूमी १ सेर ६०)	दशमूलसत्व १ सेर १५)		

भस्मार्थ द्रव्य

वंशलोचन असली	१ सेर	३०)	धान्याभ्रक	१ सेर	४)
ताम्र चूर्ण अशोधित	१ सेर	८)	शु० वंग	,,	२०)
फौलाद चूर्ण ,,	,,	३॥)	शख टुकड़े	१ सेर	१।)
शु० यशद (जस्ता)	,,	८)	मोतीसीप	१ सेर	५)
वज्राभ्रक कृष्ण	,,	३)	पीली कौड़ी	१ सेर	३)

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ द्वारा निर्मित

अनुभूत एवं सफल

हमारी यह पेटेन्ट औषधियां ६० वर्ष से, भारत भर के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध वैद्यराजो, कविराजों और धर्मार्थ औपधालयों द्वारा व्यवहार हो रही है अत इनकी उत्तमता के विषय मे किसी प्रकार का सन्देह नहीं करना चाहिए। नीचे औपधियों के खेरीज भाव दिये है। इन पर २५ प्रतिशत कमीशन कम करने पर थोक भाव माना जाता है।

(अर्थात् निराशबन्धु)

आयुर्वेद चिकित्सा-पद्धति मे सबसे अधिक प्रसिद्ध एवं चमत्कारिक महौषधि सिद्ध मकरध्वज न० १ ✯ अर्थात् चन्द्रोदय है। इसी अनुपम रसायन द्वारा इन गोलियों का निर्माण होता है। इसके अतिरिक्त अन्य मूल्यवान् एवं प्रभावशाली द्रव्यों को भी इसमे डाला जाता है। ये गोलिया भोजन को पचाकर रस-रक्त आदि सप्त धातुएं क्रमश सुधारती हुई शुद्ध वीर्य का निर्माण करतीं और शरीर में नव-जीवन व नव-स्फूर्ति भर देती है। जो व्यक्ति चंद्रोदय को जानते है वे इसके प्रभाव मे सन्देह नहीं कर

✯ सिद्ध मकरध्वज न. १—हम गत ६० वर्षों से निर्माण कर रहे है। तथा अपनी विशेष प्रक्रिया द्वारा सर्वोत्तम मकरध्वज का निर्माण करते हैं। इसका तथा अन्य कूपीपक्व औपधियों का विस्तृत वर्णन सेवन विधि "कूपीपक्व रसायन" पुस्तक मंगाकर पढ़ियेगा। मूल्य -)

सकते। वीर्य विकार के साथ होने वाली खासी जुकाम सर्दी, कमर का दर्द, मन्दाग्नि, स्मरणशक्ति का नाश आदि व्याधिया भी दूर होती हैं। क्षुधा बढ़ती है, शरीर हृष्ट-पुष्ट और निरोग बनता है। जो व्यक्ति अनेक औषधियां सेवन कर निराश हो गये है उन निराश पुरुषों को यह बन्धु तुल्य सुख देती है इसीलिये इसका दूसरा नाम "निराश-बन्धु" है।

४० वर्ष की आयु के बाद मनुष्य को अपने मे एक प्रकार की शिथिलता का अनुभव होता है। यह रोग-प्रतिरोधक शक्ति (जो हरेक मनुष्य मे स्वाभाविक रूप से होती है) मे कमी आ जाने के फलस्वरूप होती है। मकरध्वजवटी इस शक्ति को पुन: उत्तेजित करती है और मनुष्य को सबल बनाए रखती है।

मूल्य—१ शीशी (४१ गोलियो की) २॥=)
छोटी शीशी (२१ गोलियां की) १।≡)

१२ शीशी या अधिक एक साथ मंगाने पर रियायती थोक भाव १२ शीशी (४१ गोलियों वाली) का २१॥) नेट। १२ शीशी से कम मंगाने पर इस भाव से हर्गिज नहीं दे सकेंगे।

कुमारकल्याण घुटी

(बालको के लिए सर्वोत्तम व मीठी घुटी)

हमने बडे परिश्रम से आयुर्वेद मे वर्णित और बालकों की रक्षा करने वाली दिव्य औषधियो से घुटी तैयार की है। इसके सेवन करने वाले बालक कभी बीमार नहीं होते किन्तु पुष्ट हो जाते है यह बालको को बलवान बनाने की बडी उत्तम औषधि है, रोगी बालक के लिए तो सजीवनी है। इसके सेवन से बालकों के समस्त रोग जैसे ज्वर, हरे-पीले दस्त, अजीर्ण, पेट का दर्द, अफरा, दस्त मे कीडे पड़ जाना, दस्त साफ न होना, सर्दी, कफ, खांसी, पसली चलना, दूध पलटना, सोते मे चौंक पडना, दांत निकलने के रोग आदि सब दूर हो जाते है। शरीर मोटा ताजा और बलवान हो जाता है पीने मे मीठी होने से बच्चे आसानी से पी लेते है। मूल्य १ शीशी (आध औंस) ।–) ४ औंस की शीशी सुन्दर कार्ड-बक्स मे २)।

कुमाररक्षक तैल—

इस तैल को बच्चे के सम्पूर्ण शरीर पर धीरे धीरे रोजाना मालिश करे। आध घण्टे बाद स्नान कराइये, बच्चे मे स्फूर्ति बढ़ेगी, मांस-पेशियां सुदृढ़ हो जायगी, हड्डियों को ताकत पहुँचेगी, यह तैल इसी अभिप्राय से सर्वोत्तम निर्माण किया गया है मूल्य—१ शीशी (४ औंस) १।), छोटी शीशी (२ औंस ॥।=)

ज्वरारि—

कुनीन रहित विशुद्ध आयुर्वेदिक, ज्वर-जूडी को शीघ्र नष्ट करने वाली सस्ती एवं महौषधि है। जूडी और उसके उपद्रव को नष्ट करती है। मूल्य—१० मात्रा की शीशी १)। २० मात्रा की बडी शीशी १॥) ५० मात्रा की पूरी बोतल ३।)।

कासारि—

हर प्रकार की खासी को दूर करने वाली सर्वत्र प्रशंसित अद्वितीय औषधि। वांस पत्र क्वाथ एव पिप्पली आदि कासनाशक आयुर्वेदिक द्रव्यों से निर्मित शर्बत है। अन्य औषधियो को इसके अनुपान रूप से देना भी उपयोगी है। सूखी व तर दोनो प्रकार की खासी को नष्ट करने वाली सस्ती दवा है। मूल्य—२० मात्रा की शीशी १), ५ मात्रा की शीशी ।=), १ पौंड ३॥)

श्वेतकुष्ठहर सैट—

इसमे श्वेतकुष्ठहर अवलेह, वटी घृत तीन औषधियां है। इन तीनों औषधियो के विधिवत् सेवन करने से श्वेतकुष्ट अवश्य नष्ट होता है। धैर्य के साथ इन औषधियो का अधिक दिन व्यवहार कीजिये अवश्य लाभ होगा। मूल्य—१५ दिन की तीनों औषधियो का ५)

रक्तदोषहर सैट—

इसमे धन्वन्तरि आयुर्वेदीय सालसा परेला, तालकेश्वर रस, इन्द्रवारुणादि क्वाथ—ये तीन औषधिया है। इनके सेवन से सभी प्रकार के चर्मरोग नष्ट होकर शरीर सुन्दर सुडौल बनता है। मूल्य—१५ दिन की तीनों दवाओं का ६) पोस्ट व्यय ४॥)

अर्शान्तक सैट

इसमें वटी, मलहम तथा चूर्ण तीन औषधियां हैं। इनके प्रयोग से दोनों प्रकार के अर्श अवश्य नष्ट होते हैं। अर्श से आने वाला रक्त २-१ दिन में बन्द हो जाता है। मूल्य—१५ दिन की तीनों दवाओं का ३)

वातरोगहर सेट—इसमें वातरोगहर तैल, रस एवं अवलेह—तीन औषधियां हैं। इन तीन औषधियों के व्यवहार से जोड़ों का दर्द, सूजन अंग विशेष की पीड़ा, पक्षाघात आदि समस्त वात-व्याधियों में लाभ होता है। ये तीन औषधियां अति मूल्यवान एलोपैथिक औषधियों को मात करती है। १५ दिन सेवन योग्य तीनों औषधियों का मूल्य १०)

कामिनीगर्भरक्षक—बार-बार गर्भश्राव हो जाना, बच्चों का छोटी आयु में ही मर जाना, यह भयंकर व्याधियों से अनेक सुकुमार स्त्रियां आजकल पीड़ित हैं। यदि आप कामिनीगर्भरक्षक को गर्भ के प्रथम माह से नवम माह तक सेवन करावें तो न गर्भपात होगा और न गर्भश्राव। बच्चा स्वस्थ-सुन्दर और सुडौल उत्पन्न होगा। मूल्य—२ औंस की शीशी १)

शिरोविरेचनीय सुरमा—जिनको बार-बार जुकाम होजाता है, तथा नया पुराना शिर दर्द हो जुकाम रुकने से उत्पन्न शिर दर्द हो इस सुरमा को सलाई से हल्का हल्का नेत्रों में आंजे। थोड़ी देर में आंख व नाक से बलगम निकलना प्रारम्भ हो जायगा और सभी कष्ट दूर होंगे। पुराने शिर दर्द में पथ्यादि क्वाथ व शिरोवज्ररस भी साथ में सेवन कराने से शीघ्र लाभ होगा। मूल्य १ माशे की शीशी ।—)

वातारि वटी—वातरोग नाशक सफल और सस्ती दवा है। १-१ गोली प्रातः सायं गरम जल या रास्नादि क्वाथ के साथ लेने से सभी प्रकार की वातव्याधियां नष्ट होती है। मू० १ शीशी (५१ गोली) २) मात्र।

करंजादि वटी—'करंज' (मलेरिया) के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध है। इसके संयोग से बनी ये गोलियां प्राकृतिक ज्वर (मलेरिया) के लिये उत्तम प्रमाणित हुई हैं। सस्ती भी है। १ शीशी (५० गोली) १)

कासहर वटी—हर प्रकार की खांसी के लिए सस्ती व उत्तम गोलियां है। दिन में ५-७ बार अथवा जिस समय खांसी अधिक आ रही हो १-१ गोली मुंह में डाल रस चूसे, गला व श्वास-नली साफ होती है। कफ बन्द हो जाता है। मूल्य १ शीशी (१ तोला) ।—)

निम्बादि मलहम—नीम रक्त-शोधक व चर्म रोग-नाशक है। इसी के संयोग से बनी यह मलहम फोड़ा-फुन्सी व घावों के लिये अत्युत्तम है। निम्ब क्वाथ से घाव या फोड़ों को साफ कर इस मलहम को लगाने से वे शीघ्र ही भरते हैं। नासूर तक को भरने की इसमें शक्ति है। मूल्य १ शीशी आध औंस।) २० तोले का पैक ३॥)

वल्लभ रसायन—किसी भी रोग से किसी भी प्रकार का रक्तस्राव होता हो यह विशेष लाभ करता है। रक्त को बन्द करने के लिए अव्यर्थ औषधि है। मूल्य १ शीशी (२ औंस) १)

रक्तवल्लभ रसायन—इससे ज्वर के साथ होने वाला रक्तस्राव बन्द होता है। ज्वर को दूर करने और रक्त को बन्द करने के लिए उत्तम है। १ शीशी (आध औंस) १)

सरलभेदी वटिका—कब्ज रोग तो आजकल इतना फैला हुआ है कि प्रत्येक घर में छोटे-बड़े, जवानों वृद्धों सभी को शिकायतें बनी रहती है कि दस्त साफ नहीं होता, जिसके कारण भूक भी नहीं लगती, तबियत भी उदास रहती है। कब्ज रहते-रहते फिर अनेक रोग आदमी को आ घेरते हैं, वास्तव में रोगों का घर पेट नित्य साफ न होना ही है। जिस मनुष्य को नित्य प्रातः साफ दस्त हो जाता है उसे कोई रोग नहीं हो पाता। हमने यह दवा उन लोगों के लिये बनाई है जिनको नित्य ही कब्ज की शिकायत रहती हो और कई-कई बार दस्त जाना पड़ता हो। इसका रात्रि में सेवन करने से नित्य प्रातः साफ दस्त होता है तबियत साफ हो जाती है, तथा कार्य करने में उत्साह होजाता है। मूल्य १ शीशी (३१ गोली) १)

गोपाल चूर्ण—जिनकी प्रकृति पित्त की हो उन्हें इसके सेवन से दस्त साफ होता है। जिनको मलावरोध हो उन्हें इसमें से तीन माशे रात को सोते समय गुनगुने जल के साथ या गरम दूध के साथ

फंका लेने से मुख साफ हो जाता है। १ शीशी (२ औंस) ॥=)

मृदुविरेचन चूर्ण—यह मृदुविरेचक है। जिन्हें मलावरोध रहता हो और अनेक औषधियों से न गया हो भोजनोपरान्त तीन-तीन माशे गुनगुने पानी से फकावे। यदि पेट में नुकसान सा मालूम पड़े तो सौंफ चबा ले। इसके १५ दिन के सेवन से मलावरोध नष्ट होजाता है मूल्य—१ शीशी (२ औंस) ॥=)

आमनिसारक वटी—

प्रात काल गुनगुने जल के साथ एक से तीन गोली तक सेवन कराने से गुदा के द्वारा आम निकलने लगती है, जिन रोगियों को आंव का विकार हो या आमवात का योग हो उन्हें इसके सेवन से विशेष लाभ होता है। यदि पेट में दर्द ऐंठा करे तब चिन्ता नहीं करें क्योंकि आंव निकलते समय प्रायः ऐसा होजाता है। मूल्य १ शी. (१ तोला) १)

मुख के छालों की दवा—गर्मी से अथवा मलावरोध किसी भी कारण से मुंह में छाले हो जांय इसको छालों पर बुरक कर मुंह नीचे करदे। लार गिरने लगेगी। दिन-रात में छाले नष्ट हो जायगे। मूल्य—१ शीशी (आधा औंस) ॥=)

कर्णामृत तैल—कान में सांय-सांय शब्द होना, मवाद बहना आदि कर्णरोगों के लिये उत्तम तैल है। कान को पिचकारी से स्वच्छ करने के बाद इस तैल की २-३ बूंद दिन में तीन बार डालें। १ शीशी (आधा औंस) ॥=)

बालापस्मारहर वटी—बालक बेहोश होजाता है, हाथ-पैर ऐंठ जाते हैं मुख से लार (झाग) देने लगता है, दांती बन्द होजाती है बालक की ऐसी हालत में यह दवा अक्सीर प्रमाणित होती है। शीशी २)

मधुमेहान्तक रस—मधुमेह की यह प्रभावशाली उत्तम महौषधि है। बहुमूत्र व सोमरोग में भी विशेष लाभप्रद है। वैद्यों एवं मधुमेह रोगियों से अनुरोध है कि वे इसका व्यवहार कर हमारे परिश्रम को सफल करे। मूल्य १० गोली २≡)

[illegible]—[illegible] यह [illegible] है। [illegible] इस रोग की [illegible] भी [illegible] करने से [illegible] है और [illegible] जाना, [illegible] होना, [illegible] आदि [illegible] नष्ट हो जाते हैं। १ शीशी ॥)

[illegible] के लिए [illegible] है [illegible] पानी बहना, [illegible] आदि शीघ्र नष्ट होते हैं। मूल्य [illegible] शीशी ॥)

अग्निदीपन चूर्ण—अग्नि को दीपन करने वाला, मीठा चूर्ण है। भोजन के बाद [illegible] कब्ज दूर होता तथा रुचि बढ़ती। १ शी. (२ औंस) ॥)

[illegible] चूर्ण—स्वादिष्ट, शीतल [illegible] पाचक चूर्ण है। एक बार चख लेने पर आपकी [illegible] आप खाते ही रहेंगे। गुण और स्वाद दोनों में लाजवाब है। १ शीशी (२ औंस) ॥) छोटी शीशी (१ औंस) ।-)

अग्निवल्लभ क्षार—सम्पूर्ण चिकित्सा सार यही है कि जठराग्नि की रक्षा की जाय, चाहे सैकड़ों दोष कुपित क्यों न हों, हजारों रोग शरीर में क्यों न भरे पड़े हों परन्तु उनकी चिन्ता न करके एक जठराग्नि की रक्षा करता हुआ मनुष्य अपने जीवन की रक्षा करे। जब भोजन जठराग्नि द्वारापच जाता है तब ही रस रक्तादि शारीरिक धातु बनकर शरीर को बलवान बनाता है। लेकिन आज जिधर देखिए उधर यही सुनने में आती है कि हमारी अग्नि कमजोर है खाना हजम नहीं होता दस्त साफ नहीं उतरता, भूख नहीं लगती इत्यादि-इत्यादि। अग्निवल्लभ क्षार के सेवन से अग्नि प्रज्वलित होती है। खाना खाया हुआ हजम होता है, भूख न लगना, दस्त साफ न होना, खट्टी डकारों का आना, पेट में दर्द तथा भारीपन होना तबियत मिचलाना, अपान वायु का बिगड़ना इत्यादि सामयिक शिकायतें दूर होती हैं। परदेश में रहकर सेवन करने वालों को मल दोष नहीं होता है। परदेश

में रहकर सेवन करने वालों को मल दोष नहीं सताता, गृहस्थों के लिये संग्रह करने योग्य महौषधि है। क्योंकि जब किसी तरह की शिकायत देखो चट अग्निवल्लभक्षार सेवन करने से उसी समय तबियत साफ होजाती है। १ शीशी (२ औंस) १)

ग्रहणीरिपु—हमने इसे बड़े परिश्रम से बनाया है। यह ग्रहणीरोग के लिये अव्यर्थ है। हजारों रोगियों पर परीक्षा कर हमने इसे वैद्यों के सामने रक्खा है। एक बार परीक्षा कर देखिये पुराने दस्तों के लिये चुनी हुई एक ही औषधि है। पाचन शक्ति बढाने के लिये इसके सामान दूसरी औषधि नहीं है। १ शीशी आध औंस ३॥)

खाजरिपु—खाज बहुत ही परेशान करने वाला तथा घृणित रोग है। अनेक रोगियों पर भली प्रकार परीक्षा करने के बाद 'खाजरिपु' नामक तैल को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया गया था। अब तो इसे व्यवहार करने वाले इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। गीली तथा सूखी दोनों प्रकार की खाज के लिये यह अक्सीर प्रमाणित हुआ है। मूल्य १ शीशी १) छोटी शीशी ॥=)

दाद की दवा—

यह दाद की अक्सीर दवा है। दाद को साफ करके किसी मोटे वस्त्र से खुजला कर दवा की मालिश करे। स्नान करने के बाद रोजाना वस्त्र से अच्छी प्रकार पोंछ लिया करे। १ शीशी ॥)

अण्डवृद्धि हर लेप—

इतना बडा कपडा ले जो बढ़े हुए फोते को ढक सके और उस पर यह लेप लगाकर आग के कोयलों पर सेक कर सुहाता-सुहाता फोते पर चुपकावे। दिन-रात में एक बार लगावे, लेकिन २-१ बार रुई के फाहे से सेक दिया करे। इस लेप के कुछ दिन व्यवहार से फोते प्राकृतिक दशा को प्राप्त होते है। एक शीशी आध औंस १)

स्वादिष्ट चटनी—

अतिस्वादिष्ट और पाचक चटनी है। यह सड़े गले द्रव्यों से निर्मित बाजारू सस्ते गीले चूर्ण के समान नहीं है। सर्वोत्तम और शीघ्र प्रभावकारी द्रव्यों से निर्मित चटनी है। एक परीक्षा करने पर ही इसके गुणों से आप परिचित हो सकेंगे। मूल्य १ शीशी (१ औंस की) ।॥)

अन्य सफल प्रमाणित औषधियां

प्रदरहर सैट—

१ स्त्रीसुधा—स्त्रियों के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रसिद्ध चमत्कारिक औषधि मू० १ बोतल ३॥) १ शीशी १॥)

२. मधुकाद्यावलेह—स्त्रीसुधा के साथ-साथ इसे भी व्यवहार करने से शीघ्र लाभ प्राप्त होगा। मू० १ शीशी ३॥)

रजप्रवर्तक वटी १ शीशी १)

हिस्टेरियाहर सैट १५ दिन की तीनों दवा का मू० ७)

सुजाकहर कैपसूल १ शीशी ३)

सुजाक की पिचकारी की दवा १ शीशी १)

उपदशहर कैपसूल १ शीशी २॥)

उपदशहर मलहम १ शीशी १)

कामदीपकतिला—सफल व पूर्ण परीक्षित १ शीशी २॥)

क्लीवत्वहरपोटली—सिकाई करने के लिए १ डिब्बा २)

क्लीवत्वहर सैट—मकरध्वजवटी, तिला व पोटली तीनो दवा २० दिन व्यवहार करने योग्य— १ सैट ६)

के

उपयोगी विशेषांक

धन्वन्तरि के विशेषांकों की प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। इन विशेषांकों की धूम सर्वत्र है और सभी विद्वानों तथा ग्राहकों ने इनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। कई विशेषांकों का पुनर्मुद्रण होना ही इनकी उपयोगिता प्रमाणित करता है। अब तक लगभग ५० विशेषांक प्रकाशित किए जा चुके हैं किन्तु अब निम्न विशेषांक ही शेष हैं और इनके भी शीघ्र समाप्त हो जाने की आशा है। अतएव शीघ्र ही आप इनकी १-१ प्रति मंगा लीजियेगा।

माधव निदानांक —

इसमें सम्पूर्ण माधव निदान सरल हिन्दी टीका सहित प्रकाशित है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में तत्सम्बन्धित एलोपैथिक समन्वयात्मक विवेचन दिया है। विषय को स्पष्ट करने के लिए विशेष वक्तव्य एवं चित्र दिए हैं। इस टीका की सभी विद्वानों ने प्रशंसा की है तथा विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बतलाया है। पृष्ठ संख्या २०×३०=८ पेजी के ६४४, चित्र १५५। मूल्य केवल ८॥)

चरक चिकित्सांक—

पृष्ठ संख्या ७०४। चित्र संख्या ८०। इस विशेषांक में चरक संहिता चिकित्सा स्थान सटीक प्रकाशित किया गया है। स्थान-स्थान पर विशेष वक्तव्य द्वारा विषय को बड़ी सरलता के साथ समझाया है। विशेष वक्तव्यों की संख्या ५०८ है जिससे आप समझ सकते हैं कि विषय को सुबोध बनाने में बड़ा परिश्रम किया गया है। प्रारम्भिक १०० पृष्ठों में विविध विद्वानों के सारपूर्ण लेखों द्वारा चरक चिकित्सा की विशेषतायें, चरक-संहिता का इतिहास आदि अनेक ज्ञातव्य विषयों पर खोजपूर्ण विवेचन किया गया है। शुद्ध प्रामाणिक मूलपाठ एवं भाषानुवाद, सारभूत व्याख्या व वक्तव्य, आधुनिक मत से यत्र तत्र समन्वय आदि पढ़ने से वैद्यों एवं विद्यार्थियों को बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त होगा। ग्लेज कागज पर छपे सुन्दर राजसंस्करण का मूल्य ८॥)

बालरोगांक (द्वितीय संस्करण)—

पृष्ठ ३२४ इसके विशेष सम्पादक श्री बा० हरिदास जी ने इस विशेषांक को सुन्दर तथा उपयोगी बनाने में कठिन परिश्रम किया था। बाल-रोगों के विस्तृत लक्षण अनुभवपूर्ण चिकित्सा, सफल प्रयोगों का विशाल संग्रह इस विशेषाङ्क में है। इसमें लेखकों ने अपने अनुभवों को दिल खोल कर रख दिया है। मन्थरज्वर, उदर कृमि, रोहिणी (डिफ्थीरिया) बालशोष (सूखा रोग), शीतला (माता) खसरा (रोमान्तिका), डब्बा (पसली चलना) बालग्रह आदि रोगों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। मूल्य ६)

पुरुष रोगाङ्क (द्वितीय संस्करण)—

पृष्ठ २८८। लगभग १४ वर्ष पूर्व, अमृतधारा के आविष्कारक कविविनोद पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्य के सम्पादकत्व में यह विशेषांक प्रकाशित हुआ था। इस विशेषांक में भारतवर्ष के प्रसिद्ध ५६ चिकित्सकों के पुरुषों के विशेष रोगों पर अनुभवपूर्ण लेख, सफल चिकित्सा एवं प्रयोगादि वर्णित हैं। नपुंसकता, प्रमेह, मधुमेह, स्वप्नदोष, अण्डवृद्धि आदि रोगों का विस्तृत वैज्ञानिक विवेचन अधिकारी लेखकों द्वारा लिखित प्रकाशित किया गया है।

इस समय जनता में ये रोग अधिक प्रचलित हैं, अतएव चिकित्सकों को यह विशेषांक अवश्य पढ़ना चाहिए। इसमें सैकड़ों अनुभवपूर्ण प्रयोग हैं, जिनको आप सफलता-पूर्वक अपने रोगियों को व्यवहार करा सकेंगे। इस विशेषांक की १-१ लाइन पठनीय है। गागर में सागर भर दिया है। मूल्य ६)

गुप्तसिद्ध प्रयोगाङ्क (द्वितीय संस्करण) प्रथम भाग—

पृष्ठ २७६। इसमें भारत के अनुभवी एवं ख्याति प्राप्त २१६ चिकित्सकों के ५०० सफल एवं सरल प्रयोगों का अभूतपूर्व संग्रह प्रकाशित किया गया है। इसका १-१ प्रयोग अनुभव की कसौटी पर कसा गया है। प्रयोगों को रोगों की किस अवस्था में किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए इसका स्पष्ट उल्लेख किया है। पूज्यपाद आचार्य यादव जी त्रिकम जी, स्वामी जयरामदास जी, श्री पं० मन्तराम जी, पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, पं० गोवर्धन शर्मा छांगाणी, पं० रघुवरदयाल जी भट्ट आदि ख्याति प्राप्त एवं अनुभवी विद्वानों के उत्तमोत्तम प्रयोगरत्न इसमें प्रकाशित हैं। हरेक छोटे-बड़े रोग पर २-४ सफल प्रयोग आप इसमें प्राप्त कर सकेंगे। हर चिकित्सक को सदैव पास रखने योग्य ग्रन्थ है। मू० ६)

गुप्तसिद्ध प्रयोगाङ्क (द्वितीय भाग)—

इसमें ८० प्रसिद्ध एवं अनुभवी चिकित्सकों के २५० सफल प्रयोगों का संग्रह है। १-१ प्रयोग समय पड़ने पर सैकड़ों रुपयों का कार्य देगा। बड़ा आग्रह करके सरल-सफल प्रयोगों को प्राप्त कर प्रकाशित किया गया है। मूल्य २)

गुप्तसिद्ध प्रयोगाङ्क (तृतीय भाग)—

इसमें ७१ प्रसिद्ध एवं अनुभवी चिकित्सकों के लगभग २०० प्रयोगों का अभूतपूर्व संग्रह है। मू० २)

भैषज्य कल्पनाङ्क—

इसके सम्पादक आचार्य पं० रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी A.M.S. ने ३६२ पृष्ठों में वह साहित्य प्रस्तुत किया है जो आप अन्यत्र १००० पृष्ठों में भी प्राप्त नहीं कर सकेंगे। १७२ परिभाषायें, १८ सूपायें, १० पुट, ३६ यन्त्र, २०० कषाय, ११० चूर्ण, २८ गुग्गुल, १२ पाकावलेह, ३४ पानक, १२६ आसवारिष्ट, ७६ घृत, ३४ तैल के योग निर्माण विधि, गुण आदि वर्णित है इस विशेषांक में १३ प्रकरण, ४६ लेखों का श्रृङ्खलाबद्ध एवं वैज्ञानिक रूपेण समावेश किया गया है। ६८ चित्रों द्वारा विषय को सुबोध बनाया गया है। यह विशेषांक वैद्य, निर्माणशालाओं के व्यवस्थापकों के लिए अवश्य संग्रहणीय है। मू० ४)

भैषज्य कल्पनाङ्क परिशिष्टाङ्क—

इसमें धातु-शोधन-मारण भस्मीकरण, परीक्षा आदि भलीभांति समझाई गई। मू० १) मात्र।

संक्रामक रोगाङ्क—

पृष्ठ संख्या ३२०। इस विशेषांक का सम्पादन कविराज मदनगोपाल जी A. M. S., M. L. A. ने बड़े परिश्रम से किया है। इस विशेषांक को पढ़ने पर चिकित्सकों को संक्रामक रोगों से बचने के उपाय, रोगी की सफल चिकित्सा-विधि शास्त्रीय विवेचन सभी कुछ ज्ञान प्राप्त हो जावेगा। आप हैजा, प्लेग, चेचक, मलेरिया प्रभृति भीषण रोग का प्रतिकार सफलतापूर्वक करते हुए सफल एवं प्रसिद्ध चिकित्सक बन जाने की क्षमता प्राप्त करेंगे। मूल्य ४) पोस्ट-व्यय पृथक्।

कल्प एवं पञ्चकर्म चिकित्सांक—

पृष्ठ संख्या ३०४। इस विशेषांक का सम्पादन तिब्बिया कालेज देहली के प्रोफेसर कविराज उपेन्द्रनाथदास जी ने बड़े परिश्रम से किया है। 'पञ्चकर्म' एवं "कल्प" आयुर्वेद की प्राचीन एवं सर्वोपरि चिकित्सा विधियां हैं। इस विशेषांक में अनुभवी व्यक्तियों द्वारा इन कल्प तथा पञ्चकर्म विधियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। श्री० पं० कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी B. A. आयुर्वेदाचार्य का ६० पृष्ठ का "पञ्चकर्म" शीर्षक लेख अत्यधिक उपयोगी एवं मननीय है। २२० पृष्ठों में विविध कल्पों का विस्तृत वर्णन है। मू० ४) मात्र।

इञ्जेक्शन विज्ञानाङ्क (दो भाग)

श्री. चौधरी तेजबहादुरसिंह D. I. M. S. ने इन्जेक्शन विषयक सम्पूर्ण साहित्य पूर्ण विस्तार के साथ लिखा है। अनेकों सुन्दर सुबोध चित्रों द्वारा इन्जेक्शन विषय को स्पष्ट समझाया है। अपने विषय का हिंदी में अद्वितीय साहित्य है। दोनों भागों की पृष्ठ संख्या ३१५, थोड़ी प्रतियें शेष हैं। मू० ४)

विष-चिकित्सांक—

श्री. पं. ताराशंकर जी मिश्र आयुर्वेदाचार्य द्वारा सम्पादित एव आयुर्वेद के धुरन्धर विद्वानो एवं अनुभवी चिकित्सको का सहयोग प्राप्त अष्टागायुर्वेद के अगद-तन्त्र पर सर्वाङ्गपूर्ण साहित्य है। "विष की चिकित्सा एव विष द्वारा चिकित्सा" इस विशेषांक का मूल उद्देश्य रहा है। यह विशेषांक भीषण संकट के समय में काम आने वाले उपयोगी साहित्य से लबालब है। ३६४ पृष्ठो मे स्थावर जगम सम्पूर्ण विषो के विषय मे सारपूर्ण क्रमबद्ध साहित्य संकलित किया गया है। मू० प्रथम भाग ४) द्वितीय भाग १)

यकृतप्लीहा रोगाक—

यकृत् और प्लीहा मानव शरीर के महत्वपूर्ण अङ्ग है। इनमे विकृति होने से मनुष्य को भीषण कष्टो का सामना करना पड़ता है। इसके विविध रोगो के यदि आप सफल चिकित्सक बनना चाहते है तो आपको इस विशेषांक की एक प्रति अवश्य मंगा लेनी चाहिये। पृष्ठ १६४, अनेको चित्रो से सुसज्जित मूल्य २) मात्र, पोस्टव्यय-प्रथक्।

चिकित्सा समन्वयांक (प्रथम भाग)—

इसके सम्पादक है पं. ताराशंकर जी मिश्र आयुर्वेदाचार्य। इसमे आयुर्वेद एव एलोपैथी का समन्वय किस प्रकार हो सकता है उससे लाभ क्या है तथा हानि क्या है यह सभी विषय अधिकारी लेखको के द्वारा वर्णित है। इसके पश्चात् ज्वर, (पित्तज्वर, वातज्वर, श्लेष्मज्वर, इन्फ्लुएञ्जा, बैरी-बैरी कालाज्वर, विषमज्वर, आदि) अतिसार, अर्श, कृमिरोग, विसूचिका, अम्लपित्त, पाण्डुरोग, कामला, वमन, यकृदाल्युदर तथा प्लीहोदर, जलोदर, फुफ्फुस-राजयक्ष्मा, क्षय, कास, तमक श्वास, श्वसनक ज्वर, हृद्रोग, मदात्यय, उन्माद, अपस्मार, मृगी, अतत्वाभिनिवेश, प्रज्ञापराध रोगो की आयुर्वेद एवं एलोपैथी मिश्रित चिकित्सा से किस प्रकार सफलतापूर्वक चिकित्सा की जा सकती है ह वर्णित है। इस विशेषांक के निर्माण मे डा० प्राणजीवन मेहता, पूज्य यादव जी महाराज, पं० सत्यनारायण जो, पं. शिवशर्मा जी, कविराज सतीन्द्रनाथ वसु, कविराज हरिनारायण शर्मा श्री० अत्रिदेव गुप्त आयुर्वेदालकार आदि ५५ विद्वानों ने सहयोग दिया है। पृष्ठ संख्या ३६४ अनेकों रङ्गीन एवं सादे चित्र। मूल्य ४)

चिकित्सा समन्वयाक (द्वितीय भाग)—

इसमे १५२ पृष्ठों मे आक्षेपक, धनुस्तम्भ, अर्दित, गृध्रसी, उरुस्तम्भ, अश्मरी और शर्करा, फिरङ्ग, नपुंसकता, शीतपित्त, रक्तपित्त, कुष्ठ, आर्तवादर्शन, श्वेत प्रदर, उन्माद, फक्करोग, बालापस्मार, डिफ्थीरिया आदि कष्टसाध्य रोगो की मिश्रित सफल चिकित्सा विधि वर्णित है। मूल्य २)

प्रसूति विज्ञानाक—

प्रसूतितन्त्र पर यह सर्वांगपूर्ण साहित्य है। इसके सम्पादक है श्री प. रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी A. M. S। इसमे ५०४ पृष्ठ तथा १२५ चित्र है। प्रसूति एव प्रसूता को होने वाली सम्पूर्ण व्याधियों के विषय में क्रमबद्ध सुन्दर सुविस्तृत विवरण दिया है। वैद्यो, गृहस्थियो तथा विद्यार्थियों सभी के लिये पठनीय साहित्य है। इसकी प्रसशा सभी विद्वानो ने की है। मूल्य ८॥)

वैद्यों के लिये उपयोगी सामग्री

आजकल वैज्ञानिक युग मे अनेक ऐसे यन्त्रादि चल पड़े हैं जिनके व्यवहार से चिकित्सा मे बडी सुविधा होती है तथा इन उपकरणों के विना चिकित्सक अधूरा और निकम्मा समझा जाता है। चिकित्सकों को इन वस्तुओं को मंगाकर व्यवहार मे लाकर लाभ उठाना चाहिए।

आंख धोने का ग्लास—किसी वस्तु का कण या उडता हुआ कोई छोटा सा कीड़ा आख मे पड जाने पर निकलना कठिन हो जाता है और वह वडा कष्ट देता है। इस ग्लास से जल भरकर आख मे लगा धोने पर आसानी से निकल जाता है। मूल्य ।।।)

२—गले व जवान देखने की जीवी—(Tongue Depressure) गला देखने के लिए जव रोगी मुंह खोलता है तव जीभ (जिह्वा) का उठाव गले को ढंक लेता है और गले मे क्या व्याधा है चिकित्सक नहीं देख पाता। इस यन्त्र से जीभ दवाकर मुंह खोलने पर गला तथा अन्दर की जीभ स्पष्ट दीखती है। मू० १।।।)

३—दूध निकालने का यन्त्र-स्त्री के स्तन मे पकाव या फोडा होजाने पर अथवा नवजात शिशु
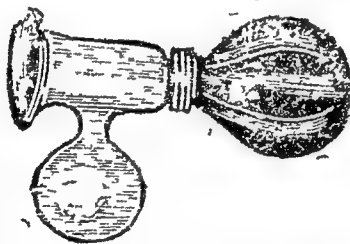
की मृत्यु होजाने पर स्तनो मे भरा हुआ दुग्ध वडा परेशान करता है। इस यन्त्र द्वारा आसानी से दुग्ध निकाला जा सकता है। मू० २।)

४—डूस—इससे फोड़ा आदि धोने से वडी सुविधा रहती है। मू० रवड की नली व टोंटनी आदि से पूर्ण २ पिंट का ५) ४ पिंट का ७।।)

५—कान धोने की पिचकारी—धातु की १ औंस ४।।) २ औंस की ६), ४ औंस की ७।।)

६—कान देखने का आला—कान मे फुंसी है, सूजन है या किसी अनाज का दाना पड गया है और वह फूलकर कष्ट दे रहा है यह देखना कठिन हो जाता है। इस आले (यन्त्र) से कान के अन्दर का दृश्य स्पष्ट दीख पडता है। मू० १२)
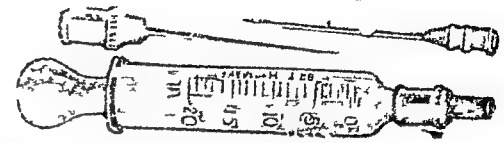
७—इन्जैक्शन-सिरिज (कम्पलीट) सम्पूर्ण काच की २ सी० सी २) ५ सी. सी. ३), १० सी सी. ६), २० सी सी. ८) रेकार्ड सिरिज-२ सी० सी० ५), ५ सी० सी० ७) १० सी० सी० १२)

८—थर्मामीटर (तापमापक यन्त्र)—जापानी २) जील का सर्वोत्तम ४।।)

९—एनीमासिरिज (वस्ति-यन्त्र)—इस यंत्र से जल या औषधि-द्रव्य गुदा मे आसानी से चढ़ाया जा सकता है। मूल्य रवड का जर्मनी ६।।) भारतीय उत्तम ५।।)

१०—रवड़ के दस्ताने—चीड-फाड़ करते समय, संक्रमण से रोगी को और अपने को वचाने के लिये चिकित्सक इन दस्तानो को हाथ मे पहिनते हैं। मूल्य—१ जोडी २।।)

११—गरम पानी की थैली—उदर पीडा, शोथ या अन्य आवश्यक स्थानो पर इस थैली मे गरम पानी भर कर सुगमता से सिकाई की जा सकती है। मू० ५)

१२—वरफ की थैली—तेज वुखार, प्रलापावस्था, सिर पीड़ा या अन्य व्याधियों मे चिकित्सक शिर पर वरफ रखवाते हैं। इस थैली मे वरफ भरकर रखने से सुविधा रहती है, रोगी को इसकी ठडक पहुचती है किंतु उसके जल से वह भीगता नहीं है। मूल्य २।।)

१३—दवा नापने का ग्लास—(Measure Glass) कम्पाउण्डर अनुमान से दवा देकर कभी-कभी वडा अनर्थ कर डालते हैं। अतएव हर चिकित्सक को इन ग्लासो को अवश्य मगाकर रखना चाहिए। गलती भी न होगी तथा सुविधा भी रहेगी। मूल्य २ ड्राम का (बूंद नापने के काम

आता है) ॥=), १ औंस का ।॥=) २ औंस का १) ४ औंस का २।)

१४—स्टेथस्कोप—(वक्षपरीक्षायन्त्र)—चिकित्सक ठेपन (अगुलिताडन) मे वक्ष परीक्षा करते है किन्तु वह अधिक अभ्यास से ही समझ मे आ सकती है इस यन्त्र से सुविधा रहती है। साथ ही आजकल के जमाने मे चिकित्सक का सम्मान भी इसी मे है कि वे इस प्रकार के यन्त्रो का व्यवहार मे लाते हुए रोगियो पर अपनी धाक जमाये। मूल्य–१२), सस्ते वाला साधारण ८) चीन का बना तिहरा काम देने वाला सर्वोत्तम स्टेथिस्कोप का मूल्य २२)

१५—खरल चीनी का गोल—ये खरल दवा मिलाने घोटने के लिये उपयोगी है। मूल्य २॥ इञ्ची १॥) ३ इञ्ची २) ४ इञ्ची २॥) तथा ५ इञ्ची ३॥)

१६—सुजाक की पिचकारी—सुजाक मे जो मवाद निकलता है वह मूत्र नली में अन्दर चिपक कर व्रण पैदा कर देता है। जब तक वह अन्दर से साफ नहीं होता रोग का नष्ट होना कठिन हो जाता है। इस पिचकारी से अन्दर दवा पहुंचाकर आसानी से सफाई कर सकते है। मूल्य मनुष्य के लिए ॥) जनानी ॥–)

१७—मूत्र कराने की नली (कैथीटर)—मूत्र रुकने से रोगी को महान कष्ट होता है। कभी-कभी मृत्यु भी हो जाती है। इस नली की सहायता से मूत्र आसानी से निकाला जा सकता है। मूल्य ।॥) स्त्रियों के लिये धातु की कैथीटर १।)

१८—मोतीझला देखने का शीशा—मोतीझला Typhoid के दाने बहुत सूक्ष्म होने के कारण देखने मे नहीं आते हैं और इसलिये कभी कभी निदान करने मे बडी भूल हो जाती है। इस शीशा के द्वारा वे दाने बड़े-बड़े दीख पडते हैं तथा आप आसानी से पहिचान सकते है। हर चिकित्सक को अपने पास एक शीशा अवश्य रखना चाहिए। मू० छोटा बढ़िया शीशा २) बढ़िया धातु के हैंडिल का छोटा ३) बड़ा ४)

१९—स्प्रिट लैम्प—थोडी दवा गरम करनी हो, अथवा सूई की दवा मे इन्जेक्शन के लिए दवा तैयार करनी हो तब इस लैम्प की सहायता लेनी पडती है। मू० कांच की २) धातु की २ औंस की ३॥) ४ औंस की ४॥)

२०—आंख मे दवा डालने की पिचकारी-१ दर्जन ।॥≡)

२१—नपुंसकता निवारक यन्त्र—(Organ Developing instrument) इसके व्यवहार करने से इन्द्री की शिथिलता दूर होती है। इन्द्री छोटी हो तो बढ़ जाती है। इस यन्त्र मे दो हिस्से है। एक कांच का गोल ग्लास जैसा होता है जिसमे इन्द्री रखली जाती है, ऊपर टोटनी होती है उसमे सक्शन पम्प [इस यन्त्र का दूसरा हिस्सा] रबड की नली के द्वारा लगाकर पम्प चालू करने से ग्लास के अन्दर की हवा खिंच आती है और इन्द्री फूलने लगती है। इस प्रकार फूलने से ताजा रक्त इन्द्री की ओर दौडता है और उसमें कडापन आता है। इसी प्रकार १-१॥ माह ५-५ १०-१० मिनट करने से इन्द्री की शिथिलता नष्ट हो जाती है। चिकित्सको को चाहिए कि वे अपने रोगियों पर औषधि के प्रयोग के साथ-साथ इसका व्यवहार भी अवश्य करावे, उनको शीघ्र सफलता मिलेगी। मूल्य १४)

२२—कांटे (scales)—अंग्रेजी बैलेंस की तरह के कीमती दवाओं को सही व आसानी से तोलने के लिए व्यवहार मे लाना चाहिए, निकिल पोलिश लकड़ी के बक्स के अन्दर रखे है। मूल्य ८)

२३—सिरिंज केस निकिल किए हुए—सिरिंज सुरक्षित रखने के लिए। मू० १ केस २ c.c. की सिरिंज के लिए १॥) ५ c. c. के लिए २॥)

२४—ग्लिसरीन की पिचकारी-गुदा मे ग्लसरीन चढ़ाने के लिए प्लास्टिक की उत्तम क्वालिटी की पिचकारी। मूल्य १ औंस ३) २ औंस ४॥)

२५—दांत निकालने का जमूड़ा (Tooth forcep universal) इससे दांत मजबूती से पकड़कर उखाड़ा जा सकता है। मूल्य ५)

२६—मलहम मिलाने की छुरी—स्पेचुला (Spetula) मूल्य १।)

२७—मलहम मिलाने का प्लेट—मूल्य १)

२८—थर्मामीटर केस—धातु के निकिल किये, क्लिप सहित १।)

यह पुस्तक एक ऐसा ही रत्न है। अनुभवी और विचारशील लेखक महोदय ने हिमालय पर्यटन के परिश्रम से इसकी खोज की है। उन्हीं के प्रशंसनीय प्रयत्न से यह पुस्तक वैद्य समुदाय की सेवा में उपस्थित कर सके हैं। इसमें अनेक अव्यर्थ प्रयोग सत्व प्रस्तुत विधि, उपधातु का शोधन-मारण प्रभृति अनेक विषय दिए गए है। मूल्य १)

कुचिमार तन्त्र (भाषा टीका)

श्रीमद् कुचिमार मुनि प्रणीत। प्रस्तुत पुस्तक प्राचीन और अत्यन्त गोपनीय है। इसमें इन्द्रीय वृद्धि, स्थूलीकरण कामोद्दीपन, लेप, वाजीकरण, द्रावण स्तम्भन, सकोचन व केशपात, गर्भाधान, सहज प्रसव आदि पर अनेक योग भली भांति बताये गये है। इस नवीन संस्करण मे प्रमेह नपुंसकता मधुमेह आदि रोगों पर स्वानुभूत प्रयोगो का एक छोटा सा संग्रह भी दिया है। मूल्य ॥)

दशमूल (सचित्र)

लेखक—लाला रूपलाल जी वैश्य, बूटी-विशेषज्ञ। दशमूल किसे कहते है? किन-किन औषधियो से बना है? उन औषधियों की आकृति कैसी है? यह विरले ही जानते हैं। इस पुस्तक मे दशमूल की दश औषधियों का सचित्र वर्णन है। साथ ही उनके पर्याय नाम गुण और प्रयोग भी बताये गए हैं। तथा दशमूल पचमूल से बनने वाले अनेक योगो की विधिया भी दी गई है चित्र इतने स्पष्ट है कि देखते ही झट पहिचान सकते है। मूल्य ॥)

दन्त-विज्ञान (द्वितीय संस्करण)

यह भिषग्रत्न स्वर्गीय श्री गोपीनाथ जी गुप्त की सारपूर्ण रचना है, इसमें दांतो की रचना; आंतरिक दशा, रक्षा के उपाय, अनेक दन्त-रोगों के भेद वर्णन और सरल चमत्कारी उपचार दिए गए है, चार चित्र युक्त। मूल्य ।=) मात्र।

न्यूमोनिया प्रकाश (द्वितीय संस्करण)

आयुर्वेद मनीषी स्वर्गीय पं० देवकरण जी वाजपेयी की यह वही उत्तम रचना है जिस पर धन्वन्तरि पदक मिला था और जो निखिल भारतीय वैद्य सम्मेलन में सम्मान और पदक प्राप्त कर चुकी है। न्यूमोनिया की शास्त्रीय व्युत्पत्ति कारण निदान, परिणाम चिकित्सा आदि सभी बातें इस पुस्तक में भली-भांति वर्णित हैं। मूल्य ।=)

आकृति[illegible]

लेखक—स्वर्गीय लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज। मलेरिया [फसली बुखार] का पूर्ण विवेचन है। आयुर्वेदीय मत से मलेरिया कैसे होता है उसके दूर करने के आयुर्वेदीय प्रयोग, क्विनाइन से हानियां आदि विषयों पर पूर्ण प्रकाश डाला है। पुस्तक स्वानुभव के आधार पर लिखी होने के कारण महत्वपूर्ण है। मूल्य ।)

वैद्यराज जी की जीवनी

स्वर्गीय श्री. लाला राधावल्लभ जी की जीवनी बड़ी ओजस्वनी भाषा में लिखी है। इसके पढ़ने से आलसी पुरुष भी उद्योगी और परिश्रमी बनने की इच्छा करता है। मूल्य ≈)

वेदों में वैद्यक शास्त्र

लेखक—स्वर्गीय लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज। वेद के मन्त्र जिनमें आयुर्वेदीय विषयो का वर्णन है तथा जिनसे आयुर्वेद की प्राचीनता प्रमाणित होती है शब्दार्थ तथा भावार्थ सहित दिये हैं। मू० ≈)

कूपीपक्व रसायन

लेखक-वैद्य देवीशरण जी गर्ग प्र० सम्पादक धन्वन्तरि। धन्वन्तरि कार्यालय में निर्माण होने वाले कूपीपक्व रसायनो के गुण, मात्रा, अनुमान, सेवनविधि आदि विस्तृत रूप से वर्णित हैं। मूल्य प्रचारार्थ —)

भस्म पर्पटी

लेखक—वैद्य देवीशरण जी गर्ग प्र० सम्पादक धन्वन्तरि। इसमें धन्वन्तरि कार्यालय मे निर्माण होने वाली सम्पूर्ण भस्मों और पर्पटियो का विस्तृत रूप से वर्णन है। रोग के लक्षणानुसार इन औषधियो को किस प्रकार सरलता के साथ व्यवहार किया जा सकता है यह आप इस [पु]स्तिका से जान सकेंगे। मू० —)

रस रसायन गुटिका गूगल

धन्वन्तरि के प्रधान सम्पादक एवं अनुभवी चिकित्सक वैद्य देवीशरण जी गर्ग ने इस पुस्तक में धन्वन्तरि कार्यालय से निर्मित रस रसायन गुटिका गूगल के गुण-मात्रा-अनुपान-व्यवहार विधि बड़े ही उपयोगी ढङ्ग से लिखी है। चिकित्सकों के लिये यह पुस्तक विशेष उपयोगी बनी है, क्योंकि लेखक ने अपने १५ वर्ष के चिकित्सानुभव का निचोड़ इसमें रख दिया है। मू० ।) चार आना मात्र।

रक्त (Blood)

इसमें धन्वन्तरि कार्यालय के संस्थापक श्री. वैद्यराज राधावल्लभ जी ने रक्त की बनावट उपयोगिता एवं रक्त-सम्बन्धी सभी मोटी-मोटी बातें आयुर्वेद एवं एलोपैथी उभय पद्धतियों से सरल हिन्दी भाषा में समझाकर लिखी हैं। नवीन संस्करण मू० ।)

इन्फ्ल्युएञ्जा (फ्लु)

लेखक—श्री पं. कृष्णप्रसाद त्रिवेदी बी. ए. आयुर्वेदाचार्य। इसमें इन्फ्ल्युएञ्जा रोग का विस्तृत विवेचन तथा सफल चिकित्सा विधि वर्णित है। फ्लु और इसके सभी उपद्रवों की आयुर्वेदीय चिकित्सा है। मूल्य ॥) मात्र।

अन्य प्रकाशकों की पुस्तकें

आयुर्वेदीय ग्रन्थ रत्न

अष्टांगहृदय (सम्पूर्ण)—विद्योतनी, भाषा टीका वक्तव्य, परिशिष्ट एवं विस्तृत भूमिका सहित टीकाकार श्री. अत्रिदेव गुप्त। मू० १६)

अष्टांग-संग्रह—(सूत्रस्थान) हिन्दी टीका, व्याख्याकार पं. गोवर्धन शर्मा छांगाणी. मूल्य ८)

काश्यप-संहिता—टीकाकार श्री सत्यपाल भिषगाचार्य, विद्योतिनी भाषा टीका विस्तृत संस्कृत हिन्दी उपोद्घात सहित। ग्रन्थ का मुख्य विषय 'कौमारभृत्य' अष्टांगायुर्वेद का अपरिहार्य अङ्ग है, यह विषय पूर्ण विस्तृत और प्रामाणिक रूप से इस पुस्तक में वर्णित है। मूल्य १६)

कौमारभृत्य—(नव्य बालरोग सहित) बाल रोगों पर प्राच्य पाश्चात्य चिकित्सा विज्ञान के आधार पर लिखित सर्वांगपूर्ण विशाल ग्रन्थ, मूल्य ६)

गंगयति निदान—मूल लेखक पंजाब निवासी जैन यति गंगाराम जी। हिन्दी अनुवादकर्त्ता आयुर्वेदाचार्य श्री नरेन्द्रनाथ जी शास्त्री। मूल्य ६)

चरक संहिता (सम्पूर्ण)—श्री जयदेव विद्यालंकार द्वारा सरल सुविस्तृत भाषा-टीका युक्त, दो जिल्दों में, चतुर्थ संस्करण मूल्य २५)

चरक संहिता (सम्पूर्ण) तीन भागों में, टीकाकार श्री. अत्रिदेव गुप्त। मू. ३६)

चक्रदत्त—भावार्थ संदीपनी विस्तृत भाषा-टीका तथा विषद टिप्पणी सहित। परिशिष्ट में पंचलक्षणी निदान, डाक्टरी मूत्र परीक्षा, पथ्यापथ्य सहित। मूल्य १०)

द्रव्य गुण विज्ञान—[पूर्वार्ध]—छात्रोपयोगी संस्करण। लेखक आयुर्वेद मार्तण्ड वैद्य यादव जी त्रिकम जी आचार्य। द्रव्य, गुण, रसवीर्य विपाक, प्रभाव, कर्म का विज्ञानात्मक विवेचन मूल्य ५)

नूतनामृत सागर—यह प्राचीन पुस्तक है तथा इसे पढ़कर हजारों व्यक्ति चिकित्सक बन गये हैं इसके प्रयोग सुपरीक्षित एवं सरल हैं। मू० ८)

भावप्रकाश [सम्पूर्ण]—भाषा टीका सहित। दो जिल्दों में शारीरिक भाग पर प्राच्य पाश्चात्य मतों का समन्वयात्मक वर्णन, निघण्टु भाग पर विशिष्ट विवरण तथा चिकित्सा प्रकरण में प्रत्येक रोग पर प्राच्य-पाश्चात्य मतों का समन्वयात्मक विशेष टिप्पिणी से सुशोभित है मू. ३०)

भावप्रकाश निघण्टु—भाषाटीका एवं बृहद् परिशिष्ट सहित मू. ७॥) हरीतक्यादि वर्ग, ले० विश्वनाथ जी द्विवेदी मू० ७)

माधवनिदान [भाषाटीका युक्त] पूर्वार्द्ध—मधुकोष-संस्कृत टीका, विद्योतनी भाषा-टीका तथा वैज्ञानिक विमर्श टिप्पणी युक्त यह माधवनिदान बड़ा ही उपयोगी बन गया है। दो भाग मू० १३)

माधव निदान—मूलपाठ, मूलपाठ की सरल हिन्दी व्याख्या, मधुकोष संस्कृत व्याख्या और उसका सरल अनुवाद। वक्तव्य एवं टिप्पणी-युक्त यह ग्रंथ विद्यार्थियो तथा चिकित्सकों के लिये अवश्य पठनीय है। पृष्ठ १०१८ दो भागों मे मू. १२)

माधव निदान—सर्वांग सुन्दरी भाषा टीका सहित सजिल्द मू० ४॥)

माधव निदान—टीकाकार ब्रह्मशङ्कर शास्त्री, मधुकोष संस्कृत व्याख्या तथा मनोरमा हिन्दी टीका सहित। पृष्ठ संख्या ४१२ मू. ६)

मेघ-विनोद—सौदामिनी भाषा भाष्य, भाष्यकर्त्ता-आयुर्वेद विद्यावारिध कविराज श्री नरेन्द्रनाथ शास्त्री आयुर्वेदा०। इसमें सम्पूर्ण रोगो का सरल निदान तथा सफल चिकित्सा वर्णित है। मू० ६)

रसायनसार—श्री पं श्यामसुन्दराचार्य के बीसियों वर्षों के परिश्रम से प्राप्त प्रत्यक्षानुभव के आधार पर लिखित अपूर्व रसग्रन्थ। मू० ८)

रसेन्द्रसार सग्रह—वैज्ञानिक रस चन्द्रिका भाषा टीका परिशिष्ट मे नवीन रोगो पर रसो का प्रभाव, मान-परिभाषा, मूषा तथा पुट प्रकरण, अनुपान विधि तथा औषधि बनाने के नियमादि। मू० ६)

रसेन्द्रसार सग्रह (तीन भागो मे)—आयुर्वेद बृहस्पति पं. धनानन्द जी पन्त द्वारा संस्कृत टीका और हिन्दी भाषा सहित वैद्या, विद्यार्थियो के लिये उपयोगी है। पृष्ठ संख्या ११५० मू० ११)

रसरत्न समुच्चय—नवीन सुरत्नोज्वला विस्तृत भाषाटीका एवं परिशिष्ट सहित। मूल्य १०)

रसतरंगिणी—चतुर्थ संस्करण। भाषा टीका सहित। रस निर्माण धातु-उपधातुओं का शोधन मारण युक्त यह अनुपम ग्रन्थ है। मूल्य १०)

रसराज महोदधि—पांचों भाग, वस्तुत यह आयुर्वेदीय रसों का सागर ही है, प्राचीन ग्रन्थ है। तथा सरल भाषा मे लिखा, उपयोगी रसग्रन्थ है। नवीन सजिल्द संस्करण। मू० १०)

योगरत्नाकर—कायचिकित्सा विषयक उपलब्ध ग्रंथों मे यह सर्वोत्कृष्ट रचना है, चिकित्सक के लिये ज्ञातव्य सभी आवश्यक विषयों का सग्रह किया गया है। माधवोक्त क्रम से सभी रोगों का निदान व चिकित्सा का वर्णन है। मूल्य १८)

योगचिन्तामणि—टीकाकार पं० तुलसीताराम शर्मा इस ग्रंथ मे रोगो की चिकित्सा विधि तथा उनकी औषधियों का एक भडार एकत्रित है। मूल ग्रन्थ सस्कृत मे तथा यह उसकी भाषा टीका है। मू० ५।-)॥

शार्ङ्गधर सहिता—वैज्ञानिक विमर्शोपेत सुबोधिनी हिन्दी टीका, लक्ष्मी नामक टिप्पणी, पथ्यापथ्य एव विविध परिशिष्ट सहित। मूल्य ६)

सुश्रुत संहिता [सम्पूर्ण]—सरल हिन्दी टीका सहित टीकाकार श्री अत्रिदेव गुप्त विद्यालकार। सरल भाषा मे यह अनुवाद सभी वैद्यो तथा विद्यार्थियो के लिये पठनीय है। पक्की कपडे की जिल्द मूल्य २०)

सुश्रुत संहिता—सूत्रस्थान टीकाकार श्रीयुत घाणेकर। अब तक सभी टीकाओं मे उत्कृष्ट टीका, मूल्य ६)—इसी का शारीरस्थान मूल्य ८)

हारीत संहिता—ऋषि प्रणीत प्राचीन सहिता। भाषा टीका सहित, टीकाकार शिवसहाय जी सूद। पृष्ठ ५१२, मू० ८)

हरिहर संहिता—वैद्यराज हरिनाथ सांख्याचार्य, नवीन औषधियों का भी समावेश है। सरल भाषा टीका सहित ८)

आयुर्वेद सुलभ विज्ञान—छोटी सी पुस्तक में यथा-नाम तथा गुण साररूप आयुर्वेद का वर्णन। आयुर्वेद क्या है यह आप इस पुस्तक से जान सकेंगे मूल्य २॥)

वैद्यसहचर—लेखक—पं० विश्वनाथ द्विवेदी आयुर्वेदाचार्य। चतुर्थ संस्करण। इसे वैद्यो का सहचर ही समझें। इसमें लेखक ने अपने जीवन का सम्पूर्ण चिकित्सानुभव रख दिया है। अति उपयोगी है। मूल्य ३)

अष्टांग हृदय [वाग्भट्ट]—अनुवादक—श्रीकृष्णलाल भरतिया। सरल अनुवाद, उत्तम ग्लेज कागज, पक्की मजबूत जिल्द। मू० २०)

एलोपैथिक पुस्तकें हिन्दी में

आदर्श एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका—एलोपैथी विज्ञान के अनुसार प्रत्येक शरीर-विभाग पर काम करने वाली विशेष औषधियो की प्रकृति, गुणधर्म उपयोग, मात्रा, रोगनिदान के अनुसार इसमे वर्णित है। मूल्य ११)

हिन्दी माडर्न मैडीकल ट्रीटमेंट— (आधुनिक चिकित्सा) लखनऊ विश्व विद्यालय के प्रोफेसर श्री एम. एल. गुजराल M. B. M. R. C. P. (लन्दन) द्वारा लिखित एलोपैथी चिकित्सा का हिन्दी मे सर्वोत्तम प्रमाणिक ग्रन्थ है। चिकित्सकों के लिए अत्युपयोगी है। मूल्य २०)

पेटेन्ट प्रेस्क्राइबर या पेटेन्ट चिकित्सा—प्रत्येक रोग पर व्यवहार होने वाली एलोपैथिक पेटेन्ट औषधियों का तथा इन्जेक्शनो का विवरण सुन्दर ढंग से दिया है। मूल्य ६)

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान—[प्रथम भाग] श्री-डा० आशानन्द जी पंचरत्न M. B. B. S. आयुर्वेदाचार्य। यह चिकित्साविज्ञान की सुन्दर रचना है। इसमे १६ अध्यायों मे रोगो का वर्णन तथा उनकी सफल एलोपैथी एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा बडी खूबी के साथ दी है। इसकी वर्णन शैली तुलनात्मक दृष्टि से ही महत्व की नहीं वरन् सफल चिकित्सा दृष्टि से भी यह ग्रन्थ चिकित्सकों को उपादेय है। कपड़े की सुन्दर जिल्द, मू० १०) मात्र

आयुर्वेद एण्ड एलोपैथिक गाइड—लेखक आयुर्वेदाचार्य पं० रामकुमार जी द्विवेदी। हिन्दी मे प्राच्य पाश्चात्य विज्ञान का विस्तृत ज्ञान देने वाली बेजोड पुस्तक है। हर विषय को सरलतापूर्वक समझाया गया है। मू० १०)

इन्जेक्शन—(पञ्चम संस्करण) ले० डा० सुरेशप्रसाद शर्मा। अपने विषय की हिन्दी मे सर्वोत्तम सचित्र पुस्तक है। थोड़े समय मे ५ संस्करण हो जाना ही इसकी उत्तमता का प्रमाण है। पृष्ठ संख्या ७६४ सजिल्द १०) मात्र

इन्जेक्शन तत्व प्रदीप—ले० डा० गणपतिसिंह वर्मा सभी इन्जेक्शनों का वर्णन है तथा उनके भेद व लगाने की विधि सरलतया दी गई है। पृष्ठ ३७२ मूल्य ५)

वर्मा एलोपैथिक गाइड—(पचम संस्करण)—लेखक—डा० रामनाथ वर्मा। हिन्दी एलोपैथिक चिकित्सा की सर्वोत्तम पुस्तक चार संस्करण केवल ४ वर्षों मे निकल जाना ही इसकी उपयोगिता का प्रमाण है। मूल्य १०)

वर्मा एलोपैथिक निघण्टु—डा० वर्मा जी की द्वितीय कृति। इसमे २००० से अधिक पेटेन्ट तथा साधारण औषधियों के वर्णन के अतिरिक्त सैकड़ो नुस्खे तथा अन्य उपयोगी बातो पर प्रकाश डाला है। पृष्ठ संख्या ५७० मूल्य १०॥)

वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा—एलोपैथिक गाइड और निघण्टु के ख्याति प्राप्त लेखक की ही यह कृति है। पुस्तक उपयोगी और पठनीय है। इसमे सभी रोगो की परिभाषा, लक्षण, कारण चिकित्सा प्रयोगादि डाक्टरी मतानुसार वर्णित है। मू० १७)

एलोपैथिक योगरत्नाकर—श्री वर्मा जी की उपयोगी पुस्तक। इसमे एलोपैथी मिक्चर तथा प्रयोगों का विपाल संग्रह है। पृष्ठ ७४१ मूल्य १३)

एलोपैथिक-चिकित्सा (तृतीय संस्करण) लेखक डा० सुरेशप्रसाद शर्मा। इसमें प्राय सभी रोगो का

वर्णन लक्षण निदान आदि पर संक्षेप में वर्णन करके उन रोगों की चिकित्सा विस्तृत रूप से दी है। योग आधुनिकतम अनुसन्धानों को मथकर और अनुभव सिद्ध लिखे गये हैं। ८२५ पृष्ठों के विशालकाय सजिल्द ग्रन्थ का मू० १०)

एलोपैथिक पाकेट गाइड—एलोपैथिक चिकित्सा का सूक्ष्म रूप यह पाकेट गाइड है। इसे आप जेब में रखकर चिकित्सार्थ जा सकते हैं जो आपका हर समय साथी का काम देती है। मूल्य ३)

एलोपैथिक पेटेण्ट मेडीसन—लेखक ठा० अयोध्यानाथ पाडेय। कौन पेटेण्ट औषधि किस कम्पनी की तथा किन द्रव्यों से निर्मित हुई है किस रोग में प्रयुक्त होती है, लिखा गया है। दूसरे अध्याय में रोगानुसार औषधियों का चुनाव किया गया है। मूल्य ३॥)

एलोपैथिक मेटेरिया मैडिका (पाश्चात्य द्रव्य गुण विज्ञान) लेखक—कविराज रामसुशीलसिंह शास्त्री A. M. S. यह पुस्तक अपने विषय की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक। लेखक ने विषय को आयुर्वेद चिकित्सकों तथा विद्यार्थियों के लिए विशेष उपयोगी ढङ्ग से प्रस्तुत किया है। मूल्य सजिल्द का १२)

एलोपैथिक मेटेरिया मैडिका—लेखक—डा० शिवदयाल जी गुप्त ए एम एस. इस पुस्तक में अब तक सम्पूर्ण औषधियां जो एलोपैथी में समाविष्ट हो चुकी हैं सभी दी हैं। सरल सुबोध भाषा, वैज्ञानिक क्रम से विषय का स्पष्टीकरण, औषधियों के सम्बन्ध में आधुनिकतम सूचना भिन्न भिन्न औषधियों से सम्बन्धित तथा चिकित्सा में प्रयुक्त योगों का निर्देश पुस्तक की विशेषता है। हिन्दी में सबसे महान् और विशाल अद्वितीय इस पुस्तक का मू० जिसमें १३०० पृष्ठ हैं १२)

एलोपैथिक सफल औषधियां—एलोपैथी की नवीनतम अत्यन्त प्रसिद्ध खास-खास औषधियों का गुण धर्म विवेचन है। जो आजकल बाजार में वरदान सिद्ध हो रही हैं सभी सल्फा ग्रुप आदि औषधियों के वर्णन सहित। मू० ३) मात्र

नेत्र रोग विज्ञान—कृष्णगोपाल धर्मा० औष० द्वारा प्रकाशित अपने विषय की हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ पुस्तक। सैकड़ों चित्रों सहित, सजिल्द मू० १५)

सचित्र नेत्र विज्ञान—लेखक डा० शिवदयाल पृष्ठ संख्या ५६८ चित्र संख्या १३० मू० ८)

फेफड़ों की परीक्षा रोग व चिकित्सा—१८ अध्याय की इस पुस्तक में प्राचीन ग्रंथों तथा नवीन पाश्चात्य पद्धति के समन्वयात्मक ज्ञान के द्वारा फेफड़ों में होने वाले समस्त रोगों का निदान व उसकी परीक्षा विधि दी गई है। साथ ही उन रोगों की चिकित्सा भी दोनों प्रकार की औषधियों से दी गई है। सजिल्द पुस्तक मू० ५)

मल मूत्र रक्तादि परीक्षा—लेखक डा० शिवदयाल जी अपने विषय की सर्वाङ्गपूर्ण सचित्र और वैद्यों के बड़े काम की पुस्तक है। मू० २॥)

मिक्चर—पचम सस्करण। प्रथम २६ पृष्ठों में मिक्चर बनाने के नियम औषधियों की तोल नाप व्यवस्थापत्रों में लिखे जाने वाले सकेत शब्दों की व्याख्या आदि ज्ञातव्य बातें दी हैं। बाद में उपयोगी इन्जेक्शनों का भी सकेत किया है। अन्त में देशी दवाओं के अंगरेजी नाम दिये हैं। २१७ पृष्ठ की यह पुस्तक चिकित्सकों के लिये अत्युपयोगी है। मू० २।)

एनीमा और कैथीटर	।=)
एनीमा टीचर	।)
कम्पाउण्डरी शिक्षा	२॥)
कपिङ्गग्लास मैन्युअल	≡)
मलेरिया (एलोपैथिक)	२।)
कैथीटर गाइड	।)
तापमान (थर्मामीटर)	।)
थर्मामीटर मास्टर	।)
स्टैथस्कोप विज्ञान (छाती परीक्षा)	॥)
स्टैथस्कोप शिक्षक	।॥≡)
स्टैथस्कोप	१)
एलोपैथिक मिक्चर	२)

होमियोपैथिक पुस्तकें

आर्गेनन—यह होमियोपैथिक की मूल पुस्तक है जिसमे इस पैथी के मूल प्रवर्तक महात्मा सैमुएल हेनिमैन के २६१ मूल सूत्र है। इस पुस्तक मे इन्हीं पर डा० सुरेशप्रसाद शर्मा ने व्याख्या की है। व्याख्या इतनी सुन्दर और सरल है कि हिन्दी जानने वाले इन सूत्रो का मन्तव्य भली भाति समझ सकते है। पृष्ठ ३८८ मूल्य ४)

इन्जेक्शन चिकित्सा (होमियो) ले० डा० सुरेशप्रसाद शर्मा। इसमे होम्योपैथी इन्जेक्शनों का का वर्णन है, साथ ही होम्योपैथी औषधियो से इन्जेक्शन बनाना आदि बताया गया है। मू. १॥।)

ज्वर चिकित्सा—विषय नाम से ही विदित है। इस पुस्तक पर उत्तर प्रदेशीय सरकार से लेखक पुरस्कार प्राप्त कर चुके है। इसमे सभी प्रकार के ज्वरों की एलोपैथी होम्योपैथिक आयुर्वेदिक एवं यूनानी मत से चिकित्सा वर्णित है। मूल्य २)

पशु चिकित्सा होमियो—यह आयुर्वेदिक तथा होम्योपैथिक दोनो से समन्धित है। पशु चिकित्सा पर बहुत उपयोगी साहित्य है। सभी पशुओं के रोगों पर विस्तारपूर्वक विचार किया गया है। मू० ॰) मात्र

प्रिंसमेटेरिया मेडिका (कम्परेटिव)—डा० सुरेशप्रसाद शर्मा प्रिंसहोमियोपैथिक कालेज के प्रिंसीपल द्वारा प्रणीत यह होम्योपैथिक मेटेरिया मेडिका है। औरों से इसमे बहुत कुछ विशेषता है। थेराप्युटिक ही नहीं इसमे फार्माकोपिया भी सम्मिलत की गई है। प्रत्येक प्रमुख औषधियो के मूल द्रव्य, प्रस्तुत विधि, वृद्धि, उपराय प्रमुख एवं साधारण लक्षणों आदि सभी विषयों का लेखन किया गया है। चिकित्सको तथा प्रारम्भिक विद्यार्थियो के लिये यह बहुत ही उपादेय है। साधारण हिन्दी ज्ञाता भी इसको समझ सकते है। १३७२ पृष्ठो वाले इस विशाल ग्रथ का मू० केवल ६)

भैषज्यसार—होम्योपैथी का पाकेट गुटिका। इसमे रोगों मे दवाओं का प्रयोग व मात्रा दी गई है। मूल्य २)

भारतीय औषधावली तथा होमियो पेटेन्ट मैडीशन—डा० सुरेशप्रसाद ने इस पुस्तक मे उन औषधियों को लिया है जो भारतीय औषधियो से तैयार होती है, साथ ही बाद मे कुछ होम्योपैथिक पेटेन्ट औषधियों को वह किस रोग मे दी जाती है दिया गया है। मू० १॥)

रिलेशन-शिप—इस छोटी सी पुस्तक मे डा० श्यामसुन्दर शर्मा ने औषधियो का पारस्परिक-सम्बन्ध ज्ञान दर्शाया है। नित्य व्यवहारिक औषधियो का सहायक अनुसरणीय प्रतिषेधक तथा विपरीत औषधियों का संग्रह किया है। मू० २)

सरल होमियो चिकित्सा—इसमे सभी स्त्री-पुरुषों के स्वास्थ्य नियमो को बताया है तथा उनसे विपरीत होने वाले सभी रोगों की होमियोपैथी चिकित्सा दी गई है। रोग वर्णन तथा चिकित्सा दोनो ही अत्यन्त सरल और समझाकर लिखे गये है। मूल्य ४॥)

रोगनिदान चिकित्सा—इस छोटी पुस्तक मे १०० पृष्ठों मे रोगी की परीक्षा विधि तथा ५० पृष्ठो मे होमियोपैथी एव आयुर्वेदिक चिकित्सा बताई गई है। मू० २)

स्त्री रोग चिकित्सा—डा० सुरेशप्रसाद शर्मा लिखित। स्त्री जननेन्द्रिय के समस्त रोग गर्भाधान प्रसवरोग, प्रसूति रोग तथा स्त्रियों को होने वाले अन्य रोगों का निदान व चिकित्सा है। मूल्य ४॥)

लेडी डाक्टर—गर्भाधान व प्रसव सम्बन्धी ज्ञान तथा उनसे सम्बन्धित होमियोपैथिक चिकित्सा वर्णित है। मू० १।)

होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका—जिन्हे मोटे-मोटे ग्रन्थ पढ़ने का समय नहीं है उनके लिये यह मेटेरिया मेडिका बहुत उपयुक्त है। सभी आव-

श्यक विषय का वर्णन है। गागर में सागर वाली कहावत चरितार्थ है। चिकित्सक के काम की वस्तु। सजिल्द पुस्तक ४०० पृष्ठ मूल्य ३॥)

होमियो मेटेरिया मैडिका—डा० श्योसहाय भार्गव द्वारा रचित। लेखक ने वर्णन करने में व्यर्थ के शब्दों को बढ़ाया नहीं है, सभी आवश्यक विषय है कोई छूटने नहीं पाया है। किसी मेटेरिया मैडिका से कम महत्व की नहीं है। ५६१ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक मू० ५)

होमियो चिकित्सा विज्ञान–(Practice of medicines) ले० डा० श्यामसुन्दर शर्मा। होमियोपैथी पर लिखी गई चिकित्सा पुस्तकों में यह पुस्तक सर्वोपरि है। प्रत्येक रोग का खंड-खड रूप में परिचय, कारण, शारीरिक विकृति, उपद्रव, परिणाम और आनुषङ्गिक चिकित्सा के साथ आरोग्य चिकित्सा का वर्णन है। डाक्टर तथा साधारण गृहस्थों सभी के लिए उपयोगी पुस्तक है। सजिल्द मू० ३॥)

हैजा या कालरा—इस भयङ्कर महाव्याधि पर सुन्दर सामग्री प्रस्तुत है। इसकी प्रत्येक अवस्था पर औषधियों का सुन्दर विवेचन है। मू० २)

वायोकैमिक चिकित्सा–वायोकैमिक चिकित्सा सिद्धांत के सम्बन्ध में सभी आवश्यक बातें तथा बारहों औषधियों के वृहद् मुख्य लक्षण और किन-किन रोगों में उनका व्यवहार होता है सरल ढङ्ग से समझाया गया है। ४३६ पृष्ठ मूल्य ४)

वायोकैमिक रहस्य—(सप्तम संस्करण) वायोकैमिक क्या है इस विषय पर यह पुस्तक सभी आवश्यक अङ्गों की जानकारी देती है तथा बारहों दवाओं का भिन्न-भिन्न रोगों पर सफल वर्णन किया गया है। सजिल्द पुस्तक मू० २॥)

वायोकैमिक मिक्श्चर—बारह क्षारों का रोगों में मिक्श्चर रूप में व्यवहार करना यह पुस्तक बताती है। मू० ॥)

वायोकैमिक पाकेट गाइड—वायोकैमिक विषय का पाकेट में रहने वाला गुटका, फिर भी बड़े काम का है। मू० १)

घाव की चिकित्सा	१)
न्यू मदर टिंचर मेटेरिया मेडिका	॥)
निमोनिया चिकित्सा	।)
होमियो थाइसिस चिकित्सा	॥)
होमियोपैथिक नुस्खे	१)
होमियो टाइफाइड चिकित्सा	॥)
होमियो पाकेट गाइड	१)
होमियो न्यूमोनिया चिकित्सा	॥)

यूनानी प्रकाशन हिन्दी में

इलाजुल गुर्बा–यूनानी की प्रसिद्ध फारसी पुस्तक का अनुवाद है सभी रोगों पर सरल यूनानी नुस्खों का संग्रह है तथा चिकित्सा सम्बन्धी सभी वर्णन व शारीरिक तथा निदान का वर्णन है। साधारण पढ़ा लिखा भी इस पुस्तक को समझ सकता है। छठा संस्करण मू० ५)

जर्राही प्रकाश (चारों भाग)–जिसमें घाव और व्रण से सम्बन्धित जर्राहों के लिए उर्दू, संस्कृत व डाक्टरी आदि के अनेक ग्रन्थों का इसमें सारभाग संग्रह किया गया है। पृष्ठ संख्या २७८ मूल्य ३॥)

यूनानी चिकित्सा सार—इसमें यूनानी मत से सर्वरोगों का निदान व चिकित्सादि दीगई है। वैद्यराज दलजीत सिंह जी ने यह ग्रन्थ वैद्यों के लिये हिन्दी भाषा में लिखा है जिसमें यूनानी चिकित्सा पद्धति का सभी अंश दे दिया गया है। यह ग्रन्थ अनेक अरबी फारसी पुस्तकों का सार रूप है छपाई सुन्दर है। मूल्य ४॥)

यूनानी चिकित्सा विधि—इसके लेखक श्री मंसाराम जी शुक्ल हकीम वाइस प्रिंसिपल यूनानी तिबिया कालेज देहली है। इसमें देहली के प्रसिद्ध यूनानी खानदानी हकीमों के अनुभूत प्रयोगो

का निचोड है। कपड़े की जिल्द मूल्य ५)
देहली में इतनी चमकी और आज तक नाम है।

यूनानी चिकित्सा सागर—श्री मसाराम शुक्ल द्वारा लिखी हुई हिन्दी भाषा मे यूनानी का विशाल ग्रन्थ है जो 'रसतंत्रसार' के ढग पर लिखा गया है। इसमे पुराने व आधुनिक सभी हकीमो के १००० अनुभूत परिक्षित प्रयोग हैं, औषधियो के नाम हिन्दी मे अनुवाद करके दिए गए हैं। जिनके नाम नही मिले हैं ऐसी २५० औषधियो का वर्णन परिशिष्ट मे दिया गया है।। ५१६ पृष्ठ पक्की सुन्दर कपड़े का जिल्द का मूल्य १०)

यूनानी-चिकित्सा-विज्ञान—यूनानी चिकित्सा विज्ञान का हिन्दी मे अनुपम ग्रन्थ। इस पुस्तक के दो भाग किए है। प्रस्तुत भाग मे यूनानी चिकित्सा और निदान के मूलभूत सिद्धान्तों का विषद विवेचन है। इसमे रोग लक्षण निदान के भेद तथा परीक्षा की सामान्य विधिया है। ६६६ पृष्ठों के इस ग्रन्थ का मूल्य ८।।) है।

यूनानी सिद्ध—योग संग्रह-यह यूनानी सिद्ध योगो का संग्रह है। सभी योग सुलभ सफल परीक्षित और सहज मे बनने वाले है प्रत्येक वैद्य के काम की चीज है। इसके संग्रहकार है वैद्यराज दलजीत सिंह जी आयुर्वेद वृहस्पति। मू० २।।)

यूनानी वैद्यक के आधार भूत सिद्धान्त—(कुल्लियात) श्री बाबू दलजीतसिंह जी व उनके भाई रामसुशीलसिंह जी ने इस छोटे से ग्रन्थ मे इस बात को दिखाने का प्रयत्न किया है कि आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा पद्धतियो मे कितना सादृश्य तथा कितना असादृश्य है। इसका निर्माण दोनों का समन्वय हो सकता है इस आधार पर किया है। मू० १।)

शिफाउल अमराज—शिफाउल अमराज मये मुअय्यन-उल-इलाज, नामक यूनानी ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद है। इसका क्रम ठीक भावप्रकाश जैसा है। रोग का निदान और उसके नीचे चिकित्सा क्रम दिया है। यह दो भागो मे है। प्रथम व द्वितीय भाग का मूल्य ४)

सरल सिद्ध प्रयोगों की पुस्तकें

अनुभूत योग प्रकाश-डा० गणपतिसिंह वर्मा द्वारा १५ वर्ष के परिश्रम से प्राप्त अनुभूत प्रयोगो का संग्रह है। प्रायः सभी रोगो पर आपको सफल प्रयोग इस पुस्तक मे मिलेंगे पृष्ठ ४४५ ।मू० ६।)

अनुभूति—इसमे आयुर्वेदिक तथा लेखक के स्वानुभवपूर्ण १८६ प्रयोगो का उपयोगी संग्रह है। मू० २)

आयुर्वेदीय सिद्ध भैषज मणिमाला—सिद्ध भैषज मणिमाला संस्कृत का प्रसिद्ध सिद्धयोगसंग्रह है जिसके प्रयोगो की ख्याति पर्याप्त है किन्तु पुस्तक संस्कृत मे होने से सामान्य चिकित्सकों को कठिनाई होती थी इसको दूर करने के लिये यह चिकित्सा भाग का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। मू० २।।)

आयुर्वेद-सार संग्रह—आयुर्वेद औषधियो के निर्माण प्रयोग और गुण धर्मों का विषद विवेचन है जिसमे रस भस्म आसव चूर्ण तैल घृत पाक वटी आयुर्वेद तथा यूनानी प्रयोगो को दिया गया है। पृष्ठ ६५० के लगभग। मूल्य ७)

क्वाथ मणिमाला—क्वाथ चिकित्सा आयुर्वेद की प्राचीन अल्प व्ययसाध्य एवं आशुफलप्रद चिकित्सा है। इस पुस्तक मे आयुर्वेद शास्त्र से सैकडो क्वाथो का संग्रह प्रकाशित किया गया है। मू० १।।)

गुप्त प्रयोगरत्नावली—डा० नरेन्द्रसिंह नेमी द्वारा लिखित। इसमे भिन्न-भिन्न रोगो पर अनेक अनुभूत योगो का वर्णन है। मू० २।।)

गुप्त सिद्धप्रयोगाङ्क (प्रथम भाग) द्वतीय सस्करण यह वह विशेषांक है जिसके प्रकाशन से धन्वन्तरि की ग्राहक संख्या उसी वर्ष दूनी होगई थी। इसमे २१६ वैद्यो के ५०० अनुभूत प्रयोग है इसमे हर छोटे-बड़े रोगो पर २-४ प्रयोग आपको अवश्य मिलेंगे। मूल्य केवल ६)
विवरण धन्वन्तरि के विशेषाङ्को मे देखें।

अकारादि क्रम से पुस्तक सूची

हमारे यहा प्राप्त होने वाली सभी पुस्तकों का अकारादि क्रम से नाम लेखक टीकाकार या सम्पादक का नाम पृष्ठ-संख्या एवं मूल्य दिया गया है। प्राय ग्राहक यह मालूम करने के लिये पत्र डालते रहते थे अतएव यह सूची प्रकाशित की गई है। पृष्ठ-संख्या और मूल्य की तुलना करके पुस्तक की उपयोगिता मालूम नहीं हो सकती है। कतिपय पुस्तके ऐसी हैं जिनके पृष्ठ का साइज बडा है और कागज छपाई उसका साहित्य अत्यधिक उपयोगी सारपूर्ण है। ये पुस्तके मूल्य मे पृष्ठ संख्या के अनुपात से अधिक मालूम देगी। कुछ पुस्तके ऐसी हैं जिनका साइज बहुत छोटा है तथा कागज सस्ता है तो वे मूल्य मे सस्ती मालूम देगी। असल मे पुस्तक का अन्दाजन उसके लेखक एव विषय की उपयोगिता से लगाना चाहिए। आपको जिन पुस्तकों की आवश्यकता हो हमसे ही मगाइयेगा।

पुस्तक	लेखक / टीकाकार	पृष्ठ	मूल्य
अष्टांगहृदय [वाग्भट्ट] भाषा टीका,	टीकाकार-अत्रिदेव गुप्त	५८४	१६)
,, ,, ,,	,, श्री तारादत्त पन्त	८६६	२०)
अष्टांगहृदय [वाग्भट्ट]-टीकाकार	श्री कृष्णलाल भरतीय	६८४	२०)
अष्टाग सग्रह [सूत्रस्थान]	व्याख्याकार श्री गोवर्द्धन छागाणी	३३२	८)
अर्शरोग चिकित्सा	प. कृष्णप्रसाद त्रिवेदी	५६	॥)
अर्क (आक) गुणविधान	डा गणपतिसिह वर्मा	१२८	१॥)
अनुभूत योग प्रकाश	,, ,,	४४५	६।)
अनुभूत प्रयोग [दोनों भाग]	पं० श्यामसुन्दराचार्य वैश्य	१४२	२)
अनुभूत योगचिंतामणि [दो भाग]	डा गणपतिसिंह वर्मा	५८६	८।)
अरिष्टक गुण विधान	,,	४४	॥)
अभिनव शरीर क्रिया विज्ञान	श्री प्रियव्रत शर्मा M A A.M.S.		७॥)
अभिनव नेत्र चिकित्सा विज्ञान	विशालनाथ द्वि.	६०४	१०)
अभिनव शवच्छेद विज्ञान	श्री हरिस्वरूप कुलश्रेष्ठ	१०६०	१५)
अभिनव विकृति विज्ञान	श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी	११४४	२२)
अभिनव बूटीदर्पण [सचित्र]-	वैद्य रूपलाल वनस्पति विशेषज्ञ	६७७	१०)
अजन निदानम्	सान्वय विद्योतनी हिन्दी टीका		१)
अजीर	श्री रामेशवेदी आयुर्वेदालंकार	६६	१)
अनुपान कल्पतरु	प. जगन्नाथप्रसाद शुक्ल	१६४	२॥)
अगदतन्त्र (विष विज्ञान)	श्री रामनाथ द्वि.	७०	।॥)
अगदतन्त्र (महाविष) प्र० भाग	पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल	२०८	३)
अगदतन्त्र (उपविष) द्वि. भाग	पं. जगन्नाथप्रसाद शु. धन्व. साइज	१७१	५)
अर्क प्रकाश	मथुरा निवासी कृष्णलाल जी	२६०	२॥)
अनुभूति	रघुनन्दन मिश्र आयुर्वेदाचार्य	१६६	२)
अनुपान विधि	प० श्यामसुन्दराचार्य वैश्य	५५	॥)
अमृतसागर [नूतन]	हिन्दी भाषान्तरकार पं. जारसराम जी	६३०	८)
अण्ड तथा अन्त्र वृद्धि	वैद्य कृष्णप्रसाद त्रिवेदी बी. ए	४८	।=)
अपना इलाज अपने आप करे	डा. युगलकिशोर चौधरी	६२	।॥)
आदर्श एलो. मेटेरिया मैडिका	डा. रामनरायण सक्सैना	६४४	११)
आधुनिक चिकित्सा विज्ञान	डा आशानन्द पञ्चरत्न प्र. भाग	४६७	१०)
आयुर्वेद घरेलू चिकित्सा	डा. सुरेशप्रसाद जी	१२०	१।)
आयुर्वेद मीमांसा	प० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल	१६८	१)
आयुर्वेद इन्जेक्शन चि.	डा. श्यामसुन्दर शर्मा	१०४	२॥)
आयुर्वेद सार संग्रह	आयु औषधो के प्रयोग गुणधर्मादि	६०८	७)
आयुर्वेद सुलभ विज्ञान	डा. कमलसिह किशनसिह	१५१	२॥)
आयुर्वेद विज्ञान सार	प. श्री योगेश्वर झा शर्मा	१२०	१॥)
आयुर्वेद विज्ञान	डा कामताप्रसाद मिश्र 'विप्र'	४२०	३॥)
आयुर्वेद एव एलोपैथिक गाइड	डा० राजकुमार द्वि	८६२	१०)
आयुर्वेद क्रिया शरीर	श्री रणजीतराय आयुर्वेदालंकार	८८७	११)

पुस्तक	लेखक	पृष्ठ	मूल्य
आयुर्वेदिक सिद्ध भैपज्यमणिमाला	प वेदवृत शास्त्री	१८०	२॥)
आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान	वैद्य रणजितराय आयुर्वेदलकार	४४०	५)
आयुर्वेदीय हितोपदेश	वैद्य रणजितराय आयुर्वेदलकार	३०७	२॥)
आरोग्यामृतविन्दु (शीतलता परिहार)	श्री जियालाल जी	१८०	२॥)
आरोग्य विज्ञान	डा लक्ष्मीनारायण सरोज	१६०	२)
आयुर्वेद व्याधि विज्ञान पूर्वार्द्ध	आचार्य यादव जीत्रिकम जी	११२	२॥)
आसनो के व्यायाम सचित्र	श्री. ब्रह्मचारी वेदव्रत	५२	॥)
आत्म सर्वस्व	स्वामी भागीरथ जी (गुप्त योगप्रकाश)	३६०	५)
आम्रगुणविधान	डा, गणपतिसिंह वर्मा	८४	१)
आम और उसके १०० उपयोग	श्री गगाप्रसाद गागेय	४०	।=)
आरोग्य मन्दिर	डा. युगलकिशोर चौधरी	१३०	१)
आर्गेनन	डा सुरेशप्रसाद शर्मा	३३८	४)
आर्गेनन	डा भोलानाथ टडन M D H	२२८	२॥)
आरोग्यप्रकाश	प रामनारायण वैद्य	४३३	२)
आयुर्वेद-प्रकाश (प्रथम भाग)	प्रोफेसर सोमदेव शर्मा शास्त्री	६५३	५)
आयुर्वेदीय परिभाषा	पं गिरजादयाल शुक्ल शास्त्री	८८	१)
आसवारिष्ट सग्रह (वृ) [दो भाग]	प कृष्णप्रसाद त्रि B A	५६१	६॥)
आयुर्वेदीय औषधि सशोधन	वै पु व धामणकर	६६	१)
आहार सूत्रावली	प केदारनाथ पाठक रासायनिक	४४	॥)
ओज क्या है—	कवि नरेन्द्रनाथ मिश्र	१२	-)
इच्छाशक्ति	डा श्यामदास जी प्रपन्नाश्रमी	१००	१)
इन्फ्लुएंजा	प कृष्णप्रसाद त्रिवेदी	४०	॥)
इलाजुलगुर्वा	बाबू वृजवल्लभ प्रसाद	३६७	५)
इन्द्रायण गुण विधान	डा गणपतिसिंह वर्मा	४०	॥=)
इन्जेक्शन (चतुर्थ संस्करण)	डा सुरेशप्रसाद शर्मा	७०८	१०)
इन्जेक्शन तत्व प्रदीप	डा. गणपतिसिंहवर्मा	३७२	५)
इन्जेक्शन विज्ञानांक (२ भाग)	डा. तेजबहादुर सिंह चौधरी	३२८	४)
इन्जेक्शन चिकित्सा (एलो०)	बी पी श्रीवास्तव	२४०	३)
,, ,, (होम्यो०)	डा सुरेशप्रसाद जी	१२०	१॥)
उपदंश विज्ञान (द्वि सस्क)	प्रोफेसर बालकराम शुक्ल शास्त्री	६७	१)
उपवास और फलाहार	डा युगलकिशोर चौधरी	८०	॥)
ऊप पान	पं लल्लीप्रसाद पाडेय	४०	॥)
एलोपैथिक गाइड	डा रामनाथ वर्मा	५६८	१०)
एलोपैथिक निघण्टु	,,	५७०	१०॥)
,, योगरत्नाकर	,,	७४१	१३)
एलोपैथिक पाकेट गाइड	डा सुरेशप्रसाद शर्मा	३१४	३)
एलोपैथिक चिकित्सा (वर्मा)	डा रामनाथ वर्मा	५४०	१२)
एलोपैथिक चिकित्सा	डा. सुरेशप्रसाद शर्मा	६२१	१०)
एलोपैथिक पेटेण्ट मैडीसस	डा अयोध्यानाथ पाडेय	३२४	३॥)
एलोपैथिक मिक्चर्स तथा चिकित्सा निर्देश	रा कु द्विवेदी	१८०	२)
एलोपैथिक पेटेन्ट चिकित्सा	अयोध्यानाथ पाडेय	६४	१॥)
एलोपैथीमेटेरियामैडिका (पाश्चात्य द्राव्य गु.वि.)	रामसुशीलसिंह	६१२	१२)
एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका	श्री डा शिवदयाल	१३००	१२)
एलोपैथिक प्रेक्टिस	भवानीप्रसाद M. D. S.	६६२	७॥)
एलोपैथिक सफल औषधियां	श्री. डा शिवदयाल	२४०	३)
एनीमा और कैथीटर	डा सुरेशप्रसाद शर्मा	२७	।=)
एनीमाटीचर	डा रघुवीर सहाय भार्गव	३२	।)
एकौषधि गुणविधान	डा गणपतिसिंह वर्मा	१८६	१॥।=)
औषधि गुण धर्म विवेचन २ भाग	वैद्य कृष्णप्रसाद त्रिवेदी	२४०	२)
औषधि गुण धर्म विवेचन	कालेडा से प्रकाशित	३०८	३)
औपसर्गिक रोग (दो भाग	श्री. भास्कर गोविंद घाणेकर	१३०८	२०)
औषधि विज्ञान	प. धर्मदत्त विद्यालकार	५७	॥)
क्या खूब डिविया	चौबे क्या खूब जी हकीम	८५	॥=)
करावादीन सिफाई	पं जगन्नाथ प्रसाद	१६७	१)
कपडा और तन्दुरुस्ती	डा युगलकिशोर चौधरी	५४	।-)
कफ परीक्षा (सचित्र)	डा. रमेशचन्द्र वर्मा	५६	१।)

कर्ण रोग विज्ञान प० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल १७० २)
कम्पाउण्डरी शिक्षा डा. राजेन्द्र 'दीक्षित' २४८ २॥)
कपिंग ग्लास मैन्युअल डा. रघुवीर सहाय भार्गव १५ ≡)
काश्यप-संहिता टीकाकार श्री सत्यपाल भिषगाचार्य २४७ १६)
कैथीटर गाइड डा. रघुवीरसहाय भार्गव ३२ ।)
कल्प एव पञ्चकर्म चिकित्सांक—धन्वन्तरि का विशेषांक १०४ ४)
कब्ज एव मलावरोध कविराज महेन्द्रनाथ पाडेय ३२ ॥)
कब्ज या कोष्ठबद्धता डा० सुरेशप्रसाद शर्मा ६४ ॥।)
कब्ज का इलाज या मलावरोध—डा० युगलकिशोर चोधरी ७८ १)
कषाय कल्पना विज्ञान डा० अवधविहारी अग्निहोत्री ६४ १॥)
केन्सर रोग चिकित्सा श्री प्रभाकर चट्टोपाध्याय ११० ६)
क्वाथमणिमाला (भाषा टीका)-टीका. प० काशीनाथ शास्त्री ६२ १॥)
किशोर रक्षा—ब्रह्मचर्य प० रवीन्द्रनाथ शास्त्री आयुर्वेद ११४ ॥।)
कुचिमारतन्त्र (तृ.सक) टीकाकार—प०रामप्रसादमिश्र राजवैद्य ६२ ॥)
कूपीपक्व रस निर्माण स्वामी हरिशरणानन्द जी ३७८ ५)
कूपीपक्व रसायन वैद्य देवाशरण गर्ग सम्पा०—धन्वन्तरि १६ —)
कोकसार प० लक्ष्मीनारायण कौशिक ८७ ॥)
कालरा या हैजा डा. भोलानाथ टण्डन १६४ २)
कौमार भृत्य (बाल चि०) राजवैद्य प० किशोरीदत्त शास्त्री १२८ १॥)
कौमार भृत्य नव्य बालरोग सहित-प० रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ६०८ ६)
गर्भस्थ शिशु की कहानी डा लक्ष्मीशंकर गुप्त सचित्र १५० २)
गङ्गयति निदान भा०कर्ता—कवि नरेन्द्रनाथ शास्त्री ५३२ ५॥)
ग्रहविज्ञान एवं व्यवहारिक प्रयोग-श्री दुर्गाप्रसाद शास्त्री १०० ॥)
ग्राम्य चिकित्सा प० केदारनाथ पाठक रासायनिक ४८ ॥=)
ग्रह चिकित्सा विज्ञान (नाड़ी-परीक्षा एवं सूर्य चिकित्सा)
पं० बाबूराम शर्मा ६४ ॥।)
गृह वस्तु चिकित्सा पं० किशोरीदत्त शास्त्री ८५ १)
ग्रह चिकित्सा (होम्यो.) डा बी एन. टण्डन(तृतीय सस्क०) २२५ १॥)

गावों मे औषधि रत्न (दो भाग) कालेडा से प्रकाशित ३६४-३५१ ५॥)
गुप्त प्रयोग रत्नावली डा. नरेन्द्रसिंह नेगी २३६ २॥)
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक (तीन भाग)
धन्वन्तरि के विशेषांक लगभग १००० प्रयोग ५१२ १०)
गूलर गुण प्रकाश पं चन्द्रशेखर शर्मा मिश्र ६८ १)
ग्रन्थि और ग्रन्थि प्रणाली के रोग—डा० नरेन्द्रनाथ पाण्डेय ६४ १)
गौरसादि औषधि पं. शंकरदाजी शास्त्री पंदे १५ =)
घृत चिकित्सा प० रामदेव त्रि. स पं. किशोरीदत्त शा. ११६ ॥=)
घृत गुण विधान डा. गणपतिसिंह वर्मा ४४ ॥)
घर मे वैद्य अर्थात् सब रोगो की बेदाम औषधिया ६६ ॥=)
घाव की चिकित्सा (होम्यो) डा श्यामसुन्दर शर्मा ६६ १)
चरक सहिता (भाषा-टीका) टीका जयदेव विद्या (दो भाग मे) २५)
चरकसंहिता (भाषा-टीका) श्री अत्रिदेव गुप्त (तीनभाग मे) ३६)
चरकसंहिता मूल एव भागीरथी टिप्पणी सहित ६७६ ७)
चक्रदत्त (भाषा-टीका) प. जगदीश्वर प्रसाद त्रि. धन्व. साइज ३५८ १०)
चिकित्सक व्यवहार विज्ञान श्री सूर्यनारायण वैद्य ६४ ॥)
चिकित्सा तत्व प्रदीप (दो भाग) कालेडा से प्रकाशित १५७६ १७॥)
चूर्ण चिकित्सा प. रामदेव त्रि. स.प किशोरीदत्त शा. १२० ॥=)
जन्मनिरोध ए. ए. खान एम. एस. सी. ४२५ ६)
ज्वर चिकित्सा कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय १७६ २॥)
ज्वर मीमांसा स्वामी हरिशरणानन्द जी ३३६ १॥)
ज्वर विज्ञान कालेडा से प्रकाशित ४०० ३)
ज्वर चिकित्सा डा. अयोध्यानाथ पाण्डेय ११६ २)
जर्राही प्रकाश श्री कृष्णलाल जी २२८ ३॥)
जल चिकित्सा (पानी का इलाज)-डा. युगलकिशोर चौधरी ५० १)
जीवन तत्व कवि महेन्द्रनाथ पाण्डेय ११६ १॥)
जीवाणु विज्ञान श्री भास्कर गोविन्द घाणेकर ८३४ १०)
जुकाम कवि महेन्द्रनाथ पाण्डेय ११२ १॥)

टोटका विज्ञान	प केदारनाथ पाठक 'रासायनिक'	२४	।=)
तपैदिक	कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय	१६८	४)
तम्बाकू जहर है	डा. युगलकिशोर चौधरी	४०	।=)
तापमान (थर्मामीटर)	डा. रामकुमार द्विवेदी	६८	।)
ताकत की दवाइयां	(गुप्त रोगों का इलाज)	६८	।।।)
तुवरक और चालमोग्रा	श्री रामेशवेदी आयुर्वेदालङ्कार	५२	।।।)
तुलसी	श्री रामेशवेदी आयुर्वेदालङ्कार	१७८	२)
तुलसी चिकित्सा विज्ञान	डा० सुरेशप्रसाद जी	३२	।=)
तुलसी विज्ञान	श्री लक्ष्मीपति त्रिपाठी	४८	॥)
तैल संग्रह	प. विश्वनाथ द्विवेदी	१५१	२)
तैल चिकित्सा	प ज्ञानेन्द्रदत्त त्रिपाठी सम्पा पं किशोरीदत्त शास्त्री	७८	॥=)
थर्मामीटर	डा. सुरेशप्रसाद जी	२४	।)
थर्मामीटर मास्टर	डा. रघुवीरसहाय भार्गव	३२	।)
दशमूल (सचित्र)	बूटी विशेषज्ञ रूपलाल जी वैश्य	७६	॥)
दमा श्वास खांसी	डा. युगलकिशोर चौधरी	२८	।=)
दन्तरोग चिकित्सा	वै. त्रि. गोपीनाथ गु. भिषग्रत्न	४६	।=)
दन्तमञ्जन विज्ञान	श्री चन्द्रलालचन्द्र	१०४	१)
दन्तरक्षा	भगवानदेव जी आचार्य	२५	≡)
दीर्घजीवन	प. विश्वेश्वरदयाल वैद्यराज	१७८	१)
दुग्धकल्प व दुग्ध चिकित्सा	चौधरी युगलकिशोर	२८४	२।)
दुग्ध गुण विधान	डा. गणपतिसिंह वर्मा	८२	१)
दुग्ध चिकित्सा	डा महेन्द्रनाथ पाण्डेय	४८२	४)
दुग्ध से सब रोगों का इलाज	डा. युगलकिशोर चौधरी	५६	।।।)
दोष कारणत्वमीमांसा	कविराज प्रियव्रत शर्मा	५२	१)
दुग्ध कल्प	श्री विट्ठलदास मोदी	५८	।)
देहाती इलाज	श्री रामेशवेदी आयुर्वेदालङ्कार	६०	१)
देहात की दवाएँ	श्री केदारनाथ पाठक रासायनिक	५०	।।।)
देहातियों की तन्दुरुस्ती	श्री केदारनाथ पाठक रासायनिक	६८	।।।)
दैनन्दिनरोगों की प्रा०	श्री कुलरञ्जन मुखर्जी	२५०	३)
द्रव्यगुण विज्ञान	वै. यादव जी त्रिकम जी आचार्य	१६०	५)
द्रव्यगुण विज्ञान पूर्वार्द्ध	वै. यादव जी त्रिकम जी आचार्य	३८०	४॥)
द्रव्यगुण विज्ञान	प. प्रियव्रत शर्मा २ भागों में		१८)
द्रव्यगुण आदेश (लघु०)	—कवि महेन्द्रकुमार	१८०	२॥)
धन्वन्तरि परिचय	प. रघुवीरशरण शर्मा वैद्य	१०३	२॥)
धन्वन्तरि व्रतकल्प कथा	सम्पा० प. जगन्नाथप्रसाद शुक्ल	५७	।=)
धतूरा गुण विधान	हकीम मोहम्मद अब्दुल्ला	५४	।।।)
धात्री विज्ञान	डा. शिवदयाल गुप्त	१७१	२॥)
नाड़ी परीक्षा	डा. बी. एन. टण्डन	७७	।।।)
नव परिभाषा	कवि. उपेन्द्रनाथदास	१४८	१।।।)
नपुंसकचिकित्सा	डा. गणपतिसिंह वर्मा	१७६	३)
नमक	प. विश्वेश्वरदयाल जी वैद्य०	५१	॥=)
नव्य रोग निदान	माधवनिदान परिशिष्ट सम्पा० प. [illegible] शास्त्री	८४	।।।)
न्यूमोनिया प्रकाश	पं. [illegible] वैद्य शास्त्री	७८	।=)
निमोनिया चिकित्सा	श्री एन. टण्डन	६४	॥)
न्यू मटर डिनर मेटेरिया	मे. डा. भवानीप्रसाद	३८	।।।)
नाड़ी विज्ञान	टीका पं. प्रतापराम जोशी आयु०	३४	।~)
नाड़ी परीक्षा	श्री रावणकृत पं. [illegible] भाषा टीका सहित	२२	।~)
नाड़ीज्ञान तरङ्गिणी	भाषाटीका, टीका श्री रघुनाथप्रसाद शर्मा	१६७	१॥)
नाड़ीरोग विज्ञान	श्री पं. जगन्नाथप्रसाद शुक्ल	१६६	२)
नाड़ी तत्त्व दर्शनम्	श्री [illegible]	२०७	५)
नाड़ी दर्शनम् (सचित्र)	श्री [illegible]	१७८	२॥)
नीमगुण विधान	डा. गणपतिसिंह वर्मा	७६	।।।=)
नीम चिकित्सा विधान	डा. सुरेशप्रसाद शर्मा	५६	॥=)
नीम [illegible]	[illegible]	१३६	१।।।)
नीम के प्रयोग	[illegible]	१८८	१)
नीबू गुण विधान	डा. गणपतिसिंह वर्मा	६४	।।।)

पुस्तक	लेखक	पृष्ठ	मूल्य
पुराने रोगों की गुह्य चिकित्सा	कुलरंजन मुखर्जी	३२०	४)
पुरुषेन्द्रिय के रोग	डा बी. एन. टण्डन	११२	२)
नेत्र रक्षा व नेत्र रोग चि	डा युगलकिशोर चौधरी	६४	॥।)
नेत्र रक्षा	श्री भगवानदेव जी	३०	≡)
नेत्र रोग विज्ञान (कालेडा)	डा यादव जी हंसराज वैद्य	६७३	१५)
नेत्र रोग विज्ञान (सचित्र)	डा. शिवदयाल गुप्त	५६८	८)
नैसर्गिक आरोग्य	वैद्य जगन्नाथप्रसाद शुक्ल	१७३	२)
पाक सग्रह बृहद्)	प कृष्णप्रसाद त्रिवेदी	३१५	३॥)
प्रमेह विवेचन	कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय	१८०	२)
प्रतिसंस्कृत निदानम् (तीन भाग)	पं० घनानन्द जी पन्त	२०४	२)
प्रारम्भिक उद्भिद शास्त्र	डा० बलवन्तसिंह	३१४	४॥)
प्रारम्भिक भौतिक	निहालकरण सेठी प्रिंसीपल आगरा कालेज	४०२	८)
प्राकृतिक शिशु चिकित्सा	डा सुरेशप्रसाद शर्मा	१५८	२)
प्रारम्भिक रसायन	फूलदेव सहाय वर्मा	४५०	४॥)
प्रयोग मंजूषा	श्री कृष्ण बलवन्त रिषबुड	११२	॥।≡)
प्रसूतितंत्रम् (धात्री विद्या)	डा. काशीनाथ नारायण गोखले	३६१	३॥)
प्राणिज औषधि	पं. शकरदा शास्त्री पदे	२८	।)
प्राकृतिक ज्वर	स्वर्गीय लाला राधावल्लभ जी वैद्यराज	५४	।)
प्राकृतिक चि. प्रश्नोत्तरी	डा० युगलकिशोर चौधरी	६४	॥)
पथ्यापथ्य निरूपण	प. जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल	६४	॥=)
पशु चिकित्सा (वृ.)	श्री० बालमुकन्द भरतिया	२४८	४)
पशु चिकित्सा	बम्बई भूषण प्रेस	२७२	३॥)
पशु चिकित्सा (होमियो)	डा० गंगाधर मिश्र	११४	२)
पदार्थ विज्ञान	श्री. रामरक्ष पाठक आयुर्वेदाचार्य	२५०	३॥)
पदार्थ विज्ञान (पाच भाग)	पं. जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्य पंचानन		१४॥)
इसके पांच भाग ये है—प्रमाण विज्ञान	,, ,,	२३२	२॥)
पदार्थ विज्ञान	,,	७५	१।)
द्रव्य गुण विज्ञान	,,	८४	१।)
गुण विज्ञान	,,	२४५	२॥)
पुरुष विज्ञान	,,	६७४	७)
पंचभूत विज्ञान	कविराज श्री उपेन्द्र नाथदास मिश्र	३०८	३)
परिभाषा प्रबोध	श्री जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल	२०८	२॥)
पारिवारिक चिकित्सा (होमियो)	डा० सुरेशप्रसाद शर्मा	६०७	५)
पाकेट गाइड (होम्यो)	डा० सुरेशप्रसाद शर्मा	१६१	१)
पाचन प्रणाली के रोग	कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय	१०४	२।)
प्लीहा के रोग और उनकी चिकि०	श्री० ब्रह्मानन्द चन्द्रवंशी	१६	।–)
प्लीहा रोग चिकित्सा	वैद्य ज्ञानचन्द जी वैद्यभूषण	४८	।)
प्रिसमेटेरिया मेडिका (होमियो)	डा० सुरेशप्रसाद शर्मा	१३७२	६)
प्रसूति विज्ञान	डा० रामनाथ द्विवेदी	७२२	६)
प्रत्यक्ष औषधि निर्माण	पं. विश्वनाथ द्विवेदी	१४४	३)
पीपल गुण विज्ञान	डा० गणपतिसिंह वर्मा	३६	॥)
पलाण्डु गुण विधान	,, ,,	४०	॥)
पेठा	श्री रामेशवेदी आयुर्वेदालकार	१२	।॥)
पेटेंट प्रेस्काइवर या पेटेंट मैडीसन	डा. रामनाथ द्वि.	४७०	६)
पुरुष रोगांक (द्वि० संस्क०)	धन्वन्तरि का विशेषांक	२८८	६)
पूर्ण सुलभ चिकित्सासार	हकीम डा० एम० ए० माजिद	४४	॥)
पेनिसिलिन व स्ट्रेप्टो माइसीन विज्ञान तथा मूत्र परीक्षा	पं० राजकुमार द्विवेदी	४८	१)
पेटेण्ट औषधि एवं भारतवर्ष	प्र. भा. रामकृष्ण वर्मा	१५२	१॥)
पेटेण्ट औषधि एव भारतवर्ष-बरालोकपुर से प्रका	डा. रामकृष्ण	१७२	१॥)
पैसे-पैसे के चुटकले	डा० गणपतिसिंह वर्मा	२२०	३)
फलाहार चिकित्सा	कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय	२३८	२॥।)
फल-संरक्षण	गोरखप्रसाद D. Sc एव वीरेन्द्रनारायणसिंह	१६६	२॥)
फल संरक्षण विज्ञान	कविराज युगलकिशोर गुप्त	४६	१)
फिटकरी गुण विधान	हकीम मौ. मौहम्मदअब्दुल्ला	१२६	१॥)
फुफ्फुस सन्निपात चिकित्सा	वैद्य वा. हनुमप्रसाद जोशी	२३३	२॥।≡)

पुस्तक	लेखक	पृष्ठ	मूल्य
फ्लोरों की परीक्षा रोग व चिकित्सा (सचित्र)	शिवशरण वर्मा भिषगाचार्य धन्वन्तरि	३२८	५)
वृक्ष विज्ञान	प्रो. राधाकृष्णपाराशर	२०६	२।)
व्रणबन्धन	डा. भवानीप्रसाद	२६०	४)
व्रणशोथविमर्श	डा. जनकविहारी अग्निहोत्री	१७८	३)
व्रणोपचार पद्धति	प. महावीरप्रसाद मालवीय	६६	।।)
वरगद	श्री रामेशवेदी आयुर्वेदालकार	२०	।।।)
बच्चों का पालन और चि०	डा. युगलकिशोर चौधरी	७०	।।।)
वसवराजीयम् (दो भाग)	प. शिवकरण शर्मा छागाणी	६८४	८।।)
वैद्य सहचर-(च० संस्क०)	प. विश्वनाथ द्विवेदी अनु.	२५८	३)
वैद्यक शब्दकोप	प. विशेश्वरदयाल जी	३२	।)
वैद्य विशारद प्रश्नोत्तरी	पं. योगेन्द्रलाल जी शुक्ल	२२२	४)
वैद्यकीय सुभाषितावली	प्राणजीवन मेहता	७०	२)
बिच्छू विष चिकित्सा	आचार्य भगवानदेव जी	२५	=)
बबूल गुण विधान	हकीम मौलवी मौहम्मदअब्दुल्ला	३६	।।)
व्याधिविज्ञान (दो भाग)	श्री आशानन्द पचरत्न	१०७२	१८)
बबूल	प. विशेश्वरदयाल वै.	२४	।=)
बबूल चिकित्सा	पं. सुरेशप्रसाद शर्मा	३०	।=)
बच्चों के रोग और उनका इलाज	कवि. महेन्द्रनाथ पाण्डेय	१२८	२)
वटिका चिकित्सा	प. रामदेव त्रिपाठी	१०४	।।=)
वनस्पति गुणादर्श	वैद्य हीरामल मोथीराम जङ्गले	१३६	२)
वनौषधि दर्शिका	डा. बलवन्तसिंह M. SC.	२७४	२।।)
बालरोग चिकित्सा	महावीरप्रसाद मालवीय	१०८	१)
वायोकैमिक चिकित्सा	डा. सुरेशप्रसाद शर्मा	४४६	४)
वात्सायन कामसूत्र	रामसुशीलसिंह	२२०	५)
वायोकैमिक मिक्चर	डा० एस. ए. माजिद	२८	।।।)
वायोकैमिक पाकेट गाइड	डा. सुरेशप्रसाद शर्मा	१२८	१)
विशूचिका (हैजा) चिकित्सक	जगदीश्वरसहाय	३२	।।=)

पुस्तक	लेखक	पृष्ठ	मूल्य
वृ० मेटेरिया मेडिका (हो० दो भाग)	वी. एन. टण्डन		१३)
वायोकैमिक रहस्य-सप्तम् संस्करण	डा. श्यामलाल भार्गव	२६६	२।।।)
व्यायाम और शारीरिक विकाश	श्री अशोककुमारसिंह	१६५	२।।)
बुखार का अचूक इलाज	डा० युगलकिशोर चौधरी	५८	।।।)
बुढापा की ओर बीमारी से बचने के उपाय	,, ,,	६२	।।।)
बूटी प्रचार (वृ०)	श्री कृष्णलाल जी	२६६	२)
वैद्य जीवन	सम्पा किशोरीदत्तशास्त्री	१३५	।।।)
,, ,,	आयु प कालीचरन पाण्डेय	१३२	१।)
वैद्यक परिभाषा प्रदीप	पं. प्रयागदत्त जी	१२४	१।।)
भस्म पर्पटी	वै० देवीशरण गर्ग सम्पा० धन्वन्तरि	३२	-)
भारतीय रसपद्धति	कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त	७२	।।।)
भारतीय जीवाणु विज्ञान	श्री रघुवीरशरण शर्मा वै०	११६	१।।)
भारतीय जडी-बूटियां- दो भाग)	डा० गणपति सिंह वर्मा	४६२	५।।)
भारतीय भौतिक विज्ञान	पं. जगन्नाथप्रसाद शुक्ल राज०	१०८	।।)
भारतीय रसायनशास्त्र	प. विश्वेश्वरदयाल वैद्य	७२	।।)
भारतीय औपधावलि तथा होम्यो पेटेन्ट मैडीसस	डा. सुरेशप्रसाद शर्मा	६०	१।।)
भावप्रकाश (सम्पूर्ण) भाषाटीका	श्री ब्रह्मशङ्कर शास्त्री दो भाग		३०)
भावप्रकाश निघण्टु	टी० पं. गङ्गासहाय पाण्डेय	७२३	८)
,, ,,	टी० पं विश्वनाथ द्विवेदी	६३३	७)
भावप्रकाश[ज्वराधिकार]	टीकाकार श्री ब्रह्मशङ्कर मिश्र	१६२	४)
भिन्न-भिन्न रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा	डा० युगलकिशोर चौधरी	७०	।।।)
भैषज्यसार	डा. सुरेशप्रसाद शर्मा	२६०	२)
भैषज्यरहस्य (मेटी. मैडिक) होमियो	डा. वी. एन. टण्डन	४७३	२)
भैषज्य कल्पनांक	धन्वन्तरि का विशेषाक	३६	।।।)
भैषज्यकल्पनाङ्क	परिशिष्टाक		

भैषज्य रत्नावली [विद्योतिनी भाषाटीका]
टीकाकार—अम्बिकादत्त शास्त्री ८८२ १५)
भैषज्यरत्नावली टीकाकार—श्री जयदेव विद्यालकार ७१४ १०।।)
भोजन ही अमृत है कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय आयु. विशा. १०४ १।।।)
भोजन विधि प. केदारनाथ पाठक रासायनिक २४० २)
भोजन ब्रह्मचारी भगवानदेव की १०० ।।=)
भृगु परीक्षा ज्योतिस्वरूप शर्मा ३१ ।–)
मलेरिया एवं कालाजार—डा राधाचन्द्र भट्ट A. m. S. १४० १।।)
मलेरिया, मोतीझरा, निमोनियां-डा युगलकिशोर चौधरी ६६ ।।।)
मलेरिया आचार्य उमाशङ्कर वैद्य ३२ ।।)
मलेरिया युगलकिशोर अग्रवाल ६६ १)
मलेरिया (एलोपैथिक)-डा. मनमोहन धूम L. S. m. F. १६७ २।)
मकरध्वज (चन्द्रोदय) श्रीस्व लाला राधावल्लभ जी वै. ३६ ।)
मकरध्वज श्रीयुत विवेचक ३५ ।।=)
मवेशियों की घरेलू चिकित्सा—डा सुरेशप्रसाद शर्मा ५५ ।।।)
मधुमेहचिकित्सा कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय ३२ ।=)
मधुमेह प परशराम शास्त्री ११० ।।)
मलमूत्ररक्तादि परीक्षा डा. शिवदयाल जी १६० २।।)
माडर्नमैडीकलट्रीटमेंट(हिन्दी) डा. एम. एल गुजराल ६६? २०)
मधु गुण विधान डा. गणपतिसिंह वर्मा १०४ १।।)
मधु चिकित्सा डा सुरेशप्रसाद शर्मा ४२ ।।)
मधु के उपयोग प. केदारनाथ रासायनिक १२८ १)
मर्णोन्मुखी आर्य चिकित्सा वैद्यराज लाला राधावल्लभ जी ३६ ।)
मर्म विज्ञान प रामरक्षक पाठक(अनेको रङ्गीन चित्र) १०३ ३।।)
मनुष्य का आहार वैद्य गोपीनाथ गुप्त १३४ ।=)
मदनपाल निघण्टु (संस्कृत) श्री नन्दकिशोर शास्त्री १७२ १)
मट्ठा या छाछ का उपयोग—श्री प्रवासीलाल वर्मा मालवीय ७४ १)
मट्ठा (उसके गुण और प्रयोग) कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय ६५ १)

माधव निदान (भाषा टीका)—टीकाकार श्री हरिनारायण
माधव निदान (भाषाटीका)—प. लालचन्द्र वै. शास्त्री १०१८
माधव निदान (विस्तृत टीका युक्त)-प पूर्णानन्द शर्मा शास्त्री ८४ ।।।)
माधव निदान परिशिष्ट श्री ब्रह्मशङ्कर शास्त्री
माधव निदान (दो भाग)—हिन्दी टीका, मधुकोष हिन्दी टीका
आयु सुदर्शन शास्त्री ३५६ १३)
४१२ ६)
माधव निदान (मनोरमा) ब्रह्मशंकर जी शास्त्री १५२ १।।।)
मानव सन्तति कविराज बलवन्तसिंह मोहन वै. वा ४०६ ४)
मानसिक रोग विज्ञान श्री जगन्नाथप्रसाद जी २५१ ५।।)
मानस रोग विज्ञान डा. बालकृष्ण अमर जी पाठक ६० १)
मिर्च श्री रामेशवेदी आयुर्वेदालंकार २१७ २।)
मिक्चर डा. सुरेशप्रसाद शर्मा ५० ।।)
मिट्टी सभी रोगों की दवा डा. युगलकिशोर चौधरी १८८ २।।)
मुखरोग विज्ञान श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल ६६ ।।)
मूत्र परीक्षा डा. बी. एन. टण्डन ५२६ ६)
मूत्र के रोग श्री घाणेकर ७५२ ६)
मेघ विनोद भाष्यकर्ता कविराज नरेन्द्रनाथ ६० १)
मोटापा दूर करने के उपाय पं प्रभुनारायण त्रिपाठी 'सुशील' ११४ २)
यकृत के रोग और चि० वैद्य सभाकान्त झा शा. ५६ ।।)
यकृत रोग प्लीहा के रोग—श्री विश्वेश्वरदयाल १६ ।।)
यौन मनोविकार डा. सुरेन्द्रनाथ ४४२ ४।।)
यूनानी चिकित्सासार वैद्य० हकीम दलजीतसिंह ३८७ ५)
यूनानी चिकित्सा विधि हकीम मन्साराम ५१२ १०)
यूनानी चिकित्सासागर वैद्य हकीम मन्साराम शुक्ल ५६४ २२)
यूनानी द्रव्य गुणविधान वैद्य० वा० दलजीतसिंह
यूनानी वैदिक के आधार भूत सिद्धात कुल्लियात—
" " " ७६ १)
यूनानी सिद्ध योग संग्रह " " " २३५ २।।)

पुस्तक	लेखक / टीकाकार	पृष्ठ	मूल्य
यूनानी चिकित्सा विज्ञान	” ” ”	६६६	८॥)
योग रत्नाकर (दो भाग)	लक्ष्मीपति शास्त्री	६३२	१८)
योग चिन्तामणि	प बुधसीताराम शर्मा कृत भाषाटीका	३२०	५।-)॥
योग चिकित्सा	कविराज अत्रिदेव गुप्त आयु०	२६०	३॥)
रसायनसार	रसायनशास्त्री पं श्यामसुन्दराचार्य वैश्य	६००	८)
रसतन्त्रसार सिद्ध प्रयोग सग्रह [प्रथम भाग]	कालेडासे प्रकाशित अष्टम संस्करण	८६०	६)
” ,,द्वितीय भाग तृतीय संस्करण		६२२	६)
रसेन्द्रसार सग्रह	टीकाकार प प्रयागदत्त शास्त्री	४६५	६)
” गूढ़ार्थ सन्दीपनी टीका	—श्री अम्बिकादत्त	४४७	५)
” संग्रह [तीन भाग]	—पं. घनानन्द जी पत विद्यार्णव	११५०	११)
रसादि परिज्ञान	श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्य	१६५	२)
रस-रसायन-गुटिका-गुग्गल	श्री वै० देवीशरण गर्ग	८३	।)
रसरत्न समुच्य	टीका. पं. अम्बिकादत्त शास्त्री आयु०	५४४	१०)
रसायन खंड	श्री यादव जी त्रिकम जी आचार्य	७८	॥)
रसायन सहिता	स्वामी प्रवोधानन्द	८८	१)
रसाध्याय	प. रामकृष्ण शर्मा	६८	॥=)
रसामृत	वै० यादव जी त्रिकम जी आचार्य	१५२	५)
रसार्णव नाम रसतन्त्रम्	पं. तारादत्त पंत	२०८	२)
रसराज सुन्दर (बृहद्)	पं. दत्तराम चौबे मथुरा	५१२	१०)
~~रसराज महोदधि (५ भाग)~~	~~प नारायणप्रसाद सीताराम मि~~	~~२०१~~	१०)
~~रसतरङ्गिणी टीकाकार~~	—प. धर्मानन्द शास्त्री आयु०	७७६	१०)
रक्त के रोग	भास्कर गोविन्द घाणेकर	५७६	१०)
राजयक्ष्मा	प. विश्वेश्वरदयाल जी वैद्य	७४	॥)
राष्ट्रीय चिकित्सासिद्ध योग संग्रह	प. रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी	६१	१॥)
राजकीय औषधि योग संग्रह	पं. रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी	२६१	७)
रिलेशन शिप	डा० श्यामसुन्दर शर्मा एम. डी.	१६४	२)
रुग्ण परिचर्या	—डा. कु. श्री म्हसकर एम ए. एम. डी.	६६६	३॥)
रोग परिचय	श्री शिवनाथ खन्ना	८००	१२॥)
रोग लक्षण संग्रह	सुरेश प्रसाद शर्मा	१६	=)
रोग विज्ञानम्	कविराज सुरेन्द्रकुमार शर्मा	१६६	।)
रोगनामावली कोष	—डा दलजीतसिह वै०	२६८	३॥)
रोग निदान चिकित्सा	—डा० श्यामसुन्दर शर्मा एम डी.	१४१	२)
रोग परीक्षा विधि	—आचार्य प्रियव्रत शर्मा	४३०	६)
रोगी परीक्षा	डा. शिवनाथ खन्ना	३२०	६)
रोगी की सेवा और पथ्य	डा० सुरेशप्रसाद शर्मा	२६४	३)
लाभदायक व्यापार १-२-३	श्योसहाय भार्गव	६६६	१॥।=)
लवण गुण विधान	—हकीम मोलवी मोहम्मद अब्दुल्ला	१५	।)
लहसुन और प्याज	श्री रामेशवेदी आयुर्वेदालकार	२२२	२॥)
लघु द्रव्य गुणादर्श (सचित्र)	कविराज महेन्द्रनाथ शास्त्री बम्बई	२२४	३॥)
लेडी डाक्टर	डा० श्योसहाय भार्गव	१७७	१।)
शर्वत का व्यवसाय	—श्री चन्दूलाल चन्द्र'	१२४	१)
श्वास रोग चिकित्सा	प्रजावैद्य गोकुलप्रसाद स्वर्णकार	४५	।=)
शिरो रोग विज्ञान	पं. जगन्नाथप्रसाद शुक्ल	४५२	४)
शङ्करनिघण्टु	शंकर दत्त गौड राजवैद्य	४४०	७)
शरीर रचना	डा० भोलानाथ एम बी. एस.	१७४	२॥)
शरीर परिचय	प जगन्नाथप्रसाद शुक्ल	१४०	१।)
शहद के गुण और इसके उपयोग	कवि महेन्द्रनाथ पाण्डेय	५६	॥।)
शहद	रामेशवेदी आयु०	२१२	३)
शारीरिकोन्नति	=प. ठाकुरदत्त शर्मा अमृतधारा	१६५	२)
शालाक्य तन्त्रम[निमितन्त्रम]	—श्री रामनाथ द्विवेदी	६५४	८)
शारङ्गधर सहिता	टीकाकार पं. प्रयागदत्त शर्मा	६७२	६)
शारङ्गधर सहिता	वैद्यरत्न प. रामप्रसाद राज	५१२	६)
शालहोत्र बडा	पं. जनकप्रसाद वाजपेयी	१३५	२)
शिलाजीत विज्ञान	डा० जाह्नवीप्रसाद जोशी	२६	॥।)
शिशुपालन	मुरलीधर शर्मा गौडाई	१४६	[illegible]

पुस्तक	लेखक	पृष्ठ	मूल्य
	पं जगन्नाथ प्रसाद शर्मा	३६४	३॥)
	बा. रामचन्द्र वर्मा	६६	॥।)
	पं बालकराम शुक्ल	१०६०	६)
	डा शिवदयाल गुप्त	५५	॥।)
सन्तानशास्त्र	पं. गणेशदत्त 'इन्द्र'	४५८	५)
सर्जरी या चीर फाड़	डा. भवानी प्रसाद	३८०	३॥।)
सरल रोग विज्ञान	राजवैद्य प रवीन्द्रशास्त्री	४३७	५)
सरल व्यवहारायुर्वेद और विषविज्ञान	कविराज युगलकिशोर	३६०	४॥)
सरल होमयो-चिकित्सार	डा० श्योसहाय भार्गव	३६०	४॥)
सरल विष विज्ञान	कविराज युगल किशोर गुप्त	१४०	१॥।)
सन्तरा गुण विधान	हकीम मौलाना मोहम्मद अब्दुला	१५	।=)
संक्षिप्त औषधि परिचय	कालेडा से प्रकाशित	१२२	॥=)
सर्पगन्धा	श्री रामेशवेदी आयुर्वेदालकार	२३	॥।)
सर्प विष-विज्ञान	डा० दलजीतसिंह वैद्य	१०४	१)
साबुन विज्ञान	श्री ताराचन्द दोसी	१६६	२॥)
स्वस्थवृत्त समुच्चय	पं. राजेश्वरदत्त शास्त्री	४६४	६॥)
स्वास्थ्य और सद्वृत्त	कविराज अत्रिदेव	१४१	२)
स्वास्थ्य संहिता	नानकचन्द्र वैद्यशास्त्री	१८२	२॥)
स्वास्थ्य विज्ञान	भास्कर गोविंद घाणेकर	६३६	६)
स्वास्थ्य के लिए शाक तरकारियां	कविराज महेन्द्रनाथ पाण्डेय	१४४	२)
स्वर्णक्षीरी गुण विधान	डा० गणपति सिंह	५२	॥।)
स्वप्नदोष विज्ञान	प० गणेशदत्त 'इन्द्र'	१४०	२)
स्टेथिकोप तथा नाडी परीक्षा	डा० जान्हवीप्रसाद जोशी	६०	॥।)
स्वप्नदोष विज्ञान और उसकी चिकित्सा			=)॥
स्टेथिस्कोप विज्ञान	डा. सुरेशप्रसाद शर्मा	८०	१)
,, शिक्षक	डा० श्योसहाय भार्गव	८०	॥।=)
स्त्री रोग चिकित्सा	श्री डा० युगल किशोर चौधरी	७२	॥।)
स्त्री रोग चिकित्सा (सचित्र)	डा० सुरेशप्रसाद शर्मा		४॥)
स्त्री रोग चिकित्सा	डा० भोलानाथ टन्डन	२४४	२॥)
स्त्री रोग चिकित्सा	विशेश्वरदयाल वैद्य	१०४	१)
सुश्रुत संहिता सम्पूर्ण भाषाटीका	कविराज अत्रिदेव गुप्त	७८४	१५)
,, ,, शारीर स्थान	डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर	३०७	८)
,, ,, ,,	प० नीलकण्ठ देवराज देश पाण्डेय	२२३	३)
,, ,, सूत्रधार	डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर	३५२	६)
सुश्रुत सहिता सूत्रनिदान स्थान	कवि अम्बिकादत्त शास्त्री	३००	७)
सिद्ध भैषज्य सग्रह	कविराज युगलकिशोर गुप्त	७६२	७)
सिद्धौषधि प्रकाश	पं० बालमुकन्द वैद्य शास्त्री	२०८	१॥)
सिद्ध योग सग्रह	वैद्य यादव जी त्रिकम जी आचार्य	१५७	२॥।)
सिद्ध प्रयोग (२ भाग)	विश्वेश्वरदयाल जी वैद्यराज	१७६	१॥)
सिद्ध मृत्युञ्जय योग.	पं० केदारनाथ पाठक रसायनिक	५७	१)
सिद्ध परीक्षा पद्धति	कालेडा से प्रकाशित	६२४	८)
सिद्धचिकित्साक (परिशिष्ट) स्त्री-पुरुषो के जननेन्द्रिय रोग चि		५४	१)
सुगन्धित तैल	प० प्रभुदयाल शर्मा वैद्य	८७	॥।)
सुखी ग्रहणी	श्री हनुमानप्रसाद वैद्य शास्त्री	१७१	१॥)
सुखी जीवन	श्री विजय बहादुर सिंह बी ए	१७८	१॥)
सूर्यरश्मि चिकित्सा	वैद्य बाबेलाल गुप्त	६४	॥।)
सूर्यकिरण चिकित्सा	डा० युगलकिशोर चौधरी	८०	॥।)
सूचीवेध विज्ञान	श्री राजकुमार द्विवेदी	१०८	१॥)
सौंठ	श्री रामेशवेदी आयुर्वेदालकार	१४६	१॥)
सौश्रुती (प्राचीनशल्यतन्त्र)	श्री रामनाथ द्विवेदी	५५८	७॥)
हृदय परीक्षा	डा० रमेशचन्द्र वर्मा	११६	१॥)
हरिधारित ग्रंथरत्न	प० वसुदेव शर्मा वैद्य	४८	।=)
हल्दी	प० विश्वेश्वर दयाल	६६	१)
हमारा भोजन	कविराज महेन्द्रनाथ पाडेय	२६१	४)